



जगह नहीं मिलेता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (बाहरे काल माहिमा) इस हेतु वर्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाये हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनो रथ जो के ५०० ठिकाने ४५ आगम का भण्डार करने की डच्छा है श्रीधरही सिद्ध होगी, लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः पुरुषी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमकी कृतार्थ करने की ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुदर पृथ्वी पर इसके सेवाय नहीं है ग्रंथ लपवाना सुरू किया । यह कला युरूप देखीय अन्ध धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ लपवाने में आज्ञातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकसुभतादिक, महा कार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में बड़ा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नहीं है, पक्षपात छोड़ के ग्रहण करें । यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की झीर देखि येगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरब

आ. श्री कैलाससागरसुरि ज्ञानमंथिर  
 श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोना,  
 जिला गांधीनगर

## ॥ विज्ञापनम् ॥



सकल समान धर्मी प्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूँ कि दशविध दुष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससे जुआरी महाप ज्योतिष्य भिचारी इत्यादि दुष्कृति और परभव में आव पगु कुट्टी काक कुमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्तव्य कर्म ज्ञाने हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनंत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा कि परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है, क्यों कि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञानी विना ज्ञान असंभव है। ज्ञान होने में प्रथम व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य ज्ञान दर्शन इनका सङ्ग्रह अध्ययन

## नकल चिठी १

श्रीमज्जिनघरप्रसादलब्धसहितप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधन  
पतिसिंहब्रह्मादुरेषु सविनयमावधत्तम् ।

आग, मैं न सुनाई आप की एसो इच्छा है कि पैतालिसों जैनागम  
की पुस्तके मूल टोंका और ज्ञावाटीकी सहित पाच २ सौ कापी छपे और  
साथ आवकों के पठन पाठन का प्रिय पाच सौ स्थानमें पुस्तकालय  
स्थापित हो सों यह अति ज्ञानदकी बात है, परंतु जिन महाशयों  
का द्रव्य दक पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त ज्ञी यदि  
आप की आज्ञा हो तो वचने के वास्तु पाचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी  
की और से ज्ञी छपवा ली जावे यह पुस्तकें से अजीमगज से प्रकाश  
करूंगा अग्रे शुभम्, स्वत् । १८३३ । मि० । चै० । श० । ११

अजीमगज

शहर मुरसीदाबाद

द० जैन बुक सुसाइटी

कायसम्पादक

सुबुद्धिसेठ

## नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकायसम्पादक  
महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी  
की और से पैतालिसों जैनागम की पाचसौ पुस्तकें छपवा लेने की  
आज्ञा क विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूँ कि आप जैन बुक  
सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच २ सौ पुस्तकें वचने के  
वास्तु छपवा लेवे, परंतु पाचसौ से अधिक छपनकी आज्ञा नहीं  
दता, यदि और कोई छपवाना चाहें तो उचित है कि पहले मुज  
से आज्ञा लेले क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्वरी हुई है, अग्रे शुभम् ।  
स्वत् । १८३३ । मि० । चै० । श० । १३

अजीमगज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह महादुर



अध्यापन प्रावण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है, ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन  
 समय में सन्तुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनकी कंठाग्र रहते  
 थे। अन्य मतमें उनके वशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और  
 अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य और उपाध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह  
 प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझते  
 थे। और भी जो प्रथम गणधर तीर्थकर महाराज के मुख से (उप्यन्ने इवा विगने इवा धुने इवा) त्रिप  
 दी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और  
 कोई कारण नहीं समझा जा सकता। अधुनातन मनुष्यों की जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनकी ता  
 त्पर्य नहीं याद रहता है ज्ञानावरणीय के सिवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ  
 एकही समय नहीं हुआ किन्तु क्रमसे जों जों देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तों तों ज्ञानकी  
 भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से १६० वर्ष (ईसवी सन् ४५४।  
 विक्रम संवत् ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणक्षमाश्रमणने सोचा कि पुस्तक विनलिखे यह स्मरणञ्चरि

लोका इति व्युत्पत्त्या लोका लोकरूपस्य समस्तवस्तुस्तोमस्य भावस्याखंडमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावावासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल  
 प्रवर्त्तनेन प्रद्योतं प्रकाशकरोतीत्यग्नौ लोकोकप्रद्योतकरस्तेन नगुलीकनाथत्वादिविशेषणयोगी हरिहरहरिहरखगर्भादिरपि तत्तौर्धिकमतेन संभवतीति को  
 त्यविशेष इत्याशङ्क्यायान्तद्विशेषाभिधोनायाह नभयंदयते पाणपहरणरसिकोपसर्गकोरिस्थपि प्राणिनि द्वातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार  
 वतीदयाघृणायास्यासावभयदयो हरिहरादिस्तुनेवमिति तेनाभयदयेन न केवलमसावपकारकारिणमर्थेभ्योपरिहृरभाव' करोत्यपित्वर्थप्राप्ति इहरीती  
 तिदर्शयन्नाह चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञांशुभाशुभार्थविभागकारित्वा तद्वयते इति चक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोके चक्षुर्दलोवाहितस्थानमागं दर्शयन्महोपकारी  
 भवत्येवमिहापीति दर्शयन्नाह मार्गसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रालकापरमपदपद्यत इति मार्गदयस्तेन मार्गदर्शयन्महोपकारी भवत्येवमिहापीति दर्शयन्नाह जीव  
 नुरक्षाटनमार्गदर्शनचकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवंस्थानप्रापयन् परमोपकारी भवत्येवमिहापीति दर्शयन्नाह शरणच्चाणमन्त्रानोपदवोपहतानांतद्र  
 चास्थानतच्च परमार्थतोनिर्वाण तद्वयत इति शरणदयस्तेन यथाहिलोके चक्षुर्मार्गशरणदानाद्रुस्थानजौवित' ददातीत्येवमिहापीति दर्शयन्नाह जीवन

माणं लोगनाहाणं लोगहिणं लोगपद्वेणं लोगपज्जोञ्जरेण अन्नयदणं चरकुदेणं भगदणं सरणदणं  
 तिहांदोवासनानिमित्थाल्पकण्ठाले लोकगणधरलोकेनेहनेप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहारतेणैकहित सर्वजीवनेअभयदाननादातारतेण समकितरूपलो-  
 चनानादातारतेण भूलाप्राणीनेमेच्चमार्गनादातारतेण सर्वजीवनेशरणनादातारतेण सयसरूपजौवितव्यनादातारतेण बोधिवीजसम्यक्तनादातारतेण धर्म

जाती रहैगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होनेके कारण ताडपत्रके ऊपर लोहा लिखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रंथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहिये द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिसमें नही यदि कोई तरहका विद्वान् आय पड़े कार्य पूर्ण नहीं, क्योंकि एकलौ ओयांसि बहुविद्वानि, दूसरे मनुष्यायु इतप, जब तक कार्य समाप्त नहीं चिता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्त में है, ग्रंथ संग्रह किये बिना अध्ययन अध्यापन मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जायगे परल्लही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोंने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्तमान काल में पैतालीस आगम एक

नं नारियानिकमितियदुच्यते अथीलयादि अस्तिप्रियाते ऐकैप्रांचित्रैरधिकारणा मेकपथोपमं स्थिति रितिक्त्वाप्रज्ञाप्रवेदितामया अन्यैराजिनेः साचचतुर्थप्र

गेएजीयणसयसहस्रसंख्यायामविस्मयेणं प० सस्रुठसिद्धेमहा॥ कसणेएगंजीयणसयसहस्रसंख्यायामविस्मयेणं प०  
 अद्दानस्वत्तेएगतारे प० चित्तानस्वत्तेएगतारे प० सातिनस्वत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्यभाएपुठवीए अ  
 त्येगइच्याणंनेरइच्याणं एगपलिलुवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्यहाएपुठवीए नेरइच्याणं उक्तेसेणंएगंसागरोव  
 मंठिई प० दोच्याएणंपुठवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगंसागरोवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइच्या  
 णं एगंपलिलुवमंठिई प० असुरकुमाराण देवाणं उक्तेसेणंएगंसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥

जनलांबपणेअनेपिहुलपणेंकह्यो । आर्शानचननोएकतारोअह्योछे । विचानचननोएकतारोअह्योछे । स्वातिनचननोएकतारोअह्योछे । एहतेरअप्रभापहिहीन  
 रकपुथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनीं एकपल्यायमस्थितिआजखोअभगवतेकह्योछे । एणीयेरत्नप्रभापहिहीनरकपुथिवीने नारकीयांनो उव्कष्टोए-  
 कासागरोपमस्थितिआजखोअह्योछेअभगवते बीजीयेनरकपुथिवीने नाएकीयांनोजवन्त्यपणे एकसागरोपमस्थितिआजखोअह्योछे अनंतज्ञानवते असुरकुमारभवन  
 पत्तीप्रथमनिकायना देवतानो केतलाएकनो एकपथोपमस्थितिआजखोअह्योअभगवते असुरकुमारदेवना उव्कष्टोअभाभेरोएक सागरोपमस्थितिआजखो

पंचकं नक्षत्रार्थसप्तकं स्थित्यर्थेनैवक मुक्त्वा सार्थार्थत्रयमिति । तत्र दृष्टांतत्रयैश्चार्थैश्चार्थोऽसारीक्यते एभिरात्मैतिदंडादुःप्रयुक्तमनः प्रभृतयः मनएवदंडो मनोदंडो मनसावादुःप्रयुक्तोनात्मनोदंडो दंडेन मनोदंडएवमितरावपि तथा गोपनीयस्य मनः प्रभृतौ नामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशरपानीवशल्यानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः प्रवृत्त्यर्थं मायाशरपणमित्युल्लंकारे एवमितरेऽपि नवरनिदानं देवादिरिद्धीनां दर्शनश्चवर्णाभ्या मितौ ब्रह्मचर्यादिरनुष्ठानात्मैताभ्यासु रित्यध्यवसायो मित्यादयेन मध्यस्थानमिति तदा गौरवाणि अभिमान

तदुदंठा प० तं० मणदंठे वयदंठे कायदंठे । तदुगुत्ती प० तं० मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती । तदुसह्या प० तं० मायासह्येणं नियणसह्येणं मिच्छादसणसह्येणं ॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिखे ऐतले बीजोठाणी पूरोययो ॥ २ ॥ हिवे तोजोठाणी कहेछे । तीनदंडका ह्या जेणेकारी आत्मादंडीये चारिचरूपधनगमाडीये ते दंडकहीये ३ मनिकरी आत्मादंडीये असारकारीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंड डपणिइमज ३ त्रिणिगुप्ती गोपविवी ते गुप्ति कहिये तेकहेछे मननो गोपवी ते मनोगुप्ती १ इम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिगुत्ती तीरनीपरे शस्यसरीखा शस्य भाल दुःखदायकपणाथकी ते कहेछे मायाकापटतेहीजशस्य तेमायाशस्य १ निदानपल्य ते तपसंजमेकारी इन्द्रादिकपदवीनी वांछवी २ मिथ्यातशस्य

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोड़ देना उचित है । इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की श्रुति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नहीं करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्यों ने बड़े परिश्रम से परोपकारपूर्ण जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी के देखने में न आते और गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीड़े खाजाय और ग्रन्थ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सेवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबधका हेतु, नहीं है, वही ग्रन्थ लपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावे इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नहीं है, यही सर्व कारण सोच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथा शक्ति प्रवृत्त होय कि जिससे पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

मन्सूदाबाद अजीमगज

राय धनपति सिंह बहादुर

## भूमिका ।

समवाय नामक चउथे अङ्क का अनुयोग स्थाननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही क्रमसे प्राप्त है ,

॥  
 च्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवेमइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंतिन्नि  
 सागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमारराणदेवाणं अत्थेगइंठिई प० । असुरकुमारराणदेवाणं उयसन्नि पंचिदियतिरिक्कजोगियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असुरकुमारराणदेवाणं  
 उयसन्नि पंचिदियतिरिक्कजोगियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं  
 तिन्निपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निसागरोवेमइंठिई प०

॥  
 त्रिणिताराकद्व्याकेवलज्ञानीये पुथनच्चवनात्रिणिताराकद्व्या । जेष्ठानच्चवनात्रिणिताराकद्व्या अभिजित् नक्षत्रनातीनताराकद्व्या अक्षयनक्षत्रनात्रिणिताराक  
 द्व्या अस्विनीनक्षत्रनात्रिणिताराकद्व्या भरणीनक्षत्रनात्रिणिताराकद्व्या एषीयेरद्वप्रभापहिलीपृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनी त्रिणिपल्योपममध्यमआकधूकहूं  
 बीजोसक्करप्रभापृथवीनेविषे नारकीनीउत्कृष्टा त्रिणिसागरीपमनूआउखोकद्वो बीजोवालुकप्रभापृथवीनेविषे नारकीनी जघन्य त्रिणिसागरीपमआज खोक  
 ह्यो असुरकुमारभवनपतीनी पहिलीमिकायनादेवतानीकेतलाएकनी त्रिणिपल्योपममध्यमआउखोकद्वो अत्रसंख्यातवर्धनाआउखाना सञ्जीगर्भज पचेद्रिय  
 तिर्यंच एतलेदेवगुरु उत्तरकुरुनागर्भज तिर्यंचनो उत्कृष्टो तीनपल्योपमनी आजखोकद्वो । असंख्यातवर्धना आउखाना गर्भजमनुथ देवगुरु उत्तरकुरुना

और अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मङ्गल समुदायार्थ द्वारजेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिक द्वारा के निरूपण से होता है सो सब इहानी स्थानाङ्ग के समान है ॥

समवाय चतुर्थ अङ्गानुयोग, राग नर द्वेष आदि विषम भाव शत्रुओं की सेना के समूल उन्मूलन करने से, तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक विसृष्ट रहित वचन होने से त्रिभुवनरूप जवन के आंगन में रुधासमान निर्मल जिनके यन्त्र की राज्ञि फैल रही है और जिनेन्द्र परम काणिक श्री भ्रमण जगवन्त महावीर वर्द्धमान स्वामी ने जैसा कहा उन के पांचवें गणधर आर्य सुधर्मास्वामीने भ्रमणसंघ और अपनी साधुसंतति के लिये सूत्ररूप से संकलित विद्वत्, समवाय इस पदका समुदायार्थ यह है कि—सम्यक् प्रकार अधिकता करके जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का ज्ञान है जिसमें, अथवा समवाय सम्यक् ज्ञान इसग्रंथ में कहा है, समवाय शब्दसे आत्मा आदि कितने ही पदार्थ एक दो तीन चार इत्यादि एकीत्तर अर्थात् एक के बाद दो और दो के बाद तीन इस क्रमसे सो पर्यंत और अनेकीत्तर अर्थात् अनेक की वृद्धि कोटा कोटि पर्यंत सख्ख त्रिशेषित इस ग्रंथ में कहे हैं, और द्वादशांग गणिपिटक के समाचार तथा आत्मादि पदार्थों को एकद्विआदि पद्यांसा प्रथमांसा नारक



कनचत्रार्थस्थित्यर्थेऽपि पाठः त्रयस्थित्यर्थेऽपि पाठः अतर्मुहर्त्तयावचित्तस्यैकाग्रतायोगनिरोधस्थानं तत्रार्त्तं मनोज्ञामनोज्ञ  
वस्तुवियोगसंयोगादि निबधनचित्तविकलक्षण रौद्रहिंसातृतीयधनसरस्वतीध्यानलक्षण । धर्ममाज्ञादिपदार्थस्वरूपपर्यालोचनेकाग्रताशुक्ल पूर्वगत  
श्रुतावलबनध्याने तत्रमनसोऽत्यंतस्थिरतायोगनिरोधश्चेति । आत्मस्थान तथाविरुद्धादिप्रतिपत्तिरित्यादि विषया कथा विकथाः तथासञ्ज्ञा असात्वेद

प० तं० कीहकसाए माणकसाए लोचकसाए चत्तारिज्जाणा प० तं० सुद्धज्जाणे न्हदज्जाणे ध  
म्मज्जाणे सुद्धज्जाणे चत्तारिविगहाण प० तं० इच्छिकहा नत्तकहा रायकहा देसकहा चत्तारिसससा प०

नौसास तेहदेवताने उल्लङ्घी त्रिहुवर्षसहस्रेप्राहारनोअर्थउपजेआभोगआहारलेखे ऐकसंसारमाहिअव्यज्जिव जेहविहुभवनेआंतरे सीभसेकृतार्थास्ये बभू  
स्ये कर्मबधधकी मूआस्ये समस्तदुःखनोअंतकारस्ये इतिचीजोठाणोसम्भत्तं हिचेचोथोठाणोकेहेछेच्यारकषायेकषकहीये संसारतेहनोआयलाभहस्ये जेहथीक  
षायकहिथेकीधेकीससारनीलाभहस्येतेमाटेकीधकषाय १ एममानकषायमानअहंकार २ मायाकषामायाकपट ३ लोभकषायलोभतृष्णा ४ च्यारिध्यानक  
ह्याध्यानतेअतर्मुहर्त्तलगेचित्तनुएकाग्रपणूतथायोगनिरोधतेकहेछे मनोज्ञवस्तुनोसंयोगअमनोज्ञवस्तुनोचितवितीआर्तध्यान १ हिंसामषाचीरीधन  
रचणनो चितवितीरद्रध्यानभगवतनीआज्ञापदार्थनोआलोचवोतेधर्मध्यानपूर्वगतश्रुतनूआलबनुत्रिणयोगनूनिरोधवोते शुक्लध्यान जेणेकीचारित्रादिक

तिर्थच मनुष्य देव जेदसें और इनके आहार लेख्या ऐशवास उपपात व्यवन अवगाहना उपधि वेदना उपयोग  
योग इंद्रिय कषायादि, मेरु आदि पर्वतों का चिष्कंभादि, कुलकर तीर्थकर गणधर चक्रधर बलदेव वासुदेव  
इत्यादि अनेक पदार्थ विशेषतया इस ग्रंथ में कहने से समवाय इसा नाम हुआ वही समवाय ह्यायोपशमिक  
भावरूप प्रवचन पुरुष के अगकी तरह अंग है इसलिये समवायांग नाम हुआ, इस ग्रंथ में भाव समवायांग  
कात्री अधिकार है, यह समवायांग एक अध्ययन रूप एक श्रुतस्कंध एक उद्देशक और एक समुद्देश है, इस  
समवायांग के पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र जानने के लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुनीग  
अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबध अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ ग्रहण रूप क्रियाविशेष कहे है, यही  
चारों जैसे नगर में सुखसे प्रवेश करने में चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमें प्रवेश करने के चार अनुयोग  
रूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं, इन अनुयोगों से जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञात होने से तत्त्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ  
सिद्ध होता है इसलिये इसके पढ़ने पढ़ाने में अवश्य दत्त करना चाहिये, परंतु पढ़ने का अधिकारी वही  
होगा जोकि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरु का आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिसको व्यतीत हुआ होगा  
समवायाङ्ग सूत्र देनेका अवसर भी वही है, अन्यथा देनेमें तीर्थकराज्ञा जज्ञादि दोषापत्ती होती है, इति ब्रम् ॥

॥  
रगीनाविवचानुमंतव्येति सुभेत्यादिश्लोकः तथा अष्टौ नक्षत्राणि चन्द्रेऽसार्धस्य महं चन्द्रो मध्येन तेषां गच्छतीत्येवं लक्षणयोगसंबंधयोजयन्ति कुर्वन्ति अत्रार्थोऽभिहि-  
तं श्लोकश्रित्यम् पुण्यस्वसुरोहिणीचिन्ता महाजिह्वणुराहकत्तियविसाहा चेदस्स यजोगति । यानि च दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्हयोगीन्यपि कदाचिन्नवन्ति  
यतीलीकश्रीटीकाकृतोक्तं । एतानि नक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेण दक्षिणेन च युज्यन्ते कदाचिच्चद्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथा चिंरादीन्येकादशविमान

अष्टनरकत्ताचंद्रेण सठिंपमदुंजोगंजोएति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुणवसु ३ महा ४ चित्ता ५ ।  
विसाहा ६ अणुराहा ७ जेठा ८ । इमीसेणंरयणप्यहाएपुठवीए अत्येगइयाण नेरइस्सण अष्टपलिनवमा  
इं ठिई प० चउत्थीएपुठवीए अत्येगइयाणंनेरइयाणंअठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्ये  
गइयाणं अष्टपलिनवमाइंठिई प० सोहमीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं अष्टपलिनवमाइंठिई प०  
बंअलोएकप्पे अत्येगइयाणं देवाणं अठसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा अस्सिं १ अस्सिमालिं २ वत्तिरोयणं

श्रीधर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनचच्चद्रमासाथे प्रमर्दकयोगयोगी साथकरे तेकहैछे । कत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । मघा ४ । चित्ता ५  
विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी आठपत्थोपम आजखोकह्यो । चउदीनरक पृथिवीने विषिकेतलाएक  
नारकीनी । आउसागरोपमआउखूंकह्यो असुरकुमारदेवतानीकेतलाएकनो आठपत्थोपमआउखोकह्यो सोधर्मईशान देवलोकेनेविषे केतलाएकदेवतानी

॥  
 स्वांदिधि स्थितानि दक्षिणाग्रास्थित चंद्रेण सहयोगमनुभवन्तीति मोक्षे बहुसमरमणिज्जाओ इति अर्थतसमी बहुसमी ऽत एवरमणीयो ऽत्यतस्माद्भूमिभा  
 गात्तेपर्वतापेचया नापि स्वाचारापेचयेति तात्पर्यं आवाहाएत्ति अतरेकैविति शेषः उवरिह्नेत्ति उपरितनं ताराख्यं तारकजातीयं चारम्भमणं चरतिकरोति  
 नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एवप्रविसन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पचयोजनसत्काभम्या. सभवति तथा नदीमुखेषु जगतीरधिभित्त्येनैव तावत्प्रमाणाः ज

॥  
 त्या व्यन्नीजिनस्कत्तेसाइरेगेनवमज्जत्ते चं देणंसठिजोगंजोएइ अञ्जीजियाइयानवनस्कत्ता चंदरसउत्तरेणंजोगं  
 जोएइ तं० अञ्नीजिसवणोजावज्जरणी इमीसेणरयणप्यन्नाएपुढवीए दञ्जससरमणिज्जाओ भूमिअगाओ नवजो  
 यणसए उहं अवाहएउवरिह्नेतारारूवे चारचरइ जबूह्वीविणदीवे नवजोयणियामच्छापविसिसुवा ३ विज्जय

ननहाय जचपणे देहहुया अमोचनचक्रभक्तेरो नवमहर्तलगे चद्रमासायेजोग जोजे सबधकरे अभीविथकी मांडीनव नचत्र चद्रमाने उत्तरदिसेयोगजोजेस  
 बंधकरे चालै तेकहैके । अभीवि १ । अत्रण २ । धनिष्ठा ३ । शतभिषा ४ । पूर्वभाद्रपद ५ । उत्तराभाद्रपद ६ । भरणी ८ । एनव  
 नचत्रजाणिमा । एणोत्रेरत्तप्रभा पहिलो पृथिवीनो घणोसमी घणोरमणीक जे भूमिभाग भूमिनोजपल्योभाग तेहयक्की नवयतयोजनजं चे अंतरेएतले पृथि  
 वोथकी नवयतयोजनज ची जइये तिहांजपित्तयो ताराखूप एतलेशनीश्वरनोतारोजं वोछे अमणकरेछे पृथिवीथकी सातसेनेजयोजन तारामडलछे । ७६०  
 योजने तारा १० । योजनेसूर्य ८० । योजनेचद्रमा ४ । योजनेअष्टावीस नचन ४ योजनबुधनीतारी ३ योजनमंगल ३ योजनशुक्र ३ योजनसर्वमिली नवसेयोजन  
 यथा । जबूह्वीपमांही नवयी जनलांबामच्छेपेसेछे लवणसमद्रमाहि पाचसेयोजननामच्छे एणेजगतीनेछिदे नदीमुखे नवयोजननामच्छे जबूह्वीपमांही

श्री श्री कृतान्तनागसुनि ज्ञानमंदि-  
नी महावीर देव आराधना केन्द्र, काशी,  
शि. गांधीनगर

## ॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमन्त्रमधुकरायमाण याचककल्पहृत्पायमाण वङ्गदेशभूषण कृतबन्धुतोषणा जीमगञ्जवास्तव्य गुणगणसंस्तव्य ज्ञातसार मानसारी  
सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर चित्तिपति धनपति सिंहस्य धर्मापदेशेन शुभादेशेन ज्ञानहृदये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनभक्तानां  
सकलयतीनां त्रयीग्राहकाणां आदृकाणां चीपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणपुरे वाराणसीनगरे रुचिराक्षरतन्त्रे जेनप्रभाकरयन्त्रे कृतसम्य-  
ग्व्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्याङ्गमिव तुरीयमङ्गं तुरीयधनिनां सुनिना सदाऽतन्द्रेण नानकच-  
न्द्रेण सुन्दर मुद्रितमभूत् ॥

\*

समवायाख्यं सूत्रं तुरीयमङ्गं मया तिसंशोध्य ॥

मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यं भविकान्सदापातु ॥ १ ॥

॥  
 पाखं भीमानि नवभूमिकानि मगराणीति एकोननगराणीत्येके विनिष्ठास्थानानीत्यन्वे तथा व्यंतराणां समा सुधर्मानव योजनानिऊर्ध्वमुच्चत्वेन तथा पद्मा  
 गइयाणं देवाणं नवपलिनवमाइं ठिई प० बंजलोएकप्पे अत्येगइयाणं देवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प०  
 जेदेवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पन्नं पम्हकत्तं पम्हवस्सं पम्हलेसं पम्हज्जयं पम्हसिं पम्हसिद्धं पम्हकूळं  
 पम्हुत्तरवफिसगं तथा सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जाकत्तं सुज्जाप्पन्नं सुज्जालेसं सुज्जावस्सं सुज्जाज्जय सुज्जासिगं  
 सुज्जासिद्धं सुज्जकूळं सुज्जुत्तरवफिसगं रुइल्ल रुइल्लाप्यन्न रुइल्ललसं रुइल्लवस्सं जावरुइल्लुत्तरवफिसगं  
 विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा नवरुइल्लुत्तरवफिसगं अणमतिवा  
 पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं नवहिंवाससहस्सेहिं अणहारठे समुपज्जइ रंतेगइयान्नव

॥  
 आउखीकह्यो । ब्रह्मलीके जेदेवता पद्म १ । सुपद्म २ । पद्मप्रभ ४ । पद्मकांत ५ । पद्मवर्ण ६ । पद्मध्वज ७ । पद्मशृंग ८ । प  
 द्मसिद्ध १० । पद्मशृंग ११ । पद्मोत्तरावतंसक १२ । एम १२ विमाने तथावली । सूर्य १ । सूर्यावर्त २ । सूर्यप्रभ ३ । सूर्यकांत ४ । सूर्यवर्ण ५ । सूर्यलेश ६  
 सूर्यध्वज ७ । सूर्यशृंग ८ । सूर्यसिद्ध ९ । सूर्यकूट १० । सूर्योत्तरावतंसक ११ । तथावली रुचिर १ । रुचिरावर्त २ । रुचिरप्रभ ३ । रुचिरकांत ४ । रुचिरवर्ण ५  
 रुचिरलेश ६ । रुचिरध्वज ७ । रुचिरशृंग ८ । रुचिरसिद्ध ९ । रुचिरकूट १० । रुचिरावतंसक ११ । एणेविमाने जेहदेवतापणे जपनाछे । तेहदेवतानी नवसागरी  
 पमआउखीकह्यो । तेहदेवता नवअर्द्धमासे पखवाछे खासोखासले घणोखासोखासले जं चीखासले तेहदेवताने नवयर्थ सहस्से आहारानी अर्थ



तस्य स्थानान्याथवा भेदावा चित्तसमाधिस्थानानि तनधर्माजीवादिद्वैत्याणामन्योगोत्यादादयः स्वभावास्तेषां चित्तानुपेक्षा धर्मस्यावाप्त्युत्तचारिवात्मकस्य सर्व  
 व्यापितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मस्यः प्रधानोयमित्येव चित्ताधर्मचित्तोवा ग्रन्थेव ल्यमाणसमाधिस्थानात्परेक्षया विकल्पार्थः सद्गति यः कल्याण भागी  
 तस्य साधोरसम्यक्प्रवृत्ति पूर्वस्मिन्नादो जातकाले ऽनुपजाता तदुत्पादित्वाद्यर्थपुद्गलपरावत्तर्मुते कल्याणस्यावस्थभावात् समुत्पद्येत जायेतस किं प्रयोजनाय चेयम  
 तपाह सर्व निरवशेषधर्म जीवादि द्रव्यस्वभाव सुष्योगोत्यादादिक भुतादिरूपता जायते ए त्रपरिज्ञातु ज्ञात्वा च प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय  
 कर्मपरिहर्तुमिदमुक्तमवति धर्मचित्ताधर्मज्ञानकारणभूता जायतइति इयं च समाधेरुक्तलक्षणस्य स्थानमुक्तलक्षणमेव भवतीति प्रथम तथा स्वप्नस्य निद्रावशवि  
 कायज्ञानस्य दर्शनसवेदगस्वप्नदर्पण तद्वाकल्याणप्राप्ति रूपकसम्यक्प्रवृत्ति समुत्पद्यते यथा भगवतो महावीरस्य ऽस्थिकाग्रे गूलपरिणियेक्ष्यो भूस्सर्गावसाने किप्रयो  
 जनचेद गित्याह अहातश्च सुमिथपातितएति यथा येन प्रकारेण तथः सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थः तत्त्व स्वप्नफलमुपचारात्तद्गुञ्जात् अत्र वशं भाविनीमुक्त्वादिः  
 शुभस्वप्नफलस्य दर्शनाय साधोः स्वप्नदर्शनमुपजायत इति भावः क्वचित्सुजायति पाठ स्वप्नवितथसकल आविमुयान सुगतिदृष्टज्ञातु सुज्ञानवा भाविशुभार्थपरि

## बुधमंजानितए सुमिणदंसणेवासे अहातश्च सुमिणप्रासितए सन्निनाणवासे

मापि १ तथा स्वप्नोदित्त्वो जेस्वप्नोदिते महाकल्याणो प्राप्तिहीस्ते तेकरेके असम्यक्प्रवृत्ति पूर्वक एहयो पूर्वोदोतीनयो तेस्वप्नो स्वंप्रयोजन अहातश्च सुमिणपासित  
 ए यथा तथ्यज्जीनही एहवीस्वप्नो फलजापि याने श्रयं अवस्थमो वजाणहार शुभस्वप्नदेखी चित्तसमाधिप्राप्ते जिम श्रीमहावीरस्वामीए केहलीरात्रिये १०  
 स्वप्नवास्या प्रभाते केवलज्ञानजपनू एहवीज समापिठाणू २ । सन्ना ज्ञान तेचित्तसमाधि स्थानक मनसहितने मञ्जीकहिये तेह नूज्ञान तेजातिस्वरण



॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानस्य समवायांगकृत्तिका । विधीयतेत्यशास्त्राणां प्रायःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुःसंप्रदायादसदूहनाद्वा भणिष्यतेयद्वितथं  
मेव ॥ तद्बोधनेर्मानुकांपयद्भिः शोध्धमतार्थक्षतिरस्तुमेव ॥ २ ॥ इहस्थानाल्यतृतीयांगानुयोगानंतरं क्रमप्राप्तएवसमव्याभिधानचतुर्थाङ्गानुयोगीभयतीति-  
सोऽधुनासमारभ्यते तत्रचफलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नवरं सगुदायाथीयमस्य समिति सम्भूतं प्रवेद्याधिकेन अयनमयः परिच्छेदो-  
जोवाजोवादिर्विविधपदार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समयंतिवा समपतरंति संमिलंति नानाविधाआत्मादयोऽर्थावाप्रभिधेयतयायस्मिन्नसौ समवायइति  
सचप्रवचनपुरुषस्यांगप्रिवांगमितिसमवायांगं तत्रकिलश्रीअमणमहावीर वर्द्धमानस्वामिनःसंबंधीपचमोगणधुर्यार्यसुधर्मस्वामीस्वशिष्यजंबूनामानमभिसम  
वायागार्थमभिधित्सुःभगवतिधर्माचार्यैर्बहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवस्तुविस्वारस्वभावभासिकैवलालोककलितमहावीरवचननिश्चिततयावि  
गानेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिचारोपयन्निदमादावेवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयंमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंमिमयाहेआयुष्मन्चिरंजीवितजंबूनामन् हेऽति यो  
सोनिर्मूलोत्सलिनरागहेष्वादिविषमभञ्जरिपुसैत्यतया भुवनभावावभासनराहस्येदेनपरस्परविशंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्पत्सुधाधवलयशोरा  
शिखीनमहावीरेणभगवतासमग्रैर्दुर्गैरेण एवमितिवक्ष्यमाणेन प्रकारेणाख्यातं प्रभिहितमात्मादिवस्तुतत्त्वमितिगच्छते, अथवा आउसंतेणंति भगवतेत्यस्य

॥ इदं ॥ श्रीविघ्नराजाद्ग्नमः ॥ सुयंमेऽयाउसंतेणं नगवयापुनमस्कायं इहखलुसमणेणं नगवयामहावीरेणं

॥ देवदेवंजिननत्वा पार्श्वचन्द्राद्विर्षद्गुरुन् । समवायांगसूत्रस्य वार्त्तिकविदधास्यहम् ॥ १ ॥ पांचमीगणधरसुधर्मास्वामीजंबूशिष्यप्रतेकहेच्छे सांभत्यौमैभगवंतने  
समीप ॥ हेसंयमसुदआज्जलानाधणोजंबू तेणे भगवंतज्ञानवतरूपवंते एहवीजे प्रागलकहौस्येतेकह्यो एहवीजिनप्रवचनेनविषेनिश्चे तेभगवंतकेहवाछे अमण

॥  
 दाप्रथममेव इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाएनि सीहियाएत्त अभिधायावयहानुज्जापनायाववति द्वितीयं । पुनर्यदावगृहानुज्जापनायैवावनमतीति  
 यथाजात अमणत्वभवनलक्षणं जक्माश्रित्य योनिः क्रमणलक्षणं च तत्ररजोहरणं । सुवस्त्रिका चोलपटमात्रया अमणोजातोरचितकरपुटस्तुयीन्यानिर्गतएवंभू  
 तएववन्दते तदव्यतिरेकाद्वा यथाजातभण्यते कृतिकर्मवंदनकं । बारसावयति द्वादशवर्त्ताः सूनाभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धायस्मिं  
 स्तद्द्वादशावर्त्तते । तथाचउत्तिरन्ति चत्वारिंशिरांसियस्मिस्तच्चतुःशिरः प्रथमभूविष्टस्य चामणाकाले श्रैयाचार्यशिरोद्वयंपुनरपि निःक्रम्यप्रविष्टस्य द्वयमेवेति  
 भावना । तथातिहिगुत्तति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः पाठांतरपि तिसृभिः अद्वागुप्तिभिरेवेति तथादुपवसन्ति द्वागवैशैयस्मिस्तद्द्विप्रवेशे तत्रप्रथमीवगृहमनुज्ञाय  
 प्रविशतो द्वितीयः पुनर्निर्गत्यप्रविशतइति एगानिखमणंति एकानिःक्रमणमवगृहादावसिक्यानिर्गच्छतः द्वितीयवेलायां ह्यवगृहान्ननिर्गच्छति पादुपतितएव

॥  
 जहाजायं कृतिकम्मं बारसावयं चउत्तिरं रिगुत्ते दुपवेसं । एगानिखमणं विजयाणं रायहाणी दुवालसजोय  
 आहार पाणी सभोगीने आणेदेतो मात्रादिक परठवतो सभोगी अन्यथा विसंभोगी ८ । समोसरण तेषणं यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण समोग  
 साधुनी अवग्रहलेई एकठोरहिवी १० । संनिषद्यागत संभोगीसाथे एके बैसती बेसी शास्त्रचिंतन करतो पासत्यासाथे करतो विसंभोगी ११ संभोगीसाथे क  
 थाप्रबंध करतीशुद्ध १२ । पासत्यासाथे करतो विसंभोगी ॥ बारें आयतं माहें तैकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवंते श्रीवर्द्धमानसामी ऐं तेकहंछे वेअवनत वेवेला  
 मस्तकनमाडवी गुरूनी थापनाकीजि तेहथकी अजठहाथ बेगला रहीपडिकमीए अजठहाथमाही अवग्रहकहिये उभांथका इच्छामि खमासमणो कहिये विहु  
 वांदणे विहुवेला मस्तकनमाडिये पछेअवग्रहमांहि आंविये यथाजातमुद्रा जग्मअवसरी बालकनीपर वलीटीभरी हाथजीडीरहौ कृतकर्मवांदणा १२ आ ।

विनेत्रेणमायुष्यताचिरजोवितेवताभगवतेति अथवापाठांतरेणमथेत्यस्यविशेषणमिदं आवसतामयागुरुकुलेश्चाभ्युद्यतावासंस्पृशतावामयाविनयनिमित्तंकरत  
 लाभ्यांगुराः क्रामकमलयुगलमौलिं यद्वा आउसतेति आयुप्रमाणेनप्रीतिप्रणन्मनसेति । यदाख्यातंतदधुनीच्यते एगेभ्रायाइत्यादिकस्यांचिद्वाचनायामपर  
 मपिसंबंधसूत्रमुपलभ्यते यथा इहलोकसमणेण भगवत्तद्व्यादि ताभेवचाचनां हृत्तत्त्वाद्वाख्यास्यामः इदंचद्वितीयसूत्रं सग्रहरूपप्रथमसूत्रस्यैवप्रपंचरूपमवसे  
 यमस्यचैवंगमनिका इहलोकस्मिन्लोके प्रीतिं श्रुतीर्थेवा खलुवाक्यालंकारे अवधारणेवा यथाचइहैव नशाक्याः श्रुत्प्रवचनेषु आभ्यतितपस्यतीति अभ्यणस्त्रिनेदंचाति  
 मजिनस्यसहस्रस्मृतिसम्ब्रंणामातरन्मोक्षयदाह सहस्रमईयामणेति । भगवतेतिपूर्ववत् महंयासौ वीरश्चेतिमहावीरस्त्रिनेदंच महासात्विकतया प्राणप्रहाणप्र  
 वणपरोपहोवसर्गनिपातेष्यप्रकपत्वेनपीयूषपानप्रभिराधिर्भावितमाह च अयलेभ्रयेभेरवाणंखतिखमेपरीसहावयवगगाणपडिमाणंपरदेकेहिंकएमहवीरूत्तिक  
 यभतेनेत्याह आदौप्राथम्येनश्रुतधर्ममाचारग्रथात्मकं करोति तदर्थप्राणायकत्वेनप्रणयतीत्येवंशीलश्रादिकरस्तीर्थकरस्त्रिने तरतिनेनसंसारसागरमितितीर्थप्रव  
 चनंतदर्थतिरेकादिहसंधस्तोर्थं तस्यकारणशीलत्वात्तीर्थकरस्त्रिने तीर्थकरत्वचतस्यनान्योपदेशबुद्धत्वपूर्वकमित्यतस्याह स्वयमात्मनैवनान्योपदेशतः सम्भगबुद्धेहि  
 योपादेशबलुतत्वादिदितवानितिस्त्रयसंबुद्धस्त्रिने स्वयंसंबुद्धत्वचास्यप्राकृतस्यैवसमाख्यं पुरुषोत्तमत्वादस्येत्यत आह पुरुषांमध्येनेन अतिशयेनरूपपादिनीकृतत्वा

ब्रह्माङ्गरेणं तित्यगरेणं सयंसंबुद्धेणं परिसुत्तमेणं परिससीहेणं परिसवरपुंठरीणं पुरसवरगंधहत्थिणा लोगत्त

तपस्वीतीने भगवंतर्णर्ण्यार्दिकगुणेकरीसहिततीनेकर्मरूपवरीने विदातेमहावीरकच्चीयेतीने श्रुतधर्मनीश्रादिनाकरणेश्वरतीने तीर्थचतुविधसंधनाकरणहा  
 रतीने परनाउपदेसविनापीतेजप्रतिबीधपाम्यातीनेकरी स्वामीसर्वपुरुषमांदिउत्तमतीने पुरुषमांदिहिसंसरीखातीनेकस्यानजाइतीने पुरुषमांदिप्रवरप्रधान-

काचतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासातिरिका सामान्या सर्वदिवसीति । सर्वजघन्योद्वादश भौहर्त्तिकएवेत्यर्थः सचदक्षिणायनपर्यंतदिवसति ।

महाविमाणस्स उवरिस्वान्चूलिञ्चाणं दुवालसजोयणं उहंउप्पइञ्चा इसिपप्पारनामपुढवी प० इसिपप्पाराणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इसिस्सत्तिवा इसिपप्पारत्तिवा तण्हवा तण्णुरित्तिवा सिद्धित्तिवासिद्दालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंन्नेत्तिवा बंन्नेत्तिवा लोकपाप्फुपूरणात्तिवा लोगगच्चूलिञ्चाइ

चिणायननो छेहल्योदिवस मकरसंक्राति पोसीपूनिमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअहं जिहांगइ थकेसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी वार्थसिद्ध महाविमान कहौ तेहनी उपरिली चूलिका शिखराग्रथकी १२ योजनछे कैची उत्पत्तिने जईने इषयागभार नामधुधिवी सिद्धिशिलाकहौ रत्नप्रभा दिक वीजी पृथिवीनी अपेचाये ईषत् थोडेछे प्राग्भार बिस्सार तथा पिण्ड जेहनी चिह्नरत्नप्रग्भार सिद्धिशिलाछे तेहना १२ नामधिय कहता नामकह्या ते कहेछे । ईषत् कहौये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईपयागभार बीजी पृथिवीनी अपेचाए थोडा तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीछे हडेमाखि नाआंख सरीखी पातली ३ तनुतरीघणीज पातली ४ तिहां पहुतेथके जीवनकार्य सोभे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धहुआछे तेहनु आलयकहतां घरते सिद्दाल य ६ तिहां जीवपहुताथकी कर्मथकी मंकाणतिमुक्ति ७ मुक्तजसिद्ध तेहनु आलयवरते मुक्तालय ८ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक ते हनी मुगुट ६ प १० लोक १४ राजलोक तेज्जिक्करी प्रतिपर्णथया तेलोक प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथे चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेलो कागचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी वारपल्योपम आजखोकह्यो । पचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारक

दूर्पवर्तित्वादुत्तमः पुरुषोत्तमस्तेन अथपुरुषोत्तमत्वमेवसिंहादादुपमानचयेणास्यसमर्थयद्वाह सिंहइवसिंहः पुरुषश्चासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहः लोकेनहिंसिंहेश्वरीयं  
 मतिप्रकटमभ्युपगतमतः शौर्यसउपमानं कृतः शौर्यतुभगवतोबाह्येप्रत्यनीकदेवेनभाष्यमानस्याप्यभीतत्वात् कुलिशकद्रिजमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवर्द्धमानामरशरी  
 र कुञ्जताकरणाच्चैत्यतस्तेन तथा वरंचतप्युष्टरीकञ्चवरपुंडरीकवल्गुसहस्रपत्रं पुरुषएववरपुंडरीकं धवलताचास्यभृगुभूतः सर्वाऽऽभसलीमसरहितत्वात् सर्वेश्व  
 शुभैरनुभावैः शुद्धत्वादित्यतस्तेन तथा वरद्यासो गंधहस्तो एववरगंधहस्तो पुरुषएववरगंधहस्तो यथागंधहस्तिनोगंधैरवशंवजाभज्यन्ते तथाभगवतस्तद्विशविहरणेन  
 इतिपरचक्रदुर्भिजजनडमरिकादौनिदुरतानिनश्यतीतिशतयोजनमध्येऽतस्तेनपुरुषवरगंधहस्तिनानभगवान्गुह्येणाभिवोत्तमः किंतुसकलजीवलोकस्यापीत्यत  
 आहलोकस्यतिर्गनरनारकिनाकिलचणजोवलोकस्योत्तमश्चतुस्तिंशद्ब्रुवतिशयाद्यसाधारणगणीपेततयासकलसुरासुरखचरनरनिकारनमस्यतयाचप्रधानीलीको  
 त्तमस्तेनलीकोत्तमत्वमेवास्यपुरुस्कुर्वन्नाहलोकस्यसंज्ञिभव्यलोकस्यनाथः प्रभुलीकनाथस्तेननाथत्वञ्चास्ययोगक्षेमकृत्वावायद्वातिवचनादप्राप्तसम्यग्दर्शनान्निर्मुक्तकार  
 णेनलभ्यतस्यैवपालनेनचेतिलीकनायत्वच्चतात्विकतद्वित्वेसतिसंभवतीत्याह लोकस्यैकाद्रियादिप्राणिगणस्यहितआत्यंतिकतद्रह्याप्रकपेरूपेणानुकूलवृत्ति  
 लोकाद्वितस्तेन यदेतन्नायत्वहितत्वंवाद्वायत्तानांयथावस्थितसमस्तवस्तुसोमप्रदीपेणेननान्यथेत्याहलोकस्यविशिष्टतिर्यग्जनजरामरणरूपस्यांतरतिभिरनि  
 करनिराकरणेनप्रकटपदार्थप्रकाशकृतिरित्वात्प्रदीपइवप्रदीपोलीकप्रदीपस्तेनइदंचविशेषण इष्टलोकप्रार्थित्योक्तमथदृश्यंलोकमाश्रित्याह लोकस्य लोक्यतेइति

पुंडरीककमलसमानजिमकमलर्द्धकपाणीयेनलीपेतिमभगवंतकामभोगेनलीपेट्रेपुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानअन्यतीर्थीमदृक् छेद्वेतिमारीनासेभगवं  
 तनेदेखीनेतेणे लोकसमस्तमांहिउत्तमतेणे लोक ८४ लाखजीवायोनितेहनांनायधणीतेणे लोकभव्यलोकतेहनेहितनाकरणहारतेणे लोक १४ राजप्रमाण



यति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालीचनादत्ता १ निरवलोवेति आचार्योपि मोक्षसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या  
 नान्यस्मैकथयेदित्यर्थः २ आवर्त्तसुदृढध्मायति प्रशस्तयोगसंग्रहाय साधुनाऽऽपत्सुदृढ्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि  
 स्तिओवहाण्यति शुभयोगसंग्रहायैवानित्यतः तदन्यनिरपेक्षमुपधानं परसाहाय्यान्नेच्छतपोविधियमित्यर्थः ४ सिक्खति योगसंग्रहायशिक्षासिवितव्या सा  
 चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षायासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निष्पट्टिकमयति तथैवनिष्पट्टिकमताशरीरस्यविधिया ६ अन्नाययति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू  
 जावर्थित्वेनाऽप्रकाशयति स्वपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभयति अलोभता विधेया ८ तितिक्वति तितिक्षापरीषदादियः ९ अज्जवेति अजिवः ऋजुभावः १०  
 सुत्तिशुचिः सत्यसंयमइत्यर्थः ११ सम्मदिठ्ठिंति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियति समाधियचेतः स्वास्थं १३ आयारविण्णं विण्णं विण्णं तत्रा

निष्पट्टिकमया ॥ १ ॥ शृणायया झुल्लोनेय । तितिरका झुल्लवे सुइ ॥ सम्मदिठ्ठी समाहीय । झायारे

कहौ अनैराअगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणौ यतीने आपदा आख्यायके दृढधर्म करिवो ३ । अनिश्रये अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ ।  
 सूत्रार्थ ग्रहण रूप शिञ्चानी सेवा ५ । शरीरनो निष्प्रतिकर्मना करवो एतले सुश्रूषणकरवो ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोयको तपकरे ७ अलोभताकरवो  
 ८ । तितिक्षा परीषदहनी जयकरिवो ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनू स्वस्थपणू १३ । आचार सहित यईने  
 मायानकरे १४ । विनय युक्तहोय मायानकरे १५ । अदोनपणू १६ । सबेग संसारशोभय अथवा मोक्षनो इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

जीवीभाजप्रमाणमरणधर्मत्वमित्यर्थस्तद्व्यतिरिक्तं जीवद्वयीजीविषुवा दद्यायस्यसजीवद्वयीस्तस्तेन इदं चानंतरोक्तं विशेषणकदंबकं भगवतो धर्ममयस्तत्वात्  
संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्य विशेषणपंचकेनाह धर्मशुतचारिचामकं दुर्गतिप्रपतज्जुष्टाणस्वभावंदयतेददातीति धर्मदयस्तेन तद्दानं चास्यतेद्वेयनादेवेत्यतो  
आह धर्ममुक्तलक्षणं देशयति कथयतीति धर्मदेशकत्वेन धर्मदेशकत्वचास्य धर्मस्वामित्वेति न पुनर्यथानटस्येति दर्शयन्नाह धर्मस्य चायिकज्ञानदर्शनचारित्र्या  
त्मकस्य नाथकः स्वामी यथावत्पालनाद्वर्मानयकत्वेन तथा धर्मस्य सारथिर्धर्मसारथिः यथारथस्य सारथी रथरथिकः मन्त्रांश्च रक्षति एवं भगवांश्चारित्र्यधर्मांगानां स  
यमा मप्रवचनाख्यानां रक्षणोपदेशाद्वर्मासारथिर्भवतीति तेन धर्मसारथिना तथा चतुर्थो हिमवान् ॥ ते चत्वारः अताः पृथिव्याः पर्यन्तास्त्रेषु स्वामि  
तया भवतीति चातुरंतः सचासौ चक्रवर्त्ती च चातुरंतचक्रवर्त्ती वरथासौ चातुरंतचक्रवर्त्ती चेति वरचातुरंतचक्रवर्त्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रव  
र्त्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती यथा हि पृथिव्यां शिषराजातिशयो वरचातुरंतचक्रवर्त्ती भवति तथा भगवान् धर्मविषये श्रेष्ठप्रणेतृत्वं मांध्ये सातिशयः सातिशयो न्तथो

जीवद्वयं बोहिद्वयं धम्मद्वयं धम्मनायगेण धम्मसा  
रहिणा धम्मवरचातुरंतचक्रवर्त्तिणा अप्यग्निहमवस्समणदंसणधरेण

नादातारतेण क्खो धर्मापदेशनाकहणहारतेण धर्मनानायक अधिकारीतेण धर्मनसारथी भूलाप्राणीनेमागन्नातेण च्यारिगतिनीश्रतकारकधर्मतेण करीच  
क्रवर्त्ति सरीखाच्चिभुवननोराज्यपालतेण द्वीपनीपरेसरणानाच्चाण आधारदेण हार चातुर्गतिकसंसारतेह निवारिवानेविषेआधारभूत अप्रतिहत अस्खलित



वति तथाचतृतीयेमडलेयदा सूर्ययति तदाद्वादशमुहूर्तांश्चत्वार्यैकषष्ठिभागा मुहूर्तस्य दिनप्रमाणभवति तद्वै चैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टपण्यधिक शतम्  
यलक्षणेन स्थूलगणितस्य विवक्षितत्वात् परित्यक्तांशाः ३१८२२८ तृतीयमडलपरिधौगुणितेति एकषष्ठ्याचषष्ठिगुणितया भागेहृतैयलभ्यते तत्तृतीयमडलेच  
तु सूर्यप्रमाणभवति तस्यैवाचिग्रहस्तहस्ताख्येकोत्तराणि ३२००१ अशानामेकषष्ठ्याभागाऽध्याय एकोनपचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४८ । ६० त्रयोविंशतिथैक  
षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३ । ६१ एतत्तृतीयमडले चक्षुःसूर्यस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञस्यामुपलभ्यते इह यदुक्ता त्रयस्त्रिंशत्किचिन्नूना तत्रसातिरेकस्ययोज  
नस्यापिन्यूनसहस्रता विवक्षितेति सन्भाव्यते चतुर्दशेमडलेयुनरिदं यथोक्तमेवप्रमाणभवति प्रतिमडलयोजनचतुरशीत्याः साधिकायाः प्रथममडलमानेप्रक्षेप

हि किंचिविसेरूणेहं चरकुफासं हव्यभागच्छुद्ध इमीसेणं रथणप्पन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणि नेरइयाणं  
तेत्तीसं पलिउवमाइ ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं  
तेत्तीससागरोवमाइ ठिई अण्णइठ्ठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्मणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ ठिई प०

चाख्यो निषध पर्वत भणी तिवारे नीजि माडले तेत्तीस हजार भांभेरो दृष्टिगीचर आवि । नीजि मडले सूर्य चारकरे तिवारे वारे मुहूर्त एक मुहूर्तना एकस  
ठिया चार भाग प्रमाणे दिवस होय । अने सर्ववाह्य मडले सूर्य होय तिवारे अेकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगले थके इहां  
ना माणसने दृष्टिगीचर आवि । एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये कीतला एक नारकीनी तेत्तीस पत्थोपमनी आउखी कह्यो । हेठे सातमी पृथिवीये पूर्वादिक दिस  
यकीमाडो काल १ । महाकाल २ । रुरुक ३ । सहारुरुक ४ । एह चिह्न नरकावासाना नारकीनी उल्कट तेत्तीस सागरोपमनी स्थिति कह्यो । विचने

च्यत इति तेन धर्मग्रन्थचक्रवर्तिना एतच्च धर्मदायकत्वादिविशेषणपंचकत्वं प्रकटज्ञानादियोगिसति भवतीत्यत आह अप्रतिहतकटकुब्जपर्वतादिभिर  
 स्वल्पिते अविज्ञादकेना अतएव चोक्तिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरस्तेन एवंविध संवेदनसपदुपेती  
 पि क्लृप्तवान् मिथ्योपदेशित्वाद्योपकारादिति निश्चयता प्रतिपादनायास्याह अथवाकथमस्या अप्रतिहतसंवेदनत्वं सपन्नमन्त्रोच्यते आवरणभावादितदेवाहव्यावृ  
 त्त निवृत्तमपगतं क्लृप्तशठत्वमावरणं वा यस्य सतथातेन व्यावृत्तक्लृप्तना मायावरणयोश्चाभावोऽस्य रागादिजयाज्ज्ञानस्मित्यत आह जयति निराकरोति रागद्व  
 षादिरूपानराती निति जिनस्तेन रागादिजयथास्य रागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएव भवतीत्यतदस्याह जानाति छाद्मस्थिज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक  
 स्तेन अनंतरमस्य स्वार्थसंपत्युपायउक्तोऽधुना स्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वविशेषणषट्कोनाह तीर्णद्वितीयः संसारसागरमिति गम्यते तेन तद्वच्यति  
 परानप्युपदेशवर्त्तिन इति तारकस्तेन तथा बुद्धेन जीवादितत्वं जीवादितत्वं मेवाऽपरेषां तथा मुक्ते न बाह्याभ्यंतरयथिबंधनात् मोचकोन ततएव परे

## विग्रह उभेणं जिणेणं जावणं तन्नेणं तारणं बुद्धेणं बोहिणं मुत्तेणं मोयणेणं सब्बनुणा सब्बदरसिणा

वरप्रधानज्ञानदर्शनते हनाधरणहारतेणे क्लृप्तस्थपणाथीकपटपणाथकौ निवर्त्त्यावीतरागयथातेणे रागद्वेषेन जीपणहृदरतेणे अनरेनिरागद्वेषजीपावतेणे पोतेसं  
 सारसमुद्रतरातेणे अनरेन संसारसमुद्रतरातेणे आपणपैकर्मयकौंकाणातेणे अनरेनिकर्ममूकावेतेणे अनरेनिकर्ममूकावेतेणे  
 सर्वपदार्थना जाणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहयामहावीरमोचजाइवावांछे छेतेमोचकेहवौछे उपद्रवरहितठामयकीचालेनहीतेणे जिहारागमहींजेह

रिभभवतीति एकोननिंश. २८ एवंपरचक्रं परराजसैग्यमितिचिंशः ३० अतिवृष्टिरधिकवर्षइत्येकनिंशः ३१ अनावृष्टिर्वर्षाभावइति क्षात्रिंशः ३२ दुर्भिद्यं दुः  
ष्कालइतित्रयस्त्रिंशः ३३ उष्याइयावाहित्ति उत्पाताअनिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्सहेतुकाये ऽनर्थास्तिश्री त्यातिका स्थायाव्या न्योज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावइति  
चतुस्त्रिंशत्तमः ३४ अन्यच्च पञ्चाहरश्रीइतआरभ्ययेभिहितास्ते प्रभामंडलचक्रमन्त्रयक्तता श्रेषाभवपत्यगेभ्योऽन्वेदेवक्तताइति एतेचयदव्यथापिदृश्यते तस्यतांतर  
मेवमतव्यमिति चक्रवद्विविजयति चक्रवर्त्तिविजितव्यानिचोपखण्डानि उक्तीरेणएचोत्तीस तिल्यगरासमुपज्जति तिसमुत्पद्यन्ते सभवनतीत्यर्थः नत्वेकसमयेजा

वियणं जीयणपणवीसाएण इंती नअवइ २७ सारी नअवइ २८ सचक्कां न अवइ २९ परचक्कां न अव  
इ ३० अइवुठी न अवइ ३१ अणवुठी न अवइ ३२ दुल्लिक्कं न अवइ ३३ पुल्लुप्यन्ताविणं उष्याइया

अतिवृष्टि अधिक वृष्टिनर्होय ३१ । अनावृष्टि अवर्षणनर्होय ३२ । दुर्भिद्यकालनर्होय ३३ । पूर्वं उपना पिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृष्ट्यादिक तथा  
व्याधि ज्वरादिक तत्कालेही उपशमे ३४ । एह एकवीसमाथकीमांडी चौत्रीसमालगे अनेप्रभामंडल एतला प्रतिशय कर्मजयकीहोय श्रेषवौजाभवप्रत्यय  
यको वीजादेवक्तछे मतातरे अन्यथा पणिके । एहचौत्रीस अतिशयकह्या ॥ जंबूहीपनेविषे चौत्रीस चक्रवर्त्तये जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य ज्वेचखं  
ड तेचक्रवर्त्तिविजय कह्या तेकहंछे । मेरुयकी पूर्वापर महाविदेहेमिली ३२ विजय एकभरत एकएरवत एवंसर्वमिली विजयखड ३४ जंबूहीपनेविषे ३४ ।  
दौर्धवैताव्यकह्या वचीस महाविदेह विजयना ३२ । भरतएरवतना २ एव जंबूहीपनेविषे उत्कष्टआरे ३४ । तीर्थेकरउपजे विदेहना वचीसविजय भरतएरवत  
ना २ एव ३४ एकसमेजमआग्नीचारहोय शीताशीतोदाने बिहंकांठे एकसमये वेवहीय अनेवर्तता ३४ कह्या । महाविदेहेगात्रीयेतिवारे भरतएरवते दिवस

षांतयामुक्तं वेपि सर्वज्ञेन सर्वदर्शिना नतु मुक्तावस्थायां दर्शनांतरा इति मतपुरुषेणैव भाविजडत्वेन तथा श्रित्वं सर्वाधारं हितत्वात् अचलं स्वाभाविकप्रायोगिक  
 चलनं हेत्वभावात् अरुजमश्रित्यमानरोगं शरीरमनसोरभावात् अमंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अचयमनाशं सद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतं वापरि  
 पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अव्याबाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावर्तकमविद्यमानपुनर्भावतारं तद्बीजभूतकर्मभावात् सिद्धिगतिरिति नामधेयं यस्य तत्  
 सिद्धिगतिनामधेयं तिष्ठति यस्मिन्कर्मकृतं विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानं चोणीकर्मणो जीवस्य स्वरूपलोकाग्रं वा जीवस्वरूपविशेषणानितुलोका  
 ग्रस्याधेयधर्माणामाधारप्यारोपादवसेयानिति देवं भूतं स्थानं संग्राप्तुकामेन यातुमनसा नतु तत्प्राप्तेन तत्प्राप्तश्राकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति  
 यदुच्यते तदुपचारादन्यथा हि निरभिलाषा एव भगवंतः केवलिनो भवंति मोक्षे भवेच्च सर्वत्र निस्पृहो सुनिःसत्तम इति वचनात् तदेव मगणितगुणगणसंपदुपेतं न  
 भगवता इमेति इदं वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्ष्यमासन्नश्च द्वादशांगानियस्मिंस्तद्वादशांगं गणिन आचार्यस्य पिटकमिव पिटकं गणिपिटकं यथा हि बालं जुक्तं गणिजक

सिद्धाय लभ्यते मयं तं मय्युपगच्छामः ॥  
 तजहा ॥

नो अंतनथी जेह नो चयनथी जिहां किंसी आबाधानथी जिहां थकी जपराठी आविमोयथा सिद्धिगति एह वी जेह नो नामधेयं एह वेठामे मोक्षे जाइवानी बांछा  
 करे छे तेण महां बीरे एह वा द्वादशांगी सन्नगणी कहिये आचार्य तेह न पेटी सरिखा के जिम व्यापारी यां ने पेटी रत्नादिक धननी आधार होइ तिम आचार्य ने एह द्वादशां

कारत्वम् विच्छिन्नवर्णपद्वाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम् ३२ सत्त्वपरिणतत्वं साहसोपेतता ३३ अपरिखितत्वं अनायाससंभवः ३४ अशुच्छेदित्वविवक्षितार्थसम्यक्  
सिद्धियावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयतेति ३५ तथादत्तः सप्तमवासुदेवः नन्दनः सप्तमबलदेवः एतयोश्चावश्यकाभिप्रायेण षड्विंशतिर्द्वेनषामुच्चलश्रवति सुबोधतत् य  
तोऽरनाथमग्निसामिनोरन्तरेतावभिहितौ यतोवाचि अरमन्निग्रन्तरेदोशिकेसवा पुरिसयुन्दरीयदत्तति अरनाथगन्निनाथयोश्चोच्छ्रेयश्चिग्रत्यचविंशतिश्च धनु  
पामुञ्चत्वमेतदंतरालवर्त्तिनीयवासुदेवयोः षष्ठसप्तमयोरैकोनानि श्रत्यष्टविंशतिश्चधनुषायुज्यतइति ब्रह्मोक्तानुपचित्रित्यदिदत्तनन्दनौ कुशुनाथतीर्थकालेभवतो  
नचैतदेवजिनांतरेष्वधीयतइति दुरवबोधमिदमिति सौधर्मकलेसौधर्मावतसकादिषु विमानेषुसर्वपुपचसभाभवति सुधर्मसभा १ उपपातसभा २ अभिविक  
सभा ३ अलकारसभा ४ व्यङ्गसायसभा ५ तत्रसुधर्ममध्यभागेमणिपीठिकोपरि षष्ठियोजनमानोमाणवकीनामचैत्यस्तभ्योस्ति तत्रवैरामएसुत्ति वज्रमयेषु

कुंथणं च्छरहापणतीसं धणूइ उहं उच्चत्तेणं होल्या दत्तेणं वासुदेवे पणतीस धणूइ उहं उच्चत्तेणं होल्या नंदणेणं  
बलदेवे पणतीसंधणूइ उहं उच्चत्तेणं होल्या सोहम्मे कप्पे सत्ताए सुहम्माए माणवएचेइशरुक्ते हेछाउव

साहस सहित बोलवो ३३ । अनायासे बोलवो ३४ । कान्तिवानो विषय समाप्त नहोय त्यांलगे वचननो विच्छेदन नहोय ३५ । एह भगवतनी वाणीनागुण  
जाणिवा एह पैचीस वचनातिशय कक्षा ॥ कुशुनाथ सतरमा अरिहंत ३५ धनुष ऊचपणे इया । दत्तनामा सातमो वासुदेव अरनाथनेवारै संभूअचक्रवर्ति  
पछेइवोति ३५ । धनुष ऊच पणे इया । नंदननामा सातमो बलदेव ३५ । धनुष ऊचपणेकहो । सौधर्मकले शभा सुधर्माने विपे साठियोजनप्रमाणमाणवक  
नाम चैत्यस्तभनेविषै हेठे अने उपरि अर्ह एतले साढावारह योजन वर्जोने मध्यने विपे पैचीस योजने वज्रमय गोल वाटला समुद्रकडा तेहने विपे जिन

स्यपिपिटकं सर्वस्वाधारभूतं भवति एवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वस्वाधारकल्पं भवति इति भावः प्रज्ञप्तं तीर्थकरनामकर्मोदय वर्तितया प्रायः कृतार्थनापिरोपकाराय प्रकाशितं तद्यथेयुदाहरणोपदर्शने आचारद्वयादि द्वादशप्रदानि निर्वचनानीतिकंठानि तत्पर्यन्तं तत्र द्वादशांगेण

कृतार्थनापिरोपकाराय प्रकाशितं तद्यथेयुदाहरणोपदर्शने आचारद्वयादि द्वादशप्रदानि निर्वचनानीतिकंठानि तत्पर्यन्तं तत्र द्वादशांगेण

अथारि १ सूयगङ्गे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपद्धती ५ नायककहाण ६ उवासगदसाण ७  
अंतगळदसाण ८ अणुत्तरोववाइदसाण ९ परहावागरणं १० विवागसुए ११ दिठ्ठिवाए १२

गीसूत्रज्ञानादिकगुणरत्नानी आधारक कच्छोक्ते तैकहक्के आचारांगसूत्रप्रथम १ जेहमाहि साधुनी आचारपाभीये । बीजसूत्रकृतांग जेहमाहि खसमयपरसमयनी वक्तव्यतापाभीये २ त्रीजंस्थानांग तेमाहि एकथकीमाडीदसलगे संख्यानादसअध्ययनक ३ । चीथीसमवायांग जेहमाहि एकथकीमाडीकोडाकोडिनीसंख्या ४ पांचमोविवाहप्रज्ञतीजेहमाहि छत्रीससहस्रप्रश्नापांभीये एतलै भगवतीसूत्र ५ छठ्ठीज्ञाताधर्मकथांगजिहां १८ न्यायअने अजंठकीडिधर्मकथाएछठ्ठी ६ सातमोउपासक दशांगउपासक आकतेहनादशअध्ययनक ७ आठमो अंतकृतदशांगजेथती ए संसारनी अंतकीधीतिहना आठवर्गजेनीहि छै नवमीअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेह यतीअनुत्तरविमानेअपनातेहनातीनवर्गजिहांपाभीये ८ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमाहि अगुष्टादिकप्रश्नोअधिकारहुनी हि वडां पांचआ अवापांच संवरहारइम १० अध्ययनक १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनी विपाककै एतले १० सुखविपाकीया १० दुखविपाकीया अध्ययनक ११ बारमोदृष्टिबादते १४ पूर्वएक

॥  
 कायां विमानप्रविभक्तौकालिकचतुर्विगेषस्तत्रकिलग्रहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गप्रत्यध्ययनमुद्देशस्येकालादिति यथाश्रयुजः पौर्णमा  
 स्यांपट्त्रिंशदगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्तिकस्यैकगुलितत्वात्सप्तत्रिंशदगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशत्सानकव्य  
 तमेव नवरंधणुपिठ्ठि जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तत्रयस्य हैमवतऐरव्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डेधनुःपृष्ठेउच्यत  
 तत्पर्यंतभूतसरलप्रदेशपत्तीतु जीवेद्वज्जीवेद्विति एतत्सूत्रसवादिगाथा च चत्तालारात्तसया अष्टतीससहस्रदसकलायधनुति तथाअथस्मृति अस्त्रोमेर्यंतस्तेनां

॥  
 तृतीसं सत्ततीसं जोयणाइं उहुंउच्चत्तेणं प० खुल्लियाएणं विमाणपविन्नत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण  
 काला प० कत्तियवज्जलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीढायं निहत्तइत्ता ण चारचरइ ॥  
 ३७ ॥ पासस्सणं झुरहत्ते पुरिसादानीयस्स झुत्ततीसं झुज्जियासाहस्सीत्ते उक्कोसिया झुज्जियांसंप

सोजीपूनिमे हस्स प्रमाण दणनी छाया मापीजे ३६ अंगुलै पौरुषी हीय अने अगुल सत्तरिण सातिदिने एकेक अगुल छाया वधारिये तिवारे कार्तिक क्कण  
 सातमी दिने सूर्य सैत्तीस अगुल पौरुषी छाया प्रते निवर्तवीकरीने चारप्रते करे । इति सैत्तीसनो समवाय सपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिंवेअष्टतीसमी सम  
 वाय लिखेके । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमाहि महा सोभागी तेहने अठत्तीस आर्याना सहस्स उत्कट्ठआर्या साध्वीनी सपदा हुइ । जंबूद्वीपल  
 क्षण वृत्तत्रेच ने हैमवत ऐरवत वीजे अने क्कडे केचे करी सहित ने आरीपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखडते धनुपृष्ठकहीये अने तेहने पर्यंत भूत सरल सूक्ष्मप्र  
 देश पत्तिने जीवा सरीखी जीवा कह्ये तेह धनुपृष्ठ अठतीस सहस्स सातसे चालीस योजन । ३८७४० । १८ । १० । कला दश भाग उगुणीसहाइया ए

मिथलंकारे यत्तच्च पुंशे मंगं समवायं इत्याख्यातं । तस्यायमर्थः । आभादि रनिधेयो भवतीति गम्यते तद्यथेति वाचनान्तरं द्वितीयसंबंधात् समवायस्येति । इह च विदुः  
 धाम्पदार्थमभिदधता सक्तमेणवासा वभिधातव्य इति व्याख्येयत्वाच्चाप्यर्थः एकत्वादिसंख्याक्रमसंज्ञानर्णान् वक्तुं वा स आदौ केवलं विग्रिष्टानात्मनश्च सवपदार्थाभा  
 जकत्वेन गणनत्वादात्मा दीन्सर्वस्य वस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेन सप्रतिपक्षानेय एगेभाया इत्यादिभिरष्टादशभिः सूत्रैराह । नानागे एकार्थानि प्रायस्तथापि किंचिदुच्यते  
 एक आभाकार्यं विदितमिति गम्यते । इदं च सर्वसूत्रेष्वनुगमनीयं तत्र प्रदेयार्थतया असंख्यातप्रदेशोपि जीदद्वर्ग्यतया एकः अथवा प्रतिक्षण पूर्वस्वभावज्ञयाऽपरस्वरूपो  
 त्यादयोगेनानंतमेदोपि कालत्रयानुगामिधेतन्यमात्रपेक्षया एक एव आत्मा प्रथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वे व्यात्मना संग्रहनया श्रितसामान्यरूपापेक्ष  
 यैकत्वमात्मन इति तथान आत्मा अनात्मा घटादिपदार्थः सोऽपि प्रदेयार्थतया ऽसंख्येयानंतप्रदेशोपि तथाविधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थपेक्षया एक एव संतानापेक्ष

तत्पणं जेसे चउल्ये च्युंगे समवायुत्तिञ्चाहिते तरसणं च्युमठे पं० तंजहा एगे च्युणाया एगे च्युणाया

अंग एवाद्दशान् गोमांदि जेहर्तैह चोथो अंग एतले प्रयचन रूपपुरुषने अंगसरीखो अंग समवायांगसन्नाह हि चैकत्वात् समवायांगकहतां सम्यक्प्रकारे अधि-  
 कपणे जीवाजीवादिपदार्थजेहने विषे ते सप्रधायांगकहिये अर्थाधिकारसूत्रेकहेतेमाटे प्रधायांगकलपदार्थानां भीक्षार आत्मा छेतेमांटे प्रधानपणार्थकौ आत्मा प्रथम  
 अवतस्योचितनावंत आत्मा कहोयेय अपि संसारमहिजो वअनंता छे पं० एट्ठ च्युनो मुपे चा एजो वट्ठ च्यु एक जहोये एम भागले सगले पदे जाणिवी १ ते सववायांगनो एअ  
 र्थ कहिये छे १ ते अमुकमेक हे छे एक आत्मा जीव सामान्य प्रकारे एक पणी एम सववच एक अनात्मा जीवरहित वटादिक पदार्थ एकदंड भंडो व्यापारवीयोगत्रणिनोति दंड



दिशिं पित्तिवाचं स्यात् तत्र चैवमभिलाषाः जंबूद्वीवस्सणं दीवस्सदाहिणिष्ठाओदग्नीभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिक्केचरिमतं एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्सा  
इ' अवाहाएअतरे पव्वत्ते एवमन्यत्सू चद्वय नवरं पच्चिमायांसखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुच्चत्वारिंशस्थानकोपिकिचिक्किख्यते  
चतुच्चत्वारिंशत इस्सिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकयुतविशेषभूतानि दियालीययुयाभासियत्ति देवलोकाच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोका  
चुताभासितानिक्कचित्थाठः देवलोयमुयाणं चोयालीसइस्सिभासियज्जयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइति पुरुषः शिथप्रशिथादिक्कमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविन्नत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥  
चोयालीसं अज्जयणा इसिन्नारिया दियालीगच्चुयान्नासिया प० विमलस्सणं अरहत्ते ण चउच्चालीसंपुरि

थी माळोने गोखूभ नाम नागराजाना आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत केहल्यो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आवाधायि अतर कळो एतले जगतो य  
को ४२ हजार योजन गोखूभ पर्वतके तेह पर्वत एक सहस्त्र योजन पिडुल पण्णेके एव ४३ सहस्र योजन थया । एम चिहुदिशे दक्षिण जगतीथकी माळो  
दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पच्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडो विमान गविभत्तिये चीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कक्षा ॥  
इति तेयालीसमी समवाय सपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिने चौतालीसमी लिखिछे । चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकयुत विशेषभूत तेकिहवाहं

देव लोक थी चंख्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कक्षा । विमलनाथ अरिहतना चौतालीस पुरिसयुग शिथ प्रशिथ्यादि क्रमे आख्या काल विं  
षनी परे अनुक्रमे साधर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुपुछे सौधा निरंतर पणे ४३ पाट मोक्षे गया यावत् शब्दे करी सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया । दर्श

यापि तुल्यरूपापि चयातु अनुपयोगलक्षणैकस्वभावयुक्तत्वात्कथंचिद्विभक्तस्वरूपाणामपि धर्मास्तिकायादीनामनात्मनामेकत्वमवसेयमिति तथा एकोदण्डोऽप्र  
युक्तमनोवाकायलक्षणै हिंसामात्रं एकत्वचास्यसामान्यतयोद्दिशादेव सर्ववैकल्यमवसेयं तथा एकोदण्डः प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्र वा तथा एकाक्रियाकायाधि  
क्यादिका आस्तिक्यमात्रं वा तथा एकाश्रक्रिया योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वं वा तथा एकाक्रिया स्त्रिविधोऽयसंख्यप्रदेशोपि वा द्रव्यार्थतया तथा एकोऽलो  
कोऽनंतप्रदेशोपि द्रव्यार्थतया अथ चैते लोकालोकयोर्बहुत्वव्यवच्छेदेन परस्परसूत्रे अभ्युपगम्यते च कैश्चिद्बहुलोकाश्चेतस्तत्त्वज्ञानाश्रयोपि तावन्तएवेति एवं सर्वत्र  
गमनिकाकार्या । नवरंधर्मो धर्मास्तिकायः अधर्मोऽधर्मास्तिकायः पुण्यशुभं कर्म पापमशुभं कर्म बंधीजीवस्य कर्मपुद्गलसंज्ञकः स चैतत्सामान्यतः सर्वकर्मबंधव्य  
वच्छेदावसरेया पुनर्बंधाभावादानेनोद्दिष्टेन मोक्षाश्वसवरवेदना निर्जराणामप्येकत्वमवसेयमिति इह चानात्मग्रहणेन सर्वधामनुपयोगवतामेकत्वं न व्यपुन

एगेदंरुएगेच्युदंरु एगाकिरिया एगाच्युकिरिया एगेलोए एगेच्युलोए एगेधम्म एगे  
पुस्से एगेपावे एगेबंधे एगेमोस्के एगेच्युसवे एगेसवरे एगावेयणा एगाणिज्जरा

एकअदण्डभलामनोप्रभृतियोगत्रणि एकक्रियाकारिवीतेक्रियाकायिकादि एकश्रक्रियायोगविरोधलक्षण एकलोकदेश्यपित्रिणिलोकछेपरद्रव्यार्थपणेएक एकअ  
लोकपचास्तिकायरहित एकधर्मास्तिकायचलनस्वभाव एकअधर्मास्तिकायस्थिरस्वभाव एकपुण्यशुभकर्म एकपापअशुभकर्म एकबंधजीवनेअने कर्मपुद्गलनेजो  
डिवो एकमोक्षसर्वकर्मबंधथकीसूकावणो एकआश्रयकर्मबंधनीउपाय । एकसंयवरकर्मबंधनाउपायनीनिरोधक एकवेदनाशुभाशुभकर्मनोउदयकोलेभोग

॥ ८ ॥  
 ॥ ॥  
 एवर्त्ति यत्तद्वृणा विमानावलिकानां मध्यभागवर्त्तिवृत्तविमानैर्नृकसङ्घविभागयिति निर्दिष्टागनि निर्दिष्टागनि मत्स्मरणपव्ययस्वेत्वादिमन्त्रे लवणसमुद्राग  
 न्तरम्परिध्यपेक्षांतरदृष्टव्यमिति सत्वेविणमिल्यादि चन्द्रस्यत्रिशुक्रतोभोग्यनक्षत्रेण समक्षेत्रमुच्यते तदेवसाईद्वारं द्वितीयमर्द्धमस्येति द्वाई मित्येवव्युत्पादना  
 तथापिधक्षेत्रयेषामस्ति तानिद्वाद्वैविकाणि नक्षत्राणि अतएवपञ्चचत्वारिंशन्मूहर्त्ताष्ट्रेण सार्द्धयोगः सत्स्वन्वोयोजितवति त्रिन्नेवगाहा नौयुत्तराणि उत्त

धणूइ उहुंउच्छेपणं होत्या मदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिपि पणयालीस २ जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे  
 प० सहेविणं दिवहुखेत्तिया नखत्ता पणयालीसं मुज्जे चदेण सद्धिजोगजोइंसुवा जोइत्तिवा जोइस्सत्तिवा  
 तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एण्डनस्कत्ता पणयालमुज्जत्तसंजोगा ॥ महालियाएणं विमाणपवि

पणे पिहुलपणे कही । एमज धर्मनाथ अरिहत्त पेतालीस धनुष प्रमाण जं चपणे हुआ । मेरू पर्वत ने चिहुदिशें पेतालीस पेतालीस हजार योजननी अवा  
 धायें आंतरी कही । लवण समुद्रनी आयेतर परिधी ने विचे आंतरी कही । महाविदेह क्षेत्रनी जीवा लाख योजन लात्रपण्हे तेमाथी दसहजार योजन  
 नी मेरू काडिये वी नेज लाख जवर्षा तेहनी अर्द्ध मेरूथकी पूर्वणी जगती ४५ हजार योजने धाय । एम चिहुदिशे । चद्रमाने ३० सुहूर्त्त पर्यंत भोग्य जे  
 नक्षत्रक्षेत्र ते समक्षेत्र कहिये तेही क्षेत्र साई कीजिये एतने ३० सुहूर्त्त माहि १५ घातिये तो ४५ सुहूर्त्तनी क्षेत्राय ते ४५ सुहूर्त्तिया नक्षत्र द्वई क्षेत्रि  
 या कहिये एणें कारणें ते नक्षत्र पेतालीस सुहूर्त्त लगे चद्रमाने साये योगकरेछे । करता हुआ करस्ये । तेकिहा नक्षत्रछे तेकहैछे । उत्तराफाल्गुनी १ उत्त  
 राषाढ २ उत्तराभाद्रपद ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ एह ६ नक्षत्र पेतालीस सुहूर्त्त लगे चद्रमाने साये योग करे । वडी विमान प्रविभक्तिये पां

लौकादितया एकत्ररूपेण ततसामान्यविशेषोपेक्षमवगंतव्यमिति एवंवाक्सादीनां सकलशास्त्रप्रपञ्चानामर्थानां प्रत्येकमेकत्वमभिधायानात्मानात्मपरिणा-  
मरूपाणामर्थानां तदेवाह जंबूद्व्यादिसूत्रसप्तकमाश्रयविशेषाणां तथा इमीसैरयणमित्यादिसूत्राष्टादशकमाश्रयिणां स्थित्यादिधर्माणां प्रतिपादनपरं सुबोध-  
नवरं जंबुद्विवेदीवे इहसूत्रे आयामत्रिकुलभेण तिक्कचित्पाठोद्दिश्यते क्वचित्तु चक्रवालविकुलभेणति तत्र प्रथमं 'सभवत्यत्रापि तथाश्रवणात्सुगमश्च द्वितीयरत्नव्याख्ये  
यच्चक्रवालविश्वभेणहृत्तव्यासेन इदंचप्रमाणयोजनमवसेयं यदाह आश्रयगुणवत्यु उस्सेहपमाणओमिणसुदेहं नगपुठविविमाणइ' मिणसुपमाणगुलेणंतु ॥ १ ॥  
तथा पालकंयानविभानं सौधर्मद्रसवध्यपि आभियोगिकपालकाभिधानं देवकृतं वैक्रियं यानंगमनतद्धविमृतं यायतेनेनेतियानं तदेवविमानयानविमा

## जंबुद्विवेदीवे एगंजोयणसयहस्सं आयामविस्संनेणं पन्नत्ते अण्णड्ढाणे नरएण्णंजोयणसयहस्सं आयामविस्संनेणं पं० पालए जाणविमाणे

विवी एकनिर्जरा आत्मानाप्रदेशयौकर्मपुद्गलनंवैगलंकरिवो एजंबूद्वीपसकलद्वीपमाहिमुल्यद्वीप एकयोजनशतसहस्ररत्नले । एकलाखयोजनप्रमाणांगुले ।  
लांबपणेअनेपिहुलपणेकह्योतौर्थकरे । सातमीनरकष्टधिवीये पाचनरकावासांके तेमाहिद्विष्टेप्रद्वीगिनामनरकावासांकेयोजनशतशहस्रएतलेएक  
लाखयोजन लांबपणेअने पिहुलपणेकह्यो । पालकयानविमानसौधर्मद्रसंवंधिप्रद्वीगोदेवताएनीपजाविओगमननेअर्थते एकलाखयोजनजाणवो लां  
वपणेअनेपिहुलपणेकह्यो । पंचानुत्तरविमानमाहि विचलोसर्वाथिसिद्धनामोर्विमानच्छेतेमांहि एकाभवतारीजीवउपजेतेमांटे महाविमानकश्चियेते एकलाखयो

ते जयाणमित्यादि इहलक्षप्रमाणस्य जबूद्धीपस्याभयतो ऽश्रीलुत्तरर्योजनशते ३६० ऽपनीते सर्वाभ्यन्तरस्य सूर्यमण्डलस्य विष्कम्भोभवति तत्परिधिस्त्रीणि लक्षाणि पञ्चदशसहस्राणि एकीननवत्यधिकानि ३१५०८८ एतच्चसूर्योमुहूर्त्तानां षष्ठ्यागच्छतीति षष्ठ्याऽस्यभागहारमुहूर्त्तं गतिलभ्यते साचपञ्चयोजनसहस्राणि द्वैचैकपञ्चाशदत्तर्योजनशते एकीनचिषष्टिभागयोजनस्य ५२५१ । २८ यदाचाभ्यन्तरमण्डले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तादिवसप्रमाणं तद्वननवभिर्मुहूर्त्तः मुहूर्त्तं गतिगुण्यते ततश्चदयोक्तं चक्षुः स्पर्शं प्रमाणमागच्छतीति अग्निभूति वीरनाथस्य द्वितीयोगणधरस्तस्य चेह सप्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवासउक्तं आवश्यकेतुषट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासंपूर्णत्वादविवक्षा इहलक्षपूर्णस्यापि पूर्णविवक्षेति सन्भावनयानविरोधइति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशत्स्थानके

तयाणं इहगयस्स मणस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहि दोहियतेवछेहिं जोयणसण्हं एक्कवीसाए  
 णसंछिन्नागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्कुफासं हस्समागच्छइ थरेण अण्णिग्नूइं सत्तचत्तालीसंवासाइं अगारमस्सेव  
 णसिन्ता मुंठेअविन्ता अगाराणं अण्णगारिय पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सणं रत्तो चाउरतचक्का

सर्वाभ्यन्तर मण्डले आषाढी पूर्णिले कर्क सक्कातिये निबध पर्वतने जपरि ६५ मण्डलाक्के तेमाहिथी पहिले मण्डले उपसक्रमीने भ्रमणकरे तिवारेइहां भर  
 तद्वेवगत मनुथ ने सेतालीस हजार बेसे त्रैसि ऽ योजन अने १ योजनना ६० हिंया २१ भाग एतनो वेगलो थक्के दृष्टिगोचर आवे । स्थविर बडा वयपर्या  
 यश्रुतेकरी अग्निभूति बीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मुड थईने गृहस्थाश्रमथी साधुपणी पाय्या । इति सेतालीसमी समवाय  
 सपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिंवे अठतालीसमी समवाय लिखेके ॥ एकेक् चिहुदिशिना अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अठतालीस हजार पाटण कल्ला ।

हि प्रथमे सप्तके प्रतिदिनमेकैकभिन्नाग्रहणात् सप्तभिन्नाभवन्ति द्वीतीये द्वयो २ ग्रहणाच्चतुर्दश एव सप्तमे सप्तानां ग्रहणा देकोनपचाशदित्येव सर्वमौलनेयथोक्तमानम्भवतीति अहासुत्तति यथा सत्रग्रथागमसम्यङ्न्यायेन स्पष्टाभवतीति शेषोद्घटय्यः सपन्नजोव्यथा भवति न मातापितृपरिपालनामपेक्षत इत्यर्थः ठिइत्ति आशुक् ॥ ४८ ॥ तत्रपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवासुदेवोऽनतजिज्जिनकालभावी तथाकचत्ति उत्तरकुरुषुनीलवदादीना पञ्चानामानुपूर्वीव्यवस्थिता

रकुपठिमाए एगूणपन्नाए राइदिएहि लब्बजयन्निस्कासएणं अहासुत्तं अाराहिया नवइ देवकुरुउत्तरकुरा  
सुण मणुया एगूणपन्तराइदिएहिं सपन्नजोव्यथा नवति तेइदियाण उक्कोसेणं एगूणपन्तराइदिया ठिइ  
प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुखयस्सणअरहले पंचासअज्जियासाहसरीले होल्या अणंतेणं अरहा पन्ना

त्रैजि सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ बीजेदिन ८ एम सातमेदिन २१ एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ बीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८ एम पाचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० बीजेदिन १५ एम सातमेदिन २५ एम छठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ बीजेदिन १८ एम सातमेदिन ४२ एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ बीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४८ एम सर्वमिलौ १८६ भिन्नाग्रहं । देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे युगलिया मनुथ ४८ रात्रि दिवसे ४८ अहोरात्रोये संप्राप्त यौवन होय एतले ४८ दिनलगे माइत पालना करे पछे भाइ बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्ते । तेइ द्विय जीवनो उल्लंघ्यो ४८ रात्रि दिवसनी आउखो कह्यो । इति ४८ समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिंवे ५० मो समवाय लिखेके । सुनिसुवत बीस

स्नाटे मध्यमावसेयति एवमेकसागरोपमं त्रयीदेशेप्रस्तेउत्कृष्टास्थितिरिति असुरिन्दवज्जियाणतिचमरवलिवर्जितानां भोमेज्जाणति भवनवासिनाभूमौष्टधि  
 व्यांरत्नप्रभाभिधानायां भवत्वान्तेषामिति तेषांचैकंपत्न्योपमं मध्यमास्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोनेद्वेपत्नेपसे साआहच दाहिणदिवद्वपलिय दीदेसूणत्तरिक्षाणं  
 ति असंखेज्ज्यादि असंख्येयानिवर्षाख्यायुयंवाति तथा तेचतेसंज्ञिनश्चसमनस्कास्तेचते पंचेद्वियतिर्यग्योनिकाशेत्यसख्येयवर्षायुः सन्निपचेद्वियतिर्यग्योनिका  
 स्तेषांकीषांचिदेहैमवतैरख्यवतवर्षयो रुत्यवा स्तेषा मेकपत्न्योपमस्थिति रेवंभनुष्यसूत्रमपि नवरं गभगर्भाशयव्युत्क्रान्तिरुत्यतिर्यगर्भव्युत्क्रान्तिका नसमूर्च्छं न

असुरकुमारंदवज्जियाणं त्रयोमिज्जाणंदेवाणंअत्येगइअणं एगंपलिनुवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउय  
 सन्निपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं अत्येगइअणं एगंपलिनुवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगप्पवत्तं  
 यमणयाणं अत्येगइयाणंएगंपलिनुवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्खोसेणंएगंपलिनुवमंठिई प० ।

काहो असुरकुमारंद्रचमरेन्द्रवलेन्द्रवर्जीने भवनपतीदेवतानी एकेकनोकेतलाएकनी एकपत्न्योपममिज्जाकाहो । असंख्यातावर्धनाआजखानासंज्ञी  
 गर्भजपंचेद्वियतिर्यचनीएतलैहैमवतएरख्यवंतयुगलचे धनागर्भजतिर्यचनीयुगलियासूत्रमनुथतिर्यचनी आजभोउत्कृष्टीजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपुंस  
 कागर्भजमनुथनूंआजधंपूर्वकोडिनंपणिककोक्खेतेमाटे अत्येगइयाणपाठप्रहोभितलाएकनंपत्न्योपमस्थितिआजखोकाहो । असंख्यातावर्धनाआजखानागर्भज

यंभचेराणिति आचाराः प्रथमं श्रुतस्तत्त्वाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमेसध्तोद्देशका इति सन्तैवीद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चलारं चलारः एवं पच अष्टौ चलार. षट् सप्तैवमेकपञ्चाशदिति सुणहेति चतुर्थोबलदेवअनतजिज्जिननाथकालभावी तस्यैकपचाशद्वर्षलक्षाण्युः पुनरुक्तमावश्यकैतु पचपचाशदुच्यते तदिदमतातरमिति एकावन्नउत्तरपगडीअीत्ति दर्शनावरणस्थनव नाज्जोहिचत्वारिणदिल्लेकपचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथदिपचाश

जोयणाइ विस्संजेणं प० ॥ ५० ॥ नवरहंबंजचेराणं एकावन्नं उद्देशणकाला प० चमरस्सणं  
असुरिदस्स असुररत्तो सन्नासुधम्मा एकावन्नखंजसयसंनिविठा प० एवंचेवबल्लिस्सवि सुप्पजेणं बलदेवे  
एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसद्धुस्सकप्पहीणे ढसणावरणनामाणं दोरहंक

चाच्छे । इति ५० समवाय संपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मो समवाय लिखे । आचारंगे प्रथमश्रुतस्तत्त्वे नव वल्लचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक ते  
हना ५१ उद्देशानाकाल कक्षा । प्रथमाध्ययमे ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्वमिली ५१  
उद्देशनकाला कक्षा । वीजो विचार २५ ठाणें जाणिवो सही । चमरेद्र असुरराजनी सुधर्मासभा एकावन से स्सभेकरी सन्निविष्ट सहित कही । बलदेव अ  
सुरद्रनी असुरराजानी सभा सुधर्मा ५१ सेस्सभेकरी सन्निविष्ट कही । अनतनाथने वारे सुप्रभनामा चीथा बलदेव ५१ लाख वर्षनी उल्काट आउखी पालीने  
सिद्धबुद्धययी सर्वदुःखयकी प्रक्षीणययी मोचगयी । आवश्यकी ५० लाखवर्षकक्षा तेमतातर । बीजोक्कम दर्शनावरणाय तेहनी उत्तरप्रकृति ८ क्खीनामकम तेहनी



जादृत्यर्थः वाणमंतराणदेवाणंति देवानामेव नतुदेवीनां तासामर्षपत्न्यापस्यप्रतिपादितत्वात्जोइसियाणंदेवाणंति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां  
नापिचन्द्रादिदेवीनां पत्नियंचसयसहस्रं चन्द्राणविश्राजजाणी इतिवचनात् सोहम्मेदेवाणंति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीताःसौधर्मेहिपत्न्योपमाक्षीनत  
रास्थितिर्जघन्यतीपिनास्ति इयंचप्रथमप्रस्तावसेया सोहम्मेकप्ये अत्येगइयाण देवाणंएगंसागरस्त्रिगं देवानामेवयहण नतुदेवीनांउत्कृष्टतीपितत्रतासां  
पचाशत्तदयोपमस्थितिकत्वात् तथा एकंसागरोपममितिगम्यमस्थित्यपेक्षया उत्कर्षतस्तत्रसागरोपमद्वयसङ्गावात् प्रेरुक्पुष्पेक्षयारत्नैषां सप्तमेप्रस्तटेमध्यभावेसे

जोइसियाणं देवाणंउक्त्तोसेणं एगंपलिनुवमं वाससयसहरसमज्जहिंयं ठिई प० । सोहम्मेकप्येदेवाणं जहत्तणे  
एगंपलिनुवमंठिई प० । सोहम्मेकप्ये देवाणंअत्येगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प० । ईसाणेकप्येदेवाणं जह

संस्त्रीपंचेन्द्रियमाणसूतल्लिहमवतंएरण्ययतस्त्रिसंबंधीयुगलियांमाणसनीकेतलाएकनीपत्न्योपमस्थितिआजपूष्पाक्षीभगवतेवाणव्यंतरदेवनी उत्कृष्टोएकपत्न्यो  
पम जघन्य १० सहसवरसनीकक्षीजोतिषीचंद्रमाविमानवासीदेवतानीउत्कृष्टोएकपत्न्योपमएकवर्षलाखे अधिकएवडौस्थितिकहीतीर्थकरदेवे । सौधर्मेप्रथम  
देवलीकेदेवनी जघन्यएकपत्न्योपमस्थितिआजखीकक्षी सौधर्मेदेवलीकेदेवतानीकेतला एकनी एकसागरोपमस्थितिआजयो देवीनीसागरोपमनकहिवाउत्क  
ष्टोपंचासपत्न्योपमकक्षी ईशानवीजेदेवलीके देवनीजघन्यभाभेरी एकपत्न्योपमएवडौस्थितश्चनंतग्यानीये कहो ईशानेदेवलीके देवनीकेतलाएकनी एकसाग

॥  
 ष्टितचद्रमासी भवति द्वाभ्यांचताभ्यामृतुर्भवति तत एकीनषष्टिअहोरात्राण्यसौभवति यच्चेद्विषष्टि भागद्वयमधिक तन्नविचिंतं । सम्भवत्यैकीनषष्टिः पूर्वं  
 लक्षाणि गृहस्थपर्याय इहोक्तः आवश्यकतु चतुःपूर्वांगाऽधिकासीक्तेति ॥ ५८ ॥ अथषष्ठिस्थानकं तत्र एगमेगीत्यादि चतुरशीत्यधिकशतसंख्या

राइदियाइ राइदियग्गेणं प० सन्नवेणं अरहा एगणसठि पुहसयसहस्साइ अगारमज्जे वसिन्हा मुंठे जाव  
 पवइए मल्लिस्सणं अरहउ एगणसठिं उहिनानिसया होत्या ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंठले

सूरिए सठिए सठिए मुज्जत्तेहि सचाइए लवणरुसणं समुदरुस सठिनागसाहस्सीउ अण्णोदयं धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तीसतीस दिहाडा जोइये तो विहु मासना ६० दिन जोइये तो ५८ किम कह्या । कृष्ण पक्षनी पखपाडा थी मांडी  
 पूनिमे मास पूरी थाय एके मासे दिन २८ अने एक दिनना वासठिया बत्तीस भाग होय एह २८ दिन वेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनी १ दिन वै भाग  
 थाय ते पाक्कला ५२ दिन माहि घालिये एतले ५८ दिननी ऋतु ऋाय उपरि २ भाग उगस्या ते अण्णोदय लेख्या जाणिया । सम्भवनाथ अरिहत बीजा  
 उगुणसठो पूर्व लाख लगी गृहस्थाश्रम माहि बसीनं मुड इव्य भावभेदे होय आगाराओ अण्णारिय गृहस्थाश्रम धक्की अण्णारितायती पणूपास्या । अ  
 वेयके चार पूर्वांग लगी गृहस्थाश्रम कह्यो के । मल्लिनाथ अरिहतनी उगणसठिसे अवधि जानी थया ॥ इति ५८ समवाय थयो ॥ ५८ ॥ हिवे

६० मीसमवाय लिखिं । सूर्यना १८० मांडला के एकीत मांडले सूर्य साठ साठ मुहत्तं बेअहीरात्रियेजगे । लवण समुद्रनी अग्रेदक शिखानी पाणी साठ  
 हजार नागदेवता धरे के एतले सोले हजार बीजन ऊची पाणीनी बेल तेजपर २ कोस पाणीबटे बधे ते अग्रेदक सीमा कहिए । विमलनाथ अरिहत

या । ईसाणेकपदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेन देवादेव्यग्रगृह्यते यतस्त्वसातिरेकपत्न्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिरिव नास्ति ईसाणेकपदेवाणं अत्येगइयाणमित्यत्र देवानामेवग्रहणं न देवीनां तत्र तासामुक्त्वर्धतोपि पंचपंचाशत्पत्न्योपमस्थितिकत्वादिति तथा ये देवाः सागरं सागरं सागरं सुसागरं सागरं कांतं भवं मनुमानुषोत्तरं लोकाहितं मिह च कारोद्रष्टव्यः स समुच्चयस्य द्योतनीयत्वाद्दिमानं देवनिवासविशेषमासाद्येतिरिति एतानि च विमानानि सप्तमप्रस्तुटे वसेयानि स्थित्यनुसारेण च देवानामुच्छ्वासो भवति तान् दर्शयन्नाह तेणमित्यादि येषां देवानामेकं सागरोपमस्थिति स्ते देवा एमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इति विशेषः आनन्ति प्राणंति एतदेव क्रमेण व्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसंति निःस्वसंति वाशब्दो विकल्पार्थः तथा तेषामेव वर्णसहस्रस्याङ्का इति विशेष आहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्ग

त्वेणं साइरेगं पलिनवमं ठिई प० । ईसाणेकपदेवाणं अत्येगइयाणं एगं सागरो वमं ठिई प० । जे देवाः सुसागरं सागरकंतं चवं मणु माणु सोत्तरं लोगहिं विमाणं देवत्ता एउवयन्ता ते सिएणं देवत्तां उक्त्वां सिएणं एगं साग

रोपमनी स्थितकही । ईशान देवलोकिं सातमे प्रतरं जे देवताना सागर १ सुसागर २ सागरकं ३ सुसागर ४ मानुषोत्तर ५ लोकाहित ७ एणे विमाणे देवतपणे जपनाछे । ते देवतानी उत्तकही एकसागरोपमनी स्थितिकही । ते देवत्तां उक्त्वां अर्द्धमासे एते ले ऐकणि पखवाडे आणमंति यो डोखासलै पाणमंति घणो लै आणमंति प्राणमंति एह अंतर्हति स्वासउसरसंति नीससति एहवा ह्यवति के र्द्धक आचार्य एमकहेछे जे देवताने जेतला सागरोपम आजखी तेहेने तले पखवाडे सासी

यथा चंद्रश्रीभिर्वर्द्धितश्चंद्रो निवर्द्धितश्चेति तत्र एकीनचंद्रोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्टिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २८ । ३२ । ६२ । छायाप्रतिपदामा  
 रस्य पौर्णमासो निष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाणेन स्रद्धसम्बत्तर स्वास्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यङ्कांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्टिभागा  
 दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकचंद्रश्च द्वात्रिंशत्तुत्तराणि दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ ।  
 १२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धित संवत्सरो भवति सच प्रमाणेन त्रीणिशतान्यङ्कांच्यशैत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्चद्विषष्टिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४  
 ६२ तदेव व्याणांचन्द्रसवत्तराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसवत्तरयो रेकीकरणे जातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासश्च  
 त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारे लब्धा एकषष्टिः ऋतुमासा इति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो द्विधा विभक्तस्तत्र प्रथमो भाग

## संति उक्तमासा प० मंदरस्सणं पद्यस्स पठमेकंठे एगसंठिजोयणसहस्साइ उहुं उच्चत्तेणं प० चंदमंऊले

मासीये पूरी थाय एहमास मान १२ गुणोकीजे तिवारे वर्षनीमान ३५४ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे  
 तिवारे १०६२ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धित मासनी मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाइय  
 १२१ भाग प्रमाणे थाय तेहने १२ गुणो कीजे तिगारे अभिवर्द्धित वर्षनीमान ३८३ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने बेगुणाकीजे ७६७  
 सातसे सडसठ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थाय तेहने पहिले ३ चद्र वर्षका मानमाहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु  
 मासनी मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० ने ३० भागे चरियेती १ युगनेविषे ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनी पहिलीकांड ६१ हजार योजन ऊंचपा

लानां ग्रहणमाभोगतीभवति अनाभोगतस्तुप्रतिसमयमेव विग्रहादन्यत्र भवेत्तीति गाथेह जस्रजइसागरीवसा ठिइतस्तत्तिणिहिंपक्खिहिं जसासो देवाणवा  
 ससहस्सेहिआहारीत्ति सतिविद्यन्तेएगइयाएकेकेचनभवसिजियत्ति भवा भाविनेहस्सिद्धिमीत्तियेपाते भवसिद्धिका भव्याः भवगहणेणंति भवस्यमनुयजन्मनी  
 ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यति अष्टविधमहर्हिप्राप्त्याभीत्यते केवलज्ञानेनतत्व मोक्षेतेरस्सस्सत्तेनिर्वोस्यति कर्मकृतविकारहाच्छेतीभवियन्ति कि  
 मुक्तभवतिसर्वदुःखानामंतङ्गरिथन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयाययणदेकतया वस्तून्विधायाधुना विशेषमर्थेयिस्सणाद्विलेनाह दोदडेल्यादि सुगममाहि

रोचमंठिई प० । तेणंदेवाएगस्सअष्टमास्सस्स अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नासंतिवा तेस्सिणं  
 देवाणंएगस्सवाससहस्स आहारठेस्समुपज्जइ संतेगइयान्नवसिद्धियाजेजीवा तेएगेणंन्नवगहणेणं सिज्जिस्सं  
 ति वुज्जिस्संति मुच्चिंस्संति परिनिद्याइस्संति सख्खुस्सकाणमंतकरिस्संति ॥ १ ॥ दोदंकापन्नत्ता तं०

सांसकहे तेतले सहस्रेवर्षे आहारनीइक्काजपजे । जंचोखास ते उत्खास नीचोमेहिहोतेनीसास तेहदेवने ऐक्कसहस्सवर्षे आहारनोअर्थजपजे । सतेकह  
 तांक्खिऐकभवसिद्धियाकहतांभाविनीहोणारीक्खे ढंक्कडोसिद्धिजेहनेतेभवसिद्धिकाभयजोव ससारमांहितेहलवुक्कर्मऐकभवनेआतरेसोभस्ये क्खतार्थयास्ये दूभ  
 स्ये केवलज्ञानेकरीसकलससारनांपरमार्थजाणिस्ये कर्मकीधोविकारतेहनारहितपणायकीठाहोस्ये । सकलगारीरीदु.रुनीमानसीदुःखनोप्रतकारिस्ये-  
 ऐतलेएकठाणेकिहियो ॥ १ ॥ हिवेवीजोअधिकारकहेक्खेवेदडक्कहो भगवतेजेजेकरोपरनाप्राग्दडोयेदणीयेतेदडक्कहो तेकहक्खे मर्थदड तेआत्मानेअर्थ पर

मास्यइत्येवं द्विषष्टिस्त्राभवंति इत्येवममावास्याऽप्रीति वासुपूज्यस्येह द्विषष्टिर्गणगणधरायोक्ता आवश्यकेतु षट्षष्टिरुतेति मतांतरमिदमपीति । सुक्लपक्ख  
रसेत्यादि शुक्लपक्षस्य सबन्धीचन्द्रोद्विषष्टिभागान् प्रतिदिनवर्धते एवक्षणपक्षेचद्रः परिहीयते अयमावार्थः सूर्यप्रज्ञप्त्यामप्युक्तस्तथाहि किण्हंराहुविमाण निचं  
चंदेणहोइअविरहिय चउरंगुलमप्यत हेहाचदस्सत चरइ ॥ १ ॥ बावड्ढि बावड्ढिदिवसेरउसुक्लपक्खस्स जपरिवड्ढइचदो खवेइ तंचेवकालेण ॥ २ ॥ पन्नरसयभागेणय  
चंदंपन्नरसमेवतंचरइ पणरसयभागेणय पुणोवितचेवक्कमइ ॥ ३ ॥ एवंवड्ढइचदो परिहाणीएवहोइचदस्स कालोवाजोपहावाएयणुभावेणचदस्स ॥ ४ ॥ तथातत्रैवो  
क्तं सीलसभागाकाज्जण उडुवइ हायएत्यपन्नरस तत्तिथमेत्तेभागे पुणोविपरिवड्ढएजोपहत्ति ॥ १ ॥ तदेव भाणेतइयानुसारेणानुमीयते यथाचंद्रमण्डलस्य एकत्रि  
शदुत्तरनवयशतभागविकल्पितस्य एकांशोवस्थितएवास्तीशेषाः प्रतिदिवस द्विषष्टिकत्वा वर्धन्ते ततःपचदशे चद्रदिनेसर्वसमुदिताभवन्ति पुनस्तथैवहीयंते पचद  
शेदिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यलभ्य व्याख्यानमेतत् जीवाभिगमेतु बावड्ढि २ गाहा तथा पन्नरसति भागेण गाथा एतेगाथे एव व्याख्याते

## स्सणं चंदे वासठिं बासठिं ज्ञागे दिवसे दिवसे दिवसे दिवसे दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

अमावास्या होय युगमांहि अभिवर्धितवर्ष २ तेहना मास २६ होय तेमाटेपूनिम २६ अमावास्या २६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अने ६२ अमावास्या  
होय । वासुपूज्य अरिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्षनो चद्रमा प्रतिदिवसे ६२ वासठ भागे बडे एतले चद्रमण्डलना ६२ भाग कल्पनाय  
कीजेपळे १५ तिथि भागेहरिये तिवारे भाभेरा चार चार भाग आवे तो पनरेदिन लगे राहुविमान भाभेरा चार २ भाग चंद्रमानेमूके चदज्योत्स्नावधे  
पनरेदिने ६२ भाग धाय तिमज क्खणपक्षे राहुविमाने भाभेराचार २ भाग दिवसे चद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसेमिली भाभेरा चार २ भाग करतां

स्थानकसमाप्तिर्नवरमिह दंडरागे बंधनार्थसंवाण्यां त्रयं न ज्ञातार्थं चतुष्टयं स्थित्यर्थत्रयोदशकमुक्त्वा सायधैनयमिति तत्रार्थेन स्वपरोपकारलक्षणं प्रयोजनेन दंडो हि सा अर्थदंड एतद्विपरितोऽनर्थदंड इति तथा रत्नप्रभायां द्विपल्योपमास्थितिश्चतुर्थप्रस्तटे मध्यमा द्वितीयायां द्विसागरीपमेस्थितिः षाट्प्रस्तटे मध्यमा त्रिंशया तथा असु

अष्टादंशे चैव अष्टादंशे चैव दुर्वेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासी चैव अजीवरासी चैव दुर्वि  
हैवंधने प० । तंजहा ॥ रागबंधने चैव दोसबंधने चैव पुष्पाफगुणी नरकते दुतारे प० । उ  
त्तराफगुणी नरकते दुतारे प० पुष्पात्रद्वयानरकते दुतारे प० उत्तरात्रद्वयानरकते दुतारे प०  
इमीसेणं रयणप्यहा एपुठवी ए अत्येगइ अणं नरइयाणं दोपलिनुवमां ठिइ प० । दुच्चा एपुठवी ए  
अत्येगइ अणं नरइयाणं दोसागरोवमां ठिइ प० । अक्षुरकुमाराणं तेराणं अत्येगइ

ने अर्थे आगलाना प्राणहृत्तये तेऽर्थदंड निरर्थकपणे परमाणे न हृत्तये ते अर्थदंड निश्चे वेराशिसमूहक इति चेत्तस्मै कहे ॥ जीवराशि जीवनासमूह अजीवरा  
शि अजीवनासमूह वेप्रकारे बंधनकक्षा तेकहैकै रागबंधन रागेकरीकर्मनोऽर्थदंड एमज द्वेयबंधनपडे पूर्वाफाल्गुनी नचत्रना बिंताराकक्षा भंगवते  
उत्तराफाल्गुनी नचत्रना बिंताराकक्षा पूर्वाभाद्रपदनचत्रतणा बिंतारा कृत्तर । उत्तराभाद्रपदनचत्रना बिंताराकक्षा एणीइये रत्नप्रभापि हिलीनरकपृथवीये  
केतलाएकमारकीनो चीथेपाथडे वेपय्योपमस्थितभाजधूंमध्यमकक्षी बीजी नरकपृथवीने विषे केतलाएक नारकीनो छेडपाथडे वेसागरोपममध्यस्थितिआ

वलिका विमानानुपूर्वी तया अथवीत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यांदिशि या प्रथमा आद्यावलिका तस्यां षष्ठमावलियन्ति पाठांतरे तु उत्तरोत्तरावलिका  
पेक्षया एकैकस्यां दिशि प्रथमावलिका सा द्वित्रिंशद्विमानप्रमाणा प्रमाणेन प्रज्ञतेति एगमेगाएत्ति उडुविमानाभिधानदेवेद्रकापेक्षया एकैकस्या पूर्वादिका  
यां दिशि द्वित्रिंशद्विमानानि प्रज्ञप्तानि द्वितीयादिपु पुनः प्रस्तुतेषु एकैकहान्या विमानानि भवन्ति यावद्विषष्ठितमेऽनुत्तरे प्रस्तुते सर्वाधिसिद्धदेवेद्रकापेक्ष  
तदेकैकमेव भवतीति तथा सर्व्वेति सर्व्वैवान्जिकानां देवविशेषाणां सम्बन्धिनी द्विषष्ठिर्विमानप्रतराः प्रस्तुताग्रेण प्रस्तुतपरिमाणेन प्रज्ञप्ता इति ॥ ६२

अथत्रिंशद्विमानक तत्र सप्तसप्तजीव्वणन्ति मातापितृपरिपालनापेक्षा इत्यर्थः निसर्गमिल्यादि किलसर्व्वमण्डलानां चतुरशीत्यधिक शतसंख्यानां मध्ये

वासंतिविमाणपत्यम्ना पत्यम्नगेणं प० ॥ ६२ ॥ उसन्नेणं अरहाकोसलिण तेसंति पुब्बसयस  
हरसाइं महारायमज्जे वसिन्ता मुंजेनविन्ता अगारानु अगारिय पव्वइणु हरिवासरम्मयवासेसु णं मणुरसा

मिली ४ आरण अय्यन ४ सर्व १२ देवलोका ५२ प्रतर नव श्रेयमके ८ पांच अरुत्तरनो १ एव सर्वमेलो जहं लोके ६२ प्रतर यथा प्रतर २ दौठविचें एकेक  
विमानसंख्यविमानेदूनो जागिबो । इति ६२ नम्यते ॥ ६१ ॥ इति ६१ त्रितेज्जे ॥ ज्ञनभनाय गरित कोयल देया जपता तेह ६३ लाख पूर्व्वलगे  
महाराज च जाउमहि वसोने मउपणो पाओ एह था अममको अनगारतापणी यतीपणी माम्या दीक्षा ग्रहण करी एतले २० लाख पूर्व्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व्व  
महाराज णि १ लाख पूर्व्व चारित्रपावन किमो एव सर्व २४ लाख पुनो जाउओ थगो हरिअंतोजोवेव रम्यकपाचमो चेव तेह युगल चेवने विषे माणस  
६३ रात्रि दिवसे संव्रासयोवन थाय एतले ६३ अहोरात्रिलगे साइतपालना करे । देवकुण उत्तरकुण ने विषे सदैव पहिलो आरी होय । हरिबर्ष रम्यक



अणं दोपलिनुवमाइं ठिई प० असुरिंदवज्जिअणं उक्कोसेणं देसूणाइं दोपलिनुवमाइं ठिई  
 प० असंखिज्जवासाउयतिरिखजोणिअणं अत्थेगइअणं दोपलिनुवमाइं ठिई प० असंखिज्जवासाउयस  
 न्निमणुरसाणं अत्थेगइयाणं दोपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं दो  
 प० ईसानेकप्पेअत्थेगइयाणं दोपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं दो  
 सागरोवमाइं ठिई प० ईसानेकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइं ठिई प० सत्तुस्मारेकप्पेदेवा  
 णं जहन्तेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदेकप्पे देवाणं जहन्तेणं साहियाइं दोसागरोवमाइं ठिई प० ।

जघं कच्छी । असुरकुमारभवनपतीदेवनी । केतलाएकनो विपल्यीपमनं आजघी । असुरेद्रचमरेद्र वल्लेद्रटालीने बीजीभूमिसंबंधि उत्तरदिग्गिनानागदेव  
 तानी उत्कृष्टीकाईकोश्रीबीविपल्यीपमनोआजघी कच्छी असंख्यातावर्षना आजखाना गर्भजमानुथनां एतले हरिवर्ष रम्यकचेत्रसंबंधी युगलियामनुथनु के  
 तलाएकनो विपल्यीपमआजघी कहिउ सौधर्म्म पहिलेदेवलीके केतलाएकदेवनी विपल्यीपममध्यमआजघी कच्छी । ईशानबीजेदेवलीके केतलाएक देव  
 तानं विपल्यीपमआजघीकच्छी । सौधर्ग्गदेवलीकेदेवतानीउत्कृष्टी । ईशानबीजेदेवलीके देवतानी उत्कृष्टीभाभेरी

शेषः अष्टावष्टकानि यतो सौ भवत्यत चतुः षड्या रात्रिर्दिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमैष्टके प्रतिदिनमेकैका भिक्षा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टावष्टाविति सकलनया दिशते भिक्षाणामष्टाशीत्यधिके भवती ऽतउक्त द्वाभ्यां चेत्यादि यावत्करणान् अह्नःकणं अह्नमगं फ्रासिया पालिया सोहिया तीरिया कित्तिया सस्म आणाए आराहियावि भवतीति दृश्यम् सर्वेविणमित्यादि इतो ऽष्टमे नन्दीखराखे द्वीपे पूर्वादेषु दिनु चत्वारोजनकपर्वता भवन्ति तेषां चः प्रत्येकं चतसृषुदिनु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति तासांच मध्यभागेषु प्रत्येकं दधिमुखपर्वता भवन्तिच घोडयपत्यकं सस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क भोन मूलादिषु दशसहस्रं विष्कभत्वा तेषां कचित्तु विक्खभुस्सहेणति पाठ स्तचत्तलीयैकवचनलोपदर्शना द्विष्कभेनेति व्याख्येय तथा उत्सर्धनी चत्वेन चतु

चउसठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रत्तो चउसठिं सामाणियसाहस्सीनु प० सद्येविणं दधिमुहापल्लया पल्लासंठाणसठिया सद्यसमा विस्क्खनुस्सहेणं चउसठिंचउसठिं जोयणसहस्साइं प०

आठेदिने ३२ भिक्षायाय एम करतायकां आठ अष्टकलगे ३६ भिक्षालीजे एतले सर्जमिली २८८ भिक्षाये यथामार्गं आराधीहीय पालीहीयने असुरनिकाय ना २ इन्द्र चमरेंद्र बलेद्र २ दक्षिण दिशे चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरे बली तेहने ३० लाख भुवन विहु भवन मिली असुर कुमारेद्रना ६४ लाख आवास भवन कक्षा । चमरेंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कक्षा । जंबूद्वीपयको आठम् नदीखरद्वीप तेहनेविषे विहुदिशे ४ अज नगिरिछे एकेक अजन गिरिने चौफेर चार २ पुष्करिणी वायी छे ते वावीने मध्यभागे प्रत्येकं दधिमुख पर्वतछे एतले विहु । पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन तेहने सठाणे आकारे संस्थित छे । सगले समान मूले विष्कभ पणे पिहुलपणे दससहस्र योजन परिमाण जाणवा । उत्तरे विष्कभ पणे चउसठिं २ हजार यो

रेद्रवर्जितभवनवासिनां देशेनपल्योपमस्थितिरौदीच्यनागकुमारानाञ्चित्यावसेयायतआह दोदेसुणुत्तरिक्षाणंति तथाअसंख्येयवर्षायुषांपंचेद्वियतिरिद्यांमम  
द्याणांचहरिबर्धरम्यकवर्धजन्मनां द्विपल्योपमास्थितिरिति ॥ २ ॥ अयत्रिस्थानकंतओइत्यादिसर्वसुगम नवरमिहदडगुप्तियल्पगौरवविराधनार्धसूत्राणां

जेदेवा सुभं सुन्नकंत सुन्नवस्सं सुन्नगंधं सुन्नलेज्जं सुन्नफासं सोहम्मवफ़िसगं विष्माणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणं  
देवाणंउक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० । तेणदेवा दोरहंअठ्ठमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा उस्सस्सं  
तिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणदोहंवाससहस्सोहं अणहारठेसमुपज्जाइ अत्थेगइयान्नवसिद्धियाजीवा जे  
दोहंभन्नवगहणेहंसिज्जिरसंति मुच्चिरसंति वुज्जिरसंति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुस्काणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥

विइसागरोपमआजघोक्कहो सनत्कुमार नीजेदेवलीकेदेवतानूं जघन्यवेसागरोपमआजघोक्कहो माहेद्रचोथेदेवलीकेदेवतुए ~~अचुन्य~~ विसागरोपमभाभेरी-  
आजधानीस्थितिकहीसौधमदेवलीकेतेरमेप्रतेरजेदेवतानानाम शुभ १ शुभकांत २ शुभवर्ण ३ शुभगंध ४ शुभलेख ५ शुभस्पर्श ६ सौधमवतंसक ७ एहसातवि  
मानेदेवतापणेजपनाछे तेहदेवनी उत्तकाटो वेसागरोपमआजघोक्कहो तेहदेवनेविज्जुअनासएतलीविहुपखवाडे आणप्राणहुयेआणथोडोखासप्राणतेघणीउ  
त्खास उत्खासतेउचीलेवीखास नीसासतेसासनीचो मेलिहवो तेहदेवताने विहुये वषसहस्से तेहने आहारनीअर्थजपजे आभोगआहारस्ये संसारमहिक्केत  
लाएकभवसिद्धीयाभय्यजीव जेबिहुयेभवग्रहणे वेभवनेआंतरेसीभस्स्ये कृताथयास्ये तत्वनाजांणयास्ये कर्मबंधयकीमूकास्येकर्मकृततापटालवाधकीठाढायास्ये

ध्वभागतिं शकनिवासभूतं एगमेगाएत्ति एकैकस्यादिप्रिप्राकाराभ्यर्णवर्त्तन्ति भौमानि नगराकाराणि विग्रिष्टस्थानानीत्येके ॥ ६५ ॥ अथ षट्पष्टिस्था नक तत्र दाहिणेत्यादि मनुष्यक्षेत्रस्याहं मर्हं मनुष्यक्षेत्रं दक्षिणच तच्चेति दिग्गणान् मनुष्यत्रैव तत्र भवादधिगणान् मनुष्यत्रैवा नमित्यलंकारे षट्पष्टिश्च द्वाः प्रभासितव रतः प्रभासनीय अथवा लिङ्ग श्रत्ययाद्विणानिन्यानि मनुष्यक्षेत्राणामर्हानितानि तथातानि प्रकायितवन्तः पाठात्तरे दक्षिणान् मनुष्यक्षेत्रे प्रकायनीयं प्रभासित वन्त स्तेष्वेव द्वौ जगूहीये चंद्री चत्वारो लवणसमुद्रे द्वादशधातकीं खंडे त्रिचत्वारिंशत्कालोदधिसमुद्रे द्विसप्ततिर्यपुष्कराणि सर्वे चैतद्वा त्रिंशदधिका ग्रत एतदर्थं षट्पटय

सोहम्मवर्त्तिसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए वाहाए पणसठिं पणसठिं ओमा प० ॥ ६६ ॥

दाहिणहु माणस्सखेत्ताणं छावठिं चंदापन्नासिंसुवा ३ छावठिं सूरिया तविंसुवा ३ उत्तरहु माणस्सखेत्ताणं

६५ वर्षं लगे गृहस्थाथम मां हि वसीने मंड द्रव्यभावभेदे यद्ने अगार गृहस्थाथमयकौ अणगार पणू साधपणू पास्या एतले ६५ वर्षं गृहवास १४ वर्षं छद्गस्थप को १६ क्षेत्रलपर्याय सर्वायुर्वर्ष ८५ जाणिवा । सौधर्म देवलोके मध्यवर्त्ति सोधर्मापंतं सज्जविमान शक्केन्द्रनो निवासभूत ते ए महाविमानने एकेकीये वाहयि एके की दिशे गढने समीपयर्त्तो ६५ भौमा नगराकारे विग्रिष्टस्थानक कहा । इति पेंसउमी समवाय सपूर्ण ॥ ६५ ॥ हि वि ६६ मी लिखे छे । मनु यक्षेत्र आखीअढी द्वे प २ समुद्र मिलीने ते माहि दक्षिणाहं मनुष्यक्षेत्र मां हि ६६ चद्रमा प्रभासता हुया उद्योत काता हुया प्रभासिछे प्रभासिस्थे । एतले जबूद्धीप माहि २ सूर्य २ चंद्रमा लवणसमुद्र माहि ४ सूर्य ४ चद्रमा धातकीखंड मां हि १२ सूर्य १२ चद्रमा कालोदवि मां हि ४२ सूर्य ४२ चद्रमा पुष्करा मां ही ७२ सूर्य ७२ चंद्रमा सर्वमिली १३२ सूर्य १३२ चद्रमाथया । सुदर्शन मेरुयकी चारपति चिहुदिसे मां हि मेरुयकी दक्षिणदिशि मागुसोत्तर पर्वत

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वल्युमाणं ४६ खंधनिवेसं ४७ वल्युनिवेसं ४८ नगरनिवेसं ४९ ईसल्यं  
 लरुप्पवायं ५० व्याससिखं ५१ हल्यसिखं ५२ धणुवेय ५३ हिरसपाग ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६  
 धातुपाग ५७ बाजुजुहं ५८ लयाजुहं ५९ मुठिजुहं ६० जुहं ६१ निजुहं ६२ जुहाइजुहं ६३ सुत्तखेहं  
 ६४ बहखेहं ६५ नालियखेहं ६६ चम्पखेहं ६७ पत्तखेहं ६८ कळगखेहं ६९ सजीवं ७० निज्जीवं ७१

तरिवो ४१ । शुद्ध कटक नी रचना ४२ । खधार कटक उतारिवानो प्रमाण जाणिवो ४३ । नगरवासिवानोमान ४४ वस्तुनामान गजतोलादिक ४५ । खधा  
 रकटकनो निवासस्थापन ४६ । नगर निवेशनो वासवो ४७ । वस्तुनीस्थापनावस्तुनिवेश ४८ । ईषदर्थ थोडानं घणूं घणानं थोडूं करवं ४९ । त्तरुखड्डमुष्टित  
 था चुरप्रमाण तद्गत विचारनो जाणिवो ५० । थोडानो गति शिखाडवो ५१ । हाथीनी गति शिखाडवो ५२ । धनुर्वेद धनुर्धारो थावं ५३ । हिरण्य  
 रूपानोपाक पचाविवो ५४ । सुवर्णनो पचाविवो ५५ । मणिरत्नादिकनो पाक ५६ । धातुतावादिकनो पाक ५७ । शुद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाणि  
 वो ५८ । नित्युद्ध अतिशय शुद्ध जाणिवो ५९ । शुद्धनेत्रति क्रम करीने जूभवो ६० । सुटिये जूभवो ६१ । लताविलडीयेजूभवो ६२ । वाह्यथी जूभवोतिना  
 हु शुद्ध ६३ । सूत्रनो खेडवोवेभूनोमाडी सूत्रनो छेदिवो ६४ । वर्त वाटलो खेडू माडीने जूभवो ६५ । नालिकाकमल डांडो तेहनो खडवो केभूमाडीने वे  
 धवं ६६ । चर्म खेडू वेडूमाडीवेधिवो ६७ पत्रपानडानी छेदिवो ६८ । कडग सुवर्णादिकनाचूडी कुडलादिकनो छेदिवो ६९ । मंयामनुष्यतियचने मंत्रशक्तिक  
 री सजीव करिवो ७० । जीवतानीनसचापोने निर्जीव करिवो ७१ । शकुन पक्षीकाकादिकना खरभेदनो जाणिवो ७२ । एकलाथई । समूर्च्छिम खेचर

लोभाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रवालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्र ऋक्षानरेद्रादि पूजाचार्यत्वादि लक्षणयोगैरवमृडि-  
मानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थ. एवमसेनगौरवरसगौरव सातवागौरवं सातागौरवंचेति तथाविराधनाः खंडनास्तत्र ज्ञा-  
नाज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनौकतानि ज्ञवादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनसम्यग्दर्शनञ्चाधिकादिकादिचारित्रिसामाधिकादीनि । तथा असंख्यातवर्षा, बापचेद्वि

तर्जगरवा प० तं० । इहोगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तर्जविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दं  
सणविराहणा चरित्तविराहणा भिगज्जिरनस्कत्तेतितारे प० । पुस्सनस्कत्तेतितारे प० । जेठानस्कत्ते  
तितारे प० । अग्नीइनस्कत्तेतितारे प० । सवणनस्कत्तेतितारे प० । अस्सिणनस्कत्तेतितारे प० नरणी  
नस्कत्तेतितारे प० इमीसेणंरथणप्पज्जाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणंति न्निपल्लुवुप्पइहि प० । दो  
तेशुदेवगुरुधर्मनोअसहिवोविपरीतनोकरिवी ३ त्रिणिगरवकेजेणेकरीआत्माभारीयाय संसारचक्रवालसां निरभवानीकारणकहोतिकहेछे । ऋद्धिगारव  
तेनेरद्रादिकनी ऋद्धितथा आचार्यादिकनी ऋद्धितेणेकरीअभिमानकरीआत्माभारीकरे रणे तेजवुत्तदेखादेकरीआत्माभारीकरवी तेरसगारवकहियेर  
सातानेगारवकीसातागारव ३ त्रिणि विराधनाषंडनाकहो तेकहेछे सूतादिदुत्ततहनी विराधना प्रत्यनौकपणेकरिवीतेज्ञानविराधना दंसणतेसम्यक  
दर्शनचायकादिकसम्यक्ततेहनूं विराधवूंअवर्षवादनूं वोलिवंते दर्शनविराधना २ सामाधिकादिकचारित्रिंनूं विराधवूंखंडवंतचारित्रिविराधना ३ मृगसरनच्चत्रना

सप्ततिवर्षाख्यायु रत्नचार्यविभागः षट्चत्वारिंशद्वर्षाणि षट्दशस्यपर्यायः द्वादश द्वादशस्यपर्यायः षोडशकेवलपर्याय इति निसहस्रांशोणमित्यादि अस्यभाषार्थः  
 किलनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाक्रदः सहस्रद्वयविष्कम्भ  
 चतुःसहस्रायाम स्तदेवपर्वतविष्कम्भादस्य क्रदविष्कम्भाद्धनन्यूनताया शीतोदामहानद्याः पर्वतस्योपरि चतुःसप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येव प्र  
 वाहो भवति वइरामयाएजिभियाएत्ति वज्रमय्याजिहिकाया प्रणालस्यमकरमुत्रजिहिकाया चतुर्थोजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुडेलि नि  
 षधपर्वतस्याधीवर्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्थोजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवौभवनाध्यासितमस्त्रकेन तद्वीपेनालकृतमध्यभागे

साइं सद्याउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्यहीणे निसहानुणं वासहरपव्वयानु तिगिच्छिदहानु सीतोयामहानदीनु  
 चोवत्तारि जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहिन्ता वइरामयाए जिहियाए चउजोयणायामाए मन्ना

डा अग्निभूति श्रीमहावीरना बीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वयुपालीने सिद्धयया सर्वदुःख रहित यया । तिकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष द्वादशस्यपर्याय १६  
 केवल पर्याय एम ७४ सर्वयु । निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊचो उपरि १६ हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुली तेहनां मध्यभागेति  
 गच्छी महा द्रच्छेते २ हजार योजन पिहुली ४ हजार योजन लावीछे । निषध वर्षधर पर्वतको तेगच्छीद्रच्छको निकली एहवी सीतोदामहानदी ७४ से  
 २१ योजन साधिक एक कला एतले प्रवाहे पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमईजीभीये ४०० योजन लांवीपू० योजन पिहुली वहीने जायछे । नि  
 षध पर्वतने हेठे वज्रमयी भूमिकाछे जेहनी एहवी ४८० योजन पिहुली १० योजन ऊडो सीतोदा देवीये अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुडे महया मो

मांतरतः पुष्पादन्तस्थेति तथाशीतलस्य पंचसप्तनिर्पूर्वसहस्राणि गृहवासे कथं च विंशतिः कुमारत्वे पंचाशच्चराज्य इति तथाशांतिः पंचसप्ततिवर्षसहस्रा ॥

णि गृहवासमध्युष्य प्रव्रजितः कथं पचविंशतिः कुमारत्वे पचविंशतिः मांडलिकत्वे पचविंशतिः चक्रवर्त्तित्व इति ॥ ७५ ॥ अथषट्सप्ततिस्थानके लिख्यते किंचित् । तत्र विद्युत्कुमाराणां भवनावासलक्षाणि दक्षिणस्थां चत्वारिंश दुत्तरस्था तु षट्त्रिंशदिति षट्सप्ततिरिति एवमिति इदमेव भवनमानं शेषा

॥ ७४ ॥ सुविहिरुसणं पुष्कदंतस्स अरहनु पन्नत्तरि जिणसया होत्या सीतलेणं अरहा पन्ना  
त्तरि पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्जेवासत्ता मुंठे जावपव्वइए संतीणंअरहापन्नत्तरिवाससहस्साइं अगा  
रवासमज्जे बसित्ता मुंठेत्तविह्ता अगारानु अणगारियं पव्वइए ॥ ७५ ॥ तावत्तरिविज्जुकुमा  
रावाससयसहस्सा प० एव दीवदिंसाउदहीणं विज्जुकुमारिरदथणिमग्गीणं त्रहपिजुगलयाण तावत्तरिस्स

गृहवास माहि वसीने मुडयया यतीपणूपाय्या । २५ हजार पूर्वं कुमारपणे ५० हजार पूर्व राज्यायसि एम ७५ हजार पूर्वयया २५ हजार पूर्वं दीक्षा सर्वायु  
१ लाख पूर्वं जाणिवी । शांतिनाथ अरिहत ७५ हजार वर्षलगे गृहायस माहि वसीने मुडयया गृहस्थयकी यतीपणूपाय्या । २५ हजार वर्ष कुमारपणे  
२५ हजार वर्ष मडलीक राज्यपणे २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पणवसीने प्रवज्या पाय्या । २५ हजार वर्ष दीक्षा सर्वायु १ लाख वर्ष । इति ७५ मी संपूर्णे

॥ ७५ ॥ हिवे ७६ मी लिखिहे । विद्युत्कुमार भवन पतिना दक्षिणदिशे ४० लाख भवन उत्तरदिसे ३६ लाख भवन एव ७६ लाख भवन कक्षा  
एमज दीप कुमार १ दिक्कुमार २ उदधि कुमार ३ स्तनित कुमार ४ अग्नि कुमार ६ एकैकना बवे इद्र कारतां १२ थया । एहना छहतर



यतिर्यग्मनुष्याणां देवकुसुमरकुलजम्भानां त्रीणि पत्नीपमानीति । तथा आभंकरं प्रभंकरं आभाकरं प्रभाकरं चंद्रचंद्रावर्त्तं चंद्रप्रभं चंद्रकांतं चंद्रवर्णं चंद्रलेशं चंद्र  
ध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटं चंद्रोत्तरावतंसकं विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपि सुगममेव नवरं कथायध्यानविकथासंज्ञाबंधयोजनार्थं सूत्राणां षट्

जेदेवा व्याभंकरं पञ्चंकरं व्याभ्राकरं पञ्चाकरं चंद्रचंद्रावर्त्तं चंद्रकंतं चंद्रवन्नं चंद्रलेशं चंद्रज्ज्यं चं  
दसिंघं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटं चंद्रोत्तरवर्त्तसिंघं विमाणं देवत्ताण्डववन्ना तेषिणंदेवाणं उक्तीसेणं तित्तिसागरो  
वमांडिई प० । तेषां देवातिरहंश्चमासाणं व्याणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेषिणंदे  
वाणं उक्तीसेणं तिहिंवाससहस्सेहिंश्चाहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाजवसिद्धियाजीवा जे तिहिंभवगगहणेहिं  
सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिष्ठाइस्संति सत्तुदुस्काणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

युगलियातेहनी उत्कृष्टो तीनपत्न्यापम आउखो कह्यो । सौधर्मइशानदेवलीकनेविषे केतलाएकदेवनी त्रिणुद्धतेपमआउखो कह्यो सनत्कुमारमहिंद्रजी  
जेचीथेदेवलीके केतलाएक देवनी त्रिणिसागरोपममध्यमआउखोकेह्योजेदेवताआभंकर १० प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७  
चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ण ९ चंद्रलेश १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेसनत्कुमारमहिंद्रदेवलीकेदेवतापणे  
उपनाछे तेहदेवतानीउत्कृष्टीत्रिणि सागरोपमआउखो कह्यो तेहदेवतापूजेविष्णुअइमसवाडे थोडीखासले धणोखास जे चीखासतेउत्खासनीचीस्थासमंकवीते

जंबूद्वीपेयदेतौसूर्योसर्वाभ्यन्तरमण्डलमुपसंक्रम्य चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्चत्वारिंशदधिकानि योजनशतान्यन्योन्यमन्तरं कृत्वा चरत एतच्च जंबूद्वीपेयी युत्तर योजनशतं प्रविश्याभ्यंतरमण्डलमभवति एतस्मिंश्च द्विगुणे जंबूद्वीपप्रमाणेनादपकर्षिते यथोक्तमन्तरमभवतीति तथा तत्रतयी चरतो रुक्म ष्टी ष्टादशमुहूर्त्तौ दिवसो भवति जघन्यकाच द्वादशमुहूर्त्तारान्निर्भवति ततोभ्यन्तरमण्डलान्निष्क्रम्य प्रथमेऽहोरात्रे भ्यन्तरानन्तर मण्डलमुपसक्रम्य यदा चारचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणिषट्पचचत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि पंचत्रिंशच्च एकषष्ठिभागायोजनस्यांतरं कृत्वा चारंचरत स्तदा चा ष्टादशमुहूर्त्तौ दिवसो भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागाभ्यांन्यूनः द्वादशमुहूर्त्तार्चरात्रि भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तैकषष्ठिभागाभ्यामधिकेत्येवं दक्षिणायनस्य ितीयार्थादिषु मण्डलेष्वहोरात्रेषु चान्योन्यातरं प्रमाणस्य पचभिः पचभिर्योजनैः पचत्रियताचैकषष्ठिभागै र्योजनस्य द्विर्विंशत्यां च द्वाभ्यांच मुहूर्त्तैकषष्ठिभागाभ्यां दिनहानी रात्रिं द्विष्वेति एवच एकीनचत्वारिंशत्तमे मडले सूर्ययोरन्तर नवनवतिसहस्राण्यष्टशतानि सप्तपचाशच्च योजनानां त्रयोविंशतितैश्चैक षष्ठिभागा दिनप्रमाणे चाष्टादशानां मुहूर्त्तानां मध्या देकषष्ठिभागानां मण्टसप्तत्यां पातितायां षोडशमुहूर्त्तार्चतुचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागासुहूर्त्तस्य रात्रे

णचत्वालीसद्वमे मंरुले अष्टहत्तरिं एगसठिजाए दिवसखेत्तरस निबुहेत्ता रयणिखेत्तरस अग्निनिबुहेत्ता णं चा

नाएकसठ भाग करी एहवा बेबेभाग प्रतिदिन दिनघटाडिये रात्रिपधारिये एकमासे २ घडी दिवसघटाडीये तो ३६ मे माडले एक योजनना एकस ठीया ७८ भाग दिवस घव्यो रात्रौवधी। एमज सर्ववाह्य मडलथको दक्षिणायनथको सूर्यनिवर्त्यो पाक्कीचाल्यो उत्तराभिमुखथयो तिवारे ३६ मे मांडले सूर्य गयो एक मुहूर्त्तना एकसठिया ७८ भाग कह्या । दिवस वधारिये रात्रिघटाडिये दक्षिणायननौपरिभागघटाडिये वधारिये । इति ७८ संपूर्णे

सुदेवस्य चतुरशीतिवर्षलक्षाणिसर्वायुरिति चत्वारिलक्षाणिकुमारले शेषंतुमहारारज्येइति आउवहुइत्यादि किलरत्नप्रभाया अशीत्युत्तरयोजनलचवाहत्याया रत्नौणिकाडानि भवन्ति तत्र प्रथम रत्नकांड षोडशसहस्रनाहस्य द्वितीय पककांड चतुरशीतिसहस्रमान तृतीय मब्बहुलकांड मशीतिर्यो जनसहस्राणीति जंबूद्वीवेणमित्यादि ओगाहित्तति प्रविश्य उत्तरकडोवगयति उत्तरां काष्ठादिश सुपगत उत्तरकाष्ठोपगतः प्रथममुदय करोति सर्वाभ्यन्त रमडले उदेतीत्यर्थः ॥ ८० ॥ अथैकाशीतिस्थानके किंचिदुच्यते । नवमनवमिति नवनवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवजिका भवति नव सु नवकेषु नवनवमदिनानि तस्यांच भिक्षुप्रतिमाया मेकाशीति रात्रिदिनानि भवत्येव नवाना नवकाना मेकाशीतिरूपत्वा तत्था प्रथमेनवके प्रतिदिनमेक

णसहस्रसांद्रं बाहल्लेणं प० ईसाणस्सदेविंदस्स देवरत्नो असीइसामाणियसाहस्सीनु प० जंबूद्वीवेणं द्वीवे असी उत्तर जोयणसयं उगाहेत्ता सूरिए उत्तरकठोवगए पढम उदयं करेई ॥ ८० ॥ नवनवमियणि

जाडपणे । सोलेभेदे रत्नमय १ बीजो पक कांड ८४ हजार योजन । त्रोजो अप बहुलकांड ८० हजार योजन जाडपणेकह्यो । ईशानेद्र बीजो इन्द्र देवतानो राजा तेहना ८० हजार सामानिकदेवता आपणेसारिखा कह्या । जंबूद्विपनी जगतीने माहीले पासे एकसी असी योजनलगे अवगाहीने प्रवेशकरीने सूर्य उत्तरदिशि भणी अभिमुख थयोथको सर्वाभ्यतर मांडलेआषाढो पूनिम दिने नियध पवतने माथेप्रथम उदय करे । इति ८० ठाणूं संपूर्ण ॥ ८० ॥ हिंवे ८१ मोठाणू लिखेछे । पहिला नवदिनलगे एकेको भिच्चा बीजा ९ दिन लगे २ भिच्चा एमनवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिच्चावधारीये नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा एकासी दिने पूरीथाय । नवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिच्चावधारतां ८१ दिने मिली चार से पांच अधिक भिच्चाये दांतकरी यथासूत्र क

नीयमीहनीयकर्मोदयसंपाद्या आहाराभिलाषादिरूपाद्येतनाविशेषाः तथासकपायत्वाज्जीवस्यकर्मणोयोज्यानांपुद्गलानां बंधनमादानबंधनम् । तत्रप्रकृत  
यःकर्मणोऽश्लेषाभेदाः ज्ञानावरणीयादयोऽण्टीतासांबंधः प्रकृतिबंधः तथास्थितिस्तासोमिवावस्थान जवन्यादिभेदभिन्नतस्याबंधोनिर्बन्धस्थितिबंधः तथाऽनुभा  
वोविपाकस्तीव्रादिभेदोरसस्तस्यबंधोनुभावः तथाजीवप्रदेशेषुकर्मप्रदेशानामनतानांप्रतिप्रकृति प्रतिनियतपुरिमाणानांबंधः संबन्धनंप्रदेशबंधइति तथा

नन्वा तं० आहारसंस्त्राय त्रयमेक्षणपरिगृहसन्ना चउद्बिहबंधे प० त० पगइबंधे ठिडबंधे अणुन्नागबंधे  
पणसबंधे चउगानुणुजोयणे प० । अणुराहानस्कत्तेचउतारे प० । पुष्टासाढनस्कत्तेचउतारे प० । उत्तरासा

नोविराधनाहीयतेविकथाचारकहीछि तेकहेछे स्त्रीभलीवखाणीयेभूडीवखाणियेतस्त्रीविकथा भातराध्यानेअन्ननीवखाणवीविखोडवोतेभातविकथा १ राजा  
नभलसुंडकाहिवोतेराजविकथा देसएकवखाणत्रोएकविषोडजोतेदेसविकाथा ४ च्यारसज्जाकहीअसातावेदनोयमोहनोकरुतेअणुजेतंसंज्ञाकहीयेआहा  
रसज्जा १ भयनीवेदवोतेभयसंज्ञाकहीये २ मैथुननीअभिलाषतेमैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहनीअभिलाषतेपरिग्रहसंज्ञा ४ विहुप्रकारिवधजीवनिकर्मनेयीग्य पुद्गल  
नीबांधवोतिबधकहीये तिहांकर्मनाअश्रभेद ज्ञानावरणीयादिक ८ आठ तेहनीबांधवोतिबधकहीये तहआउकर्मनी स्थितिरहिजीवघन्यउत्कण्टकेइकाल  
तौवादिकभेदेअनेकप्रकारेरसतेहनीबंधवोतेरसबध जीवनाप्रदेशनेविषे अंतकर्मप्रदेशनेस्थितिबंध प्रकृति दौठनियतपरिमाणनीबांधवोतेप्रदेशबंध ४ उच्छेदा  
गुलेथारगाजनीएकीजनकहीभगवते अनुराधानसंज्ञनाचारताराकह्येपुर्वोषाढानसंज्ञनाच्यारतारा कह्या उत्तराषाढानसंज्ञनाच्यार तारा कह्या एणी

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्त्वन्तरूपस्य सचूलियागस्य इति द्वितीयविहि तस्यश्रुतस्त्वन्ते पञ्चचूलिका स्तासुच पञ्चमी निशीथान्त्ये ह नष्टह्यते भिन्नप्र स्थानरूपत्वात्तस्या स्तदन्या श्रुतस्य स्तासुच प्रथमद्वितीयसप्तसाध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्था चैकैकाध्ययनात्मिके तदेव सह चूलिकाभिर्वर्तत इति सचूलि काक स्तस्यपञ्चाशीति रवेक्षणकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययन उद्देशनकालाना मेतावत्संख्यात्वा तर्थाहि प्रथमश्रुतस्त्वन्ते नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्त्वन्ते तु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश नव रत्नयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयाया सप्तैकास राणि अध्ययनान्येवं तृतीयैकाध्ययनात्मिका एव चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखण्डनन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राण्यु च्छि ताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वांगेण भवतः युष्कराईमन्दरादध्ययनं नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सवर्गते रिति तथा रचकी रचकाभिधानरत्नयो

## श्रुतारस्सणं नगवतु सचूलियागस्य पञ्चासीद् उद्देशनकाला प० धाथइखण्डस्सणं मंदरस्स पञ्चासीद्भुजोयण

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ बीजे ४ चौथे ६ पांचमे ६ छठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्त्वन्ते ५ बीजे श्रुतस्त्वन्ते ५ चूलिका तेमाहि पाचमी निशीथ नामे ते इहां नग्रही बीजी ४ ग्रही तेमाहीली बीजी चूलिका माहि सात सात अंध्ययन तेमाहीपहिली चूलिकाना साते अ ध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिहुअध्ययने वेवे उद्देशा एव उद्देशा २५ पहिली चूलिकाये अने बीजी चूलिकाये सातएकसराअध्ययन बीजी चौथी चू लिकाये एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्देशन कालाथया । ८५ उद्देशानीधडो पुरो २५ मे समवायांगे मेत्येच्छे । पूर्वापरधातकी खडे वेमेरुपर्वतछे ते वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाङ्गे सर्वपरिमणिकह्या एकसहस्र योजनजडा ८४ सहस्र ऊंचा सर्वमिली ८५ सहस्रथया । एम पुष्कराई परिण कह्या ।

ठनरकतेचउत्तारे प० इमीसेणंरयणप्यञ्जाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प०  
 तच्चाएणंपुढवीए अत्येगइणंनेरइयाणंचत्तारिसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्येगइयाणंच  
 त्तारिपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्येगइयाणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० जंदेवा<sup>सु</sup>अत्तिमुक्किंठिं किठियाप  
 त्तकिठिप्यन्न किठिजुत्तं किठिलेसं किठिज्जयं किठिसिद्धं किठिकूळं किठुत्तरवा<sup>सु</sup>सगंविम्पणंदे  
 वत्ताएउववन्ता तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवाचउरएहमासाणं ज्ञाणमं

इरजमभापहिनीपृथिवीनेविषेकेतलाएक नारकीनो च्यारपत्थोपम आजपूंकहिउ कहा चीजीवालुकप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो च्यारिसा  
 गरमध्य आजपूंकहोछे । असुरकुमारभवनपतीदेवनू केतलाएकनू च्यारिपत्थोपमआजपूंकहो सोधर्मईशानदेवलीकनेविषेकेतलाएकनो देवतानोच्यारपत्थो  
 पममध्य आजपूंकहो सनत्कुमारमाहेद्वीजाचीयादेवलीकने विषेकेतलाएकदेवतानू च्यारसागरोपममध्य आजपूंकहो चीजेचीयेदेवलीकेजेदेवता कष्टि१ सु  
 कष्टि २ कृष्टिकापत्र ३ कृष्टिप्रभ ४ कृष्टियुक्त ५ कृष्टिलेख ६ कृष्टिष्वज ७ कृष्टियुगः ८ कृष्टिसिद्ध ९ कृष्टिकूट कृष्टिकावतंसकएणेविमानने विषेदेवताप

निखिलानां स्वक्तुमशक्यत्वादर्शानां जीवादीनां भेदगुणैरियति एकउत्तरोयस्यांसा एकोत्तरां सैव एकोत्तरिका इह प्राकृतत्वात् झस्वत्व म्परिवृद्धियति परिवृद्धि  
 स्येति समनुगीयते समजायेनेति योगः तच्च परिवर्द्धनं सख्यायाः समवसेयं च शब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्रशत यावदेकोत्त  
 रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य पल्लवगतिं पर्यवपरिमाणं अभिधेयादि तद्वर्मसंख्यानं यथा परिज्ञातसाध्यादि पर्यवशब्द  
 स्यच पल्लवतिर्निर्देशः प्राकृतत्वात् पर्येकः पक्षयक इत्यादिपदिति अथवा पल्लवाश्च पल्लवाः अवयवा स्वत्परिमाणं समणुगाद्वज्जातिं समनुगीयते प्रतिपाद्यते  
 पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगस्यस्मृतिं स्थानकशतसौकादीनां शतानां संख्यास्थानानां न्तद्विशेषितात्मादिपदार्थानामित्यर्थः तथा द्वाद  
 शविधो निस्सरो यस्याचारादिभेदेन तत्द्वादशविधनिस्सरं तस्य श्रुतज्ञानस्य किञ्चित्स्य जगज्जीवितस्य भगवतः श्रुतातिशययुक्तस्य समा

ति ससमयपरसमयारूढज्जातिं समवायुणं एकाद्विजाणं एगठाणं एगुत्तरियं परिवृद्धीं ए दुवारुसगस्सयगणिपिऊ

गस्स पल्लवगेसमणुगाद्वज्जाइ ठाणगसयस्सयवारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहिथरस्सजगवल्ल समासे

निष्णचार आदि कोटिलीगे एकअर्थे जीवादिक पदार्थानो इकेक आगलि २ परे वधारिवो ते सजवायाग कहिये । द्वादशाग कहिवो छे । गणी आचार्य तेह  
 ने पिटकरत्नकरडीया सरीखी छे तेहनी पल्लव अवयव तेहनी परिमाण जिहां कहिये स्थानक शत एक प्रादि सो छे छेहडे जेहने एदवी संख्या स्थानक  
 तेहनी बारे प्रकारे विस्सारवो एहवी श्रुतज्ञानछे । ते श्रुतज्ञान कहिवो छे । ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे । बली पूज्जछे । एहवा श्रुतज्ञाननो  
 सच्चैपे समाचार स्थानक २ प्रति अग अग प्रति अनेक गदारि कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिये छे । ते सप्रवायाग ने विपे नाना त्रिध जीव अजीव

कृष्टिसुषुष्टादीनिष्ठादशविमानानिपूर्वोक्तविमानानामनुसारयतीनि । पंचस्थानकमपिसुगमं नवरं क्रियामहावृत्तकामगुणश्रवसंवरनिर्जरास्थानसमित्य-  
स्तिकायाथैसूत्राणामष्टकं नक्षत्रार्थपंचकं स्थित्यर्थषट्कं उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति । तथाक्रियादुर्व्यापारविशेषाः तत्रकायेननिवृत्ताकायायिकेचष्टेत्यर्थः  
अधिक्रियतेआत्मानरकादिषुयेनतदधिकरणं । तेननिवृत्ताआधिकरणिकौ खड्गादिनिर्वर्तनादिलक्षणेति । प्रद्वेधोमत्सर स्तेननिवृत्ताप्राद्वेधिकौ परिताप-

तिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नोससंतिवा तेसिंदेवाणं चउहिंवाससहरसेहिं व्याहारठेसमुप्यजइ अत्येगइ  
अत्रवसिष्ठियाजीवा जेचउहिंनवगहणेहिं सिज्जिरसंति जावसद्युदुस्काणंअंतंकरिरसंति ॥ ४ ॥  
पंचकिरिया प० तं० काइया अहिगरणिथा पाउसिअ्या पारितावाणिथा पाणाइवायाकिरिया पंचमस्सुअ्या

णेउपनाछे तेहदेवतानो उल्लुकृपणै च्यारसागरोपमआउपं कह्यो तेदेवताचिहुअर्द्धमासवाडिएतलेचोथेपुत्रवर्गेननेडोसासलेइ घणीसासले नीचीमेन्नवीतेनि  
खास जचोलेववीतेजसासतेहदेवताने चिहुवर्ष सहसे आभोगआहारनोअर्थउपजे केतलाइकेभवेजोव चिहुनेभवगृहणेच्यारभवेअंतरे सीभस्येवभस्से मुं  
कास्येसंसारथकी सबंदुक्खनी अंतकरिस्से इतिचोथीठाणंसमत्तं ४ हिवेपांचनोअर्द्धमासकारिलिखीयेछे पांचक्रियाकहो क्रियाते कायादिकनीव्यापारतेकहेछे  
कायायेनोपजावीतेकायिकीक्रियाकायचेष्टा आत्मानरकादिकनेविषेनेणकरोस्थीपीयेतेअधिकरणकौषट्मादिकनीपजाविवालक्षण प्रद्वेधमत्सरतेणेनीपिजा



मरणं श्रवणाहना शरीरप्रमाणमङ्गुलासंख्येयभागादि श्रवणि रंगुलासंख्येयभागेन विषयादि वेदना शुभाशुभस्वभावा विधोनानिभेदा यथा सप्तविधा नार  
का इत्यादि उपयोग आभिनिबोधिकादि द्वादशविधः योगः पञ्चदशविध इन्द्रियाणि पञ्च द्रव्यादिभेदात् विंशतिर्वा श्रोत्रादिच्छिद्राद्यपेक्षयाष्टौवा कषायाः  
क्रोधादयः आहारचीच्छासञ्चेत्यादिद्वन्द्व स्ततः कषायशब्दा अथमाबहुबचमलोपोद्गृह्यः तथा विविधाच जीवयोनिः सचित्तादिक जीवाना तथा विष्कम्भो  
त्सेधपरिचयः प्रमाण विधिविशेषाश्च मन्दरादीना महीधराणामिति तत्र विष्कम्भो विस्तारउत्सेधउच्चल परिरयः परिधिः विधिविशेषा इति योगः तथा  
वर्षाणाविधयो भेदा यथा मन्दरा जम्बूद्वीपीयधातकौखण्डीयपौष्करार्धिकभेदा त्रिधा तद्विशेषस्तु जम्बूद्वीपको लचीचः श्रेषालु पचायीतिसहस्रोच्छिता इ  
त्येवमन्येष्वपि भावनीयं तथा कुलकरतीर्थकरणधराणां तथा समस्तभरताधिपाना चक्षिणाचैव तथा चक्रधरहलधराणा च विधिविशेषा इतियोग तथा

णाविहाणउवर्गजोगा इंदियकसायविविहायजीवजोणी विरुंनुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसायमंदरा  
दीणं महीधराणं कुलगरतित्यगरगहराणं समस्तजरहाहिवाणचक्कीणचेव चक्काहरहलहराणय वासाणयनि

संख्येयभागश्च विषयादि वेदना शुभाशुभ स्वभावो विधान भेद उपयोग मतिज्ञानादिक १२ भेदे योग १५ भेदे इन्द्रिय ५ कषाय क्रोधादिक विविध अ  
नेक प्रकार जीवायोनि जीवोत्पत्तिस्थानक विष्कम्भ पिङ्गल पणो । उत्सेध जचपणो । परिधिप्रमाण विधि विशेष विखभ उत्सेध परिधि इत्यादिक भेदे  
मंदरादिक पर्वतनो कुलगर विमलवाहनादिक तीर्थंकर ऋषभादिक गणधर गौतमादिकनो सगलाई भरत चक्रवर्तीनो चक्रधर वासुदेव हलधर बलदेव

नंताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेन निवृत्तापरितापकी प्राणातिपातादध्या प्रतीतेति । तथा काम्य ते अनिलयन्ते इति कामास्ते च ते गुणाश्च पुद्गलधर्माः शब्दाद  
यद्दतिकामगुणाः कामस्यैवार्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादयद्दति तथा आश्रयस्त्वज्जिक्मापादोपाया मिथ्यात्वादीनि सवरस्यकर्मानुपादानस्य हाराखुपा  
प्राणातिपातपरिमणादीनि एताव्देषवसर्वशब्दविधितानि महावृत्तानि भवति तानि च पूर्वसूत्रेभिर्हृतानि शब्दविशेषितानि श्रुतव्रतानि भवति नि  
प० तं० सद्धानुपाणाइवायानुवेरमणं सद्धानुमुसावायानुवेरमण सद्धानुदत्तादाणेति चेत्तु सद्धानुमेज्ज  
णानुवेरणं सद्धानुपरिगहानुवेरमण पंचकामगुणा प० तं० सद्दा रसा गंधा फासा पंचज्ञासविदोरा  
प० तं० मिच्छतं अविर्इ पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० समंतं विरइ अय्यमत्तया  
वीतिगद्विक्की परप्राणने परितापवी ताडनादिकदुखनी उपजाववी ते पारितापनकीक्रिया परप्राणनी अतिपातविनाश तेने नीपजावीक्रिया ते प्राण  
तिपातकी पंचमहाव्रतथावकनांत नो अपेचार्ये षणीमोटी वृत तेमहावृत कक्षा तेकहेछे संवथकी मन वचने कायानेकरी तथा कारण कारण अनुमती  
भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवी उसरवी तेसर्वा प्राणातिपातपरिमणपहिलामहावृत १ सर्वं क्रोधं लोभं मया भूठोबील  
बाथी विरमवी तेसर्वं मयादादिरमण दूजोवृत २ जीय स्वाभि गुरु अदत्तयकीपरिमबी ते सर्वादत्तादानपरिमण तीजोवृत ३ सर्वं नवभेदयकी औदारिक

यते अर्था यस्यां सा व्याख्या वियाहेइतिच पुक्लिङ्गनिर्देशः प्राकृतत्वात् वियाहेणित्याख्यायाव्याख्यायां वा सप्तमयाइत्यादीनि नवपदानि सूत्रकृतवर्णकव्याख्यातत्वा दिहकपठ्यानि वियाहेणति व्याख्यामित्यादि नानाविधैः सुरैः नरेन्द्रैः राजन्तविभिद्य विविहससइयत्ति विविधसशयवद्भिः पृष्ठानि यानितानि तथा तेपा नानाविधसुरेन्द्रराज ऋविविधसशयितपृष्ठानां व्याकरणानां षट्चित्रत्वरूपाणां दर्शनात् नुतायां व्याख्यातन्वावति पूर्वपरिणवान्नसम्बन्धः पुन जि

से किं तं वियाहे वियाहेणं सप्तमयावि अहिज्जाति परसमयावि अहिज्जाति सप्तमय परसमयावि अहिज्जाति जीवाविअहिज्जाति लोगेविअहिज्जाई अलोगेविअहिज्जाई लोगालोगेविअहिज्जाई वियाहेण नाणाविहसुरनरिदरायरिसिविविहसंसइअपुच्छयाण जिणाण वित्यरेण आसियाणं दसुगुणखेत्तकालपज्जाव पदेरापरिणाम जहत्यअज्जावअपुणगमनिरुक्केवणयिप्य समत परमत विहू कहियेछे । जीव कहियेछे अजीव कहिये छे जीवा जीव विहू कहियेछे । लोक कहियेछे अलोक कहियेछे लोकालोक विहू कहियेछे एणी व्याख्याये भगवती अनेक प्रकारे सुर देवता नरेन्द्र राजन्तवि तेषे विविध प्रकारे सशय पूयाछे । ३६ सहस्र ग्रन्थ पूयाछे । तेहने विपे जिनवीतरागे महावीर स्वामोये विस्तरे करो भाजितछे । जेह ग्रन्थ वली केहवा तेग्रन्थ द्रव्य धर्मास्त्रिकायादिक गुणज्ञानवर्णादि चैवआकाशादिक काल समयादिक पर्यवसर भेद भिन्न धर्मा अथवा काल कृतावस्था नव पुराणादिक पर्याय प्रदेश ते विभागरहित परिणाम ते अवस्थाये जाणिवा जेणे प्रकारे अस्त्रिभाव छताभाव अनुगम सहितादि व्याख्यानप्रकाररूप निक्षेप नामस्थापना द्रव्य भावे करी थापवी नयते नैगमादिक प्रमाण प्रत्यक्षादिक सुनिगुण अति सूक्ष्म उपक्रम

जरास्थानत्वपुनरेषासाधारणमिति । तदिहैषामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्र्यासमिति गर्भने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भाषासमितिर्निर्वद्यवचनप्रवृत्तिः एषणासमिति र्द्विचत्वारिग्राहोद्यवर्जनभक्तादिगृहणेप्रवृत्तिः आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रूपकरणपरिहृदस्य निक्षेपणावस्था पादानसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसांगतेनप्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तयोच्चारस्य पुरीषस्य प्रणवणस्य मूत्रस्य रेलस्य निण्टीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेष्मणो

अरुसाया अजोगया पचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायाअवेरमणं मुसावायाअ इदिन्नादाणानु मेज्जणा  
उवेरमणं परिगहाअवेरमणं । पंचसमिइअं प० तं० इरियासमिइं ज्ञासासमिइं एसणासमिइं आयाणअंअम

मैथुन नवभेदेवैक्रियमैथुनएवं १८ भेदेमैथुनयकौविरमवो तेसर्वमैथुनविरमणचीथोमहाव्रत नवविधपरिग्रहयौविरमवो तेसर्वपरिग्रहविरमणपांचमीमहाव्रत पांचकामगुण कामियेअभिलखीयेते कामकहौये तेहीज गुणपुद्गलस्रभावतेकामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावक ते कामगुणकहन्ते कामकहे शब्दतेसांभलवो रूपते देखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोगियय फरसतेकायनोविषय आयवते कामभावयानोहे । तेहनेद्वारसरीयाद्वारतेहनेपाअद्वारकथा तेकहेके भियाल्वतेविपरोतसहणा तेहपापआविवानो उपाय १ एमअविरतिअण्णअन्नं २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेज्जोधादिक ४ योगतमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारेणैकरी कर्मनोअणमलिवो तेससुखतेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेके सम्यक्तेशुद्धदर्शन १ विरतितेप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोसुखेणादिकनेरोधवो निर्जारातेदेशयकौजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनूलपावणं जूओकएवो तेनाथानककहिताउपाय तेनिर्जाराठाणकह्यापांचेदे तेकहेके जीवमारिवाथकौविरमवोजसरिवो एहकर्मखपाविवानोउपाय १

तेचान्येचेत्यानि पूर्ववत् नवरं दसप्रश्नप्रत्यगातिश्रियमस्ति प्रश्नाध्ययनसमूहं वर्गो वर्गचदशाध्ययनानि वाप्य युगपदेयोद्विष्यते इत्यत राशएवोद्दिष्टनकाला भवन्ती  
त्येवमेवच नद्या मभिधीयगते दृष्टत दृश्यगते देशेत्यप्याभिप्रायो नञ्जायत इति तथा सखधातानि पदत्रयसहस्राद् पद्यगेति किल षट्चत्वारिंशत्ताद्याख्येष्टोच  
सहस्राणि ॥ ८ ॥ सेकितमित्यादि प्रश्नः प्रतीत स्तधिवचन व्याकरणं ग्रन्थानां च व्युत्पत्तिरग्राह्याकरणाणि तेषु अनुत्तरम् भिन्नसर्वं

एए अन्तेय एवमाइत्य वित्यरेण अनुत्तरोववाइयदसासुणं परिक्षोवायणा संखेज्जाअणुणुगदारा संखेज्जानु  
संगहणीनुरेणंअणुठयाए नवमेअंगे एणेरुयस्कंधे दसअज्जयणातिनिवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणका  
ला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाणि अस्कराणि जावएवंचरणकरण परूवणया अणुअवि  
ज्जाति सेत अनुत्तरोववाइय दसाउ ॥ ९ ॥ सेकितं परहावागरणाणि परहावागरणेरु अणुत्तर

स्यं मुनिवर अतक्रिया । एह पूर्वजे कक्षाते अनिरपणि पयमादिक पदार्थ इहं अनुत्तरोपपातिका दगामाहि कहियेछे । एणेंसूनें परिस्ता वाचना ।  
संख्याता अनुरीग पारउपक्रममादिक । यायत् संख्याती सअरुणी लगे जाणनी । तेह अगार्थपणें नवमे अंगे एक अुत स्वांधना दग प्रअयन णिण वर्ग  
वली दग उद्देशन काल । दग समुद्देशनकाल । संख्याता पदना गत सहस्र ४६ लाख द हजार पदने परिमाणें कछो । संख्याता प्रचार थी जिहं ल  
गे चरणसाधुव्रतनी प्ररूपणा दीय तिहं लगे कहियो । इत्यादि पूर्वोक्त पदार्थ जिहं कहिये ते अनुत्तरोपपातिका दगा नोमी अंग जाणिवी  
॥ ८ ॥ अथ स्यं ते प्रश्न व्याकरण प्रश्ननी आकरण कहियोते प्रश्नव्याकरण प्रश्नव्याकरणने थिपे अनुत्तर सर्गोत्तम प्रश्नना अंगुष्ठमाहु ग

जलस्य देहमलस्य परिष्ठाप्रनायाः परित्यागे समितिः स्खंडिलादिदोषपरिहारतः प्रवृत्तिरिति पंचमी । अस्त्रिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्त्रिकाया-  
दयोगतिस्थित्यवगाहोभयोगस्यार्थदिलक्षणस्थितिः सूत्रेषु लघुषट्पादिविभागस्य समन्यतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ स्थि २ सत्त ३ । दस्य ४ सत्तरस ५ त  
हयबावीसा ६ ॥ तेत्तीसजावठिई । सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ जापठमाएसुजुङ्गाः । स्त्रीबीयाएकणिष्ठियाभणिया ॥ तरतमजोगीएसी । दसवाससहससरय

तानि स्केवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिष्ठावणिथासमिई । पचअस्थिकायाप० तं० धम्मत्थि  
काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोगलत्थिकाए रोहणीनस्कत्तेपिचत्ते ३० पुणल्लसु

एकमृषावादबेरमणं २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममैथुनवेरमण ४ सावधानपणेप्रवर्त्तवोतेसमितिपांचप्रकारकही तेकहेछे-  
चालतीसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवोतेईर्यासमिति १ निरवयवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभाषिपुण्णोन्लेवोतेएषणासमतिकही ३ । आदानक  
हतांभांडमात्रउपकरणे मंकतां समति पूंजीजोईलेवो तेचोथीसमतिकही उच्चार विष्टा प्रअवण मूत्र खेल यूक सिंघाण नांकनीमल रिंट  
जल्लमेलएतलापरठतांसमितिस्खंडलदोषटालीप्रवर्त्तवो एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्त्रिकायअस्त्रिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराशितेअस्त्रिकायकहीये  
तेकहेछे धर्मकहियेचलनस्वभावएहवाप्रदेशराशितेधर्मास्त्रिकाय १ अधर्मास्त्रिकायस्थितिस्वभाव २ आकाशास्त्रिकाय जीवने पुहलनेविषे अवकासदेवा  
नीस्वभाव जीवास्त्रिकायउपयोगलक्षण ४ पुहलास्त्रिकायस्पर्शलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनचत्रनापांचताराकह्या पुनर्वसुनचत्रना पांचताराकह्या ह

नोति गमयति जिज्ञासितधर्मविशिष्टानर्थानिति हेतु स्तेचानन्ता वस्तुनो नन्तधर्मात्मकत्वात् तत्रातिवहधर्मविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्तगमपर्यायात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपक्षतो ऽनन्ता अहेतवस्तथाअनन्तानि कारणानि मत्पिण्डतत्वादीनि घटपटादिनिवर्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकारणानामेव कार्यान्तराकारणत्वा न्नहिस्तत्पिण्डः पटनिवर्तयतीति तथा अनन्ताजीवाः प्राणिन एवमजीवा ह्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निश्चिता र्था इतरे सप्तारिण आघविज्जती त्यादि पूर्ववदिति दादशास्त्रस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिविस्तुराह दुवेरा सीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद भ्रष्टापनाख्य सर्व न्तद्वार मध्येतव्य किमवसानमित्याह जावसेकितमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय म्विशेषः इहदुवेरासीपक्षत्ता इत्यभिलाप स्तत्रतु दुविहापक्षवर्णापक्षत्ता जीवपक्षवर्णा अग्निर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

सिद्धिया झुणंताञ्जवसिद्धिया झुणंतासिद्धा झुणंताञ्जसिद्धा आघविज्जंति पक्षविज्जंति पक्षविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवदुवाल्संगंगणिपिण्णं इति दुवेरासी पन्नत्ता तंजहा तंजहा जीवरासी झुजीवरासीय झुजीवरासी दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीञ्जुजीवरासीय झुक्किंतंञ्जुक्की

जीव अनन्त छे । सिद्ध अनन्त छे । एहसर्वभाव पूर्वने विधे कहिये । जणावीये देखाडिये विशेषण देखाडिये । उपदेश करिये । दादशाग स्वरूप कहने दिव तेहीजमां वेरासी कह्यो छे तेकहे छे । जीव राशि अजीवराशि । अजीवराशि बेप्रकारे छे तेकहे छे । रूपी अजीव राशि । अरूपी अजीवराशि । स्थिते अरूपी अजीवराशि अरूपो अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे । धर्मास्तिकाय म्मध १ देश २ प्रदेश ३ । अधर्मास्तिकाय म्मध १ देश २ प्रदेश ३ आकाशा

णए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहि ४ । दस ५ चीदस ६ सत्तेरेवअयराइ ॥ सोहमजायसुको । तदुवरिइक्किमारोवा ॥ ३ ॥ पलियं १ दोसार  
 २ साहिय ३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउइहस ७ सत्तरस ८ सहरसारे तदुवरिइक्किमारोवेत्ति तथावातंसयातमित्यादोनिहादशवाताभिलापेनविमानना  
 नरक्तेपंचतारे प० हल्यनरक्तेपंचतारे प० विसाहधाणिठानरक्तेपंचतारे प० इमीसेणरथणप्पञ्जाएपुढवी  
 ए अत्येगइञ्चाणंनेरइयाणं पंचपलिनुवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्येगइञ्चाणं नेरइयाणंपंचसागरो  
 वमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणंपंचपलिनुवमाइंठिई प० सोहमीसाणेसुकप्पेसु अत्येग  
 इयाणंदेवाणं पंचपलिनुवमाइंठिई प० सणकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्येगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई  
 प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पं पंचतरे वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवत्तं वायलेसं वायज्जय वा  
 स्तनचत्तना पांचताराकहा विद्याखानच्चत्तनापांचताराकहा इणीयरत्तप्रभापहिलीपृथवीपांचतलाएक नारकीनी पांचपल्यो  
 पममथआजब्बूकहिये तीजोवालुकापृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनी पांचसागरीपममथआजब्बूकहिये तीजोमारभवनपतीकेतलाएकनीदेवतानीपांच  
 पल्योपमआजब्बूकह्यो भगवत्ते सोधर्मईशान पहिले बीजेदेवलीके केतलाएकदेवतानी पांचपल्योपम आजब्बूकह्यो तीजेसनकुमारमाहिंदेचउथेदेवलीकेनेवि  
 षेकेतलाएकदेवलीकना देवताने पांचसागरीपमआजब्बूकह्यो भगवत्ते तीजेदेवलीके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । बीजेप्रतरे ४ । वाताव  
 तानामक्के ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ष ६ । वातकांत ६ । वातप्रभ ७ । वातवर्ष ८ । वातकांत ८ । वातप्रभ ९ । वातवर्ष १० । वातकांत १० । वातप्रभ ११ । वातवर्ष १२ ए



खितुमशक्यत्वा दर्शयत्स्त्वेश उपदर्शयते तत्राजीवराशि द्विविधो रूपरूपिभेदा तत्रारूपऽजीवराशि देशधा धर्मास्तिकाय स्तोदेश स्तुतदेशश्च त्वेवधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायावपि वाच्यावेव न्नव दशमोऽह्ता समय इति रूपजीवराशि चतुर्धा स्थाधा देशाः प्रदेशाः परमाणवश्चेति तेच वर्णगन्धरसस्पर्शरुखानभेदतः पञ्चविधाः सयोगतो नैकविधा इति जीवराशि द्विविधः ससारसमापन्नो ससारसमापन्नश्च तत्राऽससारसमापन्ना जीवा द्विविधा अनन्तरपरम्परसिद्धभेदात् तत्रा नन्तरसिद्धाः पञ्चदशप्रकाराः परम्परसिद्धा स्वन्तर्गकारादिति ससारसमापन्नासु पञ्चधै केन्द्रियादिभेदेन तत्रै केन्द्रियाः पञ्चविधाः पृथिव्यादिभेदेन पुनः प्रत्येक द्विविधः सूक्ष्मादभेदेन पुनः पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विधा एव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाश्चपि पञ्चेन्द्रिया चतुर्धा नारकादिभेदा तत्रनारकाः सप्तविधाः रत्नप्रभादिपृष्ठीभेदात् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च स्त्रिधा जलस्थलचरभेदात् तत्र जलचराः पञ्चविधा मत्स्याच्छपयाहमकरसुसुमारभेदात् पुन मत्स्या अनेका धाः सत्त्वमत्स्यादिभेदात् कच्छपा द्विधा अस्थिकाच्छपमासकच्छपभेदात् ग्राहाः पञ्चधा दिलिवेष्टकमनुपुलकसीमाकारभेदात् मकरामत्स्याविशेषा द्विधा शुखामकरा कारिमकराश्च सुसुमारारत्नकाविधा स्थलचराद्विधा वतुष्यदपरिसर्यभेदात् चतुष्यदाद्यतुर्धा एकबुरद्विबुरगण्डीपदसनखपदभेदात् क्रमेणचैते अश्व गोहस्त्रिसिद्धादयः परिसर्यार्थद्विधा उरःपरिसर्यभुजपरिसर्यभेदात् उरःपरिसर्यार्थचतुर्धा अह्यजगरा शालिकमहोरगभेदात् तत्राहयोद्विधा दर्वाकरासुकुलि

## अजीवरासी अरूवीअजीवरासी दसबिहा पन्नत्ता धम्मालिकाए जावअण्णसमए रूवीअजीवरासीअण्णे

स्तिकायस्त्वध ३ देश २ प्रदेश ३ एव ८ दशमो अह्ता समय काल एव १०। एमजीवराशि २ प्रकार त्स १ थावर २। तेही पणि सूक्ष्म बादर एम पर्याप्ता अपर्याप्ता एणे विविधिये बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिद्वय । पर्याप्ता अपर्याप्ता पंचद्रिय नरकतिर्यच मनुष्य देवता भवनपति व्यतर ज्योतिषी वैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्ता एम ति

मानितालेवंसूराभिलाषेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमथतच्चसुबोधं नक्तमिहलेख्या १ जीवनि काय २ बाह्या ३ उभ्यंतरतपः ४ समुद्वाता ५ वय्रहार्थानिस  
त्राणि षट नक्षत्रार्थेद्विस्थित्यर्थानिषट्उच्छासाद्यर्थेत्रयमेवेति तत्रलेखानांस्वल्पमिदं । कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामीयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायंलेख्या

यसिगं वायसिद्धं वायकूटं वाउत्तरवाहिसिगं सूरं सुसूरं सुसूत्रं सूरकृतं सूरबन्तं सूरलेसं सूरज्जयं  
सूरसिगं सूरसिद्धं सूरकूटं सूरुत्तरवाहिसिगं विमाणं देवत्ताएउववन्ता तौसणेद्वयं उक्तीसेणं पंचसागरोव  
माइंठिई प० तेणंदेवापंचरहंअष्टमासाणं अणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेषांदिवाणं पंच  
हिंवाससहस्सेहिं अहारठेसमुपज्जइ सतेगइयान्नवासिद्धियाजीवाजे पंचहिंजवग्गहणेहिं सिज्जिरसंति जा  
अंतंकरिरससि ॥ ५ ॥ ललेसानुपस्यत्ता तंजहा करहलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

ह १२ विमाने तथावली । सू १ । सुसूर २ । सूरवर्त्त ३ । सूरप्रभ ४ । सूकांत ५ । सूरवर्ण ६ शूरलेख ७ । सूरध्वज ८ । सूरसिद्ध १० । सूरकू  
ट ११ । सूरुत्तरावतंसक १२ । एह २४ विमानेदेवतापणेजपनाळे तेहदेवतानि उत्कटपणे पांचसागरीपमआजखीकल्ली तेहदेवतापांचपखवाडे पांचअर्द्ध  
मासे थोडोसासले घणोसासले नोचोसासमके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेंगणे आहारनीअर्थजपजेके कीतलाएक संसारमांहिभव्यजीव जेहपांचभवने आंतरे  
सीभस्यें बूभस्यें मूकास्यें ससारसागरयकी सर्वदुःखनीअंतकरिस्यें मोचजास्यें इति पांचमठाणोसमत्तं ॥ ५ ॥ छट्ठीठाणोकेहेके । छलेश्याकही

गम नवरं दडश्रीति नेरइया १ असुराई १० १० पुठवाइ ५ बेइदियादश्री ३ मणुया १ वंतर १ जीइसवेमाणियाय १ अहदंडश्रीएवं ॥ अथानतरप्रज्ञप्ता  
ना नारकादीना म्यर्याप्तापर्याप्तभेदानां स्थाननिरूपणायाह इमीसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्व कळा नवर तेणनिरया इत्याद्यत्रच जीवाभिग

वीए केवइयंखेतंलगहेत्ता केवइयाणिरयावासा पसुत्ता गोयमा इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुठवीए असीउत्त  
रजीयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एगंजीयणसहस्सलगाहेत्ता हेठाचिंगंजीयणसहस्सवज्जेत्ता मज्जे अउत्त  
रिजीयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पन्नाए पुठवीए णेरइयाणंतीस णिरयावासासयसहस्सा भवंतीतिमस्काया

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती प्रोक्करी ते पर्याप्ता । छ माहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दडकना जीव पर्याप्ता  
अपर्याप्ता भण्णिवा जिहालगे वैमानिकनी २४ मो दडक आवे तेहदडकनीगाथा नेरइया १ असुराइ १० पुठवाइ ५ बेइदिया ४ मणुया १ वंतर १ जीइस  
वेमाणियाय १ अहदंडश्री एव एह ठाणागे बीजे ठाणे जिम जीवनां भेद बेबे कहाछे पणि इहां सर्व कहिवी । हिवे २४ दडक माहि पहिलो नारकीनेछे  
तेह नारकीने रहिबाना ठाम भगवत आगलि गौतम खामी पूछेके एणीयें हेभदत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतली चित्र ओगाहीने एतले अवगाहीने  
बली केतला नरकावासाकहा । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषे ८० हजार योजन उत्तरे आगलीछे जेहने एहवी १ लाख योजन बाहुल्य  
पणे जाडपणे पृथिवी पिडछे तेमाहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठे एक हजार योजन वर्जोने पछे विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो  
जन पृथिवी पिड राखीये । इहा रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाण्डाछे तेमाहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कहाछे । तेनरकावासा माहि वाटला बाहिर

शब्दः प्रयुज्यत इति तथा ब्राह्मणतपः बाह्यशरीरस्य परिशोधनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति । आभ्यन्तरं चित्तनिरोधप्राधान्येन कर्मक्षपणहेतुत्वादिति तथा ह्यस्त्रोऽन्वे

पमहलेसा सुक्षलेसा कृजीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए अणुकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस  
काए वडिहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणुसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्छानु कायकलेसो संली  
णया वडिहेअप्पिंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणठ वेयावच्चं रज्जानु ज्जाण उरसग्गो लढाउ

कृष्णादिकपुद्गलनासंसर्गयकौआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृष्णादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामीयआत्मनः स्फटिस्थितत्वात् तेषां  
श्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनीपनीक्षणलेश्या १ । नीलासूडाने वणतेनीललेश्या २ । अलसीनाफूलसरीषीकापीतलेश्या ३ । हींगलपरेत्वांसरीखा  
तेजीलेश्याजाणिंये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ४ । संखसारीषीउजलीशुल्ललेश्या ६ । संसारमाहि कप्रकारे जीवजिजाय जीवसमूहकहेके तेकहेके पृथवीकाय  
पृथवीमाटीकायसमूह १ । एमज अपजलकायपाणी २ । तेयकायअग्नि ३ वायुकाय वायरी वर्णतेतीकायतृणवृक्षादिक ४ वसकायेवेद्रियादिक पंचेद्रियलग  
कप्रकारेबाह्यशरीरेने शोषिकर्मक्षपावे तेवाह्यतप तेहनीकरिवो तेहबाह्यतपकर्मक्षपाहेये तेकहेके अणुसण उपवासएकधकीमांडो क्कमासलगे ज्जणोदरीजणे  
पेटेजठिवो पूरोआरहानलेवी २ । वृत्तिसत्तेप वृत्तिन करिवो ३ । रसनैरील्याग आंबिलनिवी प्रमुखरिपो कायशरीरे क्कशताहितापलोचआतापनादि  
कनोकरिवीसंलीनताअंगउपांगसंवरी अणुशनादिकनोकरिवो कप्रकारेअभ्यन्तरतप अंतरंगमलनो सोधणहारतप तेहनो कर्मकरिवो तेतपकर्मक्षपाहेये तेस

मयसि ततः शब्दादिविषयोपभोगइत्यर्थः ततोपच्छाविष्यण्यति ततः पञ्चादिक्रिया नानारूपाइत्यर्थः हस्तागौतम एवमेतदिति भावः एवं सर्वेषां मयश्चेन्द्रिया  
 णां वक्तव्यं शबरं देवानां पूर्वम्बिकुर्वणा पद्यात्परिचारणा शेषाणान्तु पूर्वम्परिचारणा पद्यादिकुर्वणा एकैन्द्रियादीनामप्येव मयश्चेन्द्रियसम्भवो  
 नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपयभाणियव्वति यथा दाहारस्यप्रश्न उक्तं स्तथा तदुत्तरशेषद्वाराणिच भणङ्गिः प्रज्ञापनाया चतुस्त्रिंशत्तम  
 मपरिचारणापदाख्य मयमिहभणितव्यमिति इदञ्चात्राहारविचारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहारभोगाणादयति एतस्यवि  
 वरणं नारकाणां क्रियाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभयथापीति निर्वचनमेव सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणां मनाभोगनिवर्त्तित एवेति  
 तथापीगलानेवजाणति अस्मार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषां नपश्यन्ति चक्षुषापि लोभा  
 हारत्वात् तेषां मेव मसुरादय रक्षीन्द्रियांताः कश्चमेकेन्द्रिया अनाभोगाहारत्वा हिचैन्द्रियाद्य मलज्जानित्वा नजानन्ति चतुरिन्द्रियाभावाच्च न मुख्यन्तीति  
 चतुरिन्द्रियास्तु चक्षुः सक्तावेपि मलज्जानित्वात् प्रक्षेपाहारं नजानन्ति चक्षुषानुपश्यति तथा तएवलीमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यतीति व्यपदिश्यते च  
 क्षुषीविषयत्वात्तस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यङ्ची मनुष्याद्य केचिज्जानन्ति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहारं प्रक्षेपाहारश्च जानत्यवधिना नपश्यन्ति चक्षुषा तथा  
 अन्ये न जानन्ति तत्र मजानन्ति प्रक्षेपाहार मलज्जानित्वा तपश्यन्ति चक्षुषा तथा अन्ये नजानन्ति नपश्यन्ति लोमाहारं निरतिशयत्वादिति व्यतरज्योति  
 क्का नारकवत् वैमानिकासु ये सम्यगृष्टय स्ते जानन्ति विशिष्टावधित्वात् पश्यन्तीचक्षुषीपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयस्तु नजानन्ति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष  
 ज्ञानयो स्तेषां मस्यष्टत्वादिति तथा अज्जम्बसाण्येति दार नारकादीनां मयस्ता प्रगस्तान्यसखेयान्यध्ववसायानीति तथा समत्तेति दार तत्र नारकाः किं  
 सम्यक्ताभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिनः सम्यक्ताभिगमिनामिति त्रिविधा अयेत्र सर्वेपि नवर मेकेन्द्रियाभिगमिनामिति भनन्तर माहारप्ररु

लोतच भवाश्चाहस्थिकाः समेकोभावेनोत्प्राबल्येन च घातानि निर्जरुनि समुद्घातावेदनादि परिणतोहिजीवोबहून् वेदनीयादिकर्मप्रदेशान्कालांतरानुभाव  
योग्यानुदोरणेनाक्रियोदयेप्रतिचयानुभूय निर्ज्जरयति आत्मप्रदेशैः सञ्चिष्टतथातयतीत्यर्थस्तेच वेदनादिभेदेन षडुक्ताः तत्र वेदानासमुद्घातोऽसावयकमर्थय  
कषायसमुद्घातः । कषायाख्यवारिचमोहनोयकमर्थयः मारणांतिकसमुद्घातोऽतुल्यवैकुर्विकतैजसाहारकसमुद्घाताः शरीरनामकमर्थ  
अथास्तचवेदनासमुद्घातसमुद्घतआसावेदनीयकर्मपुद्गलयातंकरोति । कषायसमुद्घातसमुद्घतः कषायपुद्गलयातं मारणांतिकसमुद्घातसमुद्घत आयुःकर्मप  
द्गलावातः वैकुर्विकसमुद्घातसमुद्घतसुजोवप्रदेशान् शरीराद्विर्हिर्निष्काश्य शरीरविष्कम्भाहस्यमात्रमायामतश्च ख्येयानियोजनानि दडं निस्सजति निस्सज्य

मल्लियासमुग्धाया प० तं० वेयणासमुग्धाए कसायसमुग्धाए मारणंतिञ्चसमुग्धाए पिउहियसमुग्धाए ते  
यसमुग्धाए आहारसमुग्धाए त्वहिहञ्चत्युगहे प० त० सोइदियञ्चत्युगहे चरकुइंदियञ्चत्युगहे घाणे

गले आगलित्राणस्य अनुक्रमेकहेच्छे प्रायश्चित्तं ते अतो चारदूषणं निवारवा भणौ अस्तीचनदिकनी देवी विनयते वडे आख्यांजठिवी वेयावच्च आहारादिक दानैकरी श्री ठंभवो कालवेलायें सूत्रभणिवी ध्यानतेशुभधाननों ध्याववो उत्सर्गते कायोत्तमर्गकरिवी छयस्थनरी छ समुद्धातकह्या सातमोकेवलिसमुद्धात तेकेबलीनी एकाभावे प्रवलपणे जीवप्रदेशथी कर्मपुद्गलनों हणिबो निज्जरवो ते समुद्धातकहिंये तेकहेछे प्रथमवेदनासमुद्धात १ वेदनाब्याप्यो जीवघ णावेदनीयकमना प्रदेशकालांतर अनुभववायोग्यहे ते उदरीरणकरिने आचेपौ उदयावलिकायें प्रचेपौ भोगवीने निर्जरे आत्माना प्रदेशथी संवडहे वेदनीयकर्मना पुद्गलते वेगला कषाय समुकरें हत जीवकषायना पुद्गलनिर्जरावे मारणांतिक समुद्धात समुद्धत जीव आज्ञाकर्म पुद्गलनिर्जरे ३ विकर्षणासमुद्धासमुद्धवजीवना प्रदेश शरीरयकी

लपोतकोशेयवाससः प्रवरदोषतजसो वरपभावतया वरदोषितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा नरपतयः तन्नायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरद्वयभा उ  
त्तुजितकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वयधमकल्याः देवराजोपमा अभ्यधिक शेषराजेश्वर्य. राजतेजोलक्ष्मा दीप्यमाना. नीलकपीतकवसना इति पुनर्भणन नि  
गमनार्थं कथं तेन चेत्याह दुवेदुवेद्वत्यादि एवच नववासुदेव नववलदेवा इति तिविठूय यावत्करणात् दुविठूय सयमुपरिसुत्तमेपरिससीह । तहपरिसपुत्र्वपीये  
दत्तेनारायणेकणहेति ॥ १ ॥ अयलेविजयेभहे सुषभेयसुदसणे आनदेणदणेपउमे रामेयावियपच्छिमेति ॥ २ ॥ कितीपरिसोणति कौर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति मह  
रायक्रणगमत्थू सावथोपोयणचरायगिह कायदोकोसवो महिलपुरोहल्लिणपुरच तथा गाजिजुएसगामे तहइश्रिपराहओरंगे भज्जाणुरागगोही परइदढोमाउ  
याइयति तथा अस्सगोवेतारए सेरएमहुकेउभेनिसुभेय वलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरामधेति ॥ ३ ॥ एएखलुपडिसत्तू कितीपरिसाणवासुदेवाणि सव्वेवि

रवसहा मरुयवसन्नकप्पा अप्पहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवाभाय  
रोहोत्या तजहा । तिविठूय जावकरहे अयलो जावरामेय अप्पच्छिमे एणसिणं णवरहं वलदेववासु

माहि वृषभ समान छे पाळी भार वाहवा समर्थपणां थी । इन्द्र समान छे । अन्य राजा थजो अधिक राजतेज लक्ष्मीयें प्रदीप्तमान छे । नीला अने  
पीला छे वस्त्र जेहना दो दो राम अने केशव दीनुं भाद्र होय राम तेनलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुभाई होय । एणीचीवीसीये ८ वलदेव  
८ वासुदेव थया तेकहे छे । त्रिपुष्ट १ । प्रथमथी यावत् शब्दे धिपृष्ट २ । स्वयम्भू ३ । युरुयोत्तम ४ । पुरुषसिंह ५ । पुरुष पुडरीक ६ । दत्त ७ । नारायण ८  
कथा ८ इहालगे जाणवा ॥ अचल १ । यावत् शब्दे विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनद ६ । नद ७ । पद्म ८ । राम ९ । एहवलभद्र जाणि

चयथास्थूलोवैक्रियशरीरनामकमंपुद्गलान्प्रागब्रह्मज्ञानातयति एवतैजसाहारकसमुद्वातावपिव्याख्येयाविति । तथा अर्थसामाग्यनिर्देशस्वरूपस्यशब्दादे  
रवेतिप्रथमञ्जनावग्रहानंतरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः सचैकसामयिको नैश्वयिको व्यावहारिकस्वसख्येयसामयिकः सचषीढा आत्रादिभिरिन्द्रियेन

दिश्यत्युगहे जिह्विन्द्रियत्युगहे फासिन्द्रियत्युगहे कत्तियानरकत्वेतारे प० अस्सेलसानरकत्वेतारे प०  
ईमीसेणंरयणप्पन्नाएपुढवीए अत्येगइअणं तपलिनवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीए अत्येगइया  
णंनेरइअणं तसागरीवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्येगइयाणं तपलिनवमाइंठिई प० सोहम्मी

वाहिरकाढीयरीरेनेबाहल्यपणेविष्कंभपणे जंचपणे संख्यतायीजनदंडकरी वैक्रियशरीरनामकमना स्थूलपुद्गलनेनिर्जरे ४ तेजोल्लिङ्गभूतितिवारे तेजसपुद्गल  
निर्जरे ५ पूर्वधर्वरसंदेहटा लिवानेअर्थे आहारकशरीरकरे आहारसमुद्वातकरतो आहारकशरीर पुद्गलनिर्जरेवे ६ छ प्रकारअर्थावग्रह व्यंजनाबग्रहानंतर  
अर्थनो सामान्यपणैग्रहितीति अर्थावग्रह ते एकसमग्रहै व्यवहारं असंख्यातसमयेरहै तेकहैछे ओत्रिन्द्रियकानं तत्तेकरी सामान्यप्रकारे शब्दरूपअर्थनोग्रहिव  
तेओत्रिन्द्रियोअर्थावग्रह १ चक्षुकाहिये आंखतेएकरी सामान्यप्रकारेरूपनोग्रहितीति ओत्रिन्द्रिय अर्थावग्र २ एमनासिकाये गंधनोग्रहण ते घ्राणेन्द्रियअर्थाव  
ग्रह ३ जीभनेखाद ग्रहितीतिजिह्वेन्द्रिय अर्थावग्रह ४ शरीरेकरी स्पर्शनोग्रहितीतिस्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह ५ मनेकरी अर्थनोग्रहितीति मनोइन्द्रिय अर्थावग्रह ६  
कत्तिकानचचनछताराकह्या असलीषा नचचन छताराकह्या एणैअर्थ रत्नप्रभापहिली प्रोथवीने विषेकेतला एकदेवतानोछपल्योपस मध्यआजखीकह्या ।



नंदमित्रे दीहबाह्ममहाबाह्म । अइबलेमहाबले बलजह्वेयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविछूयदुविछूय अगमिस्सेणव  
 रिहणी । जयंतेविजएअद्व सुप्पजेयसुदंसणे अणंदे नदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एणसिणंनवरह  
 बलदेववासुदेवाण पुव्वनविथाणवनामधेज्जाअविस्सति । नवधम्मायारियाअविस्सति । नवनिथाणअभीडे  
 नवनिथाणकारणाअविस्सति । नवपफिसत्तूअविस्सति तजहा । तिलएयलोहजंघे वइरजंघेयकेसरी परहा  
 एअपराजिए भीमसेणेमहानीमे सुंगीवेयअपच्छिमे ॥ ॥ एणखलुपफिसत्तू किहीपुरिसाणवासुदेवाण ।  
 सव्वेविचक्खजोही हम्मिहतासचक्कोहिं ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेएरवएवासे अगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउद्धीसं ति  
 त्यकराअविस्सति तजहा । सुमगलेअसिद्धये णिद्धाणेयमहाजसे धम्मज्जएयअरहा अगमिस्सेणहोस्सई १

य १ । विजय २ । भद ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । प्रानन्द ६ । नदन ७ । पद्म ८ । सकर्षण ९ । एह ९ बलदेव ९ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ति । नवध  
 माचार्य धर्मगुरू थास्ति । नवनिथाणा भूमिहोस्ति । नवनिथाणाना कारण होस्ति । ९ प्रतिगनु प्रतिवासुदेव होस्ति । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजघ २  
 वचजंघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह प्रतिगनुकोर्ति पुरुष वासुदेव ना सबलाई प्रतिवासुदेव चक्के  
 करी युद्धकरे आपणा चक्कथो मरणपावि । जंबूद्वीपना एरवत वेक्के प्रावती उत्तर्णिणीये २४ तीर्थकरहास्ये तेकहेछे । सुमगल १ । प्रर्थसिद्ध २ । निर्व्याण ३ ।

साणेसु कप्पेसु अत्येगइंअणंदेवाणंउपलिनवमइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्येगइंअणंदेवाणं  
 तसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयवाइं सयन्न सयन्नरमण घोसं सुघोसं महाघोसं किंठिघोसं वीर सुवीरं  
 वीरगंत वीरसेणिय वीरवत्तं वीरपन्नं वीरकंत वीरवत्तं वीरज्जयं वीरसिद्धं वीरकूळं वीरुत्तरव  
 ण्णिसगं विमाणं देवत्ताणुववन्ता तेसिणंदेवाणं उक्खोसिणंतसागरोवमाइंछिई प० तेणंदेवाउरहंअणंठमासाणं  
 अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं ठाहिवाससहस्सेत्तिक्ख्याह्यरुसमुपज्जइ

तोजीवालुकप्रभा पृथवीनेंविषे केतलाएक नारकीनीं छ सांगरीपम आजखीकह्यो । असुरकुमारदेवतानी केतलाएकनीं छपल्योपमआजखीकह्यो । सो  
 मंइअण देवलीकने विषे केतला एकदेवतानीं छपल्योपम आजखीकह्यो । तीजिसनल्लुमार चीथे माहंइ देवलूके केतलाएकदेवतानीं छसागरीपम आजखी  
 कह्यो । तीजेचीथे देवलीके जेदेवता सयवादी १ । सयंभू २ । सयंभूरमण ३ घोस ४ । सुघोस ५ । महाघोस ६ । कण्ठिघोस ७ । वीर ८ । सुवीर  
 ९ । वीरगत १० । वीरसेनिक ११ । वीरावत्त १२ । वीरपम १३ । वीरकात १४ । वीरवर्ण १५ । वीरध्वज १६ । वीरयुग १७ । वीरसिद्ध १८ । वीरकूट १९ ।  
 वीरोत्तरावतंसक २० । एहवेविमाने देवतापणे जपनाछे तेहदेवतानीं उत्कण्ठो छसागरीपम आजखीकह्यो तेदेवता छे अर्द्धमासे एतले छेठपखवाडिसासो  
 सासले घणोसासले उ चेलिबीतेऊसास नोचीमिहिबोतेनीसास तेदेवताने छहजारवर्ष आहारनी अर्थजपजे छेकेतलाएकभव्यजीव जेछेभवेनआंतरे सीभस्य

सिरिचंद्रेपुष्पकेज महाचंद्रेयकेवली । सुयसागरेयञ्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ २ ॥ सिद्धत्येपुष्पघोसेय  
 महाघोसेयकेवली । सच्चसेणेयञ्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयञ्चरहा महासेणेयकेवली । सखा  
 गंदेयञ्चरहा देवउत्तेयहोस्कई ॥ ४ ॥ सुपासेसुखएञ्चरहा चरहेयसुकोसले । चरहाञ्चणंतविजए आगमि  
 स्सेणहोस्कई ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेञ्चरहा चरहायमहावले । देवाणंदेयञ्चरहा आगमिस्सेणहोस्कई ॥ ६ ॥  
 एवुत्ताचउत्तीसं एरवयम्मिकेवली । आगमिस्सेणहोस्कंति धम्मतित्यस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचङ्खावहिणी  
 न्निविस्सति वारसचङ्खावहिपियरोन्निविस्सति । वारसइत्थीरयणा न्निविस्सति नववलदेववासुदेवपियरोन्निवि  
 स्संति गववासुदेवमायरो गववलदेवमायरोन्निविस्सति । णवदसारमंरुलान्निविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

महायग ४ । भस्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुण्यकेतु ७ । मङ्गलचन्द्र ८ । द्युतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णवास ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४  
 मित्रसेन गोत्रोनाम । मङ्गसेन १५ । सर्वानंद १६ । संपार्थ १७ । सुत्र १८ । सुकोमल १९ अनंतविजय २० विमल २१ । उत्तर २२ । मङ्गावल २३ । देवा  
 नंद २४ हंस्ये । ऐरवतचैत्रे २४ तीर्थकर धर्मना उपर्येक । १२ चक्रवर्त्तना पिताहोस्ये । ९ वलदेवनीमाता होस्ये । ८ दगारमडल होस्ये

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेख्यंस्वादीनिक्षिप्रतिविमानानीति ॥

६

॥

अथसप्तमस्थानकंविनियते तच्चकंठा  
नवरमिहभयसमुद्घातमहावीरोवर्षधरवर्षचोषमोहार्थानिचसूत्राणिषट् नचत्रार्थानिपच स्थित्यर्थानिगव उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीखेवेति तत्रेहलीकभयंयत्स

संतगइयान्नवसिद्धियाजीवाजंछहिंन्नवगहणेहिंसिज्जिस्संति जावससुदुरकाणमंसंकरिस्संति ॥ ६ ॥  
सत्तन्नयठाणा प० तं० इहलोगन्नए परलोगन्नए अण्कम्हान्नए आजीवन्नए मरणन्नए असिलो  
गन्नए सत्तससमुग्धाया प० तं० वेयणासमुग्धाए कसायसमुग्धाए मारणंतियसमुग्धाए वेउद्धियसमुग्धाए  
तेयससमुग्धाए आहारसमुग्धाए केवलिसमुग्धाए समणेन्नगवंमहावीरे सत्तरयणीनु उहुंउच्चनेणंहोस्सत्त स

बुक्खस्ये मंकासे भवमांहियो सर्वदुखनो अंतकरिखे मीळजासे इतिच्छ्ठोठाणीसमत्तं ॥ ६ ॥ हिंवेसातनो अधिकारकहेच्छे सातभयनाठामकह्वा तेकहेच्छे  
स्वजातीयथकीभय उपजेतेइहलीकभय परजातीयथकी भयउपजेतेपरलीकभय द्रव्यआत्थीउपजेते आदीनिभयबाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आक  
स्मिकभय आजौयिका जीयकानो उपायतेहनो भय तेआजीविकाभय मरणनोअसंमरणभय अलोकअकीर्तितेहनोभय उपजेतेअस्त्रीकभय सातसमुद्घातपद  
नो अर्थछएणकह्वाहे तेकहेच्छे वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणंत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तेजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमीकेवलीसमुद्  
घाततेहकीइक केवलीचार अघातीयाकर्मअपावणेअर्थ केवलीसमुद्घातकरे पीतानां प्रदेशलोकांतलगे विस्वारी कर्मपुद्गलनिर्जरे अमण तपस्वी भगवंतमहा

जातीयात् परलोकभयं यदि जातीयात् आदानभयं द्रव्यमाश्रित्य ज्ञेयते अक्रसाङ्गं ब्राह्मणिभिर्निरोप्य स्वविकल्पाज्जातं श्रेषाणि प्रतीतानि नवर मन्त्रो कोऽकीर्त्तिरिति । समुद्रघाताः प्राग् नवरं केवलिसमुद्रघातो वेदनीयनामगोत्राश्रय इति । तथा रत्नि विततांगुलिहस्त इति ऊर्द्धोष्ठत्वेनेति हीत्याबभूवेति तथा

तत्रासहरपत्न्या प० तं० चुल्लहिमवन्ते महाहिमन्ते निसट् नीलवन्ते रूपी सिहरी मन्दरे सप्तवासा प०  
तं० नरहे हेमवन्ते हरिवासे महाविदेहे रम्भए एरम्भए एरवए खीणमोहेण भगवया मोहणिज्जवज्जाने स  
त्तकम्मपयणीने वेणुई महानरुक्ते सत्तारे प० कत्तिञ्चाइञ्चासत्तनरुक्ता पुब्बदारिञ्चा प० महाइञ्चासत्तन

वीर सातरत्नि विततांगुलहाथ रत्निकहिये एतलेसातहाथजंचापणेहुया । सातवर्षधूपर्वतकहिये भरतादिकचेत्त तेहनधरणहारकह्या । मर्यादाकारौतिकह  
छे । भरतचेत्त हिमवन्तचेत्त मर्यादाकारौतेलघुहिमवन्तपर्यन्त हिमवन्तचेत्त हरिवर्षचेत्त मर्यादाकारौ तेमर्हरहिमवन्त पर्वत हरिवर्षचेत्त महाविदेह मर्यादा  
कारौ रूपीनिषधपर्वत महाविदेह रम्यकचेत्त मर्यादाकारौ निषधनीलवन्तपर्वत रम्यक एरम्भवतचेत्त मर्यादाकारौरूपीपर्वत एरम्भवतएरवत चेत्त मर्यादा  
कारौ शिखरीपर्वत । पूर्वापर महाविदेह मर्यादाकारौ मेरुपर्वत । जवूदीपमाहिंसातवासाकहिये सातचेत्तचेत्त तेकहैके भरतचेत्त मनुथनी १ हेमवन्तचेत्त  
गलियांनूरहरिवर्षचेत्त गलियांनूर ३ महाविदेहचेत्तचेत्त कर्मभूमियामनुथनी ४ रम्यकचेत्त गलियांनूर ५ एरम्भवतचेत्त गलियांनूर ६ एरवतचेत्त मनुथनी ७  
चीणसर्वथापि जयगयेके मोहनीकर्म जेहनो एहक्कभगवन्तपूज्ययती मोहनीयकर्म वरजीने सातकर्मनी प्रकृति ज्ञानावरणीय १ । दर्शनावरणीय २ । वेदनी

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मखिन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुथादीन्य परद्वारिकाणि स्वा  
 त्यादौ न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिह तु मतान्तरमाश्रित्य क्त्तिकादीनि सप्तपूर्वद्वारिकादीनि भणितानि चंद्रप्रज्ञप्तौ तु बहुतराणि मतानि दर्शितानीहार्थ  
 रक्त्तादाहिणदारिद्र्या प० शुणुराहाइयासत्तनरक्त्ताअवरदारिया प० धणिठाइयासत्तनरक्त्ता उत्तरदारि  
 या प० पाठांतरेण । अत्रीयाइयासत्तनरक्त्ता प० इमीसेणरयणप्पन्नाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं  
 सत्तपलिनेवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए  
 नेरइयाणं जहन्नेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्येगइयाणं सत्तपलिनेवमाइंठिई प०

य ३ । आजखी ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेवेदे भोगे मवानचचना सातताराकक्षा एतिकाश्रादि लेईने सातनचत्र पू  
 र्वद्वारिकाकक्षा पूर्वदिशि जाणहारने भलूथाय । मघादिक सातनचत्र दक्षिणद्वारिकाकक्षा । अनुराधादि कुक्षीनचत्र पश्चिमद्वारिकाकक्षा । धनिष्ठादिक  
 सातनचत्र उत्तरद्वारिकाकक्षा । पाठांतरे करीकहि येछे । अभिजिदादिक सातनचत्र पूर्वद्वारिका अखिनीथी सातनचत्र दक्षिणद्वारिका पुथादिक सातनचत्र  
 पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनचत्र उत्तरद्वारिकायह मूलमतजांणि वी एणोयैरत्तप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी सातपत्थीपममध्य  
 म आजखीकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषे नारकीनीउत्कष्टी सातसागरीपम आउखीकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषे नारकीनी सातसागरीपमजघन्य  
 आउखीकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानी सातपृथ्वीपम आउखीकह्यो । सौधर्मईशानदेवलीकेनेविषे केतला एकदेवतानूंसातपत्थीपम

सोहम्मीसाणेसुकप्येसुअत्येगइयाणं देवाणंसत्तमालिजवमाइंठिई प० सणकुमारिकप्ये देवणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा  
 सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिं देकप्येउक्कोसेणसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंअलोएकप्येअत्येगइ  
 याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा समं समप्यं महप्यं पन्नासं आसुरं विमलं कंचणकूटं सणं  
 कुमारवाहिसं विमाणं देवत्ताउणवन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तरहं  
 अठ्ठमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तहवगगहणेहिं सिज्जिरसंति बुज्जिरसंति जावसवु  
 हारठे समुपज्जाइ सतेगइयान्नवासिधियाजीवा जे सत्तहिन्नवगगहणेहिं सिज्जिरसंति बुज्जिरसंति जावसवु  
 आउखीकह्यो । चीजासनत्कुमार देवलीके देवतानीउत्तकथी सातसागरोपम आउखीकह्यो । माहेद्रचउथेदेवलीके देवतानीउत्तकथी आभेरीसातसागरोप  
 म आउखीकह्यो । ब्रह्मपाचमे देवलीके केतलाएकदेवतानी सातसागरोपमआउखीकह्यो । सनत्कुमारदेवलीके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ ३ ।  
 प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कचनकूट ७ । सनत्कुमारावतंसक विमान ८ । एहआठविमाननेविषे जेदेवताजपनाछे तेहदेवतानी उत्तकथीसात साग  
 रोपम आउखीकह्यो । तेहदेवता सातमे पखवाडे सासीसासले घणीसासले नीचीसासलेवे । तेहदेवताने सातवे वर्षसहसे सातहजारवर्षे आहारनी अ  
 येजपजेछे केतलाएकभयजीव जेहसातभयनेआंतरे सीभस्ये बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुक्कली अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति सातमीठाणीसमत्तं ॥ ७ ॥

इति स्थितिसूत्रमादीनिष्टौविभामनामानीति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकञ्चा आथते । सुगमंचैत त्रवर मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यस्रजंजवू  
 ग्रात्मलीजगतीक्रेवलिसमुद्रघातगणधरनचचार्यानिसूत्राणिनव स्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीणीति । तत्रमदस्थानभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनिनान्येव  
 मदप्रधानतयादर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि आत्मानमदीजातिमदएवमन्यान्पि अथवामदस्यस्थानानिनितान्येवाह जाइमएइत्यादिशेषतथैव तथाप्रवचनस्याद्वादर्श  
 गस्य तदाधारस्यवा संघस्यमातरइव प्रवचनमातर ईर्यासमित्यादयोद्वादर्शगिभिहिता आश्रित्यसाक्षात्प्रसगतोवाप्रवर्तते भवतिचयतो यत्प्रवर्तते तस्यतदा  
 धित्यमातृकस्यतेति संवपचेतु यथा शिशुमोतरममुंच बाललाभंलभते एवंसंघस्ताममुंचवत्संघत्वंलभते नान्यर्थेतोर्यासमित्यादीनांप्रवचनमातृकत्वमेवेति तथा

स्काणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अथमयथाणा प० तं० ज्ञातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुय  
 मए लानमए इस्सरियमए अथपवयणमायालु प० तं० ईरियासमिई ज्ञासासमिई एउणएसमिई आयाण

हिवे आठनीठाणीकहैछै । आठमदनास्थानकआअय तेमदस्थानककह्या । तेकहैछै जातिमदजातिमातृपञ्च त्थेकरीमद अभिमान तेजातिमद १ । इमकु  
 लजेपितपच्चत्थेकरीमद तेकुलमद २ । बलते शरीरनो सामर्थ्यपणी ३ । रूपतेसौंदर्यपणी ४ । तपतेछह आठमादिक ५ । अतजेशास्त्र घणीभणे तेथेकरीम  
 द ६ । लाभतेफलप्राप्ति तेथेकरीमद ७ । ऐश्वर्यतेठकुराई ८ । यह आठमदकह्या आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनू आधारतेसंघ तेह  
 ने मातासरिखी माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये । तेकहै ईर्यासमिति चालतांजीवने जीईचाले तेईर्यासमिति १ । भाषानिवद्यबोलेते  
 भाषासमिति २ । ४२ दूषणटाली आहार भातपाणैखेवे तेएषणएर्यासमिति ३ । उपकरणपूजोलेवी मुंक्वते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूजोनिदोष स्थंडिले



॥  
 अन्तरदेवानांचैत्यवृक्षास्तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामगृती मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया शृङ्खलाचामरध्वजादिभिरलंकृताभवन्ति । तैर्चैवंस्त्रीकाभ्यामवगन्त  
 व्याः कलत्रोडपिसायाणं बडोजकलाणचेइय । चुलसीभूयाणंभवे रक्खसि यतुकंडउय १ असोगीकित्रराणं च किंपुरिसाणयचंपओ नागरुक्खीभुयंगाय गंधब्बाण  
 यतुवुरत्ति ॥ २ ॥ तथा जवुत्ति उत्तरकुरुषु जंबूवृक्षः पृथिवीपरिणामः सुदर्शनोत्तन्नम एवंकूटशाल्मलीवृक्षविशेषः एवं देवकुरुषु गरुडजातीयस्ववेणुदेवाभि

त्रंक्रमत्तनिरैकवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिधाणपारिठावणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती  
 वाणमततराणंदेवाणंचेइयसुस्काअठजोयणाइउहं उच्चत्तेणं प० जंबूणंसुदंसणाअठजोयणाइउहं उच्चत्तेणं प०  
 कूळसामलीणं गरुलावासे अठजोयणइ उहं उच्चत्तेणं प० जंबूदीवस्सणं जगई अठजोयणाइ उहं उच्चत्तेणं  
 प० अठसामइए केवलिसमुग्घाए प० तं० पढमेसमएदंळकरेइ वीएसमएकवाळंकरेइ तइएसमए मंथंकरेइ

परिठवे तेपारिष्ठावणियासमिति ५ । मननीगीपिवी ठामेराखवी तेमनीगुत्ति १ इम्मज्जकायानी गोपिवी ३ । वाणमतरेवतानाचैत्य  
 वृक्ष तेहने निकटवरत्तोयुच्चतैचैत्यवृक्ष जेहव्यंतरेद्रना घरआगलवृक्ष क्खकरीरह्वाकै तेहचैत्यवृक्ष आठयीजनजचा जंचपणिकह्या । हिवे उत्तरकुरुक्षेत्र नेमां  
 हि जंबूवृक्ष पृथिवीपरिणाम सुदंसणाएहवेनामि अणाडियादेवनीठाम आठयीजनजं चीजं चपणिकह्यो निषधपवतहेठ देवकुरुक्षेत्रमाहि शास्मलीवृक्ष गरुड  
 जातीय वेणुदेवतानी आवासभूत तेहआठयीजनज चीजं चपणिकह्यो जंबूदीपने चउळेरजगतीकै जिमनगरनेचउळेर गढहीये तिमतेजगती आठयीजनजं  
 चीऊही । केवलो केहडे अंतर्मुहसं आठखीथके अधातियाकर्म वेदनौ १ । नाम २ । गोत्र ३ । आयु ४ । बराबर करिवानेअर्थ आठसमयनी केवलसमुद्घा

धानस्य देवस्यावासइति । जगतीजंबूद्वीपनगरस्य प्राकारकल्याणलीति । तथा पार्श्वस्याहं तत्र यो विंशतितमस्तोत्रकस्य पुरिषादाणीयस्सति पुरुषाणां मध्ये  
 आदानीय आदेशः पुरुषादानीय स्तस्त्राष्टौ गणाः समानवाचनाक्रिया साधुसमुदायाः सूत्यः । इदं चैतत्प्रमाणं स्थानांगे पर्येषणकाले  
 च श्रूयते केवलमावश्यकं अन्यथा तत्र ह्युक्तम् । दसनवगंगणप्रमाणं जिह्वादायति । कीर्तयः पार्श्वस्य दशगणाः गणधुराश्च । तदिह द्वयोरल्पायुष्कत्वादिना का  
 चउत्थेसमए मंथंतराइपूरेई पंचमेसमए मंथंपरिसाहरई सत्तमेसमएकवाळं  
 परिसाहरई अठमेसमए दंठंपरिसाहरई ततोपच्छा सरीस्थेन्नवइ पासस्सणंअरिहापुरिसादाणिअरस्स अठ  
 गणा अठगणहराहोत्या तं० सुत्तेयसुत्तघोसेय वसिष्ठेन्नयारिय ॥ सोमेसिरीधरेचेव वीरन्नदंजसेइय ॥ १

तत्करै । तेकहैके केवलीपहिलेसमे आत्मप्रदेशवाहिरकाढी दंडाकारकरै हेठेसातमीलगे जपरलोकांतलगे विस्तारितेकहैके । बीजेसमे<sup>१</sup>द्वैपाटकरैद्विजलोकांत  
 लगेप्रदेशेकरीपूरं तीजिसमये मथानकरैस्थारपांखडीनारवाइयानीपरै पूर्वपश्चिम लोकांतलगेपूरै । आत्मप्रदेशविस्तारै । चउथेसमए च्यारविंशतिनाभाग  
 आंतराप्रदेशेकरीपूरै । पांचमेसमयेमंथाननाआंतराविदिशे जेप्रदेशपूस्वाके तेहआत्माना प्रदेशप्रतें सोहरे पाछाले छेउसमये मथानसंहरे । सातमे समये क  
 पाटसहरे १ । आठमेसमये दंडप्रतेसाहरे ८ । तिवारपछे शरीरस्तअहोये मूलुगेशरैरहोये । औपार्श्वनाथ अरिहंतने पुरुषामांहि आदेयहुकमनाधणीजिह  
 नीवचनसङ्गेगाह्यमानतेह पुरुषादानीय तेहने आठगछने आठगणधरहुया सामान्य वाचना क्रियासाधु समुदाय तेगछतेहना नायक ते गणधर यद्यपि  
 पार्श्वनाथना १० । गणधर आवश्यके कल्याके परं वे अल्पायुषहुआ<sup>२</sup>माटे आठलखाके तेकहैके शुभेय १ । शुभघोष २ । वासिष्ठ. ३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५

नामानोनि ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानकं सुखावनीधम् । नवरभिद्वयगुप्ति १ तदगुप्ति २ ब्रह्मवर्गध्यान २ पांर्त्तुसूत्राणां वलुटयम् ज्योतिष्कार्यं  
यगस्य १ भोम २ सभा ३ दर्गनावरणार्थं वतुष्टयं क्षित्याद्यर्थानि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो सैथुनपिरिति परिरक्षणीपायाः गोस्त्रीपशुपंडकैः संसत्तानि सकी

पञ्चंकरं ३ चंदानं ४ सूरानं ५ सुपइष्टानं ६ अग्निद्वानं ७ रिष्टानं ८ अरुणानं ९ अरुणुत्तरवर्जिसं वि  
भाणं देवताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं अष्टसागरोवसाइठिई ५० तेणंदेवा अष्टराहं अष्टमासाणं  
अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नोससंतिवा तेसिणंदेवाणं अष्टहिंवाससहसरोहिं अष्टहारठसमुपज्जइ  
संतेगइयाजवसिद्धिआजीवा जे अष्टेहिंजवग्गहणेहिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति जावअतंकरिस्सति ॥ ८ ॥  
नववंजचेरगुत्तीनु ५० त० नोइत्थीपसुपंळगसंस्तानि सिज्जासणाणि सेवित्तान्नवइ नोइत्थीणं क्हं क्हिहत्ता न्न

आठपत्थीपमआउखीकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानी आठसागरोपसगाउखीकह्यो । पांचमेदेवलोके जेदेवता अर्चि १ । अर्चिगाली २ ।  
वैरीचन ३ । प्रभंकर ४ । चद्राभ ५ सूरान ६ । सुप्रतिष्ठाभ ७ । अग्निराध ८ । अरुणभ ९ । अरुणोत्तरावतसक ११ । एम ११ विमाने देवता  
पणे उपनाछि । तेहदेवतानी उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखीकह्यो तेहदेवता अष्टपखुवाडिं खासीखासले जे चोसासले नीचोखासले नीचोखासमूने तेहदेव  
ताने आठेवर्धसहसे गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभव्यजीव जे प्राज्ञमवनेआंतरे सीमस्ये बूमस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये । इति आठमोठाणोस  
अत्ती ॥ ८ ॥ हिवेनवनोअधिकार लिखियेछे । नववृत्तचर्य वृचने वाडिनीपरे राखिवानी उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये

णानि शय्यासनानि शयनीय विष्टराणि वसत्यासनानि वासेवसयिन् भवतीत्येका १ नोस्त्रीणां कथां कथिताभवतीति द्वितीया २ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा-  
 यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणा मिद्रियाणि ग्रथननासा वेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो-  
 कयिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतस्यभोजी गलत्स्नेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पचमी । नो  
 पानभोजनस्यातिमात्रप्रमाणेन यथा भवत्येव माहारकः सदाभवतीति षष्ठी । नोपूर्वरत पूर्वक्रीडित मनुस्मर्त्ताभवति रतमैश्वर्यक्रीडितस्त्रीभिः सह तदन्वाक्री-  
 डितिसप्तमी । नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोग्रधानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोस्त्रोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादच

वइ नोइत्थीणं गणाइं सेवित्ता नवइ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं अलोइत्ता निज्जात्ता  
 नो पणीयरसन्नोइं नो पाणन्नोयणस्स अइमायाए अहाहारइत्ता नो इत्थीणं पुह्खकीलिअइं समर

ते कहैछे । नहो स्त्रीपशुपडक संसक्त व्यासशयनपत्यकादिक आसन ते बाजोटादिकसेविताहुयें । स्त्रीनीकथावार्तनकहे । स्त्रीना समुदायने सेवेनही  
 स्त्रीना इन्द्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखे एकाग्रचित्तध्यायेनही । प्रणीतरसभोजी नहीय गलत्स्नेहरसविह्वलिमेनही पाणीसरस भोज  
 न अधिकमात्राए अधिकजीमे नही वत्रीसकवलउपरांत जीमेनही स्त्रीने पाछल्यासंभोगपूर्वक्रीडा सभारे नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते  
 अनुरागीहीयनसांभले एमज रुडारूपजीवे नही रुडागधनलेवे न रुडारसनोस्वादकरे न रुडास्यशपीताने शरीरेलगडि आत्मानो स्नाषा नवंधे एतलेशु

नानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । नोसातसौख्य प्रतिबद्धस्यापि भवति सातासातवेदनीया दुदयम्याप्य प्रीद्यत्सौख्यंतत्तया अनेनच प्रशममुखस्य व्य्दास इतिनवमी  
इदंच व्याख्यानवाचनादयानुसारेणकृतं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्तत्रभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तत्प्रातिपादकान्धध्यनानि ब्रह्मचर्याणि तानि  
चा चारांगप्रथमश्रुतस्त्रिंश प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नक्षत्रं साधिका नवमुहूर्ताश्चिद्रेण सार्द्धयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वंच तेषां चतुर्विंशो  
ल्यामुहूर्तस्य द्विषष्टिभागैः षट् षष्ठ्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्टिभागानामिति । तथाअभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयंति तन्नोत्तर

इत्तान्नवइ नोसद्गणुवाई नोरुवाणुवाई नोख्वाणुवाई नोसलोणुवाई नो  
सायासोखपठिवरुयेयाविन्नवई नववंन्नचेरश्रुत्तिनु प० तं० इत्थीपसुपंठगसंसत्ताणं सिज्जासणाणसेवणया  
जावसायासुखकप्पठिवरुयेयाविन्नवइ नववंन्नचेरा प० तं० सत्थपरिखा लोगविजनु सीउसणिज्जं सम्भत्तं  
अयंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुतं महपरिखा पासेणञ्जरहापुरिसादाणीए नवरयणोनु उहु उच्चत्तेणंहो

गार नकरे साता सुखेनविषे प्रतिबद्ध नहीये न डूवीरहै नववृह्मचर्यनी अगुप्ति नवेप्रकारे ब्रह्मचर्यं नरहै तेकहैछे । स्त्रीपशुपंडके संसक्तव्यासजे शय्यापद्यंका  
दिक आसननवाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाळल्या नवबोल बखाख्याछे ते उपराठीलीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिधाय नउमंबोले जेसातासुखेनविषे  
प्रतिबद्ध खुंचीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूचना प्रथमश्रुतस्त्रिंशना नवअध्ययन कल्हा तेकहैछे । शस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतीणीय ३ सम्य  
क्त ४ । आयंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोक्षाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमार्हि प्रधाननवरलि

गतीरंभी चिलेनएतावानेव प्रवेगइति लोकानुभावीवायमिति विजय चारम्यजंजूदीपयधिनः पूर्वद्विग्वयन्यितस्य एगमेगाएत्ति एकेकस्मिन् बाहाएत्ति बाहो

रसणदारस्सएगसेगाए बाहाए नवनवओमा प० वाणमंतराण देवाणं सत्ताउसुहम्माउनवजोयणाडंउहं उ  
च्चेणं प० दंसणावरणिजस्सणंकम्भस्सनउत्तवरपगणीउ प० तं० निद्वा निद्वा निद्वा पयला पयला  
थीणद्धी चरकुदसणावरणे अचरकुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीरोणं रयणप्पञ्जाएपुढ  
वीए अत्येगइयाणंणेरइयाणं नवपलिउज्जमाइंठिइ प० चउत्तीएपुढवीए अत्येगइयाणंणेरइयाणं नवसागरो  
वमाइंठिइ प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्येगइयाणं नवपलिउज्जमाइंठिइ प० सोहम्मीसाणेसुक्कअसु चत्वे

खाडोमाहोआवे जवूहीपना विजयद्वारने एकेक वाछानेपासे नदनमभोमानगरइ तया उत्तठामकथोइ वाणमतरदेवनी सभा भुधत्तो नवयोजन ऊंचीऊंच  
पणैऊहीजाणवी । दर्यनावरणणीयवीजीकने तेहकर्मनी नव उत्तराल तिकाही तेकदेउ सुगे जागे तेनिद्वा दइठाआवे ते प्रचला २ दुग्गेजागे तेनिद्वा निद्वा ३  
चालता आवे ते प्रचलाप्रचला ४ । औणद्धो अदंनसुदेवनी वल्लुवे ५ । चत्तुदंसणकहिन्ने आउतेहनी आवरण पडल तेचत्तुदसणावरण ६ । चत्तुपिनायेप  
याकता चारइन्द्रिय तेहना आवरण तेअचत्तुदसणावरण ७ । अथवि दसणावरण ८ । केवलदंसणावरण ९ । एणीविरलप्रभाइविधीनेविपे केतलाएक नार  
कोनी नवपत्थीपम आउखीकद्धी । चउथी नरकइविधीनेविपे केतलाएक ओरकोनी नवसागरीपम आउओीकद्धी अमरकुमार देवनी केतलाएकनो नवपत्थी  
पम आउखीकद्धी । सीधर्मइंगानदेवलीकनेविपे केतलाएक देवतान्ने नवपथोपम आउओीकद्धी । नमदेवलीकनेविपे केतलाएक देवतानी नवसागरीपम

दीनिहादश सूर्याद्यापि द्वादशैव रुचिरादीन्येकादश ॥ ८ ॥ दशस्थानकं सुबोधमेव तथापि किञ्चिन्नित्यते इहपंचविंशतिसूत्राणि तत्रलाघव  
द्रव्यतो ल्योपधिना भावतो गौरवत्यागः संविग्नमनोऽत्र साधुदान वा ब्रह्मचर्येण वसनमवस्थानं ब्रह्मचर्यवास इति तथाचित्तस्य समस्तसमाधानं प्रशान्तता

सिद्धियाजीवा जे नवहिंशवगहणेहिं सिज्जिस्संति जाव सहुदुस्काणमंतंकरिस्सति ॥ ९ ॥

दसविहेसमणधम्मो प० तं० खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ मद्दवे ४ लाघवे ५ सच्चै ६ संजमे ७ तवे ८ चि  
याए ९ वंनचेरवासे १० । दसचित्तसमाहिठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे ईसमुप्पन्नपुह्सेसमुप्पज्जिजा स

उपजे । केतलाएक भव्यजीव नवें भवग्रहणे नवभवने आंतरें सीभस्ये वूभस्ये संकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्सि २५८ इति नवम् ठाणूसम्भत्तं ॥ ८ ॥  
हिंवेदशनों अधिकारलिखिछे अमणकहिये साधुतेहनी धर्मदशप्रकारे तेअमणधर्मकह्यो तेकह्छे । ब्रमाक्रोधीनिग्रह १ । मुक्तिनिलोभपणो २ । आर्जवमायानिग्र  
ह ३ । मार्दवमाननिग्रह ४ । लाघव हलुआपणं द्रव्यथकीहलकी जेअल्पउपधि भावहलको गौरवचयत्याग ५ । सत्यभाषी ६ । संयम १७ प्रकारे ७ । तप १२  
प्रकारे ८ । त्याग साधूनेआहारादिकदेवी ९ । ब्रह्मचर्यनेविषेवसिवो १० । दशप्रकारेचित्तना मननां समोधि प्रशान्तपणी तेहनास्थानक आश्रय तेचित्तसमा  
धिस्थानक कहिये तेकह्छे धर्मनीचिता जीवादिकपदार्थनो उपयोग तथा उपजिवो मरधी तेहनी स्वभावतेधर्म तेहनी चिंतविवी अथवाश्रुत चारिचलचरण  
मनो चितावासे कहतां जेहपुण्ययंतने एहवीचितनहोयतेधर्मनी चिताकह्छे । असमुत्पन्नपूर्वा पूर्वअतीतकाले नही उपनी तेहधर्मनीचिता उपन्यापके सब  
धर्मजीवादिद्रव्यस्वभाव अथवाश्रुतचारित्र जाणिसए जपजिज्ञायेकरो आण्णे प्रत्यास्थानपरिज्जायेकरो क्कांडवायोग्य कर्महुए तेक्काडीये तेधर्मचिंतापहिली स

च्छेदसर्वेदितुमिति कल्याणसूचका वितथस्वप्नदर्शनाच्चभवति चित्तसमाधिस्थाननिर्द्वितीयं तथासंज्ञानसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाददृष्टिवाद दीर्घकालिकोपदे  
 शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञायाह्विति सायस्यारिक्त ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञान  
 सधिज्ञानं तच्चेहाधिकृतसवान्वया संपपत्तेर्जातिसरणमेव से तस्यासमुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुञ्जभववेसुमरिएत्ति पूर्वभावात्समर्तुं स्मृतपूर्व  
 भवस्यसवेगात्समाधि कृत्यद्यतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदमन वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणिलादृशेनंददति किंफलमि  
 त्याह दिव्यादेविधप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यादेवद्व्युतिविशिष्टां शरीराभरणदिदीक्षितिव्य देवाहुभावउत्तर्धविभिन्नकरणदिपभाव द्रष्टुमेतद्दर्शनायेत्यर्थः दे  
 वदर्शनाच्चागमार्थेषुब्रह्मधानाद्यं धर्मेवहुमानद्यभवति ततश्चित्तसमाधिरितिभवति देवदर्शनचित्तसमाधिस्थानवासितस्यासमुत्पन्नपूर्व

**समुत्पन्नपुष्टे समुपजिज्ञा पुष्टन्नवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे असुमप्यन्नपुष्टे समुपजिज्ञा द्विष्टदेवाहु दिष्टं  
 देवजुतं दिष्टं देवाणुच्चावंपासित्तए नहिनाणेवासे असुमप्यन्नपुष्टे समुपजिज्ञा नहिनालो गंजाणित्तए नहिदं**

कहिथे से कहतां तेहने असमुत्पन्नपूर्व पूर्वजपनूनथी सेइ अर्थजपजे पूर्वभवसंभारे विशेष सवेगउपजे एवीजचित्तसमाधि स्थानक ३  
 तथा देवदर्शन सेऊहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्व पूर्वजपनो नथी तेहजेने उपजे ते सेअर्थउपजे । दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी द्युति  
 विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानी अनुभाव वैक्रिय कारिवानी समर्थाई देखवानेअर्थ देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु  
 इ एहचउथूठाणूं ४ । अविज्ञान तेहजेने पूर्वनथी जपनूं तेहजेने पूर्वजपे अवधिज्ञानकरी लोकस्वरूप जाणवने अर्थ विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एयां





हाणयेति द्रदंतुकेवलमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दृश्यमिति । तथा अकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधारुक्त्विति कल्पवृक्षाः ।  
उपभोगत्ताएति उपभोग्यत्वाय उव्वस्थियत्ति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिंगत्ति भाजनदायिनः तुडियगत्ति तुर्यांगसंपादकाः

मंदरेणपुब्बएमूले दसजोयणसहस्साइं विस्संजेणं प० अरिहाणं अरिठनेमीदसधणइंउहुं उच्चतेणंहोत्या क  
रहेणंवासुदेवे दसधणइंउहुंउच्चतेणं होत्या रामेणंबलदेवेदसधणइंउहुं उच्चतेणंहोत्या दसनस्सत्ता नाणबुद्धि  
करा प० तं० भिंगसिरअण्णपुस्सो । तिन्निअण्णपुब्बाइमूलमस्सेसा । हत्थोयिंत्तायतहा । दसबुद्धिकरायना  
णस्स १ अकम्मन्नमयाणंमण्णुअणं दसविहारस्सका उवन्नोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय भिंगाय तुळ्ळि

चयकरिवानेअर्थे एइक्केवल्लोमरणते सर्वोत्तमचित्तसमाधिस्थानकदृश्यम १० मेरूपवत् मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेपिण्डुत्थेकेह्यो अरिहंतअरि  
ठनेमीबावीसमीतीर्थंकर दशधनुत्रजचपणेहुया कण्णवासुदेव नवमी तेहनी देहदशधनुषउचीउंचपणेहुयो रामवलदेव बलभद्र दशधनुषउंचा उंचपणेहुया  
दशनचत्र ज्ञाननां वृद्धिकरणहार कक्षा भगवंते तेकहेक्के मृगशिर १ । आर्द्रा २ । पुष्य ३ त्रिणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४ । पूर्वाषाढ ५ । पूर्वाभाद्रपद ६ । मूल ७  
आश्लेषा ८ । हस्त ९ चित्रा १० । एह दशनचत्र ज्ञानने वधारेएह मांहि भण्णवसे तो काहीं विघ्ननउपजे अकर्म भूमिजिहो धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया  
नही तेअकर्ममूमि ५७ अंतरद्वीप अनेनीस अकर्मभूमि एवं दई चेत्त युगलियानां सास्वतांक्के । तिहांनां माणसें युगलियाने दशप्रकारेहच एतले कल्पवृक्ष ।  
उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आर्द्ररक्षा यकाभोग्यआवे बांक्षापुद्गल एहवा कक्षातेकहेक्के ॥ मत्तंगका मदनानाकारणभूत जाण्णिवा १ भाजनदातार २

दीवन्ति दीपशिखाः प्रदीपकार्यकारिणः जीदन्ति ज्योतिरग्निस्त्राणा आरिण इति चित्तगतिचित्रांगाः पुष्पदायिनः चित्ररंसाभोजनदायिनः मण्येगाश्चाभरण  
दायिनः गेहाकाराः भवनत्वेनोपकारिणः अन्नगन्धसंस्त्रव तद्धेतुत्वादननादिति घोषादीन्येकादशविमाननामानतीति । अथैकादशस्थानं तदपिगतार्थं नवर

च्युंगा दीव जोइ चित्तंगा चित्तरसा मणिच्युंगा गेहागारा अग्निगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पन्नाएपुढवीए  
अथ्येगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दसजोयणंसहस्साइंठिई प० इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए अथ्येगइ  
अयाणं नेरइयाणं दसपलियनेवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अथ्येगइयाणं प० चउत्थीएपुढ  
वीए अथ्येगइयाण नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमारणं देवाणं अथ्येगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा  
याणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमारणं देवाणं अथ्येगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा  
वाजिचना संपादक ३ दीवा ४ तथा जीतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फलदायक ६ भोजनदातार ७ धरनेकामआवनार ८ वस्त्रना  
दातार ९ एणीएरत्तप्रभा पहिली पृथिवीनिविधि केतलाएक नारकीनी जघन्यनी दशसहस्रवर्षनी आउखीकह्यो । प्रहरत्तप्रभा पृथिवीनिविधि केतलाएकनी  
दशपत्थीपम आउखीकह्यो । चउथीपंकप्रभा पृथिवीनिविधि देसलाख नंकावोसा कह्या । चउथी पृथिवीनिविधि केतलाएक नारकीनीउत्कट्टी दससागरोपमी  
आउखीकह्यो । पांचमी धूमप्रभापृथिवीनिविधि केतलाएक नारकीनी जघन्यनी दससागरोपम आउखीकह्यो । असुरकुमार भवनपतिदेवनू केतलाएकनू जघ  
न्य दशसहस्रवर्षनी आउखीकह्यो । असुरेद्र चमेरेद्र बलेंद्र वर्जीने बीजाभवनपती देवतानी जघन्य दससहस्रवर्षनी आउखीकह्यो चमेरेन्द्र बलेंद्रनी उत्क

इं ठिई प० असुरिंदवज्जाणं त्रिमिजाणं अत्येगयाइणं जहन्नेणं दसंवासं सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं  
 देवाणं अत्येगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० वायरवणस्सइ काइएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प०  
 वाणमंतराणं देवाणं अत्येगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसत्तोसु कप्पेसु अत्येगइयाणं  
 देवाणं दसपलिउवमाइंठिई प० बंनलोएक्कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अ  
 त्येगइयाणं जहन्नेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुओसं महाघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं  
 रम्मं रमणिज्ज मंगलावत्तं बंनलोएक्कप्पे विमानंदेवताएउववत्ता तेषिणंदेवाणं उक्कोसेणं दससत्तरो  
 वमाइंठिई प० तेषंदेवाणंदसरहं अछमासाणं आणमत्तिवा पाणमत्तिवा ऊरस्सत्तिवा नीस्सत्तिवा तेषिणं

४ जवन्य आउखी एकसागरोपम भाभेरोछि । असुरकुमार देवनेकिंतलाएकनी मध्यमआउखी दसपत्तोपमकह्यो । बादर प्रत्येक वनसत्तीकायनी उत्कष्ट  
 दससहस्रत्रय आउखीकह्यो भगवते । वानवतर देवतानी किंतलाएकनी जवन्य दशसहस्रवर्ष आउखीकह्यो । सौवर्ष ईशानदेवलीकनेविषे किंतलाएक देवत  
 नी दशपत्तोपम आउखीकह्यो । पांचमे ब्रह्मदेवलीके किंतलानी उत्कष्टी दससागरीपम आउखीकह्यो । छठेलंतक देवलीकनेविषे किंतलाएक देवतानी जवन्य  
 दससागरोपम आउखीकह्यो । पांचमे देवलीके जहदेवता घोष १ सघोष २ जह्वाघोष ३ नंदिघोष ४ सुस्वर ५ मनीरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंग  
 लायते १० ब्रह्मलीकावतसक ११ एणेविमाणे देवतापणेउपना ते देवतानी उत्कष्टी दशसहस्रवर्षनी आउखीकह्यो भगवते । तेहदेवता दशपखवाडे खा

मिहप्रतिमाद्यर्थानि सूत्राणि सप्त स्थित्याद्यर्थानितुतदेति तत्र उपपत्तिरुच्यते अमर्यादयते उपासकाः आवकास्त्रेधाप्रतिमाः प्रतिज्ञाअभिग्रहरूपाः उपासकप्रतिमाः तत्र दर्शनसम्यक्त्वं तद्व्यतिपन्नआवकीदर्शनआवकः इह च प्रतिमानां प्रक्रांतत्वमपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचारा कृतिमावतो निर्देशः कृतः एवमुत्तरपदे चपि अयमत्र आवकीदर्शनआवकः इह च प्रतिमानां प्रक्रांतत्वमपि प्रतिमाभावार्थं सम्यग्दर्शनस्य शकादिशब्दरहितस्याणुव्रतादि गुणविकल्पस्यायमभ्युपगमः सा प्रतिमाप्रथमेति । तथा कृतमनुष्ठितं व्रतादीनां कर्म तच्चाणुव्रतं ज्ञानवांच्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येन प्रतिपन्नदर्शनेन सकृत्तत्रतकर्मप्रतिपन्नाणुव्रतादिरिति भावः ।

देवाणंदसहिंवाससहस्सेहिं आहारठे समुप्यज्जइ संतेगइअ न्नावांसिष्ठियं जीवा तेहदसहिंनवगगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुस्काणमंतंकरिस्संति ॥ १० ॥ एक्का रसउवासगपफिमाउ प० तं० दसणसावणु कयल्लयकंमे सामाइअकंमे पोसहोववासासनिरणु दियावन्नया

सोखास घणेलेइ । उचोखासले नीचोखासमूकं तेहदेवतानी दशसहस्त्रवर्षं गणंथके आहारनी अर्थउपजेछेकेतुलाएक भव्यजीव तेहदशभवने आंतरे सीभस्से बूभस्से मंकास्से सर्वदुःखनी अंतकरिस्से मीचज्जास्से इति दशमूठाणूं समत्तं ॥ १० ॥ हिंवे ग्यारमो अधिकार लिखियेछे इग्यार उपासक कहतां आवकसाधुनी सेवना करणहार तेहनी प्रतिमा तपविशेष तेकहेछे अनुक्रमे आगली देसणते सम्यक्त ते जे आदरे तेदर्शन आवककहिंये इहां प्रतिमावंत बोचेंभेद नजाखिबो तेमाटे प्रतिमापाठ उचरैने दर्शनआवकनी नामलिधोएम आगलीएतले सम्यक्तना अतिचार शकादिकटाले तपनी अधिकार ग्रन्थांत रथी जाणवी एहपहिली दर्शनप्रतिमा १ कृतव्रतकर्म अणुव्रत जेउचराछे तेहना अतीचार विशेषपणेटाले बीजीप्रतिमा २ सावययोगनी ठालिवो निरवय

इतीयं द्वितीया । तथा सामायिकं सात्रययोगपरिवर्जनं निरवद्ययोगीपसेवनस्वभावं कृतं विहितं देशतोयेन सामायिककृतं आहिताग्न्यादिदर्शनात् क्रांतस्थोत्तरपदत्वं तदेवमप्रतिपन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्य प्रतिदिनं मुभयसंख्यं सामायिककरणं मासत्रयं यावदिति तृतीयाप्रतिभेति । तथा पौषं पृष्ठिकुशलधर्माणं धत्ते यदा हारत्यागादिकं मनुष्ठानंतत्पौषधं तेनोपसेवनमवस्थानं महोरात्रं यावदिति पौषधोपवासइति अथवा पौषधंपर्वदिनं मष्टम्यादि तत्रोपवासउक्तार्थः पौषधोपवासइति इयं व्युत्पत्तिरेव प्रवृत्तिस्तस्य शब्दस्य आहारशरीरसत्कारा ब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेति तत्र पौषधोपवासे निरत आसक्तः पौषधोपवासनिरतः स एव विषयस्य आवकस्य चतुर्थीप्रतिभेति प्रक्रमः अयमत्र भावः पूर्वप्रतिमात्रयपीतः अष्टमीचतुर्दशमावस्या पौर्णमासीष्वाहारपौषधादिचतुर्विधं पौषधंप्रतिपद्यमानस्य चतुरोमासान् यावत् चतुर्थी प्रतिमाभवतीति तथा पंचमीप्रतिमायामष्टम्यादिषु पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारी भवत्येतदर्थं च सूत्रं अधिकृतसूत्रमुख्येषु न दृश्यते दशादिषु पुनरुपलभ्यते इतितदर्थ उपदर्शितः तथा शेषदिनेषु दिवा ब्रह्मचारौ रक्ष्येति रात्रौ किमत आह परिमाणं स्त्रीणां तद्भोग्यानां नञ् अज्ञाणं कृतं येन स परिमाणकृतइति अयमत्र भावो दर्शनव्रतं सामायिकाष्टम्यादि पौषधोपेतस्य पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारिणः शेषदिनेषु दिवा ब्रह्मचारिणी रात्रौ ब्रह्मपरियोगिनो सेविष्ये ते सामायिककृत एतले उभयकाले सामायिककरे मासत्रिणि लगे एचौजी प्रतिमा ३ कुशेलधर्मनो पोखवो ते पौषध आहारादिकनो त्यागरूप अनुष्ठानं ते पौषधतेणे करौ उपवसवो रहिवो अहोरात्रि लगे ते पौषधोपवास निरत पाक्षिलीत्रिणि प्रतिमा सहित अष्टम्यादिक पर्वने विषे मासचार लगे चतुर्विधं पौषधकरे चउथी पौषध प्रतिमा ४ पांचमी प्रतिमाने विषे अष्टम्यादिक पर्वने विषे एकरात्रि काउसगकरे शेषदिने दीहे ब्रह्मचर्यपाले रात्रे परिमाणकरे अरात्रिभोजी अस्नानीका छडी नवांधे पांचमास लगे एतले एपांचमी प्रतिमा ५ छडी प्रतिमा ए दिवसे अने रात्रि एपिण ब्रह्मचर्यपाले अस्नायीस्नाननकरे विकट

माणकृतोऽज्ञातस्याऽरात्रिभोजिनः अबलकच्छपंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमप्रभवतीति उक्तं च अष्टमिचंडईसी सुपडिमहाएगराईया। पञ्चाङ्गं असिणाणवि  
 यडभोई मडलियडोदिवसभवयारीएय। रत्तिपरिमाणकडो पडिमावज्जोदिसुज्जहेयुत्ति ५। तथा दिवोपिरात्रावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि  
 वर्जकः क्वचित्पठते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तौत्यनिशदौ वियडभोईत्ति विकटो प्रकटो कांशेदिवानरात्राविलयः दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुक्तेऽशनाद्यभ्य  
 वहरतीति विकटभोजी मौलिकडेत्ति अबलपरिधानकच्छइत्यर्थः षष्ठीप्रतिमितिप्रकृत अयमत्रभावः प्रतिसापचकोत्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिणः षणमासान्या  
 वत्षष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइति सचेतनाहारपरिज्ञातः तत्स्वरुपादिप्रतिज्ञानाख्यात्यातीयेन ससचित्ताहारपरिज्ञातः आवकः सप्तमीप्रतिमिति  
 प्रकृत इयमत्रभावना पूर्वीकृतप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथा आरभः दृष्टिव्यायुचमर्दमूलज्जणः परि  
 ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातीयेनासावारंभपरिज्ञातः आठोऽष्टमीप्रतिमिति । इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जनं मष्टौमासान् यावदष्टमीप्रतिमिति  
 तथाप्रेत्याआरंभेषु व्यापारणीयाः परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेथपरिज्ञातः श्रीवको नवमीति भावाऽश्चेह पूर्वोक्तानुष्ठायिनः आरंभपरै रथकारयती  
 तथामौलिकक्रे सचित्तपरिन्वाए अरं

री रत्तिपरिमाणक्रे दिव्याविराजैविवन्नयारीश्यासिणाई विष्णुरुद्रोई मौलिकक्रे सचित्तपरिन्वाए अरं  
 भोजीदिवसेजिमे मौलिकतनथी बांधोपहिरणानी कछजेणैमासकलगे छट्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनी परिज्ञा पञ्चक्वाण माससातलगेकरे प्रासुकआहा  
 रकरे सातमी प्रतिमा ७ आरंभदृष्टिव्यादिक उपमर्दनलक्षणते जेणेपरिज्ञात पचख्योते आरंभपरिज्ञात आवक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेख्या  
 रभनेविषे परिज्ञात पञ्चक्वाणछे जेहनेते प्रेख्यपरिज्ञा आवककहिये एतलेनवमासलगे परपाछि कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेआवकने निमित्ते उहसी

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमिति । तथाऽऽदिष्टं तमेवभावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ट भक्तपरिज्ञातः प्रतिमिति प्रकृत इहायभावार्थः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधार्मिकभोजन परिहारवतः क्षुरमुदितशिरसः शिखावतीवा केनापि किंचिद्गृहव्यतिकरे पृथस्यतत् ज्ञाने सति जानामीत्यज्ञाने च सति न जानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवं विधिविहारस्य दशमी प्रतिमिति । तथा अमणेति निर्ग्रन्थस्यैद्यस्तदनुष्ठान करणात् सत्रमणभूतः सा धुकल्यैत्यर्थः चकारः समुच्चये अपिसंभावेन भवति आवक इति प्रकृतं हेतुमण हेतुआयुषान् इति सुधर्मस्वामिना जंजूस्वामिन सामंत्रयतीक्त मित्येकादशीति । इह चेयभावना पूर्वोक्त समयगुणो पेतस्य क्षुरमंडस्य कृतलीचस्यवा गृहीतसाधुनेपथस्य इयं सित्यादिकं साधुधर्मभूतपालटो भिक्षार्थं गृहिकुल प्रवेशे सति अमणो पासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षादेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नअमणो पासकीहमिति ब्रुवाणस्यैकादशमासान् यावदेकादशी प्रतिमा भवतीति पुस्तकांतरत्वेन वाचना दसणसावप्रथमा कयवयक द्वितीया । कयसामादए तृतीया । पोसहोवयासनिरए चतुर्थी । राइभक्तपुत्रिकाए पचमीसचित्त

## अपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिष्टभक्तपरिन्नाए समणगुणविभ्रमइ समणउसो लोगंताउ इक्षारसएहिं एध्ता

भातकरो तेजोपरिज्ञात पच्चख्यो तेऽऽदिष्टभक्त परिज्ञात दसमासलगे दशमीप्रतिमा १० सवलीप्रतिमाए पाछिली २ प्रतिमानीकिरिया सायलेता जइये एतलेइथारमी प्रतिमाएअमण भूतहुए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले चरमुदितशिरहोय शिखामस्कीराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे आवी जीने सासइथारलगे इग्यारमीप्रतिमा साधुनोविशवह भिक्षाएजाए तिवारेकर्मी येमअमणोपासकने भिक्षादीकोरेकपूख्योथोको कहेहू आवकछू एतलेइग्यारमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मस्वामीने आमनेछे हेइयुधन् चिरंगीवी सांभलि लोकनाछेहडाथकी इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेयोजनेआवा



परिष्ठाएपठ्ठी दियावंभयारी रात्रीपरिमाणकडेसप्तमी दियाविषयेभीवि बंभयारी । असिणाणपयाविभवति योसठ्केसरोमनह्रष्टमी आरंभपरित्नाएनवमी  
 उद्दिष्टभक्तवज्जएदशमी समणभूयाविभवद्वति समणउसोएकादशीति क्वचित्आरंभपरिज्ञावद्वतिनवमी प्रेथरंभपरिज्ञातइतिदशमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः  
 अमणभूतद्वैकादशीति तथा जंबूदीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसति एगविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अत्राहाए अबाधयाव्यवधानेनललितिशेषः  
 ज्योतिषज्योतिषक्रचारंपरिभ्रमणं । चरत्याचरति तथालोकांतान् णमित्यलंकारे एकादशशतानि एकारेस्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित  
 याकुल्लेतिशेषः ज्योतिसतेति । ज्योतिषक्रपर्यंतः प्रश्नइति इदंचवाचनांतरं व्याख्यातं एकारएकारबीसा सयएकाराहियायएकारा । मेरुअलोगावाहि  
 जोइसचक्रचरइष्टाद्वत्ति । अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंतरं व्याख्यातमालापकद्वय व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसंभवतित्तिमकलाग्रन्ति इहमकारस्यागमिकत्वा

रेहिंजोयणसएहिं अवाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूदीवेदीवे मंदरस्यपख्यस्स एक्कारसं हिंएक्कवीसं हिं जोइसत्तए  
 हिं जोइसेचारंचरइ समणस्सणन्नगवउमहावीरस्स एक्कारसगणहराहोत्या तं० इंदमूई अग्नि  
 मूई वायमूई विअत्ते सोहम्मे मंजिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलन्नाए मेअज्जे पत्तीसे मूलेनखत्तेएक्कारसतारे प०  
 धायंपन्नत्तेकहतांकह्णी भगवते । एतलेअलोकाथी इग्यारयीजने ज्योतिषक्रचरह्णी । ज्योतिषनीछेह्णीकह्णी भगवते । जंबूदीपेदेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोची  
 पखेर इग्यारसेयीजने उपरि एकवीसयीजन ज्योतिसक्रचारचरे अभ्रमणकरे । अभ्रमणे भगवतने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर  
 णहारहुया । तेअनुक्रमे कह्छे आगलै । इन्द्रभूति १ । अग्निभूति २ । वायुभूति ३ । व्यक्तनामे ४ । सौधर्मा ५ । मडित ६ । मौर्यपुत्र ७ । अकंपित ८ । अच

दयमर्थो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्ररूपितं भगवता अन्यैथवेकलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथा मन्दरेणंपव्वए धरणि तलाओसिहरतले एकारस  
 भागपरिहीणे उच्चत्तेणपन्नत्ते । अस्यायमर्थः मेरुर्भूतलादारस्य शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कम्भापेक्षया अंगुलादरेकादशभागेन परिहीणीहानिमुपगतस्स  
 उच्चत्वेनोपर्युपरिप्रत्नसः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दंशयीजनसहस्राणि विष्कम्भतः ततश्चोच्चत्वेनांगुलेतेगुलस्यैकादशभागो विष्कम्भतोहीयते एवमेकादशत्वं  
 गुलप्वंगुलंहीयते एतैनैवव्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततो नवनवत्यांयीजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयते । ततोभवतिसहस्रविष्कम्भ  
 शिखरेइति अथवा धरणीतलादरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमुग्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणीभवति कस्यैकादशभागोनेत्याह  
 उच्चत्तेणिति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागेनवतैर्हीनोमूलं विष्कम्भापेक्षया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वाच्चमूलविष्कम्भ

### हेठिमगेविज्जयदेवायं एक्कारसमुत्तरंगेविज्जविमाणसतंनवइत्तिमस्कायं मंदेरणंपव्वए धरणि तल्लुत्तुसिहरतले

लम्नाता ८ । मेतार्यं १० । प्रभास ११ । मूलनच्चत्रना इग्यारताराकह्या नवग्रैवेयकमानमाहं सधले हेह्योत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारअ  
 धिकएकसो विमानभवनच्छे भगवत्तेकह्या मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभागु जिहां पंडगविमानच्छे तिहांलगे विखंभनी अपेक्षाएं एकारसभाग  
 परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलैदशयीजनपिहुली मूलथकी इग्यार अंगुलज्जा बडीये तिहां विखंभपणे एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार  
 गाजथेगाज हीनकरिये । इग्यारयीजने इग्यारसहस्र योजन उगरा । पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये । इमकरता नेजंसहस्र योजने जंचीवडिये  
 तिहां नवसहस्रयीजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन उगरां । पिहुलपणे रेरुपर्वत एकसहस्र जाणिवो जगडोभूमिमध्ये नेजसहस्र भूमिथकी जंचीस

स्येति ब्रह्मादीनि द्वादशविमाननामानि । द्वादशस्थानमथ तच्च सुगन्धैर्नवरत्नैश्चिस्त्रैश्चोर्ज्वाङ्गकादशसूत्राख्याह । तत्रभिच्चूणां विशिष्टं संहननश्रुतवतां प्रति

एक्षारसत्रागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नो ए पुढवी ए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एक्षारसपलिउव  
माइंठिई प० पंचमी ए पुढवी ए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एक्षारससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमारानं देवाणं  
अत्येगइयाणं एक्षारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणे सुकप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एक्षारसपलिउवमा  
इंठिई प० लंतकप्पे अत्येगइयाणं देवाणं एक्षारसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वंजं सुवंजं वंजावत्तं वंजप्प  
न्न वंजकंतं वंजवस्सं वंजलेस वंजज्जयं वंजसिग वंजसिद्धं वंजकूळं वंजुत्तरवळिसं विमाणं देवते ए उववन्ना  
तेसिणं देवाणं एक्षारस सागरोवमाइंठिई प० तेणदेवा ए कारसरह अरुमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा उ

र्वमिली एकलाख योजननी मेरुपर्वत । मूलेदससहस्र पिडुली । शिखरनेविषे एकसहस्र पिडुली जाणिवी एह अर्थ श्रीमहावीरं सुधर्मस्त्रामो पांचमे गण  
धर आगले वखाण्यो । एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीने विषे कीतला एक नारकीनी इग्यार पत्थीपम आजखीकह्यो । पंचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे कीतला  
एक नारकीनी इग्यार सागरीपम आजखीकह्यो । असुरकुमार भवनपतीनी कीतला एक देवतानी इग्यार पत्थीपम आजखीकह्यो । सौधर्म इशानदेवलीक  
ने विषे कीतला एक देवनी इग्यार पत्थीपम आजखीकह्यो । लांतक छेदेवलीके कीतला एक देवनी इग्यार सागरीपम आजखीकह्यो । छेदेवलीके जेह देवता  
ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकांत ५ ब्रह्मवर्ण ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतसक १२ एणे विम

मा अभिग्रहाभिचुप्रतिमा तत्रमासिकादयः सप्तमासिक्यस्ताः सप्तमासेनमासेनीतरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिसेति तयासप्तसमरात्रिदिवान्याहो

स्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं एक्कारसरहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जड संतेगइअन्नवसिष्ठि  
अजीवा एक्कारसहिंनवगहणेहिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति मुच्चस्सति परिनिच्छइस्सति सव्वदुक्काणमंतक  
रिस्संति ॥ ११ ॥ वारसन्निकपफिमात्तं पन्नत्ता तजहा मासिअन्निकूपफिमा दोमासिअ  
न्निकूपफिमा तिमासिअन्निकूपफिमा चउमासियान्निकूपफिमा पंचमासियान्निकूपफिमा ठमासियान्नि  
क्कूपफिमा सत्तमासियान्निकूपफिमा पठमासत्तराइदिअन्निकूपफिमा दोच्चासत्तराइदिअन्निकूपफिमा त

ने देवतापणे उपनाछे । तेह देवतानी इग्यार सागरीपम आउखीकछ्या । तेह देवता इग्यार पखवाडे अईमासे स्वासोस्वास घंगेले जेवो स्वासले नीचोस्वास  
मूके तेह देवतानी इग्यार सहस्रवर्ष आहारनीअर्थ व.छाउपज्जेछे । संसारमाहे केतलाएक भवजीव जे ग्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभयने आंतरे सी  
भस्ये बूभस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनी अंतकरिख्ये । इतिइग्यारमं ठाणूं समातं ॥ ११ ॥ इहिवे नारमी अविचार लिखियेछे । भिचु उत्तमसंहनननी  
धणी तथा जवन्य नवमा पूर्वनूं बीजवस्त तेहनी पारगामीहीय । उत्तकछी दसणं कीर्देकगुरुनी आज्ञा मांगी गच्छमाहि पिणहोइ सहासत्वनी धणीज  
यति तेहनी वारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे । पहिली भिचुप्रतिमा एणमासिकी एजमासलगे भात पाणीनी एकदाथीले एकमासदीठ भातपाणी  
नी एकेकदाती वधारे सातमासलगे सातमेमासे सातसात भातण नीनीदातीले लवणखड माचदाती कहिये १ । बीजी प्रतिमा त्रिमासिकी २ । बीजीप्रति

त्राणियासुताः सप्तरात्रिदिवास्ताद्यतिस्मोभवंतीति समानामुपविश्याम्यप्रथमं अष्टमीं प्रथमं सप्तरात्रिदिवा एवं नवमी द्वितीया दशमी तृतीया आसांचतिसृणामप्यनुष्ठा-  
नकृतौ विशेषः तथा हि अष्टम्या चतुर्थभक्तंतपः ग्रामादेर्बहिरवस्थान मुत्तानादिकंच स्थानमिति नवम्यांतुल्लङ्घिकायासनेन विशेषः दशम्यां वीरासनादिना तथा  
अहीरात्रप्रमाणाहीरात्रिकी एकादशीयाथषष्ठभक्तेन भवतीति विशेषः एकरात्रिहीरात्रिप्रमाणासाचाष्टभक्तेन रात्रौ प्रबलं भुजस्य संहस्रपादावनतकायस्या  
निमेषोदयास्येति तथा समेकोभूयः समानः समाचाराणा साधुना भोजनसंभोगः सती पथ्यादिलक्षणविषयभेदात् द्वादशधा तच्च उवहौ त्यादिरूपकद्वयं तत्रोपधि-

## आसत्तरां दिव्यानिस्कूपक्रिमा एगराइव्यानिस्कूपक्रिमा दुवालसविहसंजोगे

मा त्रिणिमासिकी ३ । चउथी प्रतिमा चारमासिकी ४ । पांचमी पांचमासनी प्रतिमा ५ । छठ्ठी छमासनी प्रतिमा ६ । सातमी सातमासनी प्रतिमा ७  
आठमी पहिली प्रतिमा सातदिवसरात्रिनी आठमी प्रतिमाए सातदिनलगे अष्टमीए चतुर्थभक्त तपकरे अष्टमबाहिरहे उत्तराशनकरे ८ । नवमी बीजी  
पणिसात अहीरात्रनी भिक्खुप्रतिमा नवमी प्रतिमाए उकडासनकरे ९ । दशमी बीजी पणिसात अहीरात्रनी तिहुं बीरासनकरे १० ॥ इग्यारमी एकअ  
हीरात्रिनी भिक्खुप्रतिमाते षष्ठभक्ते उपवास पूरिये ११ । बारमी भिक्खु प्रतिमा एकरात्री प्रमाणे अष्ट भक्त उपवासे समाप्तिहोइ रात्रिए प्रलंबभुजाकरि का  
जसगकरे कांइककाया नमाडे नेत्रमेखनकरे १२ । बारे प्रकारे संभोग एकसमाचारी साधनी एकभोजनादिकनी विचारहारकह्यो । उपधिवरत्र पात्रादि  
कनी संभोग लेवोदेवी संभोगी साधुसाथे तुक्कमीत्यादन दोषेविशुद्धकहीये अशुद्धलेई त्रिणिवेला प्रार्थयितलेई तोहीते संभोगीकरी चउथी वेलाप्रार्थयितलेतो

वैश्वपात्रादिस्तंभभोगिकः संभोगिकेन सार्द्धं तु भूमौ तया दनैषणो दोषैर्विमुक्तं गृह्णन् शुद्धः अशुद्धं गृह्णन् प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चित्तो धारत्रययावत्संभोगो गार्हपत्यार्थवेला  
याः प्रायश्चित्तप्रतिपद्यमानोऽपि विसंभोगाहं इति । विसंभोगिकेन पार्श्वस्थादिनावा संयत्यवासादे मुपधि शुद्धमशुद्धं वा निःकारणं गृह्णन् प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चि  
त्तोऽपि वेलात्रयस्योपरि न संभोग्य एवमुपधेः परिकर्मपरिभोगं वा कुर्वन् संभोग्यो विसंभोग्यश्चेति उक्तं च एगंच दोषविति त्रिच आउडुंतस्सहोदृच्छित्तं । आलोचयत इत्य  
र्थः आउडुंतैव तत्रो परेण तिल्लं विसंभोगोति सुयस्स संभोगिकस्य विसंभोगिकस्य चोपसंपन्नस्य तु तस्य वाचनाप्रच्छेना भुक्तं विधिनो कुर्वन् शुद्धस्यैवाऽविधिनीप  
सम्पन्नस्यऽनुसम्पन्नस्य वा पार्श्वस्थादेर्वात्रयवाचनादि कुर्वन् स्तथैव वेलात्रयोपरि संभोग्यः तथा भक्तपाणेति । उपधृदि द्वारवदवसेया नवरमिह भोजनं दातुं च परिक  
र्मपरिभोग्यो. स्थाने वाच्यमिति तथा अंजलीपगहे इति इहेति शब्द उपदर्शनार्थः चकारः समुच्चयार्थः तत्त्वदर्शने चणत्वा दंजलिप्रग्रहस्य वदनादिकमपीह दृष्टव्यं  
तथा हि संभोगिकानामन्यसंभोगिकानां वा संविग्नानां वन्दनं प्रणामसंजलिप्रग्रहं नमः च माश्रयेभ्य इति भणनं आलोचना सूत्रार्थनिमित्तनिषद्या कुण्डलु च कुर्वन्  
शुद्धः पार्श्वस्थादेस्तानि कुर्वन् स्तथैव संभोग्यो विसंभोग्यश्चेति । तथा दायणार्थं दानन्तत्र संभोगिकाय वस्त्रादिभिः शिष्यमाणोपयुहास्तु च संभोगिकेऽन्यसंभोगि  
केऽन्यसंभोगिकं यथा शिष्यगणं च्छन् शुद्धः निःकारणविसंभोगिकस्य पार्श्वस्थादेर्वासंयत्वा वा तं च्छं स्तथैव संभोग्यो विसंभोग्यश्चेति तथा निकाण्यति नि  
प० तं० उवाहिसुअन्नतपाणे अंजलिगहेइ अदायणेऽपि निष्काण्य अंजलिगणेति अत्रावेर किञ्चकममस्सय

ही तेहसंभोगीनकरीये १ । श्रुतकहिये सिद्धांत तेहनी वाचना पृष्ठादिककरंत । संभोगी तेहीज सिद्धांत अवधिएं भणतो क्रीधीने तथा पासथाने भणानी विसंभोगीकहिये २ भात पाणी शुद्धमान लेतो देतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी<sup>१</sup>इ अंजलि परिग्रहमाहोमाहीं नमस्कारनो करवी उपासथानेकरतो विसंभो

निकाचनच्छेदनं निमज्जनमित्यनर्थांतरं तत्रश्रुत्यापव्याह१० । मय्यगच्छन्तस्स भगवन् । अनेन च सम्भोगिकं निमज्जनशुद्धः श्रेष्ठतथैव तथाअबुभुशुणेति यावरेति अभ्यु-  
 ल्यानमासनत्यागरूपमित्यपरं सम्भोगासम्भोगस्थानमित्यर्थः तत्राभ्युत्थानपार्श्वस्थाः कुर्वन् स्तद्विसम्भोग्यउपलक्षणत्वाच्चाभ्युत्थानस्य किंकरतांचप्राप्त्युक्त्यानाद्यव-  
 स्थायां किंविश्रामणादि करीमौल्येवप्रश्नलक्षणं । तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतस्य पुनस्तत्रैवसंस्थानलक्षणं तथा अविभक्तिवापृथग्भावलक्षणं कुर्वन्  
 शुद्धौ सम्भोग्यस्याप्येतान्येवयथागम्य कुर्वन्शुद्धः सम्भोग्यश्चेति तथाकिंकरमस्मयकरणेति कृतिकर्मवन्दनान्तस्य करणंविधानं तद्विधिनानुवर्तनशुद्धः इतरथा  
 तथैवासम्भोग्यस्तत्रचायविधिर्यः साधु वर्तितनस्तत्त्वदेहउत्थानादिकर्तुमशक्तः ससूत्रमेवास्त्वलितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमार्चनंशिशेच्युनादियच्छक्नोति तत्का-  
 रौल्येवचाश्रयप्रवृत्तिर्वदन विधिरितिभावः वेयावच्चकरणेद्वयति वैयावृत्य माहारीपधिदानादिना प्रश्नमणादिमात्रकार्पणादिना अधिकरणोपश्रवणेनचोपष्ट-  
 भकरणं तस्मिन्निविषयेसम्भोगीभवतीति । तथासमीसरणति जिनस्तवनरथानुयानपट्यात्रादयोबहवः साधवोमिलन्ति तत्समवसरणं इहचक्षेत्रमाश्रित्यसाधूनां  
 साधारणोवग्रहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणी ऽसाधारणेवेति अनेनचान्येयवग्रहाउपलक्षितातेचानेकेतथा वर्षावग्रह ऋतुबद्धावग्रहो वृद्धवासावग्र-  
 हश्चेति एकैकश्चायंसाधारणावग्रहः प्रत्येकावग्रहश्चेतिद्विधा तत्रयत्वेतन्वर्षोपकल्पाद्यर्थं युगपत्तद्वादिभिः साधुभिर्भिन्नगृह्ण्यैरनुज्ञायते समाधारणोयत्तत्तत्रमे-  
 करणे वेद्युवेच्चकरणेऽप्य समीसरणं सनिसिज्जाय कहाणुपबंधणे दुबालसावत्तेकितिकम्मे प० तं० दुउणयं

गौ ४ । समीगी साधुभणी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्थानेदेतो विसमीगी ५ निकांचन निमज्जन माहोमांही शिथउपाध्यायादिकै करतोशुद्ध ६ । व-  
 डेआबाएथके उठीउभा थाइवी ७ । अपपरकहतां अनिरतबील तथा विविधेकरी कृतिकर्म वादणानी करवी बडानेबांदणानी देवी ८ । वेयावचननी करवी

कसाधवोनुज्ञाप्याश्रिताः सप्रत्येकीवगृह्णन्ति । एवंचेतेश्वरगृहेषु आकुश्यादिना अभाष्यंमचित्तंशिश्व मचित्तंवरत्रादिगृह्णन्तोऽनाभोगेनचगृहीतं तदनर्पयतः  
 समनीज्ञाश्रमनोज्ञाद्य प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनांचावगृह एवनास्ति तथापियदितत् क्षेत्रकुलकमन्यत्रैवचसंविगानिर्वहति ततस्तत्क्षेत्रपरिहरं  
 त्येवायं पार्श्वस्थादीनांवावगृह्णेन्नं विस्तोर्णं संविगासाग्यश्चन निर्वहति ततस्तत्रापि प्रविशति सचित्तादिवगृह्णति प्रायश्चित्तिनोपिनभवतीति आहच समणु  
 त्तममणुत्रे अदिद्वंश्रणा भवगिगहमाणेवासम्भोगवीसकरणं पृथक्करणमित्यर्थः इयरेयश्लभेणल्लिन्ति इतरानपार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सन्निशिज्जायति निषद्या  
 आसनविशेषः साचसम्भोगकारणंभवति तथाहि सनिषद्यागत आचार्यो निषद्यागतसु सम्भोगिकाचार्येण रूहे श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्धः अथामनोज्ञापा  
 र्श्वस्थादिसाध्वीगृहस्थैः सह तदाप्रायश्चित्तीभवति तथाकहाएयपवधेति कथावादादनिषद्या विनानुयोगंकुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि  
 ष्टः सूत्रार्थोप्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदातथैवेति । तथाकहाएयपवधेति कथावादादिकापचधातस्याः प्रबंधनंप्रबधेनकरुणं कथाप्रबंधनतत्तसम्भो  
 गाऽसम्भोगीभवतः तत्तसमभ्युपगम्यपचावयेन त्रयावयेनवाक्येन यत्तत्समर्थनंसकलजाति विरहितो भूतार्थोऽन्विषणपरोवादः सएवकलजाति निर्गतस्थानप  
 रोजल्पः यन्नैकस्यपचपरिग्रहीस्तिनापरस्य सादूषणमात्रप्रवृत्तावितरुडा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोक्तैर्गकथास्तिकनयकथावा तथानिश्चयकथापंचमी । सा  
 चापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथाचेति तत्राद्यास्तिस्रः कथाश्रमणीवजैः सहवरोति अमणीभिसुसहकुर्वन् प्रायश्चित्तीचतुर्थविलायांवा लोचन्नपिविसम्भोगा  
 र्हेइति रूपकद्वयस्य सत्वेपार्थोविस्तारार्थस्तु निशीथपंचमीदिशकभाष्यादवसेयइति । तथादुवालसावत्ते किइकन्नेति द्वादशावर्त्तकृतिकर्मवन्दनकं प्रज्ञप्तंद्वाद  
 शावर्त्ततामेवास्यानुवन्दनशेषांश्च तप्तर्मानभिधिसितंरूपकमाह दुःश्रेणएत्यादि श्रवणतिरवनमुत्तमांगप्रधान प्रणमनमित्यर्थः हेऽवनतेयस्मिस्तद्वानतं तत्रैकय



संत्रसमापयतीति तथा धिजय राजधानी असंख्यातमेजबूहीपे आद्यजंबूहीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य विजयाभिधानस्य पत्नीपमस्थितिकस्य देवस्य सं  
बंधिनीति तथारामो नवमीबलदेवः देवत्तिंगयत्ति देवलंपंचमदेवलीके देवत्तंगतः तथा सर्वजघन्यारात्रि रत्तरायणपर्यंताहीरात्रस्य रात्रिः साचद्वादशमौहृति

णसयसहस्साइं आयामविरुक्कंनेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवाससयाइंसवाउअं पालित्तादेवात्तिंगए मंद  
रस्सणं पद्ययस्सचूलिअमूले दुवालसजोयणाइं विरुक्कंनेणं प० जंबूदीवस्ससंघादीवस्स वेइअमूले दुवालस  
जोयणाइं विरुक्कंनेणं प० सव्वजहन्निअराइ दुवालसमुज्जत्तिअ प० एवं दिवसो विनायहो सव्वठसिठस्सणं

वर्तं क्खवेला गुरुनेपगे वांदणाकीजि । अहीकाय एपाठकहीविहुवेलायइं १२ आवर्तयया चीसरां ४ वेला, गुरुनेपगे मस्सकनमाडिये । त्रिस्सकुमी अनवचन  
कायानी गुप्तिकीजि । उपवेसवीवेला वांदणानेअथे अवग्रहमाही आवीने एगनिखमण अवग्रहवाहिरि पहिलेवांदणे एकवेला भीकल्ला बीजीवेला गरुपगे वेठा  
ज वांदणी समापीएपाठकही एहसमवयांग वत्तिनीभाव । जंबूहीपनी पूर्वनी पोर्त्तनीधणी विजयदेवत्ता तेहनीराजधानी असंख्यातमे जंबूहीपेक्के वारयो ज  
नसहस्स एतले १२ लाखयीजन लांवपणे पिहुलपणेकही रामवलदेव कृणवासुदेवनां बडोभाइ वारसेवर्ष सर्वआउखंपालीने देवपणूंपास्या पांचमेदेवलोकि पहुंचता  
मेरुपर्वत उपरि सहस्रयीजन पिहुलोक्के । तेहनेसेविचि ४०० योजनजची चूलिगक्के । तेहनीमूल १२ योजनवीची आठउपरि थिखरे धारयो जन पिहुलपणी  
कह्यो । जंबूहीपनी चीपखेर गटरूप वेदिका आठयीजन जं चीक्के । जेहवेदिका भीमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेकही भगवंते सर्वजघ  
न्यारात्रि उत्तरायणे केहडे कर्कसंक्रातिनी आसाढीपनिमनी घां नानीरार्त्ति बारहमूर्हतहुइं एतले २४ घडीनी रात्रिकही । एमदिवसपणिजाणिवो ।

वा इमीसेणं रयणप्यन्नाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं वारसपलिनुवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्ये  
 गइयाणं नेरइयाणं वारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं वारसपलिनुवमाइं  
 ठिई प० सीहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं वारसपलिनुवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्येगइ  
 याणं देवाणं वारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे माहिदज्जयंकवु कंझुगीवं पुंस्कं संपुंस्कं महापुंस्कं  
 पुंस्कं संपुंस्कं महपुंस्कं नारिंदं नारिंदकंतं नारिदुत्तरवक्रिसणं विमाणं देवत्ताए उववत्ता तेसिणं देवाणं उक्को  
 सेणं वारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा वारसरहं अरुमासाणं अणमतिवा पाणमतिवा उरुससत्तिवा  
 नीरससंतिवा तेसिणं देवाणं वारसाहिंवाससहस्सेहिं अणारठे समुप्पज्जइ सतेगइया मवत्तिहिंया जीवा

नो वारसागरोपम आजखीकह्यो । असुरकुमार भवनपती देवतानी वारपत्तोपम आजखीकह्यो । सौवर्भ ईशानकल्ले देवलीके केतलाएक देवतानी वार  
 पत्तोपम आजखीकह्यो । लांतक छ्ठादेवलीके केतलाएक देवतानी वारसागरोपम आजखीकह्यो । लातककल्ले जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २ । कंबु ३ ।  
 कंबुगीव ४ । पुच ५ । सपुच ६ । महापुच ७ । पुच ८ । सपुच ९ । महापुच १० । नरेन्द्र ११ । नरेन्द्रकांत १२ । नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३ । एणे १३ विमाने दे  
 वतापणे जपनाछे । तेहदेवतानी उक्कथी वारसागरोपम आजखीकह्यो । तेहदेवतानी वारअइमासे पखवाडे खासीखास घणेली जंचीली नीचोउखासले

महेन्द्रमहेन्द्रध्वज कंबुर्कंबुग्रीवादीनि त्रयोदशविमानानीति ॥ अथ त्रयोदशस्थाने किंचित्स्थिते इह स्थिति सूत्रेभ्योऽर्वागष्टसूत्राणि । तत्रकरणक्रियाकर्मनिब-  
धनचेष्टातस्या. स्थानानिर्भेदाः पर्यायाः क्रियास्थानानि तत्र अर्थाय शरीरस्वजन-<sup>न</sup>र्मादिप्रयोजनाय दण्डस्वसथावरहिंसा अर्थदण्डः क्रियास्थानइतिप्रथमः १ ।  
तद्विलचणोऽनर्थदण्डः २ । तथा हि सामाश्रित्य हिंसितवान् दिनस्ति हिंसिथितिव-<sup>न</sup> अयं वैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेन दण्डो विनाशनं हिंसादण्डः ३ । तथा  
ऽकस्मादनभिसंधिना न्यवधार्यप्रवृत्त्यादण्डोऽन्यस्य विनाशोऽकस्मादण्डः ४ । तथा हि विपर्यायितावाहृष्टिर्विपर्यासितावा मतिभ्रमइत्यर्थस्त

जेवारसहिं नवगहणेहिं सिज्जस्सति बुज्जस्सति मुच्चिस्सति परिनिधाइस्संति सव्वदुस्काणमंतं करिस्सं  
ति ॥ १२ ॥ तेरसकरीयाठाणा प० तं० ॥ व्याठादंते हिंसादंते अकस्मादुंते दि

तेहनी बारिर्वसहस्से आहारनी अर्थजपजे । केतलाएक संसारमाहे भव्यजीव बारभूतहणे १२ भवनेंआतेरे सीमस्ये बूमस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनी अंतकरस्ये  
मीचजास्ये ॥ इति बारमंठाणूं सम्भत्तं २० ॥ १२ ॥ हिंवे तेरक्रियानी अधिकार लखियेछे । अतिरक्रियाठाणां कल्याकरिवो तेक्रिया कर्मबन्ध  
नचेष्टा तेहना स्थानकभेद तेक्रियास्थानकह्या तेकहेछे शरीरस्वजन धर्मादिकनेअर्थ त्रस यावरने दंडेहणिये तेअर्थदण्ड १ अनर्थक जीवहणिये तेअनर्थदण्ड २  
एह सुभनेहणतोहुताहणस्ये अथवा हणेछे तेमाटे हंज एने पहिले हणूं ए हिंसादण्ड ३ अकस्मात् अनरणे बधवा प्रवर्त्योहुती अने अनरीहणाखो तेअ  
कस्मात्दंड ४ । दृष्टिविपर्यास तेमतिभ्रम तणेप्राणिवध तेदृष्टिविपर्यासदंड अभिचनेबुद्धि मित्रनीहणिवो ५ आत्मपरोभयार्थ जूठोबोलवो तेजप्रत्ययकारणछे  
जेहदंडनी तेमूषावाद प्रत्यया ६ । एमअदत्तादानप्रत्यया ७ । अध्यात्ममन तेहनेविषेही तेआध्यात्मिक मनमाहिं दुष्टभावनीचिंतवो ८ । मानप्रत्ययअ

यादृङ् प्राणित्रयोदृष्टिविपर्यासितावा एकोदृङ्दृष्टिविपर्यासितादृङ्गोवा मित्रादेरमित्रादिवुद्ध्या हननमितिभावः ५ । तत्रमृषावादे आत्मपरोभयार्थम  
लोकवचनं तदेवप्रत्ययः कारणं यस्यादृङ्स्य समृषावादप्रत्ययः ६ । एवमदत्तादानप्रत्ययोपि ७ । तथा अध्यात्मनिमनसिभव आध्यात्मिकी वाह्यनिमित्तानापेक्ष  
श्रीकाभिभवइतिभावः ८ । तथामानप्रत्ययो जात्यादिमदहेतुकः ९ । तथा मित्रद्वेषप्रत्ययः मातृपित्रादीनामल्येष्वपराधे महादंडनिर्वर्तनमितिभावः १० ।

ठिविपरिञ्चासिञ्चादं मसावायवत्तिः अदिन्नादाणवत्तिः अज्जत्तिः ज्ञानवत्तिः मित्रदोसवत्तिः मा  
यावत्तिः लोभवत्तिः इरिञ्चावहिः सोहम्मीराणेषु कप्पेषु तेरसविमाणएपत्थमा ५० सोहम्म

भिमनि करौ आगत्याने दंडदेवो ९ । मित्रद्वेषप्रत्यय मातापिताने धोडोअपरध्वे घणोदंडदेवो १० । मायाप्रत्यय मायाकपट तुणेछिन्नतापोदंड ते  
मायाप्रत्यय ११ । एमलीभप्रत्यय १२ । ऐश्वर्यापथिकीनामे तेरमोक्रियास्थानक काय ग्रीग प्रत्ययसंयोगी दुवलीने पहिलीसमे क्रियन्तर्ग बीजेसमेदेदे तीजेस  
मेनिर्जरे १३ । सौधर्मपहिली देवलीक ईशानबीजेदेवलीक एहदीदेवलीक लगडुकारेछे तेमाटे विहुवलोके तेरविमान प्रस्तछे उपराउपरि पावडीरूप  
कह्यो । पहिली सौधर्मलीक मेरुथकी दक्षिणदिसे अर्धचंद्राकारछे । पूर्वपश्चिमैर्गुबी दक्षिणउत्तरेपिहुली । तेहने तेरमेप्रस्तरे शक्रद्रनी आवासभूतविमान  
अथवा सौधर्मदेवलीकनी अवतंसकमुकुटरूप तेसौधर्मावतंसक विमान साढीबाग लाख योजनलांबपरणे पिहुलपरणैकह्यो । एममेरुथकी उत्तरदिसे अर्धचंद्राका  
रईशानदेवलीक तेहने तेरमेप्रस्तरे ईशानावतंसक विमान साढीबारलाखयोउ नोकाह्यो । जलचर पंचेद्रिय तिर्यचयोनीना जीवनी साढीबारजातिनेविषे  
कुलकोटिनी योनिप्रमुखउत्पत्तिस्थानक शतसहस्रकह्या एतलेसट्टे १०० कुलकोट जलचर पंचेद्रिय तिर्यचनीछे । योनितेउत्पत्तिस्थानक जिमगीवर कुलते

मायाप्रत्ययो मायानिबन्धनः ११ । एवलोभप्रत्ययोपि १२ । ऐर्यापाः १३ । केवल्योऽगप्रत्ययः कर्मवध उपशात मोहादीनां सातवेदनीयबन्धः १३ । तथाविमाणप  
 लुडति विमानप्रस्तटाउत्तरार्धव्यवस्थिता तथासौहृदवडिंसएत्ति सौधर्मस्यदेवतीकस्यार्धचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेत्रयोद  
 शप्रस्तटे शक्रावासभूतविमानं सौधर्मदेवलोकस्याऽवतसकः शिखरकः सद्भवप्रधानत्वादित्येव यथार्थनामकमिति एकारोवाक्यालंकारे अर्धत्रयोदशयेषुतान्य  
 र्धत्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्राणिचित्तिविगृहः सार्धानिद्वादशेत्यर्थः तथा अर्धत्रयोदशानिजातौ जलचरपचेंद्रिय तिर्यग्गतौकुलकोटिना योनि  
 प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्राणि तानितथोच्यतेइति तथापाणाउत्सर्गि यत्रप्राणिनामाहुर्ध्वकथन समेदमभिधीयते तत्राणायुर्द्वादश पूर्वतस्यत्र  
 योदशवस्तूनि अध्ययनवद्विभागविशेषाः तथागर्भगर्भाग्रये व्युत्क्रातिरुत्पत्तिर्येषांते गर्भव्युत्क्रातिकाः तेचते पंचेंद्रियतिर्यग्गयोनिर्काश्चेति अष्टाहः प्रयोजने मनोवा

वक्रिसर्गेण विमाने अष्टतेरसजोयणं सयसहस्रसाइं व्यायामविस्क्रमेणं प० जलयरपंचिदिशु तिरिस्क्रजोणे  
 व्याणं अष्टतेरसजाइ कुलकोटिजोणीपमुह सयसहस्रसा प० पाणाउत्सर्गं अष्टसतेरसवत्यु प० गङ्गवद्भ्रंति  
 अष्टपंचेंद्रिअतिरिस्क जोणिअ्याणं तेरसविहेपनुगे प० तं० सञ्चमणपनुगे मोक्षमणपनुगे सञ्चामोसमणपनुगे

हीजयोनिनेविषे अनेकआकारे जीवजिमगोबरमांहि अनेकप्रकार जजीवउपजेछे तेकुलकहीये । जिहाप्राणीना आजखाना भेदकहिये तेप्राणीनीबारमो  
 पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेप्रयोग मनवचनकायानी व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक  
 हेछे । सत्यमनीयोग तेसांचेमनेचितवी १ । जूठमनो व्यापारते स्यामनोयोग २ । सत्यासत्यमनीयोग तें मिश्रभावनो चितवी ३ । असत्यास्यमनोयोग ते

कायानां व्यापारणांप्रयोगः सन्नयोदशविधः पचदशानांप्रयोगाणांमध्ये आहारव्यापारकमिश्रलक्षणवायप्रयोगइयस्य तिरयामभावात् तौहिसंयमिनाम  
वस्तुः सयमवतश्चयतमनुथाणामिव नतिरच्चाप्रमिति तन्नसत्यासत्त्वोभयानुभयस्वभावाच्चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाच्चेति अष्टौपुनरीदारिकादयः पञ्च  
कायप्रयोगाः एवंचयोदशेति । तथासूक्ष्मण्डलस्यादित्यविमानहृतस्य योजनं सूक्ष्मण्डलयोजनं तत् । एमित्यलंकारित्रयोदशभिरक्षष्टिभागैर्येषां भागानामेकष  
ष्ठयायोजनंभवति तैर्भागैर्योजनस्य सबधिमिरूपनंप्रश्नस्तमष्टचत्वारिंशयोजनभागान्नाहृत्यर्थः वज्जामिलापेनद्वादशवृद्धामिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

श्चसच्चासोसमणपनने सच्चवइपनने मोसवइपनने सच्चासोसवइपनने च्चराच्चासोसवइपनने उरालिच्चुसरीरका  
यपनने उरालिच्चुमीससरीरकायपनने वेउद्विच्चुसरीरकायपनने वेउद्विच्चुमीससरीरकायपनने कम्मसरीरकाय  
पनने सूरमंठलं जोयणतेरसेहिं एगसठिन्नागेहिं जोयणस्सज्जणंइमीसेणं च्चयणज्जयाए पुढवीए च्चत्थेगइच्चाणं

मनीव्यापार सांचीनही जूठोपिणमही ४ वचनयोग सांचीबोलवी तेसत्यवचनयोइ, एमसुधावचनयोइ, तेहनंकारण २ । सत्यासत्य तेमिच्चभाषाए बोलवी  
३ । असत्यासुधा तेव्ययहारवचनयोग जाइआवी लेदे एहवीभाषा ४ । कादाना त्वातयोगइ तेमाहि आहारक १ । आहारकमिच्च २ । एह तिर्यचननहोय  
तेहोय तेहपूरबधरनेहीइ तेमाटे पांचकाययोगलौजि औदारिक शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिच्चश  
रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाए । कर्मणशरीर काययोग ५ । एममनीयोग ४ वचत्त्वोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ यथा सूर्यनंमाडलू योजनने एकसठौए तेरभा  
गेजणीकही । एतले एकयोजनना ६१ भागकोजि तेहवा १३ भागगूर्यनंमडलई । एतले एकसठौया ४८ भागसूर्यनंमाडलं पिङ्गलंछे । एणीएरलप्रभा पहिली

नेरइच्छाणं तेरसपलिनवमाइं ठिई प० पंचरूपेण पुढवाए अत्थेगइयाणं नेरइच्छाणं तेरससागरोवमाइं ठिई  
 प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइच्छाणं तेरसपलिनवमाइं ठिई प० सोहम्मीमाणेसु कप्पेसु अत्थेगइच्छा  
 णं देवाण तेरसपलिनवमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं तेरससागरोवमाइं ठिई प० जेदे  
 वा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जाप्पन्नं वज्जकत वज्जवत्तं वज्जलेसं वज्जारूवं वज्जासिं वज्जासिरु वज्जुकू  
 वज्जुत्तरवट्ठिसंगं वइरं सुवइर वइरावत्त वइरप्पन्नं वइरवत्तं वइरलेसं वइररूवं वइरसिं वइरसि  
 रं वइरकू वइरुत्तरवट्ठिसंगं लोगं सुलोगं लोगवत्तं लोगप्पन्नं लोगकीं लोगवत्तं लोगलेसं लोगरूवं लो

नरकप्रयिकीनेविदि केतलाएक नारकीनी तेरपत्थीपम आऊखाकह्यो । पांचमी प्रयिकीए केतलाएक नारकीनी तेरसागरोपम आऊखीकह्यो । असुरकुमार  
 देवनीकेतलाएकनी तेरपत्थीपम आऊखीकह्यो । सौधर्मइयान देवलीके केतलाएक देवतानी तेरपत्थीपम आऊखीकह्यो । तांतककल्पेकेतलाएकदेवनी तेर  
 सागरोपम आऊखीकह्यो । छहेदेवलीके जेहेदेवता वज्ज १ । सुवज्ज २ । वज्जावर्त ३ । वज्जप्रभ ४ । वज्जकांत ५ । वज्जशेष ७ । वज्जरूप ८ । वज्ज  
 शृंग ९ । वज्जसिद्ध १० । वज्जकूट ११ । वज्जीत्तरावतसक १२ । एम नारवली ॥ वइर १ । सुवइर २ । वइरावर्त ३ । वइरप्रभ ४ । वइरकांत ५ । वइरपर्ण ६ ।  
 वइरलेय ७ । वइररूप ८ । वइरशृंग ९ । वइरसिद्ध १० । वइरकूट ११ । एमवज्जनी परिवैरसाधे १२ विमानकरी छिहिली वैरीत्तरावतसक १३ । वली ॥  
 लीक १ । सुलीक २ । लोकावर्त ३ । लोकाप्रभ ४ । लोकाकांत ५ । लोकावर्ण ६ । लोकाशेष ७ । लोकाशृंग ८ । लोकासिद्ध १० । लोकाकूट ११ ।

नानीति । अथचतुर्दशस्थानकंसुबोधंच नवरभिहाटौसूत्राणि पृथक् स्थितिसूत्रादिति तत्रचतुर्दशभूतग्रामाः समूहाः भूतग्रामास्थान सूक्ष्मासूक्ष्मनामकमोदयवर्तित्वात् पृथिव्यादयएकीन्द्रियाः किंभूताअपर्याप्तकासत्कर्मोदयाः परिपूर्णस्वकीयपर्याप्तयइत्येकीग्रामः एवमेतेएवपर्याप्तकास्थाथैव परिपूर्णस्वकीयपर्याप्त इति द्वितीयः एवंबादरावादनमोदयात् पृथिव्यादयएव तेपिपर्याप्ततरभेदाद्विधा एवंद्वीन्द्रियादयोपि नवरंपर्चेन्द्रियाः सञ्चिनीमजःपर्याप्त्युपेताइतरत्वसञ्चिनइति

गसिंगं लोगसिद्धं लोगकूटं लोगुत्तरवर्गसंगं विमाणं देवताए उववन्ता तेसिणं देवाणं उद्धोसेणं तेरससा गरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवातेरसहिं अष्टमासेहिं अणपंतिवा पाणमंतिवा ऊरससंतिवा नीरससंतिवा तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं अष्टमसमुप्पज्जइ अंतेगइया नवभिंष्टिअजीवा जेतेरसहिं नवगुहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिद्याइस्संति सद्दुक्खाएमंतंकरिस्संति ॥ १३ ॥

चउद्धसन्नूअग्गामा प० तं० ॥ सुअमाअपजसया सुअमाअपज्जत्तया वादराअपज्जत्तया

लोकीत्तरावतंसक १२ । एम छचीसविमाने देवतापणे जपनाछे तेदेवतानोउत्तुणी तेरसागरोपम आजखीकह्यो । तेदेवता तेरअर्द्धमासे श्वासीश्वास घणोलि जचिली नीचीमंके । तेदेवतानो तेरवर्षसहसे आहारनो अर्थउपज । केतलाएक भूव्यजीव तेरेभवग्रहणे सीभस्से बूभस्से मंकास्से सर्वदुःखना अंतकरिस्से इति तेरमंठाणूं सम्तं ॥ १३ ॥ हिंवे चौदमी अधिकार लिखेछे । चौदभूतानांग्रामभूतकहतां जीवनो ग्रामसमूह तेभूतग्रामकह्या तेकहेछे । सूक्ष्मए केन्द्रिय अपर्याप्त सूक्ष्मनामकमोदयथकी सूक्ष्मपणंपास्या एहवापुणिव्यादिक एकेन्द्रिय तेकेहवाछे अपर्याप्तछे आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ स्वासीश्वास ४





नाण्यपवायंचति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चण्णवायपुब्बति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनंवा समेदेनयत्र प्रोच्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोआयप्यवायपुब्बंवाचि यत्रात्मजीवीनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कर्मण्यवायपुब्बन्ति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति पञ्चक्खणंभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपवर्णते तत्प्रत्याख्यानमिति । विद्याअणुप्यवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशया वर्ण्यते तद्विद्यानुप्रवादं अवंभपाणउ बारसंपुब्बन्ति यत्रसस्यग्ज्ञानादयोऽवध्याः सफलवावर्ण्यन्ते तदवध्वमेकादश यत्रप्राणाजीवाआयुर्गानिकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तो किरियविसालति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालायिस्त्रीणीः समेदत्वादभिधीयै तत्क्रियाविशालापुर्वं तह हिंदुसारवत्ति लोकशब्देनत्रुणुतोद्रष्टव्य. तत

वायं तत्तोनाणप्यवायंच सच्चण्णवायपुब्बं तत्तोअयप्यवायपुब्बं च कम्मण्यवायपुब्बं पच्चस्काणं नुवेनवमं वि  
जाअणुण्यवायं अंबंऊपाणाउ बारसपुब्बं तत्तोकरियविअलंपुब्बं तहविंदुसारंच अण्णेणीअस्ससणंपुब्बस्स चऊ

प्ररूयो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमांहि मत्यादिकंज्ञानस्वरूपभेदेकह्यो ५ । सत्यप्रवादपूर्वं सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां चिहुभेदेकह्यो ६ । तिवारपच्छे आत्मप्रवादपूर्वं जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकह्यो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककह्यो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवमं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहां वर्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्याना अतिशयवर्णव्याक्के १० । अवध्वे इग्यारमू जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेकधावर्णव्यो १२ । तिवार क्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकह्यो १३ विदुसार जेह

चलीकस्य बिन्दुत्वाच्चरस्य सारं सर्वोत्तमयत्तसौक्यिंदुसारमिति पुनराचोदसवत्युपि । द्वितीयपूर्वस्यवस्तुनि विभागविशेषास्तानि च चतुर्दशसूत्रवस्तुनि त  
थासाहसिञ्जीति । सहस्राख्येवसाहस्रं तथाकम्पविशीर्षिण्यादि कर्मविशेषादिमार्गणा प्रतीत्य ज्ञानवरणादिकर्मविशेषणामाश्रित्य चतुर्दशजीवस्थानानि  
जीवभेदाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा मिथ्याविपरीतादृष्टिर्यस्यासौ मिथ्यादृष्टिः उदितमिथ्यात्वमोहनीयविशेषः तथासासायणसम्प्रादृष्टिः । सहस्रतत्त्वज्ञानरसास्वाद  
नेन वर्तते इति सास्वादनः षण्णालालान्यायेन प्रायः परित्यक्तसम्यक्त स्तदुत्तरकाले प्रज्ञावोलकस्तथाचोक्त । उवसमसम्पत्ताउव यउमित्यत्र पाउपाणस्त । सासायण  
सम्यक्तं तददतरालमिच्छबलियति । सास्वादनश्चासौ सम्यग्दृष्टिश्चेति विग्रहः सम्प्राप्तमिथ्यादृष्टिः सम्यक्कृत्या च दृष्टिरस्येति सम्यग्मिथ्यादृष्टि रदितदर्शनमोहनी

दसवत्यु प० समणस्सणं जगवउमहावीरस्स चउद्दसमणणाहस्सिस्सले उक्तासियासमणसंप्याब्धेत्या कम्मावि  
साहिमग्गणं पणुच्चचउद्दसजीवठाणा प० तं० मित्यादिठो सासायणसम्प्रादृष्टो सम्प्रामित्यादिठो अचिरयस

लोकने बिन्दुनोपि अचरनीतार सर्वोत्तम ते बिंदुसार चौदमोपूर्वकहो १४ । अग्रणीयबीजपूर्वजाणिवृतेहरौ चौदवस्तु भागविशेष भूलावस्तुनीतिकह्या । अम  
णतपस्वीभगवत ज्ञानवत श्रीमहावीरने चौदश्मणयतीनासहस्र एतले सहस्रपतीनी उत्कट्टी साधुनी सादाकृद्बिहू । ज्ञानावरणीयादिकर्म विशेषीधि  
गवेषणा पणुच्च आश्रीने चौद जीवनास्थानक भेदकह्या एतले चौदगुणठाणा तेकहेछे । मिथ्याविपरीतहे छे दृष्टिजेहनी तेमिथ्यादृष्टि प्रथम १ । थोढोतत्व  
अज्ञानरूपरसास्वादेकरी सहितवर्ते तेस्वादन सम्यग् दृष्टि बीजोगुणठान २ । सम्यग् मिथ्या दृष्टिजेहनीहे ते सम्यग् मिथ्यादृष्टि एतले कांडकसम्यक्ते रुचि  
कांडक मिथ्यात्वे रुचि एतले मिश्रगुणठाणबीजं ३ । अविरतिसम्यग् दृष्टिविरतिरहित सम्यग् दृष्टिचौथोगुणठान ४ । विरताविरतिश्चावक ५ प्रमत्तसंयती

यधिप्रेषः तथा अधिरतसम्यग्दृष्टिदेशधिरतोदेशधिरतः आयकइत्यर्थः प्रमत्तसंयतः किञ्चिद्विप्रमादवान् सर्वत्रधिरतः अप्रमत्तसंयतः सर्वप्रमादरहितः सएव  
नियदिदृष्टिहृत्तपजत्रेणमुपशमश्रेणिवा प्रतिपन्नोजीवः क्षीणदर्शनसप्तकउपशांतदर्शनसप्तकोवा निवृत्तिबादरउच्यते तत्रनिवृत्तिस्तुहणस्थानकं समकालप्रतिप  
न्नानां जीवानामध्यवसाय भेदत्वधनानीबादरी बादरसंपरायोनिवृत्तिबादरः सचकषायाष्टकक्षपणारम्भाद्रपुंसकवेदीपश  
मनारम्भादारभ्य बादरलीभखंडं क्षपणीपशमनेयावद्भवतीति सुहुमसंपराएत्ति सूक्ष्मः संज्वलनलोभासंख्यखंडरूपः संपरायः कषायायीयस्यसूक्ष्मसंपरायो लो  
भानुवेदकइत्यर्थोयद्विविधाइत्याह उपशमकोवाउपशमश्रेणीप्रतिपन्नक्षपकोवाक्षपकश्रेणिप्रतिपन्न इतिदर्शनसंख्यस्थानमिति तथा उपशांतः सर्वथागुदयावस्थो  
मोहो मोहनीयकर्मयस्यउपशांतमोहः उपशमवीतरागइत्यर्थोऽयंचोपशमश्रेणि समाप्तोऽवतर्तुमहर्तभवति ततः अचवतएवेति तथाक्षीणो निःसत्ताकीभूतीमोहोय

## मोहो विरयाविरगु पमत्तसंजगु निवृत्तिश्चनियदिवाहूर सुहुमसंपराय सुक्ष्मसमगुवाखव

कांश्चक प्रमादवंत ६ । अप्रमत्तसंयतसर्वप्रमादरहित ७ । आठमोठाणाथी क्षपकश्रेण तथा उपशमश्रेण जडतनुजीव अणंतानुबंधीया ४ । क्रोध १ भान २  
माया ३ लोभ ४ । त्रिणिमोहनो सम्यक्त १ मिथ्या २ मित्र ३ एम ७ । दर्शनसप्तकक्षपकोवा क्षपकश्रेणी आरूढकही अने निवृत्ति बादर आठभूणुण्ठाणूकच्छू ८  
नवमं अनिवृत्ति बादरतिहां पहिलीकषायाष्टखपायव्यानंतर नपुंसकवेदीदयोपशमाव्यानंतर बादर लोभखंडक्षपावे कैउपशमावे ८ । सूक्ष्मसंपराय दसमं  
तिहांसूक्ष्मसंज्वलन लोभासंख्य खंडरूपसंपराय कषायनो सूक्ष्मलोभनो वेदोच्छे जिहां सूक्ष्मसंपराय गुण्ठाणेठाणी जीव उपशमश्रेणी प्रतिवर्तनीय को क्षप  
कश्रेणी प्रतिपन्नहोय १० । इग्या १० उपसंतमोह सर्वथापि उपशांत अनुदयच्छे मोहनीयकर्म तिहां इग्यारमं गुण्ठाणे अतमुद्धर्तर्हो कासकरेती प्रनुत्तर

स्यस तथाचयवोतरागइत्यर्थोऽयमप्यतर्मुहूर्त्तएवेति तथासंयोगीकेषु मनःप्रभृत्यतिथ्यापारवान् केवलज्ञानीति तथाश्रयोगीकवली निरुद्धमनःप्रभृतियोगः श्रे-  
 लयोगीकस्वपचाचरोद्विरणमात्रं कालयावदिति चतुर्दशजीवस्थानमिति भरहेत्यादि भारतेरवलोजीवि इहभरतमेरवतदारोपितगुणको दडाकारपनस्तयल्ली  
 वेभयतः तत्रभरतस्य हिमवतौऽर्वागनन्तराः प्रदेशाः अणिजीवाः ऐरवतस्य च शिखरिणः परतो न तत्र प्रदेशाश्चेति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्कवट्टिस्सत्ति च

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे सजोगीकेवली नरहेवय उणजीवाउ चउद्दसचउद्दसजोगयणसहस्साइ चत्तारि  
 अणुऊत्तरेजोगयणसए लवणुकूणवीसेनागेजोगयणस्स अयाणां प० एगमे सिंगरन्मो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ  
 विमाने अवतरे अने पाछीपडेती छेअवी पहिले एउपग्रमश्चेनीनी धणी जोजपकणी करतो दशमगुण्ठायाथी इय्यारमोमूकी वरिमेवुडेतेह ११ । वार  
 मोचीणमीह सर्वथापि क्षीणछे मोहजिह्वां छिणवीतराण १२ । तेरमो सयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवंत केवलज्ञानी १३ । चौदमो असंयोगी केव-  
 ली मनप्रभृतियोगत्रणि जिह्वां रंध्याछे क्खपचक्करकालमाम १४ गुण्ठानकालमाम मिछे १ सासण २ अणिय ३ परभवियाउणसे सगुण्ठाणमिच्छसति  
 नेभगच्छावलियाहोय सासणे १ तिन्नीसयरचाउल ४ पुब्बाणकोडिपणग ५ तेरसम १३ । लहुपचक्करचरम १४ अतहुने सगुण्ठाणा १८ भरतऐरवत एहविहु  
 चेत्रना जीव तिह्वां हिमवंतपर्वतथको ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगे लांबीभरजीवा प्रत्यचाकारे गने ऐरवतक्षेत्रनाजीव शिखरीपर्वतथको परहीअणी जानी  
 वी एहजीहुजीव चौदचौदयोजन सहस्रनी चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीसहाइयाकभागअयाम लांबापणेकह्वा एकएकने राजाने पूर्वादिक  
 त्रणिसमुद्र चउथीहिमवत पर्वत एतलालगी भूमिमा अंतभाग ४ छे । जिहातेह भूमिनीधणी एहवो चक्रवर्ती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमांहि जे

त्वा रोक्ता विभागा यस्यां साचुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासीचकवर्त्तचिंतिविग्रहः रत्नानिखजातीयमध्ये समुत्कर्षयतिवस्तूनीति यदाह  
रत्ननिगद्यते तज्जातीयदुक्तमिति गाहावद्वन्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहित्यन्ति पुरोहितः श्रातिकर्मादिकारो बह्वृत्ति वद्वेकिरथादिनिर्मापयिता मणिः  
पृथिवीपरिणामः काकिणीसुवर्णमयी अधिकारणीसंस्थानेति इहसगताद्यानिपेक्षदियाणि शेषार्थेकद्रियाणौति श्रीकांतमित्यादीन्यष्टौविमानानां नामानेति

इहसरयणा ५० तं० इत्यीरयणे संगावइरयणे गहावइरयणे पुरोहितरयणे अहइरयणे आसरयणे हल्यिरयणे  
अप्सरयणे चक्षरयणे छत्ररयणे चम्परयणे क्षगिरयणे कागिरयणे जंबूद्वीपेणदीवि चउहसमहानईउ पुष्पा  
वरेणलवणसमुद्रं समुप्यति तं० गंगा सिंधु रोहिण्या रोहिण्यंसा हरिया हरिकंता सीञ्चा सीउदा नरकंता  
नारिकांता सुवस्त्रकूला रूप्यकुला रत्ना रत्नवई इभीसिणरयणप्यजाए पृथ्वीए अत्येगइयाणं नरइञ्चाणं

उत्कटवस्तु तेहनेरत्नकहिने तेकहेछे । रत्नोरत्न १ । सेनापतिरत्न ३ । गृहपतिरत्न ३ । पुरोहितश्रांतिक कर्मकारी ४ । वार्धकीसूत्रधार ५ । अश्व  
घोडीरत्न ६ । हस्तिरत्न ७ । एहसातपचद्रियरत्न । अस्मिन्नरत्न ८ । दडरत्न ९ । चक्ररत्न १० । कर्त्तारत्न ११ । चर्मरत्न १२ । मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३ ।  
काकिणीं सुवर्णमयी अहिरणसठाणि ७ एह एकेन्द्रियरत्न चौद १४ कक्षा । जंबूद्वीपनिविषेचौद महानदीजाणवी । पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्थे पृथुचेछे । पूर्वलव  
णसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पृथुचे तेकहेछे । गंगा १ । सिंधु २ । रोहिता ३ । रोहितंसा ४ । हरिता ५ । हरिकाता ६ । सीता ७ । सीतोदा ८ । नरकांता  
८ । नारिकांता १० । सुवर्णकूला ११ । रूप्यकूला १२ । रत्ना १३ । रत्नवती १४ । एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनिविषे केतलाएक नारकीनी चीदीपल्यीप

चऊदसपलिनवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पु०वीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० अ  
 सुरकुमाराण देवाणं अत्येगइयाण चऊदसपलिनवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं  
 देवाण चऊदसपलिन वमाइं ठिई प० लंताएकएदेसुदेवाणं अत्येगइयाणं चउदससागरोवमाइं ठिई प०  
 महासुक्कोकप्पे देवाणं अत्येगइयाणं जहन्मेणं चउदससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिकंत सिरिमहि  
 अं सिरिसोमनस लतथं काविठं माहिंदं माहिदकंत माहिदुत्तरवकिंसगं बिमाणं देवहाए उववन्ना तेसिणं  
 देवाणं उक्कोसेण चऊदससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा चऊदसहिं प० चमासेहि अणमातं पाणमंति  
 वा ऊरुससत्तिवा नीरुससत्तिवा तेसिणंदेवाणं चऊदससागरोवमाइं ठिई प० अहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइअज

म आउखीकछी पंचमीधूसप्रभा पृथिवीनेत्रिषे केतलाएक नारकीनी चौदसागरोपम आजखीकछी । असु कुमार देवतानी केतलाएकनी चौदपत्थीपमआउ  
 खीकछी । सौधर्म ईशानदेवलीके केतलाएक देवतानी चउदपत्थीपम आउखीकछी । लांतक देवलीके कोलाएक देवतानी चौदसागरोपम आउखीकछी  
 महाशुक सातमे देवलीके केतलाएक देवतानी जघन्यो चौदसागरोपम आउखीकछी छेदेवलीके जेहदेवता श्रीकांत १ श्रीसहांतक २ श्रीसीमनस १ लां  
 तक ४ काविष्ठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकात ७ महेंद्रीत्तरावतसक ८ एह आठविमानेदेवतापणी उपनाछे । तेहदेवतानी उल्कछी चौदसागरोपम आजखीकछी । तेह  
 देवता चौदे अर्दमासे पखनाडे घणीस्त्रा लले थोडोस्त्रासले जचोस्त्रासले नीचोस्त्रासमूके तेहदेवतानी चौदवर्षसहसे आहारनी अर्थउपजे । कैएक भव्यजीव चौ

अथपंचदशस्थानके सुगमेपि किंचित्तिव्यते इह स्थिते र्वाक्सप्तसूत्राणि । तत्र परमाद्यतेऽधार्मिकाश्च संक्षिप्तपरिणामत्वरमाधार्मिकाः असुरविशेषा ये तिसृषु  
 पुष्टिवीषु नारकान् कर्तयतीति तत्रांबित्यादिस्त्रीकक्षयं एते च व्यापारभेदेन पंचदशभवति तत्रांबेति यः परमाधार्मिकदेवो नारकान् हंति पातयति बध्ना  
 ति नीत्वा वारं २ खतले विमुचति स इत्यभिधीयते १ अंबरिसीचेवति यस्तु नारकाविहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति  
 सौवर्च्यधीति २ सामेति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारार्दितानधः शातमपतनादिकरोति वर्णतथस्थामइति ३ सर्वरुचिं नित्यावरेत्ति शबलइति चापरः परमाधार्मिकइ  
 ति प्रक्रमः सचांचवसाहृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णतथशबलः कर्बुरइत्यर्थः ४ रुहीवरुहीति यः शक्तिं कुन्तादिषु नारकान् प्रीतयति सरौद्रत्वादौद्रइति

वसिष्ठिञ्चा जीवाजेचऊहसंहं नवगहणेहं सिज्जिस्संति न बुज्जिस्संति परिनिष्ठाइस्संति मव्वदु  
 रक्काणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहमीञ्चा प० ॥ अंबे अंबवस्सिचिव सामसव

लेत्तिञ्चावरे रुदावरुदकालेञ्च महाकालेत्तिञ्चावरे अणि पत्तेधणकुंत्ते हीलुए वेञ्चरणीत्तिय खरस्सरे महाघोसे

दमवग्रहणे सौमस्ये बूमस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनी अंतकरिस्स्ये मोच्चजास्ये इति चौदमोठाणो सम्मतो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनी अधिकार लिखियेछे

पनरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी संक्षिप्त परिणामनाधणी चिण्णिनरकलगे नारकीने वेदनानादेण हारकह्वाते केहेछे । जेपरमाधर्मी देव

नारकीने हणीपाडे अंबर आकाशे उछाले तेअंबकहिंये १ । हयानारकीने रापशस्त्रेकरि अनेक खडकल्पीभावे पचिवायीग्यकरे तेअंबरीषकहिंये २ । जेहना

रकीने हाथपगनें प्रहारेकरी मारीनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिं ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हइयाकालिजां जपाडे ते शबलकहिं



तवत् पलायमानान् नारकान् पशुन्इववाटकेषु महावीषं कुर्वन्विरुणद्विसमहावीषइति १५ इमेएपन्नरसाहियं एवमित्येवादिक्रमेणते परमाधार्मिकाः पञ्च दशाख्याताः कथिताजिनैरिति ॥ ध्रुवराक्ष्णमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्रयः पर्वणिर्पोणमास्याममास्यायांवा चन्द्रादित्ययोरुपरांगकरोति सपर्वराहु र्यस्तुचन्द्रस्यसदैवसन्निहितः संचरति सध्रुवराहुः आहच । किण्वराहुविमाण निचचदेणहोइअविरहियं । चउरंगुलमप्यत्त हेष्ठाचन्दस्सतंचरइत्ति ततो ऽसौध्रुवराहुः णमित्यलंकारे बहुलपचस्यप्रतीत्यस्य पाडिषयन्तिप्रतिपद प्रथमतिथिमादौकालेतिवाक्यशेषः पञ्चदशभागंपचदशभागिनेति वीसायां द्विवचनादि

एतेपन्नरसाहिञ्चा णेमीणञ्चुरहा पन्नरसधण्डूउहुं उच्चत्तेण्होत्या णिच्चुराऊणं प्रकुलपस्कस्सपफिवए पन्नरसति ज्ञाणेणं चंदलेसञ्चावेरत्ताणं चिठत्ति तं० पठमाएपठमंज्ञाणं वीञ्चाएदुज्जाणं तिइयाएतिज्ञाणं चउत्योएचउज्जाणं पंचमीएपंचज्ञाणं ल्ठीएउज्जाणं झुठमीएञ्चुठज्ञाणं नवमीएनवज्ञाणं दराहएदसज्ञाणं एक्कारसेए एक्कारंसमं

नारकोने पशुनोपरि इचाडेवास्तीमेले पीकारकरे तानेरूधीमेले तेमहापाप पराधर्मीएतेपन्नरजाना परमाधर्मीकह्ता १५ । नेमिनाथ अरिहंतएकवीस मा पन्नरधनुपजंवा जंचपणिकह्ता । राहुना बिहिंभेद पर्यराहु ध्रुवराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पौर्णमासीए अमावास्याएं चद्रादित्यनेआवरे ध्रुवराहु अंधारापच नीरात्रीएं चंद्रमाने पन्नरमभागे चंद्रमानो लेखादीप्ति आवरीने आच्छादीने तिष्ठेरह तेकह्छे । एक पडिवामाडि प्रतिदिने राहुचद्रमानो एकएककला आ छादे पहिली पडिवाहोय १ । बीजेदिने बीजीभाग २ । बीजेदिने बीजीभाग ३ । चउथें चौधोभाग ४ । पचमीए पांचमीभाग ५ । छठेछठोभाग ६ । सातमे सातमीभाग ७ । आठमेदिने आठमीभाग ८ । नवमीए नवभाग ९ । दशमीए दशमभाग १० । एकादशोए इग्यारभाग ११ । वारसे बारभाग १२ । तेरसे

यथापद पदेनगच्छतीत्यादिषु प्रतिदिनंपञ्चदश भागमिति भावश्चन्द्रस्य प्रतीतस्य लेखाभिति लेखादीप्तिस्तत्कारणत्वात् मण्डललेखातामावृत्याच्छाद्यतिष्ठति  
 एतदेवदर्शयन्नाह तद्यथेत्यादि पठमादिति प्रथमायातिथ्या प्रथमभाग पञ्चदशालक्षणं चन्द्रलेखायात्रावृत्यतिष्ठतीति प्रक्रमः अनेनक्रमेणयावत् पन्नरमेसुत्ति  
 पञ्चदशसुदिनेषु पञ्चदशभागमावृत्यतिष्ठति तच्चेवत्ति तमेवपञ्चदशभाग शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादिषु चन्द्रलेखायाउपदर्शयन् पचदशभागतः स्वयमपसरणतः  
 प्रकटयन् २ तिष्ठतिध्रुवराहुरिति इहचायभावार्थः षोडशभागीकृतस्यचन्द्रस्य षोडशभागीज्वस्थितएवास्ति येचान्येभागास्तद्राहुः प्रतिदिनमेकैकभाग कृष्णपक्षे  
 आवृणोतिशुक्लपक्षेतु विमुच्यतेति उक्तचज्योतिष्कारण्डके सोलसभागैकाज्जण उलुवङ्गहायएत्यपन्नरसः तन्प्रत्ययेमेतेभागेपुणोविपरिवटइजोगर्हति। ननुचन्द्रविमा  
 वारसमीए वारमन्नाग तेरसीए तेरसन्नागं चउद्दसीए चउद्दसन्नागं पन्नरससु पन्नरसन्नागं सुक्लैरकरस उवद  
 सेमाने चिच्छति तं० पठमाएपठमन्नागं जावपन्नरसेसु पन्नरसन्नागं ठण्णकत्ता पन्नरस मुज्जत्तसजुत्ता प०  
 तं० सतन्निंसय न्नरणि अद्दा अ्सलेसा साइ तहाजेठाय एतेठण्णकत्ता पन्नरसमुज्जत्तसंजुत्ता चेत्तासोएसुणं  
 तारसमीभाग १३। चौदसीए चौदभाग १४। पन्नरमेदिने पन्नरसी कलाढाके १५। तेहीज चन्द्रनी पन्नरमीभाग शुक्लपक्षे राह्मंकातो चन्द्रनेप्रकटतो तिष्ठेरहे  
 शुक्लपक्षने पहिले दिने पहिलो एकभाग बीजदिनेबीजीभाग एमयावत् पन्नरमेदिने पन्नरमीभागमूके। क्खनच्च पन्नरमूहर्तलगे चन्द्रमा साथि चद्रसंयुक्तयका  
 रहे तेह तुलासकांति जाणिवो तेकंके। शतभिषा १। भरणी २। अर्द्रा ३। आश्लेषा ४। स्वाती ५। तथाज्येष्ठा ६। एह क्खनच्च पन्नरमूहर्तं संयुक्तकहीये  
 १५ मुहूर्तलगे चंद्रमासाथेचाले। चैत्रप्राप्ती मसवाडे पन्नरमुहूर्तनी दिवस ३० षडीनोहुओ। तेणेमसवाडे पन्नरमुहूर्तनी ३० षडीनीरात्रीहीय। विद्या

नस्यपचैकषड्भागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् राहुविमानस्य ग्रहविमानत्वेनाऽर्द्धयोजनप्रमाणत्वात् त्थपंचदशैर्दिनैश्चंद्रविमानस्य महत्वेनंतरस्यच सद्युत्वेनसर्वा  
वरणस्यादित्यत्रोच्यते । यदिदंग्रहविमानोऽर्द्धयोजनमिति प्रमाणंतत्प्राधिकमिति । राहोर्ग्रहस्ययोजनप्रमाणमपि विमानंसंभाव्यते लघीयसोपिवाराहुवि  
मानस्यमहतातमिस्त्रिगुणजालेन तस्यावरणावदोषइति तथा षण्णक्षत्राणि पंचदशगूहृत्तानि यावच्चक्ष्रेण संयोगीयेषां तानि पंचदशगूहृत्तं संयोगानि तद्य  
था सयभिसयाभरणौचो अदाअस्सिसयाइजेठाय । एएक्कवक्खत्ता पन्नरसमुहत्तसंजुत्ता । संयुक्तं संयोगइति तयाचित्तसोएसुमासेसुत्तिस्थूलन्यायमाश्रित्यचैत्रेऽश्व  
युजिचमासे पंचदशगुहृत्तौ दिवसोभवति रात्रिश्च नियतसु मेघसंक्रांतिदिनैववदृश्यमिति पञ्चयोगेति प्रयोगेऽभिप्रायोगः परिस्सदआत्मनः क्रियापरिणामोव्यापा  
रइत्यर्थः अथवा प्रकर्षणयुज्यते संबध्यतेऽनेन क्रियापरिणामेन कर्मणा सहाऽत्मनेति योगः तत्रसत्त्वार्थावर्तमाननिबन्धनं मनः सत्यमनस्तस्यप्रयोगीव्यापारः स

मासेसुपन्नरसमुज्जते दिवसोभवति सइच्छुपन्नरसमुज्जतादिभवति विजुणाच्छुण्णप्यवायस्सणं दुर्धस्सपन्नरसव  
त्यु प० मणूसाणंपन्नरसविहेपन्ने प० तं० सच्चमणपन्ने मोसमणपन्ने सच्चमोसपन्ने अणसच्चामोसमणप

अनुप्रवाद दसमो पूर्वतेहनी १५ वस्तुअध्ययन विशेषकद्धी । सनुत्थने पन्नरप्रकारे प्रयोगकहतांयोगकह्या । तेकहेछे । सत्यमनीयोग मननोसांचोव्यापार १ ।  
एमज म्भामननीव्यापार २ । सत्यम्भामनीयोगमिअ ३ । असत्यम्भामनीयोगमनीयोग ४ । एमज व्यापार वचनयोग सत्यवचनयोग ५ । म्भवावचनयोग ६ ।  
मिअवचनयोग ७ । असत्याम्भवावचनयोग ८ कायानासातयोग औदारिककाययोग पर्याप्तावस्थाहुई ९ औदारिकमिअकाययोग अपर्याप्तावस्थाहुई उत्पत्ति  
समय औदारिकपुद्गल अने कर्मणपुद्गलमिअीभावे अतर्महूर्तलगे रहेतेभाटे औदारिक मिअकाययोग १० । एमज वैक्रियकाययोग ११ । वैक्रियमिअकाय

त्यमनःप्रयोगः एवशेषिचपि । नवरमोदारिकशरीरकायप्रयोगश्चौदारिकशरीरमेव पुद्गलस्त्रांधसमुदायलेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः  
अथचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमिश्रकायप्रयोगः अथचापर्याप्तकस्येति इहचोक्त्यत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिको वैक्रियेणमि  
त्रोयावद्वैत्रियपर्याप्तानपर्याप्तिंगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकस्यमिश्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य

नुगे सञ्चवइपनुगे मोसवइपनुगे अस्त्रामोसवइपनुगे उरालियसरीरकायपनुगे उरालिअ  
मीससरीरकायपनुगे वेउछियसरीरकायपनुगे वेउछियमीससरीरकायपनुगे अाहारयसरीरकायपनुगे अाहा

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ । कामिणकाययोग १५ । जिवारे केवल ८ समयक केवलसमुदातकरे केवलीनेत्रीजे चीथे  
पांचमेकामिणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपत्थोपमआउखीकह्यो । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकी  
नो पनरसागरीपमआजखीकह्यो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपत्थोपम आजखीकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरपत्थोपम  
आउखीकह्यो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरसागरीपम आजखीकह्यो । सातमेदेवलोके जेदेवतानंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ  
४ । नंदकांत ५ । नंदवर्ण ६ । नंदलेश ७ । नंदध्वज ८ । नंदमिह १० । नंदकट ११ । नंदोत्तरादतंसक १२ । एहवारविमाने देयतापणे जपनाछे । तेहदेवता

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलब्धि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिक प्रवेद्यादायासौदारिको पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्रितत्वेकेत्वा  
हारकशरीरकाय प्रयोगस्तदभिनिवृत्तौ सत्या तयैवप्रधानत्वा तथाहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगः औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य  
एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्यः पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेगं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथेनंपरित्य  
जत्याहारक तावदौदारिकेण सहमिश्रितेति आह नतत्तेन सर्वथा मुक्तं पूर्वनिर्वर्तित तिष्ठत्येवत्कथं गृह्णाति न त्व तद्याप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिग  
ह्यात्येव तथाकर्मणः शरीरकायप्रयोगे विग्रहसमुद्भातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ घोडशस्थान मुच्यते सुगमचेदं नवरं

रयमीसयसरिरकायप्यनुगे कममयसरिरकायपनुगे इमीसेगिरयणप्यनुगाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइअ्याणं  
पन्नरस पलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्येगइअ्याण नेरइअ्याणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प०  
असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० गहमीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं  
देवाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० महासुद्धेकरपे अत्येगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प०  
जेदेवा गंदं सुणदं गंदावत्तं गंदप्पजं गंदकंत्तं गंदवस्सं गंदलेसं गंदज्जय गंदसिगं गंदसिद्धं गंदकूळं गंदुत्तर

ने उत्कृष्टी पनरसागरोपम आउखीकच्छी । तेदेवतापनरे पखवाडे सासीसासघणीले जचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवतानी पनरवर्षसहस्रे आहा  
रनी अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव पनरभयनेअंतरे सीभस्से वभस्से मंकास्से सर्वदुःखना अतकारस्से मोचजास्से इति पनरमंठाणंसंस्तं ॥ १५ ॥

गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्यश्चारात्सप्तसूत्राणि तत्रसूत्रकृतो गस्य प्रथमेभ्युतस्त्वे षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म  
ध्यनं षोडशशेषांतानि गाथाषोडशकानि तत्रसमेयति नास्तिकादि समय प्रतिपादपरमध्ययन समयएवोचते वैतालीयछदोजातिबद्धं वैतालीयमेवशेषा

वक्रिसग विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं उक्कोसिणं पन्नरससागरोवमाइं ठिइं प० तेणं देवापन्नर  
सगहं अरुमासाणं अणमंतिवापाणमतिवा उरुससंतिवा नीरुससंतिवा तेसिणं देवाण पन्नरसाहं वाससह  
स्सेहि अरुठेसमुप्यज्जइ सतेगइया नवसिद्धिजाजीवा जेपन्नरसाहं शवगहणेहिं सिज्जिरुसंति बुज्जिरुसंति  
मुच्चिरुसंति परिनिह्वाइरुसंति सव्वदुक्काणमतं करिरुसंति ॥ १५ ॥ सोलसयगहो सोलसगा प०  
त० । समए वेयालिये उवसगपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविज्जस्ती महावीरुइ कुसीलपरिजासिए वीरएधम्म

हिंवेसीलवी अधिकार लिखियेक्के । सूगडांगने पहिलेखेसील अध्ययन माहि गाथा एहवीनाम सोलसोक्के । तेकहेक्के । समएति नास्तिकादिमतनी कथक  
प्रथम अध्ययन समयकहिये १ । वेतालिकछदेवाध्यातैवतालिय २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्त्व ६ । कुशीलपरिभाषा ७  
वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । समाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । त्रिणिसय त्रिसठीपाखडीनीमत जिहंतिसमीसरण १२ । सत्यभावकहीते यथातथा  
नाम १३ । ग्रयतेअध्ययन १४ । ग्रथनीकथक यमकछंदेवाधेयतेयमक १५ । पूर्वोक्तपनर अध्ययननी जिहांभावपामीये तेगाथानाम १६ । सोलकथायकछाभग  
वते कथकहियेसत्तार तेहनी आयलाभहीय जेहथी तेकथायकाद्या तेकहेक्के । अनतानुवधी क्रोध जेह अनतांभवनी अनुदंधकरे जावजीवरहे सम्यक्कआविवा

णां यथाभिधेयनामानि समीसरणेति समवसरणं प्रयाणां षष्ठ्यधिकानां प्रयादिशतानां मतपिंडनरूपं अह्रातहि एत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तत्रतद्यथा  
 तथिका यथाभिधायकं यथः जमइत्ति यमकीयं यमकनिवहंसूत्रं गाहतिप्राक्तनपंचदश्याध्ययनार्थस्य गानाद्गाथोगाथावातप्रतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रे गाथा  
 समाही मग्गे समीसरणे आहातहि ए गंथे जमइ ए गाहा सोलसकसाया प० तं० अणंताणुबंधीकोहे अणंताणु  
 बंधीमाणे अणंताणुबंधीमाया अणंताणुबंधीलोत्रे अपच्चस्काणकसाएकोहे अपच्चस्काणकसाएमाणे अपच्चस्का  
 णकसाएमाया अपच्चस्काणकसाएलोत्रे पच्चस्काणावरणेकोहे पच्चस्काणावरणामाणे पच्चस्काणावरणामाया पच्च  
 स्काणावरणेलोत्रे संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमार्था संजलणेलोत्रे मंदरस्सणं पच्चयस्स सोलसनामधे  
 या प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपनेय गिरिया रयणुच्चहि पियदंसणे मज्जालोणस्ससनाजीयं अ  
 नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २ । अनंतानुबंधीमाया २ । एमज अप्रत्याख्याक्रीध अणुवतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १ । अप्रत्या  
 ख्यानमान २ । अप्रत्याख्यानमाया ३ । प्रत्याख्यान लरणक्रीध सर्वविरती यतीधर्मेने आविवानदे चारमासलगेरहे १ । एमज प्रत्याख्या  
 नमान २ । प्रत्याख्यानमाया ३ । प्रत्याख्यानलोभ ४ । संज्वलनक्रीध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपनरेदिनरहे १ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ स  
 ज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कथायथया । मेरुपर्वतनासोलह नामकच्छा तेकहेछे । मंदर १ । मेरु २ । मनीरम ३ । सुदंसण ४ । स्वयंप्रभ ५ । गिरिराज ६ ।  
 रलोच्चय ७ । प्रियदर्शन ८ । मध्यम लोकनीनाभि १० । अर्थ ११ । सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदक्षिणदि १२ । सूर्यावरण रात्रिं सूर्यने आवरेआच्छदि १३ ।

स्त्रीकस्य मञ्जुलीगस्सनाभीयत्ति लोकमध्ये लोकनाभिथेत्यर्थः उत्तयति भरतादीना मुत्तरदिग् वत्तित्वाद्यदाह सव्वेसिउत्तरीमिरुत्ति दिसाईयत्ति दिशामादि  
 रित्यर्थः वडिसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सइवावतंस इतिचेत्ति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणामध्ये आदेयथेत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरव  
 ल्योर्दक्षिणीत्तरयो रसुरकुमारराजयोः उवारियालेणत्ति चमरचचावली चचाभिधान राजधानीर्मध्योद्धताऽवतरत्पार्श्वपीठरूपेऽवतारिकल्पयने षोडशयीज  
 नसहस्राख्यायामविष्कंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेषुदशसु सहस्रपु नगराकार इवजलमूर्ध्व गतंतस्यचोत्सेधवृद्धिः षोडशसहस्राख्यऽतउ  
 च्यते लवणसमुद्रः षोडशयीजनसहस्राख्युत्सेधपरिवृद्ध्या प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमाननामाणि ॥ १६ ॥ अथसप्तदशस्थानकं तच्चव्यक्तां

त्यञ्च सूरिञ्चावते सूरिञ्चावरणेत्तिञ्च उत्तरेय दिसाइञ्च वडिसेइञ्च सोत्तसमे पासस्सणंञ्चरहन्तो पुरिसादाणी  
 यस्स सोलससमणसाहस्सीनु उक्कोसीञ्चाणंसपदाहोत्था प्रायप्पवायस्सणो पुट्टस्ससोलसवत्थ प० चमरवली  
 णं उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइ च्यायामविस्संजेणं प० लवणेणंसमुद्धेसोलसजोयण सहस्साइ उस्से

भरतादिकचेत्तयकी उत्तरदिशाच्छे तेमाटे उत्तरकक्षी १४ । दिशानी आदिक्केजेहयकी तेदिगादि १५ । अणुत्तस सर्वपर्वतनो मुगुटरूपे एम १६ नामडु  
 या । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषर्माहि प्रधान आदानीय महासीभागी तेहनेसोले अमण सहस्स उत्कट्टीसाधुनी संपदाहुई जाणवी । आत्मप्रवादंनूपय तेहना  
 सोलह वस्तुकक्षा । भगवंते अधिकार विषयेकक्षा । चमर चचावली चचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीक्षयन तेहअवासनी पीठीका सोलसहस्स  
 योजनलांबणे पिहलपणेकक्षी । लवणसमुद्रयकी जगतीयकी पचाणं सहस्सयोजनेईइतिहां मध्यभागेदगमाले दससहस्स योजननेविषे नगरना गठनीपरि



हपरिवहणीए प० इमीसेणं रथणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिनुवमाइं ठिई प० पंच  
मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया  
णं सोलसपलिनुवमाइं ठिई प० सीहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देव्वाणं सोलसपलिनुवमाइं ठिई प०  
जेमहासुक्ककप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा अ्यावत्तं विअ्यावत्तं नंदिअ्याव  
त्तं महाणादिआवत्त अंकुसं पलंबं नदं सुजहं महाजहं सुज्जुनदं नदुत्तरवाळंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना  
तेसिणं देवाणं उक्खोसेणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवासोलसहिं अय्यमासाणं अ्याणमंत्तिवा पाण  
मंतिवा जस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिण देवाणं सोलसवाससहरस्सेहिं अ्याहारठेसमुअ्यज्जइ संतेगइयाज

पाणी जचीगयोछे । तेहनी जंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकह्यो । एहरत्तप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी सोलिपत्थीपम आउखीकह्यो । पां  
चमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनी सोलिसागरीपमआजखीकह्यो । असुरकुमाह देवनी केतला एकनीसोलिपत्थीपम आउखीकह्यो । सौधर्म ईशानदे  
वलोके केतलाएकदेवनी सोलिपत्थीपम आउखीकह्यो । महाशुक्रदेवलोके केतलाएक देवनीसोलिसागरीपम आजखीकह्यो । जेदेवता आवर्त १ । विदावर्त २  
नदिकावर्त ३ । महानदिकावर्त ४ । अंकुश ५ । प्रलव ६ । भद्र ७ । सुभद्र ८ । महामद्र ९ । सर्वतोभद्र १० । भद्रोत्तरावतंसक ११ । एह इय्यारविमाने देव  
तापणेषेउपनाछे । तेहदेवतानी उत्कथी सोलिसागरीपम आउखीकह्यो । तेदेवता सोलपखवाडेस्वासीखाघणोले जचीस्वासले नीचीस्वासमंके तेदे

नवरमिहस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागदृश्य तथा अजीवकायासंयमो विकटोऽर्णवहुमूल्यवस्त्रपात्रे पुस्तकादिग्रहणं प्रेक्षायामसंयमोयः सतथा सचस्थानोपकरणादीनि

वासिष्ठियाजीवा जेसोलसाहिं नवगगहणेहि सिज्जिरसति बुज्जिरसंति मुच्चिरसंति परिनिष्ठाइरसंति सख्खु  
रकाण मंतंकरिरसंति ॥ १६ ॥ सत्तरसविहेइसंजमे प० त० । पुठविकायइसंजमे आउका  
यइसंजमे तेउकायइसंजमे वाउकायइसंजमे वणस्सइकायइसंजमे वेइदियइसंजमे तेइदियइसंजमे च  
उरिदियइसंजमे पंचिदिइसंजमे अजीवकायइसंजमे पेहाइसंजमे उपेहाइसंजमे अण्वहइसंजमे अप्प

वतानो सोलसहस्रवर्षआहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव सोलभवने आंतरे सीभस्ये बूर्भस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्थि ॥ इतिसी  
लमंठाणू समत्तम् ॥ १६ ॥ हिंवे सतरमो अधिकारलिखियेक्के । सतरप्रकारे अरुजसकह्यो तेकहेक्के । पृथिवीकायनो पांचवीसंघटवी हणवीति  
पृथिवीकाय असंजम १ । एम अपकाय पाणीतेहनो असंजमते अपकाय असंजम २ । एम तेजकाय असंजम ३ । वायुकाय असंजम ४ । वनस्सतिकाय  
असंयम ५ । वेइन्दियअसंयम ६ । तेइन्दियअसंयम ७ । चउरिदियअसंयम ८ । पचेदियअसंयम ९ । वस्त्रप्रात्र अणपुजीलेवी मेलवी तेअजीवकाय असंयम  
१० । अथवा बहुमूल्यवस्त्रपुस्तकनीलेवी ११ । उपकरणनीअविधि पडिलेहवी तेप्रचासंयम १२ । असंयमोर्गनेविषे व्यापारवी सयमोर्गनेविषे अव्यापारवी  
तेउपेक्षा असंयम १३ । अवधिपरिठवणोमात्रादिकनो अवधिपण्डिलेहवी तेअप्रमार्जन असंयम १४ । मननीभंडोव्यापार तेसनअसंयम १५ । एमवचनो

अप्रत्युपेक्षणमविधि प्रत्युपेक्षणं वा उपेक्षाऽसंयमयोगिषु व्यापानं संयमयोगिषु व्यापानं तथाऽपहृत्य संयमः अविधिनोच्चारदीनां परिष्ठापनतीयः तथा अप्रमार्जनाऽसंयमः पात्रादेरप्रमार्जनयाचेति मनोवाकायाऽस्य आख्ये गामकुशलानामुदीरणानीति असंयमे त्रिपरीतः संयमः बेलंधरानुबेलंधरावासापर्वतस्य

मज्जणाञ्चसंजमे मणञ्चसंजमे वइञ्चसंजमे कायञ्चसंजमे सत्तरसविहसंजमे प० तं० पुढवीकायसंजमे  
 च्याउकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे वेइंदिञ्चसंजमे तेइंदिञ्चसंजमे चउरिंदि  
 यसंजमे पंचिंदिञ्चसंजमे च्चुजीवकायसंजमे पेहासंजमे च्चुवहइसंजमे च्चुप्पमज्जणासंजमे मण  
 संजमे वइसंजमे कायसंजमे माणुसत्तरेणपह्णु सत्तरसएकुक्खवीसजोयणसए उहुं उच्चतेणं प० सव्विप्पिप्पवेलं  
 धरञ्चणुबेलंधरणागाराईणं च्च्यावसपह्णुया सत्तरसएकुक्खवीसाइ जोयणसयाइ उहुंउच्चतेणं प० लवणेणसमुदं

असंयम १६ । कायानीअसंयम १७ ॥ सत्तरप्रकारेसंयमकह्वी तेकहेछे । पृथिवीकायानी राखवी तेपृथ्वीकयसंजय १ । एस अपकायसंजय २ । तेजकायसंजय ३ । वायुकायसंजय ४ । वनस्पतिकाय संजय ५ । वेइन्दियसंजय ६ । तेइन्दियसंजय ७ । चउरिदियसंजय ८ । पंचेदियसंजय ९ । वस्त्रपात्रपूजनी तीजे तेअजीवसंजय १० । प्रेक्षासंजय ११ । उपेक्षासंजय १२ । अपहृत्यामजय १३ । अप्रमार्जनसंजय १४ । मनसंजय १५ । वयणसंजय १६ । कायसंजय १७ ॥ जंबूद्वीपआखी धातकीखंडआखी पुष्कराईअर्द्धी एमअट्टाईद्वीप रूपनगरने चउपखेरगढरूप माणुषीत्तरपर्वतहे तेहसत्तरसे एकवीसयीजन उदी जचपणेकह्वी सगसेबेलंधर अनुबेलंधर देवतानागकुमार भवनएत तेहना आवास जगतीयकी चिंहुपासेछे चालीससहस्र योजनलवणसमुद्र मांहिजइ

रूपं चैत्रसमासागाथाभिरवर्गतव्यमेताः । दसजीयणसहस्रा लवणेसिहाचक्रवालउरंदा । सीलससहस्राउच्चा सहस्रमेगंतुउगाढा । देखणमठजीयण लवणसि  
होवरिदगंतुकालदुगे । अतिरिगंर परियड्ढइहायएवावि । अक्कत्तरियेवल धारंतिलवणेदिहिसनागाण । बायालीयसहस्रा ओसत्तरिसहस्रावाहरियं । सठ्ठीना  
गसहस्रा धरंतिअरुणीदयसमुहत्ता । वेलंधरआवासा लयण्यचउदिसिचउरो । पुवादि अणुकमसी गोथुभ १ दगभास २ यख ३ दगसीस ४ । गोथुभ १ सित  
ए २ सखे ३ मणोसिले ४ नागरायाणी । अणुवेलधरवासा लवणेविदिसासुसवियाचउरो । कक्कडे १ विज्जुप्पमे २ केलासरुणप्पमेचेव । कक्कोडयकइमए कोल  
सरुणप्पमेय नागरायाणी । बायालीससहस्से गंतुउवहिभिसवेवि । चत्तारिजीयणसए तीसिकोसहउगयाभूमी । सत्तरसजीयणसए दगवीसेजसियासब्बे

## सत्तरस जीयणसहस्साइं सव्वगेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसम रमणिज्जाडु न्नीमन्नागानु

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतव्वेगोथुभ १ । एम दक्षिणादिकेदगभास २ । संख ३ । दगसीस ४ । तेहनाधणीगोथुभ १ शिव २ । भेद्र ३ । मणसिल  
अनुवेलंधरनारपर्वतविदिगिएं ईयानकीणेककोट १ । एमजअग्निकीणिविद्युतप्रभ २ । केलाश ३ । अरुणप्रभ ४ । एहनाधणीनागराजककोट १ कर्दम २ के  
लास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दशसहस्रजीजन चक्रवालओटलाकारे समपाणीके तेहवेपरि सीलसहस्रछगाज जचापाछे तिहां दिनप्र  
ति एवेककेलवधि तेहनेधरेराखे तेवेलंधर वेलमाहिलेपासे जबूहीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकीखडभको ७३ सहस्रदेवता छसहस्रशिथे वाटेकरी पा  
णीवांधता उपराठांमारुके । वेलंधरअनुवेलधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसजीजन अधिकसतरसेजीजन जंचाजचपणेकह्या । जगतीयकी पंचाणू यी  
जनसहस्रजइये समुद्रसांहि तिहां दससहस्रजीजन चक्रवालसमुद्रपाणीके विहाथकी सीलसहस्रजीजन शिखारूपपाणी जचाआकाशेगयाछे तीसमुद्रपाता



वीर्यमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयआयुर्देहिकविष्यतिलक्षणेऽत्रयस्या यस्मिन् स्तदावीचि अथयावीचिविकेद स्तदभावादवीची दीर्घत्वंप्राकृतत्वाच्चेद  
वभूतमरणोऽवीचिमरण प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविच्छेदनलक्षणं तद्यात्रवधिमर्यादा तेनमरण मवधिमरणं यानिहि नारकादिभवनिबधनतया युःकर्मदलियान्यनुभूय  
न्म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्भव्यापेक्षया पुनस्तद्गृहणावधिं यावक्कीयस्य मृतत्वादिति तथा आयंतियमरणेति आ  
त्यतिकमरण यानिनारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्भव्यापेक्षया अत्यंतभावित्वा दार्ढ्यंति  
कमिति बलायमरणेति सयमयोगीभ्यश्चलतां भग्नव्रतपरिणतीनां व्रतिनांमरणं बलात्मरणं । तथा वशेनेन्द्रियविषयपारतंत्र्येण ऋताबाधितावशात्तः स्त्रि  
ग्धदीपकलिकाचलोक्तना कुलशभवन् तथा अंतर्मध्येमनसीत्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदयस्य सीतःशल्योभिमानादिभिरनाप्नोष्वितातौचार श्लक्ष्मरणमेतः  
शल्यमरण तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यभवलक्षणेवर्त्तते जतुस्तद्भवयोग्य मेवार्यबंधापनः तत् चयेनस्त्रियमाणस्यज्ञयति तत्तद्भवमरणमेतच्चैर्विद्युद् मनुष्याणामेव  
तदेवनारकाणां तेषां तेष्वेवोत्पादाभावादिति तथाबालादय बालाअविरता स्तेषां मरण बालमरण तथापडिताः सर्वविरता स्तेषामरण पडितमरण बालपंडि

**झ्यावीइमरणे** उहिमरणे झुपयंतियमरणे वलाथमरणे वसहूमरणे झुंतीसल्लमरणे तल्लवभरणे वालमरणे पंडि  
तदेवनारकाणां तथा तत्त्ववात्यादाभावादित तावाना ज्ञानमात्रादिसर्वकार्योपायविनाशकालीनप्रतिफलनिमित्तब्रह्मणोऽस्त्येतन्निरूपणेपर्यन्तमुक्तं । अथ नरकादिष्वर्थाश्चैते ।  
**१।** युभवने बधनकार्मदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यंतिक मरण तेजेनरकनंपूखूं आउखूं भोगवीओवीती फरीने बीजिवें तेहीजभावै ३ व्रतगांजीम  
रेते वलातमरण ४ । पतयादिकनी परीइन्द्रियनेवगें मरेतेवशार्तमरण ५ । अपराधअणालीई मरेतंचंत.ग्रन्थमरण ६ । जेआउखूंभोगवी मरेवलीउपराठी बी  
जिववेतेहीजआवे जिमममृथतिर्यच पीतानूं आउखूं भोगवीकरौ वलीबीजिवयेतेहीजमूं आउखूंपामे ७ । अधिरतीनूं मरणतेवालमरण ८ । सर्वविरतीयतीन

तादेशविरतास्तेषामरणं बालपंडितमरणं । तथाऋद्धस्थमरणमेव केवलमरणंतु प्रतीतं । वेहासमरणति विहायसि व्योमनिभवं वैहायसं विहायीभवत्वं च तस्य वृद्धशाखाद्युद्धत्वसति भवेत् तथागृहैः पक्षिविशेषै रुपलक्षणत्वाच्छकुनिकाशिवादिभेदश्च स्पृष्टं स्पर्शनंयस्मिन् स्तद्गृध्रस्पृष्टं अथवागृध्राणांभक्ष्यं पृष्टमुपलक्षणत्वाउदरादियच्च तद्गृध्रपृष्टं मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मानं भक्षयती महासत्वस्थुभवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यान यस्मिन् तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मच भक्तपरिज्ञेति यदूहं । तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेष्ट्यते आसामनशनक्रियाभितीगिनी तथा मरणमिंगिनीमरणं तद्विचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्निःप्रतिकर्मशरीरस्यै गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्थवीपगमनमवस्थानं यस्मिन् तत्पादपीपगमनं तदेव मरणमिति विग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममससमिति भाविभावयन्निश्चलमेवास्ते तुयायीवृत्तते तस्य

तमरणे बालपंडितमरणे लउमत्यमरणे वेहासमरणे गिद्धिपिठमरणे नत्तपञ्चरक्षणैमरणे इंगिणीमरणे पाउवगमणमरणे सुज्जमसंपराणंजगवं सुज्जमसंपरायज्ञावेवहमाणो सत्तरसकम्मपगणीउ णिवंध

मरणतेपण्डितमरण ८ । आवकनंमरणते बालपण्डितमरण १० । ऋद्धस्थपणेमरेतै ऋद्धस्थमरण ११ । केवलीपणेमरेतै केवलमरण १२ । गलेफांसीलेईमरेतेविहासकमरण १३ । गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आंपणीआत्माखवाडीमरेते गृध्रपृष्टमरण १४ । भातपाणीपक्ष्वीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५ । चारेआहारापक्ष्वी भूमिनियमीसंस्थारिमूये भवतीवियावचनकरावेते इंगिनीमरण १६ । पादपवृच्चनीशाखाकंदी भूमिएंण्डेचलतोहालेनही तिमसंथारैकक्षा पक्षीसाधुहाले बीलेनहीपासुपालटे नहीतेपादपमरण १७ । सूक्ष्मसंपराय द्यमंठाणं सूक्ष्मसलीभनोअसंख्यातमीभाग किट्टिरूपजहनेहुएते सूक्ष्मसंपरायभावैवततीय

तद्भवतीति । तथा सूक्ष्मसंपराय उपशमकः क्षपकोवासूक्ष्मलोभकक्षय किष्किवेदको भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थित नातीतागत सूक्ष्मसंपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थः पूर्वतरे गुणस्थानकेषुबंधप्रतीत्या न्यासांव्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका साताप्रकृतिरुपशांतिमोहादिषु बधमश्रित्यनुयाति शेषा. षोडशैवव्यवच्छिद्यते । यदाह नाणं ५ तराय ५ दसगं दसणवत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडी सुहुमकसाय मिवीच्छिन्ना । सूक्ष्मसंपरायात्परनबध्नतीत्यर्थः ॥ सामानादीनि सप्त

ति तं० अष्टात्रिणिणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनानाणावरणे केवल्लिनाणावरणे चरकु दसणावरण अचरकुदंसणावरणं उहीदंसणावरणं केवलदसणावरणं सायावेयणिज्जं जसप्पिकत्तिनामं उच्चागो यं दाणंतरायं लानंतरायं जोगंतरायं उवज्जोगंतरायं वीरिअणंतरायं इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अण्ये गइयाणं नेरइअणं सत्तरपलीनुवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अण्येगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

को तथा क्षपभावेवर्ततीथको एकसोवीसप्रकृतिबध्छे तेमाहिली सतरकर्म प्रकृतिनोबंधपाडे तेकह्छे । आभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमअु तज्ज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदसणावरण ६ । अचक्षुदसणावरण ७ । अवधिदसणावरण ८ । केवलदसणावरण ९ । सातावेदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानातराय १३ । लाभातराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगांतराय १६ । वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनिविषे केतलाएकनारकीनी सतरपत्थीपमआउखीकह्वी । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीए केतलाएकनारकीनी उत्कष्टीस



रससागरोवमाइं ठिई प० लठीए पुढवीए अत्येगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु  
 माराणं देवाणं अत्येगइयाणं सत्तरसपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु क्कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं  
 सत्तरसपलिनुवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सरिकप्पे दे  
 वाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु  
 मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोळरीअं महापोळरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं ज्ञा  
 विअं विमाणं देवत्ताए उचवन्ता तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवस सत्तरस  
 हि अण्णमासेहिं अण्णमंतिवा पाणमंतिवा उरससंतिवा नीरससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तरसाहिं वाससहस्से

तरसागरोपमआखीकह्यो । क्खीतमायुधिवीए केतलाएकनारकीनी जघन्यो सत्तरसागरोपमआखीकह्यो । असुल्लुमारदेवतानी केतलाएकनी सतरप  
 ल्योपमआउखूकह्यो । सौधर्मईशानदेवलीके केतलाएकदेवतानी सतरपल्योपमआउखीकह्यो महाशुक्कदेवलीके सातमेदेवतानीउत्तकष्टो सतरसागरोपमआज  
 खीकह्यो । सहस्सार आठमेदेवलीके देवताने जघन्यो सत्तरसागरोपम आउखीकह्यो । सातमेदेवलीके जेदेवता सामायिक १ । सुसामायिक २ । महासामा  
 यिक ३ । पदम ४ । महापदम ५ । कुमद ६ । महाकुमद ७ । नलिन ८ । महानलिन ९ । पोळरीक १० । महापोळरीक ११ । शुक्र १२ । महाशुक्र १३ ।  
 सिह १४ सिहकात १५ । सिंहविद १६ । भाविक १७ ॥ एण्विमानेदेवतापणेउपनाछे । तेहदेवतानी उत्तकष्टोसतरसागरोपमआउखीकह्यो । जेहदेवतासतरे

दशधिमनानां नामानीति ॥ १७

॥ अथाष्टादशस्थानकं मिहचाष्टीसूत्राणि स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सुगमानिच नवरंभेत्ति ब्रह्मचर्यं तथौदारिकका  
स भोगान् मनुष्यतिर्यग् सबधिविषयान् तथादिव्यकामभोगान् देवसंबन्धिनइत्यर्थः तथासखुडुगवियत्ताणति सहस्रुद्रकैर्व्यक्तैश्च येसुद्रकव्यक्ता तेषां तत्रसुद्र

हि आहारठेसमुप्यज्जइ संतेगइया नवसिद्धिआजीवा जेसत्तरसहिं नवगहणेहिं सिज्जिरसंति बुज्जिरसंति  
मुच्चिरसंति परिनिव्वाइरसंति सब्बदुस्काण मंतकरिरसंति ॥ १७ ॥ अठारसविहंबने प० त० ।  
उरालिएकामन्नोगे नेवसयं मणेणं सेवइ नोविअब्बंमणेण सेवावेइ मणेणसेवंतविअन्तं नसमणुजाणाइ उरालि

एकामन्नोगे नेवसय वायाएसेवइ नेविअन्तवायापसेवावेइ वायाएसेवंतवि अन्तनसमणुजाणाइ उरालिएका  
मन्नोगे नेवसयकाएणंसेवइ नोविअन्तंकाएणंसेवावेइ काएणं सेवंतवि अन्तंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामन्नोगे नेव  
अर्द्धमासे पखयाडे स्वासीस्वासघणोले जचोले नीचीस्वासमेले तेहदेवताने सतरपसहस्से आहारनीअर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव जेसतरभवने आंतरे सीक्क

स्ये बूक्कस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनीअतकरिस्सो मोच्चजास्ये ॥ इतिसतरमंठाणंसम्भत्तं ॥ १७ ॥ हिवेअठारसोठाणोलिखियेच्छे । अठारभेदेब्रह्मव्रतकह्योतिकहे  
छे । उदारिककामभोग तेमनुष्यनारस्सीअनेतिर्यचनीस्सीतेसाथेपचेद्वियानाविषयशब्दरूपतेकामघाणरस सय्येभोगमनेकरीपोतिसवेनहो १ । मनेकरीअनेरा  
नेपिणसेवाडेनहो २ । मनेकरी अनेराएमैथुनसेवतांप्रति अनुभावनानकरे ३ । औदारिक कामभोगनपोतिवचनेधुरीसेवे ४ । ननिश्चयेअनेरानेप्रतिवचनेकरी  
वसेडे ५ वचनेकरी अनेराने प्रतिसेवतांधका अनुमीदनानकरे ६ । औदारिक कामभोगपोतेकायाएंनकरे ७ । अनेराने कायाएंनसेवाडे ८ । कायाएंनकरीअ

कावयसाश्रुतेनवा व्यक्ताः ब्रह्मास्तु देवयःश्रुताभ्यांपरिणताः स्थानानिपरिहाराः सेव्यतेसचाश्रयवस्तूनि व्रतषट्कं मेरुं ॥ १ ॥ नरात्रिभोजनविरतिश्च कायषट्कं पृथिवीकायादि अकल्पोऽल्पनीस्य पिण्डशय्या वस्त्रपात्र रूपपदार्थः गृहिभाजनं स्थाव्यादिः पत्यकंखट्वादि भूषया स्त्रियासहासनं । ज्ञानंशरीरचालन

सयंसमणेणसेवइ नोविञ्चन्तमनेणसेववाइ मणेणसेवंतंविञ्चन्तंसमणुजाणइ दिव्वेकामन्नोगे नेवसयंवायाएसे वइ नोविञ्चन्तवायाएसेवावेइ वायाएसेवंतंवि च्चन्तंसमणुजाणइ दिव्वेकामन्नोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोवि च्चन्तंकाएणंसेवावेइ काएणंसेवंतंविञ्चन्तंसमणुजाणइ च्चरहतोणंञ्चरिठनेमिस्स च्चठारससमणसाहस्सीउ उक्कोसया समणसंपयाहोत्या समणेणं न्नगवयामहावीरेणं समणाणंविगंथाणं सस्कुम्भयवियत्ताणं च्चठारस ठाणा प० तं० वयत्तक्कं कायत्तक्कं च्चक्कप्पोगिहिन्नाणयं पत्थियकनिसेज्जाय सिणाणं सोन्नवज्जाणं च्चुय्यारस्सणंन

निरा प्रतिसेवतांथकां अनुमीदनाकरे ८ । देवांगनासंबंधी कामभोगस्वयंपोतेसेवेनही १० । अनेरानेमनेकरी सेवाडेनही ११ । मनेसेवता आगिलाने पिण अनुमीदेनही १२ दिव्वेतेक्कहतां कामभोग देवांगनासंबंधी वचनेसेवेनही १३ अनेरानेवचनेकरी सेवावेनही १४ वचनेसेवतां प्रतिबीजाने अनुमीदेनही १५ देवांगनासंबंधी कामभोगकायाएंसेवेनही १६ अनेरापहिंकायाएंसेवावेनही १७ कायएंसेवतांथकां अनुमीदेनही १८ अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमातीर्थक ने अठारअमणसहस्सनी उत्कट्ठीसाधूनी संपदाइइ । अमणनेतपस्सीने निययने बाह्याभ्यंतर गांठीरहितने दुद्रव्यक्तसाधिजिह्व तेसदुद्रव्यक्ताएतले छुद्रबौलिकव्यक्ता तेवयकरी वडीतयाश्रुतेकरीप्रसिद्ध तेहने अठारस्थानकपरिहारसेवाश्रयविशेष कांदकक्कांडवी कांदकआदरवी तेकहेछे । व्रतषट्क पंचमहाग्रत छठ्ठीरात्रि

गोभापर्जन प्रतीत तथाआचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूहासमन्वितस्य तस्यपिष्ठेपणायाः पंचचूलाः द्वितीययुतस्तंथात्मिकाः सचनयवप्रक्षचर्याभिधाना  
ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतरतं रूपात्म्येवचेद पदप्रमाणं नचूलानां यदाह । नववभचेरमंड्री अठारसपयसहस्रीश्री । हवइसपचचूला बहुबहुतरश्रीपयगेणति  
यम सचूलिकाकस्येति त्रिशेपणं तत्तस्य चूलिकासन्ना प्रतिपादनाथं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नदोटीकाकृता अठारसपयसहस्राणि पुणपठमसुय  
सपयसवभचेरमइयस पमाणं विविक्तत्याणोय सुत्ताणि गुरुवए सवोतेसि अत्योर्जाणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पद पदोयेति पदपरिमाणे  
नेति तथा संभित्ति ब्राह्मीश्रीप्रादिदेयस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रितेनैव यादृगिताचरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्तस्या

## गवतो सचूलिच्छगस्स अठारस पयसहस्साइं पयगेणं प० बंभीएणंलित्रीए अठारसविहलरकविहाणे प०तुं०

भोजनपरिचरि एमकायपट्क पांचप्रावरभनेच्छो उत्तमकाय एम १२ अकल्पो अकल्पनीयपिण्डशयावरत्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४ । पत्यंकीमां  
चादिक १५ । निपदासिन्नासन १६ । स्नानशरीरधीइवी १७ । श्रीमावर्जन शरीरशृंगाररचना १८ । आचारांग प्रथमभगने पहिले श्रुतस्कधे नवअध्ययनछे  
तहना पूज्यनांवीजी श्रुतस्कधे पांचचूलिकाछे तेषांचचूलिकामांही १६ अध्ययन अवताराकाछे तो तेषांचचूलिकासहितना अठारपदसहस्रजेदले अर्थनीसमा  
प्ति तेहपदक हीए । पदार्थेसर्वसंख्याएकह्या आचारांगे प्रथमश्रुतस्कधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परचूलिकाछे । पांचबीजेश्रु  
तस्कधे १८ सहस्रपदमांहिनही उक्तच । नववभचेरमंड्री अठारसपयसहस्रीश्री । हयइयपचचूला बहुबहुतरश्रीपयगेणति । अनेसूत्रमाहि चूलिकाग्रहीछे ते  
एकसूचनासवधीमाटे परतेहनीप्रमाण १८ पदमांहिनलेवो । ब्राह्मीश्रीप्रादिनाथ भगवंतनीपुत्री तेहने अठारपदमांहिनलेवो । लिखिवानाभेदकह्या ।

ब्राह्मणालिपेर्णमित्यलंकारे लेखोल्लेखनं तस्यावधानमदः। लखावधानप्रज्ञप्त तद्यथा एतत्स्वरूपं नदृष्टमिति  
 स्ति अथवास्याद्वादाभिप्रायस्तत्तदेवास्तिनास्तिचैत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वतस्य । तथा धूमप्रमाणचमी । अष्टादशोत्तर मष्टादशयीजनसह  
 स्त्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिडेन पोसासाढेत्यादि रेवंयीजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्रमावित्यर्थः उक्तार्थोक्तार्थतोऽष्टादशमुहुर्त्तोदिवस

बंभी जवणालिया दोसऊरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तारया अस्करपुत्थिया भोगवयत्ता  
 वेयणतिया णिणहइया अंकलिवि गणिअलवि गंधवुलिवि माहेसरलिवि आदस्सलिवि आदस्सलिवि दामिलिवि वोलिदि  
 लिवि अत्थिनत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्सअठारसवत्थु प० धूमप्पजाणुणं पुढवीए अठारसुत्तरंजीअणु सअसह  
 स्सं वाहल्लेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोरेणं अठारसमुज्जतादिवसेअवइ ~~एवमेव~~ अठारस  
 तेकह्वे । ब्राह्मीसकृतादि भेदेकरौ लिपिअस्तरस्यापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १ । जवनलिपि २ । दोषऊपरिका ३ । वरोहियाप्रभृति णिणहइयापर्यंत  
 नामविशेषजाणिवा ११ । अंकलिपि १२ गणितलिपि १३ । गांधर्वलिपि १४ । आदर्शलिपि १५ । माहेखरलिपि १६ । दामलिपि १७ । बोलिदिलिपि १८ ।  
 आस्तिनास्तिलोएसएसएविअसासएवि एहवो स्याद्वादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकर्षपणे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचउत्थंपूर्वं तेहना १८ वसु अधि  
 कारविशेषकह्वा । धूमप्रभापांचमीपुथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयीजन बाह्व्यपणे जाडपणेकही । पोसाआसाढमासइत्ति एकदाउत्कृष्टपणे अ  
 ठारमुहुर्त्तीयोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रातिएं आसाढीपुनीमे अठारमुहुर्त्तीयोदिवसहुए सतित्ति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहुर्त्ती रात्रिहुइ । एणीए रत्नप्र

मुञ्जतारात्तीजवइ इमीसंरणप्यत्ताए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठारसपलिलेवमाइं ठिई प०  
 बठीए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्येगइया  
 णं अठारसपलिलेवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं अठारसपलिलेवमाइं ठिई  
 प० सहस्सरिकप्पेसु देवाणं उक्खोसेणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० आणएकप्पेसु देवाणं अत्येगइयाण  
 जहन्नेणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिठिसालं समाणं दुमं स  
 हादुमं विसालं सुसाल पउमं पउमगुम्भं कुमुदं कुमुदगुम्भं नलिनं नलिनगुम्भं पुळ्ळरीयगुम्भं सह  
 रसारवहिसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ता तेसिणं देवाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० तेण देवाणं अठ्ठा

भा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी अठारपमल्योपम आजखीकह्यो क्खीतमा पृथिवीये केतलाएकनारकीनी अठारसागरोपम आजखीकह्यो । असुरकु  
 मारदेवतनी केतलाएकनी अठारपल्योपम आजखीकह्यो । सौधर्मइशानकले केतलाएकदेवतानी अठारपल्योपम आजखीकह्यो । सहस्रारआठमेदेवलोके  
 केतलाएकनीजवन्थी अठारसागरोपम आजखीकह्यो । आठमेदेवलोके जेदेवता काल १ । सुकाल २ । महकाल ३ । अंजन ४ । रिष्ट ५ । साल ६ । समान  
 ७ । दुम ८ । महादुम ९ । विशाल १० । सुसाल ११ । पदम १२ । पदमगुला १३ । कुमुद १४ । कुमुदगुल्ल १५ । नलिन १६ । नलिनगुल्ल १७ । पौडरीक  
 १८ । पौडरीकगुल्ल १९ । सहस्रारावतंसक २० ॥ एम वीसविमाने देवतापणेंउपनखि । तेहदेवतानी अठारसपलिलेवमाइं ठिई प० तेण देवता अठारस

भवति षट्त्रिंशद्वटिकाइत्यर्थः तथाप्येषमासे सकृदिति मकरसंक्रांती रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि ॥ १८ ॥

अथैकोनविंशतितमस्थानं तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टानां स्वल्पतिपादकाध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्त्वधवर्त्तनीनि उक्त्व

रसेहिं अष्टमासेहिं व्याणमंतिवा पाणमंतिवा ऊरुससंतिवा नीरुससंति तेहिं देवाणं अष्टारसवास सहस्से  
हिं अष्टाहारठेसमुप्यज्जइ संतेगइया नवसिद्धिया जेअष्टारसहिं नवगगहणेहिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति मुच्चि  
स्सति परनिव्वाइस्संति सब्बदुक्काण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्जयणा प० तं० ।

उत्तिकत्तणाए संधाठे अंठेकुम्भेअ सेलए तुंवेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्वे उदगणाए मंठुक्के ते

ईमासे पखवाडे स्वासीस्वासले वणीले उचीस्वासले नीचीस्वासमंके तेहदेवतनी अठारहर्षसहसे आहारनी अर्थउपजे । केतले ~~इति~~ मव्यजीव अठारभवनेअंतरे  
सीभस्से बूभस्से मंकास्से सर्वदुःखनीअतकरिस्से मीचजास्से ॥ १८ ॥ हिंवेइगुणवीसनी अधिकारलिखियेक्के ।

ज्ञाताक्खीअंग तेहने प्रथमश्रुतस्त्वंधे १८ ज्ञायरूपनीतिमार्गं सूचकअध्यनकह्या । तेकहेक्के यथाक्रमे । उत्तिन्नसत्राय जेहाथीए पगउपाडो पगहेठिशशलीराख्यो  
तेहमेघकुमारहुयो १ । धनावहसेठीनी संघाडकज्ञाय २ । नौजोमीरडीनाईडानी ३ । चउथोकाक्खानी ४ । पांचमी सेलकाचार्यनी ५ । छट्ठीउच्छडानी ६

सातमी रोहिणीलघुवहनी ७ । आठमीमल्लिकुमारीनी ८ । मार्कंदीसुतजिनरत्तेजिनपालक ९ । दशमीचंद्रमानी १० । इय्यारमीदावद्वनामह्वनी ११ । वा  
रमीउदकचीयजितशत्रु सुबुद्धिमत्तनी १२ । मंडुकडिडकानी नंदमणीयारनी १३ । चौदमीतिलीपुत्रमुहुतानी १४ । पनरमीनंदिफलनी १५ । सोलमी अमरकंका

तेत्यादिसाक्षरूपकद्वयमिदं च षष्ठांगाधिगमावसेयमिति । तथा जंबूद्वीपेण इत्यादीभावनात्रयः स्वस्थानादुपरिधीजन शततपतीऽधस्तादादश शतानि । तत्रच समभूतलेऽष्टौ भवन्ति दशचापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्वीपापरविदेहेहि निम्नीभवक्षेत्रमंतिमविजयद्वयस्यदेशे अधोलीकदेशे सहस्रमिति द्वीपांतरसूर्या स्वीयशतमधोऽष्टशतानि क्षेत्रस्य समत्वादिति तथा शुक्रमन्त्रेन क्वत्तादिति विभक्तिपरिणामान्नचर्चैः समंसहचारचरणं चरित्वा विधिदेहति तथा कलाश्रोति पं

तलीइच्च नंदिफले च्चवरकंका च्चाइस्से सुंसमाइच्च च्चवरेच्च पौंठरीएणाए एकणवीसमे जंबूद्वीवेणंदीवे सूरिच्च  
उक्कोसेणं एगुणवीसजोयणसयाइं उहुंमहातवयइ सुक्केणंमहगहेच्चवरेणं उइच्चसमणे एकणवीसंणस्कत्ताइं स  
मंचारंचरित्ता च्चवरेणं च्चत्यमणं उवागच्छइ जंबूद्वीवस्सणंदीवस्स कलान एगुणवीसंखेच्चणाने प० एगुणवीसं

राजधानीनो दुपदीनो १६ । सतरमी आकीणघोडानो १७ । अठारमी सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८ । अपरअनेरो पुडरीक कुडरीकनो न्यायउगणीसमी १९ जंबूद्वीपनेविषे सूर्यउत्कथो इगुणवीस योजणसत उपरिहेठि मिलीनेतपे एतले पीतानाविमानथी एकसीयोजन जंचीतपे प्रकासे अनेसमेभूतलेगइ आठसे योजन नीचोतपे वलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे केहली विजयके जिहां तिहां सेरुनी अपेक्षा एक हस्सयोजन भुईजंढीके तिहा प्रकाशे एतले एक सी आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहेठि प्रकाशे । शुक्रमहाग्रह पश्चिमदिसे जगीथकी एगुणवीस नक्षत्रसाथे चारचरीने अमणकरीने पश्चिमदिसे अस्तमनप्रति पामे जंबूद्वीपदीपनीकला उगणीसकेदना भागरूपएतले भरथक्षेच ५२६ योजन अनेचुरि छकलातेह एकयोजनना १९ केदनाभा



चसएच्छ्वीसे ऋक्षकलावित्यडंभरहवासमित्यादिषु जंबूद्वीपगणितषु याः कला उच्यंते ता योजनस्येकोनविंशतिकेन विंशतिभागरूपा इति भावः  
 आगारमज्जेवसित्ति अगारंगेह अस्येकोनविंशति चिरकालं राज्यपरिपालनतः आमर्यादायदीक्षां वसित्वा उन्मत्त्वा तन्नावासंविधायेति अध्येष्यप्रवृजिताः श्री  
 शास्तृपंच कुमारभाववेत्याह । वीरं अरिठ्ठनेमि पासं मल्लिचवासपुञ्जच । एमोत्तूणजिणे अवसेया आसिराय णीत्ति ॥ १८ ॥ अथ विंशति तमस्था

तित्ययरा अगारवासमज्जेवसित्ता मुंठेनविज्ञाणं अगाराउअणगारिअणपव्वइअण इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुठ  
 वीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एगुणवीसपलिनेवमाइं ठिई प० ढठीए पुठवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं  
 एगुणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं एगुणवीसपलिनेवमाइं ठिई प०  
 सोहम्मसीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एगुणवीसपलिनेवमाइं ठिई प० अणयकट्ठे उक्खोसेणं एगू

गरूप एतलेभाग करी एह्वी छकला प्रप्ताकहो । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्श्वनाथ ३ । मक्षिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपांचतीर्थकरविना बीजा  
 उगणीसतीर्थकर गृहस्थाश्रमेवसीने मुडपणूपाय्या द्रव्यमुडलोचादिकभावमुड तेकधायत्याग गृहस्थाश्रमयकी अनगारपणायकी प्रवृज्याघरनथी जेहनेते  
 अनगारीतिहपणूपाय्या । एणी एरत्तप्रभापहिली पृथिवीनिविषे केतला एकनारकीनी उगणीसपत्न्योपम आउखीकहो । कृष्टीतमा पृथिवीनिविषे केतला एक  
 नारकीनी उगणीसपत्न्योपम आउखीकहो । असुरकुमार देवतानी केतलाएकनी उगणीसपत्न्योपम आउखीकहो । सौधर्मईशानकल्ये केतला एक  
 देवतानी उगणीस पत्न्योपम आउखीकहो । अनतनवमेकल्येउत्कृष्टी उगणीससागरीपम आउखीकहो । प्राणतदशमे कल्पे केतला एकदेवतानी

णवीससागरोवमाइं ठिई प० पाणएकप्ये अत्थेगइयाणं देवाणं जहन्तेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प०  
 जेदेवा अणतं पाणतं णतं विणतं पणं सुसिरं इदं इदकंत इंदुत्तरवांसिणं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि  
 णदेवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एगूणवीसाए अठ्ठमासाणं अणमंतिवा पा  
 णमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्सतिवा तेसिण देवाणं एगूणवीसाए वास्ससहस्सेहिं अाहारठेसमुप्पज्जाइ सते  
 गइया नवसिद्धियाजीवा जेएगूणवीसाए नवगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति परिनिहाइ  
 स्संति सब्बदुस्काणं अंतकरिस्सति ॥ ११ ॥ वीसंअसमाहिठाणा प० त० । देवदवचारिअा

जघन्यो उगणीससारीपम आउखोकह्यो । जेदेवता आनत १ । प्राणत २ । नत ३ । विनत ४ । पणक ५ । सुखिर ६ । इन्द ७ । इन्द्रकां  
 त ८ । इन्द्रोत्तरावतंसक ९ । विमाने देवतापणेउपनाहि । तेहदेवतानीउत्कट्ठो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवतानी उगणीसे अद्ध  
 मासे पखवाहे खासीखाले घणाले जविले नीचोमूके तेहदेवतानी उगणीसवर्षसहस्रेण आहारनीइच्छाउपजे केवला एकभव्यजीव उगणीसभवने  
 आंतरे सीभस्ये नूमास्ये सर्वदुःखना अतकरीसे मोद्धजासे ॥ इति उगणीसमंठाणं सम्मत्तम् ॥ १८ ॥ हिवे वीसनी अधिकारलिखिये  
 के । वीस असमाधिस्थानककह्या । तेस्सचित्ताभिराखिवू मोद्धमार्गेरहिवो तेसमाधि नहीसमाधि तेअधिको । तेहनास्थानकभेद तेअसमाधिस्थान तेकहेहे  
 अनुक्रमे । द्रवद्रवउतावलो चालतो व्यग्रचित्तपणेघषणा जीवनेहणे तेमाटे संयमने अबाधाउपजावे अनेपडेती अस्समंठाणउपजावे १ । अणपूज्येचालेअर्थ

ने किंचिद्विद्यते । तत्र स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाकसप्तसूत्राणि तत्र ससाधनं ससाधिशेषतः स्वास्थं मोक्षं प्रागेव स्थानेन <sup>१०</sup> नान्यथा ससाधिसुखाः स्थानान्यात्र  
 यथेष्टा पर्याया वा असमाधिस्थानानि तत्र दवदवचारिन्ति यो हि द्रुतं चरति गच्छति सोऽनुकरणशब्दतो दवदवचारितुं वापीत्युत्तरा समाधिस्थानानि पञ्चया  
 समुच्छेदार्था भवतीति सिद्धम् । सच द्रुत २ संयमात्मनिरपेक्षेवृद्धात्मानं प्रपतनादिभिरसमाधौ योजयति ३ चांशसत्त्वान् घ्नन्ऽसमाधौ योजयति सत्ववधजनि  
 तेन च कर्माणापरलोकीक्यात्मानमसमाधौ योजयत्यतीदृशं त्वत्वं मसमाधिकारणत्वादसमाधिक स्थान मेव मन्यन्वापियथायोगमवसेय १ तथा अप्रमार्जितचारी २  
 दुप्रमार्जितचारी ३ स्थाननिषीदन्त्वर्गवर्त्तनादिष्व्वात्मादिविराधेनालभते तथा अतिरिक्ता प्रतिप्रज्ञाशय्यादसतिरासनानि च पीठकादीनि यत्नयति सोतिरि  
 क्त शय्यासनिकः सचातिरिक्तशय्या सनिकरः सचातिरिक्तायां शय्यायां घंघशलादिरूपाया मन्येपि कौटिकादय आवस्यति इतितैः सहाधिकरणत्वादसमा  
 धिस्थानमेव मन्यन्वापि यथायोगमवसेय तथा अप्रमार्जितचारी दुप्रमार्जितचारी च सभवादात्मापरिचासमाधौ योजयतीति एवमासनाधिकेपि बोच्यमिति ४

### विभ्रवइ व्युपमज्जिञ्चुचारिञ्चाविभ्रवइ व्युतिरित्तसज्जासे <sup>११</sup> रातिणिञ्चुप

पूर्वनीपरी २ । भंडीपरीपूजीचालेमर्यादायकी अधिकशय्यापाटीपाटला आसनादिकमेवे ३ । अधिकउपाय्यराखेतिहा योगीसंन्यासी आवीउतरे तेसाथेवाद्  
 करवीपडे आत्मानेसमाधिउपजे ४ । रात्रिकपरिभाषी आचार्यादिकाएसाहीनेले तथापरामवे एमकरती आत्माने असमाधिउपजे ५ । यविरतेगुर्वादिकतेहने  
 उवघातीमार तेस्थविरोपघाती ६ । एमभूतएकेंद्रियादि तेहनेहनेतेभूतोपघाती ७ । क्षणक्षणाधीकरतेसंज्वलन ८ । अनंतक्रीधांधहुए तेक्रीधन ९ । परपूठिया  
 रकीअवर्णवादेबोलेतेपुष्टिमांस १० । अभीष्टमवधारयिता वलीवलीशंकितअर्थने निशंकितथकीकहे तथापारकागुणखुमीसकेनहीनवांअधिकरणकलहतथा

राजनीतिपरीभाषी आचार्यादिषु परिभक्कारी सच्चालानमन्यांसासमाधौ योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरुवः तानाचारदीर्घेण शीलदीर्घेण च ज्ञानादिभिर्वावहृतीत्येवशीलः सएवचेतिस्थविरोपघातिकः ६ तथाभूतान्येकेद्रियांस्ताननर्थत उपहृतीति भूतोपघातिकः ७ तथासज्ज्वलतीति सज्ज्वलनः प्रतिचरणं रोपणः ८ तथाक्रोधनः सकृत्क्रुद्धोऽत्यंतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्टिर्मांसिकः पराङ्मुखस्य परस्वावर्णवादकरी १० अभिक्वण २ ओष्ठारयित्ति अभीक्षामभीक्ष्णमवधारयिताशक्तस्याप्यर्थस्य निशंकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवत्ता अथवा अवहारयितापरगुणानां मवहारकरी यथाअदासादिकमपि परमभवति दासस्वचौरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणनां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराण्यंति पुरातनानां कलहानां चमितव्यमुपशमितनां चमितव्येनोपशानानां पुनरुदीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादौ यः सचेतनादिरजोगुडितनहस्तेन दीयमानाभिवाद्यति तथायोऽस्थंडिलादेः स्थंडिलादौ संक्रामन्नपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधकारणे सचित्तादिप्रयिज्या कल्पाविना अनतरिताया सासनादिकरोति सरजस्वापाणिपादेति १४ त

रिन्नासी थरोवघाइए नूनवघाइए संजलणे कोहणे पिठिमंसए अन्निरुपणं उहारइत्तान्नवइ गवाणंअधिकरणं अणुप्यणं उप्पाएत्तान्नवइ पोराणांअधिकरणं स्वामिअविने सविअणपुणोदीरेत्तान्नवइ ससरगाडलादिक तेषुअनुत्पन्नछे उपनानथी तेहउपजावेछे १२ । पुरातनजनूनेकलहाने खभावियापणे उपशमनाछे तेहनेपुनरपिवली उदारकहुएदारे १३ । सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजखरडाएह्यथेभिन्नदेताल्ले अथवासचित्त अचिन्न स्थंडिलजपगनपूजे १४ । अकविस्वाध्यायकरे पहिले प्रहरेअने पाखिले प्रहरे कालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकने अणेचौदप्रहरलगे उकालिक दशवे कालिक नभणे १५ । अकालेभणतादेवजाणिअनीउरुहलडोय । कलहकरे १६ । शब्दकोरे

था अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकरः कलहकरोहेतुभूतकर्तव्यकारी १६ तथागण्डकारः १७। तथाभ्रमाणीजी सूर्योदयादस्त्रास  
भाषाभाषकोवा १७। तथाभ्रमाणीजी सूर्योदयादस्त्रास १८ तथासूरप्रमाणभोजी सूर्योदयादस्त्रास  
यं यावदयनपानाद्यभ्यवहारौ १९ एषणाभ्रसमित्यापि अनेषणानैव परिहति प्रेरितयासौसाधुभिः कलहकारः तथाअनेषणीय मपरिहरन् जीवीकीपराधी  
वर्तते एववात्सपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिदं विंशतितममिति २० तथाघनीदधयः सप्तमपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिकाः इन्द्रसमानर्द्ध  
यः साहस्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतीवन्धसमयादारभ्यवन्धस्थितिः स्थितिगन्धर्वाः प्रत्याख्याननामकंपूवन्वम सातादीनिचैकविंशतिर्विमानानीति ॥

रूपपाणिपाए अकालसज्जायकारए अविज्जइ कलहकरे सद्दकरे ऊंऊकरे सूरप्यमाणान्जोई एसणासमिते अण  
विज्जइ मुणिसुखएणअरहा वीसधणइं उहुउच्चतेणंहोत्या सब्वेविअणंघणोदही वीसंजे ऊंऊहस्साइं वाह  
त्वेणं प० पाणयस्सण देविंदस्सदेवरसोवीसं सामाणिअसाहस्सीउ प० गंपंसयेअणिअस्सएण कम्मस्सवीसं

रात्रिएमाटे सादेसज्जायकरेगृहस्थनेपरी उपडोवोले १७। भ्रूकार जेणेकरी गच्छनीभेदहीय एहवोकरे १८। सूरप्रमाणभोजी सूर्यत्रायमे तिहांगेन जिमे  
१९। एषणासमित अस्सुतो भातपाणीले बीजीयती इसीषदेतां कलहकरे २०। एहवीसअसमाधिस्थानकक्षा २०। मुनिसुवत वीसमातीर्थकर वीसधनुष  
उचाजचपणेतया। सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनीदधि कठिनसलाभूतपाणी तेघनीदधि। वीसयीजनसहस्र जाडपणैकह्यो। प्राणतदेव  
लीकदशमी तेहनीइन्द्र तेहनादेवतानी इन्द्र तेदेवद्र तेहना देवतानी राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकक्षा। नपुंसकवेदनीयकर्म प्रथीत् नपुंसककर्म

सागरोवमोकोफाकोफोनीनु बंधनु बंधाठिई प० पञ्चस्काणंपुष्टस्सवीसंवत्सू उस्सप्पिणिमंफुले वीसंसागरोवम  
 कोफाकोफोनीनुकालो प० इमीसेणं रथणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण वीसंपलिनुवमाइं ठिई  
 प० लठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुम्भाराणं देवाणं अत्थेगइ  
 याण वीसंपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिनुवमाइं ठिई प०  
 पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीससारोवमाइं ठिई प० अपारणेकप्पेसु देवाणं जहन्तो ~~तवी~~ वीसंसागरोवमा  
 इं ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिट्ठत्थं उप्पलं भित्तिलं त्तिगिच्छं दिसा सोवत्थियं पलं रुइलं पुष्कं सुपु

नी वीससागरोपम कोडीबधसमयकोमाडी बंधनी स्खितिकही । प्रत्यास्थान नवमापूर्वनावीसवलु अधिकारविशेषकह्या । उत्कर्षिणी अवससपिणीमड  
 लनेविषे कालचक्रनेविषे वीसकोडीकालकह्यो । एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उत्कर्षिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालकह्यो । एणी ए  
 रत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी वीसपथोपम आउखीकह्यो । छडीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनी वीससागरोपम आउखीक  
 ह्यो । असुरकुमार देवतानी केतलाएकनी वीसपथोपम आउखीकह्यो सौधर्मइशान देवलोके केतलाएक देवदेवी वीसपथोपम आउखीकह्यो प्राणतदशमेक  
 ले देवनीउत्कह्यो वीससागरोपम आउखीकह्यो । आरणदय्यारमेकले देवनी जघन्योवीससागरोपम आउखीकह्यो दशमेकले जेदेवता । सात १ । विसात २  
 सिधार्थ ३ । उत्पल ४ । भित्तिल ५ । त्तिगिच्छा ६ । दिसा ७ । सौवस्तिक ८ । पल ९ । रुचिर १० । पुष्प ११ । पुष्पावर्त १२ । पुच्यप्रभ १४ ।



तथारात्रिभोजनं दिवागृहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिषयतु भिन्नगक रतिक्रमादिभिन्नभुजानः ३ आधार्कर्म ४ सागारिकः स्थानदातातत्पिंडं ५ ऊर्ध्वशिकं क्री  
तमाहृत्यदीयमानभुजानः उपलक्षणत्वात् पामिच्छेच्छाद्यानिसृष्टग्रहणमपीहद्रष्टव्यमिति ६ यावत्करणोपात्तपदान्वेवमर्थतोऽवगन्तव्यानि अभीक्ष्णप्रत्याख्यायाऽ  
शनादिभुजान ७ अन्तः पक्षांमासानामेकतीगणारणमन्यसंक्रामन् ८ अंतर्मासस्यत्रौदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ९ अंत  
र्मासस्यत्रौणिमायास्थानानिस्थानमितिभेदः १० राजपिण्डंभुजानः ११ आकुख्याप्राणातिपातंकुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिकं हिंसन्नित्यर्थः १२ आकुख्यामृषावाहं व

हृत्यकर्मकरेमाणे सबले मेज्जनं पफिसेवमाणे सबले राइमोऽपुणं भुंजमाणे सबले आहाकर्मं भुंजमाणे सबले  
सागारियपिण्डं भुंजमाणे सबले उद्देसियकीयं आहहदिज्जमाणं भुंजमाणे सबले ~~अपिण्डं~~ अपिण्डं  
पफियाइरक्केत्ताणं भुंजमाणे सबले अपुतोत्तसं मासाणंगणानु गणसक्कम्ममाणे सबले अपुतोमासस्स तनुकगले  
वेकरेमाणे सबले अपुतोमासस्सतनुमाईठाणेसेवमाणे सबले रायपिण्डं भुंजमाणे सबले आउहियाए पाणाइवायं

मीभीजन भुजतीथकी ४ । जेहनो उपासरोहुयो तेगृहस्थाना घरनोपिड आहारभुंजतीथकी ५ । उद्देसकतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणिकरे तेउद्दश  
कतथा क्रीतवैचाती आखी आहृतसमाहृतआखी आहारते तीथबल ६ । अभीक्ष्णं बलीबली अशनादिपुण्ड्रकलीने जीमती ७ । केहले छम्मासमाहि गच्छ  
पालटथकी शबल ८ । एकमासमाहि त्रिणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ९ । मासमाहि त्रिणिठाण सेवतीथकी १० । राजपिण्डभुज  
तो ११ । आकुटीएप्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकनेहणती १२ । आकुटि एमृषावाद वदतो १३ । आकुटीए दत्तादान प्रतिलेतीको १४ । आकुटीए



दन् १३ अदत्तादानं गृह्णन् १४ आकुक्षवानंतर्हितायां पृथिव्यास्थानं वानर्षधिवचित् यत्कायोत्सर्गस्वाध्यायभूमिरेतौ वा १५ एवमाकुक्ष्या सस्त्रिंशत्सर्ज  
स्त्रायां पृथिव्या विस्तारवत्या सचित्तवत्यां गिलायां लैष्टावा कोलावासेदारुणि कोलापुष्पाः १६ अयस्त्रिंशत् तथा प्रकारे सप्राणिसबीजादौ स्थाना

करेमाणे सवले ज्ञाउहियाए मुसावायंवदमाणे सवले ज्ञाउहियाए ज्ञादिस्वागिरहमाणे सवले ज्ञाउहियाए  
ज्ञणंतरहि ज्ञाए पुढवीएठाणं वानिसिहियंवा वेलिमाणे सवले एवं ज्ञाउहिया चित्तमताए पुढवीए एवं ज्ञाउहि  
या चित्तमताए सलाएकुलावासंतिवादारुएठाणं वासहिंयंवा चेतमाणे सवले जीवपइठिएसपाणे सवीएसहरीए  
सउत्तंगेपणंगदगमहीमक्कांठासंत्ताणए तहयगारठाणं वासिज्जंवानिसिहियंवा चेतमाणे सवले ज्ञाउहियाए  
मूलन्नो ज्ञणवा कदन्नो ज्ञणंवा तयान्नो ज्ञणवा पवालन्नो ज्ञणवा पुण्णन्नो ज्ञणंवा फलन्नो ज्ञणंवा हरियन्नो ज्ञणंवा

सचित्तं पृथिवीजपरि बैसती अथवा सूवती वा स्वाध्याकरती १५ । सचित्तगिला तथा पायाण पृथिवी सचित्तउपरि घृणसहितकाष्ठ ऊपरि बैसती सूवती  
अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरती १६ । जीवप्रतिष्ठित एहवी सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतीयको एकेंद्रिय वेइन्द्रिय तेद्रिय चउरिंद्रिय इत्यादिक जीवविराधना  
करती अथवा उपरि सूती सञ्जायकरती १७ । आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन  
वलीफलभोजन हरियभोजन करतीयको १८ । एकवर्षमाहि दसदगलेपकरती सवल १८ । वर्षमाहि दसमायाठाण सेवतीयको २० । अभीक्ष्णम् वलीवली शाती

दिक्कुर्वन् १७ आकुव्यामूलकंदादिभुजानः १८ अंतः संस्तरस्यदशोदकलेपान् कुर्वन् १९ तथातः संस्तरस्यदशमायास्थानानि च २० तथा अभीक्ष्णपौनःपुन्येन श  
 तीदकलक्षणं यद्विकटवततेन व्यापारितो व्याप्तीयः पाणिहस्तः स तथा ते अशनं प्रगृह्य भुजानः श्रवला इत्येकविंशतितमः २१ तथा हि निवृत्तिबादरस्यापूर्वकार  
 णस्याष्टमगुणस्थानकवर्त्तिन इत्यर्थः श्रवाक्यालंकारे क्षीणसप्तक मन्तानुबंधि चतुष्टयदर्शनवयलक्षणं यस्य स तथा तस्य मोहयनीत्यकर्मणः एकविंशतिकर्मशा अ  
 प्रत्याख्यानादिकषाय द्वादशनीकपायनवकरूपोत्तरप्रकृतयः सत्कर्मसत्तावस्थकर्मप्रज्ञप्तमिति तथा श्रौवत्सम् श्रौदाम काड माल्यकृष्टिं चापीव्रतं आरणावतं  
 भुंजमाणे सबले अंतोसंवच्छरस्स दसदगलेवकरेमाणे सबले अंतोसंवच्छरस्स दसमाईठाणम् सेवमाणे सबले  
 अन्निखणं सीतोदयवेयवगृध्रारियपाणिना असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पाङ्गाहेताभुंजमाणे  
 सबले णिअहिवादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जारस्स कम्मस्स एक्कावीसकम्मं सासंतकम्मा प० त० अप्पच्च  
 रकाणकसाएकोहे अप्पच्चरकाणकसाएलोअे पच्चरकाणावरणकसाएकोहे पच्चरकाणाव  
 दकलक्षणं जे विकटजल तेषे करी वग्यारीयतिव्यापास्सी तथा व्याप्पीभीनी पाणिहाथ जेहनी तेषे करि असनपाणि खादिमसादिम पडिगाहेले तथा सच्चि  
 पाणीभीने हाथे करि जीमतीशबल २१ निवृत्तिबादरअपूर्वकरण आठमे तिहांवर्तताने तथा खपाव्योक्खे जेण चत्सकचार अनता नुबंधी कषाय अने त्रिणिदंसण  
 मोहनीएम् ७ प्रकृति जेण खपावीक्खे तेहने मोहनीयना कर्मना एकवीस कर्मना अंशउत्तरकर्म प्रकृति सत्कलत्ति सत्तकर्मसत्तावस्था एकह्वाते कहेछे ।  
 अप्रत्याख्यान कषायक्रोध १ । अप्रत्याख्यानमान २ । अप्रत्याख्यानमाया ३ । अप्रत्याख्यानलोभ ४ । अप्रत्याख्यान  
 मोह ५ । अप्रत्याख्यानमायक्रोध ५ । प्रत्याख्यानावर

रणकसाएमाणे पञ्चस्काणावरणकसाएमाया पञ्चस्काणावरणकसाएलोने संजलकसाएकोह संजलणकसाए  
 माणे संजलणकसाएमाया संजलणकसाएलोने इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंसगवेदे इत्थिं अरति रति त्रय सोक दु  
 गच्छा एकमेक्षाएणंउस्सप्पिणी पंचमल्लठानेसमाने एकवीस एकवीस सहस्साइकालेणं प० तं० दूसमा  
 दूसम दूसमाएगमे गाएणंउस्सप्पिणीए पढमवित्थानेसमाने एकवीस एकवीस सहस्साइकालेणं प० तं०  
 दुसम दुसमाए दूसमायए इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एकवीस पलिउवमाइ

ण कषायमान ६ । प्रत्याख्यानावरण कषायमाया ७ । प्रत्याख्यानावरण कषायलोभ ८ । सज्जलकषायमान १० । सज्जलनक  
 षायमाया ११ । सज्जलनकषायलोभ १२ । स्त्रीवेद १३ । पुरुषवेद १४ । नपुंसकवेद १५ । हास्य १६ । अरति १७ । रति १८ । दुग्च्छा  
 २१ । एकेकीए अवसर्पिणीएं पडते अरे पावमीअरो अने छठोअरो समयकाल एवेवेनो एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे । दुखमअरो  
 पांचमी २१ हजारवर्षनो दुखम दुखमअरो बिलवासीनो छठो २१ वर्षसहस्रनो एकको उत्तर्पिणीएं चडते आरेपहिलो आरो बिलवासीनो अने बीजो  
 आरो मनुष्यनो समयकाल एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे । उत्तर्पिणीनो दुखम दुखमापहिलो आरो २१ वर्षसहस्रनो दुखमा बी  
 जो आरो २१ वर्षसहस्रनो । दुखमाबीजो आरो २१ सहस्रवर्ष । एणीए रत्नप्रभा शुद्धिदेनिविषे केतलाएक नारकीनो एकवीसपत्नोपम आउखीकह्यो । छठोत  
 माशुथिवीए केतलाएक नारकीनो एकवीस सागरीपम आउखीकह्यो । असरकुमार देवतानो केतलाएकनो एकवीस पत्नोपम आउखीकह्यो । सौधर्म ईशा

ठिई प० लठीए पुठवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं  
 अत्येगइयाणं एगवीस पलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाण एकवीसंपलि  
 नवमाइं ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीसंसागरोवमाइं ठिई प० अत्तुतेकप्पे देवाणं जहन्ने  
 णं एकवीस सागरो वमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छ सिरिदामं कळं मल्लकिहं चावोसतं अरसवामि  
 सगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं एकवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एकवीसाए अ  
 ठमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणदेवा एकवीसाए<sup>५</sup>अस्सहस्सहिं अ  
 हारठे समुप्पज्जइ संतेगइया नवसिधियाजीवा जेएकवीसाए नवगगहणेहि सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मु

नकल्पे कीतलाएक देवतानी एगवीस पत्थोपम आउखीकच्चो । आरण इग्यारमेकल्पे देवतानी उल्लुष्टो एकवीस सागरोपम आउखीकच्चो । अच्युते बारमेक  
 ल्पे देवतानी जवन्यो एकवीस सागरोपम आउखीकच्चो । इग्यारमे देवलोकं जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ श्रीड ३ माल्यकृष्ट ४ चापीनत ५ आरणावतंसक  
 ६ एहच्छ विमाने देवतापणे उपनाच्चे तेहदेवतानी एकवीस सागरोपम आउखीकच्चो । तेहदेवतानी एकवीसे<sup>१</sup>सार्द्धमासे पखवाडि स्वासीस्वास घणोलि उंचोलि  
 नीचीमूकं तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्र आहारनी अर्थउपजे । कीतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सी<sup>१</sup>वृक्षे वृक्षे मंकास्थे सर्वदुःखनी अतकरीस्थे

सकं चेति पटुविमाननामानोति ॥ २१ ॥ द्वाविंशतितमस्तुथानं प्रसिद्धार्थमेव नवरं सूत्राणि षट्स्थितेरुक्तं तत्र मोगोच्चैर्न निज्जंरार्थं परिषद्भवेति इति परीषद्भाः दिगिच्छति बुभुक्षसैव परीषद्भवेति दिगिच्छापरीषद्भवेति सहनचास्यभर्यादानुल्लघनेन एव मन्यन्नापि १७ या पिपासा लट् २ शीतोष्णोग्रतीति ४ तथा दंशमशकाश्च दंशमशका उभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्त्वामहत्त्वक्षतचैर्पांविशेषो ऽथवा दशोदयनभक्षणाभिलषु तत्रानामशका दंशमशकाः एते च यकामल्लु गमल्लोटकमक्षिकादीना मुपलक्षणमिति ५ तथा चेलानां वस्त्राणां वासगन्धनवीनाऽवदात सुप्रमाणानां सर्वभावाग्रभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसो वि

चिस्संति परिनिवृत्ता इस्संति सल्लुहुक्काणमंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं० ।

दिगंठापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिजपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अण्डपरीसहे

मोक्षजात्ये इति एकवीसभूटाणुसंस्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमी समवाय लिखियेच्छे । बावीस परीसह परिसामस्तूपणे निर्जराने अर्थे सहिवो खमवो ते परीसह कक्षा । ते कहेच्छे । दिगक्षा परीसह दिगक्षाशब्द देशीभाषण क्षुधा तेहनी सहिवो साधुमर्यादानो अनुल्लंघिवो ते दिगंठापरीसह १ । एम पिपासा लपापरीसह २ । शीतठाट तेहनीपरीसह ३ । उष्णतापनीपरीसह ४ । डास मसा तथा जू माकणो परीसह ५ । आंचलवस्त्रनो अभावो परीसह ६ । अरतिमानसी विकारपरीसह ७ । स्त्रीनोपरीसह ८ । चर्यागमादिकनेविपे अनियत विहारनोपरीसह ९ । सोपद्रवस्वाध्यायपरीसह १० । अम

कारः ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिष्वनियतविहारित्वं ९ नैवेधिकीसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमिः १० शय्यामनोज्ञा ऽमनोज्ञवसतिः संस्तोरकोवा ११ आको शोदुर्वचन १२ बधोयष्टादिताडनं १३ याज्याभिन्नतथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १६ दणस्पर्शः संस्तारकाभावे दणेषुशयानस्य १७ जज्ञःशरीरवस्त्रादिभलः १८ सत्कारपुरस्कारौ चवस्त्रादि पूजनाभ्युत्थानादिसंपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्कारेण सम्मानन सत्कारपुरस्कारः १९ ज्ञानंसामान्येनमत्यादि क्वचिदज्ञानभित्तिभूयते ३० दर्शनसम्यग्दर्शनसहनचास्त्याक्रियादिवादिना विवर्जनतः अमणेपिनिश्चलचित्ततयाधारण २१ प्रज्ञास्वयविमर्शपूर्वको वस्तुपरिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादादशागःसचपंचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिका ५ भेदात्तत्रदृष्टिवादस्य द्वितीयप्रस्थाने

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे अक्षोसपरीसहे बहपरीसहे अक्षयणापरीसहे  
अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जलपरीसहे सक्षारपुरक्षारपरीसहे पसापरीसहे अन्नाणबरी  
सहे दंसणपरीसहे दिठिवायरसणंबावीससुत्ताइं लेन्नेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाणीए बावीससुत्ताइं

नोत्र तथामनोज्ञवसती उपाश्रय तथा सथारानो परीसह ११ । अक्रोध वा दुर्वचनपरीसह १२ । वधयष्टादिकं ताडवो तेहनोपरीसह १३ । याचनाभिचानो मांगिवो तेपरीसह १४ । अहारादिकनो अप्राप्ति तेपरीसह १५ । रोगमदवाड तेहनोपरीसह १६ । सथासबधी दणतेनोपरीसह १७ । जल्लशरीर वस्त्रादिकनोभल तेहनो परीसह १८ । सत्कार तेवस्त्रादिकनो पूजाजठो जभोथाइवो तेणेकरी पुरस्कार सम्मान तेनोपरीसह १९ । प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह नोपरीसह २० । ज्ञानसत्तिश्रुत तेनही तेअज्ञानपरीसह २१ । दसणतेसम्यक्ता तेहथकी जेचलवो तेदसणपरीसह २२ । इडिवाद बारमो अंगतेहना पांचभेद

दाविगतिः सूत्राणि तत्र सर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयाद्यर्थस्तवनासूत्राणि छिन्नच्छेदयणा इत्याहति इहयोनयः सर्वच्छिन्नच्छेदनेच्छति मश्निन्नच्छेदनयो यया धम्मोमगल  
 मुक्कभित्वादिज्ञोक्तः सूत्रार्थतः छेदनस्मितो नद्वितीयादिज्ञोक्तानपेच्यते इत्येव यानिसूत्राणि छिन्नच्छेदनयवति न निच्छिन्नच्छेदनयिकानि तानिचस्यसमयायाः  
 जिनमतान्निताया' सूत्राणांपरिपाटिः पद्वतिस्तस्या' स्वसमयमत्रपरिपाठ्याभवन्ति तथाप्यभवतीति तथा मश्निन्नच्छेदयणपियाह ति इहयोनय. सूत्रमच्छिन्नच्छे  
 देनच्छतिसोच्छिन्नच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमगलमुक्कभित्वादिज्ञोक्तो ऽयतोद्वितीयादिज्ञोक्तमापेचमाग इत्येवयान्यच्छेदनयवति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानिता  
 निचाजीविकसूत्रपरिपाठ्या गोयालकमतानुसारिणोऽभिधीयन्ते यस्मात्तेसंवय्यात्मकप्रतिपक्षसूत्रपद्व्यां तथावाभवन्ति अचररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोन्वो

## अतिन्तलेष्णइयाइं अजीवियसुत्तपरिवाणीए वावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरास्सिणसुत्तपरिवाणीए

परिकर्म १ । सूत्र २ । पूर्वगत ३ । प्रथमानुयोग ४ । चूनिक्का ५ । तिहा वीजिभेद दट्टिवाटना वावीसमूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवाद्यको सूत्रकहिंये छिन्नच्छेदनया  
 इतिनयक सूत्रतेछिन्न कहताछेद्याखंख्याछिदेवकरीने तेछिन्नछेदनय कहिये जिमधम्मोसंगलमुक्किइ इत्यादिज्ञोक्त सूत्रार्थयको छेदेवकरीरह्मावीजाज्ञोक्तनी अपे  
 चा वाक्यानकर एहवा जेसूत्र छिन्नछेदनयवत तेछिन्नछेदनयकानि कहिये स्वसमय जिनमत आयितभूत परिपाटी सूत्रपडतिने दिपेहे । वावीसमूत्र अ  
 छिन्नछेदनयकछे नयकहतां सूत्रछेदेवकरी छिन्ननथी खडितनथी तेअछिन्न छेदनय कहिये जिमधम्मोमगल इत्यादिज्ञोक्त अर्थयको वीजाज्ञोक्तनी वाक्याकरी  
 तेवावीससूत्र अछिन्नछेदनयक अजीविक गोसालमत प्रतिवत्तसूत्र परिपाटी सूत्रपडतिनेविपेहे । वावीसमूत्र त्रिकनयवत तेहगोसालकमतानुसारीय

न्यापेक्षमाणानिभवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाच्चिन्त्यन्ते यानिनयद्विकनयिकानौत्युच्यन्ते त्रैराशिकसम्प्रदाया इहत्रैराशिकागो  
शालकमतानुसारिणोऽभिधीयते यस्मात्तत्सर्वव्यालकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवजीवजीवश्चेति तथालोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचितायामपि ते  
त्रिविधनयमिच्छति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिकः एतदेवनयत्रयमाश्रित्य त्रिकनयिकानौत्युक्तमिति तथाचउक्तनइयाइति नयचतुष्का  
भिप्रायात्ते शिष्यतेयानितानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कचैव नैगमनयोद्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राही ससंगृहेतुर्भूतो विशेषग्रा  
हीतुव्यवहारे तदेवसंगृह्यवहार ऋजुसूत्रा. शब्दादित्रयचैकएवेति चत्वारोनयाइति स्वसमयेत्यादि तथैवेतितथा पुद्गलानामग्राहीनांपरिणामोर्धमः पुद्गलप  
रिणामः स च पुद्गलपराध्वयसंप्रचक्ष्णाष्टकभेदादिंशतिधा तथागुरुलघुरगुरुलघुदति भेदद्वयक्षेपाद्वाविशतिः तत्रगुरुलघुद्रव्य भूतियोगामवाद्यादि अगुरुल

बावीससुत्ताइं चउक्ष्णइयाइं समयसुत्तपरिवाणीए बावीसइविहे पोगलपरिणामे प० त० कालवसुप  
रिणामे नीलवसुपरिणामे लोहियवसुपरिणामे हालिद्ववसुपरिणामे सुक्षिप्तवसुपरिणामे सुस्निगंधपरि  
सूत्रपरिपाटीएके । जिम नयचिंतानेविषे त्रिणिराशी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोका  
२ लोकालोक ३ एहवा ३ के । राशीना बावीससूत्रेके । बावीससूत्र चतुष्कनयवतकह्या नैगमनय १ सग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूत्रक २२ सूत्र  
स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेके । बावीसभेदे पुद्गलपरिणाम जेपरमाणवादिक तेहने परिणामधर्म तेपुद्गलपरिणामकह्या तेकहेके । कालव  
र्णकरौ परिणतव्याप्त तेकालवर्णपरिणाम १ । एमजनीलवर्ण परिणाम २ । लोहितरक्तवर्ण परिणाम ३ । हाविपीतवर्णपरिणाम ४ । शुक्लश्वेतवर्णपरिणाम



णामे दुष्प्रिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कटुयसरसपरिणामे त्रिविधैरसपरिणामे मज्जर  
 सपरिणामे कस्करुफासपरिणामे मज्जुफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लज्जफासपरिणामे सीतफासपरिणा  
 मे उसिणफासपरिणामे णिरुफासपरिणामे लुक्कफासपरिणामे अगुरुलज्जफासपरिणामे गुरुलज्जपरिणामे डमो  
 सेण रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं वावीसपलिउवमाइं ठिइं प० ठहीए पुढवीए उक्कोसे  
 णं वावीस सागरोवमाइं ठिइं प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेण वावीसं साम  
 रोवमाइं ठिइं प० अपुसुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाण वावीसपलिउवमाइं ठिइं प० सोहम्भीसाथेसु

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६ । दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७ । तीरोरसे परिणत तेतील्लरस परिणाम ८ । कटुकरस परिणाम ९ । त्रिविधैरस परिणाम १० ।  
 अविन्नरस परिणाम ११ । मधुररस परिणाम १२ । कर्कगस्मर्गकारी परिणतपुद्गल ते कर्कगस्मर्गपरिणाम १३ । गुरुस्मर्ग परिणाम  
 १५ । लघुस्मर्गपरिणाम १६ । ग्रीतस्मर्ग परिणाम १७ । उग्रस्मर्ग परिणाम १८ । सिग्धस्मर्ग परिणाम २० । मगुरुतत्तस्मर्ग परिण  
 तद्रव्य तेस्थिरसिद्धिच्चैत्र घटाकाररहामनुयच्चेन जाहिर जौतिपविमान २१ गुग्गलुग्मर्ग परिणतद्रव्य तेतिर्यगामि जौतिपविमान जाणिपो तथा जाणुया  
 दिक २२ एण्णियेरत्तप्रभापुथिवीनिपि केतलाएकनारत्तीनो वावीसपत्त्योपम आअखो कणी छोटतमापुथिवीयेत्तज्जटो वावीससागरोपम पाउरोकणी जेठेसातम  
 पुथिवीये केतलाएकनारत्तीनो जवन्थो गायीसस गगरोपम गायउखोकाणी प्रसुरकुमारकेतलाएक देवतानो वावीसपत्त्योपम आउगोकाणी रोधर्म रंगानदेवलोके

धुर्यः स्थिरसिद्धदेवघण्टाकारव्यवस्थिता ज्योतिष्कविमानादीनि । तथामहितादीनिषट्विमानानि ॥ २२ ॥ त्रयोविंशतिस्थानक सुगममेवनवरं  
 कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं बावीसं पलिनेवमाइ ठिई प० अमुत्ते कप्पेदेवाणं बावीसंसागरोवमाइं ठिई  
 प० हेद्धिमहेद्धिमगेवेज्जाणां देवाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिअ विसूहिअ  
 विमल पन्नास वणमालं अमुत्तवप्पिसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ता तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं साग  
 रोवमाइ ठिई प० तेणं देवाणं बावीसाएअप्पमासाणं अणमंतिवा ऊससंतिवा नीससतिवा  
 तेसिणं देवाणं बावीसं वाससहस्सेहिं अणहारठेसमुप्पज्जाइ सतेगइया नवसिद्धियाजीकअवीसन्नवगह  
 पेहिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्काणं अतंकरिस्सति ॥ २२ ॥

केतलाएकदेवतानी बावीसपत्थीपम आउखीकद्धी । अचुतबारमेलीकेदेवतानीउत्तकष्टीबावीस सागरोपमआउखीकद्धी नवत्रैवेयकमाहिंसगलाहेठिलीत्रैवेयक  
 एतलेपहिलेत्रैवेयकना देवतानीजघन्य बावीससागरोपम आउखीकद्धी । वारमेदेवलीके जेदेवता महित १ । विश्रुत २ । विमल ३ । प्रभास ४ । वनमाल ५  
 अच्युतावतसक ६ । एहक्कविमाने देवतापणे उपनाच्छे । तेहदेवतानीउत्तकष्टी बावीससागरोपम स्थितिकद्धी । तेहदेवताबावीस अर्द्धमासिपखवाडे स्वासी  
 स्वास घणेली नीचीमूके तेहदेवतानी बावीससहस्सवर्षे आहारनी अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीवजे बावीस भक्ते आंतरे सीभस्ये बूभस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनी  
 अंतकरिस्थे मीचजास्ये ॥ इति बावीसमो ठाणूसम्भत्तम् ॥ २२ ॥ द्विवेतेवीसमोसमवायुलिखिये ॥ तेवीससुव्वत्तांगवीजंअग तेहना अथ

तेवीसंयुगगुज्जयगा प० तं० । समए वेतालिए उवसगपरिखाः ल्यापरिखे नरयावन्नती महावीरथुई  
 कुसीलपरिज्ञासिए विरिए धम्मे समाही भग्गे समोसरिए अहत्ताहिए गये जमईए गाथा पुंठरीए क्किरि  
 याठाणा अाहारपरिखा पच्चस्काणकिरिया अणगारसुय अइइज्ज गालंज्जं जंबूहीवेणंदीवे नारहेवासे  
 इमीरीणं उसप्पिणीए तेवीसाएजिणाणं सूरुगमणमुज्जतति केवलवरनाणदसणेसमुप्पसे जंबूहीवेणंदीवे  
 इमीसेणंउसप्पिणीए तेवीसं तित्यकरा पुब्बज्जे एक्कारसंगिणो होत्या तं० अजितसंजवअग्निणंदणसुमई जाव  
 पासोवठ्ठमाणोय उसन्नेणं अरहा कोसलिए चोइसपुष्ठी होत्या जंबूहीवेणंदीवे इमीसे उसप्पिणीए तेवीसं

यनकब्बा तेकडेहे । समय १ । वैतानिक २ । उपसंगपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ । नरकविभक्ति ५ महावीरस्मृति ६ । कुगीलेरिम्मापा ७ । वीर्याध्ययन ८  
 धर्माध्ययन ९ । समाधिनाम १० । मतनाम ११ । समोसरण १२ । यायातथ्यमान १३ । अयनाम १४ । जमन १५ । गाथा १६ । ऐहसेलि अध्ययन प्रथम  
 चुतस्संधि बीजिचुतस्संधि सात अध्ययनछे तेकडेहे । पुडरीक १७ । क्रियाठाणी १८ । आहारपरिज्ञा १९ । प्रत्याख्यानक्रिया २० । अणगारचुत २१ । आर्डिगु  
 मार २२ । नालदीनी २३ । जंबूहीपनेविषे भरतवेचने विषेणी अन्नसर्पिणीने । आदिनायककीमांडि पार्श्वनायलगे तेवीस जिनने तीर्थकरने स्वर्गेनेउदय सुद्धते  
 एतले प्रभाति केवलवर प्रधानज्ञान दर्शन उपनीज्जानतेविगेषावबोध गाथाचात्र तेवीसाणनाणा उप्पन्नजिणवराणपुब्बज्जे । वी  
 रस्सपच्छिमहा पमाणपत्ताइचरिमरइ ॥ १ ॥ जंबूहीप नामदीप इण अवसर्पिणीये आदिनायविना वीजावेवीसतीर्थकर पद्धिनेभवे एकादगांगीहुया इय्यारअ

तित्यंकरा पुष्टे मंरुलिरायाणो होत्या तं० अजितसंजव अजिणंदण जावपासोवठ्ठमाणेय उसंजेणं अरहा  
 कीसल्लिए पुष्टन्नवे चक्खवही होत्या इमीसेणं रयणप्पज्जाए पुठवीए अत्येगइयाण नेरइयाण तेवीस सागरो  
 वमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुठवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं तेवीस सागरोवमाइं ठिई प० असुर  
 कुमारणं देवाणं अत्येगइयाण तेवीसं पल्लिवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्येगइयाणं तेवी  
 स पल्लिवमाइं ठिई प० हेठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्तेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे  
 देवा हेठिमहेठिमगेवेज्जायविभाणंसु देवत्ताए उववन्ता तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं

गनापारगामीहुया । तेकहेछे । अजित १ । सभव २ । अभिनदन ३ । सुमति ४ । जावत्थब्दं पार्श्वनाथ केहडे वईमानस्वामीलगे नट्ठभननाथआदिरिहन्त को  
 शलदेशना जपना पहिलेभवे वज्जनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया । जंबूद्वीपे भरतक्षेत्र एणी अवसरपिणीये नेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मडलीक राजाहुया ते  
 कहेंछे । अजितनाथ सभव अभिनदन यावत् वईमानस्वामीलगे नट्ठभ अरिहत कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्जनाभचक्रवर्तिहुया । एणीये रत्नप्रभा  
 पृथिवीये केतलाएक नारकीनीतेवीस पत्थोपम आउखीकह्यो । हेठिसातमी पृथिवीये केतलाएक नारकीनी तेवीस सागरोपम आउखीकह्यो । असुरकुमारदेव  
 तानी केतलाएकनी तेवीस पत्थोपम आउखीकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानी तेवीस पत्थोपम आउखीकह्यो । हेठिममध्यम शैवेयके एत  
 ले बीजे शैवेयके देवतानी जवन्त्यतिवीससागरोपम आउखीकह्यो जेदेवता हेठिम शैवेयके पहिले शैवेयके विरूपाक्षि देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानी उल्क

चत्वारिंशत्त्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तत्र सूत्रकृतांगस्य प्रथमेऽनुतस्त्वधेपोऽङ्गोऽध्ययनानि द्वितीयेऽसप्ततेपांचान्वथस्तदधिगमाधिगम्यइति ॥ २३ ॥ च  
 तुर्विंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेः प्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामविकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउत्ति जवूहीपलङ्गणहृत्तक्षेत्रस्य  
 ठिई प० तेषां देवा तेवीसाए अरुमासाणं अणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं दे  
 वाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुपपज्जइ संतेगइया नवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए नवगगहणे  
 हिं सिज्जिस्सति बुज्जिस्सति मुच्चिस्सति परिनिवाइस्सति सव्वदुस्काण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥  
 चउह्वीस देवाहि देवा प० त० । उसअ अजित सज्जव अजिनदण सुमइ पउमप्पह सुपास नंदप्पह सुवि  
 धि सीअल सिज्जांस वासपूजा विमल णंत धम्म सति कुंथु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नेमो पास वरुमाण  
 हो तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेवीसे पखवाहे खासोखासादिक बोलकरे जचोले नीचोमंके तेहदेवताने तेवीसवर्ध सहस्से आहारनी बो  
 छाउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेववीसभवने आतरे सीमस्से वूमस्से मंकास्से सर्वदुःखनी अंतकरिस्से मोचजास्से ॥ इति तेवीसमो समवाय मम्यत्तम्  
 ॥ २३ ॥ हिंवे चोवीसमो समवाय लिखियेक्के । चोवीस देवाधिदेव देवइद्रादिक तेमांहि अधिकदेव पूज्यपणायकीते देवाधिदेवकह्या तेकहंके ऋषभ १  
 अजित २ । संभय ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपर्ख ७ । चद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । अयास ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३  
 अनत १४ । धर्म १५ । शान्ति १६ । कुथनाथ १७ । अरनाथ १८ । मक्षिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । पाखनाथ २२ । पार्खमान २३ ।

वर्षाणां वर्षधराणां ऋद्विंसीमाजीवीष्यते आरीपितज्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोश्चलषुहिमयच्छिखरिसत्कयोः प्रमाणं २४ ८ ३२ । अष्टत्रिंशद्भागश्चयोजनस्य किं  
विदिशे शक्तिः अत्रगाथा चउशोससहस्राद् नवयसएजोयणाणबत्तोसे चुल्लहिमवतजीवा आयामेणकलद्धंवत्ति ॥ १ ॥ कलार्द्धमिति एकोनविंशतिभागस्यार्द्धं  
तच्चाष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिदेवस्थानानि देवभेदा दशभवनपतीनां अष्टौ व्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्कानां एककल्पोपपन्न वैमानिकानां एवचतुर्विंशतिः  
सैद्राणिचमेरूदाधिष्ठितानि शेषाणिच ग्रैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्रयेषुतान्यहमिन्द्राणि प्रत्यात्मैन्द्रकाणीत्यर्थः अतएव अनिद्राणि अवि  
द्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशान्तिकर्मकारौणि उपलक्षणत्वात्पुरुंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानौति तथाउत्तरायणगतः सर्वाभ्यतरमण्डल  
प्रविष्टः सूर्यः कर्मसक्रातिदिनइत्यर्थः चतुर्विंशत्यगुलिकांपौरुष्या प्रहरंभवाच्छाया पौरुषीया तांक्षायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगस्यतु निर्बल्यकृत्वा शंवाक्यालका

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपह्नुयाणं जीवानु चउद्यीसं चउद्यीसं जोयणसहरसाइं णववत्तीसे जोयणस  
ए एगं अष्टतीसइन्नागंजोयणसस किंचिविसेसाहिअ्याउ अ्यायामेणं प० चउवीसंदेवछाणासइदिया प० से

२४ १ मेरुथकी तीनपर्वत दक्षिणदिसेछे तेमांहि छेहल्यो लघुहिमवत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेहल्योशिखरिए त्रिहूर्वर्षधरपर्वतनी जीवाचेचनी अने  
वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४८३२ योजन नवसे बत्तीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अष्टीया ३८ थाय एहवी अर्द्धकला कार्दक  
विशेषाधिक लाभपणकही । चौबीस देवनास्थानक देवतानाभेद भवनपति १० व्यन्तर २७ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सैद्र

रेनिवर्त्तते सर्वोत्थन्तरमंडलात्द्वितीयमण्डलमागच्छति आह च आसाढमासदुपयेत्यादि पवहइति यतः स्थानान्नदो विवहति वोढुप्रवर्त्तते सचपद्मद्भृतात्तीरेणेन

साञ्जहमिंदा अणुरोहिण्या उत्तरायणगतेणसूरिणु चउवीसंगुलिणु पोरिसीलायणिञ्चत्तइत्ताणं णिञ्जुहति गंगा  
सिंधूनुणं महाणदीनुपवाहे सातिरेणेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० रत्ता रत्तवती नुणंमहाणदीनु पवाहे  
सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाणु पुढवीणु अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं  
पलिनुवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाणु पुढवीणु अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प०  
अणुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइया

क इन्द्रसहितकह्या । शेषथाकता नव श्रैवेयक पांचअनुत्तरना देवता अहमिद्र सेवक स्वामीनीभावनह्यौ । उत्तरायणगत सूयडुए एतलेनिषधने माथे स  
वर्षाभ्यन्तरमांडले कर्कसक्रांतिदिने सूर्य चौबीस अगुले हस्तप्रमाणे त्रणनीछाया एपौरुषीछाया प्रहरदिवसनी छाया प्रतिनिवर्त्तावीने निवर्त्तरहे । आसाढे  
सि दुपयाइति वचनात् । गंगार्पूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी । प्रवहे तीजेस्थानकथकी पद्मद्रह्यकी निकली तेप्रवाहनेविषे साति  
रेकभाभेरी चौबीसकोस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो भाभेरापणाथकी २५ कोसहुई । रत्तारत्तवती ऐरवतत्तेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुडरीकद्रहने  
विषे सातिरेक भाभेरी २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो भाभेरापणाथकी २५ कोस । एणीएरलप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी चौबीसपल्योपम  
आउखीकह्यो । हेठीए सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनी चौबीस सागरीपम आउखीकह्यो । असुरकुमार देवनी केतलाएकनी चौबीस पल्योपम आउखी

निर्गमइहसंभायते नपुनर्यद्वत्यत्रप्रवह्यब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुडे निर्गमोवाविदसाचितसूत्रंहि जंजूहीपप्रज्ञस्थामिह चतुर्विंशतिक्रीसप्रमाणा ॥

णं चउवीसं पलिनुवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा हेठिममज्जिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ता तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोव माइं ठिई प० तेण देवा चउवीसाए अण्ठमासाण अणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसि णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहि अ्याहारठेसमुप्पज्जई संतेगइया न्नवासिष्ठियाजीवा जे चउबीसाए न्नव गगहणेहिं सिज्जिरसति बुज्जिरसति मुच्चिरसंति परिनिव्वाइरसति सव्वदुस्काण मंतकरिरसंति ॥ २४ ॥ पुरिमपच्छिमगाणं तित्यकराणं पचजामस्सपणवीस नावणानु प० तं० इरिअ्यासमिइं मणगुत्ती वयगुत्ती अ्या

कह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनी चौवीस पत्योपम आउखीकह्यो । हेठिम उपरिम ग्रैवेयक तेवीजं ग्रैवेयक तिहांना देवतानी जघन्यो चौ वीस सागरीपम आउखीकह्यो । जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाळे तेहदेवनी उल्कृष्टा चौवीस सागरीपम आउखीकह्यो । तेहदेवता चौवीस पखवाडे स्वासीखासादिक चारिबीलकरे तेहदेवताने चउबीसवर्ष सहस्त्रे आहारनी अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेचौवीस भवने आंतरे सीभ स्ये बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनी अंतकरस्ये मोच्चजास्ये ॥ इति चौवीसमी समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिंवे पचीसमी समवाय लिखियेछे । प हिला श्रीआदिनाथनेवारि केहल्या महावीर तीर्थकरनेवारि यतीना पंचमहोव्रतनी पचवीस भावनाकह्यो महाब्रह्माखिवाना उपाय तिहां पहिला महा



॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपि सुबोधनवरमिह स्थिते र्वाग्नवसूत्राणि तत्र पञ्चजामसूति पञ्चानां यामाना महद्भ्रतानां समाहारस्तत्त्वं च यामंतस्य भावणा  
 श्रुति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसरक्षणाय भाव्यन्ते इति भावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपचेति तत्रैर्यासमित्याद्याः पञ्च प्रथमस्य महाव्रतस्य तत्रा  
 लोकभाजनभोजन आलोकनपूर्वभाजनपात्रभोजन भक्तादेरस्थवहरण अनालोक्यभाजनभोजने हि प्राणिहिंसा सम्भवतीति तथानुविचित्रभाषणतादिका द्विती  
 यस्तत्रक्रोधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिका स्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्र चानुज्ञाते सीमापरिज्ञान ज्ञातायाचसीमायास्वयमेव उग्राह  
 मिति अवग्रहस्यानुग्रहणता पञ्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः ३ साधर्मिकाणां गौतार्थसमुदायविहारिणां सविगानामवग्रहो मासादिकालमानतः पंचक्रो

लोक्यन्नायन्नोयणं द्यादाणन्नं रुमत्तानि रक्तेवणासमिदं ५ द्युणुं इति ज्ञासण्या कोहविवेगे लोकविवेगे नयत्रि  
 वेगे हासविवेगे ५ उग्राहद्व्युणुणवता उग्राहसीमं जाणया सयमेव उग्राहद्व्युणुणैरुहण्या सुहस्मि य उग्राहद्व्यु

व्रतनी पांचभावनाकही तेकहेछे । इर्यासमितीये मागे जीईचालवी एहप्राणातिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानी उपाय १ । एमसगलेकहेछे  
 मनीगुप्ति २ । वचनगुप्ति ३ । आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवी ४ । आदानलेवी भांडकहतां पात्रादिकनी निक्षेप मंकवी तिहां समिति पूंजीकरी पछे  
 लेवी मूकिवी ५ । हिवे बीजा महाव्रतनी भावना पांच विचारी बीलवी १ । क्रोधनी त्यागकांडिवी २ । लोभनी त्याग ३ । भयनी त्याग ४ । हासनी छाडिवी  
 ५ । हिवे बीजा महाव्रतनी भावना पाच । गृहस्थने ओटलादिके रहिवानी अर्थ अवग्रह आज्ञानी जणावणी १ । अवग्रहग्रहस्थदीधितके सीमामर्यादानी ज  
 णावणी २ । सीमाजाणथेके स्वयमेवपोतेज अवग्रहनी अनुग्राहकता अंगीकारकिवी रहिवी ३ । साधर्मिक अनैरा यतीने अवग्रहमागिएं तथा उपायने

शादिज्ञेयरूपः साधर्मिकावगृहस्ततीनचानुज्ञाप्यतस्यैव परिभोजनवतांस्थान साधर्मिकाणा ज्ञेयवसतौवा तैरनुज्ञातएववास्तव्यमितिभावः ४ साधारणसामान्य यज्ञक्तादितदनुज्ञाप्याचार्यादिकं तस्यपरिभोजनचेति ५ ॥ तथास्यादिसप्तशयनादिवर्जनादिकाश्चतुर्थस्य प्रणीताहारोतिस्नेहवानिति । तथाश्रोत्रेन्द्रियरागीपरत्यादिका पंचमस्य अयमभिप्रायोयीयत्रसजनितस्य तत्परिगृहेवतरति ततश्चशब्दादौरागकुर्वता तेषरिगृहीताभवंतीति परिगृहविरतिर्विराविता

णुस्सवियपरिभुंजणया साहारणन्नत्तपाणं झुणुस्सवियपफिभुंजणया ५ इत्थीपसुपफुगसंसत्तगसयणासणवज्जाणया इत्थीकहविवज्जाणया इत्थीणंइंदियाणमालीयणवज्जाणया पुत्तरत्तपुस्सकीलियाणंझुणुस्ससरणया पणीताहारविवज्जाणया ५ सोइंदियरागोवरइ चरिंकिंदियरागोवरइ घाणिंदियरागोवरइ जिप्पिंदियरांगोवरइ

विषे तेहीज साधर्मिकयतीने अनुज्ञाप्य जणावीने परिभोजनवारहिवी ४ । साधारण सहने समुदाये भातपाणी विहस्सीहीय तेह आचार्यादिकने अनुज्ञाप्य जाणवीने भोजनता जिमिवी ५ । हिवे चौथावतनी भावना ५ रत्ती पशु पडकनएसके समत्तव्याप्त शय्यासननी वर्जिवी १ । रत्तीसाथे कथानी वर्जिवी १ । रत्तीनाइन्द्रियनी मुखकुचादिकनी आलोकन जीइवी तेहनीवर्जिवी ३ । पूर्वगृहस्थपणे संभोगे क्रीडाकीधीइइ तेहनी अनसभारवी ४ । प्रणीत आहार घृतदुग्धादिके अति सरस आहारनी वर्जिवी ५ । हिवे पाचमा महाव्रतनी पाचभावना ॥ श्रोत्रेन्द्रिय राग मधुरगीतादिक कर्णनी विषय तेह उपरि राग तेहनी उपरति छाडवी १ । चक्षुरिन्द्रियराग २ । घ्राणेन्द्रियराग ३ । जिह्वेन्द्रियराग ४ । स्पर्शेन्द्रियराग ५ । स्पर्शेन्द्रियराग ५ । जेह

फासिदियरागोवरई ५ मल्लीणञ्चरहापणवीसंधणुउहुंउच्चतेणहोत्या सव्वेविदीहवेयहुंअपणवीसंजोयणाणि  
 उहुंउच्चत्तेणं प० पणवीसंगाऊण्याणिउच्चिद्वेणं प० दोच्चाएणं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहरसा प०  
 आयायरस्सनंनगवने सच्चूलिञ्चायस्स पणवीसं अण्जयणा प० तं० सत्यपरिस्सा लोगविजने सीनुसणीअ  
 सम्मत्तं । आवांति धुय विमोह उवहाणसुयं महपरिस्सा ॥ १ ॥ पिंसेण सिज्जिरिअ आसज्जयणायवत्य पए

परिगृहने भोगवीए तेपरिगृह मांहिलेखवीये ५ मत्तिनाथ उगणीसमा तीर्थकर अरिहंत पंचवीसधनुष जञ्चाजंचपणेहुया । सघलाइ दीर्घवेताब्ब जंबूद्वीप  
 मांहिल्या ३४ धातकौ खडना ईद पुष्करार्द्धभाग ईद एवं १७० दीर्घवेताब्बपर्वत पंचवीस योजन जंचोजचपणेकह्यो । पचवीस पंधवीसगाज जंडपणे भू  
 मिर्माहि कह्या । बीजी नरक पृथिवीये पचवीस शतसहस्र एतले पचवीसलाख नरकावासाकह्या । आचारांगना प्रथम पूज्यना पांचचूलिकासहितना पच  
 वीस अध्ययनकह्या तेकहेछे । शास्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । श्रौतीणीय ३ । सम्युक्त ४ । आवंती ५ । मतांतरेलोकसार । धूताध्ययन ६ । विमोचाध्यय  
 न ७ । उपधानश्रुत ८ । महापरिज्ञा ९ । पिडिषणाध्ययन १० । सिज्जा ११ । ईर्या १२ । भाषाध्ययन १३ । वस्त्रेधणा १४ । पात्रेधणा १५ । अलगूह प्रतिमा  
 १६ । सातासातक्रिया एवं २३ भावनाध्ययन २४ विमुक्तिनाम २५ बीजा श्रुतस्कंधना अध्ययन १६ उद्देशा २५ चारचूलिकामांहि अंतर्भव्याछे अनेपांचमानी

भवत्यन्यथावारीधितेतिवाचनांतरं प्रावण्यकानुसारेणदृश्यंते तथाभिथ्यादृष्टिरेव तिर्यगत्या संक्षिप्तपरिणामद्व्युक्तमयमपि द्वौद्रियाद्यपर्याप्तादिकाः कार्यप्रकृ-  
तीर्विधातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिगृहणं विकलेन्द्रियोद्विचित्रिन्द्रियाणामन्यतमः समित्यलंकारे पर्याप्तोन्त्याप्रपिवध्नातीत्यप-  
र्याप्तगृहणमपर्याप्तकण्वहोतां अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावधातिसोष्येताः संक्षिप्तपरिणामोवधातीति संक्षिप्तपरिणामद्व्युक्त मयमपि द्वौद्रियाद्यपर्याप्त

सा उगग्रहपङ्क्तिमा सत्तिकसत्तया ज्ञावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्जयणंपणवीसइमं मिच्छादिष्ठिविगलिंदिदु

सीथ चूलिकानो प्रविकारनथी परचूलिकाकही सूयमांहि तेमाटे इहानिसीथपदं गुण्याख्य विमुक्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकोसहिह पचवीसनो जाणिवो  
आचारगो बीजोश्रुतस्कधच्छे तेमांहि पहिलेश्रुतस्कधे नवअध्ययन तेमांहि नवमोअध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देशा १६ तेहदेवर्द्धिगणि सीमायम  
णं धिच्छे दीपल्योपूण्याये आठअध्ययन उगरा तेहना उद्देशा ४४ छे एकावनमे ठाणेनिख्याच्छे । हिवे बीजो श्रुतस्कधे अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामांहि  
अतर्भव्याच्छेतो पहिला श्रुतस्कधना नवअध्ययन बीजो श्रुतस्कधे अध्ययन १६ एवं पचवीस अध्ययनकक्षा । अने पहिला श्रुतस्कधना ८ अध्ययनना उद्देशा  
६० बीजा श्रुतस्कधना उद्देशा २५ सर्वमिली ८५ उद्देशायया । हिवे बीजो श्रुतस्कधे १६ अध्ययनछे तेमाहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपछे  
प्रागत्या ७ अध्ययन एकसरां बीजो चूलिकारूप पनरमू गध्ययन बीजो चूलिकारूप सोलमूं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पांचमा निशीथाध्ययननो इहो अ  
धिकारनथी । मिथादृष्टि । विकलेन्द्रिय वेदन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय अपर्याप्तयका संक्षिप्तपरिणामे महाभंडो अध्यवसाये उपाज्योर्कर्म तेहनी पचवीस उत्तर  
प्रकृतिबांधे तेकहछे । तिर्यचगति नामकर्म १ । विकलेन्द्रिय जातिनाम २ । औदारिक शरीरनाम ३ । तैजस शरीरनाम ४ । कामण शरीरनाम ५ । हुडक

कामायोग्यवध्नाति तत्रविगलित्दियजायनामिति कदाचित् द्वीद्रियजात्यासह पंचविंशतिः कदाचित् द्वीद्रियजात्या एवमितरेषापीति । गंगेत्यादि पंचविंशतिगं व्यूतानि पृथुर्वेतनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहश्रीति द्वयोर्दिशोः पूर्वतो गंगा अपरतः सिंधुरित्यर्थः पद्मद्वद्विनिर्गते पच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वाद्वि

णं उपजत्तएणं संकिलिष्ठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगणीनुणिवंधति तिरियगतिनामं विगलित्दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअणसरीरनामं कम्मणसरीरनामं ऊळगसठाणनामं उरालियसरीरंगोवंगनामं ठेवठसघयणनामं वस्सनामं गधनामं रसनाम फासनामं तिरियाणुपुत्तिनामं अणुरुलुक्कनामं उवघायनामं तसनाम बादरनाम उपजत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनाम असुन्ननाम दुन्नगनाम अणादेज्जनामं अणजसोक्तिनामं निम्माणनाम २५ गंगासिंधूनुणंमहाणदीनुपणवीसगाऊयाणि पोहत्तेष्वधरुसुहपवित्तिणु

सस्थाननाम ६ । औदात्तिक शरीरना अगोधाग ७ । केवडसघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यचनी आनुपूर्वी १३ । अणुरु लघुनाम १४ । उपवातनाम १५ । वसनाम १६ । बादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम २१ । दौर्भाग्यनाम २२ । अनर्देयनाम २३ । अजस अकौर्तिनाम २४ । निर्माणनामकमं २५ । गंगासिंधूनुपचवीस पचवीस गाजनेप्रवाहे पिडुलपणे पद्मद्रहयकी निकली पांचसय योजन हिमवंतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशे प्रवर्तो घडसुहपवित्तिण घडानामुखनीपरी पचवीसकोस पिडुलीजीभीये मगर मुखप्रणालीये मुक्तावलोहारसठाणे सस्थितप्रपात सययोजनीच्च हिमवंतपर्वतथकी हठीउतरी गंगानदी गगाप्रपात कुडमां पडेक्के सिंधुनदी सिंधुप्रपाते पडे

शाभिमुखेप्रवृत्ते घडमहपवित्तिएणंति घटमुखोदिव पचविंशतिक्राशे पृथुलजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्ते नमुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं  
स्थितेन प्रपतब्जलसतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽधोवर्त्तिनोः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयोः प्रपततः एवंरक्तारक्तवलयौ नवरशिखरिवर्धरोपरि प्रतिष्ठित

णं मुत्तावल्लिहारसंछिण्णंपवातेणपळ्ळति रत्तारत्तवईनेणं महाणद्धीनेपणवीसंगाऊयाणिपोहत्तेणं मकरमुहपवि  
 त्तिण्णं मुत्तावल्लिहारसंछिण्णंपवातेणपळ्ळति लोगविदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० इमीसेण रयणप्प  
 न्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीस पल्लिवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइया  
 णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण पणवीसं पल्लिवमाइं  
 ठिई प० सोहम्मसीसाणेण देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पल्लिवमाइं ठिई प० सज्जिमहेठिमगेवज्जाणं द

छे । रक्ता रक्तवती ऐरवतक्षेत्र सबधिनी महानदी पचवीसगाऊ पिङ्गुलपणे पुढरीकद्रह्यकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पाचसय योजन चालीनि मगरसु खप्रणालीयें मुक्ताहारसंठाणप्रपातकरि हेठौछतरौछे रक्ता रक्तकुडमाहि पडछे । लोकविदुसार चौदमा पूर्वना पचवीसव सुअधिकार विधिशकह्या । एण्ये रत्नप्रभा पृथिवीनिविषे केतलाएक नारकीनी पचवीस पल्योपम आजखीकह्यो । हेठियें सातमी पृथिवीयें केतलाएकनो २५ सागरीपम आजखीकह्यो । असुर कुमार देवतानी केतलाएकनो २५ पल्योपम आजखीकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनी २५ पल्योपम आजखीकह्यो । मध्यम हेठिम ग्रैवेयके एतले ज्वेग्येवैयक विमाने देवतानी जघन्य २५ सागरीपम आजखीकह्यो । जुडेवता हेठिम उपरिम ग्रैवेयके चौ

पुंडरीकहृदाग्रपततइति तथा लोकि बिन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥

॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमिव नवरं उद्देशनकालाय त्र्युतस्कन्धेऽध्ययने च याव

वाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिइं प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते  
सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिइं प० तेणदेवा पणवीसाए उरुमासेहिं ज्ञाणमंतिवा पाण  
मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहरसेहिं ज्ञाहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया न  
वसिष्ठियाजीवा जेपणवीसाए नवगगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु  
ख्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ लब्धीसंदसकप्पववहाराणं उद्देशणकाला प० तं० १ दसदसाणं

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाच्छे तेहदेवतानो उल्कीष्टा २५ सागरोपम आउखीकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडि खासीखास घणोलिजं चेलि नीचीमंके  
तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्रे आहारानो अर्थउपज्जि । केकेतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवने आंतरे सीमस्ये बूमस्ये मंकास्ये संसारना परितापथकी ठाढाथा  
स्ये सर्वदुःखनो अतकरिस्स्ये इति पंचवीसमी ठाणो सम्यत्तम् ॥ २५ ॥

नकाल जेह सुतस्कंधे जेतला अध्ययनइया तेतला उद्देशनकाल अवसरकह्या तेकहेछे । दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना

त्वकप्यस्स दसववहारस्स अन्नवसिद्धियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स त्वहीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं०  
 मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हास अरति रति भयं सोगं दुगंठा इमी  
 सेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं त्वहीसपल्लिनुवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अ  
 त्येगइयाणं नेरइयाणं त्वहीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं त्वहीसपल्लिनुव  
 माइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं त्वहीसपल्लिनुवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्जा  
 याणं देवाणं जहन्तेणं त्वहीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेठिम गेवेज्जायविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देशन कालथया । जेहने अनादि अनत अभव्यपणी सिद्धिनिष्पन्नहे ते अभव्यसिद्ध कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चौथो तेहनीमूल २८ प्र  
 कतिहे तेमाहि अभव्यजीवने त्रिपुजी करणतो आवरे छवीसकर्मना अंशकर्मनी प्रकति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेहे । मिथ्यात्व मोहनीय १ अनेसीले कषाय  
 अनतानुबधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानो ४ प्रत्याख्यानो ४ सज्जलन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्यात्व मोहनी भेलतां १७ । प्रकृति  
 स्वीवेद १८ । पुरुषवेद १९ । नपुंसकवेद २० । हास २१ । अरति २२ । रति २३ भय । २४ । शोक २५ । दुगच्छा २६ । एणीयिरत्तप्रभा पृथिवीयें केतलाएक  
 नारकीनी छब्बीस पत्थीपम आउखीकह्यो । हेठोयें सातमीपृथिवीयें केतलाएक नारकीनी २६ सागरीपम आउखीकह्यो । असु रकुमारकेतलाएक देवतानी  
 २६ पत्थीपम आउखीकह्यो । सौधर्म ईशानें केतलाएक देवनी २६ पत्थीपम आउखीकह्यो । मध्यम २ यैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयके देवतानी जघन्य २६



स्थध्ययमान्युद्देशकावा तत्रतावंतएवउद्देशनकाली उद्देशवसराःश्रुतीपचाररूपाइति । तथा अभव्यानां त्रिपुंजीकरणाभावेन सम्यक्तमिच्छरूपं प्रकृतिद्वयं सत्ता  
यांनभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्मशाभवतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिस्थानकमपिव्यक्तमेव केवलं षट्सूत्राणि स्थिते रवाक् तत्र अनगाराणां साधूनां  
गुणाश्चार्चविशेषाः अनगारगुणाः तत्रमहाव्रतानि पचेद्रियनिगृहाश्चर्यं च क्रोधादिविवेकाच्चत्वारः सत्यानिचौणि तत्रभावसत्यं शुद्धांतरात्मना करणसत्यं यत्र

तेसिणं देवाणं उक्तीसेणं ब्रह्मीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा ब्रह्मीसाए अष्टमासेहिं अणमंतिवा  
पाणमंतिवा ऊससतिवा नीससतिवा तेसिण देवाणं ब्रह्मीसंवाससहस्सेहिं अाहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया  
न्रवसिद्धिया जीवा जेब्रह्मीसेहिं न्रवग्गहणेहि सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिब्बाइस्संति सव्वदु  
स्काण मत्तंकरिस्संति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं० । पाणाइवाअानु वेरमणं

मुसावायानु वेरमणं अदिन्नादाणानु वेरमणं मेज्जणानु वेरमणं परिग्गहानु वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चरिक्किं

सागरोपम आउखीकह्यो । जेदेवता मध्यम इंदिम एतले चउये ग्रैवेयक विमाने देवतापुणे उपनाक्के तेहदेवतानी उक्कथी २६ सागरोपम आउखीकह्यो । ते  
हेदेवता कब्बीसे पखवाडे स्वासीस्वास घणोले जचोले नीचोमेले तेहदेवताने २६ वर्षं सहसे आहारनी अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीवजे २६ भवने आतरे  
सीभस्ये बूभस्ये मूकास्ये ससारदुःखनी अतकरस्ये मीचजास्ये इति कब्बीसमी समवाय पूरोथयो ॥ २६ ॥ हिवे सत्तावीसमी समवाय लिखेक्के  
सत्तावीस अणगोरना साधूना चार्चित्र विधिषरूपगुणकच्चा तेकहेक्के । प्राणातिपातनी विरमण १ । मृषावादनी विरमण २ । अदत्तादाननी विरमण ३ ।

तिलेखनादिक्रियां यथोक्तसम्यगुपयुक्तः कुरुते योगसंख्ययोगानां मनः प्रभृतीनामवितथत्व १७ क्षमाऽनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसंज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभावः अथवाक्रोधमानयोरुदयनिरोधः क्रोधमानविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोर्निरोधः प्रागेवाभिहित इति न पुनरुक्ततापीति १८ विरागता अभिष्वगमात्रस्य भावः अथवा माया लोभयोरेन्दुयो माया लोभविवेकशब्दाभ्यांवूदयप्राप्तयोस्तयोर्निरोधः प्रागभिहित इतीहापि पुनरुक्ततेति १९ मनीषाकायानां समाहरण तापाठांतरतः समत्वाहरणता अकुशलानां निरोधाश्चयः २२ ज्ञानादिसंपन्नतास्तिष्ठः २१ वेदनातिमहतापीताद्यतिसहनं २६ मारणांतिकातिसहनता क

दियनिगहहे घ्राणिंदियनिगहहे जिज्ञिंदियनिगहहे फासिंदियनिगहहे कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लो  
भविवेगे ज्ञावसच्चे करणसच्चे जागसच्चे स्वमाविरागया मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया  
नाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेयणञ्णहियासणया मारणंतियञ्णहियासणया जंबूहीवेदीवेञ्जि

मैथुननो विरमण ४ । परिग्रहनी विरमण ५ । अत्रिंदियनिग्रह ६ । चक्षुरिंदिय निग्रह ७ । प्राणैंदिय निग्रह ८ । रसनंदिय निग्रह ९ । स्पर्शनैंदिय निग्रह १०  
क्रोधनी विवेकत्याग ११ । मान विवेक १२ । माया विवेक १३ । लोभ विवेक १४ । भावसत्य शुद्धआत्मा राखिवी १५ । करणसत्यइन्द्रिय निरोधप्रतिलेखनादि  
क क्रियानिविधे सावधानपणे प्रवर्तिवो १६ । योगसत्य मनःप्रभृतियोगचिक कुशलतानुष्ठाने प्रवर्तिवो १७ । खमा क्रोधनोमाननो उदयनिरोध १८ । विराग  
ता केहसाथेप्रसगनही १९ । मननी समाहरणता अकुशल व्यापारयकी रुधिवी २० एम वचन समाहरणता २१ । काय समाहरणता २२ । ज्ञानकरी स  
म्यन्नता सहितपणी २३ । एम दसण सम्यक्तसंपन्नता २४ । चारित्र संपन्नता २५ । वेदना अधिसहनता सातादिकनी सहिवी २६ । मारणांतिका अधिसहन

स्थानमित्रबुद्धामारणांतिकोपसर्गसहनमिति २७ तथा जंबूद्वीपेनधातकीखण्डादौ अभिजिह्वर्जे. सप्तविशत्यानचत्रैर्व्यवहारः प्रवर्तते अभिजिह्वचत्रस्योत्तराषाढचतुर्थपादनुप्रवेशनादिति । तथाभासीनचत्रचन्द्राभिवर्द्धित ऋत्वादित्यमासभेदा त्यचविधान्योक्तनचत्रमासः चंद्रस्यनचत्रमण्डलभोगकाललक्षणः सप्तविंशतिरात्रिदिवानि अहोरात्राणीति रात्रिदिवान्नेत्यहोरात्रपरिमाणपेक्षयेदंपरिमाणं नतुसर्वथातस्याधिकतरत्वादाधिक्यवाहीरात्रसप्तषष्ठिभागानामेकविंशत्येति । विमाणपुढवित्ति विमानानापृथिवीभूमिका । तथावेदकसम्यक्त बंधाः क्षायोपश्रमिकसम्यक्त्वाहेतुभूतशुद्धलिकपुजरूपा दर्शनमोहनीयप्रकृतिसत्त्व

इवज्जोहिं सत्तावीसाणखक्खोहिं संववहारेवहति एगमेगणंणखक्खमासे सत्तावीसाहिराइदियाहिं राइंदियग्गे  
णं प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं वाहल्लेणं प० वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स

ता मारणांतिकोपसर्गनी सहिवी २७ साधुगुण । जंबूद्वीपनेविषे अभिजिह्वचत्र तेउत्तराषाढाना चौथापायामाहि पइठोछे तेमांटे अभौचिनचत्र वर्जनीं अश्विनी प्रमुख सत्तावीस नचत्रेकरौ व्यवहार प्रवर्तेछे । नचत्रमास १ । चंद्रमास २ । अभिवर्द्धितमास ३ । ऋतुमास ४ । आदित्यमास ५ । एवं पांचमासछे तेमाहि एके' नचत्रमासे सत्तावीस रात्रिदिवस एतले सत्तावीस अहोरात्रि । रात्रिदिवान्ने सत्तावीस अहोरात्रि प्रमाणे पूरीथाय । सौधर्मे ईशान देवलोकि विमाननी पृथिवी सत्तावीस योजनसय बाहुल्यपणे जाडपणेकही सत्तावीससया इपुढवी पिडोइति वचनात्कह्या । वेदकसम्यक्त बंध तेचायोपश्रमिक सम्यक्तनी कारणभूत शुद्धलिक रूप दर्शनमोहनीय प्रकृतिछे तेहनी उवरोति बियोजक वेगलानी करणहार तेहने मोहनीय कर्मनी प्रकृति २८ छे तेमांही सत्तावीस उत्तर प्रकृति सत्ताकम्मे सत्तापणेकही १६ कषाय ८ नोकषाय एव २५ थई मिश्रमोहनी एवं १७ प्रकृतिसत्ताये इए एकसम्यक्त मोहनीटली २८

उपरउत्ति प्राकृतत्वादुद्दलकोवियोजकोजतु, तस्यमोहनीयकर्मणोष्टाविशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कर्मोशाः सत्तायामित्यर्थः एकस्योद्दलितत्वादिति । तथायावणमासस्य शुद्धसप्तम्यासूर्यः सप्तविंशत्यगुलिका हस्तप्रमाणशकोरितिगम्यते पौरुषीक्षायां निर्वर्त्य दिवसक्षेत्रविकरप्रकाशमाकाशनिर्वर्णयन् प्रकाशहान्याहानिनयन् रजनोच्चैत्रमधकाराक्रातमाकाशमभिवर्णयन् प्रकाशहानिवृद्धिनयन् चारश्चरति व्योममण्डलेभ्रमणङ्करोति अयमत्रभावाय ईर्हकिलमूलन्यायमात्रित्य आषाढ्यांचतुर्विंशत्यगुलप्रमाणा पौरुषीक्षायाभवति दिनसप्तके सातिरेकच्छायागुलवर्द्धते ततश्चावणशुद्धसप्तम्यामगुलत्रयवर्द्धते सातिरेकैकविशतितमदिनत्वात्तस्याः तदेवमाषाढ्याः सातिरेकैरगुलैः सहसप्तविशतिरगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुकर्कसंक्रातिरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगणीउ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसं गुलियं पोरिसिच्छायं णिद्धत्तइत्ताणं दिवसस्केत्तनिग्रहमाणे रयणिखेत्तंअग्निगिवहुमाणेचारंचरइ इमीसेज्जं रयणप्पन्नाए पुढवीए अथ्येगइयाणं नेरइयाण सत्तावीस पलिउवमाइ ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अथ्ये मोहिनी माहिथी । आवणसुद्धि सातमदिने सूर्यहस्तप्रमाणे लणनी छायायेनांपिये तमाहि २७ अगुलीये पोरिसीनी छायां निवर्तावी करीने दिवसनंजेत्तं सूर्यनोप्रकाश घटाडतोथकी रात्रिनोत्तेत्तं अधकारनीकात आकाशने वधारतोथकी चारम्भमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथकी पोसीपुनिमलगे मासे मुहूर्तना ६१ भागकरी दिनप्रतिवेभाग दिवसघटाडो रात्रिवधारे । एणीयेरत्तप्रभा पृथिवीविषे केतलाएक नारकीनी सत्तावीस पत्थीपम आउखीकद्धी हेठिणं सातमौ पृथिवीये केतलाएक नारकीनी सत्तावीस सागरोपम आउखीकद्धी । असुरकुमार देवतानी केतलाएकनी सत्तावीस पत्थीपम आउखीकद्धी

तमदिन तन्नीकरूपापौरुषौष्वायाभवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपिव्यक्तं नवरभिर्हर्षच स्थितिः प्राक्सूत्राणि तत्राचारः प्रथमांगस्तस्य

गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं सत्तावीसं पलि  
नेवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिनेवमाइं ठिई प० मज्झिम  
उवरिमगेवेज्जायाणं देवाणं जहन्त्वेणं सत्तावीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जायविमाणेसु देव  
त्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा सत्तावीसाए अरुमासे  
हिं अणमतिवा पाणमतिवा जससतिवा नीससतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीसवाससहस्सेहिं अहारठे स  
मप्पज्जइ सतेगइया नवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए नवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति वुज्जिस्संति मुच्चिस्संति  
परिनिव्वाइस्संसंति सव्वदुक्काण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अठावीसविहे आचारपकः प० तं० ।

सौधर्म ईशान देवलीके केतलाएक देवतानी सत्तावीस पल्यापम आउखीकह्यो । मध्यसुउपरिम ग्रैवेयके एतले छहे विमाने देवतानी जवन्य सत्तावीस सागरी  
पम आउखीकह्यो । जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उल्लुट्ठी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही । ते  
हदेवतानी सत्तावीसे वर्षसहस्त्रे आहारनी अर्दउपजे । केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवने आंतरे सीभस्से मूकास्से सर्वदुःखनी अंतकरिस्से मीच्छजा  
स्से इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिंवे अठावीसमो समवाय लिखेछे । अठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विपेक्ष

प्रकल्पोध्यनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोध्यवसायमित्याचारकल्पः तत्रकचित्ज्ञानाद्याचारविषये अपराधसापन्नस्यकस्यचित् प्रायश्चित्तदत्त पुनरन्यमपराधविशेषमापन्नस्तत् स्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यमासिक प्रायश्चित्तमारीपितमित्येव मासि क्यारीपणाभवति तथाप्यपरात्रिकशुद्धियोग्यमासिकश्चशुद्धियोग्यवापराधद्वयमापन्न स्ततःपूर्वदत्तप्रायश्चित्ते सपचरात्रिमासिकप्रायश्चित्तारीपणात्सपचरात्रमासित्त्वारोपणाषट् ई एवद्विमासिक्यः ई त्रिमासिक्यः ई चतुर्मासिक्यः ई चतुर्विंशतिरारीपणाः तथासाद्दिनद्वयस्य पक्षस्यचोपघातनेनलघूनामासादीनाप्राची नप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकाारीपणा यदाह ॥ अङ्गेणछिन्नसेस पुब्बङ्गेणतुसजुयकाङ् ॥ देज्जायलहुपहाण गुरुदाणतत्तियचेवन्ति ॥ यथामासाद् १५ पचविंशतिकार्द्धच सार्द्धद्वादशवर्षसर्वमौलने सार्द्धसप्तविंशतिरितिलघुमासा' तथामासद्वयार्द्ध मासोमासिकस्यार्द्धपक्ष उभयमौलनेनसार्द्धोमासद्विति लघुद्विमासिक २५ तथातेषामेवसार्द्धदिनद्वयाद्यनुघातनेनगुरूणामारीपणा अनुघातिकाारीपणा २६ तथायावतानपराधानापन्नस्तावतीनातच्छुद्धौनामारीपणाकृत्स्नारीपणा

## मासियाञ्चारीवणा संपंचराइमासियाञ्चारीवणा सदसराइमासियाञ्चारीवणा सपस्सरसराइमासियाञ्चारीव

अथवा आचार तेसाधुनाआचार ज्ञानादिकविषय तेहनी प्रकल्पस्थापिवो तेआचारप्रकल्प अष्टावीसभेदेकह्या तेकहेछे । किहांएक ज्ञानाचारविषे अपराधपास्यो तेहनी कांडक प्रायश्चित्तदीधो वली अनैरो अपराध सेव्या तेओ तिहा पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग तेमासिकी प्रायश्चित्त आरोप्यो तेमासिका रीपणाहुई पहिली १ । सपचरायेति पंचरात्रीये शुद्धियोग्य तथा मासे शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पचरात्रिसहित मासप्रायश्चित्त आरोपणाथकी सपचरात्रि मासिकी आरोपणाकहो बीजी २ । एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

णा सवीसइराइमासियाञ्चरोवणा संपंचवीसराइमासियाञ्चरोवणा एवंचेवदोमासियाञ्चरोवणा संपंचराइ  
दोमासियाञ्चरोवणा एवतिमासियाञ्चरोवणा चउमासियाञ्चरोवणा उवघाइयाञ्चरोवणा झुणघाइया

मासिकारोपणा ३ । एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४ । सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५ । संपंचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६ । एमज पूर्वनेप  
री कह्नीने एकअपराधनी प्रायश्चित्तलाग्यी वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे बेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेबेमासिकारोपणाकही  
७ । पचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीये अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चित्तने पंचरात्रिसहित बेमासिक आरोपणाकर  
वी तेसंपंचरात्रि बेमासिकारोपणाकही ८ । एमज सदसरात्रि बेमासिकारोपणा नौमी ९ । सपनरसरात्रि बेमासिकारोपणा १० । सवीसरात्रि बेमासि  
कारोपणा ११ । संपंचवीसरात्रि बेमासिकारोपणा १२ । पूर्वनीपरीछे त्रिमासिकारोपणा एवं १८ । चौमासिकारोपणा एवं २८ मासनीअई १५ । अनेपूर्व  
पूर्वपंचवीसनीअई १२ ॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनूअई मासवली, मासाई १५ बिहूमि  
ली देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढावेदिनसहित १५ दिनुएतले साढासतर १७ ॥ दिनआरोपी तेहउपपातकारोपणा पंचवी  
समी २५ । यदाह । अघेणछिणसेसं पुब्बहेणतु संजओकाओ । देज्जायलहुपहाणं गुरुदाणंतत्तिर्यचेव ॥ बेमासमांहियकी अढीदिनकाढी एतले १ मासदिन  
साढासत्ताईस एहने उपघातकारोपणाकही तेमांहि अढीदिनघाति एतले पूराबेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतली अपराधला  
ग्योहोय तेहने तेतलीपूरी आलीयणां आरोपी तेहकल्त्तारोपणा २७ जेहने घणीजघणी अपराधलाग्योछे परंक्कमासी उपरात आलीयणनथी तोबीजा सग

२६ तथावह्ननपराधानापन्नस्य षण्मासांतंतषु इतिषण्मासाधिकतपःकर्मतेष्वेवांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साश्रकृत्स्नारोपणेत्यष्टाविंशतिरितश्च सम्यग्निशीथविशतितमीद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावास्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणमाश्रित्यविवक्षितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्यैत द्वातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवातर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिस्त्रैस्थिरास्थिरयोः शुभा

अपारोवणा कसिणाअपारोवणा अकसिणाअपारोवणा एतावताअपारोवणा अयुरियद्वे नव सिद्धियाण जीवाणं अथेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ णिज्ज मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया अग्निणिओहिअण्णाणे अठ्ठा

लायेकर्म छमासीमाहि अंतर्भव्याहे एमजाणी छमासीप्रते आरोपीये तेअकृत्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रिने एतलेओ आ चार आचरिवोकहो । जेहने सिद्धिमुक्ति होणारीहे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चौथासोहनीयकर्मनी अठ्ठावीस कर्मनाअशकर्मनीप्रकृतिसत्ताये कही तेकहेहे । सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनीय १ । मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्वमोहनी २ । सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनी एतले भिन्नमोहनी ३ । सोलकषाय अणता नुबधी यादिक कपकही ससार तेहनीआय लाभहोय जेहथकी तेकपाय कषायसरीखूं फलदे तेहास्यादिकनव नोकषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोह नी कर्मनी एहसघली २७ में ठाणेनिखीहे । आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अठ्ठावीसप्रकारकह्यो तेकहेहे । ओअद्वियनी अर्थोवग्रह अर्थनी सामान्य



शुभयोरादेयानादेयोद्यपरस्परविरोधित्वेनैकदाबन्धभावाद्व्यभचरद्भ्रमातोत्युक्तं तत्रैकैकश द्गृह्णंभापामात्रएवावसेयमिति नारकसत्त्वेविंगतिस्ताएव प्रकृतयो

वीसइविहे प० तं० सोइंदियञ्चत्यावगहे चस्किंदियञ्चत्यावगहे घाणिदियञ्चत्यावगहे जिप्पिंदियञ्चत्यावगहे  
फासिंदियञ्चत्यावगहे णोइंदियञ्चत्यावगहे सोइंदियवंजणोगहे घाणिदिञ्चवंजणोगहे जिप्पिंदियवंजणोगहे  
फासिंदिञ्च वंजणोगहे सोतिंदियईहा चिस्किंदियईहा घाणिंदियईहा जिप्पिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदियई  
हासोतिंदियावाए चस्किंदियावाए घाणिंदियावाए जिप्पिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिञ्च

प्रकारे गृहिबो तेअर्थीवगृह १ समयरहे १ चक्षुरिद्रियकरी कांइका अर्थनो गृहिबो तेचक्षुरिद्रियार्थावगृह २ । एस घ्राणेंद्रियार्थावगृह ३ । जिह्वेंद्रियार्थाव  
गृह ४ । स्पर्शेंद्रियार्थावगृह ५ । नोइंद्रियमन तेहनो अर्थीवगृह तेह नोइंद्रियार्थावगृह ६ । शब्दना पुहलआवी कानना इंद्रियमर्हि भराइ तिवारपछी  
शब्दज्ञान उपजे तेओत्रिद्रिय व्यजननावगृह ७ । गंधपुहल नासिकामर्हि आवी भराइ तिवारपछी गंधज्ञान उपजे तेघ्राणेंद्रिय व्यजनानगृह ८ । एस जिह्वें  
द्रियव्यजननावगृह ९ । स्पर्शेंद्रियव्यजननावगृह १० । आंखीने अने मननोव्यजननावगृह नहोय तेमाटे ४ व्यजननावगृह जाणिया । ओत्रिद्रियकरी शब्दनेविपे ईहा  
देवी आलीचवी जेह पुरुपनी शब्दकरेस्त्रीनी एहओत्रिद्रियईहा ११ । आखेंकरी आलीचवी स्थाणुर्वापुरुपोवा एहचक्षुरिद्रियईहा १२ । एमघ्राणेंद्रियईहा १३  
जिह्वेंद्रियईहा १४ । स्पर्शनेंद्रियईहा १५ । नोइंद्रियईहा १६ । तेमनकरी आलीचवी । ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहै । ओत्रिंद्रियावाय ओत्रिद्रियेकरी निश्चयकरिये ते  
ओत्रिंद्रियावाय १७ । एस चक्षुरिद्रियावाय तेस्त्रीलाने जपरिकागवइठो एखीलोज एहवी निश्चयार्थ तेचक्षुरिद्रियावाय १८ । इमघ्राणेंद्रियावाय १९ । जिह्वें

धारणा चरिदिधधारणा घाणिदिधधारणा फासिदिधधारणा नोइदिधधारणा ईसाणेण  
कःपे अण्ठावीसविमाणवाससहस्सा ५० जीवेणदेवगइम्मिबंघमाणे नामस्सकम्मस्स अण्ठावीसउत्तरपगणी  
उ णिबंघति तं० देवगतिनामं पंचिदिधजातिनामं वेउच्चियूसरीरनामं तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं  
समचउरससठाणनामं वेउच्चियूसरीरंगोवंगनामं वसनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुच्चिनामं अणु  
रुल्लज्जनामं उवघायनामं पराघायनामं जसोनामं पसत्यविहायोगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं

द्रियावाय २० । स्रग्नेन्द्रियावाय २१ । नोइन्द्रियावाय तेमनेकरी निच्चयार्थकरिवी २२ । अवाय अर्धमुहूर्त्तरहै । पूर्वकाननेकरी शब्दसागालोहीय तैसांभलि  
ये तेत्थोत्रेन्द्रियधारणा २३ । नेक्करी संभारिये तेचल्लुरिन्द्रिय धारणा २४ । एमज घाणेन्द्रिय धारणा २५ । जिह्वेन्द्रियधारणा २६ । स्रग्नेन्द्रियधारणा २७  
नोइन्द्रियधारणा जेमनेकरीसंभारवी २८ । एहधारणा कालसख्याता असख्यातालगेरहै । एहमतिज्जानना २८ भेदकह्या । ईशान बीजे देवलोके अट्ठावीसला  
खविमान भगवतेकह्या । जीवेदेवतानी भवबाधतीथकी नामकर्मच्छी तेहनो १०३ उत्तर प्रकृतिच्छे तेमांहिथी २८ उत्तरप्रकृतिबाधे तेकहेछे । देवगतिना  
मकर्म १ । पचेन्द्रिय जातिनाम २ । वैक्रियशरीर नाम ३ । तैजसशरीर नाम ४ । कामणशरीर नाम ५ । समचउरससंस्थान ६ । वैक्रिय शरीरांगोपांग ७ ।  
वर्णनाम ८ गधनाम ९ । रसनाम १० । फरसनाम ११ । देवानुपूर्वनाम १२ । अगुरुलघुनाम १३ । उपघातनाम १४ । पराघातनाम १५ । यशनाम १६  
प्रशस्त विहायोगतिनाम १७ । त्रसनाम १८ । वादरनाम १९ । पर्याप्तनाम २० । प्रत्येकशरीरनाम २१ । स्थिर तथा अस्थिर एहविहुमाहे अन्यतर अनैरो

पत्न्यसरीरनामं धिराधिराणंदोरहं अस्सयरंगुगनामं निबंधइ सुन्न  
 गनामं सुस्सरनामं अइज्जाअण्णाइज्जनामेणं दोरहंअस्सयरं एगंनमं निबंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं  
 एवंचेवनेरइयाविनारणत्तं अप्पसत्थविहायोगइनामं अंधिरनामं दुप्पगनामं असुन्ननामं दुस्स  
 रनामं अण्णादिज्जनामं अजसोकित्तीणामं इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठ्ठावी  
 स पलिज्जेवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठ्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई  
 प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अठ्ठावीसंपलिज्जेवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं

एकनामवांधि २२ शुभतथा अशुभ एहविहुमांहे एकवांधि २३ । शुभगनाम २४ । सुखरनाम २५ । आदियनाम अनादियनाम एहविहुमांहे एकनामवांधि २६  
 यशकौर्त्तिनाम २७ । निर्माणनाम २८ । एमज जीवनरक गतिनी वंधकरो एहीज २८ नाम कर्मनी प्रकतिनी वंधकरे । एतली विष्णो जाणिवो इहां अप्र  
 शस्त विहायोगतिनाम १ । हुडकसस्थान २ । अस्थिरनाम ३ । दुर्भगनाम ४ । अशुभनाम ५ । दुस्सरनाम ६ । अनादियनाम ७ । अजस अकौर्त्तिनाम ८ । नरक  
 गती ९ । नरकानुपूर्वी १० । एह १० प्रकृति बीजी प्रकृति १८ देवगतिमांहिली लीजे एतले २८ प्रकृति नरकगतिये नामकर्मनी होय । एणीये रत्तप्रभा प  
 हिली नरक पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी अठ्ठावीस पत्थीपम आजखीकह्यो । नीचे सातमी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी अठ्ठावीस सागरीपम  
 आजखीकह्यो । असुरकुमार देवतानी केतलाएकनी अठ्ठावीस पत्थीपम आजखीकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोकने विषे केतलाएक देवतानी अठ्ठावीस

॥ २८ ॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि  
स्थितेः प्राक् तत्रपापीपदानानि श्रुतानि तेषां प्रसंगस्तथासेवनारूप. पापश्रुतप्रसंगः । सचपापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधउक्तः पापश्रुतविषयतया

अथेगइयाणं अष्टावीसंपलिबुवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जायाणं देवाणं जहन्तेणं अष्टावीसंसा  
गरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्जिम उवरिम गेवेज्जाएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ता तेसिणू देवाण उ  
क्कोसेण अष्टावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अष्टावीसाए अरुमासेहि अणमंतिवा धाणमंतिवा  
ऊससंतिवा नीससतिवा तेसिण देवाणं अष्टावीसाए वाससहस्सेहिं आहारहेसमुप्यज्जइ संतेगइया नवसि  
द्धियाजीवा जेअष्टावीस नवगगहणेहि सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सब्बदुस्काण  
मतकरिस्संति ॥ २८ ॥ एगुणतीसइविहेपावसुयपसंगेणं प० तं । ओमे उप्पाए सुमिणे अं

पल्लोपमनी स्थितिकही । उपरिम हेठिम एतले सातमे त्रैविक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही । मध्यम उपरिम एतले सातमे क्खेअवे  
यक विमाने जेदेवतापणे जपनाक्खे तेदेवतानी उल्लुट्ठी अष्टावीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता अष्टावीस पखवाडे सासोखास जंचोले घणोले नीचोमे  
ले तेदेवताने अष्टावीस वर्षसहस्सगरे आहारनी व क्खाउपजै । केकेतलाएक भव्यजीव जेअडाईस भवने आंतरे सीभस्ये बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनी अंतकर  
स्ये मोल जास्ये अष्टावीसमी समवाय पूर्णथयी ॥ २८ ॥ हिवे गुणतीसमी समवाय लिखियेक्खे । उगुणतीस प्रकारे पापश्रुत पापनाकारण जेहश्रु

पापशुतान्येवाच्यतेऽतएवाह भोमेइत्यादि तत्रभौमं भूमिविकारफलाभिधानप्रधान निमित्तशास्त्रं तथाउत्पातं सहजर्गोर्ध्वदृष्ट्यादिलक्षणीत्यातफलनिरूपकं निमित्तशास्त्रं एवस्वप्नं स्वप्नफलाविर्भावकं अन्तरिक्षमाकाशप्रभवगृह्युद्धमेदादिभावफलनिवेदकं अंगशरीरावयवप्रमाणस्यदितादिविकारफलोद्भावकं स्वरंजीवाजीवायितस्वरस्वरूपफलाभिधायकं व्यञ्जनंमषादिव्यंजनफलोपदेयकं लक्षणं लाक्ष्णान्येकविधलक्षणव्याप्यादक मित्यष्टावेतान्येवसूत्रवृत्तिवार्तिकमेदास्तु विंशतिः तत्रागवर्जितानामन्येषां सूत्रं सहस्रप्रमाणं वृत्तिलक्षप्रमाणवार्तिकवृत्तेर्ज्याख्यानरूपकोटिप्रमाण मंगस्यतुसूत्रलक्षणवृत्तिः टीकावार्तिकमपिपरिमितमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादमपराणि काशन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादौनिवाशास्त्राणि २५ तथाविज्जानुयोगोरोहिणीप्रभृतिविद्या

## तरिस्के व्यंगे सरे वंजणे लखणे भोमेतिविहे प० तं० सुते वित्ती बन्ति ए एवं एक्षेक्षतिविहं विकहाणुज्जगे

तयास्त्रं तेषापश्रुत तेहनोपसंग सेवारूप तेषापश्रुतप्रसंग कक्षा । तेकहेछे । भौमशास्त्र जेभूमिकंपादिक फलनो सूचकशास्त्र १ । उत्पत्तशास्त्र जेआकाशयो रुविर दृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहनां फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशयो जपनो गृहादिकनो युद्ध तेहनो फल सूचक ४ । अगणु एकण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ । प्रथम भौमशास्त्र कक्षो तेचिहुभेदै कहैछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्तिक २ । भेदकरी एभजपूव अष्टांग निमित्तकक्षो तेत्रिणभेदै । एवं सर्वमिली २४ भेदशया विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिणी प्रज्ञायादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मंत्रानुयोग चेडादि

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेटकादिमन्त्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणदिकानि हरमेखलादि  
योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्यः सकाशाद्य. प्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुत्वानामनुयोगो विचारस्तत्कारणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थः  
सोऽन्यइति २९ तथाषाढादयएकातरिताषण्मासा एकोनत्रिंशद्रात्रिदिवसपरिमाणेनभवन्ति स्थूलव्यायेनक्षणपक्षे प्रत्येकरात्रिदिवसैकस्यक्षयादाहच । आसाढव  
हुलपक्षे भद्रवएकत्तिएयपीसेय फगुणवइसाहेसुय वीधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमचभावना चन्द्रमासोहि एकोनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागाना द्वात्रिं  
शत् ऋतुमासस्य त्रिंशदेवदिनानिभयन्तीति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमासाऽहोरात्रिषष्टिभागाना त्रिंशतासाधिकोभवति तत्तत्प्रत्यहोरात्रिचन्द्रदिनमेकैकनिक्षिप

विज्ञानजोगे मन्ताणजोगे जोगाणजोगे अस्सतित्ययपवत्ताणजोगे आसाढेणमासे एगुणतीसराइदिअइरा  
इदियगुण प० अद्ववएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे वइसाहेणंमासे फगुणेणमासे मासोचंददिणांण  
कमन्त्रसाधनोपायशास्त्र २७ । योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र हरमेखलादि २८ । अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिक थो प्र  
वर्त्यो पीतानी आचार तेहनी अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रसमूह अर्थ २९ । आसाढमास गुणत्वीस रात्रिदिवसनी २९ रात्रौदिवस परिमाणे पूरीथाय  
एकतियि अधारा पखवाडानी घटै एम एकांतरित छेपखवाडा गुणत्वीस रात्रिदिवसना थाय । यदाह ॥ आसाढबहुलपक्षे । भद्रवएकत्तिएयपीसेअ ॥  
फगुणवेसाहेसुअवीधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवो मास २९ रात्रिदिवसनी । कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसनी । पोसमास २९ रात्रि दिवसनी ।  
फागुणमास २९ रात्रिदिवसनी । वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनी । चद्रदिवस पडिवातिथि एगुणत्वीसमुहर्त्त मांभेराजो २९ मुहर्त्तनी कह्यो । जीवभला

छिभागेनहीयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्टाचंद्रदिवसानामेकषष्ठ्यहोरात्राणांभवतीति पिशेषस्त्वहचंद्रप्रज्ञाशेषवसेयइति तथाचन्द्रदिनेष्विति चंद्रदिनं प्रतिपदादि  
 कातिथिः तच्चैकोनत्रिंशद्भुक्तः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनत्रिंशद्दिनानि त्रिंशच्चदिनद्विषष्टिभागभवन्ति ततश्चंद्रदिनं चद्र  
 मासस्यत्रिंशतागुणेनमुहूर्त्तराशीकृतस्यत्रिंशताभागहारे एकोनत्रिंशद्भुक्तः हात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्टिभागलभ्यतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसानादिविशेषे  
 णवैमानिकेष्वुत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकृतीर्वधाति ताश्चैमाः देवगतिः १ पंचेन्द्रियजातिः २ वैक्रियइय ४ तैजसकर्मणशरीरे ६ समचतु  
 रस्रसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्कं ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघात १४ पराघात १५ उच्छ्वास १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ त्रस १८ बादरं १९ पर्याप्त  
 २० प्रत्येक २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभग २४ सुखर २५ आदियानादेययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्त्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थ

एगुणतीसंमुज्जते सातिरेगेमुज्जतगेणं प० जीवेणपसत्यज्जवसाणजुते शविणसम्मदिठी तित्यकरनामसहिंयाउ  
 णामस्सणिममा एगुणतीसउत्तरपगणीउनिबंधिता वेमाणिएसु देवेषु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेगं रयणप्प

अथवसाय युक्तथकी भव्यक्त सम्यग्दृष्टि तीर्थकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निश्चं २९ उत्तर प्रकृति बांधीने वैमानिक देवतानेविषे देवतापणे उपजे । ते  
 कहेछे । देवगति १ । पंचेन्द्रिय जाति २ । वैक्रिय शरीर ३ । वैक्रियांगीपांग ४ । तैजस ५ । कर्मण ६ । समचउरससंस्थान ७ । वर्ण ८ । गंध ९ । रस १० ।  
 स्थर्ष ११ । देवानुपूर्वी १२ । अगुरुलघु १३ । पराघात १४ । उपघात १५ । यशनाम १६ । प्रशस्तविहायोगति १७ । त्रस १८ । बादर १९ । पर्याप्त २० ।  
 प्रत्येक २१ । स्थिर अस्थिर मांहियेक २२ । शुभ अशुभ मांहियेक २३ । शुभग २४ । सुखर २५ । आदिय अनादिय मांहियेक २६ । यशः कीर्त्ति २७ । निर्माण

चाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगुणतीसंपलिनेवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं  
 नेरइयाणं एगुणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं एगुणतीसंपलिनेवमाइं  
 ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगुणतीसं पलिनेवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम  
 गेवेज्जायाणं देवाणं जहन्मेणं एगुणतीस सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेठिम गेवेज्जायविमाणेसु  
 देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एगुणतीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगुणतीसाए अ  
 ठमासेहिं अणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीरासतिवा तेसिण देवाणं एगुणतीसं वाससहस्सेहि  
 अहारठे समप्पज्जइ सतेगइया न्नवसिद्धिया जीवा जेएगुणतीसन्नवगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संतिमु  
 २२ । तीर्थेकरनामकर्म २६ । एणीये रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनिर्विषे केतलाएक नारकीनी २६ पत्थीपमनी आजखी कह्यो । हेठं सातमी पृथिवीये  
 केतलाएक नारकीनी २६ सागरोपमनी आजखी कह्यो । असुरकुमार केतलाएक देवतानी गुणत्रीस पत्थीपमनी स्थितिकह्यो । सौधर्म ईशानेकल्पे केत  
 लाएक देवतानी २६ पत्थीपम आजखी कह्यो । उपरिम मध्यम गेवेयके एतले आठमें गेवेयके देवतानी जघन्यत २६ सागरोपमनी स्थितिकह्यो । जेहदेव  
 ता उपरिम हेठिम गेवेयके एतले सातमे विमाने देवतापणे ऊपनाछे तेदेवतानी उक्कट्टी २६ सागरोपमनी स्थिति कह्यो । तेहदेवताने २६ पखवाडि सासो  
 सास चार प्रकारेहीय । तेहदेवताने २६ सहसे वर्षेगए आहारनी इच्छा उपजे । के केतलाएक भव्यजीव जे २६ भवने आंतरे सीभस्ये बूभस्ये मंकास्ये स



कार्ष्वेति ॥ २८ ॥ त्रिंशत्समस्थानकंसुगमं नवरं स्थिते र्वाङ्गैः सूत्राणि तत्र मोहनीयं सामान्येनाष्टप्रकारं कर्म विशेषतश्चतुर्थी प्रकृतिः तस्य स्थानानि नि-  
 भित्तानि मोहनीयस्थानानि तथा अश्रितस्येत्यादि श्लोकः यथायं च सान्प्रान्स्थ्यादीन् वारिमध्ये विगाह्य प्रविश्यादकोन शस्त्रभूतेन मारयति कथमाक्रम्य पादा-  
 दिना स इति गम्यते मार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वात्संक्षिप्तचित्तत्वाच्च भवशतदुःखं वेदनीयमात्मनो महामोहं प्रकरोति १ तदेव भूतं त्रसमारणेनैकं मोहनीय-  
 स्थानमेव सर्ववर्चेति २ सीसा श्लोकः शीर्षावेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेन यः कश्चिद्वैष्टयति स्त्र्यादि च सानिति गम्यते अभीक्ष्णभृशन्ती त्रीऽशुभः समारः स इति इत्यस्य गम्यमानत्वा-  
 त्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेन आत्मनो महामोहप्रकुण्ठत इति यावत्कारणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

च्छिस्संति परिनिष्ठा इस्संति सव्वदुस्काण मंतं करिस्संति ॥ २९ ॥ तीसमोहणियठाणा प० तं० ।  
 जेयावितसेपाणे । वारिमज्जेविगाहिया ॥ उदणकम्ममारेई । महामोहं पकुञ्चइ ॥ १ ॥ सीसा<sup>६</sup>व्वेइजेकेई ।

सारना परितापथी ठांढायासे सर्वदुःखनी अंतकरिस्सि मोच्चजास्से । इति गुणत्रीसनी ठाणी समत्तम् ॥ २८ ॥ हि वे तीसमो ठाणी लिखिये छे  
 चीस मोहनीकर्मना ठाणाकक्षा । तिहां सामान्येकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म अकृति ते मोहनीयकर्म तेहना स्थानक चीसकक्षा । तेकहे छे । जेकीइ  
 स्त्री आदिक त्रस प्राणीने पाणीमांहे बोलीने उदक शस्त्रं करीने आक्रमे ते महामोहनीय कर्म बांधे । भवनाशतसहस्रलगे वेदनीयकर्म उपाजै १ । शीर्षा  
 वेष्टने करी चर्ममय बांधे करी जेकीइ प्राणीनी मस्तक अत्यर्थ बीटे तीव्र अशुभ समाचारनी धणी आगला मारताने महामोह उपजाविवा पणथकी आत्माने

चि ॥ इत्येत एतेति ते याख्यायन्ते २ पाणिना हस्तेन संपिधाय स्वगच्छित्वा किंतव्यं श्रुत्वा किंतव्यं तथैवाप्राप्तुं मुखमित्यर्थः तथा प्राप्नुयादवशतः प्राणिनंतदाः श्रवणं दंगलमध्ये रवंकुर्वन्तं  
 पुरुषरायमाणमित्यर्थः मारयति सप्रतिगम्यते महामोहं प्रकरोतीति तद्वतीत्यर्थः २ जाततेजसैवैश्वानरं समारभ्य प्रज्वाल्य बहुप्रभूतं श्रवणं दंगलमध्ये रवंकुर्वन्तं  
 प्रजनलोकं अतर्मध्यधूमनीं वज्रिलिङ्गिनं अथवा अतर्धमूयस्यासावतर्धमस्तेन जाततेजसा विभक्तिपरिणामात् मारयति योसौ महामोहं प्रकरोतीति चतुर्थं ४  
 शौर्ध्वगिरसिः प्रहति खप्रसहरादिना प्रहरति प्राणिनमिति गम्यते किंभूतस्वभावतः गिरसि उत्तमांगे सर्वावयवानां प्रधानावयवे तद्विधातेऽवश्यं मरणा द्योतसा  
 व्यावहेद्व्यञ्जिस्वरूपं ॥ तिष्ठासुन्नसमायारे । महामोहं पकुवुइ ॥ २ ॥ पाणिणा संपहिताणं । सयश्चिचारियपा  
 णिणं ॥ श्रुंतो न दंतं मारेइ । महामोहं पकुवुइ ॥ ३ ॥ जायते यंसमारप्सु । वज्रनेरुं नियाजणा ॥ श्रुंतो धूममेण  
 मारेइ । महामोहं पकुवुइ ॥ ४ ॥ सीसाम्नि जपहणइ । उत्तमंगाम्नि चैयसा ॥ विज्जन्तमत्ययं फाले । महामोहं प  
 कुवुइ ॥ ५ ॥ पुणो पुणो पणिधिण्णु । हरित्ताउवहरो जणं ॥ फलेण श्रुदुवदं फेणं । महामोहं पकुवुइ ॥ ६ ॥ गूढा  
 महामोहं उपार्ज २ । हार्थेकरी आगलानी मुखरूंधी आच्छादी भीचीनें गलामाहि घुर्धुराट शब्दकरताथकोनें मारे ते महामोहनीय कर्मउपार्ज ३ । जाततेजा  
 अग्निं बहोत प्रज्वालनीं वाडादिकाने अवरूंधोने रीकीने अती मंडपादिकामां धूमकरी मारे ते महा मोहनीय कर्मकरे ४ । जे प्राणी दुष्टपरिणामे करी प्राणी  
 ना उत्तमांगे माथाने विषे खप्पादिके करी मारे विहचीने मस्तकाने काटीने मारे ते पुण्य महामोहनीय कर्म उपार्ज ५ । पुनः पुनः वारंवार कपेटे करीने जि  
 मवाटपाडा वाणियांनी वेणकारीने मार्गे परने साथे चालीने मारे मारीने आनंदपणाथकी उपहसे विजोरादिक फले करी अथवा दंडे करी हन्यमान मूर्खज

संक्षिप्तमनसा यथाकथंचिदित्यर्थः तथाविभज्यमस्तकं प्रकृष्टप्रहारदनेन स्फोटयतिविदारयति श्रीवादिक कायादपोतिगम्यते सदस्यस्यगम्यमानत्वात् मह मोहप्रकरोतीतिपचम ५ पौनःपुन्येनप्रणिधिनामायातः यथा २ वणिजकादिवेष विधाय गलावर्त्तकाःपथिगच्छतासहगत्वा विजनेमारयति तथाहत्वा विना शयइतिगम्यते उपहसेत् आनन्दातिरेकात् जनमखलीकंहन्यमान केनहत्वा फलेन योगविभावितेनमातुलगादिना अथवा तथादण्डेन प्रसिद्धेन सदितिगम्यते महामोहप्रकरोतीतिषष्ठ ६ गूढाचारीप्रच्छन्नाचारवान् निगूहयतेगोपयेत् स्वकीयप्रच्छन्नदुष्टमाचारं तथाभावापरकीयां माययास्वकीययाच्छादयेत् यथा शकुनिमारकाच्छटरात्मानमावृत्यशकुनीन् गृह्णन्तः स्वकीयमायया शकुनिमायांक्षादयन्ति । तथाअसत्यवादोनिर्ग्वी अपलापकः स्वकीयायामूलगुणोत्तर गुणप्रतिसेवायाः सूत्रार्थयोर्वामहामोहप्रकरोतीति सप्तमं ७ ध्वंसयतिमाययाभ्यशयति इतियः पुरुषोभूतेनासन्नूतेनक अकर्मकमविद्यमानदुष्टेष्टित आत्मकर्मणा लज्जता ऋषिघातादिना दुष्टव्यापारेण अदुवा अथवायदात्मनः कृतंतदश्रित्य परस्यसमक्षेसचत्वमकार्षीरेव तन्महापापमिति वदति वदिक्रियायोगः गम्य

यारीनिगूढिज्जा । मायंमायाएढायए ॥ ३५सच्चवाइणिगहाई । महामोहंपकुद्धइ ॥ ७ ॥ धंसेइजोइपूणं । ३५

नने हसे ते महामोहनीयकर्म उपार्जन करे ६ । गुप्तक्षे आचार कपट जेहनी तेगूढाचारौपीतानुं प्रच्छन्न दुष्टाचारप्रते गोपवे परनी मायाप्रते पीतानी माया करीढांके असत्यवादी भूठबोलिवी मूलगुण उत्तरगुण खंडीने गोपवे ते महामोहनीयकर्म उपार्जे ७ । नथी चेष्टितहेकर्म जेहनीं एहवा पुरुषप्रते पीताना कीधा ऋषिघातादिक अणहुते कर्मकरीमारें अथवा पीतानुं कीधूं कर्म तेहने आश्रयणकरी परसमक्षेकहे जे एह खीटीकर्म एहेनेहीज कीधी तेमहा मोहनी

मानत्वात् सइत्यस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहप्रकरोतीत्यष्टमः जानानः यथा अमृतमेतत्परिपदः सभायां बहुजनमध्ये इत्यर्थः सत्यामृषा किंचित्सत्यानि बहु  
 स यानि वस्तूनि गान्यानि वाभाषते अक्षोणभक्तः अनुपरतकलहः यः स इति गम्यते माहामोहमकरोतीति नवमः अनायकोऽविद्यमाननायको राजा तस्य नयवान्  
 नीतिमानमात्यः सतस्यैव राजादोरान् कलत्रं दारवा अर्थार्थगमस्योपायं ध्वंसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति स दध किं कृत्वा विपुलं प्रचुरमित्यर्थः विज्ञोभ्य  
 सामतादिपरिकरभेदेन सञ्जीभनादनायकं तस्य सञ्जीभजनयित्वेत्यर्थः कृत्वा विधाय गमित्यलंकारः । प्रतिवाह्या मनधिकारिणीं दारभ्योऽर्थार्थगमद्वारेभ्यो वादार  
 न् राज्यवास्तवमधिष्ठानेत्यर्थः । तथा उपगतमपि समीपमागच्छतमपि सर्वस्वापहारे कृते प्रावृतेना तुल्योपमैः कर्णैर्वचनैरनुकूलयितुं प्रपक्षितमित्यर्थः भ  
 पश्यित्वाऽनिष्टवचनावकाशकृत्वा प्रतिनीमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भिर्वचनैरेतादृशस्तादृशस्त्वमित्यादिभिरित्यर्थः भोगभोगान् विप्रिष्टान् शब्दादीन्

कर्मं व्युत्पत्तकर्मणा ॥ शुद्रुवातुमकासिति । महामोहं पकुष्टुइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसनु । सञ्चमोसाइं नासुड  
 व्युज्जाणऊं पुरिसे । महामोहं पकुष्टुइ ॥ ९ ॥ व्युणायगरसनयवं । दारंतस्सेवधसिया ॥ विउलं विस्कोमइत्ताणं

यकर्म उपार्जं ८ । जाणतोयको पर्यदाभाहि वेसीने सत्यामृषा काइक साची काइं एक भंठो वाणीवोलि कलहयको ओसस्यीनथी निवर्त्थी नथी तेषु स महामो  
 हनोयकर्म उपार्जं ९ । नथी विद्यामान जेहनी नायकराजा तेहवा राज्यना नयवत अमात्यमन्त्री तेह राजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय  
 प्रति ध्वंसे विनसाडि स्यू करी ध्वंसे प्रसुर सामतादिकप्रति विज्ञोभीने भेदपाडीने बली करीने सू करीने कलत्रयको अथवा प्रर्थार्थगमद्वारेभ्यो लेवाने योग्य  
 नथी एहवी राज्य लक्ष्मीये पीतज अविष्ठान करीने तथा समोपे प्रायताने एतले सर्ववन लीयेयके दीनस्त्रे करी चाटुवचनबोलतो एहवाने भांपीने सामो

विदारयतियोसोमहामीह प्रकरोतीतिदग्म १० अकुमारभूतो कुमारब्रह्मचारीसन् यः कथित् कुमारभूतोहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु गृहीवसकश्चस्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिआस्ते समहामोहप्रकरोतीत्येकादश ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तीयः कश्चित्तत्कालएवासेव्याब्रह्मचर्यं ब्रह्मचारी साप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपंचनायवदति तथाच एवमग्नीभावह सतामनदिय भगन् गर्दभइवगवामध्ये विस्तरंनवपुभवन्नोन्न नदतिमुञ्चति नदनादशब्दमित्यर्थः तथायएवंभगन्नात्मनोऽहिती नहितकारी बालोमूढो मायामृषावादगशाध्यायुत प्रभूतभाषते यथैवंनिदितभाषते कया स्त्रीविषयगृह्या

किञ्चाणपद्मिवाहिरं ॥ १० ॥ उवगंतपिऊपित्ता । पछिलोमाहिबगुहिं ॥ भोगभोगेवियारिइं । महामोहं प  
कुछइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेई । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिछेवसए । महामोहपकुछइ ॥ १२ ॥  
अवंभयारीजेकेई बजयारीत्तिहंवए ॥ गदहेछुगवंभज्जे । विस्सरनयईनदं ॥ १३ ॥ अप्पणोअहिएवाले । माया

ओसियाली करीने प्रतिकूलवचने करी रे तूं एहवी नीचके एहवा वचनेकरी भोग विशिष्ट शब्दादिकने भोगविवाने अर्थे विदारे हो तेमहामोहनीय कर्म करे १० । नथी कुमार भूत एतले परस्था के जेकीई लोकमाहि ह कुमारभूतछु एतले बालब्रह्मचारी हं छूं एहवूं कहै बली स्त्रीसाथे भूटइ लीलुप बली स्त्री ने आधीन अथवा स्त्रीसाथेवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीयको जेकीई लोकमाहि ह ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छूं एहवी कहै ते शोभा रहित साधुजनने अथाह गदंभनीपर गायना टोलामा वृषभनीपर मनोज्ञ नथी एहवी शब्दकरे बोले एहवी जे बोले ते आपणा आत्मानो अहितकारी अ ने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लपट थईने माया सहित मृषा घणू बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लाभेकरी

हेतुभूतया सद्व्यभूतीमहामोहप्रकरोतीति द्वादशं १२ यं राजानराजामात्यादिकं वा निश्चितआश्रितउद्धते जीविकालाभेनात्मानधारयति कथयशसातस्य राजादेः सत्कीयमितिप्रसिद्धाअभिगमनेन वासेवया आश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिविस्तेद्रव्यैः समहामोहप्रकरोतीति त्रयोदश १३ ईश्वरेणप्रभुणा अदुवा अथवा ग्रामेणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृत' तस्यपूर्वावस्थायाग्रीनीश्वरस्य संप्रगृहीतस्य पुरस्कृतस्य प्रभवादिनाश्रीलक्ष्मीरतुलाअसाधारणाआगताप्राप्ता अतुलवायथामभवतीत्येव श्रौः समागता आगता श्रीकक्षप्रभायुपकारकविषये ईर्यादीविषयाधिशोयुक्त कलुषेण द्वेयोभादिलक्षणपापेनाविलमाकुलवाचेत्तीयस्य सतथा योतरायव्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगाना चेतयतेकरोति प्रभवादे रसौमहामोहप्रकरोतीति चतुर्दश १४ ।

मोसंबज्जनसे ॥ इत्थीविसयगेहीए । महामोहंपकुवुड ॥ १४ ॥ जंनिस्सिएउव्वहड । जससाहिगमेणवा ॥

तस्सलुप्पइवित्तम्मि । महामोहंपकुवुड ॥ १५ ॥ ईशरेणअदुवागमिणं । अणिरस्सरेईसरीकए ॥ तस्ससपचहीगस्स । सिरीअतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणअविठे । कलुसाविलचयसे ॥ जेअंतराअंचेएड । महामोहंपकु

आत्मानेधारे अने राजसंबंधनी प्रसिद्धियकी तथा सेवायकी तेआश्रित राजाना धननद्विषे लोभकरे तेमहा मोहनीय कर्मकरे १३ । ईश्वरेठाकुरे अथवा ग्रामे जनसमूहे अनीश्वरहुती तेईश्वरकीधी असमर्थहुती तेसमर्थकीधी ते जेपूर्वे अनीश्वररुहती सपदा रहितहुती तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी शीलक्ष्मी अतुल असाधारण आवी पामीके जेहनेते उपकारी मूलगी ठाकुर तेहनेविषे ईर्यादोषे मच्छरदोषिकरी आविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापिकरी आकुल व्याथी के चित्त जेहनी एहवी जेकीइ उपकारी प्रभुने अंतरायप्रति चेतैकरे तेहनी आजीविकानो विच्छेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४ । सर्पिणी जिम पोता

अण्डककूट स्त्रीकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यावापुटं सवद्वदनद्वयरूपिहिनस्ति एवंभक्तारं पोषयितार योविहिनस्ति सेनापतिराजानं प्रयास्तारममाल्यैर्धर्मपाठकवासमहामोहं प्रकरोतीति तस्मिन्नेव बहुजनदुःखताभवतीति पंचदश १५ योनायकं वा प्रभुरादस्य राद्रमहत्तरादिकमिति भावः नेतारं प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु निगमस्यावाणिजकसमूहस्य कञ्चिद्विद्वत्पटवद्वक्तृभूत बहुरवभूरियष्ट प्रभुतरयगसमित्यर्थः हत्वा महामोहमकुर्वते इति घोडग १६ बहुजनस्य पचषादीनालीकाना नेतारं गायकं क्षीपद्रवद्वीप ससारसागरगतानामाग्वासस्थान अथवा दीपद्रवद्वीपो ज्ञानाधकाराद्वतवुद्धिदृष्टिप्रसराणा शरीरिणाहं योपादेयवस्तुस्तीमप्रकाशकत्वात् त अतएव त्राणमापद्रव्यं प्राणिना एतादृश यादृगागणधरादयो भवंति नरं प्रावचनिकादिपुरुष हत्वा महामोहमकरोतीति सप्तदश

वृद्ध ॥ १७ ॥ सप्पीजहाय्यं ऊढं । नत्तारं जोविहिंसड ॥ सेणावइपसत्यारं । महामोहं पकुवृद्ध ॥ १८ ॥

जेनायगंचरठस्स । नेयारं निगमस्सवा ॥ सेठिं वज्जरवंहंता । महामोहं पकुवृद्ध ॥ १९ ॥ वज्जजं सुसनेयारं ।

दीवंताणचपाणिणं ॥ एयारिंसं नरं हंता । महामोहं पकुवृद्ध ॥ २० ॥ उवठियं पफिविरयं । जेत्तिस्कुं गजी वणं ॥

ना इण्डानापुट समूह हणेमारें । तिम पीताना भर्तार पीपकने हणेमारें सेनापतिं राजार्ये प्रयस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हणेमारें तेमहामोहनीय कर्म करे १५ । जेकोइ राष्ट्रना देशना नायकने तथा निगम वणिक् समूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा अठि नगरमुख्य लक्ष्मी अकित पटवद्व तथा घणायशनी धणी एहवाने हणेमारें ते महामोहनीय कर्मकरे १६ । बहुजननी घणालीकनी नेता नायक होइ एहवाने तथा क्षीपसरीखा संसारसागरमा आश्रयभूत आपदाथकी रक्षक एहवा प्राणीने हणे ते महामोहनीय कर्मकरे १७ । प्रव्रज्याने विषे उपस्थित सावधान थयोइ तथा सर्वसावदा थकी निवर्त्त्यो जे कोइ

१७ उपस्थितप्रव्रज्यायां प्रविब्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरत सावद्ययोगेभ्यानिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः सयतंसाधुसुतपस्विनं तपांसिकृतवंतंशोभनंवातपः श्रितमाश्रित काचित् जेभिक्षुजगजौवणतिपाठः तत्रजगन्ति जगमानि अहिसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्तु विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्माच्छुतचा रिचलक्षणान् श्रयतियः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादशं १८ यथैवप्राक्तन मोहनीयस्थान तथैवेदमपि अनतन्नानिना ज्ञानस्यानतविषयत्वेन अक्षयत्वेनवाजि नानामर्हता वरदर्शिनं चाधिकदर्शनत्वात् तेषा येज्ञानाद्येनकातिशयसमुपेतत्वेनभुवर्गत्रयेप्रसिद्धाः अवणवभ्रवणवादीवक्तव्यत्वेनयस्यास्ति सोऽवणवान् यथाना स्तिकवान् सर्वज्ञीज्ञेयस्थानतत्वात् उक्तं च अज्जविधावद्गन्तं गज्जविद्यन्नणतन्नीअलीगोवि अज्जविनकीइविउहं पावतिसब्बसुयंजीवी अज्जपावतितोसमोहोइ अ लोउनेवेयमठतित्ति अद्रूपणचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञान युगपज्जीकालौकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकातर्वर्त्तिदोपकशिखापवुरेकमध्यमित्यभ्युपगमा न्निजि बालो (ज्जीमन्नामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितम १८ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रातस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनदेः मोक्षपथस्यदुष्टोद्दिष्टोवा उपकरोति

ते बालीऽज्ञीमहामोहं प्रकरोतीति एकोनविशतितम १८ नवीतीयकास्थान्यायभगवत्प्राक्तस्य ॥ तेषिञ्चुवस्सर्ववा  
जिणाणंवर्दंसिण ॥ तहेवाणतगाणीण ॥ २७ ॥ महामोहंपकुछइ ॥ महामोहंपकुछइ ॥ तन्वाप्पियतोच्चासेड्ड ॥ महामोहंप

ले । महामोहपकुवृद्ध ॥ २२ ॥ नेत्राद्भ्यश्चरसमग्रास्स । दुष्टश्चैव यश्चैव ॥ ततोऽप्यतन्ना ॥ २३ ॥

भिन्नु जगज्जीवन अहिंसादि धर्म जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलात्कारे धर्मथकी असे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८ । तिमज्ज पूर्वनीपरी अनतज्ञानी अनत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्तना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते महामोहनीय कर्मकरे १९ । जे न्यायानुसार मार्गनी दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकारे घणी तथा ते मार्गने निदाकरी भासे बोले मिथ्याले घाले ते महा



अपकारं करोतीति बहुश्रुत्यपाठांतरेषापहरति बहुजन निपरिणमयतीति भावः तं मार्गं तिष्ठन्तीति निन्दया द्वेषेण वा वासयति आत्मानं परं च यः समहामोहं प्रकरोतीति विशतितम २० प्राचार्योपाध्यायैः श्रुतस्वाध्यायविनयच चारिणाञ्चितः शिचितः तेनैव चिन्सति निन्दति अल्पश्रुता एते इत्यादि ज्ञानतः अन्यतौ र्थि क्रमसर्गकारिण इत्यादि दर्शनतः मन्दधर्माणः पार्श्वस्थादिस्थानवर्तिनः इत्यादि चारित्रतः यः स एव भूतो बालो महामोहप्रकरोतीत्येकपि श्रुतितम २१ प्राचार्योदीन् श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिनिस्तर्पितवतः उपकृतवतः सम्यक्कृतान्प्रतितर्पति विनयाहारोपध्यादिभिर्नाप्रत्युपकरोतीति तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथा स्तब्धो मानवान् समहामोहम्यकरोतीति द्वाविशतितम २२ अबहुश्रुतयय. कश्चिदुत्तेन प्रविकल्पते आत्मानं ज्ञायते श्रुतवानहमनुयोगधरोहमित्येवं अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचकोवेति पृच्छति प्रतिभगति प्रात्मनः स्वाध्यायवाद वदति विषुषपाठकोहमित्यादिकं यः स

कुर्वइ ॥ २३ ॥ श्रुयारियउवऊाणुहिं । सुयंविणयंचगाहिणु ॥ तेचवखिंसईवाले । महामोहपकुवई ॥ २४ ॥

श्रुयारियउवऊायाणं । समंनोपफितप्पइ ॥ अप्पयफिपूयणुथइ । महामोहपकुवइ ॥ २५ ॥ इति बज्रसुएयजे

मोहनिय कर्मकरे २० । जेणे आचार्ये उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्रग्रहिवाड्यो सिखाड्यो तेहीज आचार्यने खीसे निदे <sup>अ</sup>अज्ञानी ते महामोहनिय कर्मकरे २१ । जेकीइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने <sup>सु</sup>सुस्यक् प्रजारे तर्पणही उपराठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे २२ । अबहुश्रुत अपडितयकी जेकीइ श्रुतकरी शास्त्रकरी आत्माने प्रविकये ज्ञाघयेहु श्रुतवत्तु एम कह वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनीहु पाठककु एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी यकी जेकीइ तपेकरी पीताना आत्माने

महामोह शुतालाभहेतु प्रकरोतीति त्रयोविंशतितम २३ सुगम पूर्वाहं पूर्ववत् नवरम् सर्वलोकात् सर्वजनात् सकाशात्परः प्रकष्टस्तेनः चोरी भावचौरत्वात्  
 प्रकुर्वद् अतपस्विनोहेतु प्रकरोतीति चतुर्विंशतितम २४ साधारणार्थं मुपकारार्थं य कश्चित् आचार्योऽपि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासूदीभूतेभ्यः समर्थं च  
 पदेशेनौषधादिदानेन च स्वतीन्यतश्चोपकार नकरोति कृतशुपेक्षते इत्यर्थः कौनाभिप्रार्थित्याह ममाधिषनकरोति किञ्चनापि कृत्यम् समर्थोऽपि सन्निहिषेणा सम  
 र्थोवाऽय बालत्वादिना किञ्चित्तेनान्यपुनरुपकर्तुमशक्तत्वादितिलोभेनेति शठः कैतवयुक्त शक्तिलोपनात् निष्कृतिर्मायातद्विषये प्रज्ञानयस्य तथा ग्लान प्रतिचर  
 णीयो माभवत्विति ग्लानवेषमहकरोमीति विकल्पवानित्यर्थः अतएव कलुषाकुलचेता आत्मनश्चावोधिर्को भवातराप्राप्तव्य जिनधर्मज्ञाभाप्रतिजागरेणाज्ञो

केई । सुएणंपविकत्यई ॥ सज्जायवायंवयइ । महामोहंपकुछइ ॥ २६ ॥ अतवस्सीएउजेकेई । तवेणपुवि  
 कत्यइ ॥ सव्वलोयपरेत्तेणे । महामोहंपकुछइ ॥ २७ ॥ साहारणठाजेकेई । गिलाणम्मिउवठिए ॥ पन्नूणकुणई  
 किच्चं । मज्जंएसेनकुछइ ॥ २८ ॥ सढेनियइपसाणे । कलुसाउलचेयसा ॥ अण्णणोयअवोहीए । महामोहप

विकथे साधाकरे हुतपस्वी ह्यु एमकहे ते सर्वलोकथको परमस्तेन चोरछे ते महामोहनीय कर्मकरे २४ । साधारणने अर्थे उपकारने अर्थे जेकोइ आचार्या  
 दिक्कने ग्लानपणे तथा रोगीपणे उपस्थित दुक्कडो आब्यो निकट आब्यो तेहने उपदेश औषधादि दानेकरी उपकार करवामां समर्थछे पणि मुभने एह  
 न करतीहुतो एमाटेहु काइक नकरू एह शठधूर्त निकति मायातेहनेविषे चतुरथइ ग्लानीनू हु औपघोपचार करूछु एहवी कल्पनायेकरी कलुषितछे चित्त  
 जेहनी आपणा आत्मानो अबोधक भवांतरे धर्मनी अर्थीनथी ते महामोहनीय कर्मकरे २५ । जेकोइ कथा प्रवध शास्त्र तद्रूप जे अधिकरण एतले प्राणिना

विवोधना अश्रद्धात्परेषां वाऽबोधकः अविद्यमानो बोधोऽस्मादितिव्युत्पादनात् येहि तदीयं ग्लानाप्रतिचरणमुपलभ्य जिनधर्मपराङ्मुखा भवन्ति तेषामबो  
विकस्तयेति सएवंभूतो महामोहस्रकरोतीति पञ्चविंशतितम २५ यः कथावाक्यप्रबंधः शास्त्रमित्यर्थः स्तद्रूपाख्यधिकरणानि कथाधिकरणानि कौटिल्यशास्त्रा  
दीनि प्राशुपमर्दनप्रवर्त्तकत्वेन तेषामात्मदुर्गतावधिकारित्वकरणात् कथया वा क्षेत्राणि क्षयत गानमसूयतेत्यादि तथा अधिकरणानि तथाविधप्रवृत्तिरू  
पाणि अथवा कथा राजकथादिका अधिकरणानि च यत्रादीनिकलहा वा कथाधिकरणानि सप्रयुक्ते पुनः पुनरेव सर्वतीर्थानां भेदाय संसारसागरतरण  
कारणत्वात् तीर्थानि ज्ञानादीनि तेषां सर्वयानाशायप्रवर्त्तमानः समहामोहंप्रकरोतीति षड्विंशतितम २६ । कथं नवरं अधार्मिकायोगानि सित्तवशीकरणा  
दिप्रयोगः किमर्थं ज्ञाघाहेतोः सखिहेतोर्मित्रनिमित्तमित्यर्थः इति सप्तविंशतितमं २७ । यद्यमानुत्थकान् भोगान् अथवा पारलौकिकान् तेति विभक्तिपरिणामः

कुष्ठइ ॥ २९ ॥ जेकहाहि गराइ । सपउं जे पुणो पुणो ॥ सखितियाण नेयाणं । महामोहंपकुष्ठइ ॥ ३० ॥  
जेअण्णहम्मि एजोए । संपउं जे पुणो पुणो ॥ साहेहेउसहीहेउ । महामोहंपकुष्ठइ ॥ ३१ ॥ जेअण्णहम्मि एजोए ।

उपमंदहेतु आत्माने दुर्गतीमां हि अधिकार कारी एमाटे अधिकरण कौटिल्यशास्त्र तेहने वली वली प्रयुजे विस्तारे ते सर्वतीर्थ ज्ञानादिकना सर्वथा नाशे  
प्रवर्त्तमान महामोहनीय कर्मकरे २६ । जेकोइ अधार्मिक प्रयोग निमित्त वशीकरणादिक प्रयोगप्रते स्लाघाने अर्थे वली मित्रने अर्थे सप्रयुजे वली वली व्या  
पारे ते महामोहनीय कर्मकरे २७ । जेकोइ मनुष्य संबंधी अथवा परलोक संबंधी भोग विषयादिकने विषे अटसह अशुभको भोगप्रते आस्त्रादे अभिलासे आय  
यणकरे ते महामोहनीय कर्मकरे २८ । जेकोइ बाल अधर्मी ऋद्धि विमानादिकनो सपत् द्युति शरीराभरणनीदीप्ति यशकीर्त्ति वर्ण शुक्तादि शरीर संबंधी

तेषुवा अलप्यत्तुल्यमिगच्छत् आस्वादं अभिलपति आश्रयतिवा समहामोहं प्रकरोतीति अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिर्विमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभर  
णदीप्तिः यशःकीर्तिं वर्षः शुक्लादिः शरीरसम्बन्धो देवानां वैमानिकानावलगाशीर वीर्यजीवप्रभवं अस्त्यत्यध्याहारः तेषामिह अर्पेर्गम्यमानत्वात् तेषामपि देवाना  
मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अज्ञाघाकारी अथवा अवर्णवान् केनोन्नापेन देवैर्गुणानामुद्दिष्टानाद्युतिरित्यादिका काव्याख्येय नकिचिद्देवानामुद्धादि  
कमस्तीत्यवर्णवादवाक्यभार्यः यएवभूतः समहामोहं प्रकरोतीति एकीनत्रिंशत्तम २९ । अपश्यन् यो ब्रूते पश्यामि देवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्यैव पूजाम  
र्थयतेयः स जिनपूजार्थी गीगालकवत् समहामोहं प्रकरोतीति निग्नत्तम ३० । रौद्रादयो मुहूर्त्ताद्यादित्यो दयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एषाचमध्यमध्यामाः षट्

अष्टुवापारलोइए ॥ तेतिप्ययंतोऽज्ञासग्रह । महामोहंपकुछइ ॥ ३२ ॥ इहोर्जुर्जसोवन्नो । देवाणंवलुवी  
रिय ॥ तेसिंअवस्रवंबाले । महामोहंपकुछइ ॥ ३३ ॥ अण्परसमाणोपरसामि । देवजस्केयगुज्जगे ॥ अण्साणी  
जिणपूयठ्ठी । महामोहंपकुछइ ॥ ३४ ॥ धरेणंमंअियपुत्ते तीसवासाइंसामसपरियायंपाउणित्ता सिधे वुधे

देवतानी बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानी अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यच्चेने व्यंतर विशेषने गुह्यकने अ  
नादरती थकी हुआदरकु एमकहे तेस्वरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहतनी पूजानी प्रथीके गीगालानीपर ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३०  
मोहनीय स्थानकहा । स्थविर मडितपुत्र छठो गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीक्षा पालीने सिद्धथयो । कृतार्थथयो तत्वनी जाणकारथयो यावत्

जावसहृदुःखकप्यहीणे एगमेगेणंअहोरत्ते तीसंमुज्जत्ते मुज्जत्तेगीणं ० एएसिणंतीसाएमुज्जत्ताणं तीसंनामधेज्जा  
 प० तं० रोद्धे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीएअन्निचदे माहिंदे पलंवे वंन्ने सच्चे अणदे विजए विस्ससेणे पाया  
 वच्चे उवसमे ईसाणे नठे न्नाविअप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसन्ने गंधह्वे अग्गिवेसायणे अतवे अवावत्ते नठवे  
 न्नुमहे रिसन्ने सहृदसिद्धे रक्खसे ३० । अरेणंअरहा तीसधणु उहुंउच्चत्तेण होत्या सहस्सारस्सणं देविंदस्स दे  
 वरस्सो तीस सामाणियसाहस्सीनु प० पासेणंअरहा तीसंवासाइं अगारवासमज्जे वसित्ता अगारानु अण  
 गारियं पव्वइए समणेअगवं महावीरे तीसंवासाइं अगारवासमज्जे वसित्ता अगारानु अणगारियं पव्वइए

अज्जेकरी कर्मथको मूकाणो सर्वदुःखको प्रज्जीणथयो । एकएक अहोरात्र त्रीस मुहूर्तनी होय । ते त्रीसमुहूर्तना त्रीसनामधेयनामका ॥ तैकहेछे । रौद्र १  
 यत्त २ । मित्र ३ । वायु ४ । सुपीत ५ । अभिचंद्र ६ । माहेंद्र ७ । प्रलब ८ । ब्रह्म ९ । सत्य १० । आनंद ११ । विजय १२ । विश्वसेन १३ । प्राजापत्य १४ ।  
 उपशम १५ । ईशान १६ । नष्ट १७ । भावितात्मा १८ । वैद्यमण १९ । वरुण २० । अतच्छम २१ । गार्धर्व २२ । अग्निवैश्यायन २३ । आतप २४ । आवर्त्त  
 २५ । नष्टवान् २६ । भूमहान् २७ । ऋषभ २८ । सर्वार्थसिद्ध २९ । राक्षस ३० । अरुनाथ अठारमा तीर्थकर त्रीस धनुष ऊचपणेथया । सहस्सारनामा अठ  
 मा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकह्या । पार्श्वनाथ अरिहत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास माहि वसीने गृहस्थकी अनगारपणी यतीपणी पाय्या  
 अमण भगवत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावास वसीने घरवास छाडीने यतीपणी पाय्या । रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कह्या । एणीयें र

॥  
 रयणप्यन्नाणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्यन्नाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइ  
 याण तीसपलिनुवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएपुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प०  
 असुरकुमाराणं देवाणं अत्येगइयाणं तीसपलिनुवमाइं ठिई प० उवारिमउवारिमगेवेज्जायाणं देवाणं जहन्त्वेणं  
 तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवारिममज्जिमगेवेज्जाएसु विभाणएसु देवत्ताए उववन्ना तेन्नाणं देवाण  
 उक्कोसेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेण देवा तीसाए अछमासेहिं अणमतिवा पाणमद्धिया उस्ससं  
 तिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहिं अहारठे समुप्पज्जाइ संतेगइया भवसिद्धियाजी  
 वा जे तीसाए भवगहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिह्वाइस्सति ससुदुस्साणमंत करि

जप्रभा पृथिवीने विषे केतलाएक नारकीनी चीस पत्थोपमनो आउखोकच्छो । हंठे सातमी पृथिवीये केतलाएक नारकीनी चीस सागरोपमनी स्थितिकही  
 केतलाएक असुरकुमार देवतानी चीस पत्थोपमनो स्थितिकही । उपरिम उपरिम भवैयके एतले नवसे भवैयक विमाने देवतानी जवन्य चीस सागरोपम  
 नी स्थिति कही । जे देवता उपरिम मध्यम भवैयके आठने भवैयक विमाने देवतानी उक्कठो चीस सागरोपमनी स्थितिकही । ते देव  
 ता चीसे पखवाडें खासीखास घणेलि ऊचेलि नीची मूके ते देवताने चीसवर्ध सरस्वगये आहारनो अर्थ उपजे । छे केतलाएक भव्यजीव जे चीसभवने आत

कदाचिद्दिनेऽन्तर्भवन्ति कदाचिद्भाविति । ३० । एकत्रिंशत्तमस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धत्वप्रथमएवसमयेगुणास्तेचाभिनिबोधिका  
रसन्ति ॥ ३० ॥

सुयणाणावरणे स्त्रीणे नेहिणाणावरणे स्त्रीणे मणपज्जवनाणावरणे स्त्रीणे केवलनाणावरणे स्त्रीणे चरकुदंस  
णावरणे स्त्रीणे अचरकुदंसणावरणे स्त्रीणे नेहिदंसणावरणे स्त्रीणे केवलदंसणावरणे स्त्रीणे निद्रा निद्रानिद्रा  
स्त्रीणे पयला पयलापयला स्त्रीणे धीण्ठी स्त्रीणे सायावेअणिज्जे स्त्रीणे असायावेअणिज्जे स्त्रीणे दंसणमो

२ सीभस्से वूभस्से मूकास्से सर्वदुःखनी अंत करिस्से मोचजास्से ॥ इति त्रीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ३० ॥ हिंवे एकत्रीसमो समवाय लिखि के ।  
एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांडी जपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कह्या ॥ ते कहिंके । क्षीण धयोक्के आभिनिबोधिक ज्ञाननद आवरण एतले सर्व  
थापि मतिज्ञानावरण चय गयी के जेहनी १ । क्षीणथयी के अतज्ञानावरण २ । वल्ली अवधिज्ञानावरण चय ३ । मनःपर्यवज्ञानावरण चय ४ । केवल  
ज्ञानावरणचय ५ । चक्षुदर्शनावरणचय ६ । अचक्षुदर्शनावरणचय एतले आंखटाली बीजा चारद्रिय अचक्षु तेहना आवरणनी चय ७ । अवधिदर्शना  
वरणचय ८ । केवलदर्शनावरण चय ९ । सुखेजागे ते निद्रा तेहनीचय १० । दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनी चय ११ । वैठांजभां आवि ते प्रचला तेहनीच  
य १२ । चालतां आवि ते प्रचलाप्रचला तेहनीचय १३ । धीण्ठी अर्धवासुदेवनी बल तेहनीचय १४ । सातावेदनीयकर्मचय १५ । असातावेदनीयकर्मचय १६

वरणादिक्षयस्वरूपा इति मन्दरीमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कभइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणीभवतीति जयाणसूरिइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशीत्यधिकमण्डलगतभवति मण्डलचज्योतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजंबूद्वीपस्यांतराशीत्यधिक्योजनगतं पचषष्टि सूर्यमण्डलानिभवन्ति तथा लवणसमुद्रं त्रीणि

हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइच्छाउए खीणे त्रिरिच्छाउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुन्ननामे खीणे सुन्ननामे खीणे दाणंतराए खीणे लात्तांतराए खीणे ओगांतराए खीणे उवओगांतराए खीणे बीरिच्छतराए ३१ मंदरेणपहए धरणितले पुक्कितिसंजोय णसहस्साइं छच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिस्केवेणं ५० जयाणं सूरिए सव्वबाहिग्गिमंफ़लं उव

दर्शनमोहनोय एतले सम्पत्तमोहनोय चय १७। चारित्रमोहनोय चय १८। नरकायुचय १९। तिर्यचायुचय २०। मनुष्यायु चय २१। देवायु चय २२। उच्चैर्गीत्रचय २३। नोचैर्गीत्र चय २४ शुभनाम चय २५। अशुभनाम चय २६। दानातराय चय २७। लाभांतराय चय २८। वीर्यांतराय चय २९। उपभोगांतरायचय ३०। मेरुपर्वत भूमितले एकतीसहजार छस्से त्रैवीस योजन कांश्च न्यून परिधीयि कह्यो। मेरुपर्वत भूमिने ऊपरें दसहजार योजन पिडुल पण्छे तेहनी परिधी त्रिगुणित एतले एकतीस हजार छसे त्रैतीस योजन कह्यो। सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला पहिली एतले सर्वाभ्यंतर मडल जगतीथकी एकसी अस्सी योजन छे। अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसी ओगणीस मांडला छे। सर्वमिली जंबूद्वीप मांहि एकसी चौरासी मडल छे तेमांहि सर्वबाह्यमडले उपसंक्रमी आवीने सूर्य मकर संक्रातिदिने भ्रमण करे। तेणें दिने भरतक्षे



॥  
॥  
श्रद्धाधिकानियोजनशतान्यवगाह्येकोनविंशत्यधिकं सूर्यमण्डलशतं भवति तत्र च सर्वबाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानां पर्यतिमं तस्य चायामविष्कम्भो लक्षषट्शतानि  
चयोजनानां षष्ठ्यधिकानि परिधिमुत्तरेण गणितव्या येन त्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणि शतानि पचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावच्चैत्रमादित्योऽ  
होरात्रद्वयेन गच्छति तत्र च षष्ठिमुहूर्त्ता भवन्ति षष्ठ्या भागा पहारै यत्कथं तद्वर्तमानं भवति तत्र पचसहस्राणि त्रीणि च पंचोत्तराणि शतानि ५३०५ ।  
१५ । ६० मुहूर्त्त एतच्च दिवसां न गुण्यते यदा च सर्वबाह्ये मंडले सूर्यं धरति तदा दिनप्रमाणं द्वादशमुहूर्त्ताः तद्वच्च षट् अतः षड्भिर्मुहूर्त्तैर्गुणितं मुहूर्त्तगतिप्रमाणं  
चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणं भवति एकविंशत्सहस्राणि अष्टौ च शतान्येकविंशदधिकानि त्रिंशच्च योजनद्विषष्टिभागाः ३१८३१ । ३० अभिर्वर्द्धितमासोऽभिर्वर्द्धितसंवत्सर

॥  
॥  
संक्रमित्वा चारंचरद् तयाणं इह गयस्स मणुस्सस्स एकतीसाए जोयणसहस्सेहिं अठहिं अएकतीसेहिं  
जोयणसएहिं तीसाएसठिभागे जोयणस्स सूरिएचस्कुफासं हएमागच्छद् अज्जिवाहिणं मासे एक्कतीसं

॥  
॥  
वगतं मनुष्येन एकतीसहजारं आठसे एकतीस योजनं ऊपरं एकयोजननां साठिया पंचोत्तरां भागं अधिकं वेगलोयको सूर्यं चक्षुस्पर्शेण शूरि आवि । एतलेपो  
सौ पूर्णिमे मकरं सक्रांतिदिने एकतीसहजारं आठसे एकतीस योजनं ऊपरं योजननां साठिया तीसभागं वेगलो हीय सूर्यं लवणसमुद्रं मां हि तिवारे इहां  
नां मनुष्येन दृष्टिगोचरं आवि । अभिर्वर्द्धितमासं त्रीजि वर्षं आवि तेरहमासनी वर्षं हीय । ते अधिकं मास एकत्रोस रात्रिदिवस पमाणे सातिरेकं कांइएकं भां  
भेरोजांणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिकं एकत्रोस रात्रिदिवस परिमाणे पुरोथाय । जेणे काले सूर्यं राशिभोगेवे ते आदित्यमासं सूर्यमा

स्य चतुश्चत्वारिंशदहोत्रद्विषष्टिभागाधिकत्रयशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य ३८३ । ४४ द्वादशोभागोऽभिर्वर्द्धितसवत्सरश्चासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचद्र  
मासामकत्वाच्चन्द्रमासश्च एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचदिनद्विषष्टिभागानाभवतीति सादरेगाइति अहोरात्रस्यच चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानामेकविंशत्यु

सातिरेगाइ राइंदियाइं राइंदियगेणं प० अण्डिच्चेणं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइं  
दियगेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसं पलिनुवमाइं ठिई प०  
अहेसत्तमाए पुढवीए अत्येगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराए देवाणं अ  
त्येगइयाणं एक्कतीसंपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्येगइयाणं देवाणं एक्कतीसंपलिनुव  
माइं ठिई प० बिजय वेजयंत जयंत अपराजिययाणं देवाणं जहस्सेण एक्कतीसंपलिनुवमाइं ठिई प० जे

स कहिये एकत्रीसरविदिवस काइंके विशेषाधिक जणा ओक्खा अहोरात्रिअहं जणा एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणे पूरो कह्यो । एणीये रत्नप्रभा पहिली  
नरक पृथिवी ये केतलाएक नारकोनी एकत्रीस पल्यीपमनीस्थितिकह्यो । हेठिस सातमीनरक पृथिवीये केतलाएक नारकोनी एकत्रीससागरोपम आउखो  
कह्यो । केतलाएक असुरकुमार देवतानी एकत्रीस पल्यीपमनीस्थिति कह्यो । सौधर्मइशाने कल्ये केतलाएक देवतानी एकत्रीस पल्यीपम आउखोकह्यो ॥ पू  
र्वदिशाथकौमाडीकरीने विजय १ वैजयत २ जयत ३ अपराजित ४ एचार अनुत्तरविमाननादेवतानी जघन्यएकत्रीससागरोपमनी स्थितिकह्यो । जेदेवता  
उपरिसउपरिम भैवेयके एतले नवमे भैवेयकविमाने देवतापणेउपनाकतेइदेवतानीउत्कृष्टी एकत्रीससागरोपमनी स्थितिकह्यो । तेदेवता एकत्रीसे पखवाडे

त्तरशतेनाधिकानीति आदित्यमासयेनकालेनादित्योराशिभुक्ते किंचिविभेसूणाइति अहोरात्राद्धं नन्यूनानीति ॥ ३१ ॥ द्वात्रिंशत्तमस्थानकमपि व्यक्तं । नवर । युज्यते इतियोगा मनीवाक्तादव्यापारास्तेचहप्रशस्ताएवविविचितस्तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिनाप्रकारेणसग्रहणानि संग्रहाः प्रशस्तयोगसंग्रहाः प्रशस्तयोगसंग्रहनिमित्तत्वादालोचनादय एवतथोच्यन्ते । तेचद्वात्रिंशद्भवन्ति तदुपदर्शकंशोकपंचकं आलोयणेत्याद्यस्यगमनिका तन्नआलीय

देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जायविमाणेषु देवत्ताए उववन्त्वा तेसिणं देवाणं उक्खोसेण एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कतीसाए अरुमासेहि अणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाण एक्कतीसं वाससहस्सेहि आहारठे समुपज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्जिस्संति बुज्जिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सल्लदुस्काणमंतं करिस्संति ॥ ३१ ॥

बत्तीस जोगसगहा प० तंजहा अणलीयण निरवलावे अावई सुदढधम्मया । अणिस्सिउवहाय सिरका

स्वासीस्वास घणीले कचोले नोचोमूक्ते ते देवताने एकत्रीस वर्षसहस्रगये आहारनी इच्छाउपजे । छे केतलाएक भव्यजीव जेएकत्रीस भवने आंतरे सीम्हस्ये बूम्हस्ये मंकास्ये कृतकर्मना पडल टालवाथकी ठाढाथास्ये सर्वदुःखनी अंतकरस्ये मोचोत्तास्ये ॥ इति एकत्रीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ ३१ ॥ हिंवे बचीसमी समवाय लिखे । बचीस योग सगृह मन वचन कायानायोग तेहनी सगृह शिथे आलीयणालेवी गुरूये कहीआगली नकहिवी इत्यादि प्रकारे सगृह करिवी प्रशस्त योगना कारण ते योगसंगृह ते कहके । मोचसाधक योगसंगृहभणी शिथे आचार्यभणी आलीयणकही ? । आचार्यभणी आलीयण

चारीपगतः स्या न्रमायांकुर्योदित्यर्थः १४ धिनयोर्पगतोभवेन्नमाया कुर्योदित्यर्थः १५ धिइमईयत्ति धृतिप्रधानामर्तिर्धृतिमतिरदन्यं १६ सवेगोत्ति सवेगः संसा  
राज्ञयमोच्चाभिलाषोवा १७ पणिह्तिप्रणिधिमर्मायाग्रन्थंनकार्यमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठान १९ सवरस आश्रयनिरोधः २० अत्तदोसोवसंहरेत्ति स्वकीयदोष  
स्थनिरोधः २१ सब्बकामनिरत्तयत्ति समस्तविषयवेसुखं २२ पच्चक्खणेत्ति प्रत्याख्यानमूलगुणविषय २३ उत्तरगुणविषयच २४ विउसन्गेत्ति व्युत्सर्गोद्रव्यभावमे  
दभिन्नः २५ अप्पमाएत्ति प्रमादवर्जनं २६ सवाल्वेत्ति कालोपलक्षणं तेन चणे २ सामाचार्यनुष्ठानकार्यं २८ भाणसवरजोगेत्ति ध्यानमेवसंवरयोगी ध्याम  
सवरयोगः २८ उदएमारणत्तिएत्ति मारणांतिकेपिवेदनीदयेनचोभःकार्यः २९ सगाणयपरिणत्ति संगानांअपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभिदेभिज्ञापरिज्ञाकार्या

विणनुवए ॥ २ ॥ धिईमई य संवेगे । पणिहीगुविहिसवरे ॥ अत्तदोसोवसहारे । सब्बकामविरत्तया ॥ ३ ॥

पच्चक्खणे विउसग्गे । अप्पमादेलवाल्वे ॥ ज्जाणे सवरजोगेय ॥ उदएमारणत्तिए ॥ ४ ॥ संज्ञाणंयपरिणसा

शुभ अनुष्ठान करिवी १९ । संवर आश्रयनिरोध २० पीताना दोषनो निरोध रीक्खी २१ । सर्वविषयधी विमुखपणी २२ । पचक्खणानी करिवी २३ ।  
व्युत्सर्ग द्रव्ययक्ती उपधीनी त्याग भावयक्ती त्रिणगीरवनी त्याग २४ । प्रमाद टालिवी २५ । क्रियानीकाले समाचरिवी २६ । धर्मध्यानादि करिवी २७ ।  
संवरनी योग २८ । मारणातिक वेदना उपजे मज्जे चोभ न करिवी २९ । सगनी परिज्ञा खजनादिक सगनी पचक्खवी ३० । प्रायश्चित्तनी करिवी ३१ ।  
आराधना करी मरे ३२ । एइ वमीस योग सग्रह जाणित्वा ॥ वनीस देवेइ कल्ला ते कहे छे । चमरेइ १ । वलेइ २ धरणेइ ३ । भूतानेइ ४ । वेणुदेग ५ ।

३० पश्चित्तकरणेइत्ति प्रायश्चित्तकरणंचकार्यं ३१ आराहणायमरणते मरणरूपीन्तो मरणांतः सूत्रेत्यतोद्धां त्रिशयोगसंग्रहाइति ३२ इन्द्रसूत्रेयावत्कारणद्वे ७ देववेणुदालो हटिकते हरिस्सहे अगिस्सीहे अगिमाणवे पुणे वसिष्ठे जलकते जलणहे अभियगइ अभियवाहणे वेलबे प हजणे घीसे महाघीसे इतिदृश्यभ्युनयो वत्करणात् माहिदेवभेलतएसुक्के सहस्सारेत्तिद्रष्टव्यमिदं षोडशानाव्यन्तरेन्द्राणा षोडशाभासेव वा अरणपण्यकादीन्द्राणामलेद्रकलेनाविवचितत्वा दसख्याताना मपिचद्रसर्माणा जातिग्रहणेनइयोरेवविववितत्वाह्वात्रियदुताइति। कुशुनाथस्यह्वात्रियदधिकानि ६ त्रिशच्चक्रैवल्लिशतान्यभूवन् ह्वात्रिशद्विधनायमभिनयविषय ॥ १० ॥ तन्नीसं देविदा ॥ ० त० चमरे

मपि चद्रसूरीणा जातिग्रहणेन इत्येव विविधितत्वाद्वाच्यमुक्ताइति । कुयुनीथस्थैश्च । नश्यदायनादिभिरिति ।  
या । पच्छिन्नकरणिविय ॥ अराहणाय मरणंते । बतीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ बतीसं देविदा प० त० चमरे  
बली धरने नृअणंदे जाव महाघोसे चदे सूर सक्ते ईसाणे सणकुमारे जाव पाणए अज्जे ए कुंप्फस्सणंअरहणे  
बतीस जिणसया होत्या सोहम्मेकप्पे विमाणवाससहराणं प० रेवइणरुक्ते बतीसइतारे प०  
वेणुदाली ६ । हरिकांत ७ । हरिशिख ८ । अग्निशिख ९ । अग्निमाणव १० । पूर्ण ११ । वज्रिष्ठ १२ । जलकान्त १३ । जलप्रभ १४ । अमितगति १५ ।  
अमित वाहन १६ । विलव १७ । प्रभजन १८ । घोष १९ । महावीष २० । चद्रमा २१ । सूर्य २२ । शक्रेंद्र २३ । ईशनेंद्र २४ । समल्लुमारेंद्र २५ । मार्हेन्द्र  
२६ । ब्रह्मेंद्र २७ । लातकेंद्र २८ । शुक्रेंद्र २९ । सहस्रारेंद्र ३० । प्राणतेंद्र ३१ । अर्थतेंद्र ३२ । भवनपती ना इन्द्र २० । सौधर्मद्रादिका इन्द्र १० । जीतिपी  
ना २ एम ३२ यद्यपि ३२ व्यारेंद्र के परिणति अल्पचद्विया तेभाउ । . . . . . तात्ता के परिणतिगवौ ताख्या कुरुगाथ १७  
मां अरहित ने ३२ से जिन कैवल्यो थया । सोधर्म पहिले कचे वजीम धिमान रूप आवासी विमान वास शत सहस्र काद्या । एतले ३२ लाख विमान

वत्तीसतिविहेणहं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वत्तीसपल्लिनुवमाइं ठिई  
 प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वत्तीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अ  
 त्थेगइयाणं वत्तीसंपल्लिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मसीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं वत्तीसंपल्लिनुवमा  
 इं ठिई प० जेदेवा बिजय बेजयत जयत अथराजियविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाण अत्थेगइ  
 याण वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा वत्तीसाए अरुमासेहिं अणमंतिवा पाणमंतिवा उरुससं  
 तिवा निरुससतिवा तेसिणं देवाणं वत्तीसं वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धिया जीवा  
 जेवत्तीसाए नवग्गहणेहिं सिज्जिरसति बुज्जिरसति मुच्चिरसंति परिनिद्याइस्सति सब्बदुराणाणमतं करि  
 कच्चा । रेवती नचचना वत्तीस ताराकच्चा । वत्तीसभेद नाटकना कच्चा तेरायपखेणौथको जाणवा । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलएक नारकीनी वत्तीस  
 पचीपमनोस्थितिकही । हेठंसातमीपृथिवीयेंकेतलाएकनारकीनी वत्तीस सागरोपमनोस्थितिकही । केतलाएक असुरकुमारनौ वत्तीस पत्नीपमनोस्थिति क  
 ही । सौवर्म ईगाने कल्पे केतलाएक देवतानी वत्तीसपत्नीपमनोस्थितिकही । जे देवता विजय १ । वैजयत २ । जयत ३ । अपराजित ४ । एहचिहुअनुत्त  
 रविमाने देवतापण्णउपन छे तेहदेवतानीवत्तीससागरोपमनोस्थितिकही । तेदेवता वत्तीसमे पखवाडे थोडीस्वासले घणीस्वासले जंचे स्वा । ले नोचोना ६ मक  
 तेहदेवताने वत्तीसवर्षसहस्से आहारनोवांछाउपजे । केकेतलाएकभण्ण जीव जे वत्तीसभवने आंतरे सीभस्से बूभस्से मूभास्से सर्वदुःखनी अतकरिस्सेमोच्चजास्से ॥

अथ त्रयस्त्रिंशत्समस्थानकं तत्र भाग्यं ॥ ३२ ॥

॥ ३२ ॥

मस्तुभेदाद्यथाराजप्रश्नकृताभिधानं द्वितीयोपांग इतिसंभाव्यते द्वात्रिंशत्याप्तप्रतिबद्धमितिकेचित् ॥ ३२ ॥ अथ त्रयस्त्रिंशत्समस्थानकं तत्र भाग्यं ॥ ३२ ॥  
 सप्तगुदग्ननाथवाप्तिलक्षणस्तथातना खण्डनानिरुक्तादाग्रातनास्तत्र श्रेष्ठोऽल्पपर्यायीरात्रिकस्य बहुपर्यायस्य भासन्नमासति यथारजोचलादिस्तस्यलगति  
 तथागन्ताभवतौल्यवमाग्रातनाशैस्त्वस्यै त्वेवसर्वत्र पुरश्चित्ति अग्रतीगताभवति सपक्वन्ति समानपद्म समपार्श्वयथाभवति समन्त्रेण्यागच्छतीत्यर्थः चिह्नित्तस्या  
 तात्रासिताभवति यावत्करण इत्याश्रुतकन्धानुसारिणान्याइहदृष्टव्यास्तायैवमर्थतः भासन्नपुरः पार्श्वतः स्थानेन तिस्रोऽन्निपीदनेनचतिस्रः तथाविचारभूमौ  
 ससंति ॥ ३२ ॥ तृतीयाग्रायणात् प० तं० । सेहेराइणिग्रस पुरते गतान्नवइ ग्रासाय  
 णासेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्वगतान्नवइ ग्रासायणासेहस्स २ सेहेराइणियस्स ग्राधन्तंगतान्नवइ  
 ग्रासायणासेहस्स ३ एवगुणञ्चिह्नितान्नवइ ग्रासायणासेहस्स ४ सेहेराइणियस्स ग्रासस्सचिह्नितान्नवइ ग्रासायणासेह  
 इणियस्स सपक्वचिह्नितान्नवइ ग्रासायणासेहस्स ५ सेहेराइणियस्स ग्रासस्सचिह्नितान्नवइ ग्रासायणासेह  
 इति वन्नीसमीसमवाय ययो ॥ ३२ ॥ चिह्नेतेन्नीसमीसमवाय लिखियेहे । तन्नीस आग्रातना । ज्ञानदर्शनचारिषप्रप्तिनी सातवो खड्वो तेना  
 ग्रातना कहौ तेकहेहे । शिष्यश्रमकालीनदीक्षानोधणी रात्रिकघणी दीक्षानोधणी तेहने आसनी ठुंकडोगताहोय चालेण्डपहिलीतिआग्रातनाशिष्यने १ । रा  
 त्रिकवडानेआगलयकीगताहोयचालेतेआग्रातनाशिष्यने २ । रात्रिकने सपक्वकडतावरावरीचालवोते आग्रातनाशिष्यने ३ । इस एणे अभिलापे शिष्यवडाने  
 भागन्तजभोरहे तेआग्रातना शिष्यने ४ । शिष्यगुरुनेआगल जभोरहेतेआग्रातनाशिष्यने ५ । शिष्यगुरुने वरावरजभोरहे तेआग्रातना शिष्यने ६ । शिष्यगुरु

गतयोः पूर्वतरमाचमतः शब्दस्थाशातना १० एवं पूर्वगमनागमनमालोचयत ११ तथारात्रौर्काजागर्त्तीतिपठे रात्रिकेनतप्तपचमप्रतिशृण्वतः १२ रात्रिकस्या

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरनेनिसीडित्तान्नवइ आसायणारोहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपरकंनिसीडित्तान्नवइ  
 आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आससनिसीडित्तान्नवइ आसायणासेहस्स ९ एवंएणअण्णिलावेण  
 सेहेराइणिएणंसिंहिया विहारम्मिनिस्सकंतेसमाणे तत्थपुब्बामेवसीहतराए आयामइपच्छाराइणिए आस  
 यणासेहस्स १० सेहेराइणिएणंसिद्धिं बहिद्याविहारम्मि वा निस्सकंतेसमाणे तत्थपुब्बामेवसीहतराएआलोएइ  
 पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सरानेवाविआलेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरत  
 त्यसेहेजागरमाणेराइणियस्स अप्पणिसुणेत्तान्नवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुब्बेणलवत्तए तंपु

ने आगलयकीवेसे तेआशातनाशिय्थने ७ । शिय्थगुरूने बरावरे वेसे तेआशातनाशिय्थने ८ । शिय्थआशन्नकहतां दुकडोथकीवेसे तेआशातनाशिय्थने ९ । एवएणी  
 आभिलोपे ९ । आशातना । शिय्थगुरूवेहुंफेरगयाथकां तिहाशिय्थपहिलेआचमनलेइणलशुचि करे तेआशातनाशिय्थने १० । शिय्थगुरूसाथे वहिर्भूमिथडिले  
 चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकाये जाताथका पहिलेशिय्थ इरियावहो पडिकमे पक्केगुरुपडिकमे तेआशातना शिय्थने ११ । शिय्थगुरूनेपहिलेहीज आवणहा  
 रसाथे गुरु बील्याविना बीले तेआशातना शिय्थने १२ । शिय्थ प्रते गुरूये पूजो कवण रात्रियेसोळे अथवा कवण जागेळे एहवं पूक्केथके शिय्थ जागता थ



पूर्वमालपनीय काचनअवमस्यपूर्वतरमालपतः १३ अशननादिलब्धमपरस्य पूर्वमालीचयतः १४ एवमन्यस्योपदर्शयतः १५ एवनिमन्त्रयतः १६ रात्रिकमनापृच्छा  
 न्यसैभक्तादिददत. १७ स्वयप्रधानतर भुजानस्य १८ क्वचित्प्रयीजनेव्याहरतो रात्रिकस्यचवाप्रतिश्रुतः १९ रात्रिकस्यतितत्समचतावृहताशब्देन बहुधा

वामेवसीहतराए अणलवइ पच्छाराइणिए असायणासेहस्स १३ सेहे० अस्सणंवापाणंवाखाइमंवासाइमवा  
 पङ्किगाहिता तपुवामेवसीहतराएणिहस्सअलोएइ पच्छाराइणियस्स असायणासेहस्स १४ सेहेअस्सणंवा४  
 पङ्किगाहितापुवामेवसीहतराएणिहस्सपङ्किदंसेइपच्छाराइणिए असायणासेहस्स १५ सेहेअस्सणंवा४ पङ्किगा  
 हिता पुवामेवसीहतराएअन्वस्स उवणिगंसेइ १६ सेहेराइणिएणस्सहिअस्स  
 णवा४ पङ्किगाहितातराइणिय अणपुच्छिता जस्सजस्सइच्छइ तरस्सतस्सखड्ढंरदययइ असायणासेहस्स १७

को उत्तर न दे तेआशातना शिष्यने १३ । शिष्यअशनपान खादिम स्वादिमविहरीने ते पहिले बीजाआगलआलीईनेपक्के गुरुनेआगलआलीवे तेआशातना  
 शिष्यने १४ । शिष्यअशनपान खादिमस्वादिम विहरीनेपहिले बीजासाधूने देखाडे पक्के गुरुने देखाडे तेआशातना शिष्यने १५ । शिष्य अशनपान खादिम  
 स्वादिम विहरीने पहिले बीजासाधूने निमन्त्रणादे पक्के गुरुने निमन्त्रे तेआशातना शिष्यने १६ । शिष्यगुरु साधे अशन पान खादिम स्वादिम विहरीने गुरु  
 ने अण पक्के यके जेजे साबुवाछे तेह तेहने आपे तेआशातनाशिष्यने १७ । शिष्य गुरुने साथे असनपान खादिम स्वादिम विहरीने मनोज्ञमनोज्ञ सिग्धन्नि

भाषमाणस्य २० व्याहर्तेनमस्तुक्तेनवन्दे इतिवक्तव्येकिम्भणसीतिब्रुवाणस्य २१ प्रेरयतिरात्रिके कस्वंप्रेरणायामिति वदतः २२ आचार्यग्लानं किंनप्रतिचरसीत्याद्युक्ते त्वन्निनतप्रतिचरसीत्यादिभणतः २३ धर्मभ्रर्थयतिगुरावच्यमनष्कतां भजतोऽनुमीदयतइत्यर्थः २४ कथयतिगुरौनस्मरसीतिवदतः २५ धर्मकयामाच्छिदतः

सेहेराइणिणुणंसद्धिंअसणंवा ४ व्याहारेमाणे तस्यसेहे रक्खं रक्खं णायं रसियं रसियं उरुसं उरुसं मणुसं  
मणुसं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्कं लुक्कं व्याहारेत्ता न्नवइ व्यासायणासेहस्स १८ सेहेराइणियस्स व्याह  
रमाणस्सअप्पफ़िसुणित्तान्नवइ व्यासायणासेहस्स १९ सेहेरायणियं रक्खं रक्खं वत्तान्नवइ व्यासायणासेहस्स  
२० सेहेराइणियं किं वइत्तान्नवइ व्यासायणासेहस्स २१ सेहेराइणियं तुमइ वत्तान्नवइ व्यासायणासेहस्स  
२२ सेहेरायणिय तज्जाएणं तज्जायपफ़िन्नणित्तान्नवइ व्यासायणा ० २३ सेहेराइणियस्स कं हं कं हेसाणस्स नोसु

गध रुक्खरुक्ख आप भोजनकरे ते आशातना शिष्येने १८ । शिष्य गुरुर्ये बोलाव्यात्तो वलतो उत्तर न आपे ते आशातना शिष्येने १८ । शिष्य गुरुर्ये बोलाव्या  
यको ठामे वेठीयको उत्तर देते आशातना शिष्येने २० । शिष्य गुरुर्ये बोलाव्याथको मथेण वदामि एहने स्थाने श्यंकहीछी एहवं बोलेते आशातना शिष्येने  
२१ । वडायें प्रेरणाकरता काईक कार्यनी आज्ञा देतांथकां तू कोण प्रेरणा करणहएहवी बोले ते आशातना शिष्येने २२ । शिष्यप्रते वडाये ज्ञान आचा  
र्यनी पर्युपासना केमनथी करती एम कहतांथकां तू केमनथी करती एहवं बोले ते आशातना शिष्येने २३ । गुरुर्ये धर्मोपदेश करतांथकां अन्यचित्त होय  
तेणे जे शिष्य अनुनीदे ते आशातना शिष्येने २४ । शिष्य गुरुर्ये काइएक वार्ता कहतांथकां तम्हे भूली गयाछी एमनथी एमके एहवी बोले ते आशातना

॥ २६ भिक्षावेलावर्त्तते इत्यादि वचनतः पर्वदभिदानस्य २७ गुरुपर्वदभेदो नु यितायास्तथैव्यवस्थिताया धर्मकथयतः २८ गुरोः सस्तरक्षापादेन वदयतः २८ गुरोः सस्तरक्षीनिषीदतः ३० उक्तासने निषीदतः ३१ समासने षे ३२ त्रयस्त्रिंशत्तमासूनी ताव रात्रि कथ्यात्परास्तत्रगत एवासनादि स्थित एव प्रतिशृणोति

मिणे जवइ आसायणासेहस्स २४ सेहे रायणि यस्स कहं केहे मणिस्स नोसरसि एव वत्ता न वइ आसायणा ० २५  
 सेहे राइणि यस्स कहं केहे माणस्स कहं आच्छिदिता न वइ आसायणासेहस्स २६ सेहे राइणि यस्स कहं केहे माण  
 स्स परिसन्निता न वइ आरायणासेहस्स २७ सेहे राइणि यस्स कहं केहे माणस्स तीसिय परि साए ॥ अणु ठिआए  
 अन्निनाए अबोच्छिन्नाए अबो गजाए दोञ्चि पितञ्चिपि तामेव कहं केहे ता न वइ आसायणासेहस्स २८ सेहे  
 राइणि यस्स सेज्जासथारगपाएणं संघहिता हत्थेण अणुसवेत्ता गच्छइ आसा ० २९ सेहे राइणि यस्स सेज्जासंथा  
 राए चिठित्ता वा निसीइत्ता तुयहिता वा आसा ० ३० सेहे राइणि यस्स उच्चासणं सिवा ३१ समासणं सिवा  
 चिठित्ता वा निसीइत्ता वा न वइ आसायणासेहस्स ३२ सेहे राइणि यस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

गिथने २५ । जे गिथ गुरयें धर्मकथा कहता थका धर्मकथानी छेदन करे ते गाथातना गिथने २६ । गिथ गुरु सभायें बैठा थका भिक्षानी वेलाथइ इत्यादि  
 कहने पर्वदानो भेदकरे ते आशातना गिथने २७ । गिथ गुरु सभायें बैठा थका पर्वदाप्रति धर्मोपदेश करे ते आशातना गिथने २८ । गिथ गुरुना  
 आसनप्रते पावथकी सत्रट्ठकरे ते आशातना गिथने २९ । गिथ गुरुने आसने मैसे ते आशातना गिथने ३० । गिथ गुरु थकी ऊंचे आसने मैसे ३१ ।

आगत्य हि प्रत्युत्तरं देयमिति शब्दस्याग्रागतनेति ३३ तेत्तीसंभीससि भीमानिनगराकाराणि विग्रिष्टस्थानानौत्वन्ये तथा जयाणां भूरि एदत्यादि इह सूर्यस्य मण्डलयो  
रतरं द्वे द्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्टिभागाः एतद्विगुणपचयोजनानि पचत्रिंशच्चैकषष्टिभागा एतावता हीनविष्कम्भ सर्वबाह्यमण्डलाद्वितीयं मण्डलगावति  
ततश्चतुश्चैत्रपरिधितः न्यायेन परिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशताचैकषष्टिभागैर्न्यून द्वितीयमण्डलसर्वबाह्यमण्डलाद्भवति एतत्तृतीयमण्डले एतद्विगुणितहीनभ  
वति तथा हि तद्विष्कम्भत एकादशभिर्योजनैर्नवभैकषष्टिभागैः पर्यन्ति माहीन भवति परिधितसु पचत्रिंशता योजनैः पचदशभैकषष्टिभागैर्न्यूनं भवति तच्च  
नौणिलचाणि अष्टादशसहस्राणि द्विशत एकोनाशीत्युत्तराः षट्चत्वारिंशच्चैकषष्टिभागा इति तथा न्तिममण्डलान्मण्डलेरद्वाभ्यामुद्धर्त्त स्यैकषष्टिभागाभ्यां दिनद्विभ

चैत्रपङ्क्तिसु निताजवद् व्यासायणासेहस्स ३३ चमरस्सणं व्यसुरिंदस्स व्यसुरस्सो चमरचंचा एरायहाणी एणुक्क  
मेक्कवार एतेत्तीस २ योमा ५० महाविदेहेण वासे तेत्तीस जोजणराहस्साइं साइरेगाइं विस्सकरोइं ५० जयाणंसू  
रि ए वाहिराणंतरं तच्चं मळलं उवरकमिन्नाण चारचरड तयाण इह गयस्स पुरिस्सस्स तेत्तीसा ए ज्जोयणसहस्से

गुरुने समान आसने बैसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुर्ये काई क वार्ता पूछां यका आसने बैठोई उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एच्च तेत्तीस आशा  
तना कहौ ३३ ॥ असुरेद्र असुर कुमारनी राजा एहवा चमरेद्रनी चमरचंचा राजधर्मनीन विपे एकेके वारे तेत्तीस तेत्तीस नगरने आकारिं भला स्थानक  
कह्या । जबूदीप सबधी महाविदेहचैत्र तेत्तीस हजार योजन भाभरे पिटुलपणे कह्यो । जिवारे रार्थ सर्वबाह्य मण्डल थकी चीज मण्डले आवीने भ्रमणकरे  
तिवारे भरतचैत्रगत मनुष्यने तेत्तीस हजार योजन थकी दृष्टिगीचर आवे । ते पोसी पूनिभे मकर सक्राति पळे माह बदी १ एकज दिने सूर्य उत्तरायणे

॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाद्भवेति बुद्धानांतीर्थकृतमप्यऽतिशया अतिशया बुद्धातिशेयाः अवस्थितमवृद्धि

असुराणं अत्येगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिनवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्येगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिनवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सद्धरिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरो वमाइं ठिई प० तेणदेवा तेत्तीसाए अरुभासेहिं अणमतिवा पाणमतिवा उरुससतिवा निरुससतिवा तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं अाहारठे समप्पज्जइ संतेगइया अवसिठियाजीवा जेतेत्तीसन्नवग्गह णेहिं सिज्जिरुसंति बुज्जिरुसंति मुच्चिरुसंति सद्धुरुक्काणमंत करिरुसंति ॥ ३३ ॥ चत्तीसंबुद्धाइ

अप्यइडाण नरके नारकौनी जवन्त्य स्थिति नथी उल्लूट तेत्तीस सागरोपमनी स्थिति कहौ । केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्तीस पल्योपमनी स्थिति कहौ । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानी तेत्तीस पल्योपमनी स्थिति कहौ । विजय १ वेजयंत २ जयत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्तीस सागरोपमनी स्थितिकहौ । जेदेवता विचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाक्के ते देवतानी जघन्य स्थितिनथी उल्लूट तेत्तीस सागरोपमनी स्थिति कहौ । ते देवता तेत्तीस पखवाडे गयेयके खासीखासले घणेलि उचेलि नीची मंके तेह देवताने तेत्तीस सहस्त्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे । छे केतला एक भय्यजीव जे तेत्तीस भवने आतरे सौभस्ये बृभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनी अतकारस्ये मोच जास्ये । इति तेत्तीसमी समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

स्वभावंकेशाद्यशिरीजाः सः शूणिचकूर्चरीमाण्चिषशरीरलीभानि नखाद्यप्रतीतादिति द्वन्द्वकत्वमित्येकः १ निरामया नोरीगानिरुपलेपानिर्मला गात्रयण्डिस्ता  
नुलतेति द्वितीयः २ गोक्षीरपाण्डुरमांसशोणितमितलतीयः ३ तथापद्मचकमलगधद्रव्यविशेषीवा यत्पद्मकमितिरूढ उत्पलचनीलीत्पलमत्पलकुण्टवा गधद्रव्य  
विशेषस्त्रयोर्थगंधः सयन्नास्ति तत्तथोच्छ्वासनिःश्वासमिति चतुर्थः ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हार अस्यवहरणमूपुरीषोत्सर्गो प्रच्छन्नत्वमेव स्फुटतरमाह अदृश्यमसच  
क्षुधानपुनरवक्ष्यादिलोचनेन इति पचम ५ एतच्च द्वितीयादिकमतिशयचतुष्कजन्मप्रत्यय आकाशकेचक्रं पण्ड तथा प्रागाशगतव्योमवर्ति आकाशकवा प्रकाशमि

सेसा प० तं० अण्वधिणु केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलही २ गोस्कीरपण्डरे मंससोणिणु ३  
पउमुप्पलगधिणु उरसासनिस्सासे ४ पच्छन्ने अाहारनीहारे अदिस्से मंसचस्कृणा ५ अागाशगतं चक्रं ६

हिवे चौचीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौचीस बुद्ध कहतां तीर्थकारदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनी अपेक्षाये अधिक पणो कक्षा तेकहेछे ।  
वधेनहीमस्तकनाकेश श्मश्रूडाढीमूछ शरीरनारीम । नोरीगवलीनिर्मलगरीर २ । गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३ । पद्मकमलतेहनागधसरीखो स्वा  
सोस्वास नो गध ४ । अदृश्यदीसेनही मास चक्षुयंकरी येतले चर्मचक्षुयंकरी एहवीप्रच्छन्नगुप्तआहार जीमणनीविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनीत्याग ५ । एणी  
येकन्नस्पष्टैयिं येपांचअतिशययथा । तमाह्निपहिलो सूकीबीजाथकीपचमालगे चारअतिशय जन्मथकी माडी ने होय ५ । जेहनीआकाशगत धर्मचक्रवा  
ले ६ । आकाशगत छत्र ७ । आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८ । आकाशनीपरे अत्यंत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ९ । आका

ल्यर्थः चक्रधर्मचक्रमिति पण्डः ६ आकाशकोक्कत्रमिति सप्तमः एवमाकाशगंक्कत्रयमित्यर्थः ७ आकाशकोप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकीर्णके इत्याष्टमः ८ आगा  
 सफालिया मयति आकाशमिव यद्व्यंत मच्छस्फटिक तन्माय सिंहासन सहपादपीठमिति नवमः ९ आगासगतोऽत्यर्थतुङ्गमित्यर्थः कुडिभित्तिल  
 घुपताकाः सभाव्यन्ते तत्सहस्रैः परिमण्डितश्चासावभिरामयातिरमणीय इति विग्रहः इदं चक्रमिति ग्रेपध्वजापेक्षयातिमहत्वादिदृष्ट्यासौध्वजश्च इन्द्रध्वज इति  
 पुरमिति जिनस्याग्रतो गच्छतीति दशमः १० चिह्नतिवानि सीयति वेत्ति तिष्ठति गतिनिहत्या निपीदत्युपविशति तत्त्वणादेव तत्त्वणसेयाकालहीनमित्यर्थः  
 पत्रैः सच्छिन्न इति वक्तव्ये प्राकृतत्वात् संच्छिन्नपत्र इत्युक्तं सचासौ पुष्पपद्मवसमाकुलयेति विग्रहः पद्मवा अकुराः सच्छिन्नः सध्वजः सघटः सपताकोऽशोकवरपादप

आगासगयं तत्तं ७ आगासगयाले सेयवरचासराले ८ आगासफालियामयं सपायपीठं सीहासनं ९ आगा  
 सगले कुरुत्रीसहस्रपरिमंक्रियाजिराभो इदं जलं १० जलं जलं वियणं झरं हंतुं न गवता चिह्नं  
 तिवा निसीयति वा तल्य तल्य वियणं तरुणादेव सखन्नपत्रपुष्पपद्मवसमाउलो सबतो सज्जले सघंठो सपद्मा

शगत एतले अत्यंतजचो लघुपताकाना सहस्रकारी परिमण्डित मनीहर एहवो इन्द्रध्वजु अन्यध्वजनी अपेक्षायें मोटो तेमहेन्द्रध्वजजिनने आगलयकी चाले १० ।  
 जिहा जिहा अरहत भगवत जभारहे अथवा वैसे तिहा तिहा तलाल पत्रे करीछायी अने फूलपद्मविकारी सर्वतः व्याप्त ध्वजासहित घटापताका सहित  
 वर प्रधान अशोकवृक्ष जपर छायाकरे ११ । वेगली थोड़ीपूठे मस्तकने प्रदेश तेजमडल भामडल होय तेभामडल अधिकारने दसोदिने नसाडे १२ । जिहा

त्येकादशः ११ ईसित्ति ईषदत्त पिडुओत्ति पृष्ठतः पथाज्ञागे मउड्डाणमिति मस्तकप्रदेशेतेजोमण्डल प्रभापटलमितिद्वादश' १२ बहुसमरमणीयोभिभाग  
 इतित्रयोदशः १३ अहोसिरत्ति अघोयुखाः कटका भवतीति चतुर्दशः १४ ऋतवीविपरीताः कथमित्याह सुखस्पर्शभावतीति पचदशः ५१ योजनयावत् क्षेत्र  
 शुद्धिः सर्वर्त्तकवर्तेने षोडशः १६ जुतफुसिएत्ति उचितविन्दुपातेनेति निहययरेण्यति वातोत्खातमाकाशवर्त्तिरजो भवत्तीतुरेणुरिति गधोदकवर्षाभिधा  
 नः सप्तदशः १७ जलस्थलज यन्नास्तरं प्रभूतच कुसुमतेन हतस्थापिताजर्षमुखेन दशाईवर्णेन पचवर्णेन जानुनोक्तसेधस्य उच्चलस्यग्रमाण यस्य स जानुत्सेधप्रमाणमा

गोत्र्युसोगवरपायवे अजिसंजायइ ११ ईसिपिठले मउऊठाणंमि तेयमंऊलं अजिसंजायइ अर्थिकरे वियणं  
 दसादिसाले पन्नासेइ ११ बजसमरमणिज्जे अमिन्नागे १३ अहोसिरा कंठया जायति १४ उऊविवररीया  
 सुहफासा ज्वंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरन्निणामारुणं जोयणपरिमळलं सहेले समंता संपमज्जिज्ज

तीर्थंकर विहारकरे तिहा वणीसम रमणीक भूमिभाग होय १३ । जेणे मार्गे तीर्थंकर विहारकरे कांटा कधेमस्तकेहोय १४ । ऋतु विपरीत एतले उह्ना  
 लाये श्रीयालानीभाव श्रीयालायेउह्नालानीभाव तमाटे सुखरूपस्पर्शहोय १५ । शीतल सुखस्पर्श सुगंधि ठाढी मद गधयुक्त एहवा सर्वतवायरेकरी एकयीज  
 नमडलली सगली दिसाविदिसा प्रमार्ज १६ । जेणे मार्गे तीर्थंकर विहारकरे तेहमार्गेमेव आकाशवर्तीरज भूमिवर्तीरेणु गधजलनापरिमित सूक्ष्मसूक्ष्म विडु  
 ये करीनसाडे १७ । स्थल कुसुम तेचपाजाईप्रमुख जलकुसुम तेकमलादिक भास्वर तेजवत प्रभूतधणा नीचाछेवींट जेहना एतलेजईमुखे पांचवर्ण फूलकरीढी



च. पुष्पीपचारः पुष्पप्रकरइत्यष्टादश' १८ तथाकालागुरुपवरकुदुरुक्ततुङ्गधूवमघमघतङ्गधुद्वाभिरामि भवइत्ति कालागुरुगंधद्रव्यविशेषः प्रवरकुदुरुक्तचूडीडा  
 मिधान गंधद्रव्यतुरुक्तचूडिशिक्तकाभिधानं गंधद्रव्यमिति द्वंद्वस्तएतत्तच्चणो योधूपस्तस्यमघमघायमानो बहुलसौरभ्यो योगधउद्भुतउद्भूतस्तेनाभिरामभिरमणी  
 ययत्तत्तथा स्थाननिषीदनस्थान मितिप्रक्रमइत्येकीनविशतितमः १९ तथाउभयोपासिचणं अरहंताण भगवताण दुवेजक्काकडयतुडियथंभियभुयाचामरक्खेव  
 णं करतित्ति कटकानिप्रकोष्टाभरणविशेषाणुटितानि दाह्माभरणविशेषास्तेरतिवहुत्वेनस्तामिताविवस्तामितीभुजौययोस्ती तथायच्चौदेवाविविशतितमः २०  
 बृहद्वाचनायामनतरोक्तमतिशयद्वयनाधीयते अतस्तस्यापूर्वेष्टादशैव अमनीज्ञानांशब्दादीनामपकर्षोऽभावइत्येकीनविशतितमः १९ मनीज्ञानांप्रादुर्भावइति  
 विशतितमः २० पञ्चाहरओत्ति प्रव्याहरतीव्याकुर्वतीभगवतः हिययगमणीउत्ति हृदयंगमः जीयणीहारीत्ति योजनानतिक्रामी स्वरइत्येकविंशः २१ अद्वमाग

इ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पकिज्जइ १७ जलथलयन्नासुरपन्नतेणं विंठ्ठाविमुदससुवन्नेणं  
 कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८ अमणुन्नाणं सहफुरिसरसरूवगंधाणं अण्वकरिसो  
 नवइ मणुन्नाणं सहफुरिसरसरूवगंधाणं पाउल्लावो नवइ १९ उन्नले पासिंचणं अरहंताणं अगवंताणं दुवे

चणना जचप्रमाणमात्रे फूलनीपूजा फूलपगरकरे १८ । खोटा शब्दस्पर्शरसरूप गधनी अभाव हीय १९ । मनीहर शब्दस्पर्शरसरूपगधनी प्रादुर्भाव हीव  
 सिद्धात मूलमतीये वलीवाचनांतरे क्खणागुरुप्रमुख धूपउखेवे जिहंपासे वेचजभा चामरउखेवे २० । वखाण करतां भगवतनी हृदयंगम अनेसोहामणीयो ज

हीयति प्राकृतादोनांषणांभाषाविशेषाणां मध्येयामागधीनामभाषा रसोलसोमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा असमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणादिमागधीलुच्यते तगाधर्ममाख्याति तस्याएवातिकोमलत्वादिति द्वाविंश. २२ भासिज्जमाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणति आर्यानार्य देशोत्पन्नाना द्विपदा मनुयाद्यतुषदागवादयः सृगाश्चाटव्याः पक्षिणः प्रतीताः सरीसृपा उरुपरिसर्पाभुजपरिसर्पाश्चेति तेषांकिमात्मनआत्मातया आत्मीययेत्यर्थः भाषा तथा भाषाभावेनपरिणमतीतिसंबन्धः किभूतासौभाषित्याह हितमभ्युदयः शिवंपोक्ष सुराश्रवणकालोद्भवमानदन्ददातीतिहितशिवसुखदेतित्रयोविंशः २३ पूर्वभवांतरनादिकालेवा जातिप्रत्ययबद्धं निष्काचित वैरमभिन्नभावोयेषातेतथा तेषिच आसतामध्वेदेववैमानिका असुरान्गान्द्वभवनपतिविशेषा.

जरका कऋगुतुल्लियथज्जियन्नुया चाभरुक्खेवणं करति २० पछाहरन्ते वियणं हिययगमणीन्ते जोयणनीहारी  
सरो २१ जगवंचणं अरुमागहीए ज्ञासाए धग्गामाइक्खइ २२ सानियणं अरुमागहीज्ञासा ज्ञासिज्जमाणी  
तेसिसहेसि अरियमणारियाण दुप्पयच्चउप्पयमियपसुपरिक्खसरीसिवाण अण्णप्पणोहियसिवसुहदायज्ञास

नलगे विस्तरतो शब्दहीय २१ । भगवंतं क्व भाषामाहि अर्द्धमागधीभाषयेकरी धर्मपते कहे २२ । तेहीजपणि अर्द्धमागधीभाषा सगलाआर्यअनार्यदेशनाउप नानेद्विपदसमुत्थने चतुष्पदगवादिकने सृगश्चाटवीजीव पशुगामसबधी ढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहनाआत्मानेहित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनन्दतेहने देएहवी भाषापणेपरिणमे २२ । भजातरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकवद्विनिकायित वैर बाध्या जेणे एहवादेव आवैनिक १ । असुरनागकुमार एहभवनप तोदेव सुवर्णे शोभनजर्णीपितते ज्योतितीयत्त राक्षस किनर किपुरुष एह चारव्यां. २ विशेष गरुडलाछनपणाथकी सौपर्णकुमार भवनपति विशेष गधर्वमहोर

सुवर्णां शोभनवर्णां एते च ज्योतिष्का यच्च राज्ञस्य किन्नराः किंपुरुषाः व्यंतरभेदाः गरुडागण्डलां क्वनत्वात् सुपर्णकुमारभवनप्रतिविशेषाः गन्धर्वा महीरगाश्च व्यंतरविशेषा एव एतेषां द्वहः पसतचित्तमाणसा प्रशातानि समङ्गानि चित्राणि रागद्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्यतः करणानियेषांति प्रशातचित्रमानसा धर्मनिशामयति इति चतुर्विंशः २४ वृद्धवादतया इदमन्यदतिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपि चणं वदंती भगवतमिति गम्यते इति पचविंशः २५ आगताः सतीऽहंतः पादमूले निःप्रतियचनाभवति इति षड्विंशः २६ जञ्जो जञ्जो वियणति यत्र यत्रापि च देशे तञ्जो २ त्ति तत्र तत्रापि च पंचविंशती योजनेषु इति व्याख्यापद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगण इति सप्तविंशः २७ मारिजनमरक इत्यष्टाविंशः २८ स्वचक्रं स्वकीयराजसैन्यं तदुपद्रवका

त्वाणु परिणमइ २३ पुच्छवद्भवेरावियणं देवासुरनागसुखस्य जखरस्य सकिन्नरकिंपुरिसगरुलगां च छुम्भहोरगाञ्चुरहलु  
पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अण्डउच्छियपावयणि या वियणमागया वदलि २५ अणगया  
समाणा अणहलु पायमूले निष्पन्निवयणाहवति २६ जलु जलु वियणं अणहंतो जगवंतो बिहरति तलु तलु

गव्यतरविशेष एहसगला वैरभावच्छांडीने अरिहतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशातथयोक्ते चित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवार्धमप्रते सांभले २४ ।  
अन्यतीर्थी अन्ययूथिकापिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनाधणीते हीपणि आव्योथका भगवतप्रते वार्दे २५ । तेह अन्यशास्त्रनाबादी प्रतिवादी आब्याथका  
अरिहतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थयया २६ । जेणेप्रदेशे अरिहत भगवतविहरे विचरे तिहां योजन पचवीसलगे ईति धान्यादिउप  
द्रवकारी प्रचुर मूषकादिक न होय २७ । मारी लोगमरकीन होय २८ । स्वचक्रं स्वदेशी कटक उपद्रवनकरे २९ । परचक्रं परदेशी कटकानी भयन होय ३० ।

यन्ते चतुर्णां भैवैकदा जन्मसंभवात्तथा हि मेरोपूर्वापरशिलातलयोर्द्वे द्वे सिंहासनभवतोऽतो द्वावेव हविर्वाभिपिच्छेत्तो द्वयोर्द्वयोरेव जनेति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो  
स्तदानीं दिवससञ्ज्ञावा नभरतैरावतयो जिनोत्पत्तिरङ्गरात्रएव जिनोत्पत्तेरिति पठमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यां त्रिशन्नरकवासानां लक्षाणि पचम्यां त्रीणि षष्ठ्यापचो  
नलक्षं सप्तम्यां पचनरका एवं सर्वं मौलने चतुस्त्रिंशत्क्षणाणि भवन्तीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशया आगमे

वाही खिष्यामेव उवसमंति ३४ जंबूद्वीवेणंदीवे चउत्तीसं चक्षवहिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो  
न्नरहेरवए जंबूद्वीवेणंदीवे चोत्तीसंदीहवेयद्वा प० जंबूद्वीवेणंदीवे उक्षोसपएचोत्तीसं तित्यकरा समुप्यज्जांति  
चमरस्सणं अणुरिंदस्स अणुररन्धो चोत्तीसं नवणावाससयसहस्सा प० पठमपंचमत्तठीसत्तमासु चउसु  
पुठवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयण्डेइरोसा प०

होय अनेइहारात्रिहोय तिवारं तिहां दिवसहोय । तीर्थकरनो जन्म अर्धरात्रीयें होय तेमाटे चौत्तीसनी जन्मसमकालिनकह्यो । मेरुनी पूर्वपश्चिम शिलात  
लने उपर दीयदीय सिंहासनछे एहथी बेबेनी हीज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये बेबे तीर्थकरनो जन्म कहिवो । असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र  
असुरेन्द्रना चउत्तीसभवनवास श्रतसहस्र एतलेचउत्तीसलाख भवनकह्या । पहिली नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख छठ्ठीयें पांचजणा  
एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिथी चौत्तीसलाखनरकावासकह्या इतिचौत्तीसमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवे पैत्तीसमो  
समवायलिखेछे पैत्तीस सत्यवचनना अतिशयकह्या । संस्कारवचन संस्कातलक्षणवत्तपणो १ । उदात्तत्व जंचेखरेवीलवो २ । उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबील

न दृष्टा एतेतुग्रथांतरदृष्टाः संभावितवचनंहिगुणवद्वक्तव्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारीपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७  
 महार्थं ८ अव्याहृतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६  
 अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविद्ध २० अर्थधर्माभ्यासानेपेतम् २१ उदार २२ परनिदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उप  
 गतस्नाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादितास्त्रिन्नकौतूहलम् २६ अद्रुत २७ अनतिविलम्बितम् २८ विभ्रमविलेपकिलिकिचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसम्प्रया  
 द्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्यपरिगृहम् ३३ अपरिखिदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति । वचनम् महानुभाववैकृत्यमिति तत्रसंस्कार  
 वत्त्वसंस्कृतादिलक्षणयुक्तम् १ उदात्तत्वमुच्चेद्वृत्तिता २ उपचारीपेतत्वमग्रास्यता ३ गंभीरशब्दमेघस्यैव ४ अनुनादित्वं प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वसरलत्व  
 म् ६ उपनीतरागत्व मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षाश्रयिताः अन्येत्यर्थान्यास्तत्रमहार्थत्वम् वृहदभिधायता ८ अव्याहृतपौर्वापर्यत्वम्  
 पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वमभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तुं शिष्टतासूचकत्व वा १० असंदिग्धत्व असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परद्रव्यणा  
 विषयता १२ हृदयग्राहिलम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विविचितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

वो ३ । गंभीर जडस्वरवीलवो ४ । वीलतां प्रतिशब्दहोय ५ । सरसवचनवीलवो ६ । मालकौसादि राग सहित स्वरं वीलवो ७ । थोडिवचने अर्थघणोएहवू वील  
 वी ८ । पूर्वापर विरोध रहित ९ । सिद्धांतनी प्रतिपादक १० । संदेह रहित ११ । अनिरावादीना वचने परामर्शे नही १२ । सांभलहारनी मनहरे १३ । दे

स्तत्वम् सुसबंधस्थसतः प्रसरणं अथवाऽसंवद्धाधिकारित्वातिविस्तरयोरभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परिण पदानां वाक्यानां वासापेक्षता १७ अभि-  
 जातत्वचक्षुः प्रतिपादयत्येवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मानुदुषट्टनस्वरूपत्वम् २० अ-  
 र्थधर्माभ्यासानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वअभिधेयार्थस्यातुच्छत्वगुणगुणविशेषवा २२ परनिदात्मोक्तर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतत्वा-  
 धत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तज्ञाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिङ्गादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेक्षता २५ उत्पादिताद्विन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेओलु-  
 णां जनितमत्रिश्च कौतुक येन तत्तथातज्ञावस्तत्वम् २६ अद्रुतत्वमनतिविलंबितत्वप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तु-  
 मनसोन्नातता विलेपस्तस्यैवाभिधेयार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिचितरोषभयाभिलाषादिभावाना युगपद्वासकृत्करणमादिशब्दान्मनोदोषांतरपरिगृह्यस्त्विविमुक्त-  
 यत्तत्तथातज्ञावस्तत्वम् २९ अनेकजातिसञ्चयाद्विचित्रत्वम् इहजातयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनान्तरापेक्षयाढौकितविशेषता ३१ सा-  
 शकाले उचितवचनबोलवी १४ अतिविस्तरकरी अणमिलोनहोय १५ । कहिवानि वस्तुने अनुसारिहोय १६ । पहिलापदने पाछिलंपद सापेक्षपणबोलवी १७  
 प्रत्यक्ष समभवायोग्य बात कहिवौ १८ । घृतगुडनीपरे मधुर अशुभवे १९ । अनेराना मनदेव्यथा नकरे एहवी २० । अर्थ धर्म सहित बोलवी २१ । उत्कृष्ट  
 अर्थनू कयक २२ । परनिदा आत्मस्तुति रहित २३ । प्रससा करवा योग्य २४ । कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चित्तने चमत्कारकरे २६  
 बोलता उतावलीनहोय २७ । रही रहो ने अक्षर उच्चारण करवू एहदीषरहित २८ । आतिरहित कहिवायोग्य वस्तुये सबद क्रीधभयादि रहित बोल  
 वी २९ । जे पदार्थ वर्णवे तेहनी विशेष रूप कहिवी ३० । वचन कहतां वचनांतरनीअपेक्षायि बोलवी ३१ । वेगला वेगला पदकरी अन्य रूपेबोलवी ३२ ।

तथागोलवहत्तावर्तुलायेसमुद्गकाभाजनविशेषास्तेषु । जिणसकहाउत्ति जिनसक्थीनि तीर्थकराणांमनुजलोकनिर्वृतानांसक्ताग्नस्थीनिप्रज्ञप्तानीतिवीयचउल्लो  
 त्यादि द्वितीयपुथिद्व्यापचविशतिर्नरकलक्षाणिचतुर्थान्तुदेशति पचत्रियत्तानौति ॥ ३५ ॥ पट्त्रिंशत्थानकंसष्टमेव नवरं चैत्राश्वयुजीर्मांसयोः

रिंच अरुत्तेरसअरुत्तेरसजोयणाणि वज्जेत्ता मज्जे पणतीसजोयणेसु वइरामएसु गोलवहसमुगएसु जिणस  
 कहाउ प ० वितियचउल्लोसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा प ० ॥ ३५ ॥ लत्ती

सउत्तरज्जयणा प ० तं ० । विणयसुय १ परीसहा २ चाउरंगिज्जं ३ अरुसंखयं ४ अकामसकाममरणिज्जं ५  
 पुरिसविज्जा ६ उरग्निज्जं ७ काविलियं ८ नमिपवज्जा ९ दुमपत्तयं १० बज्जसुयपुज्जा ११ हरिएसिज्जं  
 १२ चित्तसंनूय १३ उसुयारिज्जं १४ सन्निरुगं १५ समाहिहाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८

वीतरागनी दाढा कही बीजीपृथिवी अने चौथी नरक पृथिवी बिहुनामिली ३५ । नरकावासा शतसहस्र कह्या एतले बीजीये २५ । लाख नरकावासा  
 चौथी ये १० लाख नरकावास कह्या ॥ एह पैचीसमी समवाय संपूर्ण ॥ ३५ ॥ हिवे छचीसमी समवाय लिखे । छचीस उत्तराध्ययनना अध्य  
 यन कह्या तेकहे । पहिली अध्ययन विनयश्रुत १ । परीसहाध्ययन २ । चउरगीयो ३ । असंखय ४ । अकाम सकाम सरणाय ५ । अविद्यावंतपुरुषनी ६  
 उरभिकबीकडानी ७ । कपिलकेवलीनी ८ । नमिप्रवज्ज्यानमिराजानी ९ द्रुमपत्रकनी १० बहुश्रुतपूजानी ११ । हरिकेशीबलनी १२ । चित्रसभूतिनी १३  
 इषुकारियराजानी १४ । भिक्षु अध्ययन १५ । समाधिस्थानक १६ । पापशमणनी १७ । सयतीराजानी १८ । सयगुचनी १९ । वल्लोअनाथीनी २० । समुद्र

सकृदेकदापूर्णमायामिति व्यवहारोनिश्चयतस्तु मेघसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशद्गुलिकां पदत्रयमाना माहच चैतासीएसुमासेसुतिपया ॥

मियाचारिया ११ अणुणाहपवृज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गीयमकेसिज्जं २३ समितीउ  
२४ जन्नतिज्जं २५ सामायारी २६ खलुकेज्ज २७ मोखमग्गई २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गी ३० च  
रणबिही ३१ पमायठाणाइ ३२ कम्मपयणी ३३ लेसज्जयण ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवबिज्जतीय  
३६ चमरस्सणं असुरिदस्स असुररस्सो सन्नासुहम्मा ठत्तीसजोयणाडं उहुउच्चत्तेणं होत्या सध्णिस्सणं अर  
हने महावीरस्स ठत्तीसं अज्जाणंसाहस्सोउ होत्या चैतासीएपुस्समासीसु सइठत्तीसंगुलियं सूरिए पोहिसी

पालनी २१ । रथनेनोनी २२ गीतम गणधर केशीअणगारनी २३ । सुमति गुप्तिनी २४ । जयवीष विजयवीपनी २५ । समाचारीनी २६ । खलुकीय गर्गा  
चार्यनी २७ । मोक्ष मार्गनी २८ । अप्रमादनी २९ । तप मार्गनी ३० । चरण विधिनी ३१ । प्रमादस्थानकनी । ३२ । कर्मप्रकृतिनी ३३ । लेश्याध्ययन ३४ ।  
अणगारमार्गनी ३५ । जीवा जीव विभक्तिनी ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रनीसभा सुधर्मा क्वचीस योजन जची कही । अमण तपस्वी भगवतज्ञा  
नवत महावीरने क्वचीस आर्याना सहस्र थया । एतले क्वचीस सहस्र साधवी इइ । चैवअने आप्पोज मासे सतिति सक्कत् पुनिमदिने क्वचीसे अगुले सूर्य  
पौरुषी क्वाया निनर्तावि एतले चित्तासीएमासेसुतिपया होइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाणे दण्णनी क्वाय मापीये ३६ अगुल क्वाया विण्णनी होय



हीइपीरसीति ॥ ३६ ॥

॥ सप्तविंशस्थानकम्, पव्यक्तम् नवरम् कुंयुनाथस्येहसप्तविंशद्गणधराउक्ता आवश्यक्तेतुपञ्चत्रिंशत् इतिमतांतरम् तथाहेमव  
तादिजोवयीरुक्तप्रमाणसम्बादगाथा सत्ततोसहस्रा क्वचसयाजीयणाणचउसयरा हेमवयवासजीवा किचूणासोलसकलायति कलाएकीनविशतिभागीयो  
जनस्येति तथाविजयादीनिपूर्वादीनिजवृद्धीपद्वाराणि तत्रायकास्तत्रामतोदेवास्तेषांराजधान्यस्तत्रामिकाएव पूर्वादितुइतोऽसख्ययतमे जवृद्धीपइति बुद्धि

ढायनिवृत्तइ ॥ ३६ ॥

॥ कुंथुस्सणंअरहने सत्ततीसंगणा सत्ततोसंगणहरा होत्या हेमवयएरन्न  
वयानुण जीवानु सत्ततीसं जोयणसहस्साइं ठच्चउसत्तरे जोयणसए सोलसय एगूणवीसडनाए जोयणस्स  
किचिविसेसूणानु आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारे पौरुषी होय । इति छत्रीसमी समवाय सपूर्ण ॥ ३६ ॥

हिसंगणधर कह्या । आवश्यकी पैत्रीस सांभलियेछे तेमतांतरके । हिमवत क्षेत्र १ । ऐरवत २ । एहवेहु रुगलक्षेत्रनो जीवा सैत्रीस सैत्रीस जोजन सहस छ से चि  
हुत्तरियोजन ३७६७४ । १८ कला जपरि १६ भाग उगुणीसभाग हाइआ एक योजननां काइक विशेषजणी लांवपणे कही । सगलाई जवृद्धीप ना पूर्वादि  
दिशे चार पौलीना धणी विजयादिकदेव तेहनी पूर्वं विजय दतिणे वैजयत पविमे जयत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैत्रीस योजन  
जच पणे कह्यो । बुद्धिकाये लडुडोये विमान प्रविभक्तो कालिकश्रुत विषे पहिले वर्ग सैत्रीस उद्देशकाल अध्ययनदीठ उद्देशाना काल कहतां अवसरकह्या । आ

तरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागीऽष्टत्रिंशद्योजनसहस्रास्थुन्नतत्वेनभवतीति मतान्तरैणतुत्रिषष्टिसहस्राण्य  
दाह मेरुस्सतित्रिकडा पुढवीवलवइरसकरापढमं रयएयजायरूवे अर्केफलिहयवीयंतु एकागारंतइयंतपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोजयणसहस्रपढमंवाहल्लेणंचवी  
यंतु २ तेवड्डिसहस्रातइयं छत्तीसंजोजयणसहस्रा मेरुस्सुवरिचूलाओ च्छिठोजोजयणदुवीसंति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानकंव्यक्तमेव नवरं अहोहि  
यत्ति नियतत्वेनविषयाऽवधिज्ञानिनस्सोपाशतानीति कुलपव्वयत्ति चेन्नमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादानिवन्धनानि भवन्तीती

या होत्या हेमवएयरन्नवईया णं जीवा णं धणूपिठे अठतीस जोजयणसहस्राइं सत्तयचत्तालेजोजयणसए दस  
एगूणवीसइन्नागे जोजयणस्स किंचिविसेसूणा परिरुक्केवेणं प० अत्यस्स णं पल्लयरत्तो वितिएकंफे अठतीसं  
जोजयणसहस्राइं उहुंउच्चत्तेणं होत्या खुम्मियाएण विमाणपविन्नतीए वितिएवगे अठतीसंउद्देसत्थकाला प०  
॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहउ एगूणचत्तालीसं अाहोहियसया होत्या समयवेत्ते एगूणचत्ताली

क योजनना कांईएक विशेष जंणा परिल्लेपे परिधियेकही । जेणीये अंतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामि ते अस्साचल एतले मेरूपर्वत सकलपर्वतनी राजा  
तेहनी बीजो कांड अठत्तीस सहस्र योजन जंचपणे कह्यो । मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछि । छुट्टिकाये लहुडिये विमान प्रविभक्तिये बीजे वर्गे अ  
ठत्तीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवशर कहा ॥ इतिअठत्तीसमी समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिंवे उगणचालीसमी समवाय लिखियेछे  
नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवविते नियत चेन्न तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३८ । हुया एतले ३९ । से अवधिज्ञानी हुया । समय

हैतैरपमाकता तत्रवर्षधरास्त्रिंश जंबूद्वीपधातकीखण्डपुष्करार्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषणांभावात् मन्दराः पंचपुकाराधातकीखण्डपुष्करार्धयोः पूर्वतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दोक्षेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति चतुर्थीं दश पचम्यात्रीणि षष्ठ्यांपंचोनलच्चं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त संख्यानारकाणामिति । नाणावरणिज्जेल्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनोयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतस्रइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३८ ॥

सं कुलपट्वया प० तं० तीसं बासहरा पंच मंदरा चत्तारि उमुकारा दोच्च चतुत्य पंचम लछ सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्रस्स अया उयस्स एयासिणं चउरहं कम्मपगणीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगणीनु प० ॥ ३९ ॥ अरहनु

चेत्त अट्टाई द्वीप तेमांही ३८ । कुल पर्वत चेत्रना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कट्ठा लोकमांहि पणि कुलते लोक मर्यादाना कारणेहे तेकहेहे । जंबू द्वीप माही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखण्डमाहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्ध मांहि पणि १२ एवं ३० वर्षधर यथा इषुकार चार पर्वत वेधातकी खड मांहि बेपुष्करार्ध मांहि एव ४ । मेरू ५ । जंबूद्वीप मांहि एक मेरू धातकीखण्डमांहि २ मेरू पुष्करार्धमांहि २ मेरू एवं ५ मेरू स र्वमि लीशुल पर्वत ३८ यथा । बीजो नरक पृथिवी ये २५ लाख नरकावासा चउथी ये १० लाख पांचमी ये ३ लाख छठेये पांचे जंणा १ लाखसातमी ये ५ नरकावासा सर्बमिली ३८ । लाख नरकावासा कट्ठा । ज्ञानावरणीय कर्मनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनोयनो २२ । गोत्रनी २ आउखानी ४ एहचारकर्मनी प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कही ॥ इति ३८ मोसमवाय सपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिंवे चालीसमी समवाय लिखे हे । अरिष्टनेमी

चत्वारिंशस्थानकव्यक्तं नवरं वरसाहपुष्पिमासिणीएत्ति यत्कीदृचित् पुस्तकेषु दृश्यते सोपपादः फगुणपुष्पिमासिणीएत्ति अत्राध्येयद्वयमुच्यते पोसेमासेचउपपया  
इतिवचना ए पोषोपूष्णिमास्यामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासाभवति ततोमाघेचत्वारि फालुनेचचत्वारिंशंगुलानिपतितानीत्येवं फाल्गुनपौर्णमास्यां चत्वारिंशदंगुलि  
कापौरुषीच्छायाभवति कार्तिकामध्येवमेव यतः चैत्तासोएसुमासेसुतिपयाहोइपोरिसी लुक्तं ततः पटचयस्याषड्विंशदंगुलप्रमाणस्य कार्तिकमासातिक्रमे

णं अरिठनेमिरस चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीउ होत्या मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उहुंउच्चतेणं प०  
संती अरहा चत्तालीसं धणइंउहुं उच्चतेणं होत्या नूयाणंदस्स णं नागरन्तो चत्तालीसं नवणावाससयसह  
स्सा प० खुम्मियाएणं विमाणपविन्नत्तीए तइएवगे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फगुणपुष्पिमासिणीएणं सू

अरिहंतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनी संपदाथइं । मेरुपर्वत जंचो एक लाखयोजनके ऊपरथी पिहुली एक सहस्रयोजन ते  
विचे चूलिका चीटीनी परि जीगइ मेरुनी चूलिका चालीस योजन ऊचो कहो । श्रान्तिनाथ सोलमा अरिहत चालीस धनुष जंचा थया उत्तरेद्र नागराजा  
भूतानेद्रना चालीस भवनावासना श्रतसहस्र कह्या । एतले चालीस लाख भवन कह्या । बुद्रिका ये लहुडीये विमान प्रविभक्तिये एतले चौजे वर्ग ४० उद्देश  
नकाला अध्ययनगा उद्देशाना अवसर कह्या । एतने जेतला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या । फागुणनी पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणे लणनी छाया मावीये  
तेहनी ४० अंगुल प्रमाणे पीरसी छाया प्रते निवर्तवीनि चार भ्रमण करे । कार्तिकी पूनिमे पणि एमज ४० अंगुलप्रमाणे पीरसी इये पछे साते २ दिवसे

चतुरंगुलरुदौ चत्वारिंशदंगुलिकासाभवतीति ॥ ४० ॥ एकचत्वारिंशस्थानकंसुगम नवरं चउसुइत्यादि क्रमेणसूचीक्तासुचतस्यु प्रथमचतुर्थ  
पट्टसप्तमोषुष्टयिवोषु चिंशतीदशानांचनरकलक्षाणां पंचीनस्यचैकस्यपचानाचनरकाणां भावाद्यथोक्तसंख्यास्तिभवतीति ॥ ४१ ॥ द्विचत्वारिंशस्था

रिए चत्तालीसगुलियं पोरिसीढायं निवृत्तइत्ता णं चारंचरइ एवं कत्तियाएविपुस्सिमाए महासुद्धो कप्पे चत्ता  
लीसं विमाणावाससहस्सा प० ॥ ४० ॥ नमिस्स णं झरहजे एकचत्तालीसं झज्जियासाह  
स्सीजे होल्या चउसुपुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० त० रयणप्पन्नाए पंकप्पन्नाए तमाए  
तमतमाए महालियाणं विमाणपविन्नत्तीए पढमेवगे एकचत्तालीसं उट्टेसणकाला प० ॥ ४१ ॥

एकेक अगुल वधारिये मासे ४ अगुल वधे तिवारे कार्तिक पूनिमे ४० अगुल थायपौरुपी । महाशुद्धा सातमे देव  
लोके ४० सहस्स विमान कह्या । इति ४० मो समवाय सपूर्ण ॥ ४० ॥ हिवे इगतालीसमी समवाय लिखे । नमिनाय अरिहंतने ४१ । आर्याना  
सहस्स थया एतलेसाब्धीना सहस्स हुया । चार नरक पृथिवीये ४१ लाख नरकावासा कह्या । ते कहेछे । रत्तप्रभाये ३० लाख पकप्रभाये १० लाख तमाये  
पाच जंणा १ लाख तमतमाये ५ एव सर्वमिली ४१ लाख नरकावासा कह्या । वडिये विमानप्रवित्तिये पहिले वर्गे ४१ लाख उद्देशनकाल अध्ययन अध्ययदौ  
ठ उद्देशना अवसर कह्याछे । इति ४१ मो समवाय ॥ ४१ ॥ हिवे वेयालीसमी समवाय लिखेछे । अमण भगवत ज्ञानवंत श्रीमहावीर देव  
वेयालीस वर्ष भांभरे छत्तस्य पर्याये १२ वर्ष ६ मास १५ दिन केवल पर्याय कार्दक न्यून ३० वर्ष सर्वमिली ४२ वर्ष सामान्य पर्याय पाली सिद्ध थया । याव

नकव्यक्तमेव नवरं बायालीसंति छद्मस्थपर्यायिद्वादशवर्षाणि घणसासार्त्तसासार्त्ति केवलिपर्यायस्तुदेशानानि दिग्शङ्कपाणीति पर्यघणाकल्पेद्विचत्वारिंशदेषवर्षाणि महावीरपर्यायोभिहित इहतु साधिक उक्त स्तत्र पर्यघणाकल्पे यदल्पमधिकक तन्नविवञ्चितमिति सम्भाव्यतइति जावत्तिकारणात् बुद्धमुत्तेअंतगडि परि निब्बुडेसब्बदुक्खणहीणिति दृश्यं जम्बूद्वीपस्थेत्यादि पुरत्थिमिक्काओचरिमत्ताओत्ति जगतीबाह्य परिधेरपसृत्य गोस्तूभस्थावासपर्वतस्य वेलधरनागराजसंबंधि नः पाञ्चाल्यसीमांतश्चरमविभागोवा यावतांतरेणभवति एसणत्ति एतदतरं द्विचारिशत्योजनसहस्राणिप्रज्ञप्त मंतरशब्देन विशेषीष्यभिधीयते इत्यतआह अ

समणेन्नगवंमहावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामस्सपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जावसब्बदुक्खकप्पहीणे जंबूद्वीवस्स णं द्वीवस्स पुरत्थिमिक्काओ चरमंतानु गोथून्नस्सणं ज्ञावासपह्यस्स पञ्चत्थिमिक्खेचरमते एसणं बायालीसं जोयणसहस्साइं ज्ञवाहाए ज्यंतरे प० एवं चउद्दिंसिं पि दगन्नासे संखो दयसीमिय कालोएणंस

त् शब्दे करी बुद्ध यथा सुक्त यथा सर्वदुःख थकी सुक्तयथा अजरामर थया । जंबूद्वीपनां छेहल्या प्रदेश थकी जगतीना बाह्यप्रदेशथकी मांडी गोस्तूभनाम वेलधर नागराजानी आवास पर्वत तेहनो पश्चिमनी चरमांत छेहल्यो प्रदेश एतले जगती थकी मांडी गोस्तूभ पर्वतनो पश्चिमात एतलाविच ४२ सहस्र योजन आवाधा विचे आंतरी कह्यो । एम चिहुद्दिसे दक्षिण जंबूद्वीपनी जगती थकी मांडी ४२ योजन सहस्रे दक्षिण समुद्रमांडीज दगभास पर्वत वे लंधर नागराजानी एम पश्चिम जगती थकी मांडी पक्खिम समुद्र माहि ४२ योजन सहस्र शंख पर्वत एम उत्तरे दगसीम । पर्वत कालोदधि समुद्रे ४२ चद्र मा ४२ सूर्य उद्योत करेछे । समूर्च्छिम सुजपर सर्पनी जंदर गोह नीलियादिकनी उल्लूष्टो ४२ वर्ष सहस्र प्रमाणे आउखुं कह्यो । नाम कर्म छठ्ठो ४२ भेदे कह्यो

बाह्याएति व्यवधानापेक्षयायदंतरंतदित्यर्थः कालीयगोति धातकौखण्डपरिवेष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गङ्गनामेत्यादि गतिनामयदुदयान्नारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेर्कैद्वियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकाशरीरकरोति यदुदगादंगानां शिरः प्रभृतीनां उपांगानां चांगुल्यादीनां विभा गोभवति तच्छरीरोपांगनाम बध्यमानानां च संबधकारणं शरीरोपांगनाम तथा औदारिकादिशरीरपुद्गलानां पूर्वबद्धानां बध्यमानानां च संबधकारणशरीर बन्धनाम तथा औदारिकादि शरीरपुद्गलानामुद्गीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसघातनाम तथा स्यात्तस्माद्विधशक्तिनिमित्तभूतोरचनानां वि शेषीभवति तत्संहनननाम सस्थानसमचतुरस्त्राणिलक्षणभवति तत्संस्थाननाम तथा यदुदयाद्वर्णादिविशेषवति शरीराणि भवन्ति तद्वर्णादिनाम तथा यदुदया

मुद्दे वायालीसं चंदाजोइंसुवा जोइस्सतिवा वायालीसंगूरियापन्नासंसुवा ३ समुच्छिमञ्जुयपरि सप्पाण उक्खोसेणं वायालीसंवाससहस्साइं ठिइं प० नामकम्मे वायालीसविहे प० तं० गङ्गनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरवंगनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे सठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

तेकहेच्छे । नरकादिक नीगतिपाप्मवी जेहने उदे तेगतिनाम १ एकैद्वियादिक जाति पाप्मिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पाप्मिये ते शरीर नाम ३ एमजेकर्मने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अगोपांग अगते अगुलीनखादिते अंग उपांग ४ औदारिकादिक पांच शरीरनो बधनो करवी ते शरीर बधननाम ५ औदारिकादि पांचशरीरनांपुद्गल ग्रहो ने रवनानो करिवो ते शरीरस घातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचना ना विशेषते सह नन नाम ७ सस्थान समचतुरस्तादिक ज्ञज्ञण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गव सुगंधादिक सुरभि गंध दूरभिगंध १० रस मधुरादिक पांच

दगुरुलघु स्वयंशरीरजीवानां भवति तद्गुरुलघुनाम तथायतोऽयं गावयवः प्रतिजिह्विकादिराल्मीपघातको जायते तदुपघातनाम तथायतोऽयं गावयव एव विषात्म कोदंष्ट्रोत्वगाहि परेषामुपघातको भवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतराले जीवीयाति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छ्वासनिश्वात्तिर्भवति तदुच्छ्वास

रसनामे फासनामे अगुरुलघुनामे उवघायनामे अणुपुष्टीनामे उरसांसनामे अणुयव  
नामे उज्जीयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुज्जनामे पज्जनामे अपज्जत्तनामे  
साधारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे सुभनामे असुभनामे सुन्नगनामे दुन्नगनामे

जाणिवा ११ स्वर्ग गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनी शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरु लघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखेकरे आत्माने  
उपवाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ अंतराल गतिये जीव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उस्सासू नीसासलीजे तेजसा  
स नाम १७ । जेह कर्मने उदे शरीर तापवंत होय ते आतप नाम १८ । जेह कर्मने उदे शरीर उद्योतवत होय ते उद्योत नाम कर्म । १९ । जेह कर्मने उ  
देये भली भंडी गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २० । जेह कर्मना उदय थकी जीव चाले ते वस नाम २१ । जेह कर्मना उदय थी जीव स्थिर  
रहै ते स्थावर नाम कर्म २२ । जेह कर्मना उदय थी दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३ । जेह कर्मना उदय थी जीव दृष्टि गोचर होय ते बादरना  
म कर्म २४ । पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५ । पूरी पर्याप्ति नकरे ते अपर्याप्ति नाम २६ । जेह कर्मने उदये अनता जीवनी एक शरीर पांमिये ते  
साधारण नाम २७ । जेह कर्मने उदये एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहै जेह थी ते स्थिर नाम २९ । अगोपांग तात्थायकां तटे ते



नाम तथायदुदयाज्जीवस्त्रापत्रच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यबिम्बस्थिवीकाग्रिकानां तथायतीतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायत. शुभे  
त एगमनयुक्तोभवति तद्विहायीगतिनाम वसनामादीव्यष्टीप्रतीतार्थानि तथायतः स्थिराणां दन्ताद्यवयवानां निष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम यतश्चम्बूजिह्वादीनाम्  
स्थिराणां निष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवं शिरः प्रभृतीनां शुभानां तच्छुभनाम पापादीनाम शुभनाम इति शेषाणि प्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातो जीवदेहिषुत्र्या  
दिलिङ्गाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमान निर्माणनामिति पचमच्छद्मोसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचित्यर्थ. पठमबीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

दिलिङ्गाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमान निर्माणनामिति पचमच्छद्मोसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचित्यर्थ. पठमबीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

सुरसरनामे दुस्सरनामे व्याएज्जनामे जसोक्तिनामे अजसोक्तिनामे निम्माणनामे  
तित्यकरनामे लवणे णं समुद्दे वायालीस नागसोहेरती७ अजसोक्तिनामे जसोक्तिनामे अजसोक्तिनामे निम्माणनामे  
पवित्रतीए वितिएवगे वायालीस उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसप्पिणीए पंचमठ्ठीनुसमाउ वायालीस

प्रस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१। अशुभनाम ३२। जेह कर्मने उदये सहने बल्लभ होय ते सुभगनाम ३३। जेह कर्मथी सहने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम ३४  
जेह कर्मने उदये कउभलोहोय ते सुखर नाम ३५। भंडीकउहोय ते दुस्सर नाम ३६ जेह कर्म थो वचन सहने मान्यथाय ते अदियनाम ३७। वचनकोईनमाने  
ते अनादिय नाम ३८। यशकीर्ति वाधे ते जसोक्तिनाम ३९ यश कीर्ति नहोय ते अजस कीर्ति नाम ४०। ठामो ठाम अगोपगनी रचिवो ते निर्मा  
ण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी सहने पूज्यथाय ते तोर्थकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बैतालीस हजार नागदेवता जवूहीप तरफनी पाणौ  
नी बैला प्रते धरेछे। वडो विमान प्रविभत्तोयें बीजेवर्गे ४२ उद्देशनकाल कह्या अध्ययन कह्या। एकैक अवसर्पिणी कालें पडतेकालें पांचमो छठो दुःखमा

ति ॥ ४२ ॥ अत्रिचत्वारिंशस्थानकोपि किंचिद्विचिख्यते कस्मिन्निवागज्जयणत्तिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्य फलं तत्रतिपादकान्यध्ययनानिकर्मविपाकाध्ययनानि एतानि च एकादशौगद्वितीयांगयोः सम्भाव्यत इति जंबूद्वीवस्त्राणि मित्यादि जंबूद्वीपपौरस्याताज्ञोस्त्रुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनाना सहस्राणि तद्विष्कम्भश्च सहस्रतद्विकाया द्वाविंशतेरत्यन्तेना विवक्षणा देव त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणि भवन्तीति एवं च उद्दिशि पित्त उल्लादिगतभवेन च तस्मादिश उल्ला अन्यथा एवति

वाससहस्राङ्गं कालेणं प० एगमेगाए उसाप्पिणीए पढमवीयानु समानु वायालीसं वाससहस्राङ्गं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीस कम्मविवागज्जयणा प० । पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्रा प० जंबूद्वीवस्त्राणि पुरात्थिमिस्सानु चरमंतः नु गोथूनस्त्राणि व्यावासपव्वयस्स पुरात्थिमिस्से चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्राङ्गं अवाहाए अंतरे प० एवं च उद्दिशि पित्त दग्गनासे

दुखम दुखमा वेहु मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमी आरी २१ हजार वर्षनी छट्ठी २१ हजार वर्षनी वेहु मिली ४२ सहस्र प्रमाणे कह्यो एकेक उत्तर्पिणी काले चढतेकाले पहिली आरी अने दूजी आरी वेहु मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाणे कह्यो ॥ इति बैतालीसमी समवाय संपूर्ण ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालीसमी समवाय लिखिछे ॥ तेयालीस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म वि

पाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एव ४३ अध्ययन कह्या । पहिली ये ३० लाख चौथीये १० लाख पांच मीये ३ लाख एवं पहिली चौथी पांचमी नरक दृथिवी ना मिली तेयालीसलाख नरकावासा कह्या । जंबूद्वीप नामा द्वीपनी जगतीना छेहल्या प्रदेश

इव क्रमसाधम्यात्युत्पद्युगानि अणुपिठ्ठि आनुपथ्या अणुबधति पाठांतरे तृतीयादर्शनादननुबधेन सातत्येन सिद्धानि जावतिकरणेन बुद्धाद् मुक्ताद् सव्वदुक्क  
 प्पहीणाइतिट्ठस्य महालियाएण, विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गचतुश्चत्वारिंशद्वैशनकाला, प्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानकेत्विदलित्येते समयखेत्तेत्ति  
 कालीपलञ्चितत्तेन मनुष्येत्तमिलयर्थः सीमतएणति प्रथमपृथिव्यां प्रथमप्रस्ते मध्यभागवतोवृत्तीनरकैद्रः सीमतइति उड्डविमाणेत्ति सीधमेशानयोः प्रथमप्रस्त

सजुगाइं अणुपिठ्ठसिद्धां जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरस्सो चोयालीसं जवणावाससयस  
 हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उट्टेसणकाला प० ॥ ४४ ॥  
 समयखेत्ते णं पणयालीसं जोजणसयसहस्साइं ज्ञायामविस्सजेणं प० सीमतएणं नरएणपणयालीसं जोजण  
 सयसहस्साइं ज्ञायामविस्सजे णं प० एवउट्टुविमाणेवि इंसिपझाराणं पुट्ठवी एवंचेव धम्मएणंअरहा पणयालीसं

एदिशे धरणेद्र नागेद्र नागराजाना चौतालीस लाख भवनावास कह्या । बड्ढी विमान प्रविभत्तिये चउथे वर्गे चौतालीस उट्टेसन काल अध्ययन विशेष  
 कह्या ॥ इति चौतालीसमी समयाय सपूर्ण ॥ ४४ ॥ हित्ते पेतालीसमी लिखिच्छे । पेतालीसलाख योजन प्रमाणे पट्टिही पृथिवीये पट्टिले पाथ  
 डे मध्यभागवती नरकैद्र वाटली सीमती नरकावासी पेतालीस लाख योजन प्रमाणे पिहुलपणे कह्यो । एमज सीधम ईशाननां प्रथमप्रस्तट विमान  
 माहि मध्यभागवती विमानेद्रवाली उड्डुनामा विमान पेतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषआभारा पृथिवी पेतालीसलाख योजन लांब

राफाल्गुन्यु त्तराषाढी त्तराभद्रपदाश्च ॥ ४५ ॥ अथ षट्चत्वारिंशस्थानके किंचित्सिध्यते । दिष्टिवायस्सत्ति द्वादशंगस्य माउयापयत्ति सकल वाङ्मयस्य अकारादिमातृकाः पंदानीव दृष्टिवादार्थप्रशवनिबंधनत्वेनमातृकापदानि उत्पादविगमघ्नौव्यलक्षणानि तानिच अणिमनुष्यत्रेखादिनाविषयभेदे नुकांयमपि भिद्यमानानि षट्चत्वारिंशत्त्वतीतिसम्भाव्यते । तथात्रभीएण त्रिवीएत्ति लेख्यिद्धी षट्चत्वारिंशत्मातृकाचराणि तानिचकारादीनिहकारां ताभिः सत्तकाराणि ऋऋलृलृस् इत्येवं तदचरपञ्चकवर्जितानिसम्भाव्यन्ते तथापभजणस्सत्ति औदीच्यामस्येति ॥ ४६ ॥ अथसप्तचत्वारिंशत्स्थानके किमप्युच्य

अन्तीए पंचमेवगे पणयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४५ ॥ दिष्टिवायस्स पं लायालीसं  
माउयापया प० बंन्तीए पं लिवीए लायालीस माउयस्करा प० पञ्जणस्स पं वाउकुमारिंदस्स लायाली  
सं भवणावाससयसहस्सा प० ॥ ४६ ॥ जयाणंसूरिणु सव्वप्पितरमंळं उवसकमिह्ता पं चारंचरइ

चमेवगे पेंतालीस उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कथा । इति पेंतालीसमी समवाय संपूर्ण ॥ ४५ ॥ हिवे छेतालीसमी लिखिहे ॥ दृष्टिवाद पूर्व ना छेतालीस मातृकापद कथा सकल शास्त्रने अकारादिछेतालीस अचर मातृकापद दृष्टिवादार्थप्रते प्रसववाना कारणद्वकी मातासरीखा कलाछे । त्राह्मी लिप्योनेभिषि छे गालीस मातृका अचर कथा । अकारादिक हकारांत चकारे सहित ५२ । मार्हिद्धी ऋऋ लृ लृ स् एह ५ अचर वर्जित कीजि ४६ जगरे प्रभजन अठारमी भवनपती बातकुमारेंद्र तेहना ४६ लाख भवनावास कथा । इति छेतालीसनी समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ जिवारे सूर्य

किमपिलिख्यते । पट्टणति विविधदेशपखान्यागल्ययत्रपतति तत्पत्तननगरविशेषः पत्तनं रत्नभूमिरित्याहुरेके धम्मस्सत्ति पंचदशमतीर्थकरस्येहाष्टचत्वारिंशत्त  
णागणधराज्ञेक्ता आवश्यकेतुत्रिचत्वारिंशत्यव्यते तदिदं मतातुरमिति सूरमडलेत्ति सूर्यविमान येषाभागानामेकप्रख्यायोजनभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयो  
दशभिस्तैर्ग्यूनयोजनमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपचाशस्थानकेलिख्यते । सत्तसत्तमियाणं सत्तसत्तमानिदिनानियस्यांसासत्त २ दिनानिभवति सत्तसु  
सत्तकेषुअतः सासत्तकेषु अतः सासत्तदिनसत्तकमयत्वा देकोनपचाशतावादिनैभवतीति पडिमत्ति अभिग्रहः छन्दउणभिक्षासएणति प्रथमेदिनसत्तकेप्रतिदि  
नमेकोत्तरयाभिचावृद्धा अष्टविंशतिभिचाभवति एवञ्चसत्तखपिषखवतिभिचाशतभवति अथवा प्रतिसत्तक मेकोत्तरयावृद्धायथोक्त भिच्चामानभवति तथा

वाहिस्स अण्णयालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणंअण्हल अण्णयालीसंगणा अण्णयालीसं गणहरा होत्या सूर  
मंठलेणं अण्णयालीसं एकसठिमागे जोयणस्स विस्सजेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं न्ति

धर्मनाथ अरिहत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया । आवश्यके ४३ पणि लख्याछे तेमतांतरछे । सूर्यनो मडल एक योजन ना एकसठि  
या ४८ भागप्रमाणे विष्कभरणे अने पिडुलपणे कह्यो । एक योजनना एकसठ भाग करिये ते माथी १३ भाग ओछो सूर्य मडलछे ॥ इति अठतालीसमो  
समवाय सपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे एक्कनपचासमो लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाछे जेहने विये एहवी भिच्चुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते  
सत्तसत्तमिक्का भिच्चूनीप्रतिमा उगुणपचास रात्रि दिवसे अहोरात्रीये परीथाय । एकसो छनू १८६ भिच्चयि करौ यथासूत्रोक्त विधिये सिद्धातीत्तभाग आरा  
धी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ बीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७ । एम बीजे सप्तके पहिले दिन २ बीजेदिन ४ बीजेदिन ६ एमसातमेदिन १४ । एम

नां महाक्रदानां पूर्वापरपार्श्वयोः प्रत्येक दशकांचनपर्वताभवंति तेषु सर्वशतं एवं देवकुरुषु निषधादीनां महाक्रदानां पार्श्वतः शतम्भवति तेषु सर्वशतं सर्व एते जंबूद्वीपे हि शतमानाभवति तेषु योजनशतीच्छिताः शतमूलविष्कभा स्तनामकदेवनिवासभूतभवनालंकातशिखरतलाः ॥ ५० ॥ अथैकपचाशस्थानकं । तत्र

सं धण्डं उहं उच्चतेणं होत्या पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धण्डं उहं उच्चतेणं होत्या सहेविणं दीहवेयहा मूलपन्नासं २ जोयणाणि विस्कन्नेणं प० लंतएकप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सहालणं तिमिस्स गुहा खळगप्पवानु गुहाउ पन्नासं २ जोयणाइं ज्ञायामेणं प० सहेविणं कंचणगपह्वाया सिहरतले पन्नासं २

मा अरिहतने पचांस आर्यानी साध्वीनी संपदाना सहस्र शया । अनंतनाथ तेरमा अरिहत पंचास धनुष जंचा जंचपणे शया । अनंतनाथने वारे पुरुषोत्तम नममा चौथी वासुदेव पचास धनुष जंची जचपणे हुयी । सगलाई दीर्घ वैताळ्य ३४ जवूदीपना ६८ धातकी खडना ६८ पुष्कराईना एवं १७० दीर्घ वैताळ्य मूलने विषे पचास पचास योजन विष्कंभपणे पिहुलपणे कह्या । लांतक छठे देवलोके पंचास सहस्र विमानावास कह्या । सगला जंबूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ वैताळ्य पर्वत छे एकेक वैताळ्ये बेबे गुफा छे तेमाहि तिमिआगुफा पैसारानी खडप्रपात गुफा नौसारानी एविहुं गुफा पचास योजन आयामपणे कही । उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याछे ते एकेक क्रदने पूर्ब पश्चिमेने पासे प्रत्येके दश दश कांचन पर्वतछे तेसर्वमिली एम ज देव कुरुने विषे १०० सर्वमिली २०० कांचनगिरि हुआ । ते सगला कांचनगिरि शिखर तलने विषे पचास योजन पिहुलपणे कह्या एकसी योजन जं

स्थानक ॥ तत्र मोहिणज्जस्सकम्मससि । इह मोहनीयकर्मणाऽवयवेषु चतुर्धुक्रोधोदिकषायेषु मोहनीयमुपचर्यावयवसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्येत्युक्तं तत्रापि कषायसमुदायोपेक्षया द्विपचाश्रन्नामधेयानि नपुनरैकैकस्य कषायमात्रस्यैवेति तत्र क्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चडिकेति चाडिकं तथा मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्रोसेति आत्मोत्कर्षः उक्रोसेति उत्कर्षः उन्नत्तं उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णमेति ।

स्माण एकावन्नं उत्तरकम्मपगणीउ प० ॥ ५१ ॥ मोहिणज्जस्सणं कम्मस्स वावत्तं नामधे  
ज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अस्समा संजलने कलहे चण्डिक्के अंरुणे विवाए । माणे मदे दप्पे वंने  
अणुक्कोसे गहे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे । माया उवही नियही बलए गहणे णमे कंक्को  
कुरुए दंने कूक्के जिमे किह्विसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजीगे । लोभे इच्छा मुच्छा

उत्तरप्रवृत्ति ४२ त्रिदुर्कर्मनी ५१ उत्तरप्रवृत्तिकही । इति ५१ समवायश्रयो ॥ ५१ ॥ हिंसे ५२ समवाय लिखे । मोहनीय चोद्यो कर्म तेहना ५२  
नामधेयकह्या । मोहनीयकर्ममाहि ४ कषाय अवतस्याच्छे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकह्या तेकहेछे । क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अन्नमा ५ सज्वलन ६  
कलह ७ चारुडिक्क ८ भंडण ९ विवाद १० । मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ यम ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९  
उन्नत्त १० उन्नाम ११ ॥ मायाश्रितनाम १० माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूनमनीची ६ कल्का ७ झुरका ८ दम ९ कूड १० जिह्वा ११ किल्बि  
धिक १२ आत्मरणता १३ गूहनता १४ वंचनता १५ परिकुंचनता १६ सातिगीग १७ । लोभाश्रितनाम १४ । लोभ १ इच्छा २ मूर्च्छा ३ कांक्षा ४ गृहि ५ ।

व्यवस्र कर्त्तुं कर्त्तुं कुरुएत्ति कुलक भिमेत्ति जह्य तथालोभादीनि चतुर्दश लोभकषायस्य भिष्मकाभिष्मक्ति अभिधानमभिध्येत्यस्य पिधानमित्यादा  
विष वैकल्पिके अकारलोपे निध्यावेति शब्दभेदान्नामऽयमिति गोथूमेत्यादि गोस्तूभस्य प्राचांलवणसमुद्र मध्यवर्त्तिनो वेलधरनागराज निवास भूतपर्वतस्य  
पौरस्थान्चरमातादपस्य बडवामुखस्य महापाताल कलशस्य पाश्चात्यच्चरमातीयेन भवतीति गम्यते एषणति एदतन्तरमध्ये बाधया व्यवधानलक्षणमित्यर्थः  
द्विपचाशद्योजनसहस्राणि भवन्ती त्यक्षर्वटना भावार्थस्त्वय इह लवणसमुद्रं पंचनवतियोजनसहस्राख्यवगाह्य पूर्वादेषु दिक्षु चत्वारः क्रमेण वडवामुखकेतु

कंखा गेही तिरहा त्रिज्जा त्रिज्जा कामासा जोगासा मरणासा नंदी रागे । गोथूभस्सणं त्रि  
वासपह्यस्स पुरत्यिमिह्मानु चरमतानु वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्यिमिह्वेचरमंते एराणं बावन्तं

तद्व्या ६ मिथ्या ७ अभिध्या ८ कामाशा ९ भोगाशा १० जीविताशा ११ मरणाशा १२ नदी १३ रागी १४ । सर्वमिली ५२ यथा । पूर्व लवण समुद्रमांहि  
गोस्तूभ नास वेलधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमात थकी छेहलाप्रदेश थकी मांडी वडवामुख महा पातालकलशनो पश्चिमनो  
चरिमांत छेहलो प्रदेश एह वावन सहस्र योजन आवाधा विचाले आंतरी कह्यो । जबूह्वीपनी जगतो थकी मांडी चिहुदिसे ८५ सहस्र योजन लगे समुद्र  
अवगाहीये तिहा पूर्वादिक चिहुदिस्सि क्रमे वडवामुख १ केतु २ यूप ३ ईसर ४ एह चार पातालकलश पामीये तथा जबूीप पर्यंत थकी ४२ सहस्र  
योजने समुद्र माहि जई तिहा चिहुदिसे ४ वेलधरना पर्वत गोस्तूभादिकथेते सहस्रना पिहुलाछे सर्वमिली ४३ हजार योजन प्रमाण यथा तो ८५ सहस्र  
माहिथी ४३ सहस्र योजन काढीये तो पूठे गोस्तूभ पर्वतनो बडवा मुख महापाताल कलशनो ५२ सहस्र योजन आंतरीउगरे एमज चिहुदिस्सि एम दक्षिणे



क जूयकेखराभिधाना महापातालकलशा भवति तथा जंबूद्वीपपर्यन्ता द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्राख्यगच्छा सहस्रविक्रभा श्वत्वारएव विलंघनगराजपर्वता  
गोसुभादयो भवति ततश्च पंचनवत्या स्त्रिचत्वारिंशत्यपकर्षितायां द्विपंचाशत्सहस्राख्यतर भवति सौधर्मं त्रिंशद्विमानानालच्छाणि सनत्कमारिद्वादश माहेद्रे  
चाष्टाविमतिः सर्वाणि द्विपंचाशत् ॥ ५२ ॥ त्रिपंचाशस्थानके लिख्यते महाहिमवन्तित्यादि सूत्रे संवादगाथा । तेवन्नसहस्राङ्गं नवयसएजोयणाणिद्विगतीसे

जोयणसहस्साङ्गं च्चत्तरे प० एवं दगन्नासस्सणं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स  
नाणावरणिज्जस्स नामस्स च्चत्तरायस्स एतिसिण तिरुहं कम्मपगळीणं वावन्तं उत्तरपयळीणं प० सोहम्मं स  
णंकुमार माहिंदेसु तिसुकप्पेसु वावन्तं विमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥ देवकुरुउत्तरकुरु

दगभास पर्वतनां पूर्वांत थकी माडी। केतुक पाताल कलश विचाले ५२ सहस्र योजन आंतरी कह्यो । पश्चिमें ग्रख पर्वतना पूर्वांत थकी मांडी यपनाम  
पाताल कलशनी पश्चिमांत विचे ५२ सहस्र योजन । उत्तर समुद्रमाहिंदगसीम पर्वतना पूर्वांत थो मांडी ईसरनाम पाताल कलशनी पश्चिमात विचाल  
५२ सहस्र योजन आंतरी । ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति ५ नाम कर्मनी ४२ प्रकृति अतरायनी प्रकृति ५ एहचिहुकर्मनी ५२ उत्तर प्रकृति कह्यो ।  
सौधर्म कप्पे ३२ लाख विमान । सक्कुमार १२ लाख विमान माहेद्रे ८ लाख विमान । एम त्रिण देवलोकना मिली ५२ लाख विमानावास यतसहस्र कक्षा  
एतले ५२ लाख विमानावास कक्षा । इति ५२ मी समवाय पूर्णथयो ॥ ५२ ॥ हिले ५३ समवाय लिखेछे । देवकुल उत्तरकुल सर्वथिनी

जीवामहाहिमवश्री अक्षकलाकलाश्रीति ॥ १ ॥ संवच्छरपरियागति संवच्छरमेकं यावत् पर्यायः प्रवज्जालक्षणी येषां ते सवत्सरपर्याया' महद्महालएसु  
महाधिमार्गिसुति महातिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया आत्यंतमुत्सवाश्रयभूतानि महातिमहालया स्तेषु मह्यंतिचतानिप्रशस्तानि विमानानिचेति  
विग्रहः एतेचाप्रतीता अनुत्तरोपपातिकांगितु ये धीयते तत्र त्रयस्त्रिंशत् बहुवर्षपर्याया सति ॥ ५३ ॥ चतुःपचाशस्थानके लिख्यते । पाठ्येति प्राप्य

यानुणं जीवानु तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं राइरेगाइ अ्यायामेण प० महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपछ्याणं  
जीवानु तेवन्नजोयणसहस्साइं नवअणुगतीसे जोयणसए छअणुगणवीसइजाए जोयणस्स अ्यायामेणं प०  
समणस्सणं अगवनुमहावीरस्स तेवन्न अणुगारासवच्छरपरियाया पंचसुअणुत्तरेसु महद्महालएसु महा  
बिभाणेषु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेण तेवन्नंवाससहस्सा ठिइं प० ॥ ५३ ॥

जीवा प्रत्यचारूप त्रैपनत्रैपन योजन सहस्र भाभरी लांब पणे कह्यो । महाहिमव न बीजो वर्षधर एह विहु वर्षधरनी जीवा प्रत्यचा त्रैपन २ सहस्र योजन  
प्रमाणे उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहार ककला । ५३८३१ योजन १८ । ६ कला आयामे लाउ पणे कथा । अमण भगवंतमहावीर  
ना ५३ अणुगारयती सवच्छर पर्याया एकवर्षनी पर्याय दीबा जेहने एहवा ५३ हुया । पक्के संधारीकरी अनुत्तर विजयादिक अतिमोटी घणो विस्तीर्ण  
महाविमान तेहने विदे देवता पणे उपना । समुच्छिम उरपर सर्पनी उल्लाष्टो त्रैपन वर्ष सहस्रनी पाउखी कह्यो ॥ इति ५३ मी समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३

एगणिसेज्जाएति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणाइति व्याक्रियते अभिधीयते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापादमानाः पदार्थाः वागारिच्छति व्याकृतवास्त्यानि चा प्रतीवानि अनंतनाथस्येह चतुःपचाग्रहणा गणधरा सौत्ताः आवश्यकेतु पचाग्रहृक्ता स्तदिद मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचाग्रह

अरहेरवएसुण वासेसु एगमेगाएसप्पिणीए नसप्पिणीए चउवन्ना २ उत्तमपुरिणा उप्पजिंसुवा ३ तं० चउवीसं  
तित्यकरावारसचक्कावही नवबलेवा नववासुदेवा अरहोणं अरिहनेमी चउवन्नराइदियाइं छउमत्यपरिया  
यपाउणिता जिणेजाए केवली सव्वन्नु सव्वदरिसी समणेअगवं महावीरे एगदिवसेणं एगानिसिज्जाए चउप्पन्ना  
इ वागरणाइं वागरित्या अणंतस्सणं अरहउ चउपन्न गणहरा होत्या ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणंअरह

हिंवे ५४ मी समवाय लिखेहे । भरत ऐरवत केवने विषे एककीये अवसर्पिणीये एककीये उत्तर्पिणीये चीपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे । उपजस्ये  
ते कहिहे । २४ तीर्थंकर । १२ चक्रवर्ती । ८ बलदेव । ८ वासुदेव । सर्वभिली ५४ यथा । अरिहंत अरिहनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पाली  
ने जिन हुया केवली । सर्व जाणे ते सर्वत्र सर्वसकल ससारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया । अमण भगवत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्या  
ये एके आसणे बैठे ५४ । व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवत कहता हुया । अनतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया । इति चीपनमी समवाय ययी ॥  
५४ ॥ हिंवे ५५ मीसमवाय लिखेहे । मल्लिनाथ अरिहल पचावन वर्षसहस्रसंगे उत्तकथो आउखीपालीने सिद्धयथा बुद्धयथा यावत् शब्दे सर्वदुःख यकी

स्थानकोत्तिदं लिख्यते। मंदरस्ये त्यादि इह मेरीः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्स्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरी  
विष्कम्भमध्यभागात् पञ्चाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविष्कम्भस्य च दशसहस्रिकत्वा द्वीपार्धं पञ्चसहस्रैरेण पञ्चपञ्चाशदेव भव  
न्तीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमांत इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां ह्यन्ते पूर्वे  
माणत्वात् जम्बूद्वीपजगतीविष्कम्भेन च सह जम्बूद्वीपलक्षणपूरणीय लवणसमुद्र जगतीविष्कम्भेन च लज्जय मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना जगतीमाने पृथग्भरणे  
मनुष्यवैचपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पचचत्वारिंशत्सहस्रप्रमाणक्षेचापेक्षया भिधीयते तत शेष मतिरिक्ता स्यादिति अथचेह किंचिदूनापि पचपचाशत्

उपपणपन्नं वासराहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिध्दुं भुठे जावप्पहीणे मंदरस्सणं पद्दयस्स पद्दुत्थिमिल्लानु चरमंता  
नु विजयदारस्स पद्दुत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पणपन्न जीयणसहस्साइं बुवाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिषि वि  
जयवैजयंतजयंतअपराजियति समणेन्नगवंमहावीरे अतिमराइयसि पणपन्न अज्जयणाइं कल्लाणफलविवा

प्रचीण रहित थया । मेरु पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थकी केहल्ला प्रदेश थकी जम्बूद्वीपनी पूर्वनीद्वार विजयनाम तेहनी पश्चिमनी चरिमांत केहलो पदे  
अणह ५५ योजन सहस्र आवाधा विचालि आंतरो कछो । मेरुथकी विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते माहि दय सहस्रनी अरुवालिसे एतले सर्वजि  
लो ५५ सहस्र योजन थया । इहा यद्यपि विजय द्वारनी पणिसात गहोरे परजगतोनी पूर्वात लोजे ती पूराए सहस्र योजन थया । एअज चिनुदिसे ले  
र पर्वतमाहि घालता मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयंत द्वारनी पश्चिमे जयंतनी उत्तरे अपराजितनी आंतरो जाणिवी । अमण भगवत महावीर केहलीरा

पूर्णतया विवर्धितेति अंतिमरायसिद्धि सर्वायुः कालपर्यवसानरात्रौ रात्रेरन्तिमे भागे पापायां मध्यमायां नगरीं हस्तिपालस्य राज्ञः करणसभायां कार्त्तिकमासामावास्यायां स्वातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्युषसि पर्यकासनेनिघण्टुः पंचपचाशदध्ययनानि कक्षाणफलविवागादिति कल्याणस्य पुण्यस्य कर्मणः फल कार्यं प्रियाच्यते व्यक्तोऽक्रयन्ते ये स्थानि कल्याणफलप्रियाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याख्याय प्रतिपाद्य सिद्धीबुद्धः यावत्कारणात् सुते अंतकडे परिनिवृद्धे सव्वदुक्खण्णहीणेति दृश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिषन्नरकलक्षाणि द्वितीयाया पंचविंशति रिति पंचपचाशत् दंसेत्यादि दर्शनावरणी

गाइं पणपन्नं अज्जयणाइं पावफलविवागाइं वागरिहा सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्न निरयावाससयसहस्सा प० दंसेणावरणिज्जनामाउयाणं तिरहं कम्मपगणीणं पणपन्न उत्तरपग णीनु प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्वीवेणंदीवे षण्णत्तं नरकत्ताचदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

त्रिविं कार्तिकवदी अमावसनी रात्रिने पालठीवाली बैठथके ५५ अध्ययन पावानगरीमे हस्तिपाल राजानौ दानसभाये कथाण शुभकर्मनोफल कार्यं विपा बीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाणिवा । पाप फल विपाक सुगापुत्रादिकना कक्षा सिद्धां तनेविषे सिद्ध यया बुद्धयया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख यक्की प्रचीणयया । पहिलीये ३० लाख नरकावासाकक्षा बीजीये २५ लाख बिहु नरक पृथिवीना मिली ५५ लाख नरकावासा कक्षा । दर्शनावरणीय प्रकृति ८ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमचीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही । इति ५५ मो समवा ययक्की ॥ ५५ ॥ हिंवे ५६ मोसमवाय लिखेहे । जडूद्वीप द्वीपने विषे ५६ नक्षत्र चंद्रमो साथे योग सबध योजना करता हुया सबध करेहे संबंध

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नी द्विचत्वारिंशत् आयुषश्चतस्र इत्येवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथ षट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते । जंबूद्वीवत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते भावात् षट्पंचाशन्नक्षत्राणि भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा स्त्रीक्ताः आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदं मतांतरमिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते । गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणपिटकानि तेषां आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयस्य प्रथमागस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययन विमुक्त्यभिधान माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कन्धे नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश निशोद्याध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नैहानाश्रयणात् षोडशानां मध्ये एकस्याचारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पचदश सूत्रकृते

अथ हनु तप्यन्नं गणा गणधरा होत्या ॥ ५६ ॥ तिरुहं गणिपिडगाणं आचारचूलियाव  
ज्जाण सत्तावन्नं अज्जयणा प० तं० आचारसपद्यस्स पुरात्यिमिक्काने

करस्ये एतले जंबूद्वीपमाहि २ चद्रमाच्छे ऐक्केक चद्रमाने परिवारे २८ नक्षत्र होइ बिहु चद्रमाना मिली ५६ नक्षत्र होय । विमलनाथ अरिहतना ५६ गणधर सूत्रे कह्या आवश्यके ५० गणधर कह्याछे मतांतर छे । इति ५६ समवाय संपूर्णे ॥ ५६ ॥ वि० ५७ समवाय लिखिछे । त्रिण गणी कहिये आचार्य तेह ने पेटीरत्नभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूत्रना आचाराग प्रथम श्रुत स्कन्धे ८ अध्ययन बीजे १६ अध्ययन छे । तेमाहीथी छेहल्या अध्ययन विसुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटाली बीजा १५ अध्ययन लीजे तो २० अध्ययन आचारांग सूत्रगङ्गा पहिले श्रुतस्कन्धे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्वमिली २३ ठाणागे १० अध्ययन सर्वमिली ५७ अध्ययन कह्या । तेसूत्रनानाम कहिछे अनुक्रमे आचारांग १ सूत्रगङ्गा २ ठाणाग ३ । जगतीयकी ४२ सहस्र योजने समुद्र

द्वितीयांगी प्रथमश्रुतस्कन्धेषोऽष्टाद्वितीयसप्त स्थानांगीदशैत्याव सप्तपंचाशदिति गोशूलैत्यादौ भावार्थोच्य द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वेदिका गोस्तुभर्पर्वतगो रंतरं सहस्र गोस्तुभस्य विष्कम्भः द्विपचाशद्गोस्तुभवडवामुख्यो रंतरं दशरात्रसप्तगत्वा षडवामुखविक्रमस्य तदहं पचेति ततो द्विपचाशतः पदानां च मीलने सप्त पचाशदिति जीवाणधनुषिष्ठति मण्डलं खण्डाकारं क्षेत्रं द्रह सूत्रे सत्त्वादगार्थाहं सत्त्वावन्नसहस्रा धनुषिष्ठेणुदयदुसयदसकलत्ति ॥ ५७ ॥

चरमंतानु वलयामुहस्स महापायालस्स वज्जमज्जेदसन्नाए एसणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं झुवाहाए झुंतरे प० एवं दगन्नासस्स केउस्सय संखस्स य जूयस्सय दयसीमस्स ईसरस्सय मल्लिस्सणं झुरहनं सत्तावन्नं मणपज्जवनानिसया होत्या महाहिमवंतरूपीणंवासहरपद्ययाणं धणुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

माहि पूर्वदिशि गोस्तुभनामां वेलधर नागराजानी आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांतयकी छेहल्या प्रदेशथकी षडवामुख महापाताल कलशनी बहुमध्य देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आवाधाये विचाले आतरो कन्नो एतले गोस्तुभ पर्वतयकी गुड पूर्वे ५३ सहस्र योजने षडवामुख पाताल कलशच्छे अने ते षडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनी मध्यभाग ५ सहस्रनी ५२ सहस्र भेला कारतां ५७ सहस्र योजन यथा । एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला प्रदेशथकी मांडी केतुक् पाताल कलशनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । एमज पश्चिमे शखनामा वेलधरथकी मांडी यूपकनामा पाताल कलशनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । उत्तरे दगसीम वेलधर थकी ईखरनाम पाताल कलशनी मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । मल्लिनाथ अरिहतने ५७ मन पर्यवज्जानी ५७०० यथा । जंघुहीप लक्षण मडलचेत्र तेमांही हिमवत बीजो वर्षधर रूपी पाचमी एहबीहु वर्षधर पर्वतनी धनुषुष्टि ५७ योजन सहस्र बली बेसय अने त्राणी

अष्टपंचाशत्स्थानकेऽपि लिख्यते । पठमेत्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशद्भक्तकलाणि द्वितीयायां पंचविंशतिः पंचम्यां त्रीणीति सर्वांस्तुष्टपंचाशदिति नाणेत्यादि तत्र ज्ञानावरणस्य पंच वेदनीयस्य द्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् अतरायस्य पचेति सर्वा अष्टपंचाशदुत्तर प्रकृतयः गोथूभस्सेत्यादि अस्य च भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेण वक्ष्यः एवचउद्दिष्टिपि नियब्धति अनेन सूत्रैवलयमतिदिष्ट तच्चैव दञ्जोभासस्तुष्टावासपव्वयस्स उत्तरिस्ताञ्जो चरमताञ्जो केउगस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभागे एसणं अठ्ठावन्न जोयणसहस्साइं अवाहाए अतरे पव्वते एव सखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिस्ताञ्जो चरिमताञ्जो जूयगस्स महा

दोन्नियतेणउए जोयणसए दसयएगूणवीसइच्चाए जोयणस्स परिख्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ पढमदो  
च्चपंचमासु तिसुपुढवीसु अठ्ठावन्ननिरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स वेयणिय अ्याउय नाम अ्यत  
राइयस्स एएसिणपंचएहकम्मपगळीणं अ्य्हावन्नं उत्तरपगळीलु प० गोथून्नरएणं अ्यावाउपच्चयस्स पच्चत्थिमि

योजन दसभाग उगुणीस हाइया एक योजनना ५७२६३ योजनना एगुणोस हाइया भाग १० कला एरिपे परिणि कही ॥ इति ५७ नीसमवाउ संपूर्ण ॥  
५७ ॥ द्विवे अठ्ठावन मी समवाय लिखिक्खे । पहिलीये ३० लाख नरकावासा बीजीये २५ लाख पांचमीये ३ लाख एमन्निणना मिली अठ्ठावन नरका वासा सतसहस्र एतजे ५८ लाख नरकावासा कख्या । नाणाउरणोय ५ प्रकृति वेदनीयनी ४ नामकर्मनी ४२ अतरायनी ५ एह ५ कर्मनी उ त्तर प्रकृति अठ्ठावन कही । समुद्र माहि पूरुदिशे गोस्तुभ नामा वेलंधर नागराज्जानो आवासपर्वत के तेहना पश्चिम चरमांतयी केहला प्रदेशथकी मांडी बडवामुख महापाताल कलयनी बहुमध्यदेशभाग एह ५८ सहस्र योजन आवाधये विचाले आंतरो कखी । जंवूदीपनी पूर्व जगतीयकी मांडी ४२ सह



पातालस्य एवंदग्वीमस्य भावासपव्यस्य द्वाविण्णत्ताभी चरमंताभी चरमंताभी ईसरस्स महापायालसस्सि ॥ ५८ ॥ अथैकोनषष्ठिस्थानके लिख्यते । चंदस्सणभित्थादि संवत्सरो ह्यनेकविधः स्थानांगादिषू क्त स्तत्र य अद्रगति मगीकृत्य संवत्सरी विवक्ष्यते स चंद्र एव तत्र च द्वादशमासाः षट्चक्रतवो भवन्ति तत्रचैकैकऋतु रेकोनषष्ठिरात्रिदिव्याग्रेण भवति कथ एकोनत्रिंशद्वात्रिंशच्च द्विपष्ठिभागा अहोरात्रस्ये त्वेव प्रमाणः कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीपरिनि

त्वाउ चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स वज्जमज्जदेसन्नाए एसणं अण्ठावन्तं जीयणसहस्साइं अण्ठावाहा ए अण्तरं प० एवचउदिसपि नेयवुं ॥ ५८ ॥ चंदस्सणं संवच्छरस्स एगमेगे उज्ज एगूणसाठि

सू योजन गोस्तूभ पर्वतके ते एकसहस्रनो पिहुलो के ते एकसहस्र योजन हाथिलीजे अने गोस्तूभ द्यौ ५२ सहस्र योजन बडवासुख कलयके । ती गोस्तूभस बधो एक सहस्र ५२ सहस्र मांदि घालिये तो ५३ सहस्रयाय अने वडवासुख १० सहस्र पिहुलोके तेहनी मध्य भाग पांच सहस्रनी ते ५३ सहस्र मांही घालिये एतले ५८ सहस्र योजन एतली आंतरी जाणिवी । एम चिहुदिदि न वेलधर पर्वत अने चिहु पाताल कलगनी आंतरी जाणिवी दगभास पर्वत दनिण समुद्र माही तेहनां उत्तर चरिमातथी माडो केतुक पाताल कलगनी मध्यभाग ५८ सहस्र योजन आंतरी कछी । पश्चिमे शखपर्वतनां पूर्वचरिमांत अने दूप कलगनी मध्यभाग ५८ सहस्र योजननी आंतरी कछी । उत्तरे दगसीम पर्वतनी दक्षिण चरिमांत ईसर पाताल कलय ५८ सहस्रनी । इति ५८ समवाय पूर्णथयो ॥ ५८ ॥ हिवे ५८ मोसमवाय लिखेके । चंद्रमानी गतिने अगीकार करीने जे सबस्सर विचारिये ते चंद्रसंवत्सर कहीये । चंद्र संवत्सर १२ मासनी ऋतु ६ होय । एकेक ऋतु तेमां उगुणसाठि रात्रि दिवस के तिहां एहवी रात्रि दिवाये ५८ अहोरात्रि प्रमाणे कछी तो दिहु

नां सूर्यमण्डलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ठ्याषष्ठ्यामुहूर्तं द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावायर्थः एकस्मिन्नक्रियत्रस्थाने उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अगोदयति षोडशसहस्रोच्छिताया वेलायायदुपरिगव्यतद्वयमानं वृद्धिहानिस्वभावात्तदगोदक बलिस्सत्ति औदीच्यस्य असुरकुमार निकायराजस्य भवन बंभरसति ब्रह्मलोकाभिधान पंचमदेवलोकेन्द्रस्य सङ्घित्ति सौधर्मज्ञात्रिशदीशानेचाष्टावशतिविमान लक्षाणीतिकृत्वा षष्ठिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषष्ठिस्थानकं तत्रपंचेत्यादि पंचभिः सम्बत्सरैर्निवृत्तमिति पंचसांवत्सरिक तस्यणमि त्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचाय भावार्थः युगं हि पंचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

लेणं चुरहा सठिंधणइं उहुं उच्चत्तेणं होत्या बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सठिं सामाणियसाहस्सीले प०  
बंभरस्स णं देविंदस्स देवरत्तो सठिं सामाणियसाहस्सीले प० सोहम्मीसाणेषु दोसुकप्पेषु सठिं विमाणा  
बाससयसहरसा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवत्सरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इग

साठ धनुष ऊचा जचपणे इया । वलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कक्षा । ब्रह्मनामा ५  
मां देवेन्द्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कक्षा । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान नेहुं देवलोकनां मिली साठलाख  
विमानावास कक्षा ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मी लिखेछे । चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच  
वर्षनी १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानके चंद्रमासनीमान २८ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपक्षनी पडिवा घी पौर्ण

एकषष्ठिः सहस्राण्युक्तः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदिति प्रोक्तः क्षेत्रसमासेतु कन्देन सहलक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्तस्तत्र प्रथमकाण्डं सहस्रं द्वितीयत्रिषष्ठिं तृतीयं षट्त्रिंशदिति । चन्द्रमण्डले च द्वित्रिमानेन सित्यलक्षतौ एगसद्वित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षट्पचाशङ्गागप्रमाणैर्विभाजितविभारेर्व्यवस्थापिते समांशसमविभागं प्रज्ञप्तम् त्रिषमांशं योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पचाशङ्गागप्रमाणत्वा तस्य च भागस्या विद्यमानत्वादिति । एवसूदस्यापिमण्डलवाच्याम् अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमात्रम् हितत्रचापरमशतरं तस्याप्यस्तौति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथ द्विषष्ठिस्थानक पचेत्यादि तत्र युगे त्रयं चन्द्रसवत्सरा भवति तेषु षट्त्रिंशत् पौर्णमास्यो भवति द्वौ चाभिर्वर्द्धित सवत्सरौ भवतस्तत्र चाभिर्वर्द्धित सवत्सरैर्भवतस्तत्र चाभिर्वर्द्धित सवत्सरैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्णमास्यैः

एगसद्वित्ति विभागं विना इणु समसे प० एवंसूरसवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिणं जुगे चार्वादि पुन्रिमानुवावर्द्धिं च्युमावसानं प० वासुपुज्जस्स पं च्युरहने वासद्वित्ति गणा वासद्वित्ति गणहरा होत्या सुक्ष्मपरक

कह्यो । मेरु पर्वत ८८ हजार योजन ऊर्ध्वे तेहना विभाग कौजि तेहमा पहेली भाग ६१ हजार योजन नो बीजी ३८ हजार योजन नो कह्यो क्षेत्रसमासेतां कदसहित मेरु येकलाख योजन प्रमाणे तेहना तीन भाग कौधाके पहिली १ हजार योजन नो बीजी ६३ हजार योजन नो बीजी ३६ हजार योजन नो चन्द्रमानी मंडल चन्द्र विमान १ योजनना ६१ हाइया ५६ छप्पन भाग प्रमाणे व्यवस्थापिते तेमाटे समांस समभाग कह्यो । चंद्रमाना मंडलमाहिथी ५ विषमांस नौकल्या तोरह्या ५६ समांस एणेरै सर्य मंडल मांथी १३ त्रिषमांस नौकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ मोसमवाय सपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिंवे ६२ मो लिखे । पांच संवत्सरनी युगहीय तेमाहि ६२ पुनिम अने ६२ अमावास्या कह्यो १ युगमाहि ३ चद्रवर्ष होय तेमाहि मास ३६ वारेत्रिक ३६ पूर्णिमा अने ३६

वावहिं २ इत्यत्र द्विषष्टि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यह मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्धते चन्द्र शतुरंशाधिकान् द्विषष्टिभागान् क्षपयन्ति तदेव कालेनै तदेवाह पन्नरसइत्यादिना चद्रविमानं द्विषष्टिभागान् क्रियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते तत् शत्वानो भागाः समधिका द्विषष्टिभागानां पंचदशभागेन लभ्यन्ते अत उच्यते पंचदशभागेन चीत्तलक्षणेन चद्रमधिक्षत्य पंचदशैवदिवसां स्वद्राहुविमानञ्चरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति अत्रा स्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुतै निर्णयः कार्यइति सोहमीत्यादि तत्र सौधर्मेशानयो स्वयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनकुमारमाहेन्द्रयो र्वादिश ब्रह्मलोकी षट् लांतके पंच शुक्ले चत्वार एवं सहस्रारे आनत प्राणतयो शत्वार एव मारणाच्युतयोः त्रैवेयके ष्वधस्तनमध्यमीपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे खे कइति द्विषष्टि स्ते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक सुडुविमानादिकाः सर्वाथिसिद्धविमानाता वृत्तविमानरूपा द्विषष्टिरेव विमानेन्द्रका भवन्ति तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्रयस्त्रचतुरस्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेव सौधर्मेशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तन इत्यर्थः षड् मावलियाएति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेक्षया आद्या अतस्र आवलिकायस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमान्मूलभूताहिमानेन्द्रकादारभ्य या चा

## म्मीसाणेसु कर्प्येसु पढमेपत्यरु पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए वासठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाणं

६२ भाग होय वासठिया चार चार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म ईशाने देवलोके १३ प्रतरच्छे तेमाहि पहिले प्रतरेपहिली आवलिकाये अणीये ४ अणीसां डिये तिहां पहिली अणीये पूर्वादिक येकेके दिशे आवलिकाये ६२ वासठ विमान घणां मोटा कह्या । १२ देवलोके ८ त्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली वताना ६२ विमान प्रस्तर प्रस्तराय परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १३ सनकुमार माहेन्द्रे १२ ब्रह्मे ६ लांतके ५ शुक्ले ४ सहस्रारे ४ आनत प्राणते

जम्बूद्वीपस्य पर्यन्तिमे अशीत्युसरे योजनशते पञ्चषष्ठिर्भवन्ति तत्र च निषधवर्षधर पर्वतस्योपरि नौलवर्षधरपर्वतस्योपरि च त्रिषष्ठिः सूर्योदयस्थानानि सूर्यमण्डलानीं ल्यर्थः तदन्ये तु द्वे जगत्या उपरि शेषाणि तु लवणे त्रिषु त्रिशदधिकेषु योजनशतेषु भवन्तीति भावार्थः ॥ ६३ ॥ अथ चतुःषष्ठि स्थानक ऋष्ट्यादि अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यासाष्टमिका यस्याहि अष्टौदिनाष्टकानि भवन्ति तस्यामष्टावष्टमानि भवत्येवेति भिक्षुप्रतिमा ऽभिग्रहवि

तेवठीए राइंदिएहिं संपत्तजोवणा न्वन्ति निसढेणं पव्णएतेवठिं सूर्योदया प० एवनीलवत्तेवि ॥ ६३ ॥  
अठठमियाणं निरकुपफिमा चउसठीए राइंदिएहिं दाहिअष्टासीएहिं निरकासएहिं अहासुत्त जावन्नवइ

बेत्ते बीजो आरोहोय । हिमवत ऐरण्वतत्तेत्ते तोजोहोय । महाहिदेहे चोथो आरोहोय । देवकुर उत्तरकुर ना युगलिमां ने ४८ दिननी अपल्यपालनाच्छे । आरादौठ १५ दिननी वडि अपल्यपालनामे छे । एम करतां ४८ मांहि १५ दिन वधारिये तिवारे हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रे ६४ दिन थाय । इहा सूत्रमांहि ६३ दिन आंख्यां तेकिममिले जनमदिन नगिणिये एह उत्तर जाणिवी । सूर्यना मंडल १८४ सगलाइछे तेमाहि निषधपर्वतने माथे १८० योजनमांही तेवठ्ठी तेवठ्ठी सूर्योदयस्थान रूपमांडला बेवे मांडला जगतौ उपरि शेषथाकता ३३० योजन लवण समुद्रमांहि ११८ सर्वमिली १८४ एवनीलवत पर्वत नेपणि एम जाणिवी ऐरवत क्षेत्रे सबधौ सूर्यनांजगवानां मांडला ६५ नौलवतपर्वत जगतौ मिलीने बीजा ११८ पच्छिम समुद्रमांहि जाणिवा ॥ इति ६३ मोसमवाय पूर्णययी ॥ ६३ ॥ हिंवे ६४ समवाय लिखे छे । आठ दि गडा आठगुणांछे जे इनेधिबे ते त्रिचु प्रतिमा अभिग्रह विश्वेव आठुंआठौ चौसठदिनहोय जिहां ते अठमया भिक्षु प्रतिमा चौसठि रात्रिदिवसे समापिये । पहिलेदिने एक भिचा बीजेदिने २ बीजे दिने ३ एम आठदिन एकैक भिचा वधारियेती

ध्वण्डिरिति सोहमेत्यादि सौधमेद्वात्रिगदीगाने ऽट्टाविगतिः नल्लनोके च चत्वारि विनानलानि गर्गाणि चतुःपण्डिरिति चउमद्रिल्लोणत्ति चतुःपण्डिलेण्ठ  
 नागराणायस्मिन्नसौचतुः पण्डिलठिज्जं सुत्तामणिमदेत्ति सुत्तामनुताकलानि मणय्यनद्रकाताद्वितविगिपाः मुत्तारुपायामणयोरत्तानिमुत्तामणयस्मद्विकारो  
 मुत्तामणिमयः ॥ ६४ ॥

प्रथ पदपण्डिग्यानक तनमोरियपुत्तेनति सोर्नपुगो भगवतोमन्नादोरस्य सप्तमोगणधरः तस्यपचपण्ठवधोणि गृहस्थ  
 पर्याय आवय्यकेप्येसवीतो नवरमेतस्यैव गो गृहत्तरोत्थाता मग्गितपुनानि नानः पट्ठोरगधरः तदीयादिन एवमन्नचित स्ताव्यावय्यके त्रिपचागद्वयोणि गृह  
 स्थपर्यायउतो नचवीधविपयमुगच्छति यतोऽतत्तम्य पत्ताण्डियुयते ननुतएव्यत्रिपचागद्विति सोऽग्गैत्यादि बोधमोयतसक विमान मोधमदेनलीकस्यम

सोहल्लीसानेसु वंनलोएय तिसुक्कप्पेसु चउसंठिं विमाणावाएसयसहस्सा प० सहस्सवियणं रत्नोचाउरंत  
 चक्ष्वाहस्स चउसंठिलठीए सहग्गेमुत्तामणिहारं प० ॥ ६४ ॥ जवूहीत्रि पणसंठि सूरमंऊ  
 ला प० थरेणंमोरियपुत्ते पणसंठिवासाइ ज्जगारमज्जे वरित्ता मुंऊञ्जवित्ता ज्जगाराउज्जगारियं पवुइए

जन प्रमाण कक्षा । सौधमे ३२ लाख विमान रेगाने २८ लाख विमान नल्लनोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चोमठिल्लाउ एतला विमानावास कक्षा  
 सगलाने राजाने चातुरत चक्रवर्तिने चिहुदिगिना अतना धणीने चउसंठिलठि कहता गरी छे तिहा ते चतुप्पटि कहिये एतले ६४ गरी सहग्गो सहाय्य  
 वहुमूय मीती मुत्ताफल मणि चद्रकांतादिकरल विगिय तेहमव नारजळी । ॥ इति ६४ सोसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पेसठमो समवाय  
 लिखे । जवूहीपने विषे १८० सूर्यमडलछे निपधमाये ६२ जगतो उपरि २ सर्वमिलो ६५ कथा । स्वधिर वय्युत पर्याये वडा सौधपुत्र सालसा गणधर

उिर्दक्षिणपक्षोऽस्थिता षट्पण्डित्योरात्तरपक्षौ यदाचोत्तरपक्षौ पूर्वस्यागच्छति तदादक्षिणापक्षिमायामित्येवं सूर्यसन्नमप्यवसेयमिति छावष्टिगणति आवश्यकोऽपि षट्सप्ततिरभिहितोऽतोऽस्मत्तांशमिति छावष्टिशगरोवमाश्रुतिरिति यच्चातिरिक्तं तदिह न विवक्षितं यत एवमिदमन्यत्रोच्यते दोषादिजयाइसु गयस्सति त्रिचतुए

## छावष्टिचंदापक्षासंसुवा ३ छावष्टिसूरियातवंसुवा ३ सेजसस्सणं चुरहनु छावष्टिगणणा छावष्टिगणहरा

लगे रात्रिये ६६ चद्रमा प्रकाश करे एतले मनुयवेत्र माहि १३२ चद्रमाछे। तेहनी अर्ध ६६ होय ते ६६ चद्रमा जबूझीप सवधो हरिवर्ध १ हिमवंत २ भरत चेत्र ३ एव दक्षिण धातकी खडे ३ चेत्र एमज दक्षिण पुष्कराई<sup>१</sup> एहीज त्रिहंछेत्रे रात्रिकरे मेरुयकी उत्तर दिशें जबूझीप सवधी रम्यक १ ऐरखंबत २ ऐर वत ३ धातकी खडना एहीज ३ पुष्करार्धना एहीज ३ चेत्र ६६ चद्रमा प्रकाश करे तिवारे जबूझीप सवधी पूर्वविदेह १ धातकीखड पूर्वविदेह २ पुष्कराडध पूर्वविदेह ३ तिहा ६६ सूर्यतपे पश्चिम जबूझीप विदेह १ धातकीखंड पश्चिम विदेह २ पुष्करार्ध पश्चिम विदेह ६६ सूर्य तपे दिवस करे। अने जिवारे मेरु यकी दक्षिण पुष्करार्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे तिवारे मेरुयकोत्तर पुष्करार्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे। जिवारे मेरुयकी पूर्वपुष्करार्ध लगे ६६ चद्रमा रात्रि करे तिवारे पश्चिम पुष्करार्धलगे ६६ चद्रमा रात्रिकरे एम १३२ सूर्य १३२ चद्रमा कह्या। श्रियास ग्यारमा अरिहंतने ६६ गणधरहुआ। आवश्यको ७६ गण धर कह्याछे तेमतांतरछे। आभिनिर्वाधिकज्ञान एतले मतिज्ञाननी ६६ सागरोपम भाभिरालगे स्थितिकही। यदाह दोषारे श्रिजयाइसु गयसाति त्रिचतुए चवताइ अइरेगनरभवीअ नाणजीवाणसिद्धंति। विजयविमाने मतिज्ञानी दोविलाजाय तिहंतिलीम सागर २ बेलालत्कळे काळज्जे ३०३ २२८ पट्टणा

अहवताम् अदरेगं नरभवीयं नाणाजीवाणसव्वहंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथ सप्तषष्ठिस्थानके किंचिद्विचित्रियते तत्र पंचसंवत्सरेत्यादि नक्षत्रमासीये नकालेन चद्रीनक्षत्रमण्डलभुंक्ते सच सप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति साहोरात्रस्य सप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणचाष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानीति प्राक्दर्शितम् १८३० तदेवं नक्षत्रमासस्योक्त प्रमाणरागिनादिनसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेन त्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेन युगदिनप्रमाणराशिः सप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापित निदशचेत्येव रूपो विभज्यमानः सप्तषष्ठिनक्षत्रमासप्रमाणो भवतीति बाह्याश्रित्य लघुहिम

होत्या व्याप्तिनिबोहियनाणस्स णं उद्धोसेण तावठिं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसं वच्छरियस्स णं जुगस्स नस्सत्तमासे णं मिज्जमाणस्स सत्तसं ठि नस्सत्तमासा प० हेमवयगुरन्ववयानु णं बाहानु

६६ सागर आउखो । तथा अच्युतदेवलीगे वीण बेलाजाय तिहां उक्कट्टी २२ सागरआउखो वाईती ६६ सागरहीय । विचैमनुयनोभव करेते आभेरा माहि गणिये इति ६६ समवाय संपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिंवे ६७ समवाय लिखेक्के । पचसवत्सरे युग १ पूरोथाप । तेयुग नक्षत्रमासे मावीये ६७ नक्षत्रमासहीय जेणे काले चद्रमा नक्षत्र मडलनेभीगेवे तेन वचमासकहिये तेन वचमास २७ अहीरात्रि णेने एकअहीरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहीय । पूर्व ६१ मंठारणे एक १८३० दिनक ह्याक्खेते ६७ गुणां करिये तिवारे एकलाख नाईत हजारक्खेसे दसभागहीय तेस डसठभाग एकअहीरात्रि वाधिये २७ अहीरानिये सडसठिया एक बोसभागे एक नक्षत्रमासहीय एहवे ६७ नक्षत्रमासे एक नक्षत्र युगपूराय । लघु हिमवतपर्वतनी जीवाधको पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेहिमवतचेवनी प्रदेशप



वज्जीवायाः पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानवेचप्रदेशपंक्तौ हेमवतवर्षजीवायावत्ते हेमयतबाह्वुच्येते एवमैरख्यवतबाह्वुपिभावनीयौ द्रुहप्रमाणसंवादः बाह्यासत्त  
 ठिसप्तपणपवेतिवियकलाप्रीति कलाएकोनविंशतिभागः एतच्चबाहुप्रमाणं हेमवतधनुःपृष्ठान् चत्तालासत्तसया अडतीससहस्र दसकलायधगुन्ति ॥ एवं  
 लक्षणात् ३८०४० । १० । १८ हिमवतधनुःपृष्ठे धनुपिठुकलचउक्त पणवीससहस्रादुसयतोसहियन्ति एवलक्षणी २५२३० । ४ । १८ । अपनीतेयच्छेषतदर्द्धी  
 कृतसङ्गवतीति आयाभिनेदव्येति मदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वाताज्जंबूद्वीपोपरस्थादिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसानः पचपचायदीजनसहस्राणितावदस्ति ततः  
 परद्वादशयीजनसहस्राख्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये गौतमद्वीपाभिधानोद्वीपोस्ति तमविकृत्यसूत्रार्थः सन्भवति पंचपंचाशतोद्वादेशानांच सप्तषष्टित्वभावात्

सत्तठिं सत्तठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिस्रियन्नागाजोयणस्स अ्यायमेणं प० मंदरस्सणं पट्टयस्स पु  
 रत्थिमिस्सालु चरमत्तलु गोयमदीवस्स पुरत्थिमिस्से चरमंते एसणं सत्तसठिं जोयणसहस्साइं अण्वाहाए

क्षिच्छे हिमवतचेन्ननी जोवालगे तेहिमवंतचेन्ननी बाहुसरीखीवाहुच्छे । एम शिखरीनी जोपायकी पूर्वपथिमे प्रवर्द्धमान जेएरख्यवंतचेन्ननी प्रदेशपंक्षिच्छे एर  
 ख्यवंतचेन्ननी जोवालगे ते एरख्यवंतचेन्नो बाहुकहिये । जेहिमवंत एरख्यवंतचेन्ननीबाहु ६७ से ५५ योजन एकायीजननाउगणीसहाय्यात्रिणिकला ६७५५ ।  
 ३ १८ योजनना ३ भाग लांबपणे कही । से . पर्वतना पूर्वचरिमातथकीमाडी लवणसमुद्रसांही पथिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे ल  
 वणसमुद्राधिपति तेहनी निवासभूत गौतम द्वीपच्छे तेहोपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे ग्रावाधारे गिचाले आंतरो कही । सरूप  
 र्बत १० हजार योजन विष्कभलीजे अने तिहांथी ४५ हजार गौतम द्वीप सबमिली ६७ हजार योजन आंतरो थयो

यद्यपि सूत्रपुस्तकेषु गौतमशब्देन दृश्यते तथाप्यसौ दृश्यः जीवादिगमादिषु लक्षणसमुद्रे गौतमचन्द्रपरिहारीपातविनाहीपातरस्याश्रयभाषणत्वादिति सर्वोक्तिपिणिभि  
 त्यादि सर्वेषामपि यमित्यलकारे मच्चत्राणां सीमाविष्कम्भः पूर्वापरतत्त्वद्रस्य न च त्रभुक्तिहेत्रविस्तारः न च त्रेणाहोरात्रभोयत्वे त्रस्य सप्तषड्धा भागैर्भाजितो विभक्तः  
 समांसः समच्छेदः प्रज्ञप्तः भागातरैरेतुभज्यमानस्य न च त्रसीमाविष्कम्भस्य विषमच्छेदनाभवति भागातरेण न वक्तव्यक्यते इत्यर्थः तया हि न च त्रेणाहोरात्रगम्य  
 स्य चेत्रस्य सप्तषट्तिभागीकृतस्य चेत्रस्यैकविंशतिर्भागा अभिजिन्न च त्रस्य चेत्रतः सीमाविष्कम्भो भवति ॥ एतावति चेत्रे च त्रेण सह तस्य योगोऽप्यपदिश्यत इत्यर्थः  
 तथा तस्यामेवैकविंशतौ त्रिंशत्सु हर्तृत्वादहोरात्रस्य त्रिंशत्तागुणिताया ६३० सप्तपञ्चाहृतभागाया यज्ञव्यम् तत्कालसीमा भवति चन्द्रेण सह तस्य योगकाल इ  
 त्यर्थः सा च नवमुहूर्त्ताः सप्तविंशतिद्युसप्तषट्तिभागाः ८।२७।६७ ग्राह्यच अभिद्रस्य च दजोगी सत्तद्दीखडि ए अहो रत्ते भागात्रो एकनीस होति हि गानवसुहुत्ता  
 यत्ति चेत्रतः कालतस्तथा यत्ति भिपगभरण्यार्द्रांशेषास्वातिज्येष्ठाना त्रयस्त्रिंशत्सप्तषट्तिभागास्तद्भागाद्वै च चेत्रसीमा विष्कम्भो भवति तस्यामेव सार्धत्रयस्त्रिंशतिः त्रिंश  
 तागुणितायां १००५ सप्तषड्धाहृतभागाया यज्ञव्यम् तदेपाकालसीमा तच्च पचदशमुहूर्त्ताः ग्राह्यच सयभिसयाभरणीश्रो अद्वाअरसे ससाद्वै ज्ञाय ए एक्कनक्वत्ता  
 पद्मरसमुहुत्तसजोगति ॥ १ ॥ तथोत्तरात्रयः पुनर्वसुरोहिणी विशाखानां सप्तषट्तिभागा नाश्रत तद्भागाद्वै च चेत्रजिष्कम्भः सीमा भवति तथा तस्मिन्नेव त्रिंशद्गुणि

व्युत्तरे प० सखेसि पिण नरकज्ञाणं सीमाविष्कम्भेणं सत्तठिभागत्रद्वेणु समंसे प० ॥ ६७ ॥

सगला न च त्रनी सीमा विष्कम्भपणे पिहलपणे सतसठ भागे विभजिये मिहचेथके समोअश्र चेत्रनी भागत्रये एम कल्लो न च त्रे अहोरात्रोये जेचेत्रनी सी  
 मा चेत्रथकी विष्कम्भपणी होय । एतले चेत्रे चद्रमा साथे तेअभोचनी योग संध कहीये वीजा न च त्रनी वार्ता सर्वटोकाथकी जाणिवी ॥ इति ६७ समवा

ते ३०१५ तथैव हतभागेयकथम् तदेवाकालसीमाभवति साधपचत्वारिंशत्युहर्त्ता इति आह च तद्देवउत्तराद्रं पृणव्वसूरीहिणीविसाहाय एएछन्नकलत्ता पौ  
 णयालसु दुत्तसजीगति ॥ १ ॥ येत्राणापचदशानां नक्षत्राणां सभयिष्ठभागानां क्षेत्रे गीमायिप्रभवेति तस्याश्चतैवयुणितायां २०१० हतभागयांचयस्रव्यम  
 त कालसीमातच्चविंशत्युहर्त्ता आह च अत्रसेसानकलत्ता पन्नरसमिहति नौमरुजुता चंदस्सतेरुजोगीसयात्तीएसदवखानि ॥ ३ ॥ एवचेकस्यपुण्यां २ पचद  
 शानां चेत्येवमष्टाविंशतेर्नक्षत्राणामष्टादशयतानि त्रिगदपिकानि सप्तषष्ठिभागानां सेतदेवद्विगुणं षट्पचाशती नक्षत्राणां भदति तच्चसहस्रदयं षड्युतानि ष  
 व्यधिकानि ३६६० ॥ ६७ ॥ अथाष्टमषष्ठिस्थानके किंचित्तिथ्यने धायइसडित्यादि इहयदुक्तम् एवंचक्षवद्वी वलदेवावासुदेवत्ति तत्रयद्यपिचक्रवर्त्त  
 नां वासुदेवानां नैक्रदाअषष्ठषष्ठिः संभवति यतीजिवन्यतीये नैकस्मिन् महाविदेहेचतुर्णां तीर्थेकरादीनामावस्थभावः स्थानागादिष्वभिहितः नचैकज्ञेनेचक्रवर्त्ती  
 वासुदेवश्चैकदा भवतीऽतः अष्टषष्ठिरेवोक्तर्षतश्चक्रवर्त्तिना वासुदेवानां चाष्टषष्ट्यां विजयेषु भवति तथापीहसूत्रे एकसमयेनेत्यविशेषणात् भवति कालभेदेभा

## धायइसफ़ेणं दीवे अरुसठिं चक्रा वहिविजया अरुसठिं रायहाणीउ प० उक्तीसपए अरुसठिं अरहंता स

य पूरीययो ॥ ६७ ॥ हिवे ६८ मो तिखे ॥ पूर्वं पश्चिम धातको खंडे ६८ चक्रवर्त्तनौ विजय चक्रवर्त्तिये जीपिवा योग्य क्षेत्रेना खंड कहा ॥  
 एतले पूर्वातकोखंडे ३२ विजय मिदे इमाहि अने भरत ऐ एव न मिली २ एव ३४ मिजय पश्चिम धातको खंडे परि ३४ सर्वमिली ६८ विजयहोय । वि  
 जयहीउ राजधानी एकेक होय तेमाटे पूर्वापधातको खंडे ६८ राजधानीजे जिहाराजा राज्यकरे ते राजधानी कहिये । उरकष्ट पदे पूर्वापरधातकी खंडे  
 ६८ अरिहत उपजताहुया उपजके उपजसे । एतले एकेकविजयदीठ एकेक अरिहत उपज । एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव जाणिया । यद्यपि वर्त्तमान

विनांचक्रवर्त्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलष्यतेच जबूहीपप्रज्ञस्यांभारतकच्छाद्याभिलाषेण चक्रवर्त्तिन इति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसहस्रिण्य  
मकेकिञ्चिद्विष्यते समएत्यादिमंदरवज्जर्गिरुवर्जाः वर्षाणिचभरतादिचेनाणि वर्षधरपर्वताश्चिअवदादयस्लक्ष्मीमाकारिणो वर्षधरपर्वताः समुदितएकीन  
सप्ततिः प्रज्ञप्ताः कथंपचसुमेरुपु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पचनिशउर्षाणि तथाप्रतिमेरुषट्षट् हिमवदादयोवर्षधरास्त्रिणश्चत्वार एवेषुका

सुप्पजिंसुवा ३ एवंचक्रवर्त्ती बलदेवा वासुदेवा पुष्करवरदीवहेण अरुसठि विजया एवचेवजाववासुदेवा  
विमलस्सण अरहने अरुसठिं समणसाहस्सीने उक्कोसिया समणसंपथा होत्या ॥ ६८ ॥

काले वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिनहोय ६८ वासुदेव नहोय अने एकेक विदेहे जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थकरादि उत्पन्न होय । एकेचेने चक्रवर्त्ति वासुदेव न  
होय । बनेस विजयनेविषे उत्कण्ठपदे २८ चक्रवर्त्तिहोय ४ वासुदेवहोय अने २८ वासुदेवहोय तिवारे ४ चक्रवर्त्ति होय तो ६८ किमभिले सूत्रमाहि एकेसभे  
एहवी पाठनथी तेमाटे कालभेदे पाठके ६८ होय विजयने भेदे तेमाटे मिरुए नथी । धातकीखड्गनीपरे पुष्करादूर्ध्व द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी  
कहवी । उत्कण्ठ पदे ६८ अरिहता कहिवा एम चक्रवर्त्ति वलदेव वासुदेव कहिवा । विमलनाथ अरिहत ने अडसठ हजार अमणयती हुय  
उत्ताए अमण सपदा थइ ॥ ६८ ॥ हिवे ६८ मो लिखे के । काले करी ओलखाथी जे चेव ते समयचेव कहिये ते चेव अठाई द्वीपेने विषे  
मेरु वर्जी ने ६८ चेव अने वर्षधर कुलगिरि हिमवतादिक क्षेत्रनी सीमानां कारणहार कहा । ते कहके अठाई द्वीपे ५ मेरु के एक मेरुने पासे सातसात

राइति सर्वसंज्ञैकोनसप्ततिरिति । मदस्तेत्यादि लवणसमुद्रपश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राख्यगङ्गा द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमुद्राधिपतेर्भवनेनालक्षतीगीतमद्दीपोनामद्दीपोऽस्तितस्यचपश्चिमांतोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवति पचचत्वारिंशतोजन्नुद्धीपसंबंधिनांद्वादशानामग्रतरसत्रिणांद्वादशनानामेवद्दीपविष्कम्भसंबंधिनांचमौलनादिति । मोहन्रीयवर्ज्यानांकर्मणामेकोनसप्ततिरुसरपक्रतयो भवतीति कथं ज्ञानावरणस्यपच दर्शनावरणस्यनव वेदन्रीयस्यडे आयुषश्चतस्रो नाम्नोद्विवत्वारिंशन्नोचस्यहे अंतरायस्यपचेति ॥ ६८ ॥ अथ सप्त तिसृष्टानके किमपिलिख्यते समणेत्यादि वर्षा

सुयारा मंदरस्सपद्यस्सपच्चित्थिमिस्साने चरमंताने चरमंताने चरमंताने एरणं एगुणसत्तारिं  
जोयणसहस्साइ अवाहाएअत्तरे ५० मोहिणिज्जवज्जाण रात्तग्हं कम्मपगळीणं एगुणसत्तारि उत्तरपगळीने

भरत हिमवतादिक क्षेत्रछे ते पाचसता पेन्नीस थाय एकेक मेरुने पासिं हिमवत महाहिमवंतादिक ६। ६। वर्षधर छे छपच त्रीस वर्षधर थया धात की खड मांहि २ द्रषुकार पर्वतछे पुस्कराक्ष मांहि २ एवं ४ द्रषुकार पर्वतथया सर्व भिली उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६८ मेरुना पश्चिम चरमांत थी गौत म द्वीपनी पश्चिम चरमात एहने ६८ हजार योजन नी विचलि त्रांतरी कहाँ। एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनी जगतौ छे तेह थकी १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानी निवास भूत छे ते १२ हजार योजननी पिहुली छे ते सर्व एकी करिये तिवारे ६८ हजार योजन थाय। मीहनीय कर्म वर्जो नें सात कर्मनौ ६८ उत्तर प्रकृतिकहौ। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ८ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६८ समवाय संपूर्ण ॥ ६८ ॥ हिवे ७० मी लिखि छे। अमण भगवान महावीर देव च्यारमास प्रमाण वर्षाकाल

णांचतुर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्य सविंशतिदिवसाविकिमासे व्यतिक्रान्तिपंचाणतिदिनेष्वतीते ध्वित्यर्थः सप्तत्यांचरात्रिदिनेषुशेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः वर्षास्वावासीवर्षावास.वर्षावस्थानपञ्जीसवेद्वत्ति परिवसति सर्वथाकरोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषुदिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति अतिभाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां तु वृक्षभूलादा वपि निवसतीति हृदयमिति पुरिसादानीयति पुरुषाणामादानीयउपादेयः पुरुषादानीयः अवाह्णिया कम्बुहि ई कम्बणिसेगपणत्तेत्ति इह किलात्माअविशिष्टमेवकर्मपुद्गलीपादान क्त्वा उत्तरकाल ज्ञानावरणीयादिकर्मणा सस्वसवाधाकालमुक्त्वा ज्ञानावरणीयादिप्र

प० ॥ ६९

ससेहिं वासावासपञ्जीसवेइ पासेण अरहापुरिसादानीए सत्तरिवासाइं बज्जपडिपुब्बाइं सान्नपरियागं पाउणिहा सिद्धेबुद्धे जावप्यहीणे वासुपुज्जेणं अरहा सत्तरिंधणूइं उहुंउच्चत्तेण होत्या मोहणिज्जरुस्सं णं

नो ते माहि २० रात्रिये अधिक मास वीतयेकं एतले आषाढी पूनिम थकी पंचासमे दिहाडे भादों सुदि ५ दिने सवत्तरी करी पछे शेष थाकती १० रात्रिये वर्षाकाल रह्यो पञ्जीसवेई सर्वथापि करे । पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषा माहि अष्ट प्रतिपूणं १० वर्ष लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धयया सर्वदुःखथक्की प्रचौणयया एतले ३० वर्ष गृहवासे १० वर्ष चारित्रि सर्व मिली १०० वर्षनो आयु जाणिवी । वासुपूज्य बारहमां अरिहत १० धनुष ऊचपणे हुया । मोह नोय कर्मनो स्थिति १० सागरोपम कोडाकोडि लगे अवाधायें १ हजार वर्ष उणी ज्ञानावरणी यादि कर्मदल भोगविवाने अर्थे रचना पूर्व जे बाध्योछे ते उदयकाले आंणिवी एतले उत्कट्टी १० कीडाकोड सागरोपमनो जेणे समये मोहनीयकर्मनो बधपाभ्यो ते बंधकालथी मांडी १ हजार वर्ष लगे तेकर्म

कतिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्योदयसहितं तदलिकं निषिञ्चति उदययोगं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवरूपा च यतः स्थितिरवस्थाम् तेनभावेनाप्राच्यवन तत्र कर्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति तत्र अबाहति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणित तावत्कर्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोन्तरसमये कर्मदलिक पूर्वनिबिक्त उदये प्रवेययति निषेकीनाम ज्ञानावरणादिकर्मदलिकस्या अनुभवनाथं रचना तच्च प्रथमसमये बहुकं निषिञ्चति द्वितीयसमये विशेषहीन तृतीयसमये विशेषहीन मेवयावदुक्तष्टस्थितिकर्मदलिक तावद्विशेषहीन निषिञ्चति तथाचीकं मुत्तणसंगबाहु पटमाएठिईएवहुतरद्वय सेसेविसेसहीणजावुक्कोसतिसब्बेसिंति बाधलोडने बाधत इति बाधा कर्मणउदयइत्यर्थः नवाधाअबाधा अन्तर कर्मोदयस्येत्यर्थः तथा जनिका आबाधोनिका कर्मस्थितिः कर्मनिषेकोभवतीत्येवमेकेपाहु रत्येपुनराहु रवाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनाना कर्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तेति सागरोपमकोटीकोटीलक्षणः कर्मनिषेको भवतिसच कियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित् । षडत्यस्येत्यादि इहभावावार्थीयं युगेहि पञ्चसख

कम्मस्स सत्तरिसागरोवमकोठाकोठीनु अवाह्णिया कम्मणिसेगे प० माहिंदस्सणं देविदस्स देवरत्तो सत्तरिसामाणियसाहरसीनु प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

उदयेनावे ते माटे ७० कोडाकोड सागर माहिंथी ७ हजार वर्ष जणा कीजे एतली स्थिति मोहनीय कर्मनी कोइक कहेके सात हजार वर्ष अधिक ७० कोडाकाडि सागर लक्षण कर्म निसेक होय । माहेद्व चौथा देवलीकना राजानि ७० हजार सामानिक देवता कह्या इति ७० संमवाय सपूर्ण ॥ ७०

त्सरा भवन्ति तत्राद्यौ चन्द्रसम्बत्सरो तृतीयो भिवर्द्धितसम्बत्सरे चतुर्थश्चन्द्रसम्बत्सरे तृतीयो भिवर्द्धितसम्बत्सरे एव तत्र च एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचद्विष-  
ष्टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति अथ च द्वादशगुणः चन्द्रसवत्सरो भवति त्रयोदशगुणश्चाथमेवा भिवर्द्धितो भवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिवर्द्धितलक्षणे सम्बत्सरे त्रयोदि-  
नानांसहस्रं दिनवतिः षट्षष्टिभागभवन्ति १०८२।६। ६२ तथा आदित्यसवत्सरे दिनानां शतत्रयं षट्षष्टिभूतमिति तत्र तत्रेयं सहस्रमष्टनवत्यधिकं  
भवति इह च किल चन्द्रयुगमादित्ययुग चाषाढ्या मेकपूर्यते ऽपरश्च आषाढकृष्णप्रतिपदि आरभ्यते एव चादित्ययुगसवत्सरे त्रयोदश्या चन्द्रयुगसवत्सरे त्रयो पचभिदि-  
नैः षट्षपचाशताचदिनषष्टिभागैरुन्भवतीति क्त्वा आदित्ययुगसवत्सरे त्रयो आवणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्कोसाधिके पूर्यते चन्द्रयुगसवत्सरे त्रयोत्वाषाढ्यां तत

## सत्तरीए राइदिणहं वीक्षतेहिं सव्वाहिराजु मंजुलाजु सूरिएञ्जाउहिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

हिवे ७१ मी लिखे १। १ युग मांहि ५ संबच्छर होय ते चद्र १ चद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चद्र सबच्छर एक्की चद्र  
मास २८ अहीरात्रि १ अहीरात्रिना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कौधां चद्र सबत्थाय तेहना ३५४ दिन भाक्केरा थाय २८।३२।६२ अहीरात्रि १२  
गुणा करिये तो अविभर्द्धित वर्षथाय तोदीय चद्र सबत् १ अभिवर्द्धित सवत्ना येकसहस्र बाणूदिन बासठिया ६ भागहीय अने आदित्य संबत्तरना त्रिण  
से क्कासठियाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूदिन थाय एतले चद्रयुग अने सूर्ययुग येके आपाढी पूनिसदिने पूराथाय वीजियुग आवण बदी प  
डिवाये प्रारभिये एम आदित्ययुग संबत्तरनी अपेचार्ये चद्रसवत्सरत्रिण पाच दिहाडे साठिया क्कपन्न भागे कंणं करिये। आदित्ययुग संबच्छर ३ आवण  
बदी पचना चंद्र दिन थकी क्कहे दिने अधिक पूराय चंद्रयुग सबच्छर ३ आपाढी पूनिमें पूरे तिवारपक्की सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायने



अथावणकृष्णपक्षसप्तमदिनादारभ्य दक्षिणायने नादित्य शरन् चंद्रयुगचतुर्थसंस्तरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्तिकायां द्वादशोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीना चतुर्णाहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्ततितमे दिने माघमासे बहुलपक्षत्रयोदशीलक्षणे सूर्यआवृत्तिं करोति दक्षिणायनान्विहृत्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसयुगसम्बत्सरेषूत्तरायणतिययः क्रमेणैव यदुतबहुलसप्तसप्तमीए १ सूर्यशुद्धसप्तोचउत्थीए २ बहुलसप्तयपण्डिवए ३ बहुलसप्तयतेरसीदिवसे ४ सुद्धसप्तयदसमीए ५ पवत्तएपंचमीउआवृट्टी एयाआउट्टीओसव्वाओमाघमासमिति दक्षिणायनदिनानिचैव पठभाबहुलपण्डिवए १ वीयाबहुलसप्ततेरसीदिवसे २ सुद्धसप्तयदसमीए ३ बहुलसप्तयसप्तमीए ४ सुद्धसप्तचउत्थीए पवत्तएपचमीउआउट्टी एयाआउट्टीओ सव्वाओसावणेमासेत्ति वौरियपुब्बसप्ति हततीयपूर्वस्य पाहुडत्ति प्राभृतमधिकारविशेषः । अजिण्ण्यादि तस्यहि अष्टादशपूर्वलक्षणि कुमारत्व त्रिपञ्चाशच्चेपूर्वागाधिकाराज्यमित्येकसप्तति रिहच पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न्न विवक्षित मिति

## एकसत्तिरिंपाऊणा प० अजितेणं अरहा एकसत्तिरिं पुब्बसयसहस्साइ अंगारमज्जे वसित्ता मुंनेअविज्जा जा

सूर्ये चालतीयको चउथा चद्र युगना चउथा मासमाहि अतर्भूतके एकसो अठारगा दिन कार्तिकीये येकसो बारमां पीतानां मण्डलमाहि सूर्यचार करे तिवारपके सीआला संबधी मागशिरादिक मासमाहि एकत्तर माडला सूर्य चरे पके बहत्तरिमे दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमाहिला सर्वबाह्यामां डला यको सूर्य आवृत्तिकरे प्रदक्षिणावर्त्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे ॥ वीर्य प्रवाद बीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभृतका अधिकार विशेष कह्या । अजितनाथ

५ सगरोद्वितीयश्चक्रवर्त्ती अजितस्वामिकालीनः ॥ ७१ ॥ अथद्विसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते सुवर्षकुमाराणां द्विसप्ततिलक्षाणि भवनानि कथं दक्षिणनिकाये अष्टत्रिंशदुत्तरनिकायेतु चतुस्त्रिंशदिति नागसाहस्रीश्रीति नागकुमारदेवसहस्राणि विलां षोडशसहस्रप्रमाणामुत्सेधती विष्कम्भतश्च दशसहस्रानालवणजलधिप्रिखांवाह्यां धातकीखण्डोपाभिमुखीं महावीरो द्विसप्ततिवर्षांख्यायुः पालयित्वासिद्धः कथन्निशङ्कहृत्स्थभावि द्वादशसाध्वीनिपक्षश्च

व पव्त्रइए एव सगरेवि रायाचाउरंतचक्षवही एकसत्तारिं पुव्त्रजावपव्त्रइए ॥ ७२ ॥ बावत्तारिं

सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा ५० लवणस्स समुद्दस्स बावत्तारिं नागसाहस्सीनु बाहिरियं बेल धारति समणेअ

अरिहत अठार पूर्व लाख लगे कुमारपणे अने एक पूर्वांगाजिक ५३ लाख पूर्व लगे गृहवासमावसौने मुडथया । गृह स्वाथमथकी यतीपणूं पाया एम १ पूर्वलाख चारित्रपालीसर्वायु ७२ लाख पूर्व जाणिबा । एमज अजितनथ स्वामी कालीन सगरपणे बीजीसहारजा चा उरत चक्रवर्त्ती एकहत्तर लाखपूर्वलगे गृहवासमांहिबसौने राज्यदातीने मुडपणो गृहस्थयकी यतीपणो पाया ॥ इति ७१ सो संपूर्ण ॥ ७१ ॥

हिवे ७२ सो लिखेछे । भवनपतोनीं तोजीनिकाय सूर्ण कुमार देवता तेहना दक्षिणद्वे ने ३८ लाख भवनावास उत्तरेद्वे ने ३४ लाख भवनावास बेहुभि ली ७२ लाख भवनावास कहा । ७२ हजार देवता लवण समुद्रनी बाहिरली धातकी खड तरफनी पांणीनीविला प्रति धरेछे । एतले १६ हजार योजन जपरि २ कोशनी विलावढे तिवारे चाटूये करो पाणो उपराओ मारिछे । अमण भगवंत महावीर स्वामी ७२ वर्षलगेसर्वायुपालन कियो । एतले ३० वर्षगृह वासे १२ वर्ष मास ६ दिन १५ छद्मस्थभावें देशीन ३० वर्ष केवल पर्याय एवं ७२ वर्ष लगे सर्वायु पालीने सिद्ध थया सर्व दुःखथकी प्रक्षीण थया । स्थविर

क्व द्रव्यभावे देशीनानिचिगत्केवलित्वे इति द्विसप्ततिः अयलभायति अचलोमहावीरस्य नवमी गणधरः तस्यायु द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्ग्रहस्थले  
 द्वादशक्षद्रस्यताया चतुर्दशकेवलित्वे इति पुष्करार्द्धद्विसप्ततिः अद्रास्तत्रैकस्याः पक्षौ षट्त्रिंशदन्यस्यांच तावत् एवेति वावत्तरिकलाञ्छेति कलाविज्ञानानीत्यर्थः  
 ताश्च कननौयभेदा द्विसप्ततिर्भवन्ति तत्रलेखन लेखोऽचरदिग्भासः तद्विषया कला विज्ञानं लेख एवोच्यते एव सर्वत्र सच लेखो द्विधा लिपिविषयभेदात् तत्र  
 लिपि रष्टादयस्यानकोक्ता अथवा लाटादिदेशभेदतस्तथा पत्रादि विविधवित्तोपाधिभेदतोवाऽनेकविधिति तथाहि पत्र वल्ककाष्टदन्तलोहताम्रजतादयो  
 अक्षराणामाधार स्तथा लेखनीकोर्णनस्यतचूतच्छिन्ननिबद्धसजातितोऽक्षराणि भवन्तीति विषयापेक्षयाप्यनेकोधाः स्वाभिमत्यपि तदुपगुणशिष्यभार्यापति

गवंमहावीरे वावत्तरिं वासाइं सद्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्यहीणे थरेणं अयलज्ञाया वावत्तरिं वासाइं  
 सद्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्यहीणे अस्मितरपुस्करश्चेणं वावत्तरि चंदापन्नासिसु ३ वावत्तरिसूरिया  
 तविंसुवा ३ एगमेगस्सणं रन्धो चाउरतचद्वावहिस्स वावत्तरिपुरवरसाहस्सीनु प० वावत्तरिकलालु प० त०

महावीरना नवमा गणधर अचलभ्माता ७२वर्ष लंगं सर्वायुपालोने यतीपगूं पामी सिद्ध थया सर्वदुःखयकी प्रक्षीण थया । गृहस्थपणे ४६ वर्ष क्व द्रव्यभा  
 ने १२ वर्ष केवलि पर्याये १४वर्ष एव ७२ वर्षपालोने सिद्ध थया । पुष्करवरक्षोप १६ लाखनेच्छे तेमांहि ८ लाख मानुषीत्तर पर्वतमाहिते अब्भितर पुष्क  
 राई कहिये तिहां ७२ चद्रमा ७२मूर्य प्रभासता हुया प्रभासेच्छे प्रभासस्ये पहिली पत्तिये ३६ दूजी ३६ एव ७२ थया । तपता हुया तपेच्छे तपस्ये एकेक  
 चातुरत चक्रवर्तीने ७२ पुरवर मीटा म्मी नगरना सहस्र कद्दा । पुरुषनी ७२ कला कही ते कर्ह्छे । लिखवी अक्षरनी स्थापिवी तेहीजकलाते लेख क

शत्रुभिन्नादीनां लेखविषयाणामप्यनेकत्वात् तथाविधप्रयोजनभेदाच्च अक्षरदोषाश्चेति अतिकार्यमतिस्थौल्यवैषम्यम्याक्तिवक्रता अतुल्यानांचसादृश्यमभागोऽव  
 यवेषुचेति ॥ १ ॥ तथा गणितसंख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेदम्याटौप्रसिद्धं रूपं लेख्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्माणे ३ नाव्यकलाभरतमार्गे  
 श्छलिकलास्यविधानमित्यादिभेदादृष्ट्वा नाव्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा स्वरूपवान्भरत  
 शास्त्रादवसेयः ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्गश्छलिकमार्गं भिन्नमार्गभेदात्तथा तत्र सप्तस्वरास्वरयोगमा मूर्च्छनाएकद्विशतिः तानाएकीनपञ्चाशत्समा  
 सस्तरमण्डलद्वयञ्च विद्याखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वाङ्मयति वाद्यकला साच तत वितत शुधिर घन वाद्याना चतुः पञ्चयेक प्रकारतया त्रयोदशधा  
 ४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकशास्त्रेभ्योऽवसेयः इहच द्विसप्ततिरिति कलासंख्योक्ता बहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का  
 लेहं १ गणिय २ ख्व ३ नहं ४ गायं ५ वाङ्मयं ६ सगरयं ७ पुस्करगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११  
 पोरकञ्चं १२ झुष्टावयं १३ दगमहियं १४ झुन्नविही १५ पाणविही १६ वत्सविही १७ सयणविही १८  
 ला १८ भेदे कहीच्छे १९ गणित अकनौकला २० चित्राम करिवो २१ नाटकनौकला २२ गानकरिवानौकला २३ वाजिन वजावानौकला २४ कठ सक्थी खर  
 ने श्रीलखिवानौकला २५ वाजिनगीतिनौजाणवो २६ ताल देवानौकला २७ जूवारमवानौकला २८ लोगथी गलाप सलापनी कला २९ नगररद्दा  
 दिकनौ कला ३० सारपासारमवानौ कला ३१ पाणौअनेमाटौ एकठौकौधात्रमुकयोग होय तेकला ३२ अन्ननीपजाविवा राधिवानौकला ३३ पाणौ  
 नौपजावानौ विधि ३४ बख नोपजाविवारंगवानौ पहिरवानौविधि ३५ सीवानौविधि ३६ सखतनोबध तेहनो जाणियो ३७ प्रहेलिका

श्रृज्जं १९ पहेलियं २० मागहिंयं २१ गाहं २२ सिलोणं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्थं २५ श्यान्नरण  
 विही २६ तरुणी पणिकम्मं २७ इत्थीलस्खणं २८ पुरिसलस्खणं २९ हयलस्खणं ३० गयलस्खणं ३१  
 गोणलस्खणं ३२ कुक्कलस्खणं ३३ मिंढयलस्खणं ३४ चक्कलस्खणं ३५ लत्तलस्खणं ३६ दंठलस्खणं ३७  
 श्रृसिलस्खणं ३८ मणिलस्खणं ३९ कागणिलस्खणं ४० चम्मलस्खणं चदलस्खणं सूचरियं राज्ञचरियं गह  
 चरियं सोन्नागकरं दोन्नागकरं विज्जागयं मंतगय रहस्सगय ४१ सन्नासचारं ४२ बूहं ४३ खंधावा

नौकला २० । मगधदेशसंबंधीगाथानीकला २१ । प्राकृतबंध गाथानी जाणपणूं २२ । श्लोक रचवानी कला २३ । गंध नया अब्बीरादिकनीयुक्ति २४ । मधु  
 रादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५ । आभरण घडवानी जडवानी पहरवानी कला २६ । तरुणी स्त्रोजातिने प्रति क्रम क्रियाकलापनीसिखाविवी २७ ।  
 स्त्रोनालक्षण जाणिवानी कला २८ । पुरुषनां बत्तीस लक्षणजाणिवानी कला २९ । घोडाना लक्षण जाणिवानी कला ३० । हाथीनां लक्षण जाणिवानीक  
 ला ३१ । इधम लक्षण कला ३२ ककुडाना लक्षण कला ३३ । मीढाना लक्षण ३४ । चक्रना लक्षण ३५ । छत्रना लक्षण ३६ । दंडवंशलढीनालक्षण ३७ ।  
 खड्गना लक्षण ३८ । मण्णिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९ । कार्किणीरत्न विशेषना लक्षण ४० । चर्मनीगुण अवगुण जाणिवी चंद्रनाग्रहणादिकनी जाणिवी स्र  
 र्गनी चरित्र एहवी ज्ञायोती एमथास्ये एम जाणिवी राहुनी चरित्रजाणिवी ग्रहनी चरित्र जाणिवी सौभाग्यनीकारण जाणिवी दौर्भाग्यनीकारण जाणिवी  
 विद्या प्रवृत्ति रोहिणी तन्नत विचार मन्त्र आराधने हरिणगमेधीआवि । रहस्यगति प्रकृत वस्तुना जाणिवी सन्नाव वस्तु मात्रना प्रयोग चार कटक मानो छ

सुचि दंतर्भावीऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथ त्रिसप्ततस्थानके किमपिलिख्यते । हरिवासेति अत्र सत्त्वाद्गथा ॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि मेवजीयणसहस्रा जीवासत्तरसकलाय अष्टकलाचैव हरिवासेति तथा विजयो द्वितीयो बलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिवर्षलक्षयायु रक्त मावश्यकेतु पंचसप्तति रितीदमपि सतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथ चतुःसप्ततस्थानके किंचित्लिख्यते । तत्राग्निभूतिरिति महावीरस्य द्वितीयो गणधरः गणनायकस्तस्येह चतुः

सउणसुयं ७२ ॥ समुच्छिम्बखहयरपंचिदियतिरिखजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्भयवासयानु ण जीवानु तेवत्तरि २ जोयणसहस्साइं नवयणुत्तरे जो यणसए सत्तरसयणुगूणवीसइन्नागे जोयणस्स अष्टन्नागंच अयामेणं प० बिजणुणंबलदेवे तेवत्तरि वाससय सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थरेणं अण्णिगिन्नूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

पचीनो पचेद्वियतिर्यचनी उल्लुष्टी ७२ हजार वर्षनी स्थिति कही ॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मो लिखे ॥ हरिबर्ष अने रस्यक एगुगल चैत्रसबधी जीवा पिणचरूप तेहुत्तरी २ हजार योजन जाणवी । नवसे एक योजन ७३६०१ योजन । एक योजनना उगणीसहाद्रया सत्तर भाग एकयोजननी वली उपरि अर्द्धभाग आयासपणे लांबपणेकही । विजय वोजी बलदेव ७३ लाख वर्षलगे पुरी आउखंपालीने सिद्धया सर्वदुःखथकौ प्रचीण थया । आवश्यके ७५ लाख वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धया ते मवातर छे ॥ इति ७३ मो संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मो लिखे । स्थविर न

शीतोदापप्रातऋदे महयन्ति महाप्रमाणेन यम्युनः दुहश्रोत्तिकचिदृश्यते तदपपाठइतिमन्यते घडमुहपवत्तिएणंति घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्त्तित स्नेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धो हारस्त्रस्य यत्सस्थान तेनसंस्थितो यस्नेन प्रपातः पर्वता अपतज्जलसमूहस्नेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवर नीलवर्धधराइन्निशाभिमुखी प्रपततीति चउत्थवज्जीत्यादि तत्र प्रथमायात्रिशत् द्वितीयायांपञ्चदश पचम्यांत्रौणिलक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चोनलच्चं सप्तम्यापंचेत्येतानि मौलितानि चतुःसप्तति भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पंचसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते । सुविधे नवमतीर्थकारस्य ना

सजोयणविरकंज्राए वडरतले कुंठे महयाघरुमुहपवत्तिएणं मुक्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्वेणं पवठइएवंसीतावि दरिक्कणमुहीजाणियव्वा चउत्थवज्जासु ठसु पुठवीसु चोवत्तरि नरयावाससयसहस्सां प०

टो प्रमाणे घडाना मुखथकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखथी प्रवर्त्थी निकळो एहवो मुक्तावली हारने सठाणे सस्थित एहवे प्रपाते पर्वतथकी पाणी नो समूह मोटे सव्वे पडेछे । एम नीलवत पर्वत उपरि केसरीद्रहथकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्तीहुती शीता महानदी नीलवत पर्वत हेंठे शीताप्रपात कुडनेविषे पडेछे । सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो । चौथी नरक पृथिवी टालीने शेष छे नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीये ३० लाख बीजीये २५ लाख बीजीये १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पांच जंणा १ लाख सातमीये ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो संपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिंवे ७५ मो लिखेछे । नवमा सुविधिवनाथ पुष्यदत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया । सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगे

णां द्वीपकुमारदि भवनपतिनिकायानां मिहार्थं गाथा देवित्यादि युगलानामिति दक्षिणीत्तरनिकायभेदेन युगलं निकायेभवतीति ॥ ७६ ॥  
 अथ सप्तसप्ततिस्थानके विव्रियते किंचित्त्वरं भरतचक्रवर्ती ॥ ७६ ॥  
 ततश्च स्थयीत्याः षट्सु निष्कार्षितेषु सप्तसप्ततिस्तस्य कुमारवासोभवतीति अगवयोगराजसन्तानस्य संबन्धिनः सप्तसप्ततिराजानः प्रव्रजिताः गृहतीयेत्यादि  
 ब्रह्मलोकस्याधीवर्त्तिनीषष्टासु कृष्णराजिष्वष्टौ सारस्वतादयो लोकातिकाभिधाना देवनिकाया भवन्ति तत्र गृहतीयानातुषितानां च देवानां मुभयपरिवार  
 यसहस्साइं १ ॥ ७६ ॥ नरहेरायाचाउरतचक्रवर्ती सप्तहत्तरि पुत्रसयसहस्साइं कुमारवासम  
 ज्जेवसिन्हा महारायान्निसेयसपत्ने ज्यंगवंसानुणं सप्तहत्तरि रायाणोमुंठे जावपवइया गृहतीयतुसियाणं  
 २ लाख भवन कद्या दक्षिण उत्तर नामिलीने । इति ७६ मो संपूर्ण ॥ ७६ ॥ हिंवे ७७ मो लिखे । श्री आदिनाथने ६ लाख पूर्व गयें यके भ  
 रत चक्रवर्ती जन्म पास्या । ८३ लाख पूर्वमाहीथी ६ लाख पूर्व कोटेशके ७७ लाख पूर्व उगस्या तो भरत चातुरंत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्व कुमार बासमाहि  
 वसीने महाराज्याभिधिक चक्रवर्त्तपदवीनी अभिधिक पास्या । एतले ७७ लाख पूर्व कुमारपणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे १ लाख पूर्व दीक्षापणे सर्वायु चा  
 रासी लाख पूर्व जाणिवी । अगरराजाना संतान सबधी अगवगना ७७ राजा मुड थईने गृहस्थयकी अणगार पणूं पास्या । पांचमो ब्रह्मलोक तेहने विषे अ  
 धीवर्ती ८ कृष्णराजी विमान ने विषे सारस्वतादिक ८ लोकांतिक देवताछे तेमाहि गर्दतीय १ तुसित २ एविहु देवतानी ७७ हजार देवतानी परिवार  
 कछी । एके के मुहूर्ते ७७ लवकाल विशेष लवाय परिमाणे कछा । इति ७७ मो संपूर्ण ॥ ७७ ॥ हिंवे ७८ मो लिखे । शक्रदेवदेव देवरा



सख्यामीलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैकोकीमुहूर्तः सप्तसप्ततिलवान् लवाग्रैणलवपरिमणेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते हठस्रन्ननवगस्र  
 स्र निरुवकिठस्रजनुषी एगेजसासनीसासे एसपाणुत्तिवुवई १ सतपाणुत्तिसेथीवे सत्तथीवाणिसेलवे लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहियत्ति ॥  
 ७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानके लिख्यते । सक्कसेत्थादि वेसमणेमहारायत्ति सोमयमवरण वेअमणाभिधानानां लोक्पालानां चतुर्थउत्तर दिक्पाल  
 सहैवैयमणदेवनिकायिकानां सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीनां व्यतरव्यतरीणां चाधिपत्यकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ  
 करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासयतसहस्राणामिति तच्चसुपर्णकुमाराणां दक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनलक्षणि द्वीपकुमाराणांच चत्वारिंश  
 दिव्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नट्यत इहवृत्त मितिमतांतरमिदं आह्वेवच्चति आधिपत्यमधिपतिकर्म पोरिवच्चति पुरोवर्त्तित्व

दिव्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नट्यत इहवृत्त मितिमतांतरमिदं आह्वेवच्चति आधिपत्यमधिपतिकर्म पोरिवच्चति पुरोवर्त्तित्व ॥ ७७ ॥

देवाणं सत्तहत्तरि देवसहस्र परिवारा प० एगमेगेणं मुजुत्ते सत्तहत्तरि लवेलवगेणं प० ॥  
 सक्कस्सण देविंदस्स देवरत्तो वेसमणे महाराया अठहत्तरीए सुवन्तकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साणं  
 अाहेवच्च पोरिवच्चं सामितं नटित महारायत्तं व्याणाईसरलेणावच्च कारेमाणे पालभाणे विहरइ धरेण अ्कं

जानो वैअमण चौथीलोक्पाल उत्तर दिशानो धणो । दक्षिणदिशे सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवेइंद्रना ७८ लाख भव  
 नछे तेहनी आधिपत्य पणी अग्रगामीपणी भट्टपणी स्वामिपणी महाराजापणी आज्ञाप्रधान सेनानायकपणी सेवकपाहेकरावती थकी आत्मानोपरे पाल  
 तीथकी रहेके । स्वविर औ महावीर नो ई मो अकपित गणधर भठ्ठीत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धयथा सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणे ४८ वर्षे छद्म

॥  
मग्नगामित्वमित्यर्थः भट्टित्ति भट्टित्वं पीषकत्वं सामित्तंति स्वामित्वं स्वामिभावत्वं महाराजत्वं लोकपालत्वमित्यर्थः आणाईसरसेणवच्चित्ति  
आज्ञाप्रधानसेनानायकत्वं कारिमाणेति अनुनायकैः सेवकानां कारयन् पालिमाणेति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आस्ते अकंपितः स्थविरो महावीरस्या  
ष्टमोगणधरस्तस्य चाष्टसप्ततिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् कृद्गस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनिययेत्येति  
उत्तरायणादुत्तरदिगमना विवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरि एति आदित्यः पटमाओमंडलाओत्ति दक्षिणदिशंगच्छती रवे रंक्षयम  
न्तस्मा ननु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तलीसइमेति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यन्तरमण्डलापेक्षया तु चत्वारिंशे  
अठत्तरिति अष्टसप्तति एगसहि भाएत्ति मुहूर्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्सत्ति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः निवुट्टेत्तत्ति निर्वर्द्धाहापयित्वत्य  
र्थः तथारायणखेत्तस्सत्ति रजन्याएव अभिनिवुट्टेत्तत्ति अभिनिवर्द्धाच वर्द्धयित्वेत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञितवाक्यैरपदर्शयति

॥  
पिण्णु अष्टहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियहेणं सूरिणुपट्ठमानु मंडलानु एण्णु

॥  
स्थपणे ८ वर्षं केवलीपणे २१ वर्षं सर्वमिली ७८ थया । उत्तरदिशं गमनं यत्की निवर्त्यो प्रारब्धो छे दक्षिणायनं पणो जेणे एहवो सूर्यं पहिला मांडला यत्की  
एकोन चालीसमे मांडले एक मुहूर्तना अठहीत्तरि एकसठिया भागं दिवसं लक्षणं क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्द्धी ने घटाडीने रजनी लक्षणं क्षेत्रने  
रात्रिने अभिवर्द्धावीवधारीने चार चरेके एतले आपाढी पुनिमे सर्वाभ्यन्तर मंडले १८ मुहूर्त दिवसहीय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयो तिवारे एक मुहूर्त

स्वष्टसप्तत्यां क्षिप्तायां त्रयोदशमुहूर्त्तां सप्तदशैकषष्ठिभागाश्चेति एवंदक्षिणायननियेष्टेति यथोक्तरायणनिवृत्तएकीनचत्वारिंशत्तमे मण्डले अष्टसप्तति मे षष्ठिभागान् ह्यापयति वर्धयति च एवदक्षिणायननिवृत्तावपि सूर्यस्नान्हापयति वर्धयति च केवलं दक्षिणायने दिनभागान् ह्यापयति रात्रिभागां च वर्धयति इहतु दिनभागान् वर्धयति रात्रिभागान् ह्यापयति ॥ ७८ ॥ अथैकोनाशीतितमे स्थानके किञ्चिद्विस्तृतम् । तत्र बलयामुहस्सन्ति वड वामुखाभिधानस्य पूर्वदिग्बन्धस्थितस्य पायालस्सन्ति महापातालकलशस्याधस्तनचरमांता रत्नप्रभापृथ्वीचरमान्त एकोनाशीत्यासहस्रेषु भवति काथंरत्नप्रभा हि अशीतिसहस्राधिकं योजनानां लब्ध्वाहल्यतो भवति तस्याच्चैकं समुद्रावगाह सहस्रं परिहृत्या धोलक्षप्रमाणवगाहो बलयामुखपातालकलशो भवति तत स्तचरमांतात् पृथिवी चरमांती यथोक्तांतरमेव भवति एवमन्येपि त्रयो वाचा इति ष्ठीएत्यादि अस्यभावार्यः षष्ठपृथिवीहि वाहल्यतो योजनान्ना लब्ध

रं चरई एवं दक्षिणायण नियहेति ॥ ७८ ॥ बलयामुहस्सणं पायालस्स हिष्ठिल्लान् चरमं तान्

॥ ७८ ॥ हिमे ७९ मो लिखिहे । पूर्व समुद्र मांहि पाताल कलश बडवामुखनो हेठिलो चरिमांत भाग तेहथकी एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो हेठिलो चरिमात एह ७९ हजार योजन आवाधारिं बिचालि आंतरो कह्यो । रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख ८० हजार योजन जाडपणेहे तेमांहीथी एक सहस्र योजन समुद्र जडोते काडीने । लाख योजन पाताल कलशी हे तेकाढी तेहनो हेठलो विभाग लीजे तो फूठे ७९ हजार योजन उगरा जणिया । एमज दक्षिण समुद्रे किंतु पाताल कलश २ पछिमे यूप ३ उत्तरे ईसर कलश ४ एह सगलानो हेठलोभाग अने रत्नप्रभानो हेठलोचरमांत एह बिचाले ७९

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधयस्तु यद्यपि सप्तापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्तु स्थाप्येतस्य ग्रंथस्य भतेन षष्ठ्या मंसविकविंशतिः संभाव्यते तदेवं षष्ठ्यथिवीबाहल्याद्विमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाणं चैकविंशतिरित्येव मेकोनाशीति भवति ग्रंथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रबाहल्यत्वात् त्वंचमीमाश्रित्येदं सूत्रमवसेयं यतस्तद्बाहल्यमष्टादशीत्तरं लक्षमुक्तं यतश्चाह पटमाशीइसहस्रा १ वत्तीसा २ अठवीस ३ वीसाय ३ अष्टार ५ सोल ६ अठ्य ७ सहस्रलक्षोविरिक्कुञ्जति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राधिकोपि मध्यभागी विवक्षित एव मर्थस्त्वकत्वाद् बहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जंगत्या खत्वा रिहाराणि यिजयवैजयंतजयतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविक्कभानि गव्यतृथुलहारशाखानि क्रमेण पूर्वाद्विषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचद्वा

इमीसे रथणप्पन्नाए पुठवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणांसं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवं केउ  
स्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि ठठीए पुठवीए बज्जमज्जेदसन्नायाले ठठस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं  
एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० जबूद्वीवस्सणं द्वीवस्स वारस्सय वारस्सय एसणं एगूणा

हजार योजन आंतरो जाणिवी । छट्ठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागयकी एतले छट्ठीनी जाडपणी १ लाख १६ हजार योजनछे तेहनी मध्यभाग ५८ हजार योजन छट्ठी पृथिवीनी घनोदधि यद्यपि २० हजारनी छे तोही पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७२ हजार योजन आवाधये विषाले आंतरो कछो । एतले छट्ठीनी मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिली जे एह ग्रथने मते एतले तेहनी हेठिलो चरमांत ७२ हजार योजन थयो । एह २१ हजार योजन घनोदधि पिरु परिमाण कछो । तेएहने मते कछोयिज कहिवी अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्यमित्यर्थः एसणति एतदेकीनाशीति योजनसहस्राणि सातिरेकाणीत्येवंलक्षणमबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूपमित्यर्थान्तरमभ्यस्तं कथं जम्बूद्वीपपरिधिः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनून्वि १२८ अगुलानि १३ सार्द्धानीत्येवं लक्षणस्यापकर्षितद्वारशाखाविक्षम्भस्य चतुर्विभक्तस्यैवंफलत्वादिति ॥ ७८ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिद्विहिते । अयांस एकादशो जिनस्त्रिष्टुष्टः अयांस जिनकालभावौ प्रथमवासुदेवः अचलः प्रथमबलदेवोऽपि तथा त्रिष्टुष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेजंसेणं अरहा असीइं धणू

इं उहुंउच्चत्तेण होत्या तिविठेणं वासुदेवे असीइधणूइं उहुंउच्चत्तेणं होत्या अयलेणं बलदेवे असीइधणूइं उहुं उच्चत्तेण होत्या तिविठेण वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्या अउबज्जले कंठे असीइजोथ

योजन कहिवो । जम्बूद्वीप नो जगतीना ४ द्वारके पूर्वार्द्धिके विजय १ वैजयंत २ जयत ३ अपराजित ४ एकैक दरवाजा चार २ योजन पिडुलीछे । चार दरवाजानी परस्पर अंतर कांइक अधिक ७८ हजार योजननीछे । जम्बूद्वीपनीपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाज १२८ धनुष १३ अगुल एतला माहीथी ४ दरवाजानी पिडुलपणी काढीयें पठे उगरा योजन चिहु भागदीजितो दरवाजानी आंतरो पामिये । इति ७८ मो संपूर्ण ॥ ७८ ॥ हिवे ८० मो लिखेइ । अयांस इग्यारमर अरिहंत ८० धनुष ऊचा ऊचपणे हुया । अयांस जिननेवारि त्रिष्टुष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष ऊंची ऊच पणे थयो । पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष ऊंची ऊच पणे थयो । त्रिष्टुष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगे महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव स्थायें सर्वायु ८४ लाखवर्ष जाणिवो । रत्नप्रभा पहिलो पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेइनां ३ कांइछे । प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

काभिचा एवमेकीत्तरया वृद्धा नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चीत्तराणि भिक्षाशतानि भवन्तीत्यतउक्तं चउहियेत्यादि इहच भिक्षाशब्देन दत्तिरभिप्रेता ग्रहासुचंति यथासूत्र सूत्राख्यतिक्रमेण जावत्तिकरणा द्वाथाकल्प यथामार्गंयथातत्व सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तौरिता कर्तिता आन्नया राधिते तिद्रष्ट्यं विवाहपन्नत्तीएत्ति व्याख्याप्रज्ञया मेकाशीति म्हायुग्मशतानि प्रज्ञप्तानि इहच शतशब्देना ध्ययना न्युच्यन्ते तानि कृतयुग्मा दिलक्षणराशिर्विशेषविचाररूपाणि अवातराध्ययनस्वभावानि तदवगमाजगम्यानीति ॥ ८१ ॥ अथद्व्यशीतिस्थानके किमपिलिख्यते । तत्र जम्बूद्वीपे द्व्यशीतिद्व्यशीत्यधिकमण्डलशतम् सूर्यस्य मार्गशत तद्भवतीति वाक्यशेषः किम्भूत यत् सूर्योद्विःकृत्वी द्वौवारौ संक्रम्य प्रविश्य चारंचरति तदयथानि

निरुपपत्तिमा एक्षासीइराइदिगृहं चउहियपचुत्तरेहं निरुकासगृहं अहासुत्तं जाव अराहियाकुंथुस्सरेणं  
अरहउ एक्षासीतिं मणपजावनानिसया होत्या विवाहपन्नत्तीए एकासीतिमहाजुग्मसया प० ॥ ८१ ॥  
जंबू द्वीवेद्वीवे वासीयं मण्डलसय जंसूरिगु दुस्कृत्ती सकमित्ताणं चारंचरई तं० निरुमममाणेय पविसमाणेय

हेछे सूत्रोक्त विधिमागं आराधौ होय । कुथुनाथ सतरमा अरिहतने ८१ शत मनपर्यवज्जानी यथा । व्यवहार पन्नतीने विषे ८१ शत महायुग्म कक्षा । इहां शत शब्दे अध्ययन कक्षाछे युग्मशब्दे गणितराशि विशेष एतले ८१ ठागूं सपूर्ण ॥ ८१ ॥ हिवे ८२ ठाणी लिखे । जंबूद्वीप ने विषे १८२ मा डला सूर्यनाछे यद्यपि जंबूद्वीप मांही ६५ मांडलाछे पर बाह्य मांडले पणि जंबूद्वीप संबधी सूर्यनी चार छे तेमाटे जंबूद्वीप वाहिरला ११६ मांडला पणि जंबूद्वीपना कक्षा । जे १८२ मांडला सूर्य वे वेला सक्रमी प्रवेश करी चारचरे भ्रमे एतले १४८ मांडलाछे तेमांहि निषध जपरलो सर्वाभ्यंतर मांडलो अने

॥  
 श्कामंश्च जंबूद्वीपात् प्रविश्य जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलयत भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसक्रामति शेषाणि  
 तु द्वीवाराविति इह च द्वाशीतिविषयैवेद द्वाशीतिस्थानके ऽधीत मितिभावनीय यथापि जंबूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मंडलाना भवति तथापि जंबूद्वीपादिकसूर्य  
 चारविषयत्वा च्छेषाख्यपि जंबूद्वीपेन विशेषितानीति समये इत्यादि आषाढस्य शुक्लपक्षषष्ठ्याभारभ्यद्वाशीत्यां रात्रिदिवेष्वतिक्तातेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने  
 अखयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया ह्वानदानाद्वाह्मणौ कुचित इत्यर्थः गर्भत्रिशलाभिधानञ्चित्राकुञ्जि संहतो नीतो देवद्रवचनकारिणा ह  
 रियेगमेथभिधानदेवेनेति इदं च सूत्रे द्वाशीतिरात्रिदिवान्यधिकृत्य द्वाशीतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशीतितम रात्रिदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति महा

समणेन्नगवंमहावीरे बासीएराइदिएहिं वीड्क्कंतेहिं गप्पानु गप्प साहरिए महाहिमवंतस्सणं वासहरपव्वयस्स  
 उवरिल्लानु चरमतानु सोगंधियस्स कळस्स हेठिल्ले चरमंते एसण वासीइजोयणसयाइं अवाहाए अतरेप०

समुद्रमांहिलो छेहिलो सर्वाभ्यंतर माडलो सूर्य एकवेला चरिसे एक कर्क सक्रांतिये शेष याकता १८२ माडला त्रैवेलाफिरस्ये सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी  
 जंबूद्वीपे निकलती एकवेला जंबूद्वीप मांही पैसतो एम बेवेला १८२ मांडला सूर्यचरे भ्रमे गगने फिरे। अमण भगवत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी थकी  
 माडी ८२ रात्रिदिवस व्यतिक्रमे थके ८३ मीरात्री वर्ततेथके आशीजबदी १३ नौरात्रीये देवानदानो कूखथकी गर्भ त्रिशला देवीनी कूखविषे हरियेगमे  
 धी देवताये साहस्यो पहुचाओ ॥ महाहिमवत वीजो वर्षधर पर्वत २०० योजन ऊचो छे ते महाहिमवंतनी ऊपरलो चरमांत छेहल्यो प्रदेश तेह थकी  
 मांडी रत्नप्रभाना सीगधिक कांडनी हेठिलो चरमात एह ८२ गत योजन आवाधायें बिचाले आतरीकह्यो । काड दूजो अपक्खुल ३ तेमांही पहिलो कांड

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उपरिभा चरमांतात् सौगन्धिककाण्डस्या धस्तनश्चरमान्तौ द्वयोर्तिर्योजनशतानि  
कथं रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि काण्डानि खरकाण्डं पंककाण्डमञ्जुलकाण्डं चेति तत्र प्रथम काण्डं 'पोडशविध तयथा रत्नकाण्डं १ वज्रकाण्डं २ एवबुद्धयं ३ लो  
हिताच्च ४ मसारगण्ड ५ हसगर्भं ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अञ्जन १० अञ्जनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अक १४ स्फटिक १५ रिष्टकाण्डे  
ति १६ एतानि च प्रत्येकं सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगन्धिककाण्डस्याष्टमत्वा द्योति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येवं त्ययोर्तिशतानीति  
एव क्लिप्तोऽपि पञ्चमवर्षधरस्य वाच्य महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ त्रयोतितमस्थानके किमपि लिख्यते । इह शीतलजिन  
स्य त्रयोतिर्गणा स्वयं शीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकत्वेकागौतिरिति मत्वा तस्मिन्मिति तथा स्थविरो मण्डितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य चतुर्शोतिवर्षा

एवं रुष्यिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेऽग्नयं महावीरे वासीड् राङ्गिदण्डिं वीडक्कन्तेहिं तेयासीणु  
राङ्गिदण्डि वटमाणे गङ्गानु गङ्गं साहरिणु सीयलस्सणं झुरहल्ल तेसीड्गणहोत्था थरेणं मण्डि

१६ भदे रत्नकाण्ड १ वज्रकाण्ड २ एम वैडूर्य काण्ड ३ लोहिताच्च ४ मसारगण्ड ५ हसगर्भं ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतिरस ९ अञ्जन १० अञ्जनपुलक ११  
रजत १२ जातरूप १३ अक १४ स्फटिक १५ मसारगण्ड १६ एह १६ काण्ड प्रत्येकं १ सहस्र योजन प्रमाणे तौ सौगन्धिक काण्ड आठमो तो आठ काण्ड मि  
लीने ८० शत योजनशया अने वेसे योजन महाहिमवत जचोछे सर्व एकठा करता ८२ शत योजनशया । इति ८२ मो ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ हिंवे  
८३ मो लिखे । अमण भगवत महावीर ८२ रात्रौ दिवस गयेयके ८३ मो अहीराणि वर्त्ततां यकां देवानदाना गर्भं यकी त्रिशलाने गर्भं साहस्य हरिणि



णि सर्वोयुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश छद्मस्थपर्याये षोडश केवलितइत्येवं त्यशीतिरिति तथा कोशलिरिति कोशलदेशेभवः कौशलिकः तेसीइति विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्टिराज्ये इत्येव त्यशीतिः तथा भरतशक्रर्त्तौ सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्यशीतिमगारवासम ध्युथ जिनीजातः राज्यावस्थस्यैव रागादित्रयान्केवली संपूर्णसहायविशुद्धज्ञानादित्रययोगात्सर्वज्ञा विशेषबोधो त्वर्भावदर्शी सामान्यबोधोत्ततः पूर्वलक्षं

यपुत्रे तेसीइंवासाइं सद्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसन्नेणं झुरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहरसा  
इ झुगारमज्जे वसित्ता मुंझेवित्ता णं जावपव्वइए झरहेणं राया चाउरंतचक्कवही तेसीइपुव्वसयसहरसाइं  
झुगारमज्जे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्तू सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

गमेसीये पहुंवाधा । शीतलनाथ दशमा अरिहत ने द३ गणधर आवस्थके द१ कहा ये मतांतरछे । स्थविर मंडित पुत्र छठो महावीरनो गणधर द३ वर्षल  
गे सर्वोयुपालीने सिद्धययो सर्वदुःख रहित थयो ५३ वर्ष गृहस्थपर्ये १४ वर्ष छद्मस्थपर्ये १६ केवलीपर्याये सर्वमिली द३ वर्ष थया । नृपम आदिनाथ अरि  
हंत कोसल देशना उपना द३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांही वसीने द्रव्यभावभेदे मुडधयीने अगार गृहस्थयकी अणगारी यतीपर्ये पास्या । २० लाख  
पूर्व कुमारपर्ये ३६ लाख पूर्व राज्यात्रमे एव द३ लाख पूर्व वर्ष । भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख  
पूर्व कुमारपर्ये ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पर्ये एव द३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपर्ये जिनथया । राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञान  
जेहनेछेते केवली विशेष जाणे ते सर्वसामान्य बोधयकी सर्वभावदर्शी थया । इति द३ मो समवाय थयो ॥ द३ ॥ हिवे द४ मो समवायलिखेके ।

प्रव्रज्याग्रहणपूर्वकं केवलित्वेन निहृत्य सिद्धयति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिस्थानके किमपि लिख्यते। चतुरशीति नैरकलचाण्डमुना विभागेन तीसा यपखवीसा २ पखरस ३ दसेव ४ तिद्विय ५ हवति पंघूणसयसहस्र पंचेव ७ अनुत्तरानिरयत्ति ॥ १ ॥ श्रियांसएकादशस्तीर्थकरः एकविशतिर्वर्षलक्षणि कुमारत्वे तावत्लेव प्रव्रज्यायां द्विवत्वारिंशद्राज्ये इत्येव चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्धः तथा तिविहुत्ति प्रथमवासुदेवः श्रियांसजिनकालभावीति अप्रतिष्ठा

सयसहस्सा प० उसन्नेणं अरहा कोसलिण् चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं नरहो बाज्जवली बन्नी सुंदरी सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइ वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविठ्ठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइठ्ठाणे नरणेनरइ

सार्तेनरक मिली ८४ लाखनरकावासा कह्या। पहिलीये ३० बीजीये २५ बीजीये १५ चौथीये १० पांचमीये ३ छठ्ठीये ५ जंणा १ लाख सातमीये ५ एवं ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहत कोसल देशना जपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो आऊखीपालीने सर्वदुःख प्रक्षीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थेकर पणे एव ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरतचक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमगला जातक ब्राह्मली नदाजातक आदीश्वर नो पुत्र ब्राह्मी सुमगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपाली सिद्ध थया। श्रियांस ११ मा अरिहत २१ लाख वर्ष कुमारपणे ४२ लाख वर्ष दीक्षा एवं ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयुपाली सिद्धथया। सर्वदुःखः श्री प्रक्षीणथया

नो नरकः सप्तमण्डिष्यां पञ्चानां मध्यम इति तथा समाणियति समानर्पयः तथा बाहिरयति जबूहीपकमेख्यतिरिक्ता सत्वारो मन्दरा चतुरशीतिः सह  
 स्वाणि प्रज्ञप्ताः मंजरागपव्यति जबूहीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारो जनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि  
 वासेत्यादि चत्वारिभ्यभागजीयस्यस्यति एकीनविंशतिभागा इहाथेगाथाद्धं धनुषिष्ठकलचउक्कं तुलसीइसहस्रसो लसिहयति तथा पकबहुलकाण्ड द्वितीय  
 यत्ताए उववन्ते सक्कस्सणं देविंदस्स देवरत्तो चउरासीइसामाणियसाहस्सोने प० सहेविणं वाहिरया मंद  
 रा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उहुं उच्चतेण प० सहेविण धणुपिठा चोरासी जोयणसहस्साइं सो  
 लसजोयणाइं चत्तारियजगा जोयणस्स परिक्खेवेण प० पकबहुलस्सणं कऊस्स उवरिल्लाने चरमंताले  
 त्रिपृष्ठ पहिली वासुदेव श्यास जिन काल भावी ८४ लाख वर्ग परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा के तेमांही विचले अपइठ्ठाण नरकाधामेनारको  
 पणे उपनो । पहिला देवलीकनो राजा शक्केद्र देवद्र देवराजाना ८४ सहस्ससामानिक देवता कह्या । जबूहीप संबंधी सुदर्शन मेरुटाली बीजासगलाधातकी  
 खुडना २ पुष्करार्धना २ मेरु चोरासी चोरासीहजारयोजन ऊंचा जच पणे कह्या । १ सहस्र योजन ऊ डा के सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जबूही  
 पथकी आठमे नदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागे पूर्वादिक् चिहुदिशि ४ अजनक पर्वत के चारीअजनक पर्वत चोरासी २ सहस्र योजन ऊपरि  
 कह्या । १ सहस्र योजन ऊं डा सर्वमिली ८५ हजारना । हरिवर्षनीजी रस्यकपाचमी तेहनी धनुवती प्रत्यंचा चोरासी चोरासी सहस्र योजन ऊपरि  
 सोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिवेपे परिवेपे कही । रत्नप्रभाये त्रिणकांडके तेमांही पकबहुल बीजीकाडतेहनो उपरलो चरमांत केहलो

तस्यच बाहल्यं चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्त सूत्रार्थ इति तथा व्याख्याप्रज्ञया भगवत्या चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदान्त्रेण पदपरिमाणेन इहय यत्रार्थोपलब्धिं स्थाप्यं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्विगुणद्विगुणलाघ्रं शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञित्वेनैवैतच्छेषैः अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानाभावन्तीति तथा चतुरशीतिं नागकुमारो वासलक्ष्याणि चतुस्त्रवारिंशतो दक्षिणाया चत्वारिंशच्चोत्तराया आवादिति चतुरशीतिर्योनयोजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराण्योनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लक्षाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदग्भ्रगणिमाश्रय एक्केसत्त जोणिलक्खाओ वणपत्तेयअणते दसचउदसजोणिलक्खाओ विगलिदिएसुदीदो चउरोचउरोयनारयसुरेसु तिरिएसुहोतिचउरो चोइसलक्खाउमणुएसुति २

हेठिल्ले चरमंते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० विवाहपन्नतीए णं अगवनीए  
चउरासीइं पयसहस्सा पदगणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह

प्रदेश तेहयकौ हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकह्यो । पाचमीअग विवाहपन्नती भगवती सूत्रे विषे ८४ पदनां सहस्र छे पदार्थे पदने प रिमाणे जिहा अर्थनी समाप्ति होय तेपद कह्ये मतांतरे आचारागना १८ सहस्र पदछे पक्खे आगत्ये २ अगे वेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अगे २ ला ख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दक्षिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वभिलो नागकुमारावासा ८४ लाख कह्या । ८४सहस्र पद्मा यतीना कीधा ग्रथविशेष कह्या । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजछे प्रमुखद्वार जिहां ९ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असख्यातछे परिण समान वर्णं गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकह्यो । पूर्वछे आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका प्रांक पर्यवसान छेह

इहचजीवीत्यत्तिस्थानानामसख्येत्येत्वेपि समानवर्णं गन्धरसस्थानीं तेषामेकत्वविवक्षणा त्रयथोक्तं योनिःसंख्याव्यभिचारोऽमन्तव्य इति पुष्पाइयाणमित्यादि पूर्वमादित्येषां तानि पूर्वादिक्कानि तेषां शीर्षप्रहेलिकापर्यवसाने येषां तानि शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषां स्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्या स्थानस्योत्पत्तिस्थानात् संख्याविशेषलक्षणत्वं गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि अनन्तरस्थानान्यव्यवहितसंख्याविशेषा गुणकारनिषेधना येषु तानि स्वस्थान स्थानान्तराणि क्रमव्यवहितसंख्यानविशेषा इत्यर्थः अथवा स्वस्थानानि च पूर्वस्थानानि स्थानान्तराणि च अनन्तरस्थानानि स्वस्थानस्थानान्तराणि अथवा स्वस्थानानां त् पूर्वपूर्वस्थानात् स्थानान्तराणि विलक्षणस्थानानि स्वस्थानस्थानान्तराणि तेषां चतुरशीत्यालक्षै रिति शेषः गुणकारोभयासराशिः प्रज्ञतः तथाहि किल चतुरशीत्यालक्षैः पूर्वाद्भवतीति स्वस्थानान्तरादेवचतुरशीत्यालक्षै र्गुणितं पूर्वमच्यते तच्च स्थानान्तरमिति एव पूर्वस्वस्थानान्तरादेव चतुरशीत्यालक्षै र्गुणितं मनन्तरस्थानं त्रुटिताङ्गाभिधानं भवतीति इहसंग्रहगाथे पुष्पतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय नलिणित्थिउरअउय नउएपउएयनायव्की ॥ १ ॥ चूलियसीसपहेलिय चीइसनमाउअंगसजुत्ता अठ्ठावीसठाणा चउणउयहीइठाणसयति ॥ २ ॥ अभिलापाच्चैषां पूर्वाङ्गं मूर्वं त्रुटिताङ्गं त्रुटितं मित्यादि रिति चउरासीति मित्यादि इहविभागोयं बत्तीसअठ्ठवीसा वारसअठचउरोसयसहस्सा आरेणवभलीगी विमाणसख्याभवेएसा १ पचासचत्तच्छेव सहस्सालंतसुकसहस्सारे

स्साइं प० चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा प० पुष्पाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सठाणठाणंत

उे के स्वस्थानक थकी स्थानान्तरं २ चौरासी आंके गुणकार करतां छेहडे शीर्षप्रहेलिका आवे पहिलू स्वस्थानक पोतानूस्थानक पूर्वांगतेह ८४ लाख वर्ष होय । ते ८४ लाख गुणीकरीये स्थानान्तरं तिवारे त्रुटितांग होय । इहां संग्रह गाथा । पुष्पतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय । नलिणित्थिउरअनु

सयचउरोआणय पाणसुतिखारणञ्जुओ ॥ एकारसुत्तरहे छिमिसुसुत्तरचमज्जिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणत्ति ॥ भवतीति मक्खायंति एतानि विमानान्येवभवन्ति इतिहेतो राख्यातानि भगवता सर्वज्ञत्वात् सत्यवादित्वा चेति ॥ ८४ ॥ अथ पञ्चाशीति स्थानके किञ्चिद्विख्यते। तत्राचारस्य

राणं चोरासीए गुणकारे प० उसन्नस्सणं अरहणु कोसलियस्स चउरासीइगणा चउरासीइगणहरा होत्या उसन्नस्सणं अरहणु कोसलियस्स उसन्नसेण पाभीरकानु चउरासीइ समणसाहस्सीनु होत्या सहेविचउरा सीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा न्वंतीतिमस्कायं ॥ ८४ ॥

रानउएपउएयनायब्बी । चूलियसीसपहेलिय चीइसनामाउअग सजुत्ता । अठ्ठावीसठाखा चउणउयहोइठाणसय ॥ एम चौदेठामे ८४ लाख ८४ लाख गुणकारे करतां करतां छेहडे शीर्ष प्रहेलिका आवे तिहा १८४ आक आवे । आदिनाथ अरिहंतने ८४ गणधर ८४ गच्छ हुआ । कोसलदेसना उपना आदिनाथ अरिह तने ऋधभसेन प्रमुख ८४ अमणयतीनी सपदा हुई । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशान देवलोके २८ लाख बीजे १२ चौथे ८ पाचमे ४ लाख छेठे ५० सहस्र सातमे ४० हजारआठमे ६० सहस्र नीमंदसमे मिली ४०० इग्यारमे बारमे मिली ३०० ग्रैवेयक पहिलेविके १११ मध्यविके १०७ उपरिलेविके १०० वि मान । पाचे अनुत्तरविमाने ५ । १२ देवलोके ८ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरविमान मिली ८४ लाख ८७ हजार उपरि २३ विमान भगवंते कक्षा । इति ८४ समवाय थयो ॥ ८४ ॥ हिंवे ८५ मीलिलेखे । आषाराग सूत्रना चूलिका सहितना ८५ उद्देसण काल कक्षा प्रथम श्रुतस्काधि ८ अध्ययन छे पहिले

दृश्यन्तीपान्तर्गतः प्राकाराकृतीरक्षत्रहीपविभागकारितयास्थितोऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्वच्च सहस्रमवगाढसुतरशीतिरुच्छ्रित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वांगेयेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतौच्छ्रितायां प्रथममेखलाया व्यवस्थितस्या धस्याच्चरमांतात् सौगंधिककाण्डस्य रत्नप्रभापृथिव्याः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्याऽवागन्तरकाण्डभूतस्थाष्टमस्य सौगन्धिकाभिधानरत्नमयस्य सौगन्धिककाण्डस्याधस्तुच्चरमांतः पञ्चाशीतिर्योजनशतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथं मन्त्रशतानि मेरोः सम्बन्धोनि प्रत्येकं सहस्रप्रमाणत्वादपागन्तरकाण्डानां मष्टमकाण्डमशीतिशतानीति ॥ ८५

सहस्रसाङ्गं सद्युग्गेणं प० रुयएणं मंजुलियपद्युए पंचासीइजोयणसहस्रसाङ्गं सद्युग्गेणं प० नंदणवणस्सणं हेठिह्लाउ चरमंताउ सौगंधियस्स कंठस्स हेठिल्ले चरमंते एसगं पंचासीइ जोयणसयाइं द्युवाहाए द्युंतरे प०

रुचकनाभापर्वत तैरमाहीप मांही गढने आकारे मडलाकारेके तेमाटे मडलीकपर्वत १ हजार योजन जंङो ८४ हजार योजन जंंचो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वांगी सर्वपरिमाणे कह्यो । भूमियकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ज चोदढीये तिहा प्रथममेखलानेविषे नदन वन छे तेहनां हेठिला चरमांतथी रत्नप्रभानी आठमी सौगंधिक काड तेहनी हेठिलो चरमात एह ८५ सेयोजन अवाधये विचाले आंतरो कह्यो । रत्नप्रभाये ३ काड छे पहिलो १६ हजारनी कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमी सौगंधिक कांडछे तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया । नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन थया इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मी समवाय लिखेके । नवमा सुविधिनाथ बीजनाम पुण्यदंत अरिहतने ८६ गणधर हुआ आवश्यकी

अथ षडशीतिस्थानके किमपि लिख्यते । तत्र सुविधि नैवमजिनस्येह षडशीतिगणधरोक्तोक्ता आवश्यके त्वष्टाशीति रिति मतांतरमिदं तथा द्वितीयाष्ट  
 यिवीशर्कप्रभा साच बाह्यतो द्वाविग्रत्सहस्राधिकलबमाना तदहं षट्षष्टिः सहस्राणि घनोदधिश्च तदधोवर्त्ती द्वितीयपृथिवीसम्बन्धित्वात् द्वितीयो विश  
 तिसहस्राणि बाह्यत इति षडशीति र्यथोक्तमन्तर भवतीति ॥ ८६ ॥ अथ सप्ताशीति स्थानके किञ्चिद्विख्यते मन्दरेत्यादिभिर्योः पौरस्थितात्  
 जम्बूद्वीपातः पञ्चचत्वारिंशत्सहस्राणि विचत्वारिंशच्चसहस्राणि लवणजलधिमवगाह्य गोस्तुभो वेलम्बरनागराजावासपर्वतः प्राच्यादिदिग् भवत्येव सूत्रोक्तमन्तर

॥ ८५ ॥ सुविहिस्सणं पुण्णदंत्तस्स अरुहणं ललसीइगणहरा होत्या सुपासरस  
 ण अरुहणं ललसीइ वाइसया होत्या दोच्चाणं पुठवीए वज्जमज्जेदसन्नागाणं दोच्चरस घणोदहिस्स हेठि  
 स्से चरमते एसणं ललसीइ जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे प० ॥ ८६ ॥ मंदरस्सणं पच्चय  
 स्स पुरत्थिमिह्माणं चरमंतानं गोथुन्नस्स अवासपच्चयस्स पच्चत्थिमिह्मे चरमते एसणं सत्तासीइं जोयणस

८८ गणधर तेमतातरं सातमा सुपाथ अरिहत्तने ८६ से वादीनीसपदा हुंइ । वीजी शर्करप्रभा पृथिवी १ लाख ३२ हजार योजन जाडपण्णे तेह वीजी  
 पृथिवीना बहु मध्यभागयकी माडो एतले १ लाख ३२ हजारनी अर्द्ध ६६ हजार योजन ते साथे लीजे वीजीनीघनोदधि २० हजार नी तेहनी हेठिली च  
 रमात ८६ हजार योजन अवाधायि विचाले आंतरी कह्यो ॥ इति ८६ समवाय थयो ॥ ८६ ॥ द्विंवे ८७ मी लिखिं । मेरुपर्वतना पूर्व चरमात  
 थकी वेलधर नागराजा वास गोस्तुभ नामापर्वत तेहनी पश्चिम चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायि विचाले आंतरी कह्यो । मेरुपर्वतयकी पूर्वनी जगती



भवतीति एवमन्येषा त्रयाणा मतरमवसेयमिति तथा यस्यां कर्मप्रकृतीना मादिमोपरिमवर्जानां ज्ञानावरणांतरायरहितानां दर्शनावरणवेदनीयमोहोना  
यायुक्तनाम गोत्रसञ्चितानामित्यर्थः सप्ताशीतिरुत्तरप्रकृतयः प्रपञ्चमाः कथं दर्शनावरणादीनाषणां कर्मणनव द्वे अष्टाविंशतिः चतस्रो द्विचत्वारिंश द्वेचे त्यत

हस्साइं अबाहाए अंतरे ५० मंदरस्सणं पव्वयस्स दस्किणिह्वाने चरमंताने दगज्जासस्स अवाासपव्वयस्स  
उत्तरिह्वे चरमंते एसणं सत्तासीइ जोजणसहस्साइ अबाहाए अंतरे ५० एव मंदरस्स पव्वयिम्मिह्वाने चरमं  
ताने सखस्स वा पुरयिम्मिह्वे चरमंते एवं चैव मंदरस्स उत्तरिह्वाने चरमताने दगसीमस्स अवाासपव्वय  
स्स दाहिणिह्वे चरमंत एसणं सत्तासीइ जोजणसहस्साइ अबाहाए अंतरे ५० त्तरह कम्मपगळीणं अयाइम

४५ हजार योजन तिहांशकी ४२ हजार योजने गोखूभ पर्वत सर्वमिली ८७ हजार योजन थया । दक्षिण चरमांतयकी दक्षिण समुद्रमांही दगभास पर्व  
त तेहनो उत्तर चरमांत ८७ हजार योजन गोखूभ पर्वतनी परे अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एमज मेरुपर्वतना पश्चिमचरमांत थकीमांही पश्चिमे थ  
ह्वनामा आवासनी पूर्वचरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एमज मेरुपर्वतना उत्तर चरमांतयकी उत्तर समुद्रमांहि दगसीम  
आवासपर्वतनी दक्षिण चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । आठेकर्मनी प्रकृति मांही थो आदिकर्म ज्ञानावरणीनी पांच प्रकृति  
उपरिम कर्मअतराय तेहनी ५ प्रकृति एव १० प्रकृतिटाली शेष छ कर्मनी ८७ उत्तर प्रकृतिकह्यो दर्शनावरणी ८ वेदनीय २ मोहनीय २८ आजखी ४ ना

स्थासां मीलने सूत्रीकृतं संख्यास्यादिति महाहिमवन्तित्यादि महाहिमवर्षतेत्यादि द्वितीयवर्षपर्यवर्तते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटाणि भवन्ति तानि पञ्चशतीकृतानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वैशते महाहिमवद्वर्षधरोद्धयस्य अशीतिशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धि ककाण्डावसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावान्तरकाण्डानां मिल्येव मीलिते सप्ताशीति रत्नरश्भवतीति एव कृष्णकूडस्सर्विन्नु रक्तिणिपचमवर्षधरे यद्वितीयं कृष्णि कूटाभिधानं कूट तस्याप्यन्तरं महाहिमवत्कूटस्येव वाच्यं समानप्रमाणत्वाद्द्वयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानके किञ्चिद्विव्रियते ॥

उर्वारिल्लवज्जाणं सत्तासीइ उत्तरपगळीनु प० महाहिमवंतकळुस्सणं उवरिमंतानु सोगांधयस्स कंठस्स  
हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं झुवाहाए अतरे प० एवं रुप्पिकळुस्सवि ॥ ८७ . ॥

मकर्म ४२ गोत्र २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई । महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह जचो बैसत योजन तेह उपरि महाहिमवंत कूटछेते ५०० योजन जचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया । तेमहाहिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाये ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६ हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमाहि सौगधिककांड आठमो तेहनो छेठिलो चरमात एतले आठो काडना ८० से यो जन थया अने महाहिमवतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अवाधाये बिचाले आतरो कछो । महाहिमवंत कूटनी परे पांचमोरूपीवर्षधर प र्वतनो रूपी नामकूट अने सौगधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिवे ८८ मो लिखे छे । चद्रमा सूर्य असख्या

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाद्यसूर्यश्चचन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्यइत्यर्थः अष्टाशीतिर्भागगृहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारी ऽन्यत्र  
 श्रूयते तथापि सूर्यस्यापींद्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिष्टिवाएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पच  
 प्रकारस्य सुत्ताइति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवन्ति जहानंदीएति अतिदेशतः सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्तेत्यादि मेरोः  
 पूर्वान्तात् जम्बूद्वीपस्य पंचचत्वारिण्यद्वीजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च द्विषत्वारिण्यद्वीजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा तस्यच सहस्रविविक्कम्बत्वा द्य  
 योक्तः सूत्रार्थी भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्व्यवस्थितान् दकावभाससंखदकसीमाख्यान् वेलन्धरनागराजनिवासपर्वतानाशित्य वाच्यमतएवाह

एगमेगस्सणं चदिमसूरियस्स अष्टासीइ महग्गहा परिवारी प० दिठ्ठिवायस्सणं अष्टासीइसु  
 त्ताइं प० तं० उज्जुसुय परिणयापरिणयं एवं अष्टासीइसुत्ताणि ज्ञाणियद्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स  
 पुरत्थिमिस्सणं चरमतानु गोथुन्नस्स अवावासपव्वयस्स पुरत्थिमिस्से चरमते एरणंअष्टासीइं जोयणसहस्साइं

ताच्छे तेसहस्रं प्रत्येकं अठ्ठासी २ महाग्रह भौमादिक अठ्ठासीनो परिवार कक्षो । यद्यपि द्दग्रह २ दनजत्र परिवार चद्रमानोच्छे तीहीपणि सूर्य इंद्रच्छे तेहनी  
 पिण एतलो ग्रहनी परिवार जाणिवो । दृष्टिवाद पूर्व बारमीअग्र तेहना ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व  
 कक्षा तेहना सूत्ताइति वीजी सूत्र पूर्व तेहना द्द सूत्रच्छे तेकहेछे । अजुसुत्र १ परिणता परिणतएम द्द सूत्रभण्णिवा । जिमनंदीसूत्रे कक्षोच्छे तेभ जाणिवो । मेर  
 पर्वतथकी पूर्वनो जगती ४५ हजार योजनच्छे तिहांथकी पूर्वसमुद्रमाहि ४२ सहस्र योजन गोस्तुभपर्वतच्छे ते १ हजारपिंडुलोच्छे सर्वमिली द्द हजार मेरुपर्वत

एव चउसुविदिसासुनेयव्वमिति बाहिराश्रोण मित्यादि बाह्याया. सर्वाभ्यन्तरमण्डलरूपाया उत्तरस्याःकाष्ठायाः क्वचितु बाहिराश्रोति न दृश्यते सूर्यः प्रथमधर्णमास दक्षिणायनलक्षण दक्षिणायनादित्वात् सम्बत्सरस्य अयमाणेति आयात्त्रागच्छन् चतुश्चत्वारिंशत्तममण्डलगतो ष्टाशीतिमेकपण्डिभागान् दिवस खेतस्मिति दिवसस्यैव ण्ठिद्वेत्तति निवर्द्धाहापयित्वा रयणि खेतस्मिति रजन्वासु अभिवर्द्धं सूरिएचारचरइति भास्यतीति इहच भावनैव अतिमण्डल न्दिनस्यमुहूर्त्तकषण्डिभागद्वयहानेर्दक्षिणायनापेक्षया चतुश्चत्वारिंशत्तमे अष्टाशीतिभागा हीयन्ते रात्रिस्तु त एव वर्द्धत इति द्विःसूर्यग्रहण खेह दिनरात्र्याश्रितवा क्यद्वयभेदकल्पनया न पुनरुक्तं सवसेयमिति इदं च सूत्रमण्टसप्ततिस्थानकसूत्रवद्भावनीयमिति दक्षिणाश्रोइत्यादि सूत्र पूर्वसूत्रवदवगन्तव्यं नवर मिह दिनवृद्धौ

अथवाहाए अंतरे ५० एवं चउसुविदिसासुनेयव्वं बाहिराले उत्तरानुणं कठाले सूरिए पठमं लम्भासं अय

माणे चीयालीसइमे मण्डलगते अष्टासीति एगसठिजगो मुजत्तस्स दिवसखेतस्स निवुहुत्ता रयणिखेतस्स

ना चरमांतथको नागराज वेलधरनी गोखूभ आवासपर्वतनी चरमांत ८८ हजारयोजनयथो अवाधार्ये विचाले आंतरोकह्यो । एम चिहुदिसि जा णिबी दक्षिणे दगभास पश्चिमे शख उत्तरे दगसीम एसर्वना आतरा जणिवा । नियधपर्वत सबधी सर्वाभ्यतर मांडलायको सूर्य पहिलो छम्मास दक्षिणायन लक्षण तेहप्रते अयमान दक्षिणायने आवतो खुआलीसमे मांडले गयोथको एकसठिया ८८ भाग १ मुहूर्तना दिवसनी द्वेच दिवसने वटाडी रजनीनीचेत्र रात्री तेहने वधारीने सूर्य चारचरेअमे । सर्वाभ्यतर मांडले ३६ सो दिहाडो २४ रात्रीकरी निषधपर्वतयको सर्वाभ्यतर म डलथको दक्षिणायने सूर्य चालतीथको दिनप्रते एकमुहुर्तना एकसठिया वे भाग दिवस घटाडीये रात्रिवधारिये एकेमासे एकमुहूर्तबाधीये वली ३१ मा

रात्रिहानिश्च भावनीयेति ॥ ८८

॥ अथैकोनवतिस्थानके किञ्चिद्विचार्यते । तद्व्याएसमाएत्ति सुखमदुःखमाभिधानाया एकोनवत्यामईमासेषु त्रिषु वर्षेषु अईनवसु च मासेषु सखितिगम्यते जावत्तिकरणात् अंतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते त्तिदृश्य हरिषिणचक्रवर्त्तीदयम स्तस्यच दशवर्षसहस्राणि सर्वायु स्त

अग्निनिबुहत्ता सूरिए चारंचरइ दस्किणकठानुणं सूरिए दोच्च लम्मासं अयमाणे चोयालीसतिन्ने मंजलग ते अण्ठासीइ इगसठिभागि मुज्जत्तस्स रयणिखेत्तस्स निबुहत्ता दिवसखेत्तस्स अग्निनिबुहत्ताणं सूरिए चारं चरइ ॥ ८८ ॥ उसन्नेणं अरहाकोसलिए इमीसे उसप्पिणीए ततियाए सुसमदुसमाए समा

मांडलायक्की एकसठिया दिनप्रतं वे वे भाग दिवस घटाडे रात्रिवधारता ४४ मे माडले ८८ भाग वधेरात्रि । दिवस घटे । समुद्र माहिलो १८४ मों सर्ववाह्य मडले मकर संक्रांतिये सूर्य जगौ दक्षिण दिग्गि यको सूर्य बीजे छम्मासे उत्तर दिग्गिभणी आवती यको ४४ मे माडले गयी यको १ सुहर्त्तना एकसठिया ८८ भाग रात्रि घटाडो दिवस वधारी सूर्य चार करे सर्ववाह्य मांडले दिवसमान ३६ करीउत्तरायणे चालतो १ सुहर्त्तना एकसठिया वे वे भाग रात्रि घटां ३० मे माडले १ सुहर्त्त रात्रि घटे दिवस वढे इमकरता ४४ मे माडले ८८ भाग रात्रि घटे दिन वढे इति ८८ थयो ॥

८८ ॥ हिवे ८८ लिखि । श्रीआदिनाथ अरिहत कोशलदेसना उपना एणी अवसरपिणी ने बीजा समाने सुखम दुखम नामने पाखिले भागे ८८ अईमासे एतले ८८ पखवाडे बीजा आरा माहि शेष थाकते आखे बीजे आरे व्यतिक्रमे गये यके सिद्धयया सर्वदुःख प्रक्षीण थया । आदिनाथने मीच पहुंचता पछी चौणवर्ष साढा आठ मास एतले ८८ पखवाडा बीजी आरो रछो पछे चौथो आरो लाग्यो एह भाव । अमण भगवत महावीर एणी

नच शतीनानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषाखिकादश शतानि कुमारत्वमाण्डलिकत्वाऽनगारत्वेषु अवसेयानि इह शान्तिजनस्यैकीननवतिरार्थिकासहस्राण्यु  
क्ताव्यवस्थकैलेकषडिः सहस्राणि शतानिचषडभिधीयत इति मतातरमेतदिति ॥ ८८ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते । तत्रा

ए पच्छिमेन्नागे एगूणणउए अष्टमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसवदुस्कप्पहीणे समणे ३ इमीसे उस  
प्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेन्नागे एगूणनउइए अष्टमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव  
दुस्कप्पहीणे हरिसेणेण राया चाउरंतचक्कवही एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्था सतिस्सणं अरहने  
एगूणनउइ अज्जासाहस्सीने उक्कोसिया अज्जियासपया होत्था ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरूहा

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८८ पखवाडे शेष थाकतां चौथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमे गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख  
प्रचीण थया । एतले श्रीमहावीर मोक्ष गये पक्की ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८८ पखवाडे गये थके चौथो आरो उत्तरी पांचमी आरो लाग्यो एह भाव  
जाणिवो । नमिनाथने बारे हरिषिण राजा दशमी चक्रवर्ती ८८ वर्षलगे एकसोवर्ष जणी नव हजार वर्षलगे मङ्गाराज चक्रवर्ती हुआ । शेष थाकतां ११००  
वर्ष माहि कुमार पणे मडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणूं पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया । शान्तिनाथ अरिहंतने ८८ हजार साध्वी  
एके जणी हुई एतले ८८ सहस्र ८८८ छत्तकटी भार्यासाध्वीनी सपदा हुई इति ८८ मो समयाय थयो ॥ ८८ ॥ द्विवे १० लिखिछे । शीतलनाथ

जितनाथस्य शान्तिनाथस्य चेह नवतिर्गणगणधरास्त्रीक्ता आवश्यक्तेतु पचनवतिरजितस्य षट्निषत्तु शान्तिरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयम्भूततीय  
वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजय. पृथिवीसाधनव्यापारः सव्येसिणमित्यादि सर्वेषां विंशतेरपि वर्तुलवैताल्याना श्रद्धापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छ्रित  
त्वात् सौगन्धिककाण्डचरमान्तस्य चाष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा न्नवसु सहस्रेषु नवते. शताना आवात् सूत्रीकामन्तरमनवद्यमिति ॥ ८० ॥

नउइं धगूइं उहं उच्चत्तेणं होत्या अजियस्सणं अरहले नउइगणा नउइगणहरा होत्या एवंसतिस्सविसयंअ  
स्सणं वासुदेवस्स गउइवासाइ विजए होत्या सहेसिणं वहवेयहुपह्वाणं उवरिल्लानु सिहरतलानु रोगंधिय  
कंरस्स हेठिल्लेचरमंते एसणं नउइजीयणसयाइं अवाहाए अतरे प० ॥ ९० ॥ एकाणउइ

दशमा अरिहत १० धनुष जंचा जंच पणे हुया । अजितनाथ बीजा अरिहतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुया । आवश्यक्के ८५ गणधर कह्या एमतातर । शा  
तिनाथ १६ अरिहतने ८० गणधर हुया । आवश्यक्के ३६ कह्या ते मतांतर छे । विमलनाथकालीन स्वयम्भू नीजी वासुदेव तेहने १० वर्ष लगे विजय पृथिवी  
साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ८० वर्ष लाग्या एभाव । सगलाई वृत्त वैताब्ब २० जवूमांहि हिमवत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरखवत ४ ए चिहुं क्षेत्रे  
श्रद्धापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताब्ब छे धातकौखड माहि एणजेनेत्रे आठके पुष्कराई आठ सर्वमिली २० वृत्त वैताब्बछे सगला १ सहस्र योजन जंचा छे सग  
लाई वृत्त वैताब्ब पर्वतना उपरिला शिखरतला थकी रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगधिक कांड छे तेहनो हेडिली चरिमांत ८० से योजन अवाधये  
विचलि आतरी कह्यो । एतले वृत्त वैताब्ब १००० योजन जंचा सौगधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिली ८० से योजन दया ॥ इति ८० समवाय

अथैकनवतिस्थानके किञ्चिद्वितन्यते । तत्र परेधामालव्यतिरिक्तानां वैयाह्यकर्मणां भक्तपानादिभिं रुपष्टभक्तिया स्तद्विषया' प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः परवैयाह्यकर्मप्रतिमा एतानिच प्रतिमालेनाभिहितानि क्वचिदपिनोपलब्धानि केवलं विनयवैयाह्यमेदा एते सन्ति तथाहि दर्शनगुणाधिकेषु सत्कारा या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभिण्या ८ गच्छताणुव्वयं १० एसोसुस्सणाविण्णोत्ति तच्च सत्कारोवदनस्तवनादि अभ्युत्थानमासनत्यागः सत्मानोवस्तादिपूज न आसनभिग्रहः तिष्ठतएवासनानयनपूर्वकसुपविशताचेतिभरणमिति आसनानुप्रदानमासनस्य स्थानात् स्थानान्तरसञ्चारं कृतिकर्मादीनि प्रकटानि तथा तीर्थंकरादीना म्यंचदशाना म्दाना मनाशातनादि पदचतुष्टयगुणितत्वे षष्टिविधो ज्ञाशातनादिविनयो भवति तथाहि तित्ययर १ धम्म २ आयरि

परवैयावच्चकम्मपफिमानु प० कालोयेणं समुद्धे एकाणउइजोयणसयसहस्साइं साहिआइं परिस्केवेणं प० थयो ॥ ८० ॥ हिंवे ८१ मो समवाय लिखेहे । ८१ भेदे वेयावच्च कर्म प्रतिमा परनो वेयावच्च कर्म भक्तपानादिके उपपंभक्तिया तेहनेविषे प्र तिमा अभिग्रह विशेष ते पर वेयावच्च कर्म प्रतिमा कही । दर्शन गुणाधिक ने विषे सत्कारादिक १० भेदे विनय आहच सत्कार १ भुठाने २ सम्माणा ३ समणभिग्गहो तहय ४ आसण अणुप्पयाण ५ किइकम्म ६ अजलिगहोय ७ तस्सअणुगच्छण्या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणा ९ भणिया गह्यताणुवयण एह दशे प्रकारे विनय कह्यो तथा तित्ययर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ सचे ८ समीगीय ९ किरिया १० । मतिज्ञानादिक ५ ज्ञान एव १५ बोलने विषे बोल लगाडो एह १५ नी आसातना टालवो १ भक्ति २ बहुमान ३ गुणवर्णवोये ४ तोपनरचौके साठियया पछे ७ लोकोपचार विनय अ



य ३ वायगे ४ येर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोदय ९ किरियाए १० मइनाणार्इणयतहेव ॥ १ ॥ अत्रभावना तीर्थकराणामनाशातना तीर्थकराऽनाशातना तीर्थकरप्रज्ञस्य धर्मस्य अनाशातना एव सर्वत्र कायव्यापुणभत्तो बहुमाणोतहयवणवाओय अरहंतमाइयाण केवलणाणावसाणाणंति ॥ २ ॥ तथौपचारि कविनय. सप्तधा यदाह अभ्यासासण १ छट्ठाणु वत्तणं २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दुक्खत्तगवेसणातहय ॥ १ ॥ तहदेसकालजाणण स व्यथेमृतहयत्रणमुईभणिआ ७ उवचारिओउविणओ एसोभणिओसमासेणंति ॥ २ ॥ अभ्यासासन उपचरणीयस्थान्तिके ऽवस्थान छन्दानुवर्त्तनमभिप्रा यानुवृत्तिः कृतप्रतिक्रितानाम प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादिदास्यन्ति ननाम निर्जरेति मन्यमानस्याहारादिदान पदकारितनिमित्तकरण सम्यक्शास्त्रपदम ध्यापितस्य विगेषेण विनयेवर्त्तन तदर्थानुष्ठान च श्रेयाणि प्रसिद्धानि तथा वैयावृत्य दशधा यदाह आयरियउवज्झाए थेरतवस्सौगिलाणसेहाणं । साहम्मिय कुलगणसव सगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ तत्र प्रवाजना १ दिगु २ द्वेष्ट ३ समुद्देश ४ वाचना ५ चार्यभेदादाचार्यस्य पंचविधत्वा तदेव चतुर्दशधैल्येकनवति विनयेभेदा एते एव अभिगृह्णविषयीभूताः प्रतिमाउच्यन्त इति तथा कालोयणत्ति कालोदः समुद्रः सचैकनवतिलक्षाणि साधिकानि परिज्ञेपेण आधिक्य

भामामण १ छट्ठाणु वत्तण २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दुक्खत्तगवेसण ५ तहय तह देशकाल जाणण ६ सब्वल्लेसुतहयअणुमईभणिय ७ एह सात लोकोपचार विनय तथा दर्शननौ वेभावच्च करो आयरिय १ उवज्झाय २ थेर ३ तवस्सौ ४ गिलाण ५ सेहाण ६ साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ सव १० सगयतमिहकायव्वं ११ आचार्य ५ भेदं प्रवाजना १ दिगु २ द्वेष्ट ३ समुद्देश ४ वाचनाचार्य ५ एह पांच आचार्य टाली विनय १ पछे उपाध्याया दिक्क नयने पाच १४ अने सात लोकोपचार विनय भेद ६० तीर्थकरादिकनी आशातना दस विनय सत्कारादिक सर्व मिली ८१ बोलथया । कालोदधि वी

॥  
 च सप्तत्यासहस्रैः शब्दभिः शतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पञ्चदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाद्भुतैः साधिकैरिति आहोहि यत्ति नियतत्वेन विषयावधयः श्रायु ॥

गौत्रवर्ज्याना षष्ठाभिः शतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पञ्चदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाद्भुतैः साधिकैरिति आहोहि यत्ति नियतत्वेन विषयावधयः श्रायु ॥  
 गौत्रवर्ज्याना षष्ठाभिः शतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पञ्चदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाद्भुतैः साधिकैरिति आहोहि यत्ति नियतत्वेन विषयावधयः श्रायु ॥

८१ ॥ अथ द्विनवतिस्थानके किमप्यभिधीयते । द्विनवतिः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ताश्च दशानुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दृश्यन्ते तत्र किल पच प्र  
 तिमाउक्ता स्तब्धया समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ प्रतिसलीनता प्रतिमा ४ एकविहारप्रतिमा चैति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा शु  
 कंथुस्सणं च्चुरहन् एकाणउइ आहोहियसया होत्या च्चाउयगोयवज्जाणं ठरहं कम्मपगणीणं एकाणउइ उत्त

रपगणीउ प० ॥ ११ ॥

जोसमुद्र ८१ लाख योजन साधिक भाभेरो ते कहिछे ७० सहस्र ६ से ५ योजन पगरसे धनुष ८७ त्रगुल एतलो परिलेप परिधि कहौ । कुयुनाइ अरिहत  
 ने ११०० अवधि ज्ञानी नियतत्वेन सबधी अवधि ज्ञानी हुआ । चउथो आजखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टालौ अपे याकता छ कर्मनी उत्तर  
 प्रकृति ११ ज्ञानावरनीयनी ५ दर्शनावरणीनी १ वेदनी २ मोहनी २ नाम कर्म ४२ अतराय ५ सर्व मिलौ ८१ उत्तर प्रकृति कहौ । इति ११ समवाय  
 ययो ॥ ८१ ॥ हिवे ८२ लिखिछे । ८२ भेदे प्रतिमा अभिग्रह विशेष पहिलौ ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३  
 प्रतिसलीनप्रतिमा ४ एक विहार प्रतिमा ५ पहिली समाधिप्रतिमाना २ भेद शुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२  
 भेद आचारांगे प्रथमशुतस्कधे ५ बीजे ३७ ठाणागे १६ व्याहारे ४ सर्वमिलौ ६२ भेदयया । उपधान प्रतिमा २३ यतिनी १२ आवकनी ११ एव २३ विवेकको



स्नेह्यादि भावार्थः मेरुमध्यभागात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशत् सहस्राण्यतिक्रम्य गोस्तुभपर्वतः इति सूत्रोक्तमन्तर आवतीति एवं शेषा  
णामपि ॥ ६२ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमपि वितन्यते । तेणउइमडलेत्यादि तत्र अतिवर्त्तमानोवा सर्ववाह्यात् सर्वाभ्यन्तरमपि गच्छन् नि  
वर्त्तमानोवा सर्वाभ्यन्तरात् सर्वबाह्यप्रति गच्छन् व्यत्ययोवा व्याख्येयः सममहोरात्र विषमं करोतीत्यर्थः अहश्च रात्रिश्च अहोरात्र तयोः समता तदा भवति  
यदापञ्चदशमुहूर्त्ता उभयोरपि भवन्ति तत्र सर्वाभ्यन्तरमण्डले अष्टादश मुहूर्त्तमह भवति रात्रिश्च द्वादशमुहूर्त्ता सर्ववाह्ये तु व्यत्ययः तथा तद्यशोत्यधिकमण्ड  
लशते द्वौघावेकपष्टिभागौ वर्द्धते हीयेतेच यदाच दिनवृद्धिं सदा रात्रिहानिः रात्रिवृद्धौच दिनहानिरिति तत्र दिनवर्तितमे मण्डले प्रतिमण्डल मुहूर्त्तैकष

एउसणं बाणउइं जोयणसहरसाइं अवाहाणुअंतरे प० एवचउरहंविअवासापहयाणं ॥ १२ ॥

चदप्यहरस्रणं अरहने तेणउइगणा होत्या सतिरस्रणं अरहने तेणउइ चउइसपुहिसंया  
वास गोस्तुभपर्वत पूर्वसमुद्र मांदि ४२ हजार योजनहुयो तो मेरुनामध्यभागथको गोस्तुभ आवास पर्वतनी पश्चिमचरमात ६२ हजार योजन आवाधाये  
बिचाले आतरो कह्यो । मेरु पर्वतना दक्षिण पासना चरमांत दगभास पर्वतनी उत्तरपासनी छेहली भाग ६२ हजार योजन आवाधायें विचाले आंतरो  
कह्यो । मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतनी शंखआवास पर्वतनी पूर्वाभिमुख चरमांत ६२ सहस्र योजन आवाधायें लिचाले आंतरोकह्यो । मेरुपर्वतना उत्तराभि  
मुख चरमांतनी दगसीम आवास पर्वतना दक्षिण दिशनी चरमांत ६२ सहस्रयोजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो । इति ६२ समवायथयो ॥ ६२ ॥  
हिचे ६३ मोलिखेछे । चद्रप्रभ आठमा अरिहतना ६३ गच्छ ६३ गणधरहुया । आंतिनाथ सोलमा अरिहतने ६३ से चौदहपूर्वधर हुया । सूर्यनी एकसौचौ

ष्टिभागद्वयवृद्ध्या त्रयोमुहूर्त्ता एकैकषष्टिभागनाधिका वर्यन्ते वा हीयन्ते वा तेषुच द्वादशमुहूर्त्तषु मध्येक्षितेषु अष्टादशभ्यो पसारितेषु वा पञ्चदशमुहूर्त्ता उभयत्रैकैकषष्टिभागनाधिका हीनावा भवत्यतो द्विनवतितममण्डलस्थाद्द्व समाहोरात्रता तस्यैवचांते विषमाहोरात्रता भवति द्विनवतितमलण्डलं चादित आरभ्य त्रिनवतितममण्डले यथोक्तसूत्रार्थ इति ॥ ८३ ॥ अथ चतुर्नवतिस्थानके किञ्चिविद्विच्यते । निसर्हेत्यादि द्रुहपादोना सम्वादगाथा

होत्या तेणउड्मंळगतेणं सूरिणु ञ्णनिवहुमाणे विनिवहुमाणे वा समञ्जहोरत्तं विसमंकरेइ ॥ ९३ ॥

राशिमी मांडलो समुद्रमांही तेसर्ववाह्य मंडलेतहयकी सूर्यअभिवर्त्तमान सर्वाभ्यंतर मंडलभणी उत्तरायणे जातो तथा निषधमाथें सर्वाभ्यंतर मंडल तेहय को दक्षिणायन सर्ववाह्य मांडलाप्रति जायछे तेवारे ८३ मे मंडले सूर्य गयो थको दिवसने रात्रिने विषमकरे एतले अषाढो पूर्णिमे सर्वाभ्यन्तर मंडले नि षधमाथे सूर्यउगे तेवारे दिवस ३६ रात्रि चौबीसी पळे आवणबंदी १ दिने बीजेमांडले सूर्यआवे तेवारे एकमुहूर्तना ६१ भाग करीये तेहवा प्रतिमांडले प्र तिदिने बे बे भाग दिवस घटाडो रात्री वधारी दक्षिणायने चालता ३१ मेमांडले एक मुहूर्त दिवसघटे रात्रिबटे । वली तेमज एकसठिया बेबेभाग दिवस घटाडो एमकरतां ८२ मांडलेजाय तिवारे आसीजीपुनिमे ३० दिवस ३० रात्रि समदिवस समरात्रिकरैपळे ८३ मेमांडले सूर्य जाय तेवारे दिवसघटे रात्रि बटे तेमाटे दिनरात्रि विपमकरे अने सूर्य सर्ववाह्यमांडले दिवस २४ रात्रि ३६ पोसोपुनिमेकरो उत्तरायणभणी चाल्यो तोही एक मुहूर्तना एकसठिया २ भाग प्रतिदिवस दिनवधारे रात्रिघटाडे ८२ मेमांडले चौत्रोपुनिमे सम दिवसरात्रि ३० दिवस ३० रात्रीकरो ८३ मांडले दिवसरात्रि विपमकरे दिवस बटे रात्रिघटे एभावार्थ जाणिवो । इति ८३ मी समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ लिखे । त्रौजोवर्षधर निषध पर्वत चौथो नीलवत एवेहूनौ जी

[illegible]

निसह नीलवंतियार्णं जावान् चोडणउइ जावनहने चोडणउइ जेहिनाणिसया हात्या ॥ १४ ॥ चउहि  
 ज्ञागे जोयणस्स आयामेणं प० अणजियररणं अरहने चउणउइ जवूदीवस्स ण दीवस्स चरसंताउ  
 सुपासरसण अरहने पचाणउडगणा पचाणउइगणहरा होत्या जवूदीवस्स ण दीवस्स चरसंताउ  
 वा १४ हजार योजन एकसोत्थपन योजन उपरि बे उगुणीसहाउया भाग एतयोजनना १४१५६ योजन १६ कला प्रायामपणे लावपणीकही। अजितनाय  
 अरिहतने १४ से अवधिज्ञानी हुआ। इति १४ मो समवाग ययो ॥ १४ ॥ हिवे १५ मो लिखे। सुपार्ख सातमा अरिहतने १५ गछ १५  
 गणधर हुआ। जमूदीपना चरमांतयकी पूर्वादिक् चिह्निदिग् लयण ससुद्रमां ॥ १५ ॥ हजार योजन लगे गाह्नीने प्रदेश करीने चार महापाताल काल्य  
 कक्षा। तेकह्ने। पूर्व सुद्रमांदि बडवामुख। दन्निणे कतुक। पदिमें यूपक। उत्तरे ईसर। धातकीखडयकी समुन्माहि उरहामध्यभाग भणी १५ सस्स

परिहानि भवति ततोपि पंचनवति प्रदेशान् गत्वा प्रादेशिके चोत्सेधहानि भवति एवं पंचनवति पंचनवति प्रदेशा तिक्रमैव प्रादेशिका उत्सेधहान्या पंचनवत्यां योजनसहस्रेष्वतिक्रांतिषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवंसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्विधता भवति लवणस्सेति अथचोद्विधा धं योत्सेधपरिहानिस्तस्यापंचनवतिः प्रदेशाः प्रज्ञप्ता स्वेष्टतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशेहा न्यामुद्देशः प्रादेशिको भवतीति तथा कुयुनाथस्य सप्तदशतीर्थकरस्य कुमारत्वमाडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगारत्वेषु प्रत्येक त्रयोविंशते वर्षसहस्राणा मर्दाष्टमवर्धशतानां च भावात्सर्वायुः पंचनवतिवर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

सि लवणसमुद्रं पंचाणउइ पंचाणउइ जोगणसहस्साइ उगाहिता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० बल  
या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्रस उन्नतु पासपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाउ उब्जेऊस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपयकौ परहा १५ हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जग्ग्येती विहू १५ मिली १ लाख १० हजार योजन यथा विचाले दस स हस्र योजन लगे समीपीठिकानिरूपे पाणीछे तिहा पृथ्वी तलनी अपेचाये १ हजार योजननी ऊडी खाड पडीछे १ हजार योजन लगे ऊचीपाणी चव्या पछे पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहिये तीते मध्यपिड १० हजार योजनलगे उभयपासे धातकौ खंड भणीजाय । त था जंबूद्वीप भणी उरहाआवीयेतीही १५ आंगुले एकअंगुल तथा १५ हाते १ हात १५ योजने १ योजन एस १५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशे २ मात्राये २ उद्वेधपणी ऊडपणीघटाडीये एमकरता १५ सहस्र योजन अतिक्रमेयके समुद्रनीपाणी अनेभूमिबरावरीथाय ऊंडपण सगलीटले तथा समुद्रतट थकौ १५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनी उत्सेधनी ऊचपणी प्रदेशे २ मात्राये २ हानिकरी भूमिऊडीकरताजइये एमकरता

मौर्ययुगे महावीरस्यसमगणधरस्तस्य पंचनवतिवर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्वं कृद्वास्थत्वं केवलित्वेषुकमेण पंचषष्टिचतुदशश्रीडशानां वर्षाणांभावादिति ॥ ८५ ॥ अथ षण्णवतिस्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराराणाषण्णवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पचाशत् उत्तरस्यां च षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव हारिणस्ति व्यावहारिको येन गव्यं तादिप्रमाणं चिंत्यते अव्यावहारिको लघुदीर्घौ वा भवत्युक्तप्रमाणात् दंडोहि चतुःकरः कर्तुः करः कर्तुः विंशत्यगुलः एवं चतुर्विं

णीए प० कुंधूणं झरहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थरेणं मोरि यपुत्ते पंचाणउइवासाइं सखाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ १५ ॥ एगमेगस्सणं रत्तो चाउरंतचक्खवाहिस्स तस्सउइं तस्सउइं गामकोप्पीउं होत्ता वायुकुमाराणं तस्सउइं नवणावाससयसह

८५ हजार योजन अतिक्रमेयके तटभूमिनोजंचपणी हजार योजननोटले १ हजारनो जंडपणी समुद्रनोथाय एतली। कुत्थुनाथ अरिहंत ३ सहस्र अने ७५० वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाजवर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ८५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टो आजखोपालीने सिद्धथया तत्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया। स्थविर मौर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर ८५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धथया। गृह्णात्यमे ६५ कृद्वास्थपणे १४ केवली पणे १६ सर्वमिली ८५ वर्षथया। इति ८५ मी समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिमे ८६ समवाय लिखेछे। एकेक चातुरंतचक्रवर्तीने ८६ कीडो गाम थया। वायुकुमार भवनपतीने ८६ लाख भवनावासा कब्बा। दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशे ४६ लाख बिहुमिली ८६ लाख थया। व्यवहारिक दंड



शतौ चतुर्गुणितायां षष्ठवतिः स्यादेवेति अभ्यन्तराञ्चो इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्तः षष्ठवत्यंगुलच्छायाः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावार्यः  
 सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयत्रदिने सूर्यश्चरति तस्यादिनस्य प्रथमो मुहूर्तोद्वादांशंगुलमान शंकुमाश्रित्य षष्ठवत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्तं प्रमाण  
 भवतीति मुहूर्तोष्टादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रिययाद्वेनाष्टादश लक्षणेन द्वादशांगुलः शंकुगुण्यत इति ततोद्देशे षोडशोत्तरे भवतः  
 २१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तरं शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ यतीति षष्ठवतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ८६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानके

स्सा प० ववहारिणं दंढे तस्सउइअंगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अस्के मुसलेवि अस्मितरनु अाइ  
 मुजते तस्सउइ अंगुलच्छाए प० ॥ १६ ॥ मंदरस्सणं पट्टयस्स पच्चल्लिमिल्लानु चरमंतानु

तेजणे गाउकोस चिंतवीये अथवहारिक नान्होपणि होय ते व्यवहारिक दड ८६ अंगुल प्रमाणे कट्ठी २४ अंगुल नीहायहोय चिहुंहाये १  
 दड होय एम करतां ८६ अंगुल कट्ठा । एम ८६ अंगुलनीधनुषनालिका यूप भूसरो अच मंशलएहसर्व ८६ । ८६ अंगुलनी होय । निषधने माये सर्वाभ्यं  
 तर मांछले दिवस अठारह मुहूर्तनी होय तो सर्वाभ्यंतर मडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ८६ अंगुल छाया प्रमाणे होय १२ अंगुलनी त्णजभोकेरीये  
 तेहनी छाया ८६ अंगुल होय तिवारे कर्क सक्तातिनी पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ८६ अंगुल २ घडी दिवस कहिये तेकम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अ  
 गुल त्ण विगुण कीजे एतले १८ बार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनी अर्द्ध १०८ एह आंकमाहि त्ण प्रमाण अंगुल १२ काढी पठौ ८६ अंगुल उगरे ॥  
 इति ८६ मो संपूर्ण ॥ ८६ ॥ हिवे ८७ मो लिखेके । मेर पर्वत १० सहस्र पहिलो तेहयको पूर्वनी जगती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

किञ्चिदभिधीयते । मंदरेत्यादि भावार्थीयं मेरीः पश्चिमोन्तात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विषत्वारिंशतो गोकुम्भइति यथोक्तमेवान्तर मिति हरिषिणो दशमचक्रवर्ती देशोनानि सप्तनवतिम्बर्षशतानि गृहमध्दुषित स्त्रीणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्रत्वा तदायुष्कस्येति ॥ ६७ ॥ अथाष्टनवतिस्थानके किञ्चिदभिधीयते नन्दनवन श्रीरोः पंचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पंचयोजनशतोच्छ्रि

गोथुन्नस्सणं आवासपव्वयरस पच्चत्थिमिल्ले चरमते एसणं सत्ताणउइ जोजयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिं पि अठ्ठगहं कम्मपगळीणं सत्ताणउइ उत्तरपगळीनु प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवही दे सुणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्जे वसित्ता भुंजे अबित्ताणं जाव पव्वइए ॥ १७ ॥

नंदणवणस्सणं उवरिल्लानु चरमतानु पंऊयवणस्स हेल्लि चरमते एसणं अठ्ठाणउइजोजयणसहस्साइं अवा सयोजन गोकुम्भपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतयको वेलधर नागराजानो गोकुम्भ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ६७ सहस्र योजन आवाधाये विचाले आंतरी कल्ली । एमज चिहुदिशि दक्षिण समुद्रमादि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरीकल्ली आठे कर्मनो ६७ उत्तर प्रकृति कही नाणावरणी ५ दरसनावरणी ६ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली ६७ उत्तरप्रकृति हुई । नमिनाथ अरिहंतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देयोन कांडकजणां ६७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुडथईने अगारयकी साधुपणू पास्यो ३०० वर्षभांभेरा दीचापाली १० हजारवर्ष सर्वायुपाली सीधोमोचपहुतो ॥ इति ६७ मोसमवायथयो ॥ ६७ ॥ हिवे ६८ मोलिखे । मेरुनो नंदनवनपहिली मेख

तं तद्व्रतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्गृहणेन ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितम तो नवनवत्यामेरो सचैस्वस्य आद्ये सहस्रे अपकष्टे यथोक्तमन्तर भवतीति गोसुभसन्नभावार्थः पूर्वव अवरं गोसुभविष्कम्भसहस्रे क्षिप्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वेद्यदृक्स्वणमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः सम्यक्पाठ आद्य दाहिणभरहदृक्स्वणं धरुपिष्ठे अष्टाणउडइं जीयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पणत्ते इति यतोऽन्यत्रोक्तं नवचेवसहस्राइं क्वावष्टाइं सयाइं सत्तभवे सविसेसकलाचिगा दहिणभरहधणपठति वैताव्यधनुः पृष्ठं लेवमुक्त मन्यन्न दसचेवसहस्राइं सत्तेवसयाहवन्तिवाला धणुपष्ठवेयदुळे कलायपस्सर

हाए अतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिस्सानु चरमंतानु गोथुन्नस्स पुरत्थिमिस्स चरमंते एसणं एस्सणं अणउडइजोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणन्नरहस्सणं वणुप्पिष्ठे अण्ठाणउडइजोमण

सायें भूमिथक्को ५०० योजन जचोक्खे तेमाहि ५०० योनना कूटजंजाक्खे तोभूमिथक्को तेक्खटना शिखर १ सहस्रयोजनजंजा तिहांलगी नदनवनकहींये मेरुपर्वत लाख योजनकह्यो तेमांहि १ हजार योजन भूमिमाहि १ सहस्रनी नंदनवन एव २ सहस्रनीकल्या लाखमांहिथो तेमाटे नंदनवननी उपरिलो चर मात मेरुने माथे पडकवनक्खे तेहनो हेठिलो चरमात एह ६८ सहस्र योजन अवाधायि विचाले आतरोकह्यो । मेरुपर्वत थक्को ४५ हजार योजन जगती इह्कते थक्को पूर्व समुद्रमांहि गोस्सूभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोक्खे । मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोक्खे तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथो वेलवर नाग राजानो आवास गोस्सूभ पर्वत पूर्वसमुद्रमांहिक्खे । तेहनो पूर्वचरमांत ६८ हजार योजन अवाधायि विचाले आतरोकह्यो । एमच्चिहुदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शख उत्तरसमुद्रमांहि दगसीम एहच्चिहुनो आतरोगोसुभनीपरेजाणवो दक्षिणाई भरतचेवनी धनुपष्ठ १८ ।

सहवति उत्तराश्रीमत्यादि भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणावसेयः नवर मिह एकतालीसइमे इति केषुचित्युस्तकेषु दृश्यते सीपपाठः एगूणपंचासइमेति एको

सयाइं किंचूणाइं अयामेणं प० उत्तरानु कठानु सूरिणु पढमं तम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंळल  
गते अण्ठाणउइ एकसठिजागे मुळत्तस्स दिवसखेत्तस्स निबुहेत्ता रयणिखेत्तस्स अग्निनिबुद्धिजाणं सूरिणु  
चारं चरइ दस्किणानुणं कठानु सूरिणु दोच्चं तम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंळलगते अण्ठाणउइ एक

से योजन कांइ ओच्छो लांअपणे कट्थो । उत्तर दिसयको सर्वाभ्यंतर मांडलायको सर्वाभ्यंतर मांडले निषधने माये आधाढी पुनिमे अठारह मुहूर्तनोदिवस  
१२ मुहूर्तनी रात्रिहुये पछे आवण बढी १ दिने सूर्य उत्तर दिशिथकी दक्षिणायने चाल्यो तिवारे बीजे मांडले भायो तेवारे १ मुहूर्तना ६१ या भाग  
कीजे एहवा प्रतिदिन मांडले वेवेभाग दिवस घटाडे रात्रिवधारे बीसमे मांडले जाय तेवारे १ मुहूर्त दिवस घटे रात्रि बधे एमज सर्वबाह्य मंडवा लगे  
कीजे सर्वबाह्य मंडले दिवस १२ मुहूर्त रात्रि १८ मुहूर्त वलीफरी मांडी उत्तरायणे सूर्य चाल्यो तिवारे बीजामांडलायकी मुहूर्तना ६१ या वेवे भाग प्रति  
दिन दिवस वधारे रात्रि घटाडे साठि भागे मुहूर्त एक बांधीये सर्वाभ्यतर मंडल लगे पछे सर्वाभ्यतर मंडले १८ मुहूर्त दिवस १२ मुहूर्तरात्री हुये सूर्य प  
हिले छमासे दक्षिणायन भणी आवतीयको एकोनपचासे मांडले गयीथकी १८ एकसठिया भाग एक मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसे घटाडी रात्रीनू क्षेत्र  
रात्रिवेवधारी सूर्य चारचरे । सर्वबाह्य मंडल थकी दक्षिणायनको सूर्य बीजे छमासे उत्तरायनभणी आवतीयकी एकोनपचासमे मंडले गयीथकी १८ एक  
सठिया भाग एक मुहूर्तना रजनीना क्षेत्रने घटाडीने दिवसनीक्षेत्रने वधारीने सूर्य चारचरे एतले उत्तरायणे रात्रि घटे दिवस बधे दक्षिणायने रात्रि बधे

नपचाशतो द्विगुणत्वे अष्टनवतिर्भवति द्व्यगुणनंच प्रतिमण्डलं मुहूर्तैकषष्टिभागद्वयवृद्धेर्दिनस्तरात्रे वेति । रेवईत्यादि रेवतिः प्रथमायेषां तानि रेवतिप्रथमानि तथाज्येष्ठापर्यवसानानीति तौ निचतानिचेति कर्मधारयः तेषामेकोनविंशतेर्नचत्राणामष्टनवतिस्तारा स्तारापरिमाणेन प्रज्ञप्ता स्थाहि रेवतिनचत्रं द्वात्रिंशत्तारं अश्विनीचित्रारं कृत्तिकाषट्त्तारं रोहिणीपचत्तारं श्रृगशिरस्त्रितारं आर्द्राएकत्तार पुनर्वसुः पंचत्तारं पुथस्त्रितारं अश्लेषा षड्त्तारं मघा सप्तत्तारं पूर्वाफाल्गुनीद्वितार उत्तराफाल्गुनीद्वितार हस्तः पचत्तार चित्राएकत्तारं स्वातिरेकत्तारं विशाखापचत्तार अनुराधाचतुस्तारं ज्येष्ठात्रितारमित्येवं सर्वतारामी लने यथोक्तं ताराग्रमेकोन यथांतराभिप्रायेण भवति अधिकृतग्रंथाभिप्रायेण त्वेषा मेकतरस्य एकताराधिकत्वम् सम्भाव्यते ततो यथोक्ता स्तत्संख्याभवतीति ॥

सठिन्नाए मुञ्जहस्स रयणिं रिकत्तस्स बुद्धत्ता दिवसखेत्तस्स अग्निनिबुद्धत्ता णं सूरिणु चारं चरइ रेवईप  
ठम जेठापज्जवसाणाणं एगुणवीसाए नस्सत्ताणं अण्ठाणउइत्तारानु तारग्गेणं प० ॥ १८ ॥

दिवस षटे प्रतिदिवस १ मुहूर्तना ६१ या वेवेभाग प्रति मडले घटाडीये वधारिणे । रेवतीनचत्रे पंहिलो ज्येष्ठानचत्रे पर्यवसान छेहडो जेहने एहया उ गणीसनचत्र ने ६८ तारा ताराग्रेणतारापरिम णि कल्ला । रेवतीनचत्रना ३२ तारा । अश्विनीना ३ तारा । भरणीना ३ । कृत्तिकाणा ६ । रोहिणीना ५ । श्रृगसिरना ३ । आर्द्रानी १ । पुनर्वसुना ५ । पुष्याना ३ । अश्लेषाना ६ । मघाना ७ । पूर्वाफाल्गुनीना २ । उत्तराफाल्गुनीना २ । हस्तना ५ । चित्रानी १ । स्वाती १ । विशाखानी ५ । अनुराधाना ४ । जेष्ठाना ३ । एह १६ ना सर्वमिली ६८ ताराथया । इति ६८ मो थयो ॥ ६८ ॥ द्विवे ६६ मो लिखे

॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि विख्यते । नंदनवणेत्यादि अस्त्रभावार्यः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेषु नवनवतिर्योजनश्रुतानि चतुःपञ्चाशच्चयोजनानि षट्त्रयोजनैकादशभागा बाह्यो गिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति श्रुतानि चतुःपञ्चाशदधिकानि षट्त्रैकादशभागा स्थाया पचश्रुतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कम्भो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर आयोभवति षट्मसूरिय

मंदरेणं पद्मएणवणउड्डीजोयणसहस्साइं उट्ठं उच्चतेणं प० नंदणवणस्सणं पुरत्थिमिह्वाणं चरमंताणं पच्चत्थिमिह्मे चरमंते एसणं नवनउड्डीजोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० एव दस्किणाणं चरमंताणं उत्तरिह्मेचरमंते एसणं वणउड्डी जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० उत्तरे षट्मसूरियमंठले नवणउड्डीजोयणसहस्साइं

मेरूपर्वत ८८ सहस्र योजन जंबो जवणै कक्षी । भूमिथकौ ५०० योजन मेरुने विषे जचा चढीये पहिली मेखला तिहां नंदनवन पामीये तेह नंदनवन ५०० योजन पिडुली छे नंदनवननो पूर्व चरमात तेहथी पश्चिम चरमांत लगे ८८०० से योजन आवाधाये बिचाले आंतरो कक्षी । मेरुनो विष्कम्भ मूले १०००० योजन नंदनवन स्थाने बाह्य गिरि विष्कम्भ ८८०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नंदनवन मांदि मेरुनो विष्कम्भपणी ८८ से योजन ५४ योजने ११ हीया ६ भाग नंदनवन ५०० योजन पिडुलीते दुगणीलीजे अनेमेरुनो अभ्यतर विष्कम्भपणी लीजेतो ८८०० योजन आंतरो हुयो । एमज नंदनवनना दक्षिण चरमांतथकौ नंदनवननो उत्तर चरमांतनो आंतरो ८८०० से योजन थयो । निषधने माथे सर्वाभ्य तर मांडलीछे तेहपूर्व दिशनी तेहीज कंकणने

मडलेति इहजम्बूहीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते द्विगुणिते अपहृते योराशिः सप्रथममण्डलस्यायामविष्कम्भः सच नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशदधिकानि द्वितीयन्तु नवनवतिः सहस्राणि षट्शतानि पचचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पचत्रिशदेकषष्टिभागाः कथं मण्डलस्यमण्डलस्यचान्तर द्वेद्वेयोजने सूर्यविमानविष्कम्भ आष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागाः एतद्विगुणितं पचयोजनानि पचत्रिशदेकषष्टिभागाश्चेति जातमेतच्च पूर्वमण्डलविष्कम्भे क्षिप्त जातमुक्तप्र

**साइरेगाइं ज्ञायामविस्कन्नेणं प० दोच्चे सूरियमंजले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं ज्ञायामविस्कं**  
आकारे फ़िरतो पश्चिमनोनीलवत ने माये ते सर्वाग्यंतर माडलो जम्बूहीपमाही १८० योजनछे पूर्वदिगिनो अने पश्चिमनो पणि एतलीजछे तो जम्बूहीपन जीवा लावपणे लाख योजनछे ते माहि थी ३६० योजन मांडलो भूमिमाकाढी लाख योजनमांहि थी पठें पूर्वसर्वाग्यंतर मडल अने पश्चिम सर्वाग्यंतर मडलने ८८४० योजन आतरो थयी । पहिली सर्वाग्यंतर सूर्यनो मांडलो ८८ सहस्र योजन सातिरेक भांभेरीते ६४० योजन आयामं पश्चिमे लांब पणे दक्षिण उत्तरे विष्कम्भपिहुलपणे आंतरो जाणिबी लाख योजन माहिथी ३६० योजन काढी पठें ८८६४० योजन ऊगरे पहिले मांडले पूर्वनो बीजी मांडलो अने पश्चिमनो बीजी मांडलो ८८६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आंतरो । तेकेम पहिला मांडलाथी बीजी मांडलो २ योजन अने मांडलानूं पिहुलपणूं १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनो पणि एतलीजविहदिशमिली पहिला बीजामांडलानां आतराना योजन मंडल पिहुलपणी मिली ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाग्यंतर मांडलाना प्रथमना आंकमांहि घातिये एतले ८८६४० योजन मांहि ५ योजन ६१ यापैत्रीस भाग घातिये तिवारे ८८६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामाडलानो हुवे हिवेसूर्यनो पूर्व पश्चिमनो बीजी मांडलो ८८६५१ योजन ६१ । ८

माणमिति तृतीयमण्डलविष्णुश्रौत्येयमेवावसेयः सच नवनवतिसहस्राणि षट्शतानि एकपचाशत्तृतीयानि नवैकषष्टिभागाद्येति इमीसेषमित्यादि भावा  
र्थीयं अस्त्रनकाण्डं दशम तत्रच रत्नप्रभोपरिमांताच्छतं शताना भवति प्रथमकाण्डे प्रथमशतैव व्यन्तरनगराणि सन्तीति तस्मिन्नपसारिते नवनवतिशतान्य  
गतरं सूचीकृतं भवतीति ॥ ८८ ॥ अथ शतस्थानके किञ्चिद्विख्यते । तत्र दशदशमदिनानि यस्या सा दशदशमिका याहि दिनानादशदशका

त्रेणं प० तद्दुसूरियमंरुले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं अयामविरुक्त्रेणं प० इमीसेणं रयणप्प  
नाए पुठवीए अंजणस्स कंरुस्स हेठिल्लाउ चरमंताउ बाणमंतरजोमेज्जाविहाराणं उवरिमते एस्सणं नव  
नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९९ ॥ दसदसमियाणं त्रिरुक्पट्टिमा एगेणं रा

भाग पूर्व अने पथिमनां मंडलने आंतरो दक्षिणेने उत्तर मडले आतरो तेहीपिण वीजामंडलानीपरे ५ योजन भाग ३५ वीजामंडलेवधारिये ८८६४५ यो  
जन भाग ३५ माहिघातिये तिवारे ८८६५१ योजन ६१ । ८ भाग आंतरो थाय । वीजो मंडलो आयाम लांबपथे विस्तृत पिहूलपथे कक्षी । एणीये रत्न  
प्रभा पृथिवी ये ३ कांड माहिपहिलीकांड १६ हजारनो १६ जाति रत्ननो तेकांडप्रत्येके १ सहस्रनोके तो रत्नप्रभानो दशमी अंजन कांड तेहनो हेठिलो  
चरमांत समभूतलथी १० हजारयोजनके तिहाणकीमांडी उपरि रत्नप्रभाना १०० योजन मांहीवानव्यतरनाभूमि संबंधी विहार कीडा नगरके तेहनोड  
परिली चरमांत ८८०० से योजनआवाधाये विचाले आंतरो कक्षी । एतले १० हजार योजन मांहिथी व्यंतर संबंधी १०० योजन बाहिर काटीये तिवारे  
८८ से योजन उगरे । इति ८८ मोसमयाय थयो ॥ ८८ ॥ द्विजे १०० मोलिखेके । पहिला दस दिहाडा नगे एकेकी भिचा दातीले पके बीजे



नि भवन्ति तत्रभवन्ति दशदशमदिनानि शतश दिनाना मतलभ्यते एकेनरात्रिदिवसशतनेति त्रि यस्यां च प्रथमेदशके प्रतिदिनमेकाभिधा द्वितीयैर्द्वे एवं यायद्दशमेदशदशैरेवं सर्वभिन्नासंकलने सूत्रोक्तसंख्याभावत्येव इति पार्श्वनाथ स्त्रिंशद्वर्षाणि कुमारत्व सप्ततिचानगारत्वमित्येव शतमायुः पालयित्वा सिद्धः एवं धेरेविश्रज्जसुहमेति आर्यसुधर्मा महावीरस्य पंचमोगणधरः सोऽपि वर्षशतं सर्वायुः पालयित्वा सिद्धस्तथाच तस्यागारवासः पंचाशद्वर्षाणि ब्रह्मस्यपर्याया

इंदियसतेणं अष्टवठेहिं त्रिस्कासतेहिं अहासुत्तं जावअणराहियाविअवइ सयहिस्सिया नरकते एक्कासय तारे प० सुविहीपुप्फदंतेणं अणरहा एणंधणुसयं उहुं उच्चतेणं होत्या पासिणंअणरहापुरिसादाणीए एक्कंवा ससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धेजावप्पहीणे एवं धेरेवि अज्जसुहमे सव्वेविणं दीहवेयहुपव्वयाएगमेगं गा

दशके वै वै भिच्चा एम दस दसक लगे एकेक भिच्चावधारीयेते प्रतिमा दश दशमिका कहीये। तेप्रतिमा दश दशमिका भिच्चा प्रतिमा एकरात्रि दिवस सते एतले १०० अहोरात्रिये अने साढे पांच से भिच्चाये करी यथा सूत्रोक्त प्रकारे यथा मार्गे आराधी होय एणे प्रकारे। शतभिषा नचचना एक सो तारा कह्या। नवम सुगिधिनाथ बीजीनाम पुष्पदंत अरिहंत १०० धनुष जं चा जं च पणे हुया पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय महासीभागी ३० वर्ष गृहाश्रमे कुमारपणे ७० वर्ष यतिपणे १०० वर्ष सगली आउखीपालीने सिद्ध यथा समस्तदुःखशक्ती प्रक्षीणयथा। एमज जी महाबीरनी पाचमी गणधर भार्य सुधर्म स्वामी गृहाश्रमे ५० वर्ष ब्रह्मस्यपणे ४२ वर्ष केवलीपणे ८ वर्ष सर्वमिली १०० आउखीपालीने सिद्धयथा। जब्बुदीप मांहि ३२ विजयना ३२ भ

द्विचत्वारिंश लोवलपर्यायीष्टीभवति चैतद्राशिष्यमीलने वर्षशतमिति वैताव्यादिषुचत्वम् चतुर्थांशउद्देशः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पचानां महाक्रदाना सुभयतो दशव्यवस्थिता स्तोत्र जम्बूद्वीपे शतद्वयसख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकीत्तरस्थानवृद्धा सूत्ररचना परित्यज्य

उयसयं उहं उच्चत्तेणं प० सखेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगंजोयणसयं उहंउत्तेणं प०  
एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० सखेविणं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उहं उच्चत्तेणं प० एगमेगं  
गाउयसयं उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं भूले विस्सकन्नेणं प० ॥ चंदप्पन्नेणं झुरहा

रत ऐरवतना २ एव ३४ दीर्घवैताव्य एह वेगुणा धात कौ खड पुष्कराई माहि तो सगला दीर्घ वैताव्य पर्वत एकेक सो गाऊ ऊ चपर्ये कह्या । एतले वैताव्य पर्वत २५ योजन जं चा तेहनागाऊ १०० हुया अने जं चपर्यानी चौथी भाग भूमि माहिहीय । सगलाही अठ्ठीद्वीप माहिला चुल्ल लघु० हिमवत वर्षधर पर्वत वर्ष कहता चेत्तेहनी मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊ चा जाणिवा । अने एकेक १०० गाऊ उद्देशपर्ये भूमि माहि ऊ डपर्ये कह्या । उत्तर कुरु माहि नीलवंतादिक ५ दहछे एकेक द्रहने विहूंपासे दस दस काचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरुमां हि निषधादिक ५ दहछे एकेक द्रहने विहूंपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली २०० कांचनगिरि छे । जम्बूद्वीप माहि वेगुणा धातकी खड पुष्कराईमांही तेसगलाई सो सो योजन जं चा कह्या । एकेकसो गाऊ उद्देशे भूमि माहि ऊ डा एकेकसो योजन मूले एतला पिह्ला कह्या । इति १०० मो समवाय थयी ॥ १०० ॥ हिवे १५० मो समवाय लिखेछे । चद्रप्रभ आठमा भरिहत १५० धनुष जं चा ऊं

पञ्चाशच्छतादिद्वयां तां कुर्वन्नाह चंदप्यहेत्यादि सुगमञ्च सर्वमावादथाङ्गणिपिकसूत्रां नवरं ॥ १५० ॥ २०० ॥ पासायवडिंसयत्ति अवतंसकाः शेखरकाः कर्णे  
पूराणिवा अवतसकाः प्रधाना इत्यर्थः प्रासादाद्य ते अवतसकाः प्रासादानाम्बा मध्ये अवतसकाः प्रासादावतंसकाः ॥ २५० ॥ तथा पंचधनुसतियस्सणमित्यादि

दिवहं धणुसयं उहं उच्चत्तेणं होल्या अरणे कप्पे दिवहं विमाणावाससयं प० एवं अञ्जुणवि ॥ १५० ॥  
सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होल्या सखेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोय  
णसयाइं उहं उच्चत्तेणं प० दोदोगाउयसयाइं उखेहेणं प० जंबूद्वीवेणं द्वीवे दोकंचणपव्वयसया प० पउ  
मप्पन्नेणं अरहा अह्माइज्जाइं धणुसयाइं उहं उच्चत्तेणं होल्या असुरकुमाराणं देवाण पासायवडिंसगा अह्मा  
इज्जाइं जोयणसयाइ उहं उच्चत्तेण प० ॥ २५० ॥ सुमईणं अरहा तिसि धणुसयाइं उहं

चपणे हुया । इग्यारमा आरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कह्या । वारसेअच्युतकल्ले १५० विमान विहूंमिली ३०० विमानके । इति १५० नो  
थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखे । सातमा सुपाखं अरिहत २०० धनुष ज चा जं च पणे थया । सगला महाहिमवत पांच रूपी वर्षध  
र अठाई दोप माहिला वेवेसी योजन जं चा ज च पणे हुया । वेवेसे गाज उदधपणे भूमिमाहि ज ड पणे कह्या । जंबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्वत  
ते पूठे कह्याके ॥ इति २०० मी थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मी लिखे । क्खु पद्मप्रभ अरिहत २५० धनुष ज चाज च पणे हुया । असुरकु  
मार ते भवनपति देवताना प्रासादावतसक मोटाप्रासाद २५० योजन उ चाज च पणे कह्या ॥ इति २५० मी थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

पञ्चधनुः शतप्रमाणस्य अंतिमसारीर्यस्मृति चरमशरीरस्य सिद्धिस्तस्य सातिरेकाणि त्रीणिशतानि धनुषा ह्यौषधप्रदेशावगाहनाप्रज्ञा यतोसौ शैलेशीकर  
णसमये शरीररन्ध्रपूरणेन देहत्रिभाग म्विसुच्य घनप्रदेशोभूत्वा देहत्रिभागद्वयावगाहनः सिद्धिसुपगच्छति सातिरेकत्वञ्चैव तन्निशयान्तीसा धनुतिभागीय

उच्चत्तेणं होत्या अरिठनेमीणं अरहा तिस्रिवाससयाइं कुमारवासमज्जे बसित्ता मुंठे अविता जाव पव्व  
इए वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिस्रि तिस्रि जोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं प० समणस्स जगवने  
महावीरस्स तन्निशयाणि चोद्दसपुष्पीण होत्या पंचधणुसइयस्सणं अतिमसारीर्यस्स सिद्धिगयस्स साति  
रेगाणि तिस्रिधणुसयाणि जीवप्येदसोगाहणा प० ॥ ३०० ॥ पासस्सणं अरहने पुरिसादा

मो लिखेह्वे । पांचमा सुमतिनाथ अरिहत ३०० धनुष ऊ चा ऊ च पणहुया । बावीसमा अरिठनेमी अरिहत ३०० वर्ष कुमारपण वसी मुंडथया ७०० वर्ष  
दीक्षापाली सिद्धथया सर्वदु.ख प्रक्षीण थया । वैमानिक देवताना विमाननाप्राकार गढ ३०० योजनउंचा उ चपणें कह्या । अमण भगवंत श्री महावीरने  
३०० चौदह पूर्वधरहुया । ५०० धनुष जेहनूं शरीर होय अतिम शरीरी होय चरम सिद्धियें पहुतो होय तेहने सिद्धिने विधि ३०० धनुष  
आभेरा तेउपरि ३३ धनुष जीवप्रदेशनी अवगाहणाकही । केवलीनीजतलो शरीर होय उ चपणें तेहनां ३०० भाग करीये बीजे भागे नासिका कर्णादिक  
ना शरीरांतगत पीलार पूरीये पक्के २ भाग जीव सिद्धिउपर योजनने २४ से भागे आकाश प्रदेश काईनेरहेतो ५०० धनुष त्रिभागीकृत शरीरना ३३३ ध  
नुषआवे एतन्ना सिद्धना जीवनी अवगाहणा जीव प्रदेश समान इति ३०० ॥ ह्वि ३५० मो लिखेह्वे पार्श्वनाथ अरिहत पुरु

ह्रीं धीर्धो धीर्धो एसाखलुसिद्धाणं बुद्धोसीगाह्णाभणियत्ति ॥१॥ ३०० ॥ ३५० ॥ सव्वेविणंक्खारपब्बएत्यादि वच्चस्कारपर्वता एकमेरुप्रतिवद्वाविंशति स्तेच वर्षधरा

णीयस्स अणुठसयाइं चोदुसपुव्वीणं होत्या अन्निनंदणेणं अरहा अणुठाइं धणुसयाइं उहुं उच्चत्तेणं होत्या  
॥ ३५० ॥ संनवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइ उहु उच्चत्तेणं होत्या सव्वेविणं गिसहनीलवं

तावासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइ उहु उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे  
विणं वस्कार पव्वयाणिसढनीलवंत वासहरपव्वयणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उहु उच्चत्तेणं चत्तारि  
चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेणं प० अणयपाणएसु दीसु कप्पेसु चत्तारिविमाणसया प० समणस्सणं नगघनु

षादानौ महा सोभागी तेहना ३५० चौदह पूर्वधर हुया । चौथा अभिनदन अरिहत ३५० धनुष ऊंचा उच पणे कह्या । इति ३५० नो थयो ॥ ३५० ॥  
हिवे ४०० नो लिखे छे । बीजा सभवनाथ अरिहत ४०० धनुष उंचा उच पणे हुया । सगलाही अठाई द्वीप मांहिला ५ निषध ५ नीलवतवर्षधरपर्वत  
चेत्र मर्यादा कारी चार चार से योजन उंचा उच पणे हुया । चार चार से गाउ उद्वेध पणे उंडपणे कह्या । जवूहीप मांहि सगलाई बीस वच्चस्कार पर्व  
त छे ते किम महाविदेह मांहि ३२ विजय १२ अंतर नदी १६ वच्चस्कार ४ गजदंत छे तो १६ वच्चस्कार अने ४  
गजदंत मिली २० वच्चस्कार पर्वत कह्या । निषध नीलवंत वर्षधर एह पर्वत चार चार से योजन उंचा उच पणे कह्या । सीता नदीने पास मेरुने पास  
५०० योजन उंचा छे चार चार से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंड पणे कह्या । अनंत प्राणत नवमा दशमा देवलीकने विषे ४०० विमान कह्या ।

सत्तौ चतुःचतुशतीच्चाः ॥ ४०० ॥ ४५० ॥ श्रीतादिनदीप्रत्यासत्तौ मेरुप्रत्यासत्तौ च पञ्चशतीच्चा इति तथा सर्वविणवक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशौल्य

महावीरस्स चत्तारिसया वार्द्धणं सदेवमणुयासुरंमि लोगमि वाए अउपराजियाण उक्कोसिया वाइसंपया होल्या ॥ ४०० ॥ अजितेण अरहा अरुपंचमाइं धणुसयाइं उहुं उच्चत्तेणं होल्या सागरेणं रायाचाउरंतचक्खयही अरुपंचमाइं धणुसयाइ उहुं उच्चत्तेणं होल्या ॥ ४५० ॥ सहेविणं

वखारपह्यासीअ्या सीअ्याअ्याल महानईनु मंदरेणं वापह्णुणं पंच पंच जोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउसयाइं उच्चहेणं प० सहे विणं वासहरकूट्ठा पंच पंच जोयणसयाइं उहु उच्चत्तेणं मूले पंच पंच

अमण तपस्सो भगवत श्रीमहावीरने ४०० वादीनी संपदा हुई । ते वादी केहवा छे । देवताये करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने विषे अपराजित छे केहथी जील्या न जाय एहवी उल्लूही वादीनी सपदा हुई । इति ४०० नो समवाय सपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे । अजितनाथ अरिहंत अई पचम साढा चार से धनुष उंचा उच पणे हुया । सगर बीजी चक्रवर्ती राजा चिहु दिशना अंतनो धरणी ते ४५० धनुष उंचा उच पणे हुया इति ४५० नो समवाय यथी ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे । महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वचस्कार पर्वत अने ४ गजदंत एवं २० वचस्कार निषध नीलवतने पासे उंचा ४०० योजन अने श्रीता श्रीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे यो जन उंचा उच पणे ते २० वचस्कार निषध नीलवतने पासे ४०० गाउ उंडा भूमि मांहि प्रने मेरुने पासे ५०० सेगाउ उद्देध पणे उ उ पणे कह्या । वर्षधर

धिकं कथं लङ्घिष्यमवनि सहे एकारस प्रवृत्तवयकुडाइ नीलाइ सुतियुनगं अठुकारस जहासखं एतेषा म्यचगुणत्वात् वचस्कारकूटा नि लश्रीत्यधिकवतः श्रुतीसंख्या  
नि कथ विज्जुपहमालवंती नवनवसेरीसुसन्नसत्तेव सोलसवयत्तारिसु चउरोचउरोयकुडाइ एतेषा म्यचगुणत्वात् पंचगुणत्व जम्बूहीपादिमेरुपलचितक्षेत्राणा पंच

जोयणसयाइं विरुंनेणं प० उसनेण अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उहुं उच्चत्तेणं होत्या अरहेणं राया  
चाउरतचक्कावही पंचधणुरायाइ उहुं उच्चत्तेणं होत्या सोमणसगधमादणविज्जुप्पन्नमालवंताणं वस्कारप  
द्ययाणं मंदरपद्यत्तेण पंच २ जोयणरायाइ उहुं उच्चत्तेणं पंच पच्च गाउयसयाइं उच्चत्तेणं प० सद्येविणं व  
स्कारपद्यकूजा हरिहरिराहकूजजा पंच पच्च जोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं मूले पंच पच्च जोयणसयाइं

र कहिये हिमवतः दिक ६ तुलसिगे तेह उपरि कूट किहा ईक ११ छे किहा ईक ८ छे ती सगला यर्षधर कूट २८० छे ते पांच पाच से योजन उंचा  
मूले पाच पाच से योजन विष्कनपणे पिहल पणे जाया । आदिनाथ अरिहत कोसल देसना उपना ५ से धनुष उचा उच पणे हुया । भरत राजा चातुरत  
चक्रवर्ती ५ से धनुष उचा उच पणे हुया । मेरु पर्वत यत्तो निर्दिष्ट यत्तो नोक्त या ४ गजदत्त एहवा कक्षा सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवत  
४ एह चार वचस्कार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पाच पांच से योजन उचा उच पणे पाच पाच से गाउ उवेध पणे भूमि मांदि उंचपणे कक्षा । सगलाई  
वचस्कार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट दर्जी ने एतले एह २ दूट । गजदत्त रददीदूट सहस्र दर्जम उचा छे । ते माटे एह २ टालीने बीज  
कूट पाच से योजन उंचा उच पणे कक्षा । मूलने विषे पाच पाच से योजन खांब पणे पिहल पणे कक्षा । सगलाई नंदनवनना कूट पणि बलकूट वर्जनीने

त्वा सर्वांशेतानि पचयतोच्छितानि एवंभानुषोतरादिष्वपि वैताड्यकूटानितु सक्त्रोशषट्तीयोजनोच्छयाणि यर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्यष्टयोजनोच्छितानोति  
हरिकूट हरिसहकूट वर्जनलिहृतयोः सहस्रोच्छयत्वा दाहच विज्जणमहरिकूडो हरिस्सहोमालवतक्वारी तहनंदणवणकूडो उब्बिद्धाजीयणसहस्रंति ॥  
५०० ॥ चुल्लहिमवत कूडस्सेत्यादि इहभावार्यो हिमवान् योजनशतोच्छित स्तकूट मच्चयतोच्छितं इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति अभिचंदियंकुलकरेति

अयामविस्कन्नेणं प० सहेविणं नंदणकूटावलकूटवज्जापंच २ जोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं मूले पंच २  
जोयणसयाइं अयामविस्कन्नेण सोहम्मीसाणेषु कप्पेसु विमाणा पचजोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं प० ॥  
५०० ॥ सणकुमारमाहिदेसु कप्पेसु विमाणा लजोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूट  
स्स णं उवरिस्साले चरमंताले चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्सं समधरणितलेएसणं लजोयणसयाइं अवा  
हाए अंतरे प० एवं सिंहरीकूटस्सति पासस्सणं अरहने लसयालाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अप  
राजियाणं उद्धोसिया वाईसपया होत्या अग्निचदेणं कुलगरे लधणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं होत्या वासुपुज्जेणं

एतले बलकूट ते सहस्र योजन उ चो के मोटाई टालीने बीजा सातकूट पाच पांचसे योजन उ चा उंच पणे मूलने विषे ५ से योजन लांबपणे पिहलपणे  
कह्या । सौधर्म ईशान पहिले बीजे कएये विमान पांच पांच से योजन प्रमाणे उ चा उंच पणे कह्या । इति ५ से नो समवाय थयो ॥ ५०० ॥

हिंवे ६ से नो लिखेके । सनत्कुमार माहिन्द्र कस्से चीजा चौथा देवलोके विमान ६ स्से योजन उंचा उंचपणे कह्या । लघु हिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत



अभिषेकः कुलकरी ऽस्यामवसर्पिण्यां सप्तानां कुलकराणां चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्धनुःगतानि पंचायदधिकानि ॥ ६०० ॥ अमणस्य भगवतीम  
 हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलियशतानीत्यर्थः तथा अमणस्य भगवतीमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलब्धिमत्तायुशतानीत्यर्थः अरिहत्यादि देवूणादिति

अरहा लहिंपुरिससण्हिं सद्धिं मुंढे अविज्जा अगाराजु अणगारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥

बंनलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं अगवजु महावीरस्स  
 सत्तजिणसया होल्या समणस्स अगवजु महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होल्या अरिठ्ठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवतवर्षधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिभाग ६ स्से योजन आवाधायें विचल्ले आंतरो कब्बो । एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछि उप  
 रि पांचसेनोक्कूछे सर्वमिलौ ६ स्से योजन यया । वलीएमज छ्हा गिखरि पर्वत ने उपरिक्कूछे तेहनी उपरिलोभाग तेहयकी पृथ्वीतल ६ स्से योजन य  
 यो । पार्श्वनाथ अरिहतने ६ स्से वादीयया तेकेहवा । देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो विहुंभुवन लक्षण लोकेतेहने विषे  
 अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनो उत्कळ्ठी संपदा हुई । एह अवसरपिणी कालने विषे सात कुलकर मांदि चौथो कुलकर अभिवंदनामा ६ स्से  
 धनुष जचा जंच पणे हुया । वारमा वासु पूज्य अरिहत ६ स्से पुरुष साथे मुडयईं गृहायमयकी अनगर पणो पाय्या ॥ इति ६ स्से सो समवाय थयो

॥ ६०० ॥ इति ७ से नो लिखे । अन्नलांतक पांचसे छे देवलोके विमान सातसे योजन जंचा जंचपणे कह्या । अमण तपस्वी भगवंत महा  
 वीरना सातसे जिन केवली यया । अमण भगवंत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिनाधणी हुया । बावीसमा अरिठ्ठनेमीं अरिहत ३ से वर्ष कुमारपणे ७ से

षष्ठः पंचाशतादिनामाभूयानि तत्रमाश्रयाच्छेद्यस्थकालस्येति महाहिमवतित्यादौ भावार्थोयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छित स्तब्धं च पंचशतोच्छितमिति  
 वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणिता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवत्कूळस्स णं उवस्सिह्वाले  
 चरमंतानु महाहिमवत्तस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प०  
 एव सप्पिकूळस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्कासहस्सारसु दोसुकप्पेसु विमाणा अण्ठजोयणस

याइं उहु उच्चतेणं प० इमीरेण रयणप्पजाए पुढवीए पढमेऊं अण्ठसु जोयणसएसु वाणमंतरओमेज्जा  
 वर्ष देशीन ५४ दिन कणा केवलौ पर्याय चारित्रपालीने संतूर्ण १ हजार वर्ष आजखीपालीने सिद्धयया बुद्धतत्वना जाणथया सर्वदुःखयकी प्रत्तीण थया ।  
 महाहिमवत्तवर्षधर २ से योजन ऊ चीछे ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवत कूटछे सर्वमिली भूति लगे ७ से योजन महाहिमवत कूटनी उपरिली चर  
 मांत तेह्यकी महाहिमवत्तवर्षधर पर्वतगो समीधरणी तल भूमिभाग ७ से योजन आवाधये विचाले आंतरो कह्यो । एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊची  
 रूपी पर्वत २ से योजन उंची सर्वमिली ७ से योजन थया ॥ इति ७ से नी थयो ॥ ७०० ॥ द्विवे ८ से नीलिखे । महा शुक्र सहस्वार सात  
 से आठमे देवलीके विमान ८ से योजन उंचा उ च पणे कहा । एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ विभाग तेह

नी पहिलो रत्नकांड १ हजार योजन पिड छे । ते मांहि १ सी योजन हेठे मूंकिए १ सी योजन उपर मूंकिये विचाले ८ से योजन ते मांहि काल पिशा  
 चादिक वान व्यतर कहा । ते कहवा छे भीम कहतां भूमि संवंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यंतर देवता ते माटे वान व्यंतर भीमयक विहार

सूत्रोक्तमंतरभवतीति ॥ ७०० ॥

इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्डं खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योजनसहस्रप्रमाणे अधोपरिच योजनशतद्वयं त्रिमुखाद्येज्जटसु योजनशतेषु वनेषु भवा वाना स्तेषु ते व्यन्तराद्य तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्वैमियका स्तेषु ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराद्य नगराणि वागव्यन्तरभौमियकविहारा इति अट्टसयत्ति अट्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणदेवाणति देवे षूत्यत्यमानत्वा इवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषां प्रति देवगति लक्षण कल्याण वेपान्ते गतिकल्याणा स्तोपाभेवस्थिति स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याण येषांति

विहारा ५० समणसरु पं अगवत्तु महावीरस्स अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकक्षाणाणं ठिइ कक्षाणाण अगमेसिज्जहाणं उद्धोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्या इमीसेणं रयणव्यज्जाए पुढवीए

कक्षा है । अमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यतो अनुत्तर विमाने उपपात जपजवी छे जेइनी एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण छे जेइनी स्थिति कल्याण छे जेइनी । आगामिये काले एक भवने आतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण छे जेइने उत्कृष्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी संपदा इई । एणीये रत्नप्रभा पहिली धुयिवी नो वणी समरमणीक भूपि भाग तेह थक्की ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थक्की ७ से नेउ योजने तारा मडल छे तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व निती ८ सो योजन थगा । अरिहत अरिहनेमी वावीसमा तीर्थकर ने ८ सो वादीनी संपदा इई ते वादी केहवा छे देवर्ताये करी सहित मनुष्यवली असुर भवनपत्यादिक लोक एतले चिहु भुवने षादने विषे प्रपराजित जीत्यान जाय एहवी



निसहशूडस्सणमित्यादि इहायभावः निषधकूटम्पद्यतोच्छित निषधश्चतुःशतोच्छित इति यथोक्तमन्तरभयतीति ॥ ६०० ॥ सव्वेविणंजमगेल्यादि उत्तरकुरुषु नीलवद्वर्षधरस्य दक्षिणतः श्रीतायामहानद्या उभयोः कूलयो द्वौ यमकाभिधानौ पर्वतौस्तः तेव पंचस्वप्युत्तरकुरुषु द्वयोर्द्वयोर्भावाद्दृश्य एवं चित्त

णिज्जानु नूमिन्नागानु नवाहिंजोयणसण्हिं सवुवरिमे ताराखुवे चारंचरइ निसठस्सणं वासहरपवुयस्स उवारि  
ल्लानु सिहरतलानु इमीसेणं रयणप्यन्नाए पुढवीए पढमस्सकंठस्स बज्जमज्जेदसन्नाए एसणं नवजोयणसयाइं

ने दस योजन उपरि सूर्य चरे छे तेह उपर अस्सी योजने चंद्रमा चरे छे तेह थी ४ योजने २८ नक्षत्र छे तेह थी ४ योजने बुधनी तारीछे । तेह थी ३ योजने शुक्र नी तारी छे तेह थी ३ योजन वृहस्पति नी तोरी छे तेहने ३ योजन उपर भगल नी तारी छे तेहथी ३ योजन उपर शनैश्चर नी तारी छे एव नी सै योजन थया । निषध वर्षधर पर्वतना उपरला शिखरना तलयकी रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नी पहिली काडनी बहुमध्य देश भाग एह ६ सै यो जन आवाधाये विचाले आंतरी कह्यो । एतले निषध पर्वत ४ सै योजन जंघी अने रत्नप्रभानी पहिली कांड हजार योजन तेहनी अर्ध ५ सै योजननी एवं ६ सै योजन थया । एमज नीलवतना शिखरतल थी रत्नप्रभाना रत्नकांड नी मध्यभाग ६ सै योजन जाणिवो ॥ इति ६ सै नी समवाय थयो ॥ ६०० ॥

॥ द्विवे हजार नी समवाय लिखे छे । सगलाई ६ यैविक ना विमान ३१८ छे ते हजार योजन ऊचा जंच पणे कहा । सगलाई यमक पर्वत उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वत थी दक्षिण पासि श्रीता नदी ने विहु पासि २ यमक पर्वत छे मेरुदीठ वे वे करता ५ मेरुने पासि दस थाय ते दशस

विविचिक्लृष्टाविति पंचसुदेवगुणेषु यमकवत्सङ्गावात्पंचविचिकूटाः पंच विचिकूटा इति सञ्ज्विणमित्यादि सर्वपिष्टता वेताख्या विशतिः शब्दापात्यादयः  
सञ्ज्विणहरीत्यादि हरिकूट भ्रियुग्रभाभिधानेगजदन्ताकारवत्स्कारपर्वते हरिसहकूटलुमाखवत्स्कारे तानिच पचस्वपि मन्दरेषु भावात् पञ्चपञ्चभवस्ति

अवाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ १०० ॥ सखेविणं गेवेजाविमाणे दस दस जोय  
णसयाइ उहु उच्चतेणं प० सखेविणं जमगपह्वया दस दस जोयणसयाइ उहु उच्चतेणं प० दस दस गाउ  
यसयाइ उवेहेण प० मूले दस दस जोयणसयाइ अयायामविस्सजेणं प० एवं चित्तविचित्तकूमावि जाणि  
यथा सखेविणं वहवेयहुपह्वया दस दस जोयणसयाइ उहु उच्चतेण प० दस दस गाउयसयाइ उवेहेणं प०

योजन उंचा उच पणे कहा । दश दर सै कोर उद्देश पणे भूमि मांदि दश दश सै योजन लगे आयाम विष्कंभ पणे लांबपणे पिहुलपणे कहा । एमज ५ देवकुणे विषे निबध थको उत्तरिंछे गोतोडा ग्रहानदोने दिहुपासे सर्वमिलो दयविच विविचकूट यमक पर्वतनी परे जाणिबा । सगलाई वृत्त वैताळ्य बीस छे तेजिम जवूद्वीप मांदि डिमना केच म हि रम्यक केच ऐरवखत केच मिलो बीस एवं ४ वृत्त वैताळ्य थया । ८ धातको खडमांदि ८ पुष्करार्धमां हि सर्वमिलो बीस शरदापाती प्रमुख दश दश सै योजन उचा उच पणे कहा । दश दश सै कोस उद्देशपणे भूमिमांदि छंडपणे मूलने विषे हजार योजन पिहुलपणे । सगलाई समा गुर्जरदेश मांदि धानभगिनी पाली तेहने सस्थाने सस्थित छे । १ हजार योजन आयाम विष्कंभपणे कहा । मेरु पर्वत ने

सहस्रोच्छित्तानि वक्खारकूडवज्जन्ति शेषवचस्कारकूटेष्वेव मुच्चलं नारत्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवं बलकूडावित्ति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या  
न्दिशि बलकूटाभिधानं कूटमस्ति ततः पचशतानि सहस्रोच्छित्तानि च नदनकूडवज्जन्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वोद्दिदिग्विद्व्यवस्थितानि चत्वारि श

मूले दसेवजोयणसयाइं विरुक्क्रेणं प० सव्वत्थसमा पत्तयसंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहरिस्सहकूडावस्कार  
पत्तयकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विरुक्क्रेणं एवं बलकूडावि  
नंदणकूडवज्जा अरहाविअरिठ्ठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिध्दं बुद्धेजावसव्वदुक्कप्पहीणे पा  
सरस्सणं अरहन्ते दससयाइं जिणाणं होत्था पासस्सणं अरहन्ते दस अण्तेवासीसयाइं कालगयाइं जवस

विहृपासे चार गजदंत के आकारि पर्वतछे तेमांहि विद्युत्प्रभ गजदंतने उपर हरिकूटछे । मात्यवत ने उपर हरिसहकूटछे । एहकूट पांचसै योजननांछे  
मेरु पर्वत मिलौ १ हजार योजन उंचा उंच पणे कह्या । मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वज्जस्कार कूट वर्जी ने वज्जस्कार कूट  
हजार योजन उंचा नथौ तेहथौ ते वर्जी ने कह्या । एमज ५ मेरुने विषे ५ नंदन वन छे । दिशि विदिशि ने विषे प्रत्येक बलकूट नामे करौ कूट छे । ते  
५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नदन वन कूट वर्जी ने नदन वनने विषे पूर्वोदिक दिशे विदिशि ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथौ ए माटे  
क्रीडीने कह्या । अरिहंत अरिठ्ठनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीजा एवं हजार वर्षनी सगली आयु पालीने सिध्द थया तलना जाण थया सर्वदुः  
ख प्रक्षीण थया । पार्श्वनाथ अरिहंतने १ हजार केवलीनी सपदा थई । पार्श्वनाथ अरिहंतना १ हजार शिथ कालगत थकी सीधा यावत् शब्देकरौ स

तस्य स्थानि नगदनकूटानि वर्जयित्वा तानि साहसिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंत्यादि कुमारत्वे त्रीणि वर्षाण्यता न्यनगारत्वे सप्तत्वे वं दशशतानि पञ्चमहपुंडरी  
यद्दहति पद्मद्गदः श्रीदेवीनिवासी हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्तो पुण्डरीकद्रो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म

स्रुदुस्कप्यहीणाइं पञ्चमहपुंठरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं ज्ञायामेणं प० ॥ १००० ॥  
अणुत्तरीववाइयाणं देवाण विमाणा एक्षारसजोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं प० पासस्सणं अणरहणं इक्षारस  
सयाइं वेणुच्चियाणं होत्या ॥ ११०० ॥ महा पञ्चमहापुंठरीयदहाणं दो दो जोयणसह

वदुःख प्रचीण यथा । लघुहिमवत पर्वत उपर पद्मद्रह छे शिखरी पर्वत उपर पुण्डरीक द्रह छे एह विहु दह श्री अने लक्ष्मी देवीना विनास भूत छे ते १  
हजार योजन लांबपणे कक्षा इति १ हजार नो समवाय यथो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे छे । अणुत्तरीपपातिक देवताना विमान  
इग्यारह से योजन उंचा उच पणे कक्षा । पार्श्वनाथ अहिंतेने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवत यथा इति इग्यारह से समवाय यथो ॥ ११०० ॥  
हिवे २ हजार नो लिखे छे । महाहिमवत उपर महापद्मद्रह छे रूपी पर्वत उपर महा पुण्डरीकद्रह छे ते क्री दुदि देवीना निवास भूत छे ते वे हजार  
योजन लांबपणे कक्षा । इति वे हजार नो समवाय यथो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे छे । रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकाडना उपरला  
चरमांत थी लोहिताक्ष काडनी हेठिलो चरमांत तेह तीन हजार योजन अवाधायें विचलि आंतरी कक्षो । इति तीन हजार नो समवाय यथो ॥



हापद्ममहापुण्डरीकद्वादौ महाहिमवदुक्षिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ क्लीबुद्धिदेव्योर्निवासभूताविति ॥ २००० ॥ इमीसेणंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्र  
भाप्रथिव्याः प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्डं नामरत्नकाण्डद्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहितकाण्डं चतुर्थं तानिच प्रत्येक  
सादृशिकाणीति त्रयाणां यथोक्तमन्तरभवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिद्धदौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवोर्निवासाविति  
४००० ॥ धरणिजलैत्यादि धरणीतले धरण्यासमेभूभागइत्यर्थः रुययनाभीओत्ति अठ्ठपएसोरुयगो तिरियलोगस्समज्जयारमि एसपहवदिसाणं एसे

स्साइं अ्यायामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए वयरकंऊरस्सउवारि  
ल्लानु चरमत्तानु लोहियस्सकंऊरस्स हेठिहे चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं अ्यावाहाए अंतरे प० ॥  
३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिद्धहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं अ्यायामेणं प० ॥ ४००० ॥  
धरणिजलैमंदरस्सणं पव्वयस्स वज्जमज्जेदस्सन्नाए रुययनाभीनु चउदिसि पंच २ जोयणसहस्साइं अ्यावाहाए

३००० ॥ हिंवे ४ हजार नो लिखे छे । तिगिच्छिद्धह निषधने उपर गीलवंतने उपर केसरीद्धह ए बिहु धृति देवौ कीर्त्ति देवौ ना निवास भूत  
छे ते ४ हजारयोजन लाव पणे कल्ला इति ४ हजार नो समवाय ययो ॥ ४००० ॥ नं × नं + नं × नं ×  
हिंवे ५ हजार नो लिखे छे । धरणीनेविषं मेरु पर्वतनो गहुमध्य देश भाग रुचक तेहोज नाभिचक्र तुजानी परे आठ प्रदेशी रुचक नाभि कल्ला नाभियकी  
चिहुदिशि विदिशिपांच पांच सहस्र योजन अवाधाये विचाले आतरो कल्लो । मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो छे तेमाटे मध्यभाग यकी विंहुदिशि

वभवेअणुदिसाणंति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंवमिवेति रुचकनाभि स्वातन्त्र्यतसृष्ट्वपिदिक्षु पंचसहस्राणि मेरु स्वस्य दशसहस्रविष्काभत्वादिति ॥ ५०००  
००० ॥ इमीसेणमित्यादि रत्नकाण्डप्रथम पुलककाण्डसप्तममिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहाथे गाथाई हरिवासेइग

मंदरपर्वण ५० ॥ ५०० ॥ सहस्रसारे कप्ये त्रविमाणावाससहस्सा ५० ॥ ६००० ॥  
इमीसेणं रयणप्यन्नाण पुढवीण रयणस्स कफस्स उवरिह्वान चरमंतान पुलगस्स कंफस्स हेठिल्ले चरमंते  
एसणं सत्तजोयणसहस्साइं अवाहाण अंतरे ५० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अण्ठ  
जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं ५० ॥ ८००० ॥ दाहिणहुत्तरहस्स णं जीवा पाईण

पांच पांच हजार योजन पामीये । इति पांच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे छे । सहस्वार आठमे देव लोके ६ हजार वि  
मान कह्या इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखे छे । एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिली रत्नकांड तेहनो  
उपरिली चरमांत तेहथकी पुलककांड सातमी तेहने हेठिली चरमांत सातहजार योजन लगे आवाधये विचले आतरी कह्यो ॥ इति सात हजार नो  
थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखे छे । एह प्रत्येक हजार योजन छे तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासत्तेत्र ८ सहस्र  
योजन सातिरेक भांभिरा एतले एकबीस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कह्या ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

वीसा तुलसीयसयाकलायएकायति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणोभागो भरतस्थिति दक्षिणाहंभरतं तस्य जीवेवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन मूर्वतः प्रतीचीन म्पश्चिमत प्रायता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहश्चीति उभयतः पूर्वोपरपार्श्वयोरित्यर्थः समुद्रं लवणसमुद्रं स्पृष्टा शुभवतीनवसहस्राख्यामत इहोक्ता स्थानान्तरैतु तद्विशेषोऽयं नवसहस्राणि सप्तप्रतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानि दशकला इति ॥ ८००० ॥ १०००० ॥

पठ्ठीणायथा दुहउं समुद्रं पुठा नवजीयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ मंदरेणं प  
वुण धरणितले दसजीयणसहस्साइं विरुक्कंनेणं प० ॥ १००० ॥ जंबूद्वीवेणं द्वीवे एणं जीय  
णसयसहस्सं आयामविरुक्कंनेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्रे दोजीयणसयसहस्साइं

हिबे नवहजार नो लिखेछे । दक्षिणाहं भरतनी जीवा सरल समा प्राचीन पूर्वथकी मांडी प्रतीचीन पश्चिम प्रायत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगे स्पर्शीछेते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकही इति ८ हजारनीययो ॥ ८००० ॥ हिबे दश हजार नो लिखेछे । मेरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिहुलपणे कही इति दश हजार नो ययो ॥ १०००० ॥ हिबे लाख नो लिखेछे । असखात द्वीप माहि मध्य जंबूद्वीप प्रतस हस्र एतले लाख योजन लाबपणे पिहुलपणे कही इति लाखनी ययो ॥ १००००० ॥ हिबे जे लाखनी लिखेछे । लवण समुद्र पहिलो जे लाख योजन पिहुल पणे चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने कीटो रह्यो छे ॥ इति जे लाख नो ययो ॥ २००००० ॥ हिबे त्रिण लाख नो लिखे छे ।

१००००० ॥ २००००० ॥ ३००००० ॥ ४००००० ॥ ५००००० ॥

चक्षुवाल विस्क्रमेणं प० ॥ २००००० ॥ पासस्सणं झुरहलु तित्तिस्सयराहस्सीलु सत्तावी  
सचसहरसाइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्या ॥ ३००००० ॥ धायइस्वहेणं दीवि बह्वारि  
जीयणसयसहरसाइं चक्षुवालविस्क्रमेणं प० ॥ ४००००० ॥ लवणस्स ण समुद्धस्स पुरत्थिभिम्भान  
चरमंतालु पच्चत्थिमिह्ले चरमते एराणं पंचजीयणसयसहरसाइं झुवाहाए झुंतरे प० ॥ ५००००० ॥  
अरहेणं राया चाउरतचक्कावही लपुल्लसयसहरसाइं रज्जमज्जे वसित्ता मुंठे अवित्ता झुगारालु झुणगरियं

पार्श्वनाथ अरिहतने त्रिण लाख उपरि वली सत्तावीस हजार जत्तकष्टी आविकानी संपदा हुई ॥ इति त्रिण लाखनी थयो ॥ ३००००० ॥

हिंवे चार लाखनी लिखे छे । बीजी धातकी खड होप चार लाख योजन चक्रवाल भिक्खभणें पिहूलपणें कह्यो ॥ इति चार लाख नी थयो  
॥ ४०००००० ॥ हिंवे पांच लाखनी लिखे छे । लवण समुद्र ना पूर्व चरमांत थकी पश्चिम चरमांत पांच लाख योजन अवाधाये भिचाले आ

तरो कह्यो ॥ पूर्व लवण समुद्र ना बिलाख लीजे अने पश्चिम समुद्र लवणपणि बिलाख भिंचे जइहीप लाख सर्वमिली पांच लाख योजन थया ॥ इति पांच  
लाखनी थयो ॥ ५०००००० ॥ हिंवे छ लाखनी लिखे छे । ओ आदोखरनी वड पुत्र भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती सतहुत्तरी पूर्व लाख वर्ष कु  
मारपणें रक्षा छ लाख पूर्व महाराज पणें वसीने मुड थया अगर थकी अनगारी थया । एतले यतीपणी पाम्या । इति छ लाखनी थयो ॥ ६००००००

६०००००

॥ जम्बूद्वीपस्योत्ति तत्र लब्ध जम्बूद्वीपस्य द्वे लवणस्य चत्वारिधातकीखण्डस्येति सप्तलक्षाख्यन्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ७००००० ॥

८००००००

॥ अजितस्यार्हतः सातिरेकाणि नवावधिज्ञानि सहस्राखतिरेकश्च चत्वारिंशतानि इदं सहस्रस्थानकमपि सप्तलक्षस्थानकाधिकारे यदधी

पष्ठशत ॥

६००००००

॥ जम्बूद्वीपस्सणं दीवस्स पुरत्यिमिल्लानु वेइयंतानु धायइखंठचक्कावा

लस्स पच्चत्यिमिल्ले चरमते सत्तजोयणसयसहस्साइ

अत्तरे प० ॥

७००००० ॥ मा

हिदेणं कप्पे अठविमाणवाससयसहस्सा प० ॥

८०००००

॥ अजियस्सणं अत्तरे साइरेगा

इं नवउहिनाणिसहस्साइं होत्या ॥

१०००

॥ पुरिससीहेण वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं

हिवे

सात लाखनो लिखेछे । जम्बूद्वीपना पूर्वदिग्गिना वेदिकानां प्रांतयकीमांडी धातकी खड चक्रवालरूप तेह्नो पश्चिम चरमांत सातलाख योजन आवा

धायें विचाले आंतरी कक्षां तैकेम । जम्बूद्वीप १ लाख योजन लवण समुद्र २ लाख धातकीखंड ४ लाख सर्वमिली ७ लाख योजन यथा । इति ७ लाखनो

यथो ॥ ७०००००० ॥

हिवे ८ हजार नो लिखेछे । अजितनाथ अहिंत्तना सातिरेके ४० अत्रिक ८ सहस्र अवधि ज्ञानी हुआ । लाख लगे सख्या कह वली उपराठा ८ सहस्र

कक्षा ते सूत्रनो गति विविच छे एथी अथवा लेखकने प्रमाद थी जाणिया ॥ इति ८ हजारनो यथो ॥ ८००० ॥

हिवे दश लाखनो लिखे छे

तन्तत् सहस्रशब्दसाधर्म्या द्विचित्रत्वाद्वा सूत्रगते लखकदोषादिति ॥ ६००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ सम  
 णेत्यादि किल भगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिमात्रज्या म्यालितवानित्येकोभवः ततो देवोभूदिति द्वितीय स्तुतीनन्दनाभिधानो राज  
 सूनूः कृत्वाग्रनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासचरणेन तप स्नात्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभव  
 दिति चतुर्थ स्तुतो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुचावुत्पन्न इति पञ्चम स्तुत स्यश्रीतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्ड  
 ग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुचाविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेवि नाम्ना देवेन सहित स्तौर्धकारतया च जातइति षष्ठः उक्तभव

सद्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुठवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ते ॥ १०००००० ॥ सम  
 णेत्तगवंमहावीरे तित्यगरन्नवगहणाउ ठंठे पोहिलन्नवगहणे एगं वासकोठिं सामन्नपरियागं पाउपित्ता

धर्मनाथ कालीन पुरुषसिंह पाच मी वासुदेव दस लाख वर्ष लगे सगली आउखी पालीने पाचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणे ऊपनीछे ॥ इतिदश  
 लाख नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे । अमण भगवत महाबीर तीर्थंकर पणी उपाज्ज्यो ते भवनांगणहयकी एतले तेभवथकी  
 पोटिलाना भवग्रहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दीचापालीने आठमें देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणे ऊपना ते छठो भव केम श्रीमहाबीर  
 नो जीव पूर्व भवे पोटिलनाम राजा हुआ श्री एक भव १ तिहा कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ श्री बीजी भव  
 तिहा थी बीजे भवे छत्राय नगरीये नद राजा हुआ तिहा गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या । पछे १ लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ६ से ४५

ग्रहण हि विना नान्यद्भग्नग्रहणं षष्टं श्रूयते भगवत इत्यतदेव षष्टभग्नग्रहणतया व्याख्यातं यस्माच्च भग्नग्रहणा दिद षष्ठ तदप्येतस्मात्षष्टमेवेति सुष्टुच्यते तीर्थेक  
रभग्नग्रहणात्षष्टे पीडितभग्नग्रहणे इति ॥ १००००००० ॥ उससेत्यादि उसभसिरस्मिन् प्राकृतत्वेनश्रीऋषभ इति वाचेव्यत्येननिर्देशः कृतः  
एकसागरीपमकोटाकोटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः किञ्चित्साधिकैरूनाप्यल्पत्वा द्विपस्या विशेषितोक्ति ॥ + ॥ इहयएतेअनतरं सख्याक्रमस  
खन्धमानेण सखद्वाविविधा वस्तुविशेषाउक्ता स्तएवविशिष्टतरसम्बन्ध सवद्धा द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल  
सगेइत्यादि अथ चोत्तरीत्तरसख्याक्रमसंबन्धार्थं प्ररूपणमनन्तरमकारि साप्रतसख्यामात्रसंबन्धपदार्थं प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसगेइत्यादि तच्चतुतपरमपुरष

सहस्रसारे कप्ये सख्ठ विमाणे देवताए उववन्ते ॥ १००००००० ॥ उसन्नस्स अगुवज्ज  
महावीरस्स य एगासागरीपमकोठाकोठी अवाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिप्फुए

मास चमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुया । तिहां यकी पाचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानदाने कूखेजप  
ना ५ तिहा थकी ८३ मे दिने खत्रीयकुड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञायि हरिणे गमेघी देवे चिशला देवीनी कूखे अवतस्सा एह छ्ठी भव  
जाणवो इति एक कीटी नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिवे सागरीपमनो लिखे छे । श्री आदिनाथ भगवतने छेहला श्रीमहावीरने वैयालीस  
सहस्र ऊणी एक सागरीपम कीडा कीडी आवाधार्ये बिचले आंतरो कब्बो । एकथकी मांडी कीडा कीडीनी संख्या कही ॥ ॥ हिवे द्वादशांग

स्यांगानी वाङ्मानि द्वादशाङ्गानि आचारादोनि यस्मिंस्तद्वादशांगं गुणानागणोस्यास्तोतिगणी आचार्यस्तस्यपिटकमिवपिटकं सर्वस्वभाजनं गणिपिटकं अथ वा गणिशब्दः परिच्छेदेवचन स्तथाचोक्तम् आचार्यमिच्छहीए जनाओहीइसमणधम्मोउ तम्हाआचारधरो भस्सइपढमगणिष्ठाण परिच्छेदस्थानमित्यर्थः ततश्च परिच्छेदसमूहो गणिपटकमच्चैवपदघटना यदेतद्गणिपिटक तत्तद्वाथागप्रज्ञप्तम् तद्यथा आचारः सूत्रकृतइत्यादि सेकितमित्यादि अथ कितदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचारः आचरणमाचारः आचार्यत इति वा आचारः साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थः एतत्प्रतिपादकोगृह्योप्याचारएवोच्यते आचार्यरेणति अनेनाचारेण करणभूतेन अमणानामाचारोव्याख्यायत इति योगः अथवा चारेधिकरण भूते णमितिवाक्यालकारे अमणानां तपःओसमालिं

प० तं० ज्ञायारे सूयगळे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्तो णायाधम्मकहाने उवासगदसाने ज्यंतगळदसाने  
ज्यणुत्तरोववाइयदसाने पण्हावागरणाइं विवागसुए दिठ्ठिवाए सेकितं ज्ञायारे ज्ञायारेणं समणाणं निगं

नो वर्णन करे छे । इग्यारह अग बारसो पूर्व एव श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अंगसरीखाअग वलौ केहवाछे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखी दर्शन चारित्र तेहनी स्थान कह्यो । तेकहेछे । आचारांग १ सूयगडाग २ ठाणांग ३ समवाय ४ विवाहपन्नत्तो एतले भगवतोसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपास कदशा ७ अतगडदशाग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ स्यंते आचार वस्तु अथवा कोण ते आचार । आचरवो ते आचार । अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनविधि तेहनी प्रतिपादक अथ परिण आचार कहिये ते आचारागने विषे अमण तपस्वी तेह निर्गैथ वाह्याभ्यतर अथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिच्चा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनीफलकर्मब



गितानां निर्गम्यानां सवाह्याभ्यन्तरगूढरहितानां अमणा निर्गम्याएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते श्रव्यादिव्यवच्छेदार्थं मुक्तञ्च निगम्यसकृतावस  
 गेरुयश्चाजीवपचहासमणत्ति तत्राचारी ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरोभिन्नागूहणविधिलक्षणो विनयीज्ञानादिविनयः वैनयिक तत्फलं कर्मक्षयादिस्थानं  
 कायोत्सर्गीपवेशनशयनभेदा स्त्रिरूपं गमनं विहारभूत्यादिषु गतिचक्रमणसुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरण प्रमाण भक्तपानाभ्यवहारोपध्या  
 देर्मान नियोजन स्वाध्यायप्रत्युपेक्षणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन भाषासत्याऽसत्या मृषारूपाः समितयैर्यसमित्याद्याः पञ्च गुप्तयोमनीगुह्या  
 दयस्त्रिभूः तथाच श्रव्याचवसतिरुपधिञ्च वस्त्रादिकोभक्त चाशनादिपान चीणोदकादौतिद्वंद्वं स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लक्षणानंदोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग  
 मोत्पादनैषणाविशुद्धिस्ततः श्रव्यादीनामुद्गमादि विशुद्ध्याशुद्धाना तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचगूहण श्रव्यादिगूहण तथा व्रतानि मूलगुणा निधमाउत्तरगु

### थाणं व्यायारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंक्रमणपमाणजोगजुंजणनासासमितिगुह्येसिज्जोवहिमत्तपाणउ

य स्थापना कायोत्सर्ग गमन विहार भूमिचालवो । चक्रमण उपाश्रयांतरे उपाध्यायादिकने अर्थे भमिवो । प्रमाण भक्तपानीपध्यादिकनी मान । योग  
 योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजवो व्यापारिवो । भाषासंयत मित्र मृषाभाषात्यागरूप समिति ईर्यसमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । श्रव्यावसतिउप  
 धि वस्त्रादिक । भात अशनादिक पान उश्नादिक पाणी उद्गमदोष १६ उल्पादनदोष १६ एषणा गवेषणा लक्षण दोषनी विशेषी अभाव । शुद्धभक्तपानादि  
 कनी ग्रहिंवो । तथा कारणे अशुद्धनी श्रव्यादिकनी ग्रहिंवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप । एहसर्व सुप्रशस्तभलो  
 जेह आचारांग ने विषे कह्यो जायछे । ते आचार संबेधे करी पाच प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका

णास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारश्च गोचरश्चेत्यादि यावद्भुक्तयश्च श्रुत्यादिग्रहणं चव्रतानिच नियमाश्च तपउपधानं चेति समाहारद्वंद्वं स्तुतत्तरसुप्रश  
स्तुचेति कर्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्र क्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधानं तत्सर्वतत्प्राधान्यख्यापनार्थमेवेत्यवसेय  
मिति सेसमासइत्यादि स आचरोयमधिकृत्य ग्रन्थस्याचारइतिसंज्ञाप्रवर्तते समासतः सन्नेपतः पञ्चविधः प्रपञ्च स्तुतथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचार, शु  
तत्रानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्वतांव्यवहारो निःश्रुतितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि  
त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचरो द्वादशविधतपोविशेषानुष्ठितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषु वीर्यस्यागोपनमिति आचाररत्ति आचारग्रन्थस्य ण  
मित्यलङ्कारे परित्यासख्यया आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ताभवन्तीत्यर्थः कावाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा श्रवसर्पिण्डुत्सर्पिणीकाल वा प्रतीत्यपरीतेति सखेयान्यनु

गमउप्यायएसणाविसोहिसुष्ठसुष्ठगहणवयणियमतवोवहाणसुप्यसत्यमाहिज्जइसे समासनु पंचविहो प०  
तं० णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे ज्ञायारस्सणपरित्तावायणा सखेज्जाञ्जुणुनेगदारा  
सखेज्जानुपप्पिवत्तीनु संस्केज्जावेढा संस्केज्जासिलोगा संस्केज्जानुनिज्जुत्तीनु सेणञ्जुंगठयाए पढमेञ्जुगेदो

रे १ दर्शनाचार निःश्रुतितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपश्चाचार १२ भेदे तपनो करिवो ४ वीर्या  
चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारांगगुंथना संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोग द्वारा अनुयोगव्याख्या तेहने  
द्वारे उपक्रमदिक । संख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मतांतर तेप्रतिपत्ति । संख्यातावेढा छंद विशेष २ संख्याता श्लोक अनुष्ठुप आदिक । संख्याता

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामिव सख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगीचरत्वाच्च संखेज्जाग्रीपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थान्युपगमा मतान्तराणीत्यर्थः  
 प्रतिमायाभिगृहविशेषा वा सखेज्जावेदत्ति वेष्टकाच्छन्देविशेषा एकार्थप्रतिवद्वचनसकलिकेत्यन्ये संखेज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दसि संख्यातानिर्यु  
 क्तयः निर्युक्ताना सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थाना युक्तिघटनविशिष्टायाोजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिन्मवाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एताश्चनिवे  
 पनिर्युक्त्याद्याः सख्येयाइति सेणमित्यादिस आचारोणमित्यलङ्कारे अगार्भतया अङ्गलक्षणवस्तुत्वेन प्रथममंग स्थापनामधिकृत्य रचनापेक्षयातुडादशमंगं प्रथम  
 पूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्व क्रियमाणत्वादिति द्वौश्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलक्षणौ पञ्चविशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्यपरिखा १ लोग विजओ २ सीओसणिज्ज  
 सन्भत्तं ४ आवति ५ धुयविमोही ७ महापरिखो ८ वहाणसुय ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडिसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जायाय ४ वत्य ५ पाएसा ६ उ  
 गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्तो १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्धः एवमेतानिनिशीथवर्जानि पञ्चविशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देश्य  
 नकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्या अध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवशस्त्रपरिज्ञादिषु पचविशतावध्ययनेषु क्रमेण सप्त १

## सुयस्कंधापणवीसञ्जुज्जयणा पंचासीइं उद्देशणकालापंचासी समुद्देशणकाला अण्ठारसपदसहस्साइं पदग्गे

निर्युक्ति सूत्रने विपे कहिवा पणिथाया अर्थनो जोडिवीते युक्ति विशिष्ट घटनगये योजवी तेनिर्युक्ति । ते आचारांग अंगार्थपणे अगलक्षण वस्तुपणे । पहिले  
 अगे वेश्रुतस्कन्धे पंचवीस अध्ययनछे तेकेहा सत्यपरिखा १ लोग विजय २ सिओसणिज्ज ३ संभत्त ४ आवति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिखो ८ वहाण  
 सुयति ९ इति प्रथम स्कन्ध ॥ पिंडिसण १ सिद्धि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्य ५ पाएसा ६ उगहपडिमा ७ सत्तसत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्ति १६ इति

पट २ चतु ३ यतुः ४ पट ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतु ९ रेकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ संख्याता उद्देशनकालाः प्रोडगसंख्ययने  
पु प्रविपुनवसुनवैवेति इह संग्रहागथा सत्तयच्छचउचउरी छपंचश्रुवसत्तचउरीय एकारातिदिदी दोदोसत्तकएकोयत्ति एवसमुद्देशनकाला अपिभिणितव्याः  
अष्टादशपदसहस्राणि पदाग्रेणप्रज्ञप्तः इहयत्रार्थोपलब्धित्पदं ननुयदि द्वैश्रुतस्कन्धौ पंचविगतिरध्ययनान्यष्टादश पदसहस्राणि पदाग्रेणभवन्ति ततो  
यद्गणितं नवबभंचेरगुत्तीश्री अष्टारसपदसहस्रि प्रोवेओत्ति तत्काथ नयिकध्यते उच्यते यत्तद्वैश्रुतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्य प्रमाणं अणित यत्पुनरष्टादश  
पदसहस्राणि तत्रब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाणं विशेषार्थबध्नानिचसूत्राणि गुरुपदेशतस्तोषामर्थीवसेय इति सख्येयानि अचरानि वे  
ष्टकादीनां सख्येयत्वात् अनतागमाः इहगमा अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदाइत्यर्थः तेचानन्ताः एकस्मादेवसूत्रात्तदर्थम्विगिण्टानतधर्मात्मकवस्तुप्रतिपत्ते  
णासंस्केजाञ्चरु अणंतागमा अणंतापज्जवा परितातसाञ्चणंताथावरा सासयाकळानिबध्नाणिकीइया  
द्वितीयश्रुतस्काध ॥ ८५ आस्र परित्रादिक २५ अध्ययने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ पट २ चतुः ३ चतुः ४ पट ५ पच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ एकादश  
१० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ एतले पहिले २श्रुतस्कधना ८ अध्ययनना ४४ उद्देशा नवमी मध्ययन उद्देशा १६ विच्छेदथया । एव ६० उद्दे  
शा पहिले श्रुतस्कधे अने बीजे २५ सर्व मिली ८५ उद्देशा थया । कालते अवसर जेतला उद्देशाना काल अवसर तेतला समुद्देशाना प्रवसर कहा । अठारह  
सहस्रपद पदार्थ पदने परिमाणे जिहां सूत्रार्थनो समाप्ति होय तेपदकाहिये ते प्रथम श्रुतस्कधे नव अध्ययनना १८ सहस्र पद । सख्याता अचर लिपिन्यास  
अनन्तागमा अर्थपरिच्छेद । अनन्तापर्यय अचर पदार्थना पर्याय भेद जिहां परिता एतले अनन्ता नही एहवागसजीवैरिद्रियादिक काहीये । अनंतस्थावर

अन्येतुव्याचक्षते अभिधानाभिधेयवशयोगमाभवन्ति तेचानन्ताः अनन्ताः पर्यायाः स्वपरभेदभिन्ना अक्षरपदार्थपर्याया इत्यर्थः परीतास्त्रसा आख्ययन्त इति योगः त्रसन्तीति त्रसाद्वीन्द्रियादयस्तेच परीतानानता एव रूपत्वादेव तेषां अनताः स्थावरावनस्पतिकायसहिताः किभूताएतेसासयाकडानिवद्वा निकाइयन्ति शाखताः द्रव्यार्थतया अविच्छेदेन प्रवृत्तेः कृताः पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथाभावात्ते निवद्वाः, सूत्रएवगृथिता निकाचिताः निर्युक्तिसंग्रहणि हेतूदाहरणादिभिः प्रतिष्ठिताजिनैः प्रज्ञप्ता भावाः पदार्था अन्येष्वजीवादयः आघविज्जितिति प्राकृतशैल्या आख्यायते सामान्यविशेषाभ्या कथ्यतइत्यर्थः प्रज्ञाप्यन्तेनामादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते नामादिस्वरूपकथनेन यथापज्जायाणभिधेयमित्यादि दर्शन्ते उपमामात्रतः यथागौर्गवय स्तथा इत्यादि निदर्शयन्ते हेतुदृष्टान्तोपन्यासेन उपदर्शयन्ते उपनयनिगमनाभ्यांसकलनयाभिप्रायतीविति सांप्रतमाचाराङ्गग्रहणफलप्रतिपादनायाह सेएवमित्यादि सइत्याचाराङ्गगृहको

जिणपसत्ताभावा आघविज्जाति पसविज्जातिपरुविज्जाति नदिस्संति उवदसिज्जा सेएवंगाए एवंविस्साए ए

वनस्यति सहित एह भाव । केहवाछे द्रव्यार्थनये करी अविच्छेदपणे शाखताछे वली केहवाछे कडाकहतां पर्यायार्थपणे पतिसमे अन्यथापरिणीहोय निवद्वासू त्र यकी गूंथा । निर्युक्ति संग्रहणौ हेतु उदाहरणे करी निकाचित निविड पणे प्रतिष्ठ्या । जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कह्या । एहवा भाव पदार्थ अनैरापणि अजीव पदार्थ जिहा सामान्यविशेष पणे कहिये । नामादिक भेदनी कहिवी तेणेकरी प्ररूपिये । उपमाने करी देखाडिये । यथा गोस्वा वागवय हेतु दृष्टन्तोपन्यासे करी निर्देसियेदेखाडिये । उपनय निगमने करी सकलनये करी उपदेशिये । ते आचाराग एहवीछे । एम एहभणौ ने ज्ञाता

गृह्यत एवं आयत्ति अस्मिन्भावतः सम्यग्धीते सत्यवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाभ्यतिरेकात् स एवभवतीत्यर्थः इदंच सूत्रं पुस्तकेषु नष्टं नद्यांतु दृश्यते इतीह व्याख्यातमिति एव क्रियासारमेव ज्ञानमिति स्थापनार्थं क्रियापरिणाममभिधायाधुना ज्ञानमधिस्तथाह एव नार्थत्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति यथैवेहीकमिति एव विनायत्ति विविधो विशिष्टीवा ज्ञाता विज्ञाता एव विज्ञाता भवति तत्रांतरीयज्ञाता भवति तत्रांतरीयज्ञातार्यज्ञातार्यः प्रधानतर इत्यर्थः एवमित्यादि निगमनवाक्यं एवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्रपणता आख्यायत इति चरण व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविध करणपिण्ड विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयोः प्रपूयता प्रपूयैव आख्यायते इत्यादि पूर्ववदिति सेत आचाररिति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारोयः पूर्वदृष्टइति १ ॥ सेकितसूयगडे सूचायां सूचनात् सूत्र सूत्रेण कृत सूत्रकृतमिति सुष्टूच्यते सयगडेणति सूत्रकृतेन सूत्रकृते वास्वसमयाः सूच्यते इत्यादिकव्य तथा

वंचरणकरणपरूवणया व्याधिविजाति परूविजाति नदिसिजाति उवढसिजाति सेतं व्यायारो ॥ १ ॥

सेकितं सूयगडे सूयगडेणं ससमयासूइजाति परसमयासूइजाति ससमयपरसमयासूइजाति ज्ञीवासूइ जाण हीय । एवविस्तेत्ति विज्ञाता हीय अन्यथाशन शास्त्रनाजाणते ह्यकी पिण षणो जाणहीय । एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा येकरी चरण श्रमण धर्म करण पिण्डविशुद्धि तेहनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये प्ररूपिये निर्देशीये उपदेशिये पूर्ववत् । एह आचारांगकह्यो ॥ १ ॥ अथसूते सूत्रकृतांग । सूत्रसूचवाथको सूत्रे कीधो ते सूत्रकृत जेणे सुयगडाग स्वसमयजिनमत सूचविये कहिये परसमयपरमत सूचवीये कहिये जीवपदार्थ सूचवी ये चेतनालक्षणजीव एहवो कहिये । अजीवपदार्थ धर्मास्ति कायादिक जिहां सूचवीये जीव अजीव बिहुपदार्थ जिहां कहिये पचास्ति कायमयलो कसूचविये

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुखपापाश्रयसंवरनिर्जराबंधमोक्षावसानाः पदार्थाः सूच्यन्ते तथा समणायमित्यादि अत्र अमणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमयं स्थाप्य तद्वतिवाक्यार्थः तत्र अमणानां किमूतानां सचिरकालप्रवृत्तिना विरप्रवृत्तिजिताहि निर्मलमतयोगवत्यहर्निशशास्त्रपरिचया बहुश्रुतसंपर्काच्चिति पुनः किमूतानां कुसमयमोहमइ मोहिद्याणति कुलितः समयः निज्ञातोवेपाते कुसमयाः कुतौर्गिकास्तेषांमोहः पदार्थेष्वयथाववोवः कुसमयमोहस्तस्माद्योमोहः श्रोतमनोमूढता तेनमतिमोहिता मूढतानीता वेपातेकुसमयमोहमतिमोहिता अथवा कुसमयाः कुसिद्धातरूषामोवः सर्वो मकारस्तप्राकृतत्वात् तस्माद्योमोहोमूढतातेनमतिमोहिता वेपाते कुसमयोघमोहमतिमोहिता अथवा कुसमयाना कुतौर्गिकाना मोघोमोघोवा शुभफलापेक्षया निष्कलोयोमोहस्तेनमतिमोहिता वेपाते कुसमयमोघमोहमतिमोहिता. कुसमयमोहमतिमोहितावा तेषांतथासदेहा वस्तुतत्वम्प्रतिशययाः कुसमयमोह २ मतिमोहितानामि

ज्जन्ति अजीवासूइज्जति जीवाजीवासूइज्जन्ति लोगेगसूइज्जन्ति लोगालोगेसूइज्जन्ति सूअ गणेण जीवाजीवे पुसपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोखावसाणापयत्यासूइज्जति समणाणं अचिरकालपह् इयाणं कुसमयमोहमइमोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाण पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

पचास्तिक्कायरहितअलोकसूचिविद्ये लोकालोक बोहंसूत्रोये सूयगडागसूत्रे चेतनारहितअजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते पाप ४ कर्मनोसंचिवो तेआश्रय ५ कर्मनिरोध तेसवर ६ कर्मनो निर्जरवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवीकर्म उपार्जवो तेवध ८ सकलकर्मयकौ मकाविबो ते मोक्ष ९ मोक्षे अवसानेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये । अमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थ स्वसमय स्थापिये ते अमण केहवाळे । अचिरकात

तिविशेषणसान्निध्यात् कुसमयेभ्यः सकाशात् येषान्ते सन्देहजाताः तथासहजा त्वभावसम्पन्ना त्रकुसमयश्रवणसम्पन्ना द्रुधिपरिणामा क्षतिस्त्रिभावात् संश्रयोजातो येषांते सहजबुद्धिपरिणामसंश्रयिता. सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संश्रयिताश्च ये ते तथा तेषा अगणानांमिति प्रक्रमः किमतत्राह पापकरो विपर्ययशसयात्मकत्वेन कुक्षितप्रवृत्तिनिबधनत्वादशुभकार्यहेतु रतएव च मलिनः स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्मलीयोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधनायनिर्मलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं असीयस्सकिरियावाइयसयस्सस्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावादिशतस्य व्यूह कृत्वा स्वसमय. स्थाय्यत इतियोगः एव शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तन न कर्त्तारविना क्रियासम्भवतीति ता मात्समयवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिनः ते पुनरात्माद्यस्तित्वमतिपतिलक्षणा प्रसूनोपायेनाशीत्यधिकस्य शतस्य सख्याविज्ञेया. जीवाजीवाश्रवबन्धसम्बरनिर्जरापुण्यापुण्यमीच्चारान्नवपदार्थान् विरचय्य परिपाठ्या जीवपदार्थस्याधः स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरोधो नित्यानित्यभेदौ तयोरोध्यधः कालेश्वराल्पनियतिस्त्रिभावभेदाः पञ्च न्यसनीयाः पुन रित्यं वि कल्पाः कर्त्तव्या अस्तिजीवः क्षतीनित्यः कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थंयाय विद्यते खल्वात्मास्वित्तरूपेण नित्यश्च कालवादिनः उक्तैर्नैवाभिलापिन द्विती

## असीञ्चस्सकिरिञ्चावाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाइण सत्तठीए अस्साणियवाइण वत्तीसाए वेणइय

नी थोडाकालनोछे प्रवज्या जेहनी एतले नवदीक्षितके वली तेअमणकेहवाके कुक्षितके समय सिडांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थेतिहनी मोह सत्य भावना ये विषे अयथार्थीर बोध तेहथको ऊपनी मोह मूठता तेणेकरी मति मोहित के जेहनी एहवोके । कुक्षितयास्त अयणथको सदेह जपनोके । तथा सहज स्वभावनी बुद्धिमति तेहनीपरिणामतेहयको सगयजपनोके जेहने एहवा नवदीक्षीत अमण साधुके तेहने एहवी कहे । पापनी करणहार मइली जे म



यो विकल्प ईश्वरकारिणिकस्य तृतीयः आत्मवादिनश्चतुर्थो नियतिवादिनः पञ्चमः स्वभाववादिनः एव स्वत इत्यपरित्यजता लब्धाः पञ्चविकल्पाः परत इत्यनेनापि पञ्च लभ्यन्ते नित्यत्वापरित्यागेन चेते दश विकल्पा एव मनित्यत्वेनापि देशवेलेकत्र विंशतिर्जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादिष्वप्यष्टास्त्रैवमेव प्रतिपद विग्रहतिविकल्पानां भूतो विग्रहति नवगुणा शतसंश्लेष्यत्वरूपमिति च उरसी ए अकिरियवा ईर्यति एतेषां च स्वरूपयथा नयादिषु तथावाच्य नवरमेतद्व्याख्यानं पुण्यापुण्यवर्जाः सप्तपदार्थाः स्थाप्यते तदर्थः स्वतः परतश्चेति पदद्वय तदर्थः कालादीनां षष्टीयदृच्छा न्यस्यते ततश्च नास्ति जीवः सतः कालत इत्येको विकल्प एवमेते चतुरग्यौति भवन्ति सत्तद्वै ए अत्राणियवा ईर्यति एतेषां तथैव नवर जीवादी नवपदार्था नुत्पत्ति दशमा तुपरि व्यवस्थाप्याधः सप्तसदादयः स्थाप्याः तथथा सत्व मसत्व सदसत्व मवाच्यत्व सदवाच्यत्व मसद्वाच्यत्व सत्तदवाच्यत्वमिति तत्र कीजानाति जीवस्य सत्व मिल्येको विकल्पः एवमसत्वमित्यादि तत एते सप्तनवका द्वित्रिषष्टिरुत्पत्ते स्वाद्याएव चत्वारोवाच्या इत्येव सप्तषष्टिरिति तथावत्तौसा एवेणद्वयवा ईर्यति एतेषां चतुर्णां वादिप्रकाराणां मूलने त्रीणि त्रिषष्ट्यधिकानि अन्यदृष्टिगतानि भवत्यत उच्यते तिगहमित्यादि बृहन्निश्चिति प्रतिज्ञेपं क्त्वा स्वसमयो जैनसिद्धान्तः स्थाप्यते यतएव सूत्रकृतेन विधीयते अत स्तत्सूत्रार्थयोः स्वरूपमाह नाणेत्यादि नाना अनेकविधा बहुभिः प्रकारै रित्यर्थः दिव्यतवयणनिसारति स्थाप्यादिना पूर्वपक्षीकृतानां प्रवादिना स्वपक्षस्थापनाय

ति गुण बुद्धि पर्याय तेहने विशोधिवाने अर्थ पापकरे मलिन मने विशोधनार्थ अग्नी अधिक १०० क्रियावादी तेहनी व्यूहकरीने स्वसमय स्थाप्ये एह क्रिया पद आगलि सगले लेवी कर्ता विना क्रिया पक्षपापरूप नहीय तथा एहवी जेवदे ते क्रियावादी जीवने क्रिया मुख्यपापरूप नथी लागती ते अक्रियावादी

यानि दृष्टान्तवचना न्युपलक्षणत्वा हेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्यं परेषां मतमिति गम्यते सुष्टु पुनरपि प्रतिषेधणीयत्वेन दर्शयन्ती प्रकटयन्ती तथा विविधस्यासौ सत्यदप्रपूर्णत्वाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तारानुगमनीयानेकजीवादितत्वानां विस्तरप्रतिपादनं विविधविस्तारानुगमः तथा परमसंज्ञावो ल्यतस्यता वस्तूना मैदम्पर्यमित्यर्थं स्वावेव गुणौ ताभ्यां विशिष्टौ विविधविस्तारानुगमपरमसंज्ञावगुणविशिष्टौ मोक्षपहोयारगति मोक्षपयावतारकौ सम्यग्दर्शनादिषु प्राणिनाम्बवर्त्तका वित्यर्थ उदाररति उदारौ सकलसूचार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा उद्भानमेव तमोधकारमात्यन्ति कांधकार मथवा प्रकृष्टमज्ञानमज्ञानतम तदेवांधकार अज्ञानतमोधकारम्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्त्वमार्गेष्विति गम्यते दीवभूयति प्रकाश

वाईणं तिरहते सठाणं झुणदिठियसयाणं बूढकिञ्चा ससमणुठाविज्जंति णाणादिठंतवयणणिरसारंसुष्टुदरिसयं

ता विविहवित्थराणुगमपरमसंज्ञावगुणविशिष्टा मोक्षपहोयारगाउदारा व्युत्साणतमंधकारदुग्गेसुदीवसूच्या

एतले नास्तिकमती ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्माने अजाणपणी ते श्रेय एहवो जेवदे ते अज्ञानवादी तेहना मत ६७ तेहनी । मनुष्यपशुपखी सहनो विनय करिवीजे वदे ते विनयवादी तेहना ३२ भेद तेहनी । निणसेवे महुअविक अन्वदृष्टि मिथ्यादृष्टिना श्रत सईकडा तेहनी ब्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनम तेने स्थापिये । नाना अनेक प्रकारे दृष्टातवचन तेणे करी परमतने निःसार असार करीने स्थापिये । सुष्ठुभलो आदारीवापणे दरिसयति प्रगटता अनेक प्रकार सरूप दप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तरानुगम जीवादितवनो विस्तर प्रतिपादवो ते विविध विस्तारानुगम । तथा परमसंज्ञाव अत्यंतवल नो सत्यपणे तेही जे द्विगुण तेणे करी विशिष्ट विविध विस्तारानुगम परम संज्ञाव गुणविशिष्ट मोक्षपणे अवतारक सम्यक्दर्शनने विषे प्राणीने प्रवर्तक सकल

कारित्वा द्वीपोपमौ सोपाणाचेवन्ति सोपानानौव उन्नतारीहणमार्गविशेषाद्व सिद्धिसुगतिगृहीतस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमादुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती तल्लक्षण यद्गृहाणासुत्तम गृहीतम वरप्रासादय स्तस्य सिद्धिसुगतिगृहीतस्य रोहण इतिगम्यते निक्खोभ निष्कपति निक्षोभौ वादिना बोधयितुमशक्यत्वात् नि.प्रकपौ स्वरूपतोषोषद्वयभिचारलक्षणकम्पाभावात् कावित्याह सूत्रार्थो सूत्रचार्थश्च निर्युक्ति भाथ

सोवाणाचेवसिद्धिसुगद्विगिज्जत्तमस्स णिस्सोच्चनिप्पकंपा सुत्तल्या सुयगग्गस्सणं परितावायणासंखेज्जा झुण उगदारा संखेज्जानुपप्पिवत्तीनु संखेज्जावेढा संखेज्जानुनिज्जुत्तीनु सेणंझंगठयाए दोच्चे झुणे दोसुयस्कथा तेवीसंझुज्जयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला त्वत्तीसंपदसहरसाइं पयझणेणं प० संखेज्जाञ्चस्करा झुणंतागमा झुणतापज्जावा परितातसा झुणताथावरा सासयाकक्काणिवठा णिकाइ

सूत्रार्थदीर्घरहितपणे उदारप्रधानं सूत्रार्थजं हने विषे भ्रान्तं ते हीज तमभ्रकारं ते ऐकरी दुर्ग्रहं दुरधिगमं दुःखसाध्यं जसच्चमार्गं ते हने विषे जसच्चार्थं दीवा भूत प्रकाशकारी के भ्रान्तानाधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाशं करे दीवासमानं छे । सिद्धिलक्षणे सुगति तल्लक्षणं मन्दिर उत्तम प्रधानं छे ते हने चाटिवानि अर्थे सोपान पाउडोया रूपसूत्रार्थं छे । बादोपुरुषे निक्षोभं चालिवा अशक्यं निष्कपं धोडोईकोई एक पावोसकेनही एहवा सूत्रार्थं जिहा स यगडाग सूत्रना परिता सख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप सख्याता अनुयोगद्वार उपक्रममादिक जाणिवा । सख्यातौ प्रतिपत्ति वादीद्वय मतातरते प्रति पत्ति सख्यातावेढा कंदविशेष सख्याता स्लोक अनुष्टुपकद सख्याता निर्युक्ति सूत्रने विषे अर्थनो योजवो ते निर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अगार्थपण

सयह्णिष्ठित्विषूणिपजिकादिदूषइति सूत्रार्थौ शेषकण्ठ यावत् सेत्तसूयगडेति नवरं नयस्त्रिषुशुद्देशनकालाः षडतिथयचरोदीदो एकारसचेवहुंति एहसरा स तेवमहज्जयणा एगसरावीयसूयखधे इत्यतीगाथातो वसेया इति ॥ २ ॥ सेकितठाणे इत्यादि अथकिन्तत् स्थान तिपटल्यस्मिन्प्रतिपाद्यतया जीवादय इतिस्थान तथाचाह ठाणेणमित्यादि स्थानेन स्थानेवा जीमाः स्थाप्यते यथावस्थितस्वरूपप्रतिपादनयेति हृदयं शेष प्रायोनिगदसिद्धमेव नवरं

जिणपसत्ताभावा अघविज्जाति पसविज्जाति निदंसिज्जाति उवदंसिज्जाति सेणणाए एववि  
 स्याए एवंचरणकरण परूवणया अघविज्जाति पसविज्जाति निदंसिज्जाति उवदंसिज्जाति सेत्तंसूयगढे ॥ २  
 सेकितठाणे ठाणेणससमयाठाविज्जाति परसमयाठाविज्जातिजीवाठाविज्जाति अजी

अगलचण वसुपणे । बीजे अगे वसुतस्सुध तेवीसअध्ययन तेचीसउद्देशनकाल उद्देशनाअवसर तेचीस समुद्देशनकाल जेतला उद्देशेततला समुद्देश ॥ ३६ सहस्स पद सूत्रार्थ नी समाप्ति जिहाते पद पद परिमाणे कह्यो । सख्याता अक्षर तिमज पूर्वनी परे परित्ता । अनता नही । अस वेइन्द्रियादिक अनता स्थाव र वनस्सतिविशेष द्रव्यार्थनयेकरी शास्सता के एह सूयगडागने विषे एहवा भाव कहा । तेकेहवा पर्यायार्थपणे कताकीधा निवडा सूत्रार्थ पणे गंध्या । नि काविता तेहने उदाहरणे करी प्रतिध्या जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कहा । भाव पदार्थ आख्यायते कहियेके । तेमज पूर्वनी परेजाणीवा । निर्देशिये उपदेशिये पूर्ववत् तेसूयगडांग एहवी के । एव एस एहभणीने ज्ञाता जाणहीय एम विज्ञाता घणोजाण हीय । एम चरण ते अमणवत करण ते पिडविशुद्धा दिक तेहनी प्ररूपणा जिहां आख्यायते कहिये निर्देशिये उपदेशिये ते सूयगडांग बीजीअंग ॥ २ ॥ अथ सूं ते ठाणांग । जीवादिकपदार्थ

ठाणेण इत्यस्य पुनस्तत्कारण सामान्येनैव पूर्वोक्तस्यैव स्थापनाय विशेषप्रतिपादनाय च यावद्यातरमिति ज्ञापनार्थं तत्र द्रव्यगुणखेत्तकालपञ्चवृत्ति ग्रथमावहुवच नलोपा द्रव्यगुणखेत्तकालपर्यवाः पदार्थानां जीवादीनां स्थाने स्थाप्यन्ते इति श्रुतः तत्र द्रव्य द्रव्यार्थतया यथा जीवास्तिकायो ऽनन्तानि द्रव्याणि गुणः स्वभा वो यथोपयोगस्वभावो जीवः क्षेत्रयथा सख्येयप्रदेयावगाहनी ऽसौ कालोयथा अनाद्यपर्यवसितः पर्यवाः कालकृता अवस्था यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वेति सेलाहत्यादि गाथाविशेष स्तत्र ग्रीलाहिमवदादिपर्वता स्याप्यन्ते स्थानेति योगः सर्वत्र सलिलाश्च गङ्गाद्यामहानद्यः समुद्रालवणादयः सरा. आदित्या भवनान्यसुरादीनां विमानानि चन्द्रादीनां आकाराः सुवर्णाद्युत्पत्तिसृजयो नद्यः सामान्यामहीकोसीप्रभृतयो निधयः स्रक्वर्तिसम्बन्धिनो नैसर्ग्यादयो नव पुरिसजायति पुरुषप्रकाराउद्यतप्रणतादिभेदा. पाठांतरेण पुस्तजोयति उपलक्षणत्वा तु यथादिनचत्राया चन्द्रेण सह पश्चिमाग्निमीभयप्रसङ्गं काद्विभोगाः स्व

वाठाविज्जंति जीवाजीवा लोगा अल्लोगा लोगालोगावा ठाविज्जंति ठाणेणं दसुगुणखेत्तकालपञ्चवृत्तपयत्थाणं सेलसलिलायसमुद्दसूरजवणविमाणअगाराणदीलुणिहीलुपुरिसजायसरायगोत्तायजोइरांचाले एक्काविहवत्तह्व

जिह्वांतिष्ठे रहे तेठाणाग । स्वसमय जिनमत थापिये परसमय अन्यमत उथापीये स्वसमय थापीये परसमय उथापिये । जीवपदार्थ थापिये अजीवनो अजीवपणी स्थापिये । जीहां जीवाजीव बिहूं स्थापिये लोक थापिये अलोक थापिये लोकालोक बिहूस्थापिये । ठाणागे द्रव्य गुण क्षेत्र काल पर्यवा जीवा दिक पदार्थना ठाणागे स्थापिया द्रव्य ते द्रव्यादिकार्थ पणे जीवास्तिकाय अने द्रव्य के गुण तेस्वभाव यथा उपयोग स्वभाव जीव प्रति क्षेत्र असंख्य प्रदेशाव गाही जीव काल ते अनादि अपर्यवसित पर्यव ते कालकृतावस्था बालकपणादिक । तथा नारकपणादिक पदार्थ ने ठाणांगे स्थापिये । ग्रीलहिमवतादिक

राश षड्जादयः सप्त गोत्राणि च काश्यपादीनि एकीनपञ्चाशत् जीइसचालयन्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य सचालनानि तिहिंठाणेहि तारारूवे चलेज्जा इत्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेति प्रक्रमः तथा एकविधश्च तद्वक्तव्यश्च तदभिधेयमित्येकविधवक्तव्यक प्रथमेऽध्ययने स्थाप्यतइतियोगः एव द्विविधवक्तव्यक द्वितीयेऽध्ययने एव तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यक दशमेऽध्ययने तथा जीवानां पुद्गलानां च प्ररूपणताख्यातइतियोगः तथा लोगगृहचर्याति लोकस्थायिना च धर्मास्तिकायादीनां प्ररूपणता प्रज्ञापना शेष माचरसचव्याख्यानादवसेय नवर मेकविशति रुद्देशनकाला कथ द्वितीयतृतीयचतुर्थेष्वध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार उद्देशकाः पचमे चय इत्येते पंचदश शेषालु षट् षष्ठाभध्ययनानां षट् उद्देशनकालत्वादिति बावत्तरिपदसहस्रादिति अष्टादशपदसहस्रमानादाचारादिगुण

यंदुविहजावदसविहवत्तद्वयजीवाणपोगलाणयलोगछाड्चणपरूवणयाञ्चाघविज्जातिठाणस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाञ्चणुनगदारा संखेज्जालुपफिवत्तीनु संखेज्जालुसगहणीनु सेणञ्चुगठ याए तइएञ्चणेपणसुयस्कधे दसञ्चुज्जयणा एक्कवीसउदुसणकाला बावत्तरिसहस्साइ पयग्गेणं प० संखेज्जाञ्च

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चद्रमादिकना आगर सुवर्णोत्पत्तिभूमौ नदी सामान्यनदी निधी ते नै सर्पादिक निधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गीत्र काश्यपादिक ४८ ज्योतिष तारारूप तेहना सचालन तिहिंठाणे हिं । तारा रूपे चले इत्यादिक एतत्ता स्थानां गे थापिये । एक विधिनी कहिवो किविधनी जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो । जीयनी पुहलनी प्ररूपिं । तारा रूपे चले इत्यादीये धर्मास्तिकायादी प्ररूपणा ठाणागे कह्यो । वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप कह्यो अनुयोगद्वार उपक्रमादिक सस्याती पतिपत्ति शाठाणागे करी । लोकस्थापीये

त्वात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ ३ ॥

समवायन समवायः सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थः तदेतुच्च ग्रन्थोपि समवाय स्थावाह समवायेन समवायेवा स्वसमयाः सूच्यन्ते इत्यादिकव्य तथा समवायेन समवायेवा एगाइयाणति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कीटाकीकृतानां वा एगत्याणति एकेचतेअर्थश्चित्कार्था स्लोषां अयमर्थः एकेषां केषाञ्चि न सर्वेषां

स्कराव्युपन्तागमा व्युपन्तापज्जवा परिहतातसा व्युपन्ताथावरा सासयाकक्षा णिवसा णिकाइया जिणपसुत्तान्ना  
वाअघविज्जति पसुविज्जति निदंसिज्जति उवदसिज्जति सेण्णाए एवंविस्साए एवंचरणकरणपरू  
वणयाअघविज्जति सेत्तहाणे ॥ ३ ॥

वादीद्वयमतातरप्रतिपत्ति । सख्याता वेडा छदविशेष । सख्याता श्लोक अनुष्ठुपछद । सख्यातो सग्रहणी । ते अंगार्थपणे चीजिअंगे एक शुतस्खधना दस  
अध्ययन एकवीस उदेशन काल उदेशना अवसर । बहुत्तरि सहस्रपद पदने परिभाणे कक्षा सख्याता अक्षर तिमज पूर्वानीपरे परिहता अनतानही नस  
वेइन्द्रियादिक अनतास्थावर वनसख्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी साखताछे । पर्यायार्थपणे कीधा सूचार्थपणे गंथा । उदाहरणे करी प्रतिध्या । वीतरागे कक्षा  
भाव पदार्थ कहिये छे । नामादिकभेदनी कहिवी तणेकरी प्ररूपिये । सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये । तेठाणाग एहवोछे । एहभणीनि जाण एम घणीजाण  
हीय । एम चरण साधुव्रतरूप कारण पिडविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा कहीजाय तेठाणाग ॥ ३ ॥ अथ स्युं तेसमवाय । सम्यक्प्रकारे जाणिवो  
तेसमवाय समवायांगसूत्रे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे । एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी । एकछे प्रथम जेहने एहवाचे

सेन संक्षेपेण समाचारः प्रतिस्थानं प्रत्यङ्गञ्च विविधाभिधेयाभिधायकत्वलक्षणो व्यवहारः आहिज्जइति आख्यायते अथसमाचाराभिधानानन्तरं तत्र यदुक्तं तदभिधातुमाह तथ्येत्यादि तथ्ययति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा ह्येकीन्द्रियादिभेदेन पचप्रकारा जीवाः पुनरेकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायति जीवाञ्जजीवाच्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा विशेषा जीवाजीवधर्मावर्णिता इतियोगः तानेवलेख्यत आह नरयेत्यादि नरयति निवासनिवासिनामभेदीपचारा नारका स्ततश्च नारकातिर्यग्मनुजसुरगणानां स स्वध्विन आहारादय स्तत्र आहारञ्चो ज आहारादि राभोगिकानाभोगिकस्वरूपेनैकधा उत्स्वासीऽऽसमयादिकालभेदेनानैकधा लेख्याकृणादिकाषोढा आवाससख्या यथा नारकावासानां चतुरशीर्तिलैचारीत्यादिको आयतप्रमाणमावासानमिवसंख्यातासख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विवृष्टप्रवाहस्य परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः च्यवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

पुं समाचारे अहिज्जतितथ्यणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवसिधायित्यरेण अण्वरेविञ्चु बज्जविहाविसेसा नरगतिरियमणुअसुरगणणं अणहारस्सासलेसा अणवाससंखञ्चाययप्पमाणउववायचवणउग्गहणोवहिवेय पदार्थं वर्णव्या विस्तारेकरी । अनिरापणि घणेप्रकारे विशेष जीवाजीव पदार्थं वर्णव्या । नरकगति तिर्यंच मनुष्य देवता गण सबधीना आहार आभोगिक अनाभोगिक ओजलीमादिक भेदे करी अनेक प्रकार । तथा उच्छासीच्छास लेख्या कणादिक आवास सख्या नरकावासा ८४ लच्च आयतप्रमाण आयाम विक्कम परिधि प्रमाण । उपपात एकैसमे केतला एक नारकादिक जीव ऊपजे । एके केतला मरे । चवे अवगाहणा शरीरनीप्रमाण अवधि अणुत्तने अ



वर्षाणाञ्च भरतादिचेत्राणां निर्गमाः पूर्वस्थः उत्तरेषामाधिकाणि समायत्ति समवाये चतुर्थअङ्गे वर्णिता इतिप्रक्रमः अथैतद्विगमयन्नाह एतेचीक्ताः पदार्था अन्येचघनतनुवातादयः पदार्था एवमादयः एवंप्रकाराः अत्रसमवाये विस्तरेणार्थाः समाश्रीयन्ते अविपरीतस्वरूपगुणभूषितामुद्रांगीक्रियंतइत्यर्थः अथवा समस्यन्ते कुरूपणस्थः सम्यक्प्ररूपणायां क्षियन्ते शेषनिगदसिद्धमानिगमनादिति ॥ ४ ॥ सेकितंवियाहेइत्यादि अथकेयं व्याख्या व्याख्या

गमायसमाए एएञ्जाणयेएवमाइत्यवित्यरेणं झुत्यासमाहिज्जाति समवायस्सणं परित्तावायणाजावसेणं झुं गठयाए चउत्येञ्जणे एगेञ्जुयस्संघे एगेउद्देसणकाले एगेसमुद्देसणकाले एगेचउयाले पदसहस्से पदग्गेणप० संखेज्जाणिञ्जुस्कराणि जावचरणकरणपरूवणया झाघविज्जांति सेत्तंसमवाए ॥ ४ ॥

नो वर्ष चेन्नो नैर्गमा पहिलाथकी अगिलानो अधिकारपणे समवायांग पणे । चौथे अगे एह पूर्वोक्त पदार्थ वर्णव्या एह पूर्व कह्या तेअनेरापणि पदार्थ घन तनु बातादिक समवायांगे विस्तारपणे पदार्थ आश्रीये । समवायागनो वाचना सूत्रार्थ दानरूप । यावत् शब्दे वेढालगे जाणवी श्लोक सख्याता इत्यादिक आचारांगनी परे सर्व कहिवी तेअगार्थपणे चौथे अगे एक अध्ययन एकश्रुतस्त्वध एक एक उद्देशनकाल एक एक समुद्देशनकाल एकला ख ४४ हज्जार पद पदपरिमाणे कह्या । सख्यात अचर जाव यावत् शब्दे एमचरणसाधुवतरूप कारण पिडविशुद्धादिकनी प्ररूपणा कहियेछे । तेसमवा यांग चौथो ॥ ४ ॥ अथ स्य एह व्याख्या बख्खाणिये अर्थ जेहने विषे तेव्याख्या भगवतीये सूत्रे स्वसमय जिनमत कहियेछे । परमत कहियेछे

भूतानां जिनेनेति भगवता महावीरेण वित्तरेणभासियाणं विस्तारेणभणितानामित्यर्थ. पुनः किभूतानां द्रव्यत्वादि द्रव्यगुणत्रैककालपर्यवप्रदेशपरिणामानां  
 यथास्तिभावोनुगमनचिपनयप्रमाणसुनिपुणोपक्रमैर्विविधप्रकारैः प्रकटः प्रदर्शितोवै व्योकरणे स्थानितया तेषां तत्र द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि शुणा  
 ज्ञानवर्णादयः क्षेत्रमात्राय कालः समयादिः पर्यवा. स्वपरभेदभिन्नाधर्मा. अथवा कालकृता अवस्था नवपराणादयः पर्यवा. प्रदेशा निरगावयवाः परिणा  
 मा अवस्थातीवस्थान्तरगमनानि यथा येनप्रकारेणास्तिभावोऽस्तिव सत्ता यथास्तिभाव अनुगमः सहिताद्विद्यात्यानप्रकाररूप उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वा  
 रकलापालको वा निक्षेपो नामस्यापनाद्रव्यभावैर्वस्तुनीत्यासः नयप्रमाण नया नेगमादयः. सप्त द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात् ज्ञाननयक्रियानयभेदाद्वा द्वौ  
 तेएव तावेव वा प्रमाण वस्तुतत्त्वपरिच्छेदन नयप्रमाण तयासुनिपुणः सुवक्त्रः सुनिपुणोवा सुदृढनिश्चितगुण उपक्रमः आनुपूर्व्यादिर्विविधप्रकारता चैषा भेद  
 भणनत एवोपदर्शितेति पुनः किभूताना व्याकरणाना लोकांलोकौ प्रकाशितौ येषुतानि तथा ससारसमुद्भूतगुणत्वरणसमत्याणति ससारसमुद्रस्य विस्तीर्णस्य  
 उत्तारणे तारणे समर्थानामित्यर्थ अतएव सुरपतिसंभूजिताना प्रच्छक्कनिर्नायकपूजनात् सूक्तत्वेन द्वाधितत्वाद्वा तथा भवियजगपयहिययाभिणदियाणति

माण सुनिउणोवक्कम विविहप्पकारपगळपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्भूतदुत्तरण सम

त्याणं सुरवइसंपूजियाणं अवियजणपयहिययान्निदियाणं तमरयविष्टसणाणं सुदिठ्ठदोवन्नूय इहामति

म आनु पूर्वादि अनैकप्रकारे प्रगट परेण प्रकाश्याछे । बली प्रप्त केहवा छे लोकालोकनो छे प्रकाश जेहने भिने । बली केहवा ससार चतुर्गतिकवत्तचण  
 समुद्र रुद अतिविस्तीर्ण तेहने उतरवा समर्थछे । बली केहवा सुरपति इद तेणे संपूजितछे । भविकजनपदलोक तेहनी हृदय चित्त तेणेकरी अभि

भव्यजनानां भव्यप्राणिना अजालीको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदीया तस्या स्तस्य वा हृदये धितैरभिनन्दिताना मनुमोदिताना मिति विग्रहः तथा तमोरज  
 सी अन्नानपातके विध्वंसयति नाशयति यत्तत्तमोरजोविध्वंसं तच्च तदज्ञानञ्च तमोरजोविध्वंसज्ञानं तेन पुष्टदृष्टानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव  
 तानि च तानि दोषभूतानि चेति अतएव च तानि ईहामतिबुद्धिवर्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वसज्ञानमुष्टदृष्टीपभूते ह्यामतिबुद्धिवर्धनाना न्तत्र ईहा वितर्की  
 मतिरवायो निश्चयइत्यर्थः बुद्धिरौत्तिक्यादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वंसनागामिति पृथगेवपद म्पाठान्तरेण सुष्टदृष्टीपभूतानामिति च तथा छत्तीस  
 सहस्रमणूण्याणति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकरोऽन्यथापादनिपातञ्च प्राकृतत्वादनवद्यदिति वागरणंति व्याक्रियन्ते प्रश्ना  
 नन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्नायकेन यानि तानि व्याकरणानि तेषां दर्शनाप्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थः अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थः कइत्याह  
 सुयत्यबहुविहण्यारेति श्रुतविषया अर्थाः श्रुतार्था अभिलाषार्थविशेषा इत्यर्थः श्रुतावा कर्णिता जिनसकाशे गरधरेण ये अर्था स्तोत्रार्थाः अथक् श्रुतमिति  
 सूत्र अर्था निर्युक्तादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रहः श्रुतार्थानां वा बहुविधाः प्रकारा इति विग्रहः किमर्थं ते व्याख्यायत इत्याह शिष्या

**बुद्धिवद्भागानं छत्तीससहस्रमणूयाणं वागरणानं दंसणानं सुयत्यबहुविहण्यगारा सीसहिंयत्या गुण**

नदित अनुमोदाच्छे । बली केहवा तम अन्नानरूपरज अन्नान पातक तेहनी विध्वंसक नाशक छे रूडीपरे निर्णय कीधा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे  
 ईहा वितर्क मतिने अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते ओत्यत्तित्यादि चिहु प्रकारे तेहने वधारेछे एहवा छत्तीस हजार जणानही संपूर्ण प्रश्न ने देखाडता थ  
 का सूत्रार्थपणे शिष्यने हितना अर्थ भणी गुणरूप अर्थ प्राप्तादिक लक्षण हाथ सरीखी प्रधानहाथ । भगवती सूत्रना गणित वाचना । संख्याता अनुयोग

णां हितमनर्थप्रतिवातार्थप्राप्तिरूप स्तदेवार्थः प्रार्थमानत्वा तस्य तस्मै इति किंभूतास्ते अत आह गुणहस्ता गुणएवार्थं प्राप्त्यादित्यत्र णो हस्त इव हस्ताः प्रधा नावयवी येषां ते तथा विद्याहस्तेत्यादितु निगमनातस्त्रसिद्धि नवरं शतमिहाध्ययनस्य सन्ना चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदात्रेणेति समवायापेक्षया द्विगु

हस्या विद्याहरसणं पारित्तावायणा सखेज्जा अणुनुगदारा सखेज्जानुपक्रिवत्तीनु सखेज्जावेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जानु निजुत्तीनु सेणं अणुठयाएपचमे अणे एगेसुयस्कंधे एगेसाइरेगे अणुज्जयणसते दसउ द्वेसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं त्वत्तीसवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयगणेणं पसत्ता सखेज्जाइं अस्कराइ अणतागमा अणतापज्जवापरित्तातसाअणंताथावरा सासयाकका णिबद्धा थिकाइ या जिणपसत्ता ज्ञावा अ्याधविज्जांतिपसविज्जांति पखुविज्जांति निदसिज्जाति उवदंसिज्जांति सेणणाए एवंवि

हार उपक्रममादिक । सख्यातो प्रतिपत्ती । सख्यातावेढाक्खद्विषेय । सख्याताहोक्क अनुष्ठुपादिक । सख्यातो निर्युक्ति । तेह अगार्थपणे पाचमेअगे १ श्रुतस्काध १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा ३६ हजार पद समवायांगनी अपेक्षायें बेगुणाकीजे तो दोला ख ८८ हजार पदथाय । ते इहां नलेवा । सख्याता अचर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । त्रसवेइन्द्रियादिक । अनन्तास्थावर वनस्यती द्रव्यार्थं करो शाखताक्खे । पर्यायार्थं पणे कीधक्खि । सूत्रार्थपणे गुण्या निकाचित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिध्या । किन वीतरागे कक्षा जे पदार्थते कहियेक्खे । नामादि क भेदे करीप्ररूपियेक्खे । शुद्धभाव उपदेश करियेक्खे । ते भगवती सूत्रने विपे प्राण्वता कीधा शाखतादिक पदनैव्याख्या आचारागाधिकार कीधोक्खे जिहा



वयवो यथा नायाधर्म्येत्यादि तत्र ज्ञाताधर्म्यकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क्व विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्मविनयकरजिननाथसवधिनि शेषप्रवचनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समग्राणंविणयकरणजिणसासणमि पवरे किभूतानां सयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सैव दुरधिगम्यत्वात् कातरनरन्त्रीभकत्वा द्भभीरत्वाच्च पातालमिवपाताल तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा चेधाते तथा पाठांतरेण सयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दुर्वलाये ते तथा तेधा तत्र धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं मतिर्वुद्धिव्यवसायी ऽनुष्ठानोत्साहइति तथा तपसि नियमोन्नवस्थंकरण तपोनियन्त्रित तपः सच तपउपधानचाऽ

हाणाइ परिआगा सलेहणाउ चत्तपच्चस्काणाइ पावोवगमणाइ देवलोगगमणाइ सुकुलपच्चाया पुणवोहि लान्नी अत्तकिरियानुय अ्याघविज्जांति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे सजमपइस्सापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरन्नगगयणिस्सहयणिसिठाणं घो

ग । प्रव्रज्यादीन्वा । सूत्रनी मेलवो । तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो । पर्याय दीक्षानो काल । सलेखणानी करिवो । भात पाणीनो पचखवो । पादपोपगमन केदीयकोब्बल्लशाखा जिम हालेचाले नही तिम ते यती संयारो कस्सांपक्के हल्लेचाले नही । देवलोकनो जाइवो । उत्तम कुल्ले अवतार । वल्लो वोधिल्लभ धर्मनी प्राप्ति । अत्तकिया ससारना अत्तनो करिवो । एह सर्व वस्सु ज्ञाताविषे कहियेके । जिहा लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषे प्रव्रजित यती नो विनयनो करिवो तिहांलगे । जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषे सयमपालवाभणी कौधी प्रतिज्ञानो पालवो । धृति चित्तनो स्वस्थपणी मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषे उत्साह तेहने विषे दुर्वल कातर हुयाके तेपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज

नियंत्रितं तपएव श्रुतीपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणश्च कातरजनबोभकलात् संग्रामो दुद्धरभरत्ति अमकारणत्वा दुर्धरभरश्च दुर्वहलोहादि भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नकाः पराङ्मुखीभूता स्तथा निसहाणन्ति निसहा नितरामशक्तास्तएव निसहका निसृष्टागा मुक्तागा ये ते तपोनियमतपउ पधानरणदुर्धरभरभग्नकानिः सहकनिसृष्टाः पाठांतरेण निःसहकनिविष्टा स्तोषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसविकारणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवर्त्तय तथा घोरपरपरीषहैः पराजिता स्वासमर्थाः सन्तः प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकतुं रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धाः अतएव सिद्धान्त्यमार्गात् ज्ञानादेर्निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धान्त्यमार्गनिर्गताना पाठातरेण घोरपरीषहपराजिताना तथा सह युगपदेव परीषहैर्विशिष्टगुणैर्गणिमारीहतः प्ररुद्धरुद्धाः अतिरुद्धा सिद्धान्त्यमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धान्त्य मार्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपतः आशावशदोषेणमनोरथ पारतत्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना येते तथा तेषां विषयसुखतुच्छाशुभावशदोषमूर्च्छिताना पाठातरेण विषयसुखेया महेच्छाः कस्यांचिदवस्थायां या चावस्थातरे तुच्छाशा तयो वंशः पारतत्र्य तत्त्वक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषां विषय

## रपरीसहपराजियाणं सहपाररुद्धसिद्धान्त्यमग्ननिगयाणं विसयसुहृतुच्छाशावसदोसमुच्छ्रियाणं विरा

दुर्वह भार रण संग्राम तेषे करो भग्न उपराठा यथाक्छे अत्यर्थं अग्रताक्छे सयम मार्गे याकाक्छे बली घोर रुद्र उपद्रव करो भागाक्छे एहवा असह असमर्थे प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रंध्याक्छे । वली सिद्धान्त्यमार्गं ते मोक्षमार्गं ज्ञान दर्शन चारित्र्यकी नौकल्याक्छे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दोषे करो वमथई तेमूर्च्छित यथाक्छे । विराध्याक्छे दर्शनज्ञानचारित्र्य । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य

सुखमहेच्छातुच्छायावशदीषमूर्च्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा यतिगुणेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा  
 सारवर्जिता प्रलज्जिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा द्ये ते तथेति पदत्रयस्य च कर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान  
 दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतश्चाह ससारं संसृतौ अपारदुःखा अनन्तत्वेना ये दुर्गतिषु नारकतियंस्तु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्र  
 हणानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासां प्रियचा स्ते ससाराऽपारदुःखदुर्गतिभवा विविधपरंपरप्रपचा आख्यायंते इति पूर्ववर्णयोग स्तथा धीरा  
 णां च महासत्त्वानां किमूताना जितपरीषहकषायसैन्य यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिका स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा समयमे उत्साहो वीर्यं निश्चिती ऽव  
 श्यभावो येषां ते समयमोत्साहनिश्चिताः ततः पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽत स्तेषां जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसममोत्साहनिश्चिताना तथा राधिता ज्ञानदर्शन  
 चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशून्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धस्वातीचारविसुक्तो यः सिद्धालयश्च सिद्धिमार्गं स्वस्याभिमुखा येते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधार

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्ययारनिरसारसुन्नयाणं संसारअपारदुस्सकुगइ नवविविहपरंपरापवं

धा धीराणयजियपरीसहकसायसेसधिइधणियसजमउच्छाहनिच्छियाणं अपाराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

छे । एहवा भाव ज्ञाताने विषे कच्चाछे । ससारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनी जे अनेक प्रकारनी परंपरा सतति तेहना विस्तारने वि  
 षे जेधीर महासत्त्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे । तेहना प्रवन्ध ज्ञाताने विषे कहियेछे । वली धृति जे मननी स्वस्थपणी तेहीजके  
 धन जेहने एतले धृतिना स्वामी । तथा समयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना । जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे । जे निःशब्द मिथ्यात्व



य अतस्तेषामाराधितज्ञानदर्शनचारित्र्ययोगिनिःशल्कशुद्धसिद्धालयमार्गाभिमुखानां किमतआह सुरभवने देवतयोत्पादे यानि विमानसौख्यानि तानि सुरभवन विमानसौख्यानि अनुपमानि ज्ञाताधर्मकथास्वाख्यायत इति प्रकार इह च भवनशब्देन भवनपतिभयनानि व्याख्याता न्यविराधितसयमप्रव्रजितप्रस्तावात् तेहि भवनपतियु नोत्पद्यन्तइति तथा भुक्ता चिर भोगान् मनोज्ञशब्दादीन् तथाविधान् दिव्यान् स्वर्गभवान् महार्हान् सहस्रशतान्तिकान् अर्हान् प्रशस्त तथा पूज्यानि तिभावः ततश्च देवलोकात् कालक्रमच्युतानां यथाच पुनर्लब्धसिद्धिमार्गाणां अनुजगता ववासज्ञानादीना मन्तक्रिया मोक्षो भवति तथा ख्यायतइति प्रक्रमः तथा चलितानाञ्च कथञ्चित्कर्मवशत परीषहादा वधीरतया सयमप्रतिज्ञायाः प्रमथाना सहदेवै र्मानुषा सदेवमानुषा स्तोषा सम्बन्धी नि धीरकरणे धीरलोत्पादने यानि कारणानि ज्ञातानि तानि सदेवमानुषधीरकरणकारणानि आख्यायन्तइति प्रक्रमः इयमत्र भावना यथा आर्यापादो देव न धीरीकृतो यथावा भेषकुमारी भगवता शैलकाचार्यो वा पात्यकसाधुना धीरीकृत एव धीरकरणकारणानि तच्चाख्यायन्ते किन्तूतानि तानीत्यह बोधना

स्सप्तसुष्टिसिद्धालयमगमन्निमुहाणं सुरभ्रवणविमाणसुखकाइं अणोवमाइं नुत्तूणचिरंच जीगन्नोगाणि ताणि दिव्याणि महारिहाणि ततीयकालक्लमच्युयाणं जहयपुणो लक्षसिद्धिमग्गाणं अतकिरिया चलियाणयसदेवमा

दर्शनादि रहित अतीचार रहित यको सिद्धिना मार्गने अभिमुख छे तेहने देवताना भवने विषे विमानना अनुपम सुख ज्ञाताने विषे कहियेछे । तेह मनोज्ञ शब्दादिक पचेद्रियना विषय महर्घ्य देवतासंबंधी चिरकाललगे भोगीने कालक्रमे देवलोकाचव्यो तथा वलीपास्येछे सिद्धिनी मार्ग जेणे । एह पूर्वोक्त सहनो अतक्रिया ज्ञाताने विषे कहीछे । कोइक कर्मना वश्यथी जे चल्याछे सयमनी प्रतिज्ञाथी भ्रष्टथया छे देवता सहित समुष्य तत्संबन्धी धीर

नुशासनानि बोधनानि मार्गभट्टस्य मार्गसंस्थानानि अनुशासनानि दुःस्थस्य सुस्थतासम्पादनानि अथवा बोधनसामग्र्येण तत्पूर्वकान्यदनुशासनानि बोधना  
 नुशासनानि तथा गुणदोषदर्शनानि सयमारोधानाया गुणा इतरत्र दोषा भवन्तीत्येव न्दर्शनानि वाक्यान्याख्यायन्त इतियोगः तथा दृष्टान्तान् ज्ञातानि प्रत्य  
 यांश्च बोधिकारणभूतानि वाक्यानि श्रुत्वा लोकमुनयः शुक्रपरिव्राजकादयो यथा वेनप्रकारेण स्थिताः शासने जरामरणनाशनकरे जिनानासखन्विनीति  
 भावः तथाख्यायन्तइतियोगः तथा आराहितसजमत्ति एतएव लौकिकमुनयः सयमस्यालिताश्च जिनप्रवचनम्प्रपन्नाः पुनः परिपालितसयमाश्च सुरलोक  
 इत्वा चैते सुरलोकप्रतिनिवृत्ता उपयन्ति यथा शाश्वत सदाभाविन शिवमवाधक सर्वदुःखमोक्ष निर्वाणमित्यर्थः एतेचोक्तलक्षणाः अन्येच एवमादय आदि

पुंसधीरकरणकारणाणि बोधणञ्जुणसासणाणि गुणदोषदरिसणाणि दिष्ठते पञ्चयसोऽज्जलोगमुणिणो जह  
 ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे ज्याराहिञ्चसजमाय सुरलोगपद्दनियत्ता उवेत्ति जहसासयं सिवं सच्चदु

करिवाने अर्थे जकारण उदाहरण ज्ञातानेविषे कत्थाहे । जिम सेवकुमारने हाथीना उदाहरणधो धिरकीधो तथा बोधन जे मार्गयकी भट्ट तेहने माग  
 थापिबो तथा शिञ्चा देवो । गुणवली दोषनी देखाडवो । तथा प्रतिबोधना कारणभूत दृष्टार्त सुणीने लोकमुनी शुक्रपरिव्राजकादिक जेणे प्रकारे जरा  
 मरणनो नाश करणहार एहवा जिन शासन ने विषे रक्षा । तेज्ञाताने विषे कत्थाहे । आराध्योक्ते सयम जेणे एहवा एहीज लोकमुनी देवलोक पाप्मा  
 वली देवलोक थो उपराठा भावे बली धर्म आराधीने जिम शाश्वत सदाभावि वाधारहित सर्वदुःखमोक्ष एतले निर्वाण । इत्यादिक पूर्वे कत्थाते अथवा

शब्दस्य प्रकारार्थत्वा देवप्रकारार्थाः पदार्थाः वित्यरेण्यति विस्तरेण चशब्दात्कचित् सद्येपेण आख्यायन्त इति क्रियायोगः नायाधम्मकहासुणमित्यादि कथ्यमानिगमना नवर मेक्खणीसमज्जयणत्ति प्रथमश्रुतस्सन्ने एकोनविंशतिद्वितीयेच दशेति द्रशधम्मकहाणवगा इत्यादौ भावनेय मिहेकीनविंशतिज्जा च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्तत्तत्तार्थाधिकारसमूहमात्मकान्यध्ययमान्येव दशवर्गाद्रष्टव्या स्तच्चज्ञातत्वादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव जनेष्व्यायिकादिस

स्वमोख एए अस्सेय एवमाइत्यवित्यरेण्य पायाधम्मकहासुणं परिहावायणा संखेज्जा अणुउगदाराजावस

खेज्जाउ सगहणीउ सण अंगठयाए ठठे अण्णेदोसुअस्सकधा एगूणतीस अज्जयणा ते समासउ दुविहा पस्सत्ता

अन्यमौ विस्तार यो तथा सद्येप यौ ज्ञातानि विषे कल्याहे । ज्ञातानि विषे सख्यातौ वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप । सख्याता अनुयोगहार उपक्रमदिक । या वत् सख्यातो सग्रहणो लगे जाणिवो सूत्र थोडो अर्थ धणो ते गग्रहणी । तेह अगार्थ पणे । एम छेठु अणे बे श्रुतस्सकध पहिले श्रुतस्सकधे उगणीस अध्ययन ते १८ ज्ञाताध्ययन सद्येपयौ बे प्रकारे कल्या । ते कहिहे । केइक अध्ययन मेव गुमारादिक चरित्ररूप । कइक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मीडके बा तकीधी । इत्यादिक । नौजे श्रुतस्सकधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहा एकेकीये धर्मकथारणे अधिकारना समूहा मकअध्ययन ते मांहि ज्ञातानेति पहिला दश वर्ग ज्ञात । उदाहरण रूपतेहने त्रिवि आख्यायिकादिकनी सभवगथी शेष ८ ज्ञातानि विषे एकेक ज्ञातामांहि पैतालीस २ अधिक आख्यायिकना सैकडा

॥  
 भवः श्रेष्ठाणि नवज्ञातानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चवत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्या माख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशता  
 नि तत्राप्येकैकस्यामुपाख्यायिकाया पचपचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि सपिण्डितानि किसञ्जात इगवीसकोडिसय लक्खापन्नासमेवबोधव्या  
 २१५०००००० एवंतिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्न्यारो ॥ १ ॥ तद्यथा दशधम्मकहाणवग्गा तथणएगमेगाएधम्मकहाण पचपचअक्खाइयासयाइ एगमेगाए  
 अक्खाइयाएपचपचउवक्खाइयासयाइ एगमेगाएउवक्खाइयाएपचपचअक्खाइउवक्खाइसयाइति एवमेतानि सप्पिण्डितानि किसञ्जात पणवीसकोडिसय २५००  
 ०००० एत्थयसमलक्खणाइयाजन्हा नवनाग्रयसवद्धा अक्खाइयमाइयातेण ॥ १ ॥ तेसाहिज्जतिफुड इमाउरासौउवेगलाणतु पुणरुत्तवज्जियाण पमाणमेण

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अस्काइयासराइ

एगमेगाए अस्काइयाए पच पच उवस्काइयासयाइ एगमेगाए उवस्काइयाए पंच पंच अस्काइअउवस्काइ

काहिदा । तिहा एकैक आख्यायिकेनेविषे पाच पांच सो उपाख्यायिके छे । तिहा वली एकैक उपाख्यायिकेनेविषे पांचपाच आख्यायिके उपाख्खायिकाना  
 से णडाछे । तिहां आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां । इगवीसकोडिसय लक्खापन्नासमेवबोधव्या । २१५००००००  
 एव उिए समाणे अहिगयसुत्तस्सपत्न्यारो ॥ १ ॥ तद्यथा । दन धम्मकहाणवग्गा तथणएगमेगाएधम्मकहाण पच पच अक्खाइयासयाइ एगमेगाएअक्खाइया  
 ए पच पंच उवक्खाइयासयाइ एगमेगाए उवक्खाइअए पच पंच अक्खाइउवक्खाइयासयाइति । एसअएकठाकौधा तिवारे २५००००००० पचवीस कोट थई  
 ते सांहिथी पाक्खली आंक एकवीम किरोड पचास लाख पुनरुत्तपणामाटे बाहिर काडिये तो सठि ३ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेंछे । एव मेव सपूर्वी

विशिष्टः ॥ २ ॥ सोऽधितैवैस्मिन् सति अर्द्धचतुर्थीएव कथानककोट्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेवसपुष्पावरेणति भणितप्रकारेण गुणनशीधनेकृते सतीत्युक्तं भवति अष्टाश्रो अक्खाइयाकोडीश्रोभवतीति मक्खाश्रोति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेवत्संख्याभवतीतिकृत्वा आख्याता भगवतामहावैरिणेति तथा सख्यातानि पदसयसहस्राणीति किल पञ्चलब्धाणि षट्सप्ततिश्चसहस्राणि पदाग्रेण अथवा सूत्रलापकपदाग्रेण सख्यातान्येवपदशतसहस्राणि भवन्तीत्येवं सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकितमित्यादि अथ का स्ता उपासकदशा उपासकाः स्नातक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

असयाइं एवामेवसपुष्पावरेणं अष्टुठानं अक्काइयकोठीनं भवंतीति मक्कायाउं एगुणतीसं उद्देसणकाला एगुणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पयसत्ता तंजहा संखेज्जाअक्करा जावचरणक्कर णपरूवणया अघविज्जाति सेत्त णायाधम्मकहानु ॥ ६ ॥ सेकितंउवासगदसाउं उवासगदसासुणं

पर तेषे प्रकारे पहिलो गुणाकार करिये । पछे पाकला आंके आगलीआंक सोधिये तिवारे साटे ३ कोटिकथानी धाय । तेभगवान महाबीर स्वामीये क ही । ज्ञाताने त्रिषे उगुणत्रोस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कह्या । उगुणत्रोस समुद्देशनकाल । सख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणे कह्या । ते कहिछे । वलौ सख्याता अचर यावत् शब्देकरी सख्याता वेढा सख्याता श्लोक ज्ञाताने विषे चरण अमणधर्म करण पिंडविशुद्धादि कानी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा कही अग ॥ ६ ॥ सूतेउपासक दशांग । उपासक आवकनी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनछे

ध्यनोपलब्धिता उपासकदशा स्थाप्ताह उपासकदमासुण उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अस्मापितरौ समवसरणानि  
 धर्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधीपवासप्रतिपादनतास्तत्र शीलव्रताच्यशुत्र  
 तानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तन्नीपवसनमाहारशरीरसत्कारादि  
 त्यागः पौषधीपवासः ततोद्वन्द्वेसत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रहस्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाओत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः  
 कायोत्सर्गावा उपसर्गादेवादिकृतोपद्रवाः सलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपीपगमनानि देवलीकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्वीधिलाभोऽन्तक्रिया

उवासयाणं नगराण्डं उज्जाणाण्डं चेइञ्चुण्डं वणखंठा रायाणो अस्मापियरो समोसरणाण्डं धम्मायरिया धम्म  
 कहाने इहलोइयपरलोइयइहिविसेसा उवासयाणं सीलवृयवेरमणगुणपञ्चस्काणपोसहोववासपठिवज्जि  
 याने सुयपरिगहा तवीवहाणाण्डं पठिमाने उवसग्गा संलेहणाने जत्तपञ्चस्काणाण्डं पावोवगमणाण्डं देवलोग

ते उपासक दशा कहिये । तेहने विषे आवकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम वनखडनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम  
 धर्मकथा इहलौक परलौक सबधी ऋट्ठधि विशेष । आवकना शील शुभाचार व्रत १२ अशुव्रत रेगादिकनी विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवका  
 रसौ प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिवो ते पौषधीपवासनी प्रतिपादवो कहिवो । अतनो सांभलिवो । तथा बरि भेदे तपनी करिवो ।  
 प्रतिमा ११ आवकनी उपसर्ग देवताना कीधा । सलेखणा तपे करी आत्मानि कथाय दुर्बल करिवो । भातपाणीनी पचखवो । संघारो । देवलीके जाइवो

शाखयायस्ते पूर्वोक्तमेव अतो विशेषत आह उवासगेत्यादि तत्र ऋषिविशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता  
 पितृपुत्रादिकाऽन्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्मश्रवणानि महावीर्यसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्तस्य विशुद्ध  
 ता स्थिरत्वं सम्यक्तशुद्धिरेव मूलगूणोत्तरगुणा अणुवतादयः अतिचारा स्तेषामेव वधबन्धादितः खण्डनानि स्थितिविशेषा चीपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः  
 बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिगृह्यहणानि तेषामेवच पालनानि निरूपसर्गसौपसर्गाभावशेत्यर्थः तेषां

गमणां सुकुलपञ्चाया पुणोबोहिलान्नो ज्ञतकिरियान् ज्ञाघविज्जाति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसे  
 सा परिसावित्यरधम्मसवणाणि बोहिलान्न ज्ञन्निगमणे सम्मत्तविसुद्धया धिरत्त मूलगुणउत्तरगुणाइयारा  
 ठिईविसेसा बज्जाविसेसा पठिमानिगहगहणउवसग्गाहियासणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलस्रयगुणधैर

अने बलीसुक्खे उपजवी । बली बोधनी प्राप्ति । अतक्रिया करिबो । एहसर्वं उपासक दशामाहि कहियेछे । उपासक दशाने विषे आवकनी ऋद्धिविशेष  
 अनेक धन कोटि सख्या विशेष । परिषदा परिवारनी विस्तार । भगवत महाबीरने पासे धर्मनी सांभलिबो । धर्मनी प्राप्ति । धर्मनी आदरिबो । सम्यक्ता  
 नी विशुद्धता निर्मलता । धर्मने विषे स्थिरपणी । मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार बध बंधादिक । स्थिति विशेष । आवकपणांना कालनी मर्यादा । सम्य  
 ग्दर्शन प्रतिमा अभिगृहनी बहु विशेष कहिये बहुत भेदनी ग्रहिबो पालयो उपसर्गनी सहिबो । तथा निरूपसर्ग उपसर्ग त्रिमापणि चित्र त्रिवित्र अने

सिच विचित्राणि शीलव्रतादयो जनन्तरोक्तरूपा अप्रतिमाः पयालालभाषिण्यः प्रकारस्त्वमङ्गनपरिहारार्थः मरणरूपे यन्ते भया मारगान्तिक्यः आसगरीर  
स्य जीवस्यच सलेखनाः तपसा रोगादिजयेनच कर्मयोगाणि आत्मन सलेखना. तत पटत्रयस्य कर्मधारय स्तामा ज्ञोसगति जोषणा. सेवना करणा  
नौत्यर्थ ताभिरपविममारणान्तिकात्मसलेखनाजोषणाभि राजान यथाच भाषयित्वा यज्ञनिभक्तानि अनयनतया च निर्भोजनतया च्छेदयित्वा व्यञ्ज्येश उ  
पपन्ना नृत्वेतिगम्यते केपु कल्पवरेपु यानि विमानोत्तमानि तेषु ययानुभवन्ति मरुवरविमानानि यरपुङ्गेजाणीव वरपुङ्गडरीकाणि यानि तेषु कानि सौत्या  
न्यनुपमानि क्रमेण भुञ्जोत्तमानि ततः आयुष्कक्षयेण क्षुताः सन्ती यया जिनमते योनि लब्धा इतिपिगेष यथाच मयमोत्तम आधार सयम तमोरजप्रोष

मण पद्मस्काणपोसहोववासा अपृच्छिममारणतियाय संलेहणा ऽसंगाहिं शुष्याणं जहय ज्ञावड्हा वङ्गुणि  
जत्ताणि शुणसणाए च्छेद्यइत्ता उववसा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह शुणजवति सुरवरविमाणवरपोङ्गरीएपु  
सोस्काइ शुणोवमाइं कमेण जुत्तण उत्तमाइं तनु शुआस्काएचुश्यासमाणा जहजिणमयस्मि वोहिलशूणय रां

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पौषदापवास छेहले काले मरगातिक सलेखना मरणरूप अ  
तकाले होय एहवी सलेखना आत्माने कर्मथी हलुको करिवी । तेहनो जोषणी तेहनो मेविवीरेणे आपणा आत्मानि भाषिये जिमवणे प्रकारे अनसने  
करी कर्मछेदीने उपनोछि प्रधान उत्तम देवलीक ने विषे सुख अनुभवछे । देवता समधी प्रधान विमान प्रधान पुङ्गरीक कमलनीपरे उत्तम तेहने यिये  
कहान जाय एहवा अनुपम सुखप्रते क्रमे अनुक्रमे भोगवीने देवलीक यको आयुजयथी चञ्चाथको जिम जिन मतने विषे योवि योजिनधर्मनो प्राणि



विप्रमुक्ता अज्ञानकर्म्मप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अक्षय अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोक्षं कर्म्मक्षयमित्यर्थः तथोपासकदशास्वाद्यायन्त इतिप्रक्रमः एतेचान्ये  
चेत्यादि प्राग्वत्त्वं सखेज्जाइ पयसहस्माइ पयगेणति किलैकादशलचाणि द्विपञ्चाशच्चसहस्राणि पदानामिति ॥ ७ ॥ सेकितमित्यादि अथ

जमुत्तमं तमरयोधविष्पमुक्ता वेति जहञ्चक्रयसहस्रदुःखमोखं एते अन्वय एवमाइ उवासयदसासुणं परिता  
वायणा संखेज्जाञ्चणुनगदारा जाव सखेज्जानु सगहणीनु सेणं अंगठयाए सत्तमे अंगे एगेसुयस्कंधे दसअ  
ज्जयणा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला सखेज्जाइ पयसयसहरसाइ पयगेणं प० सखेज्जाइ अकरा  
इं जाव एवं चरण करणपरूवणा अघविज्जांति सेत उवासगदसाने ॥ ७ ॥ सेकितं अंगे

होय बली उत्तम समयम आराधीने अज्ञानरूप अधकार तल्लक्षण राजा तेहथी मंकाणा जिम अक्षय अपुनरावृत्तिक सर्वदुःखक्षय लक्षण मोक्षपावे ।  
इत्यादिक पूर्वोक्त तथा अनिरापिण पदार्थ उपासक दशाने विषे कहियेके । परिता सख्याता अनुयोगद्वार । यावत् सख्याती  
सग्रहणी लगे जाणिवी । तेह अगार्थपणे सातमी अंग तेहने विषे १ अतस्स अानन्दादिक १० आवकना १० अध्ययन । दश उद्देशनकाल बली १० स  
मुद्देशन काल । सख्याता पदना सहस्र पदाग्रे पद परिमाणे कक्षा । सख्याता अक्षर इहांथी चरण साधुव्रत करणपिड विशुद्ध्यादिक इहांतक पूर्वी  
क्त पाठ कहिवी । ते उपासक दशा मांदि कहिये ते उपासकदशा सातमी अंग ॥ ७ ॥ स्यूते अंतगडदशा ससारनी अत कहिये नाश की

का स्ता अन्तर्कृद्गः तत्रान्तोविनाशः सच कार्येण स्वात्फलास्यवा संसारस्य कृतो यैस्ते अन्तकृता स्तेच तीर्णकरादय स्तेषां दयाः प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्सखयया अन्तकृतदया स्थायाचाह अतगडदसासुणमित्यादि करण्य नवर नगरादीनि चतुर्दशपदानिपछाङ्गयर्णकाभिहितान्येव तथा पडिमाओत्ति द्वादश गिचुप्रतिमा मासिकादयो बहुविधाः तथा चामा सार्दवं आर्जवच शौचच सत्यसहिततत्रशौचम्परद्रव्यापहारमालिन्याभावलक्षण सप्तदशभिधश्च सयम उत्तमश्च ब्रह्ममैथुनविरतिरूप आकिंचिण्यति स्थागमोक्त दान समितयो गुप्तयदैव तथा अप्रमादयोगः स्वाध्यायध्यानयोश्च उक्त

रुदसान् अंतगदसासुणं अंतगगणं णगरां उज्जाणचेइयवणरायाअुम्मापियसमोसरणधम्माधम्मकहा इह लोइअपरलोइअ इहिविसेसा जोगपरिच्चाया पब्बज्जानु सुयपरिग्गहा तवोवहाणां पफिमालु वज्जविहानु खमाअुज्जवं मद्दवचसोअुच सच्चसहियं सत्तरसविहीयसंजमो उत्तमंचवंज अुकिंचिणया तवो किरियालु समि

धो जेणे ते अतक्कत् तेहनौ दया जे सख्या जिम पहिले वर्गे दश अध्ययन इत्यादिक ते अतक्कदशा अतक्कदशाने विधे संसार अंतकारी जीवना नगर उद्यान चैत्य वनखड राजा माता पिता समीसरण धर्माचार्य धर्मकथा कहियेके । इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष भोग भोगीने पछे प्रज्ज्यादी चा लीधी । श्रुतनी भणिवी तपनी करिवी १२ भिक्षुप्रतिमा अनेक प्रकारे । क्षमा क्रोधनीजोतवो । आर्जव मायानो छाडिवो । मार्दव माननी त्याग । शौच कर्ममलनीछाडिवी । सत्यकरी सहित । सतरह भेदे सजम जाणिवो । उत्तम ब्रह्मचर्यनी पालवो मैथुननी अभाव । आकिंचनता निद्रव्यपणी । तप

मयो ईयोरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्जाएणपसत्यज्जाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्याणमेगवत्युमित्यादि व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोगः तथा प्राप्तानाञ्च सयमोत्तम सर्वविरति जितपरीषहाणा चतुर्विधकर्मचक्रा घातिचयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादेर्लोभं पर्यायः प्रव्रज्यायाः लक्षणो यावाञ्च यावद्वर्षादिप्रमाणी यथा येनतपोविशेषाश्रयणादिना प्रकारेण पाहिती मुनिभिः पादपीपगमनश्च पादपीपगमाभिधानमनश्चन प्रतिपत्नो योमुनि र्गत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावन्तिच भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा अनशनाहि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो जातइतिशेषः तमोरजश्रीधविप्रमुक्तएवच सर्वेपि क्षेत्रकालादिविशेषिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरश्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्ये चेत्यादि

इगुत्ताउ चेव तहअप्पमायजोगो सज्जायज्जाणेणयउत्तमाण दोरहंपि लखणणइं पत्ताणयसंजमुत्तमं जियपरी सहाण चउड्विहकम्मखयम्मि जहकेवलस्सलंभो परियाउ जत्तिउयजहपालिउ मुणीहिपावोवगनुय जहिज त्तियाणिभत्ताणि लेउइत्ता अतगगोमुनिवरो तमरयोधविमुक्को मोखसुहमणंतरंचपत्ता एण अन्नेय एव

१२ भेदे । क्रिया अशुठान । समितिगुप्ति । तिमज अप्रमादना योग । स्वाध्याय सिद्धघातनू भणवो । ध्यान धर्म ध्यानादि सुहृत्तं लगे चित्तनू एनाप्रपणोते स्वाध्यायध्यान । उत्तम एह बिहुनालक्षण अतगउदशा माहि कहिये छे । सयनअते जेह पास्या जेणे परोधह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञाना १२णीय १ दश नावरणीय २ मोहनूय ३ अतराय ४ एहनीनाशकरं जिम केवल ज्ञाननो लाभहाय प्राप्तिहीय । पर्याय ते दीजानीकाल जेणे शुनीश्वरे जेतला जेतला वर्ष प्रमाणे सयम पाल्यो होय । पादपीप गमन अनशनादिक जेह जेणे प्रकारे जेतलाभात पाणी छेदीने अतकत् ससारना अतकारक मुनिवर तम

प्राग्वत् नवरं दश अक्षयणति प्रथमवर्गापिचयैव घटन्ते नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चैदप्युच्यते सत्त्ववर्गति तत्राथमवर्गादयवर्गापिचया यतोऽत्र सव्यष्टव  
र्गानयामपि तथापठितला तदुवृत्तिचयं अष्टवर्गति अत्रवर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्ययनानां वा सर्वाणिचैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततीभणित अष्ट  
उद्देसणकाला इत्यादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तानिच किल त्रयो  
विंशति लैचाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकितमित्यादि नास्मादुत्तरोविद्यते इत्यनुत्तर उपपत्तनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधानः

माइत्यवित्यरेणं परूवेईं अंतगऊदसासुणं परितावायणा संखेजाअणुनगदारा जावसखेज्जानसंगहणीनु  
सेणअणुगठयाएअणुठमेअणुगेणुसुयखंथे दसअणुज्जयणा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला असंखे  
ज्जाइं पयसहस्साइपयगेणं पसहे संखेजाअणुकरा जावएवंचरणकरणपरूवजया अणुअविजांति सेतं अंतग

अधवार अज्ञानरूप रजथौ मूकाणो अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखप्रते पास्यो । एह पूर्व कक्षाति तथा अनैरापणि पदार्थ इहां अंतगडदया गांहि कहिये  
के । प्ररूपियेके । सख्याता वाचना । सख्याता अनुयीगहार । जिहांलगे सख्यातो सग्रहणी होय तिहालगे जाणिवी । अगार्थपणे आठमै अगे एक सुतस्सा  
ध दश अध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेक्षायि बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह । दश उद्देशकाल दश समुद्देशन काल । सख्याता पदना सत सहस्र  
एतले २२ लाख ४ हजार पद परिमाणे कहा । सख्याता अक्षर इहां धौमांडी चरण साधुव्रत चरण पिड विशुद्ध्यादिक लगे पूर्वनी परे पाठ कहि  
वो । इत्यादिक पदार्थ जिहा कहिये ते अतकदया ८ मी चग ॥ ८ ॥ स्यूते अणुत्तरोक्ताइं नथी उत्तर कहिये प्रागलि जेय जेहेने, तेहना

सप्तरे अत्यम्य तथाविधस्या भानादुपपातो येषां ते तथा तएवानुत्तरोपपातिकाः तद्वत्त्व्यताप्रतिबद्धा दशाध्ययनोपलजिता अनुत्तरोपपातिकदशा स्तथा  
चाह अणुत्तरोववाइयदसासुणमित्यादि तवानुत्तरोपपातिकानामिति साधूना नगरादीनि द्वाविंशतिः पदानि ज्ञाताधर्मकथावर्णकोक्तानि यथातथा एतेषा  
मेवच प्रपञ्च रचयन्नाह अणुत्तरोपपातिकदशाम् तीर्थकरसमवसरणानि किंभूतानि परममङ्गलानि गदितानि जिनातिशेषाच्च बहुविशेषाच्च देहविमलसुयधमि

ऊदसानु ॥ ८ ॥ सेकित अणुत्तरोववाइयदसानु अणुत्तरोववाइयदसानु अणुत्तरोववाइयदसानु न  
गरां उज्जाणां चैड्यां वणखर्रा रायाणो अग्गापियरो समोसरणां धम्मायरिया धम्मकहाणु इहलोग  
परलोअइहिबिसेसा जोगपरिच्चाया पव्वज्जाणु सुयपरिग्गहा तवोव्वहाणाइ परियागो पळ्ळिमाणु रालेहणाणु अ  
त्तपाणपच्चस्काणां पाणवगमणां अणुत्तरोववाणु सुकुलपच्चायापुणोवोहिलाहोअंतकिरियाणु अणुत्तरोववा  
ति अणुत्तरोववाइयदसानु तिल्यकरसमोसरणां परममगल्लजगहियाणि जिणातिसेसाप्रवज्जविसेसा जिण

दय मध्ययन प्रतिबद्ध दशति अनुत्तरोपपातिक दशा । तेहने विषे अनुत्तर विमाने ऊपना जे साधु तेहना नगर उद्यान चैत्य यज्ञायतन बबखड राजा  
माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष भोगनो परित्याग दीक्षा श्रुतनो भगिनी । तप १२ भेद उपधान  
बली भिचुप्रतिमा सलेखना तेकिसी भातपाणीना पञ्चक्खण पादपीप गमन अनुत्तर विमाने ऊपनो बली सुकुल ने विषे अवतारिवो । बली बोधिलाभ  
जिन धर्मनो प्राप्ति । अतक्रिया एतली वसु एहने विषे कहिये छे । बली तीर्थकरना समोसरण ते समोसरण केहवी छे । परम मगलीकपणें जगतने हित

त्यादय क्षुत्स्विग्रहधिकतरावा तथा जिनशिथ्याणांचैव गणधरादीनां किंभूताना मताग्राह्य अमणगणप्रवरगन्धहस्तिनां अमणोत्तमाभामित्यर्थः तथास्थिर  
 यशसां तथा परीषहसैन्यमेवपरीषहहृन्दमेव रिपुबल म्परचक्रं तत्प्रमर्दनानां तथा देववद्वावाग्निरिव दीप्तान्युज्वलानि पाठान्तरेण तपोदीप्तानि यानि चा  
 रिचज्ञानसम्यक्तानि तैः साराः सफलाः विविधप्रकारविस्तारा अनेकविधप्रपञ्चाः प्रशस्ताश्च ये क्षमादयोगुणा स्तैः सयुतानां कचिदुणध्वजाना भित्तिपाठः  
 तथा अनगाराश्च ते महर्षयश्चैत्यनगारमहर्षय स्त्रेष्ठा मनगारगुणानां वर्णकः स्त्राघा आख्यायत इतियोगः पुनः किंभूतानां जिनशिथ्याणा सुत्तमाश्च ते ज्ञ्या  
 न्नादिनिर्वरतपसश्च तेच ते विशिष्टज्ञानयोगयुक्ताश्चैत्यत स्त्रेष्ठा सुत्तमवरतपोविशिष्टज्ञानयोगयुक्तानां किंचापरं यथा च जगद्धित भगवत इत्यन जिनस्यशा  
 सनभित्तिगम्यते यादृशाश्च ऋद्धिविशेषा देवासुरमानुषाणा रत्नोज्ज्वलक्षयोजनमानविमानरचनं सामानिकाद्यनेकदेवदेवीकोटिसमवायनं मणिमुक्खमण्डि

**सीसाणंचेव समणगणपवरगंधहर्ष्याणं थिरजसाणं परिसहसेस्सरिउवलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्तणाणसम्म  
 त्तसारविविहप्यगारपसत्थगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाणवस्सु उत्तमवरतवविसिठणा**

कारी छे । जिनना अतिशय देहविमलसुगन्ध इत्यादिक चउत्तीस के जिनेंद्र ना शिथ्य गणधरादिक ते केहवा छे अमण समूह मांहि प्रधान कर गन्ध  
 हाथी ने समानछे । ते थिर जस निश्चलयशछे । परीषह सेनारूप शत्रुनी सेनाने प्रमर्दकछे, तपे करीदीप्त तेजवत जे चारित्र ज्ञान सम्यक्त तेणे  
 करी सार सफल विविध अनेक प्रकार भलाजे गुणवंत लक्षण छे ध्वजा जेहने तेहनी । अनगा एहवाजे महर्षिते अनगारमहर्षि तेहना एहवा जे  
 अनगार तेहना गुण तेहनी वर्णक स्त्राघा नीमे अंगे कहिये । वस्ती केहवाछे । जात्यादिके करी । त्तम प्रधान तपनाधर्णी विशिष्ट ज्ञान योगे करी यु

तदखण्डपटु प्रचलत्पताकिकाशतोपशीभित्तमहाध्वजपुरः प्रवर्त्तिनं विविधातोयनादगगनाभीगपूरणं चैधमादिलक्षणाः प्रतिकल्पितगन्धसिन्धुरस्त्रान्ध्यारोहणं च  
तुरङ्गसैन्यपरिवारणं छत्रचामरमहाध्वजादिमहाराजचिह्नप्रकाशनं चैवमादयश्च सम्प्रद्विशेषाः समवस्तरणगमनप्रवृत्तानां वैमानिकज्योतिष्काणां भवनपति-  
व्यन्तराणां राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूनां ऋषिविशेषां देवादिसम्बन्धिनां स्तादृशा आख्यायन्त इतिक्रियायोगः तथा पर्षदां सञ्जय  
वैमानिल्यौ सजदपुल्वेणपविमिश्रीवीर मिल्यादिनो तत्स्वरूपाणां आदुर्भावाश्च आगमनानि कर्त्तुं जिनवरसमीयन्ति जिनसमीपे यथाच येनप्रकारेण पञ्चविधां  
भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवर तथाख्यायतइतियोगः यथाच परिकथयति धर्म्यं लोकगुरु रिति जिनवरो ऽमरनरासुरगणानां श्रुत्वा च  
तस्येति जिनवरस्य भाषितं अवशेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्म्मणि येषाते तथा तेचते विषयविरक्तास्तेति अवशेषवर्म्माविषयविरक्ताः के नरा. किं यथा अभ्युपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहिंयं नगवन्तु जारिसाइहिविसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाणं पाउप्पानुयं ऋणस  
मीव जहयउवासंतिजिणवरं जहयपरिकहतिधम्मलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊणयतस्सन्नासियं अण्व  
सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अणुवेति धम्ममुरालं सजमं तववाविअज्जविहप्पगार जहबह्त्तणिवासा

तच्छे जेम जगतने विदे जिन शाशन हितकारी छे । जेहवा च्छदिना विशेष छे । देव वैमानिक असुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनी परीष  
दा नो प्रादुर्भाव आविबो उपासयति पचविध अभिगम ने करी सेवा करवी । जिनने समीपे सेवा करे । जिनवर लोक गुरू जिम देवता नर सुरगण  
नेधर्म कथा प्रते कहे । तेह जिनवरनी भाषित सांभलीने । क्षीण प्रायक्के कर्म जेहना । वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम धर्मि उदार

न्ति धर्ममुदारं किंस्वरूपं मतआह संयमं न्तपश्चापि किंभूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बह्वनि वर्षाणि अणुचरियन्ति अणुचर्यश्चासेव्य संयमं न्तपश्चे  
 तिवर्त्तते तत आराधितज्ञानदर्शनचारित्र्ययोगां स्तथा जिणवयणमणुगयमहिंय भासियन्ति जिणवचनं माचारादिअनुगतं सख्खं नार्हवितर्हमित्यर्थः महित  
 म्भूजितमधिकं म्वा भाषितं यै रध्यापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिणवचनमनुगत्यानुकूल्येन सुष्टुभाषितं यै स्ते जिणवचनानुगतिसुभाषिताः तथा जिणवरा  
 णहिंयणमणुखेतत्ति इतिषष्ठौद्वितीयार्थे तेन जिणवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत्र यावन्तिच भक्तानि च्छेदयित्वा लब्धाच स  
 मावि सुत्तम ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना सुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तरं तस्यन्ति अनुत्तरविमानेषु विषय  
 सुखं तथाख्यायन्ते तत्तोयन्ति अनुत्तरविमानेभ्यश्च्युताः क्रमेण कारिथगिति सयता यथाचान्तः क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशान्तिप्रकृतज्ञे

णि अणुचरित्ता अणाराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहिंय आसित्ता जिणवराण हिंयथेण  
 मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि मत्ताणि छेअइत्ता लठ्ठणयसमाहिंमत्तमज्जाणजोगजुत्ता उववन्ता मणिवरोत्त  
 मा जहअणुत्तरेसुपावन्ति जह अणुत्तरं तत्थाविशयसोख्कं तत्तयच्चुअक्रमेण काहिंसजया जहायअुत्तकिरियं  
 प्रधानं संयमं तपं घणे प्रकारि सर्वं विरतिरूपं । जिमं घणा वर्षं लगे अणुचरीं सेवीने आ ध्याच्छे ज्ञानं दर्शनं चारित्र्ययोगं जेणे जिमं वचनं आचा  
 रांगादिने अनुगतसमिलितं महितं पूजितं भाषितं जेणे । जिमं वरने हृदये करी मनेकरी आनीयध्याईने । जेह जिहं जेतला भातं छेदीने समा  
 धि पामीने उत्तमं ध्यानयुक्तं धकी जपना सुनिवरं अनुत्तरं विमानने विषे जिमं प्रधानं विषयं सुखभोगीने चध्या अनुत्तरं विमानयी अनुक्रमे कारि



तत्राहुः प्रश्नादिका मन्त्रविद्याः प्रश्नाः पुनर्विनाजप्यमाना अपृष्टाएव शुभाशुभं कथयन्ति एताः अप्रश्नाः तथाहुः प्रश्नादिप्रश्नभावं तदभाव च प्रतीत्या या विद्या शुभाशुभं कथयन्ति ताः प्रश्नाप्रश्ना विज्जाइसयत्ति तथा अन्ये विद्यातिशयाः स्वस्वस्वीभवीकरणविद्वेषीकरणोच्चाटनादयः नागसुपण्णसह भवन पतिविशेषै रुपलज्जणत्वा द्यच्चार्त्तिभिश्च सह साधकस्ये तिगम्यते दिव्यास्वात्किनाः सम्वादाः शुभाशुभगताः सलापाः आख्यायन्ते एतदेव प्रायः प्रपञ्चयाह परहावागरणदसेत्यादि स्वसमयपरसमयप्रज्ञापका ये प्रत्येकबुद्धा स्तः करकगङ्गादिसदृशैर्विविधार्थायकाभाषा गभीरेत्यर्थं स्वयाभाषिता गदिताः स्वसमयपरसमयप्रज्ञापकप्रत्येकबुद्धविविधार्थभाषाभाषिता स्वासां किमादर्शाहुः प्रश्नादीनां सम्बन्धिनीनां मन्त्रानाम्बिपिधगुणमहार्थाः प्रज्ञाकारणदशास्त्राव्यन्त

पसिणसय अणुत्तरं अपसिणसयं अणुत्तरं पसिणापसिणसय विज्जाइसया नागसुवन्तोहिं सद्धिदिद्धासंज्ञया व्याघविज्जाति परहावागरणदसासुणं ससमय परसमय पसवय पत्तेअबुद्ध विविहत्थज्जासाभासियाणं अइस यगुण उवसमणाणप्यगार आयरियज्जासियाणं वित्थरेण वीरमहेसीहिं विविह वित्थार ज्ञासियाणंच जगहि आदिक मन्त्र विद्यानां पाठात्तरे अणुष्ठादिक प्रश्न अठोतरसी तथा विधिपूर्वक जे विद्या ज्ञापिकी अट्ट थई शुभाशुभ प्रश्न कहते प्रप्रश्नाविद्याः तेह ना सैकडा तथा अनिरापणि विद्यानां अतिशय थभनी वशीकरणी उच्चाटनी इत्यादिक । नार्त्तसुपण्ण भवनपति विशेषने साथे दिव्यते तात्विक सवाद शुभाशुभ संलापक प्रश्न व्याकरण दर्शने विधे कहियेछे । प्रश्न व्याकरण दर्शने विधे स्वसमय जिनमत परसमय परसताना प्रज्ञापक कथक जे प्रत्येक बुद्ध करकहुआदिक निबिधार्थ अनेक प्रकारना अर्थ छे जेहना एहवी भाषायें कज्जा । अट्ट अणुष्ठादिक सबधी भाषाना विविध गुण कहिये । ते

इति योगः पुनः किम्भूतानां अद्वयगुणउपसमनाण्यगार आवरियभासियाणंति अतिशयाद्यामर्षो<sup>१</sup> ध्यादयो गुणश्च ज्ञानादय उपसमश्च स्वरभेद एतेना  
नाप्रकारा येषांते तथा तेच ते आचार्याश्च ते भाविता या स्ता तथा तासा कथ भाषिताना भित्था<sup>२</sup> ह वित्थरेणति विस्तरण महावचनसन्दर्भेण तथा स्थिरम  
हर्षिभिः पाठाग्तरे वीरमहर्षिभिः विविहवित्थारभाषियाणचति यिविधविस्तरण भाषिताना<sup>३</sup> वकारस्वृतीयप्रणायकभेदसमुच्चयार्थः पुनः कथम्भूताना अ  
ज्ञानां जगहियाण जगद्धिताना स्मृत्स्वार्थोपयोगित्वात् क्रिसख्यधिनीना भित्थाह अद्वागति<sup>४</sup> दिदर्शथाहुष्ट्य बाह्यच असिश्च क्षीमंच वस्त्र आदित्यश्चेति  
इन्ह स्ते आदि येषा कुब्जशङ्खघण्टादीना ते तथा तेषा सख्यन्धिनीना अश्वविद्याभि रादर्शकादीना सापेक्षनात् किम्भूताना प्रज्ञाना मतश्चाह विविधम  
हाप्रश्नविद्याश्च वाचैव प्रश्नसत्युत्तरदायिन्य<sup>५</sup> मनः प्रश्नविद्याश्च मनः प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्तासां देवतानि तदधिष्ठाह देवता स्तेषा प्रयोगप्राधान्येन तद्वा

### याण अद्वागंगुठवाज्जसिमणिखोमञ्ज्जमहापसिणविज्जामणपसिणविज्जा देवयंछ्योग

प्रश्न कोहवाछे । अतिशय आमर्षोषध्यादिक १ । गुण ज्ञानादिक २ । तथा उपशम पोताने परने उपशमाविवो ३ । एह नाना प्रकारछे जेहने एहवाजे  
आचार्य तेणें विस्तर करी कछाछे । वीर महर्षि मोटायतीयें अनेक प्रकार जेविस्तर वचनसन्दर्भ करी भायाछे । वली जगतने हित रूपछे । मारी  
सो अगुष्ठ बाह खड्ग मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशख घटादिक एहने यागलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवी पूर्वोक्त  
प्रदायें अधिष्ठान करीने उत्तरदे । तेमाटे ते प्रश्नविद्यायें करी भाषित छे । विविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछें थके तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या  
कही । मनःप्रश्नविद्या मननो चितित अर्थ कहै एहवी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनो व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनो प्रकारक । तथा

पारप्रधानतया गुणं त्रिविधार्थं सम्बादलक्षणं अकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रशूविद्यामनः प्रशूविद्यादेवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका  
 स्तासां पुनः किञ्चित्तानां प्रशूनां समुद्भूतेन तात्त्विकेन द्विगुणेन उपलक्षणत्वा क्लौकिकप्रशूविद्याप्रभावापेक्षया बहुगुणेन पाठागते विविधगुणेन विद्याप्रभावेन  
 माहात्म्येन नरगणमतौमनुजसमुदयबुद्धौविस्मयकार्यसम्भारहेतवो याः प्रशूनाः सद्भूतद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्यं स्तासां पुनः किञ्चित्तानां तासां  
 मतिसयमतौतकालसमेति अतिशयेन योतीतः कालः समयः स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थः दमः शम स्तत्प्रधानं तीर्थकारणा दर्शनान्तरशा  
 स्तूणा मुत्तमी यः स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थकरोत्तमस्य स्तितिकरण स्थापन आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानादिगुणयुक्तः सकलप्रणायकशिरः शेखर  
 कल्पः पुद्गलविशेषः एव विधप्रशूना मन्थयानुपपत्ते रित्येवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तथा तासां पुनस्ताएव विधिनष्टि दुरभिगम दुरवबोध गभी  
 रं सूक्ष्मार्थत्वेन दुरवगाहं च दुःखाध्यैय सूत्रबहुत्वाद्यत्तस्य सर्वथा सर्वज्ञाना सम्यक्मिष्टं सर्वसर्वज्ञसम्भवेति सर्वसर्वज्ञसम्भवेति सर्वसर्वज्ञसम्भवेति सर्वसर्वज्ञसम्भवेति सर्वसर्वज्ञसम्भवेति

पाहाणगुणप्यगासियाणं सप्रूयदुगुणप्यज्ञानरगणमड्विम्हयकारणं अइसयमईयकालदमसमतित्यकरुत्तम  
 रसठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहसस सब्रसब्रन्वसमअरसस अइबुहजणवोहकरसस पच्चरकयपच्चयकरा  
 सद्गुण तात्त्विकपणे द्विगुण लौकिक प्रशू विद्यानो अपेक्षायै घणोजे प्रभाव माहात्म्य तणे करेत्त मनुष्य समूहनी बुद्धिने विस्मय करेछे घमत्कार उपजा  
 वेछे । अतिशये करी अतीतकाल समय अत्यत व्यवहित काले दम शम तणे करी सहित तीर्थ दुरीसमनी स्थितिनी कारण स्थापिवो तेहना कारणछे ।  
 दुरभिगम दुःखे जाणिये । गभीर सूक्ष्मार्थं परे दुरवगाहं दुःखे अहीसके । सर्व सर्वज्ञे मान्य । तथा अनुधजन मूर्ख जेने प्रबोध ना कारण । प्रत्यक्ष प

षनतत्वमित्यर्थः तस्य अबुधजनविवोधनकरस्य एकांतहितस्येति भावः पञ्चक्खयपञ्चयकारणंति प्रत्यक्षेण ज्ञानेन साक्षादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वोतिशयनिधा-  
 नमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारिचेद जिनप्रवचन मित्येवरूपा प्रविपत्तिः अथवा प्रत्यक्षेणैवा नेनार्थः प्रतीयन्त इति प्रत्यक्षमिवेद मित्येवं प्रतीतिः प्रत्यक्ष  
 कप्रत्यय स्तत् करणशीलाः प्रत्यक्षकप्रत्ययकार्यः प्रत्यक्षताप्रत्ययकार्योवा तासा अत्यक्षकप्रत्ययकारिणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्न  
 विद्याना सुपलक्षणत्वा दत्त्यासाश्च यासा मष्टीत्तरयतान्यादौप्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाश्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभा  
 शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किम्भूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आघविज्जति आख्यायन्ते शेषम्पूर्ववत् नवर यद्यपीहाध्ययनाना दशत्वाद्दशैवो  
 द्देशनकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापेक्षया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्धमिति संखेज्जाणिपयसयसहस्राणि पयगेणति

णं परहाणं विविहगुणमहत्याजिणवरप्पणीया आघविज्जांति परहावागरणेसुणं परितावायणा संखेज्जाञ्जु  
 उगदारा जावसंखेज्जानु संगहणीनु सेणञ्जुगठयाएदसमेञ्जुगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसनकाला पणयाली  
 संसमुद्देसनकाला संखेज्जाणि पयसयसहरसाणि पयगेणं प० संखेज्जाञ्जुकरा झुणतागमा जावचरणकरण

ये प्रतीतना करणहार छे एतले प्रत्यक्षपणे मानिवा योग्य छे । एहवा प्रश्नाना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरप्रणी  
 त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न व्याकरणे विषे कहियेछे । प्रश्न व्याकरणे विषे संख्याती वाचना । संख्याता अनुयोग द्वारथी यावत् संख्याती समह  
 णी लगे पाठ कहिवी । तेणें अंगार्थपणे दशमे अगे एक शतस्कोध तेने विषे ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना अत सहस्र एतले ६२

तानि च किल दिनवति लंकाणि षोडशसहस्राणीति ॥ १० ॥

स्विपाकश्रुतं विवागसुएणमित्यादि कंठ्यं नवरं प्रसवियागेति फलरूपो विपाकः फलविपाकः तथानगरगमणाइति भगवतो गीतमस्य भिच्चाद्यर्थे नगरप्रवेश

परूवणया अघविज्जांति सेंटंपग्हावागरणाइं ॥ १० ॥

ऋदुक्कणाणं कम्माणं फलविवागे अघविज्जाति सेसमासनु दुविहे पसत्ते तंजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव तत्थणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेकितं दुहविवागाणि दुहविवागेसुणं दुहविवागाणं नगराहुं उ ज्ञाणाइं चेइयाइ वणखंठा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाने णगरगमणाइं

लाख १६ हजार पद पदने परिमाणे कक्षा । संख्याता अक्षर । अनंता गमा । अनंता पर्याय यावत् चरण कारण अमणव्रत पिडविशुद्धादिक लगे जाणियो । इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्रव्याकरण दशमीअग ॥ ११ ॥ अथसूतेविपाक श्रुत । विपाकजे शुभाशुभ कर्म

ना परिणाम तेहनी प्रतिपादक कथक जे श्रुत ते विपाक श्रुत । विपाक श्रुतने विषे शुभ अशुभ कर्मेना फलरूपविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि येछे । ते विपाक श्रुत संक्षेपे बेप्रकारनी कह्यो । तेकहेछे । दुख विपाक अने सुख विपाक । ते विदुंगाहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुवा इ कुमारादिकना दश सुख विपाक । अथ किशति दुःखविपाक । दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर । उद्यान । चैत्य । वनखड । राजा माता । पिता । समीसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । नगर गमन । भगवंत गीतम भिच्चार्ये नगरमाहि प्रवेश करे । ससारनी प्रबंध विस्तार । दुः

नानीति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेषुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालौकिकवचनचौर्यकरणपदद्वारमैथुनैः सह संगयाणत्तियों ससङ्गता सपरिग्रह  
ता तथा संचितानां कर्मणां मितियोगः महातीव्रकषायैर्द्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायानां संचितानां कर्मणां पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये  
फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगती तिर्यग्योनीत्युक्तं बहुविधव्यसनशतपरम्भराभिः प्रबद्धाः ते तथा तेषां जी

संसारपबंधे दुहपरंपरानुय व्याधविज्जांति सेतुदुहविवागाणि सेकिं सुहविवागाणि सुहविवागेसुणं सुहविवा  
गाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंठा रायाणो अग्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहानु इह  
लोय परलोय इहिंविसेसा भोगपरिच्चाया पवुज्जानु सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पफिमानु सले  
हणानु नत्तपच्चस्काणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणवोहिलाहो अंतकिरियानु अण्णा  
घविज्जांति दुहविवागेसुणं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्ककरणपरदारमेज्जणससगयाए महतिव्वकसाअइं  
खनी अणी कहिये वे ते दुःख विपाक । अथ सूं ते सुखविपाक । सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुबाहु कुमारादिकना । नगर । उद्यान । चैत्य ।  
वनखड । राजा । माता । पिता । समोसरण । धर्मचार्य । धर्मकथा । इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष । भोगनो परित्याग । दीक्षा । अतनो भ  
णवी । तपोपधान करिवी । पर्याय । प्रतिमा । सलेखना । भात पाणीनो पञ्चक्खण । पादपोपगमन । देवलोके उपजिवी । तिहां थकी थवी  
ने सुकुलेउपजिवी । बली जिन धर्मनी प्राप्ति । अतःक्रिया । एह जिहां कहिये ते सुख विपाक । दुःख विपाकने विषे । हिसानो करिवी । अलोक नथ

बान्ना मितिगम्यते तथा मणुयत्तेति मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्म्मशेषेण पापका भवति फलविपाका अशुभाविपाकोदया स्ते तथा ते आख्यायन्ते  
 इतिप्रकृतं तथाहि बधो यद्यादिताडनं दृषणविनाशो वर्द्धितककरण तथा नासयीच्च कर्षयीच्च श्रोष्टस्यचाङ्गुलानां अङ्गुष्ठानांच करयीच्च चरणयीच्च नखा  
 नांच यच्छेदनं तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अञ्जन तप्तायः शलाकया नेत्रयोः स्त्रक्षणं वा देहस्य चारुतलादिना कडगिदाहणंति कडानां विदलवंशादि  
 मयाना मग्निः कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहनं कटेन परिवेष्टितस्य बोधनमित्यर्थः तथा गजचलनमलनम्फालनं म्विदारणं उल्लम्बनं वृक्षशाखादावुद्धं

दियप्पमायपावप्पनुयं अणुसुहज्जवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुज्जागफलविवागाणि णरगति  
 रिक्खजोणियविविहविसणपरपरावद्धानं मणुयत्तेवि अणायणजहापावकम्मसेसेणपावगा होतिफलत्तुवा  
 गाणरगतिरिक्खजोणियविविहवसणविपासकन्नुठगुठं करचरणनहत्थेयण जिप्पत्थेअणु अणुजणकळगिदाह

न मुखथी कूडो बोलवो । चोरीनो करिवो । परस्त्रो मैथुन सगमनो करिवो । परिग्रहनी धारण करिवो । महातीव्रकषाय । इन्द्रिय प्रमाद । तथा । पाप  
 प्रयोग । पापव्यापार । एह यक्की जपनो अशुभ अध्यवसाय तेणे करी मैत्त्या पापरूप कर्म तेहन्तो पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय ।  
 दुःख विपाक ने विषे कहिये । नरक तीर्यच योनिने विषे अनेक प्रकार कष्टनी अणी तेणे <sup>नो</sup> बधाणा जेजीव तेहनो । तथा मनुष्यपणे पणि आख्या  
 यका जिस पापकर्म शेषेकरी पापीहोय । फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय । तथा नरकते <sup>ये</sup> चयोनिने विषे अनेक प्रकारना कष्ट विनाश कान  
 ओठ अगूठा हात पग नख एहना छेदन । तथा जिह्वा जीभ छेदन । तथा अंजन लोहनी शलाका <sup>ने</sup> नेवने विषे घालवी । तथा कट बांसमी वेफाड तेह

नं तथा मूलेन लकुटेन यद्याच भस्मन गात्राणां तथा त्रयुणा धातुविशेषेण सीसकेणच तेनैव तर्जनेन तैलेनच कलकलन्ति सशब्देना भिषेचनं तथा कुम्भ्यां भाजनविशेषे पाकः कुम्भीपाकः कम्पन शीतलजलाच्छोटनादिना शीतकाले गात्रोक्तपजनन तथा स्मिर्बन्धन निविडनियत्रण वेधः कुन्तादिना शस्त्रेण भेदन शर्षकत्तनं त्वगुच्छोटन प्रतिभयकर भयजननं तत्करप्रदीपनञ्च वसनावेष्टितस्य तैलाभिषिक्तस्य काष्ठो रग्निप्रबोधनमिति कर्मधारयः ततश्च बधश्चवृषणविना शस्त्रेत्यादि यावत्प्रतिभयकरप्रदीपन चेति वृग्बधः ततस्तानि आदि येषां दुःखानां तानिच तानिर् दारुणानि चेति कर्मधारयः कानौमानौत्याह दुःखानि किभूता न्यनुपमानि दुःखविपाकेष्वाल्यायन्त इतिप्रक्रमः तथेद माख्यायते बहुविविधपरम्पराभिः दुःखानामितिगम्यते अनुवक्षाः सन्ततमालिङ्गिता बहुविधपरम्परागुवक्षा जीवाइतिगम्यते नमुच्यन्ते कयापापकर्मवहया दुःखफलसम्प्रादिकया किमित्याह यतो ज्वेदयित्वा अननुभूयकर्मफलमितिगम्यते

गयचलणमलणफालणउल्लवणसूललयालउडलठिभंजण तउसीसगतत्तैल्लकलकलञ्चुहिसिंचण कुंझिपागकंपण  
थिरबंधणवेहवज्जकत्तण पतिन्नयकरपल्लीवणाइं दारुणाणि दुस्काणि झुणोवमाणि वज्जविबिहपरंपराणुव

नौ अग्नीये करी बालिवी । तथा हाथीना पगने हेंठे मर्दिवी । कोहोडे करी बेफाड करिवी । वृचशाखाने विषे जंचो बांधिवी । शूले करी सताये करी । लाकडी लछी लाठीये करी गात्रनी भांजिवी । तथा तातो सीसो कडकडायमान तेल तणे करी स्नान करिवी । कुंभौ भाजनमाहि पचाधिवी । शीतल जले करी शरीर छांटे तेहथकी जपनी कप । निगड बधन । भालादिके करी वींधवी । चामडानी जोडिवी । भयोत्यादक तेलें करी भीनोवस्त्र शरीरमां लपेटी ने अग्निनी सागाडिवी । इत्यादिक दारुण अनीपम एहवा दुःख विपाकने विषे कहिये । अनेक प्रकार दुःखनी अणीये करी गिरंतर आलिंगवा



दुर्यसादर्थं नास्ति भवति मोक्षो वियोगः कर्मणः सकामात् जीवानां मितिगम्यते किं सर्वथाने त्याह तपसा अनशनादिना किम्भूतेन धृतिश्चित्तसमाधानं  
 तद्रूपा धणियत्ति अत्यर्थं वक्षः निःपौडिता कच्छाबन्धविशेषो यत्र तत्तथा तेन धृतिबलयुक्तोनेत्यर्थः शोधनमुपनयनं तस्य कर्मविशेषस्य वाविति सम्भावना  
 यां होज्जा सम्पद्येत नार्यो मोक्षोपायो स्तोति भावः एत्तोत्येत्यादि इत आनन्तरं सुखविपाकेषु द्वितीयश्रुतकाम्नाध्ययनेष्वित्यर्थः यदाख्यायते तदभिधीयत  
 इतिशेषः शील ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा सयमः प्राणतिपातविरतिं नियमा अभिग्रहविशेषाः गुणाः शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च तपो ऽनशनादि एतेषां सुपधानं  
 विधानं येषान्ते तथा अत स्तेषु शीलसयमनियमगुणतपउपधानेषु कोषित्याह साधुषु यतिषु किम्भूतेषु सुष्टुविहितं मनुष्टितं येषान्ते रुविहिता स्तेषु भक्तादि  
 दत्वा यथा बोविलाभादि निवर्त्तयति तथेहाख्यायत इतिसम्बन्धः इहच सम्प्रदाने सप्तमी नदुष्टा विषयस्य विवक्षणात् अनुकम्पा अनकोश स्तेषु अन आश  
 य धित्तं तस्य प्रयोगो व्यावृत्ति रनुकपाशयाप्रयोग स्तेन तथा तिकालमतिस्ति त्रिषु कालेषु या मति बुद्धि र्यदुत दास्यामीति परितोषोदीयमानेपरितोषो

छाणमंचंति पावकमवक्षीयवेयइत्ता छाणत्थिमोस्को तवेणधिइधणियवठ्ठकच्छेण सोहणंतस्सवाविज्जज्जा

एत्तोयसुहविवागेषुणं सीलसंजमणियमसुयतवोवहाणेषु सात्तसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पज्जेण तिकालमइ

यका नमकाये न कूत्या । पापकर्म बल्लो दुख फलदायक वेलडीथी तेपापी जीवनकूटे । बिना केजे निश्चयथी मोक्ष नहीय । सर्वथापि कूटिवी नथी । एम  
 नही ती केम । तपेकरी तथा धृति चित्तनो समाधान तेणे करी अत्यंत बडकच्छ थईने शोधवो केगेलो थार्ईकोते कर्मनो हीय । इहां थकी वीजाश्रुत स्तध  
 सुखविपाक ने विषे जे कहिये तेलिखेके । शील संयम नियम श्रुत तपोपधान के जेहने । एहवा सुविहित साधने विषे दयाभावे करी सहित जे विषि

दत्ते च परितीष इति सा त्रिकालमति स्तया च यानि विशुद्धानि तानि यथा तानि च तानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाश्रयप्रयोगविकालमतिविशुद्धभक्तपानानि प्रदाये तियोगः केन प्रदायेत्याह प्रयत्नमनसा आदरपूर्वचेतसा हितोऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुखः शुभो वा नोप्ति सति निःश्रेयसः कल्याणकरत्वात् तीव्रः प्रकष्टः परिणामीऽध्यवसान यस्यां सा तथा सा निश्चिता असथया मति बुद्धिर्ज्ञाते हतसुखनिःश्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतयः किं पयच्छिक्नुवति प्रदाय किंभूतानि भक्तपानानि प्रयोगेषुशुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशंसादि दोषरहितानि ग्राहकगृहणव्यापारापेक्षया चोद्गमादिदोषवर्जितानि ततः किं यथा च येन च प्रकारेण पारंपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणेन निवर्तयन्ति भव्याः जीवा इति गम्यते तु शब्दो भाषामात्रार्थः बोधिलामं

विशुद्धभक्तपाणां प्रययमणसाहियसुहनीसेसतिष्ठपरिणामनिष्क्यमइपयत्यिज्जणं पयोगसुछां जहनिष्ठते तिञ्चो वोहिलानं जहयपरितीकरेति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियह चुरतिञ्चयविसायसोगच्छिक्नुते

तेहनी व्यापार तेणैकरी त्रिहुंकालने विषे विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे । देइने आदर पूरितचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे । तथा सुखनी हेतु निश्रेयस कल्याणवंत एहवी तीव्र प्रकष्ट परिणाम अध्यवसाय के जेहनी एहवा निश्चय मति यश्रय रहित बुद्धि के जेहनी तेह देइने तेह भातपाणी केहवा के प्रयोग शुद्ध के प्रयोगने विषे दायक दान व्यापारनी अपेक्षाये शुद्ध के सशयादिक दूषण रहित के । जिम जेणे प्रकारे परंपरा ये मोक्ष साधक लक्षणें निवर्तये निपजावे बोधिलाभ भव्यजीव जिम परिक्ताकरे ससार सागर धोडीकरे । तेसंसार सागर केहवीके । समुष्य नरकतिर्यच देयता एह चिह्नो गतिने विषे जीवनी एहवी नजाइवी अमिबी विपुल यिस्तीण परिवर्तमत्स्यादिकनी अनेक प्रकारे संचरण जिहा । अरति भय वि

यथाच परिच्छीकुर्वति ह्रस्वतांनयन्ति संसारसागर भित्तियोगः किंभूत नरनिरयतिर्यक्सुरगतिषु यज्जीवानां गमन अग्निभ्रमण सएव विपुलो विस्तीर्णः प  
 रिवर्त्ती मत्स्यादीना परिवर्त्तन मनेकधा सचरण यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वान्वेव शैलाः पर्वताः तैः सकटः सकीर्णो य स तथा  
 ततः कर्मधारयो ऽत स्त इहच विषादो दैन्यमात्र शोक स्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमीधकार महान्यकार यत्र स तथा अत स्त चिक्खिल्ल  
 सुदुत्तारति चिक्खिल्ल कर्दमः संसारपत्रेतु विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध स्तेन सुदुस्तरौ दुःखोत्तार्योय स तथात तथा जरामरणयोनय एव सलुभित महा  
 मत्स्यमकराद्यनेकजलजनुजातिसमूहप्रविलोडित चक्रवालं जलपारिमाडिल्य यत्र स तथा त तथा घोडश कषाया एव स्वापदानि मकरग्राहादीनि प्रका  
 ण्ड चण्डानि अत्यर्थरौद्राणि यत्र स तथा त अनादिक मनवदग्न्य मगन्त संसारसागरभिन्न प्रत्यक्षमित्यर्थः तथा यथाच सागरोपमादिनां प्रकुरेण निव

सेलसकलं अन्नाणतमंधकारचिरिक्खिल्लसुदुत्तार जरमरणजोगिसंखुन्नियचक्खवालं सोलसकसायसावयपयंरुचकं

अण्णाइअणं अणवदगं संसारसागरस्मिण जहयणिबंधंति अण्णसुरगणेषु जहयअणुनवंति सुरगणविमाण

पाद शोक मिथ्यात्वतल्लक्षण पैलपर्वते करी संकीर्ण साकडोछे । बलौ केहवोछे । अज्ञान तेहीज तम अधकार के जिहा । विषय धन स्वजनादिक प्रति  
 बध लक्षण चिक्खिल्लकर्दमतेणेंकरी सुदुरत्तार अत्यर्थ उत्तारके दोहिलोजिहनी । जरामरण योनि तेहिज सलुभित महामत्स्य ने जाइवे आइवे करी वि  
 लोडो चक्रवाल जालनी मांडली जिहा । तथा सोले कषाय अनतानुबंध्यादिक भेदे क्रोध मान भाया लोभ तल्लक्षण स्वापद मकरादिक प्रकाड अत्यर्थ  
 रौद्रके जिहां । बलौ केहवो छे । अनादि छे । तथा अनत छे । अतनथी एहवो संसार सागर इह कहता एहवो संसार समुद्र तरे जेह जिम सागरो

धन्यायुः सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभावः यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहेवति तिर्यग्लोके नर  
 लोक मागताना मार्युर्वपुर्वर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यबुद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोगः तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुषः सकाशात् शुभत्वं दीर्घत्व च  
 एव वपुः शरीर न्तस्य स्थिरसहनता वर्णस्थीदारंगौरत्व रूपस्यातिसुन्दरता जाते कृत्तमत्वं कुलस्थायिव जन्मनो विशिष्टज्ञेयकालनिराबाधत्व आरोग्यस्य प्रक  
 र्धः बुद्धि रीत्यक्तिकादिका तस्याः प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेषः प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजनः सुहृद्व्योक्तः स्वजनः पित्रपितृव्यादिः धनधा  
 त्वरूपो यो विभवो लक्ष्मीः स धनधान्यविभव स्तथा समृद्धिः पुरान्तः पुरकीर्णकीर्णगारवत्त्ववाहनरूपा याः सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषां  
 सौखाणि व्यूणोवमाणि ततोयकालंतरचुव्याणं इहेवनरलोगमागयाण व्याउवपुपुस्रुवजातिकुलजन्मव्यापारो  
 गबुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधराविजवसामिद्धिसारसमुदयविसेसा वज्राविहक्रासजोगुप्तवाणरीशका  
 पमादिक जेण प्रकारे बांधि आउखी सुरगण ने विधे जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रते ते सुख बोहवाद्धे अनीपम कक्षा न  
 जाय ते देवलीक शको कालांतरे चच्या चवीने इहा मनुथलीक माहि प्राच्या तेहनो पूरी आउखी उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पंचेन्द्रिय पूरा जा  
 तिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो मातृपन्न कुल ते भलो पितृपन्न तिहां जन्म आरोग्यते निरोगपणी बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पद्धिताई  
 मित्रजन सुष्ठुलोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ अन्नादिलक्षण कक्षा विभव संपदा घणी समृद्धि ते पुरान्तःपुर कीठार बल  
 वाहनरूप समृद्धि संगदा सार प्रवान वसु तेहनो समुदाय समूह एवना विशेष प्रकृष्टपणी तथा घणे प्रकारे कक्षा । कामभोग तेहथी जपना सुख

यः समुदयः समूहः स तथा इत्येतेषां द्वह स्तः एषां ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्याना म्विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी य शुभविपाक उत्तमी येषा न्ते शुभविपाकीत्तमा स्तेषु जीवैर्व्यतिगम्य इहचैयं षष्ठ्यर्थे सप्तमो तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधना मायुष्कादिविशेषाः शुभविपाकाध्ययने ज्ञाख्यायन्ते इति प्रकृतं अथ प्रत्येक शुतस्कन्धयो रभिधये मुख्यपापनिपाकरूपे प्रतिपाद्यतयोरेव यौगपद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर ता अविच्छिन्ना ये परम्परानुबन्धा के विपाका इतियोगः केषा मशुभानां शुभानांचैव कर्मणा मथमद्वितीयशुतस्कन्धयोः क्रमैरेवच भाषिताः उक्ता बहुविधा विपाकाः विपाकश्रुते एकादश्याङ्गे भगवता जिनवरेण सम्बेगकारणार्थाः सम्बेगहेतवो भावाः अन्येपिचैवमादिका आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा दीत्तरक्रियया योगः एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थं प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ्य नवरं संख्यातानि पदयतसहस्राणि पदाशेषेति ॥ किल ए

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुवद्वा असुज्ञाणचैवकम्माणञ्चासिञ्चावज्जविवागा विवागसुयम्भि  
जगवयाजिणवरेण सम्बेगकारणस्या अन्तेवियणुवमाइयावज्जविहबित्थरेण अत्यपरूवणया आघविज्जांति

ना विशेष ते मुखविपाक उत्तमने विषे कहिये । निरंतर परंपराये घणामवलगे बांध्या । अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भाषाश्रुतस्त्वधे क्रमे कक्षा घणे प्रकारे विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इग्यारसे अङ्गे भगवंत जिनवरे सवेगकारणनाअर्थं सवेगनाहेतुनाभाव अनैरापणि एवमा दिक एणं अगे घणे प्रकारे बिस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये । निपाक श्रुतना परिता गणतीये वाचना सूत्रार्थनी देवी संख्याता अनुयोग

सहस्राणि लि

कापदकोटी चतुरशीतिश्च लक्षाणि द्वाविंशच्च सहस्रानीति ॥ ११ ॥ सेकितंदिष्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्बादौ दृष्टीना म्बादौदृष्टिवा  
दः दृष्टीना वा पातो यत्रासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थः तथाचाह दिष्ठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा  
ख्यायते सेसमासश्चोपचविहेत्यादि सर्वमिदं प्रायो व्यवच्छिन्न तथापि यथादृष्टं किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिगृहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्माणि

यते सेसमासश्चोपचविहेत्यादि सर्वस्मिद् प्रायो व्यवाच्येन तथापि यथाह ८८  
विवागसुञ्जस्सणं परितावायणा सखेज्जाञ्जुणुगदारा जावसखेज्जानु संगहणीनु सेणं अंगठयाए एक्कारसमे  
अग्गे वीसंअज्जयणा वीसंउद्देसणकाला वीससमुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० सखे  
ज्जाणिअस्कराणि. अणंतागमा अणंतापज्जावा जावएवंचरणकरणपरूवणया अघाघविज्जातिसेसमासनु पंचविहे प० तं०

॥ ११ ॥ सेकितादाठवाए दि। ठवाएण सव्गानां पदना लाख एतले ? कीटि  
हार जात्र संख्यात सग्रहणी तेह अगार्थपणे इग्यारमे अगे बीस अध्ययन दली २० उद्देशनकाला २० समुद्देशनकाला संख्याता पदना लाख एतले ? कीटि  
८४ लाख ३२ हजार पदेने परिमाणें कहा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्तापर्यायी । जाव चरण ते साधुना महाव्रत करण ते पिड विशुद्ध्या  
दिक्कनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये । तेह विपाकश्रुत इग्यारमी अग ॥ ११ ॥ अथ स्थिते दृष्टिवाद दृष्टिते दर्शन तेहनी वदवी कहिवोछे जि  
हा ते 'दृष्टिवाद' सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनी प्ररूपणा पूर्वने विषे कहिये तेह पूर्व सजेप थकी पाच प्रकारे कहा ते कहे छे । परिकर्म १ सूत्र २

गणितपरिकर्मवत् तच्च परिकर्मस्युत सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्ममूलभेदतः सप्तविधं उत्तरभेदत सु ल्यशीतिविधं स्नातृकापदादि 'एतच्च सर्व' समूलोत्तरभेद सूत्रार्थतो व्ययच्छिन्न एतेषाञ्च परिकर्मणां षट् आदिमानि परिकर्माणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्तिताजीविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुनः

परिकर्मं सुताइं पुव्वगयं झुणुणो चूलिया शेकितपरिकर्मे परिकर्मेसत्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकर्मे मणुस्ससेणियापरिकर्मे पुठसेणियापरिकर्मे नुगाहणसेणियापरिकर्मे उवसंपज्जसेणियापरिकर्मे विप्पजह सेणियापरिकर्मे चुञ्चाचुञ्चसेणियापरिकर्मे शेकितंसिद्धसेणियापरिकर्मे सिद्धसेणियापरिकर्मे चोद्धुविहे प० तं० माउयापयाणि एगठियपयाणि पादोठपयाणि झ्यागासपयाणि केउझयं रासिवद्धं एगगुणं दुर्गेणं तिगुणं केउन्नूण पफिग्गहे ससारपफिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावत्तंसिद्धसेणियापरिकर्मे शेकितंमणुस्ससेणिया

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ स्युते परिकर्म । परिकर्म पूर्व साते भेदे कह्यो । तेकहेछे । परिकर्म शब्दे गणती गणना विशेष सिद्ध श्रेणीनो परि कर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनो गणना २ पृष्ठ श्रेणीगणना ३ ओगाहणाश्रेणीगणना ४ उपसपादन श्रेणी गणना ५ विप्पजहश्रेणी गणना ६ च्युता च्युत श्रेणी गणना ७ एहना अर्थ गुरुभाग यकौ जाणिया । सिद्ध श्रेणी परि कर्मना वली १४ भेद कह्या । ते कहेछे । त्यासी भेदे माहका पद १ एक स्थितिपद २ पाद अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिवद्ध ६ एगगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ ससार प्रतिग्रह १२ नदावत्त १३ सिद्धावद्ध १४ एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म । अथ स्युते मनुष्य श्रेणी परिकर्म । मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कह्यो । ते कहेछे । माहकापद १ एक स्थितिपद २ पाद ३

चुताच्युतश्रेणिकापरिकर्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्मसु नगचिन्ता तत्र नैगमोद्विधः सांग्रहिकोऽसांग्रहिकश्च तत्र सांग्रहिकः सग्रहप्र  
 विष्टो ऽसांग्रहिकश्च व्यवहारं तस्मात्तु सग्रहो व्यवहारश्चतुस्रशब्दादयश्चैकएवैषेव चलारो नया एतैश्चतुर्भिर्नयैः षट्स्रसामयिकानि परिकर्माणि  
 चित्वागते अतो भणितं क्वचउक्तनयाइति भवन्ति तएवचजीविकारैरागिका भणिताः कस्मादुच्यते यस्मात्ते सर्वं त्याज्यं इच्छन्ति तथा जीवो ऽजी  
 वो जीवाजीवः लोको ऽलोको लोकालोकः सत् असत् सदसत् इत्येवमादि नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छति तदथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः  
 उभयार्थिकः अतोभणितं सत्तैरासियति सप्तपरिकर्माणि त्रैरागिकपाखण्डिका स्त्रिविधया नयचिन्तया नयाश्चिन्तयन्तीत्यर्थः सप्तपरिकर्मास्त निगमनं  
 मणु परिकर्मे मणुस्ससेणियापरिकर्मे चोदसविहे पस्यते तजहा ताइचेव माउञ्चापयाणि जावनंदावत्तं मणु  
 स्सवच्छं सत्तंमणुस्ससेणियापरिकर्मे ज्ववसेसपरिकर्माइं पुठाइयाइ एक्कारसविहाइं पन्नहा इच्चेयाइं सत्तप  
 परिकर्माइं ससमइयाइं सत्तञ्चाजीवियाइं लचउक्कणइयाइ सत्तैरासियाइं एवामेव सपुछावरेणं सत्तप  
 पद ३ आगामपद ४ केतुभूत ५ राशिवद्वय ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९, केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावत्तं १३ मणुस्सजड १  
 तेह मनुथश्रेणोपरिकर्म । श्रेण्याकता परिकर्म पांच पुष्टादिक इय्यारह भेदे कह्या । इत्यादिक सात परिकर्म मांदि पहिला क परिकर्म स्वसमयप्रतिबड  
 जिनमतानुयायी सात परिकर्म च्युताच्युतश्रेणो परिकर्म लगी आजीविक गोशालमतानुयायी जाण्वा । धुरना क परिकर्म चारनये करी सहितके संग्रह १  
 व्यवहार २ ऋजुसूत्र ३ शब्द ४ एहचारनय प्रतिबडके सात परिकर्म त्रिरागिक मतानुयायी जीव १ अजीव २ जीवाजीव एहत्रिरागिकना मतने विवे



सेकितसुत्ताइमित्यादि तत्र सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थसूचमात्सूत्राणि अष्टाशीत्यपिच सूत्रार्थतो व्यवहिकानि तथापि दृष्टानुसारतः किञ्चिल्लिख्यते एतानि  
 किल ऋजुकादीनि हाविशतिः सूत्राणि तान्येव विभागतो ऽष्टाशीति भवन्ति कथं मुच्यते इचेइयाइ बावीससुत्ताइं छिन्नच्छेदनईयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए  
 त्ति इह योनयः सूत्रं च्छिन्नं छेदेनेच्छति सच्छिन्नं च्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुकुडमित्यादि श्लोकः सूत्रार्थतः प्रत्येकच्छेदनस्थिती न द्वितीयादियोक सपेक्षते  
 प्रत्येकक्षयितपर्यन्त इत्यर्थः एतान्येव हाविशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाद्या सूत्राणि स्थितानि तथा इत्येतानि हाविशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिका न्या

रिकम्माइं जवतीतिमस्कायाइं । सेत्तंपरिकम्माइं । सेत्तं सुत्ताइं सुत्ताइं सुत्ताइं सुत्ताइं जवतीति मस्कायाइं  
 तंजहा । उज्जंगं परिणयापरिणयं बज्जंगियं विप्पसुइयं इणंतरं परंपरसमागं संजुह जिन्नं इहच्चायेस्सो  
 वलियं घटं णदावत्तं बज्जलं पुठ्ठापुठं वियावत्तं एवंनूय दुव्यावत्तं वत्तमाणुप्पयं समज्जिरूढं सव्वज्जइं पणु  
 मं दुपक्किग्गहं इच्चेयाइं बावीससुत्ताइं विस्सलेइणइव्याइं ससमयसुत्त परिवालीए इच्चेइयाइं बावीससुत्ताइं

सात परिकर्म एणीपरे आगली पाछली मिली सात परिकर्म होय भगवते कह्या । ते पहिलो भेद पूर्वनी परिकर्म नाम कह्यो अथस्युंते सूत्र । पूर्वनी  
 बीजीभिद सूत्र तेहना ८८ भेद होय । भगवते कह्या तेकइच्छे । ऋजुअग १ परिणता परिणत २ बहुभगिय ३ विप्रत्ययिक ४ अनन्तर ५ परपरसमान ६ समय ७  
 भिन्न ८ यथाव्याग ९ सौवस्सिक १० घट ११ नदावत्त १२ बहुल १३ पृष्ठापुष्ट १४ वियावत्त १५ एवभूत १६ द्विकावत्त १७ वर्त्तमानोत्पत्तक १८ समभिरू  
 ढ १९ सर्वतोभद्र २० प्रहामत २१ द्विप्रतिग्रह २२ इत्यादिक बावीससूत्र छेद्या छेद्ये करी नय जिहा तेच्छिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल इत्यादिक श्लोक

जीविकसूत्रपरिपाद्येति अयमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदेनयो यथा धर्मो भगलमुकठमिव्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोक म  
पेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसंपेक्षा इत्यर्थ एतानि हाविशति राजोविकगीशालकप्रवर्त्ति तपाखण्डसूत्रपरिपाद्या अक्षररचनाविभागस्थिता  
न्यप्यर्थतो ऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्छेइयाइ इत्यादि सूत्रं तत्र तिकनइयाइ ति नयत्रिकाभिप्रायतथित्यन्तइत्यर्थ सैरायिकाद्याजीविका एवोच्यन्ते  
इति यथा इच्छेइयाइ इत्यादि सूत्रं ततः चउकनइयाइ ति नयचतुष्काभिप्रायतथित्यंत इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्र एवञ्चतस्मै हाविशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्तपरिवाणीए इच्छेअइं वावीससुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाणीए इच्छेअइं वावी  
संसुत्ताइं चउकणयससमयसुत्तपरिवाणीए एवाभेवसपुद्गावरणं अण्ठासीयं सुत्ताइं अवतीति मस्कायाइं ।

सुत्तार्थ यको प्रत्येक छेदयको छेद्यो बीजा श्लोकनौ अपेक्षा नकरे ससमय जिनमतना सूत्रनो परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु ऋगादिक २२ सू  
त्र नथौ छेद्या छेदेकरी नय जिहां ते अछिन्न छेदनधिक जिम धर्मो भगल मुक्तिष्ठ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस  
सूत्र आजीविक गीशालमतनी परिपाटीये पामीये । इच्छेइयाइं एह २२ सूत्र त्रिण नय समेत जीव अजीव, नोजी । एह त्रिणनयजिहा ते त्रिकनधिक त्रिरा  
गिक पाखडोना सूत्रनौ परिपाटीये पामीये । ऋजुअण प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संगह १ व्यवहार २ ऋजु ३ अण्ड ४ एह चार नय समेत तेह स्वस  
मय जिनमतनो सूत्र परिपाटीये पामिये । एम आगली पाखलौ मिली २२ चोका अण्ठासी सूत्र होय ते भगवते कहा । एह पूर्वनो बीजो भेद सूत्र कथो

णि भवन्ति सेतंसुताइ'ति निगमनवाक्यं सेकिंपुण्यगणइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वगतमुच्यते ग्रन्था तीर्थकरः तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्व पूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधरा. पुनःश्रुतरचनां विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्ति च मतान्तरेण तु पूर्वगतसूत्रार्थः पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वैरचित पञ्चादाचारादि नत्वेव यदाचारान्तर्युक्त्या मभिहितं सत्वेसिआयारीपठमो इत्यादि तत्कथमुच्यते तत्रस्थापनामाश्रित्य तथोक्त मिहलक्षररचना प्रतीत्य भणित पूर्व पूर्वाणि कृतानीति तच्च पूर्वगत चतुर्दशविध प्रज्ञप्त तद्यथा उपायेत्यादि तत्रोत्पादपूर्वं अथमं तत्रच सर्वद्रव्याणां व्यर्थवाणां चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाण मेकाकोटी आग्रणीय द्वितीय तत्रार्थं सर्वेषां द्रव्याणां पर्यवाणां जीवविशेषाणां चाग्र परिमाण वर्ण्यत इत्यग्रणीयं तस्य पदपरिमाण यणवतिपदशतसहस्राणि वीरियति वीर्यप्रवाद तृतीय तत्रार्थं जीवानां जीवानां च सर्वमेतराणां वीर्यं प्रोच्यत इति वीर्यप्रवाद तस्यापि सप्ततिः पदशतसहस्राणि परिमाण अस्तिनास्तिप्रवाद चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

**सेतंसुताइ । सेकिंतं पुष्टगयं । पुष्टगयं चउद्दसविहे पन्नते । तंजहा उप्पाय पुष्टं अग्रणीयं वीरियं अग्रणीयं**

कह्यो । अथ स्युते पूर्वनी चोजो भेद पूर्वगत । ते चोद्दह भेदे कह्यो तेकहेछे उत्पाद पूर्व १ तीर्थ कर तीर्थ प्रवर्त्तना काले गणधरने पूर्व पहिली सूत्रार्थं भाष्यो तेमाटे पूर्व कह्यो । सर्व द्रव्य पर्यायनी उत्पादक भाव अंगीकार करीने जिकह्यो तेउत्पाद पूर्व इग्यारह कोडि पद परिमाणे १ वीजो अग्रणीय तेमांहि सर्वद्रव्यपर्याय जीवनी अग्र परिमाण पामिजे तेहनी पद परिमाण ६६ लाख पद २ । चोजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्यकह्या । पदसंख्या ७० लाख पद ३ । चौथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहां स्यादादिभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४ । पांचमो ज्ञानप्रवाद

॥  
 स्ति अथवा स्याद्वादाभिप्रायतः तदेवास्ति तदेयनास्तीत्येव प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवाद आणितं तदपि पदपरिमाणतः षष्ठिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद  
 म्मन्त्रं तन्मविज्ञानादि पञ्चकस्य भेदप्रकरणायस्मात् तत् ज्ञानप्रवादं तस्मिन्पदपरिमाण मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवाद पष्ठं सत्यसयमः सत्यवचनम्वा  
 तद्यत्र सभेदं सप्रतिपक्षश्च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवादं तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीपट्चपदानीति आत्मप्रवादं सप्तमं आयत्ति आत्मा सोनिकथा यत्र  
 नयदर्शनैर्वर्ण्यते तदात्मप्रवादं तस्य पदपरिमाणं पट्विंशतिपदकोट्यः कर्मप्रवादमष्टमं ज्ञानावरणादिक मष्टविध कर्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि  
 भेदे रन्येशोत्तरीत्तरभेदे यत्रवर्ण्यते तत्कर्मप्रवाद तत्परिमाण मेकापदकोटीअशीतिश्चसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवमं तत्रसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्वर्ण्यत  
 इति प्रत्याख्यानप्रवाद तत्परिमाण चतुरशीतिः पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवाद दशमं तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदको  
 टी दशचपदशतसहस्राणीति अवध्य मेकादशं बध्यनाम निष्कल नवध्य मवध्यं सफलमित्यर्थः तच्चहि सर्वज्ञानतपः सयमयोगाः शुभफलैर्दु सफला व

### स्थित्यप्यत्रायं नाणप्यत्रायं सच्चप्यत्रायं ज्ञायप्यत्रायं कम्मप्यत्रायं पञ्चस्काणप्यत्रायं विज्ञाणप्यत्रायं ज्ञाप्यत्रायं

तिहान्मत्यादि ५ । ज्ञान सबिस्तर पणे कक्षा पद संख्या एवूण एक कोडीपद ५ । क्वो सत्यप्रवाद तिहां सत्यसंयत्र तथा सत्य वचन सभेदे कक्षो ते सत्य  
 प्रवाद पद सख्या एककोडी छ पद ६ । इति षट् पूर्व । सातमी आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदे आत्मा वर्णव्यो ते आत्म प्रवाद पदसख्या २६ कोडी पद ७  
 आठमी कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनीप्ररूपणांकरी पद संख्या १ कोडी ८० हजार पद ८ । नौमी प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानमस्वरूप वर्णव्यो  
 पदसंख्या ८४ लाखपद ८ । दशमी विद्यानुप्रवाद तिहां अनेक प्रकारनौ अतिशायिनी विद्या वर्णनीके पद सख्या १ कोडी १५ हजार पद १० । इग्यारह

वर्ग्यन्ते अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ग्यन्ते अतोऽवश्यं तस्यच परिमाणं घटविशतिपदकोटयः प्राणायुर्द्वादश लक्षाध्यायुः प्राणविधान सर्वे स भेद मयेच प्राणावर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदकोटीघटपञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशाल त्रयोदश तत्र कायिक्यादयः क्रिया विशालत्ति समेदाः समयमक्रियाच्छन्दक्रियाविधानानिच वर्ग्यन्त इति क्रियाविशाल तत्पदपरिमाण नवपदकोट्यः लोकविन्दुसारं चतुर्दशमं तच्चास्मिन्लोके शुतल्लोकेवा विन्दुरि वाचरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाचरसन्निपातप्रतिष्ठितत्वेनच लोकविन्दुसारं भाणितं तत्रमाणं मर्दत्रयोदशपदकोट्यइति उपायप्रुब्बसेत्यादिकया नवर वस्तुनिय ताथार्थधिकारप्रतिबद्धो ग्रन्थविशेषो ध्यानवदिति तथाचूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थं सग्रहपरा ग्रथपडतु चूडाइति सेत

पाणानु किरियाविसालं लोगविन्दुसारं १४ उपायपुव्वस्सणं दसवत्थु चत्तारिचूलियावत्थु प० पुव्वस्सणय  
स्सणंपुव्वस्स चोदसवत्थु वारसचूलियावत्थु प० । वीरियपुव्वस्सणंपुव्वस्स अठवत्थु अठचूलियावत्थु प० ।

मो अबत्थ तिहां तप सयमना फल बध्यनथो अफलनथो एहवो वर्णव्यो पद सख्या २६ कोडी पद ११ । बारमो प्राणायु तिहां आउखानो भेद सर्वे जीवनो कच्छो पद संख्या १ कोडी ५६ लाख पद १२ । तेरमो क्रियाविशाल तिहा कायिक्यादिक क्रिया सत्तर भेदे वर्णवो पद सख्या ८ कोडी पद १३ । चौदमो लोक विदुसार लोकने विषे विदुसरीखो विदु सवलामांही उत्तम तेहनी पद सख्या साढी बारह कोडीपद १४ । एतले पूर्वनी चीजी भेद वर्यो कच्छो । प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चीटली ते सरीखा तेहना वस्तु कच्छा । अग्रणी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु वारे चूलिका वस्तु कच्छा । वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कच्छा । अस्तिनास्ति प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कच्छा ४ । ज्ञान प्रवाद

पुञ्जगतेति निगमनं सेकितमित्यादि प्रवरूपीनुकूलोवायोगी नुयोगः सूत्रस्य निर्जेनाभिधेयेन सार्धमनुरूपः सम्बन्धइत्यर्थः सच द्विविधः प्रपञ्चः तद्यथा मूल  
 अत्यिणत्थिप्यवायस्सणंपुव्वस्स अठारसवत्थु दसचूलियावत्थु प० । नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थु  
 प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थु प० । अणप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थु प० । कम्मप्पवायस्सणं पुव्व  
 स्स तीसंवत्थु प० । पच्चस्सकाणस्सणं पुव्वस्स वीसवत्थु प० । विज्जाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थु प० ।  
 अण्वंऊस्सण पुव्वस्स वारसवत्थु प० पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थु प० । किरियाविसालस्सणं पुव्वस्स दु  
 सवत्थु प० । लोगविदुसारस्सण पुव्वस्स पणवीसवत्थु प० । सेत्तपुव्वगयं । सेकितअणुनंगे । अणुनंगे दु  
 पांचमा पूर्वना बारह वस्तु कक्षा ५ । सत्य प्रवाद क्खंठा पूर्वना चिह्न वस्तु कक्षा ६ । आत्म प्रवाद सातमा पूर्वना १६ वस्तु कक्षा ७ । कर्मप्रवाद आठमा  
 पूर्वना २० वस्तु कक्षा ८ । प्रत्याख्यान नवमा पूर्वना २० वस्तु कक्षा ९ । विद्यानुप्रवाद दशमा पूर्वना १५ वस्तु १० । अत्रथ इग्यारहस्तु पूर्वना १२ वस्तु  
 पूर्वना ११ । प्राणायु बारमा पूर्वना १३ वस्तु कक्षा १२ । ज्ञियाविशाल तेरमा पूर्वना ३० वस्तुकक्षा १३ । लोक विदुसार चौदमा पूर्वना २५ वस्तुकक्षा १४ ।  
 दसचउहसअठ्ठा रसेववारसदुवेयवत्थुणि सोलसतीसावीसा पणरसअणुप्पवायति ॥ १ ॥ बारसएक्कारसमे बारसमेतेरसेववत्थुणि तीसापुणतेरसमे चउहसमे  
 पखवीसाओ ॥ २ ॥ चत्तारिदुवालस अठ्ठचेवदसचेवचूलवत्थुणि आइक्काणचउहस सेसाणचूलिआनयि ॥ ३ ॥ धुरना चिह्न पूर्वनी चूलिका कही जाणिवी ।  
 अथ थाकता दश पूर्वनी चूलिका नथी एह पूर्वगत बीजो भेद पूर्वनी कक्षो ॥ अथ खं ते अनुयोग चौथीभेद पूर्वनी । अनुरूप प्रमकूल योग ते अनुयोग सूत्र

प्रथमानुयोग च गणिकानुयोगश्च सेकितमित्यादि इहधर्मप्रणयनात् मूलं तावत्तीर्थकरा स्तेषां प्रथमसम्यक्तावाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरो नुयोगो मूलप्रथमानुयोग स्तथाह सेकितं मूलपठमाणुओगे इत्यादि सूत्रसिद्धयावत् सेतमूलपठमाणुओगे सेकितमित्यादि इहैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयो ग

विहे पन्तते । तंजहा । मूलपठमाणुनुगे गंक्रियाणुनुगे सेकितंमूलपठमाणुनुगे एत्यणं झुरहंताणंभगवंताणं पुष्ट्रभवेदेवलोगमणाणि झ्याउवयणाणि जम्मणाणिअण्णिसेयरायवरसिरीनु सीअ्णो पष्ट्रज्जानु तवोयन्न ताकेवलणाणुप्ययअ तित्यपवत्ताणाणिअ संधयणसंठाणउच्चत्तअाउवन्नविजागो सीसागणागणहराअ अज्जा पवत्तणीनु सधस्सचउच्चिहरस्स जंवावि परिणामं जिणा मणपज्जबनुहिनाणिसम्मत्तसुयनाणिणोय वाईअणुत्त

नेविषे अर्थने विषे सरीखी संबंध तेकहेहे । मूल प्रथमानुयोग १ गडिकानुयोग । अथ स्यंते मूल प्रथमानुयोग । मूल प्रथमानुयोगने विषे इहां धर्मनाप्ररूपक पणा थकी मूल ते तीर्थकर देव ते अरिहंत भगवंतनी प्रथम पहिलो पूर्वभव तप सयम सूचक अनुयोग व्याख्या ते मूल प्रथमानुयोग कहिये ते अनुयोग बहु प्रकारे कम्मो अरिहंतना पूर्व भव देवलीक गमन जाइवो । आउखी क्यवन जन्म राज्याभिवेक राज्यवर औ जिमभोगवे श्रिविका दीचा दीचानीपाल खी तपना भक्त बोधभक्त कइभक्त इत्यादि । केवल नाथनी उपजवो । तीर्थ चतुर्विध सब तेहनी प्रवर्तावणो । सधयण वज्जकवभादिक । संस्थान समचतुर स । शरीरनी जंचपणो । आउखी । वर्ष गौरादिक । तेहनी विभा कांति । श्रिय गण गच्छ । गणधर ते प्रथम श्रिय । आर्या साधवी प्रवर्तिनी बडो सा धी तेहना नाम । संघ चतुर्विध साधु साध्वी आवक आविका तेहनी जेहवो परिणाम आचार विचार । 'जिन केवलीनी सख्या । मनपर्ययभ्रानी अवधि

गण्डिका उच्यन्ते वासामनुयोगीर्धकथनविधिर्गण्डिकानुयोगः तथाचाह गण्डियाणुश्रीगेशेगत्यादि तत्र कुलकरगण्डिकासु कुलकराणां विमलवाहनादीनां पूर्वजन्माद्यभिधीयते इति एव शेषास्वपि अभिधानवशतो भावनीय यावच्चिन्तान्तरगण्डिका नवर दशार्हा समुद्रविजयादयो दश वसुदेवाक्ता. तथा चित्रा

रंगइय जत्तियासिद्धापावोगनुय जो जहिजत्तियाइं भत्ताइं लेइइत्ता अंतगणोमुणिवरुत्तमो तमरनुधवि  
 प्यमुक्तासिद्धिपहमणुत्तरचपत्ता एए अन्तेय एवमाइया भावामूलपढमाणुनगकहिइया अघविज्जाति पस्सवि  
 जाति सेंटंमूलपढमाणुनगे सेकितगण्डियाणुनगे गण्डियाणुनगे पस्सत्ते तंजहा कुलगरगण्डियाणु  
 तित्यगरगण्डियाणु गणहरगण्डियाणु चक्काहरगण्डियाणु दसारगण्डियाणु वलदेवगण्डियाणु हरिवंसगण्डियाणु

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी । सम्यक जे यती तिहां जई जपना ते उपपात अनुत्तर विमान गतियें जाई जपना तेहनी गतिनी कहिवी । ते तत्ता २ यती  
 सिद्ध सकल कर्मस्य करी मोक्ष गया । पादपीपगमन । अनशन करिवानी अधिकार जेहयती जिहां २ जेणे २ ठामे जेतली २ भात छेईने अंत कृत स  
 सारनी अंत कीधी । मुनिवर उत्तम । तम अन्नान रूप रज पापरज थकी मूकाणा । सिद्धिपंथ मोक्षमार्ग अनुत्तर प्रधान तेष्ट प्रते पास्या । एह पूर्व  
 कक्षा ते तथा अनेरा पणि । एवमादिक भाव पदार्थ प्रथमानुयोगने विषे कक्षा । ते जिहां चौथा पूर्वना भेट मांहि आख्यायते कहिये  
 प्रजापिते जाणवीये तेह मूलप्रथमानुयोग पहिस्ती ॥ अथ स्यंते गण्डिकानुयोग । इहां एकवक्तव्यतार्थाधिकार तेहने अनुगतसरीखी वाक्यपद्धति ते गण्डिका क  
 हिये तेहनी अनुयोग अर्थकहिद्वानो विवि ते गण्डिकानुयोग । ते गण्डिकानुयोग अनेक प्रकारे कछी । तेकहेछे । कुलकर ते विमलवाहनादिक तेहनी गण्डि



अनेकार्था अन्तरे ऋषभाजिततीयकारान्तरे गडिका एकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता स्तस्य चिन्नाद्य ता अन्तरगण्डिका स चिन्वान्तरगण्डिका एतदुक्तम्व  
वति ऋषभाजिततीर्थकारान्तरे तद्वशज-नूपतीना शेषगतिगमनच्युदासेन शिवगमनानुत्तरोपपातप्राप्ति रितिप्रतिपादिका शिवांतरगण्डिका इति ताच्च  
चोद्देशलक्षासिद्धा निवर्द्धणेकीयद्वीद्वसव्यष्टे एवेकैकगुणे पुरिसजुगाहुतिसंखेज्ज्यादिना यथेन नन्दिटीकाया मभिहिता स्त एवावधार्या इह सूत्रगमनिका

नद्ववज्जगंगक्रियात् तवोकम्भगंगक्रियात् चित्ततरंगक्रियात् उस्सप्यिणीगंगक्रियात् अस्सप्यिणीगंगक्रियात् अमरनर  
तिरियनिरयगङ्गमणविविहपरिग्रहणाणुने एवमाइयानुगक्रियात् आधविज्जति पस्सविज्जति परविज्जति  
सेतंगक्रियाणुने सेकिंतंचूलियात् जंझाडह्माण चउण्हंपुछाणंचूलियात् सेसाइपुछाइ अचूलियाइ हिड्डिवा

का पूर्वजन्मादि सबधी जिहां कही ते कुलकरगडिका । एमज सर्वत्र कहिवो । जिहांलगे चिन्नातरगडिकाआवे । तीर्थकरना संबध गणधर सबध चक्रव  
र्तिसंबध । दस समुद्रविजयादिक दशदशार तेहना प्रबध । बलदेव बलभद्रादिकनासंबध । हरिवश यदुवशनी उत्पत्ति । भद्रकल्याण वणाजिम एह पास्या ।  
छेहडे जेहवा तपकर्मकोधा । तेचिन्नातरगडिका चित्रअनेकार्था अतरते आदिनाथ अने अजितनायने आंतरे विचाले जिम आदीस्वरना पाट असख्याता मो  
जपहुता । तथा । सर्वार्थसिद्ध पहुता । तेसर्व भावना कहणहार तेचिन्नातरगडिका । उत्सर्पिणी ते चढतीसमय तेहनाभाव । अवसर्पिणी तेघटतीकाल तेह  
नाभाव । देवतानागणसमूह । तथा नरमनुयतिवैच नारकी एचिहूनीगति जिहां विविध प्रकारे परिवर्तन ससारमांहि फिरवो तेहनी अनयोग व्याख्यान  
पवमादिक गडिका अर्थधिकार । तिहा चौधा पूर्वना भेदने विषे कहिये गडिका चौथो भेद पूर्वनी ॥ अथ ते सूंचलिकानुयोग । जे आदिना धुरना चार

मात्रस्य विवक्षितत्वा दितिशेषं सूक्ष्मसिद्ध मानिगमना अवरं सखेज्जावल्युत्ति पञ्चविशत्युत्तरं हेयते सखेज्जावल्युत्ति षतुस्त्रिंशत् ॥ १२ ॥

यस्सणं परित्तावायगा सखेज्जाअणुणुनगदारा सखेज्जानुपफिवतीनु सखेज्जानुनिज्जुत्तीनु सखेज्जावेढा संखे  
ज्जासिलोगा सखेज्जानुसंगहणीनु सेणअण्णगठयाएवारसमेअण्णे एगेसुयखधे चउद्दसपुद्दाइं सखेज्जावत्थु सखे  
ज्जाचूलवत्थु सखेज्जापाज्झा सखेज्जापाज्झापाज्झा सखेज्जानुपाज्झाक्रियानु सखेज्जानु पाज्झपाज्झाक्रियानु  
सखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेण पन्नत्ता सखेज्जाअण्णकरा अणुणतागमा अणुणतापज्जावा परित्तातसा  
अणुणताथावरा सासयाकक्राणिवध्वाणिकाइया जिणपण्णत्ताभावा अण्णविज्जति पण्णविज्जति पण्णविज्जति  
पूर्वं तेहनो चूलिका छे ते पठे कही छे । शेष याकता दैय पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूर्वनी पांचमो भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहनो परित्ता गणती  
याचना छे । सख्याता अनुयोग दार उपकमादिक । सख्याती प्रज्ञप्ति । सख्याता वेढा । सख्याता स्लोक । सख्याती सगृहणी । सख्याती निर्युक्ति सन्नने विधि  
अर्थनी योजवी । तेह अङ्गार्थ पण्ण अण्ण पण्णे वारमे अणे एक युतस्सन्नने विधि १४ पूर्व । सख्याती २२५ वस्तु । सख्याता नान्हावस्तु ३४ । सख्याता प्राभुतक अधि  
कार विशेष । सख्याता प्राभुतप्राभुत अधिकार विशेष । सख्याती प्राभुतप्राभुतिकी । सख्याता पदना अतसहस्र लाख पदने प  
रिमाणे लिख्या छे ते पठे । सख्याता अण्ण वण्ण । अनतागमा अर्थना परिच्छेद । अनता पर्याय अचर पदना भेद । परित्ता अनतनही एतला ३ सवेइन्द्रि  
यादिक । अनता स्थावर वनस्सति प्रमुख पाच धानर । एह पूर्व माहि भाव पदार्थ गाखता द्रव्यार्थ पण्णे विच्छेद रहित छे वली पर्याय पण्णे समे २ प्रति

साम्प्रत द्वादशाङ्गविराधनानिष्यन्नैकालिकं फलमुपदर्शयन्नाह इत्येयमित्यादि इत्येत द्वादशाङ्गं गणिपिठक मतीतकाले अनन्ताजीवा आश्रया विराध्य चतुरन्तं ससारकान्तरं अणुपरियद्विसुत्तिअनुपरिष्ठत्तवन्तः इदं हि द्वादशाङ्गं सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं ततश्च आश्रया सूत्राश्रया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अतीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्त ससारकान्तर नारकतिर्यङ् नरामरविविधवृक्षजालदुस्तर भवाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवती जमालिवत् अर्थान्नया पुन रभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्ठा माहिलवत् उभयाश्रया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानवारणोद्यत्तगुर्वीदेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनौ क इव द्रव्यलिङ्गधार्येनकश्मणवत् सूत्रार्थोभयैर्विराध्येत्यर्थः अथवाद्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठानं मेवाज्ञाततया तदकरणेत्यर्थः इत्येयमित्यादि गता

निदंसिज्जाति उवदंसिज्जाति एवंणाए एव विस्साए एवं चरणकरणपरूवणया अ्याधविज्जाति सेत्तंदिक्खुए ॥  
सेत्तदुवालसंगेगणिपिठगे ॥ १२ ॥ इस्सेइय दुवालसंगं गणिपिठगं अ्पतीतकाले अ्पुणंताजीवाअ्पुणाए विरा-

अन्यथा पणे कडा कौधा छे निवड्ढा सूत्र थकी गूंथा छे । हेतुदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रज्ञाया जणाया भाव पदार्थ कहौजे । नाम भेद जणावि करी । निर्देशीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणौ ते ज्ञाता जाख्या । एम विशेष पणे जाख्या । चरण ते पांच महाव्रत रूप करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा । जिहा कहिये ते दृष्टिवाद बारमो चग जाणिवी ॥ १२ ॥ एह बारे अग कहवाछे । गणी कह ता आचार्य तेहने पेटी रत्नकरड समानछे । इत्यादि द्वादशांग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आश्राने विराधी खडी ने चार अत केहडाछे नरकादिक लक्षण एहवी संसार कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिष्ठतवत् भमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिठगप्रति व

यथैव नवरं परिताजीवाइति सख्येयाजीवा वर्त्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां संख्येयत्वात् अणुपरियट्ति अणुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्चैयमित्यादि इदमपि भावितार्थं मेव नवर मणुपरियट्ति अणुपरावर्त्तन्ते पर्यट्थतीत्यर्थः इच्चैयमित्यादि कण्य नवर विद्वयसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्गति कससारीक्षणैः सुतिमवाप्ता इत्यर्थः एव प्रत्युत्पन्नेषु नवर मय भिष्येषः वीद्वयसुत्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते येव नवर वीवद्वसुत्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यतीत्यर्थः यदिद मनिष्टेतरभेदभिन्न फल अतिपादित मेतत्सदावस्थायित्वे सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसंगे इति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यतीत्यर्थः

हिता चाउरंतसंसारकंतरं अणुपरिग्रहिसु इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिठ्ठं पटुप्यसेकाले परित्ताजीवा अणुणाए  
विराहिता चाउरतसंसारकंतरं अणुपरिग्रहति इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिठ्ठं अणुताजीवा  
अणुणाए विराहिता चाउरतसंसारकंतरं अणुपरिग्रहिससति इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिठ्ठं अणुताजीवा  
अणुताजीवा अणुणाए अराहिता चाउरंतसंसारकंतरं विइवइंसु एवंपटुप्यसेवि अणुणागएवि दुवालसंगं

तमानकाले परित्यासख्याता जीव मनुष्य आज्ञाने विराधेने चातुरत संसार कांतार प्रति अनुपरावतं भमे छे । एह हादशांग गणिपिडगने । अनागत भविष्यकाले अनंताजीव आज्ञाने विराधेने चातुरत संसार कांतारप्रते भमस्ये । एहवा हादशांग गणिपिडगप्रते अतीतकाले अनताजीव आज्ञाने अराधी ने चातुरत संसार कांतारप्रते पार पामताहुआ । एम वर्तमानकाले पार पामे छे । एम भविष्यकाले पार पामस्ये । एह हादशांग गणिपिडक । नही क दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथी एमनहो । नही किवारे अतीतकाले नासीत् नहुती एमनही । तथा भविष्यकाले तिवारे नही होय एम नहीछेहडो

त्यादि द्वादशाङ्गमिष्यलङ्कारे गणिपिटकं नकदाचिन्नासौ दनादित्वा नकदाचिन्नभवति सदेवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतिहिं भुविचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेद त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुव मेवादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत म्यश्चास्तिकायेषु लोकावचनवत् नियतत्वादेव शास्त्रत समयावलिकादिषु कालवचनवत् शास्त्रतत्वादेव वाचनादिप्रदानेभ्य चय गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मज्जदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्वहिः समुद्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्नमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रत दृष्टान्त मन्त्रार्थ आह सेजहानामएदृश्यादि तद्यथा नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास त्रित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्देवेति एष्यणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्ग

गणिपिटकं नकदाचिन्नभवति सदेवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतिहिं भुविचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेद त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुव मेवादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत म्यश्चास्तिकायेषु लोकावचनवत् नियतत्वादेव शास्त्रत समयावलिकादिषु कालवचनवत् शास्त्रतत्वादेव वाचनादिप्रदानेभ्य चय गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मज्जदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्वहिः समुद्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्नमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रत दृष्टान्त मन्त्रार्थ आह सेजहानामएदृश्यादि तद्यथा नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास त्रित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्देवेति एष्यणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्ग

गणिपिटकं नकदाचिन्नभवति सदेवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतिहिं भुविचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेद त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुव मेवादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत म्यश्चास्तिकायेषु लोकावचनवत् नियतत्वादेव शास्त्रत समयावलिकादिषु कालवचनवत् शास्त्रतत्वादेव वाचनादिप्रदानेभ्य चय गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मज्जदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्वहिः समुद्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्नमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रत दृष्टान्त मन्त्रार्थ आह सेजहानामएदृश्यादि तद्यथा नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास त्रित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्देवेति एष्यणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्ग

नही तेमाटे हुतो तोसू । एह द्वादशांग पूर्वहुता हिबडा के आगलि होरये एतले चिहुकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव निश्चले वली नियतछे । सदाभावी पचास्तिकायनीपरे जयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शास्त्रतछे समयादिकालनीपरे वली अचय पद्मज्जदहने विपे गंगासिन्धुना प्रवाहनीपरे पचास्तिकायनीपरे वली अवस्थित जम्बूद्वीपनीपरे वली नित्य आकाशनीपरे साप्रत दृष्टांत देखाडीयेछे । तेयथानाम जिम पचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा रे अतीतकाले नही न हती एम वर्तमान काले किवा रे नही हुस्ये एमनही । एह पचास्तिकाय हुती अतीत काले आगलिकाले होस्ये । वर्तमानकालेछे । ध्रुव नियत शास्त्रत नित्य । एह पदार्थ वखाण्छे । एणे दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवा रे अतीतकाले न

गणिपिठके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोग' तत्रभवन्तोतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः  
सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा तएवानता अभावा इति खपरसत्ताभावाभयोभयाधीनत्वाद्ब्रुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवालमनाभावो जीवालमनाचाभावो  
इत्यथा जीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्मापेक्षया अनताभावाः अनताऽभावाः प्रतिवस्वस्वित्वनास्तिताभ्या अतिबद्धा इति व्याचक्षन्ते तथा अनन्ताहेतवः तत्र हि

सर्वभावानामिव पररूपेणासत्त्वात् अनन्तताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तिवनास्तिवाभ्यां आतन्त्र्यात् शतं यानि  
 इत्यथाऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्मापेक्षया अनन्तताऽभावाः अनन्तताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तिवनास्तिवाभ्यां आतन्त्र्यात् शतं यानि  
 न कयाइ न नविस्संति नवि न्वंतिय न्विस्संतिय धुवा णितिया सासया नकयाइ ननविस्सइ नुविं  
 या णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिऊगे न कयाइ ण आसि नकयाइ नल्ल्या न्णंतान्नावा न्णंतान्नावा न्णंतान्नावा  
 च न्वति न्विस्सइय धुवे जावन्वविठिण्णिच्चे एत्थणं दुवालसंगे गणिपिऊगे न्णंतान्नावा न्णंतान्नावा न्णंतान्नावा  
 वा न्णताहेऊ न्णताअहेऊ न्णताकारणा न्णताअकारणा न्णंतान्नावा न्णंतान्नावा न्णंतान्नावा

वा व्युणताहर्ज व्युणताश्चेह ज्ञेयम् । भविष्यकाले किंवारे नथी एमनही । हुतो के होस्य एतल त्रिकालान्तरात् अन्ता हुती एम नही । वर्तमानकाले किंवारे नथी एमनही । भविष्यकाले किंवारे नहोय एमनही । हुतो के होस्य एतल भावपदार्थ अनंता हिवा जिहां लगी अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहालगी कहिवी । एणे दादशाग गणिपिटक्कने विधे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनंत हेतु व छे । अनन्ता अभाव पीतानी अपेक्षायि आपणपो परने विधे नही एह अभाव तेही अनन्ता । हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामे ते हेतु व स्तु पणे अनंतके । तद्विशिष्ट अर्थपरिण अनंतके । हेतुनालक्षणयी विपरीत अहेतु तेही अनंत के । मृत्पिंडादिक जिम घटना कारण तेही अनंत के । अभव्य मृत्पिंडादिक घटना कारण तेपटना अकारण के तेही अनंतके । जीव अनंतके । गजीव रूपाणकादिक पुद्गल तेही अनंतके । भव्य जीव अनंतके । अभव्य

नयेति खचराद्यतुर्लं चर्मपचिणो लोमपचिणः समुहपचिणो विततपचिणश्च तनाद्यौ द्वौ वलुगुलीहसादिभेदा वितरौ द्वौपान्तरेष्वेव स्तः सर्वेच पञ्चेन्द्रियति  
येनो मनुष्याच्च द्विधा सम्मूर्च्छिमा गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च तत्र सम्मूर्च्छिमाः नपुसकाएव इतरेतु त्रिलिङ्गाइति गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या स्त्रिधा कर्म्मभूमिजा अकर्म  
भूमिजा अन्तरद्वीपजायेति कर्मभूमिजा द्विविधा आर्या स्त्रेच्छाश्च आर्याद्विधा ऋद्धिप्राप्ता इतरेच तत्र प्रथमा अर्हदादयः द्वितौयानवविधा क्षेत्रजातिकुलक  
र्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यभेदात् देवाश्चतुर्विधा भवनवास्थादिभेदा असुरनागादयः व्यन्तरा अष्टविधा पिशाचादयः ज्योतिष्काः प  
ञ्चधा चन्द्रादयः वैमानिका द्विधा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च कल्पोपगाद्वादशधा सौधर्म्मादिभेदात् कल्पातीता द्विधा श्रैवेयकाअनुत्तरोपपातिकाश्च श्रैवेयका  
नवधा अनुत्तरोपपातिकाः पचधेति एतत्समस्त सूत्रकृतोक्त जावसेकित अनुत्तरेत्यादि पूर्वोक्तमेवजीवराशि दण्डकक्रमेण द्विधादर्शयन्नाह इत्युविहेत्यादि सु

गविहा ॥ जावसेकिंतञ्णत्तरोववाइञ्चा अणुत्तरोववाइञ्चा पच्चविहा पन्नत्ता तंजहा विजय वेजयंत ज  
यंत अपराजित सद्धसिद्धिञ्चा सेतंअणुत्तरोववाइञ्चा सेतंपचेन्द्रियसंसारसमावस्यजीवरासी ॥ दुविहाणेर  
इया पन्नता तजहा पज्जात्ताय एवंदक्खेत्ताणियहो जाववेमाणियत्ति इमीसेणंरयणप्पन्नाए प्पुढ

हा लीं अनुत्तर विमानआवे । स्यूते अनुत्तरोपपातिका । तेषांच प्रकारे कह्या तेकहेछे । पूर्वं दिशि विजय विमान । दक्षिणे वैजयंत । पश्चिमे जयत । उत्तरे अपराजित । चिहुं विचे सर्वार्थ सिद्ध । एह पांच विमानना देवता पर्यासा अपर्यासा । ते पंचेद्रिय ससार प्राप्त प्राप्त जीव रागि एक भेद बीजो ते असंसार प्राप्त जीवराशि सिद्धनाजीव । बे प्रकारे नारकी कह्यो ते कहे छे । पर्यासा नारकौमाहि आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३

मचूर्यनुसारेण लिख्यते किल विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकावाह्याश्च तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति ते च वृत्तत्यसचतुर  
स्त्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषां च मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकावाह्यासु पुष्पावकीर्णं दिग्गविदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासंस्थानसंस्थि  
ता इति निरयसंस्थानव्यवस्था तत्र च बाहुल्यमङ्गोक्तयेद मभिधीयते अतोवेष्ट्यादि उक्तं च सूत्रकवृत्तिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यान्तर्मध्ये  
वृत्ता वहिरपि चतुरश्रा अधश्च क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता एतच्च संस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्त तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टासु वृत्तत्यसचतुरस्त्रस  
स्थानाभवन्तीति तत्रातर्हता मध्ये शुषिरमाश्रित्य वहिश्चतुरस्त्राः कुब्जपरिधिमाश्रित्य यावत्क्षरणादिदं दृश्य यदुत अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता भूतलमाश्रित्य  
क्षुरप्राकारा स्तद्भूतलस्य सचारिसत्वपादच्छेदकत्वात् अन्यत्वाद् स्तेषामधस्तनाशः क्षुरप्रद्वयार्थे ऽग्रे प्रतलोविस्तीर्णश्चेति क्षुरप्रसंस्थानता तथा निचुधयारतमसा  
ववगयगहचदसूरनक्वताजोऽसृष्टमहामेयवसापूर्यरुहिरमसचिक्खिलित्तानुलेवणतला असुइयीसापरमदुग्धिगंधाकाज्जगणिक्खाभाकक्खडफासादुरभियास  
इति तत्र नित्य सर्वदा अन्यकार अन्यताकारकं स्बहलवलाहकपटलाच्छादितगगनमडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव समस्तमिच्छ येषु ते नित्यान्धकारतमसः

## तेणंणिरयावासा ज्यंतोवहा वाहिचउरसा जावज्जुसुज्जाणिरया ज्जुसुज्जानुणिरएसुवेयणानु एवंसत्तविज्जाणिय

चउखूणा नरकावासा वेप्रकारना छे । एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकावाह्य तेषां हि आवलिका प्रविष्ट ते आठ दिशिने विषे छे ते वृत्त ज्यस्त्र चतुर  
स्त क्रमे जाणिवा । एहमाहि इन्द्रक ते वाटला सीमतादिक अने आवलिकावाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अतराले नाना संस्थान संस्थित छे ।  
जिहांलगे महा अशुभछे नारकी वेदना भोगवे छे । एमज साते नरक पृथिवी कहिवौ जे बाहुल्य पण नरकावासा परिमाण पृथिवीये जोइये तेगाथा



अथवा नित्येनान्धकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थः तमसस्तमिथा नित्यान्धकारतमसः जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थः कथमित्यत आह व्यप-  
गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षणे विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पृच्छति पथ-  
ग्रह्णो वाय व्याख्येयः तथा मेदी वसा पूयरुधिरमांसानि शरीरावयवा स्तेपां यच्चिक्खि कर्दम स्तेन लिप्त सुपदिग्ध मनुलोपनेन सकृत्क्षिप्तस्य पुनः पुनर्लोपनेन  
तल भूमिका येषां गते मेदीवसापूयरुधिरमांसचिक्खिलिप्तानुलोपनतला यथापिच तत्रमेदः प्रभृतीन्चौदारिकपचैद्विग्रशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियश-  
रीरत्वान्धारकाणां तथापि तदाकारा स्तत्रप्रोचन्त इति अशुचयो मिथाः आमगन्धयः पूर्तिगंधयइत्यर्थः अतएव परमदुरभिगंधाकाजअगणिवस्था  
भस्ति कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषां गते कृष्णाग्निवर्णाभाः तथा कर्कशः स्पर्शो येषांति कर्कशस्पर्शा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढुं शक्यते  
वेदना येषु ते दुरधिसह्याः अतएवाशुभानरकाश शुभानरकेषु वेदना इति एवसत्तविभाषिण्यव्वत्ति प्रथमा ममुच्चता सप्तइत्युक्तं जजासुज्जइत्ति यच्च अस्यां अर्ध-  
व्या वाहस्यस्य नरकाणाच परिमाण युज्यते स्थानान्तरीक्तानुसरिण तच्च तस्यां वाच्य तच्चेद असीतंगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकजनलच रत्नप्र

इानु जंजासुज्जइ असीयवत्तीस अष्टावीसंतहेववीसंच अष्टारससोलसगं अष्टुत्तरमेववाज्जलं ॥१॥ तीसा

माहि कहेळे । पहिलीये १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पंड । बीजीये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवी पंड । बीजीये १ लाख २८ हजार योज-  
न पृथिवी पंड । चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवी पंड । पांचमीये १ लाख १८ हजार योजन पृथिवी पंड । छठ्ठीये १ लाख १६ हजार योजन  
पृथिवी पंड । सातमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवी पंड । पहिलीये ३० लाख नरकावासा । बीजीये २५ लाख बीजीये १५ लाख । चौथीये १०

भायाम्बाहृत्यमेव शेषासुभावनीय तथा त्रिशङ्खचाणिप्रथमायां नरकावासाना मिलेव शेषास्त्रपिनियमिति आवासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौ धर्मादीना च कल्पेतराणां सूत्रैर्वक्ष्यतीति तन्निवासपरिमाणसङ्ग्रहः चउसष्टीइत्यादि गाथाः पच एवचेहसूत्राभिलाषोदृश्यः सकरप्यभाएणुदुवोएकेवइयंओगा

यपस्सवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिसिंसेगंपच्चूणं पचेवञ्चुणत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसष्टीञ्चुसुराणं चउ  
रासीइचहोइनागाणं बावत्तरिसुवन्नाणं बाउकुमाराणळस्सउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंद  
थणियमग्गीणं ठरहंपिजुवलयाणं बावत्तरिमोयरायसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा वारसञ्चुचउओसयस  
लाख । पाचमीये ३ लाख । छठ्ठीये ५ ऊणाएक लाख । सातमीये ५ नरकावासा जाणिवा ॥ २ ॥ चमरेद्रना भवन ३४ लाख वलींद्रना ३० लाखे बिहुमि  
ली ६४ लाख असुरकुमारना भवन । तथा धरणेद्रना ४४ लाख भूतानेद्रना ४० लाख बिहुमिली ८४ लाख भवन नागकुमारना । तथा वेणुदेवना ३८  
लाख वेणुदालीना ३४ लाख बिहुमिली ७२ लाख भवन सुपर्णे कुमारना । तथा बेलवना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख बिहुमिली ८६ लाख  
वायुकुमार ना भवन । तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्टना ३६ लाख बिहुमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख । एक युगल । अमितगति नां ४० लाख अमित  
नाहनना ३६ बिहुमिली ७६ लाख । दिसाकुमारना । बीजीयुगल । तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना । त्रीजु युगल । हरि  
कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना । चौथी युगल । घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख बिहुना मिली  
स्नानिकुमारना ७६ लाख । पांचमी युगल । अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन । एह कट्टी युग

हिंता कैवल्यानिरया पञ्चता गीयमा सक्करणभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजीयणसयसहस्र वाहल्लाए उवरिएगंजीयणसहस्र वज्जितामज्झतीसुत्तर जीयणसं यसहसेएत्थण सक्करणभाए पुढवीएनेरइयाणंणवीसिनिरयावाससयसहस्रामभवतीति मक्खाया तेणनिरएइत्यादि एवंगथानुसारेणा न्येपि पञ्चालापकावाच्या इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तसुगमं नवरं गाहाहिंतिगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेणे त्वर्थाः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

हस्सा पस्साचत्तालीसा ठच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ ज्ञाणयपाणयकप्पे चत्तारिसथारणञ्जुएतिन्नि । सत्तवि माणसयाइं चउसुविएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्जिमए सयमेगंडवरिमए पंचेवज्जुणुत्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएणं पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए ठ्ठहीए पुढ

ल एणी विधियें एह प्रवोक्त छ युगलना छीत्तर लाख भवन कट्ठा । हिवे १२ देवलोके ८ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मांहि सर्वविमान नी संख्या कहैछे । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशाने २८ लाख । सनत्कुनारें १२ लाख । माहेद्रे दलाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांत के ५० हजार विमान । शुक्रे ४० हजार । सहस्सरारे ६ हजार विमान । सहस्सरालगे सहस्र कहिये । आनत प्राणत नीमे दशमे देवलोके ४ से विमान । आरणे अच्युतमिली ३०० । नीमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुदेवलोकेमिली ७०० विमान । एकसोइग्यारहविमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने विषे । मध्यमत्रिकमांहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकगैवेयके एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमान । सर्वमिली ८४ लाख ८७ हजार उपरि २३ । बीजी शर्करप्रभा पृथिवीये बीजी बालुक्कप्रभा पृथिवीये चौथो पक्कप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छठो तमप्रभा पृथिवीये सातमी तमतमा पृथिवीये

क्रम स्त्रया वदेयतंसायत्ति मध्यमीवृत्तं. शेषास्त्यस्त्रा इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवइत्यादि सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि हृत्तानि

वीए सप्तमीए पुढवीए गाहाहिंजाणियद्या सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए अष्टुत्तरजो  
यणसयसहस्साइ वाहल्लाएउवरि अष्टतेवन्नं जोयणसहस्साइ जंगाहेत्ता हेठाविअष्टतेवन्नं जोयणसहस्सा  
इं वज्जित्ता मज्जेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महा  
निरया पसत्ता तंजहा काले महाकाले रोए महारोए अणुप्यइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वहाथे तंसा

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी सख्या पिच्छाडी गाथामांहि कहिंके तिम कहिवी । सातमी नरकपृथिवीनी स्वरूप पूछे भगवंतआगलि । भग  
वत केहे । हेगौतम सातमी पृथिवीने विषे एकलाख अठुत्तर हजार योजन जाडपणे तेमाहि उपरि अईत्रेपनहजार योजन एतले साठा वावन सहस्र  
योजन अवगाहीने ऊपर सूकौने वली हेठे परि साढात्रेपन हजार योजन वर्जी ने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पायडो इहां सातमी  
तमतमा पृथिवीये नारकीना पाच अनुत्तर कहतां ते उत्तरे प्रागले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणज घणा मोटा महा नरका  
यासा कह्या तेकेहे । पूर्वदिशि काल १ दक्षिणे महाकाल २ पश्चिमे रुक्क ३ उत्तरे महारुक्क ४ पांचमी विचे अप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला  
चयस त्रिखूणिया एतले पाच नरकावासामांही अपइडाण ते वाटलो अने चिह्नदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाके अहेत्ति हेठे सुरप्र एतले  
छरपलाने सस्थाने सस्थितके । यावत् ग्रन्थे चन्द्र सूर्य रहित कईमभूत अशुभ घणो भंडो नरक के । तथा अशुभ घणो भंडो के नरकने विषे वेदना । वली

वृत्तप्राकारावृतनगरवत् अन्तः समचतुरस्राणि तदवकाशदेतस्य चतुरस्रत्वात् अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि पुष्करकर्णिकापद्ममध्यभागः साचोन्नत  
समचित्रविन्दुकिनीभवतीति तथा उल्कीर्णान्तरविपुलगभीर खातपरिखानि उल्कीर्णं भुवनमुल्कीर्य पालीरूप कृतमन्तरमताराल ययोस्ते उल्कीर्णान्तरं ते वि

य अहेखुरुष्यसंठाणसंठिया जावअसुभानरगा । असुभानु केवइयाणअंते असुरकुमारावासा  
प० गीयमा इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहव्वाए उवरि एगं जोयणसहस्सं  
अयोगहेत्ता अष्ठहत्तरिजोयणसहस्से एत्थणं रयणप्पन्नाए पुढवीए चउराठिं असुरकुमारावास सयसहस्सा  
प० तेणन्नवणावाहिवहा अंतो चउरसा अहो पोस्करकस्सिअ्या संठाणसंठिया उक्किस्संतर विउलगंभीरखाय

गौतम पूछे छे । हेभगवत केतला असुर कुमार भवनपतिना आवास कहा । अनेकिहाछे । भगवत कहेछे । हेगौतम । एणीयें रत्नप्रभा पहिली पृथिवी  
ये ८० हजार उत्तर आगलि १ लाख योजन जाडपणनी केहडो तेमाहि उपरि १ हजार लगे अवगाहीने बली हेठेपिण १ हजार योजन लगे वर्जी  
ने मध्येविचाले ७८ हजार योजन अधिक १ लाख योजनने विषे इहां रत्नप्रभा पृथिवीने विषे ६४ असुरकुमारना शत सहस्र एतले ६४ लाख भवना  
वास कहा । ते भवन पतिना भवन घर बाहिर वाटला अतो घरमाहि चोरस । चोखूणिया हेठे पुष्करकर्णिका कमलमांहिली कर्णिका डोडो तेहने  
संस्थाने संस्थितछे । उल्कीर्ण पालीरूप कीधी छे अतराल जेहनी ते उल्कीर्णंतर एहवी विपुल बिस्तीर्ण गंभीर ऊडी खात परिखा खाईछे जेह भवन  
ने उपरि विशाल हेठे सकुचित ते विहूने अतलगे विषे पाछिले एहभाव । अट्टालक गढ उपरि आश्रयविशेष चरिका नगर अने गढने बिचाले ८ ।

पुलगभीरे खातपरिखे येषां तानि तत्र खातमधउपरिच सम म्परिखाउपरि विशाला अधः संकुचिता तथोरन्तरेषु पालीअस्तीतिभावः तथा अट्टालकाः प्रा  
 कारस्थो पर्याअयविशेषाः चरिकानगरपाकारयोर्तर मष्टहस्तीमार्गः पाठान्तरेण चतुरयन्ति चतुरकाः सभावविशेषाः गामप्रसिद्धाः दारगोउरत्ति गोपुरद्वा  
 राणि प्रतीत्यो नगरस्थेव कपाटानि प्रतीतानि तोरणान्यपि तथैव प्रतिद्वाराणि अवांतरद्वाराणि तत एतेषां द्वंद्व एतानि देशलक्षणेसु भागेषु येषातानि  
 तथा इह देशोभागधानिकार्थं स्ततीन्योन्यमनयो विशिष्यविशेषणभावो दृश्यतइति तथा यन्त्राणि पापाणक्षेपणयन्त्राणि मुशलानि प्रतीतानि भुसुडयः प्रहरणवि  
 शेषाः शतद्यः शतानामुपघातकारिण्यो महाकायाः काष्टशैलस्त्राभयष्टयः ताभिः परियारियत्ति परिवारितानि परिकारितानीत्यर्थः तथा अयोधानि योध  
 यितु संग्रामयितुं दुर्गतत्वान्नशक्यते परबलै र्यानि तान्ययोधानि अविद्यमानावायोधाः परबलमुभटानि यानि प्रति तान्ययोधानि तथा अडयाल्लोठ्ठगरइय

फलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाठ्तोरणपण्डुवारदेसजागा जंतमुसलभुसंडिसयग्धिपरिवारिया अउ

ज्जा अट्टयालकीठरइया अट्टयालकयवस्समाला लाउल्लोइयमहिआ गोसीससरसरत्तचंदणदइरदिसापचंगु

हाथनो मार्ग गोपुरद्वार तेप्रतीली नगरी तेहना कमाड तेह आगली तोरण्हे तिमज प्रसिद्ध द्वार माहिला द्वार एतला देशभागने विधे यथायोग्य  
 स्थान कहेहे जेहने तथा यंचतेपाषाणनाखवाना तथा मुशल प्रसिद्ध भुसडि तेप्रहरणविशेष तथा शतघ्नी ते सोमाणसनेमारि एहवीमोटी काष्टनी तथा पा  
 षाणस्त्रभरूप लाठी तेणे करी परिवारित सहित्हे जेहने एहवा । अयोध्या पर कटक जूझ्या नजाय न भागे एहवा ४८ कोठा बुरज तेणे करी रचित  
 हे । तथा अडताल्लोस कीधाहे वनमाल तथा अडयालकदिये शोभायमान्हे वनमाला पल्लवनीमाला जेहनेविधे जेहघरनीभूमि छाणेकरी लीपौ जपरिलो

त्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रकन्दो गोपुररचितानि अन्येभ्यः अडयालशब्दः किलप्रशंसावाचकः तथा अडयालकयवसुमालंति अष्टचत्वारिंशद्भेदभि  
 न्ना प्रशसार्हाः कृता वनमाला वनस्थितिपक्षवस्त्रजो येषु तानि तथालाद्वयति यद्भूमेष्कृणादिनोपलेपन उल्लोद्वयति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सन्मृष्टीकरण  
 ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोद्वयमहितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेत यद्रक्तचन्दन चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घना  
 भ्या दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य 'सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः प  
 च्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपचाङ्गुलितलानि तथा कालागुरु गन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुदुरुक्क सीडा तुरुक्कः  
 सिरहक गन्धद्रव्यमेव एतानि च तानि उज्ज्वलितानि चेतिविग्रहः तेषा योधूमो मधमघेतति अनुकरणशब्दोय मधमघायमानो वहलगधद्रव्यार्थः  
 तेनोद्धराणि उल्लटानि तानि तथा तानि च तान्यभिरामाणि रमणीयानौतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तथा गन्ध आमीदो  
 येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगधिकानि तथा गन्धवर्त्ति गन्धद्रव्याणां गधयुक्तिशस्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानौति गधवर्त्तिभूतानि प्रव

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुर्लङ्कतधूवमघमघेतगधुष्टुयान्निरामा सुगंधवरगंधिया गंधवह्निद्रुया  
 भाग खडोयै करी धोव्यो तेनेकरी महित पूजितके जेह । गोशीर्षचन्दनविशेष रक्तचन्दन तेबिहु दर्दर निविडपणे दीधाके पचागुलितला हाथा भीतिने विषे  
 हाथा दीधा के । कृणागर प्रवर प्रधान चीड तुरुक्कसिलहारस एह पूर्वोक्त उज्ज्वल दह्यमान दाभता तेहनो जे धूप मधमघायमान बहुल गध तेणे करी  
 सत्कट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिया । तथा सुगवत्ति सुगंध सुरभि वर प्रधान गध तेनेकरी गधितके गधवतके तथा गधनी वाती तेह समान

રગધગુણનીત્યર્થઃ તથા અચ્છાનિઆકાશસ્ફટિકવત્ સ્પર્હતિ જ્ઞાણાનિ સૂક્ષ્મસ્કન્ધલનિધ્યન્નત્વાત્ ક્ષણદલનિધ્યન્નપટવત્ લગ્નહત્તિ મસ્ટણનીત્યર્થઃ ઘટિતપટથ  
 ત્ વઘ્નતિ ઘટાનીવઘ્નઘટાનિ ચુરશાણયાપાષાણપ્રતિમાવત્ મઘ્નતિ ઘટાનીવઘ્નઘટાનિ સુકુમારશાણયાપાષાણપ્રતિમેવ શ્રીધિતાનિવા પ્રમાર્જનિકાયેવ અતएय  
 નીરયત્તિ નીરજાંસિ રજોરહિતત્વાત્ નિશ્ચલત્તિ નિર્ગળાનિ કઠિનમલાભાવાત્ વિતિમિરાણિ નિરમ્યકારત્વાત્ વિશુદ્ધત્તિ વિશુદ્ધાનિ નિષ્કલહ્નત્વા ન્નચન્દ્રવ  
 ત્ સકલંકાનીત્યર્થઃ તથા સપ્પહત્તિ સપ્રભાણિ સપ્રભાવાણિ અથવા સ્વેનાત્મના પ્રમાનિ શોભન્તે પ્રકાશન્તે ચેતિ સ્વપ્રભાણિ યતઃ સમરીયત્તિ સમરીચીનિ સ  
 કિરણાનિ અતएव સહજોયતિ સહજોતિન વસ્ત્વન્તરપ્રકાશનેન વર્ત્તતદ્વતિ સોદ્યોતાનિ પાસાદીયાનિ મનઃપ્રસન્તિકારાણિ દરિસણિજ્ઞાન્તિ  
 દર્શનીયાનિ તાનિહિ પચ્ચ ચ્ચુષા નચ્ચમજ્જ્ઞચ્છતૌતિભાવઃ અભિરૂવત્તિ અભિરૂપાણિ કમનીયાનિ પડિરૂવત્તિ પ્રતિરૂપાણિ દ્રષ્ટારપ્રતિ રમણીયાનિ નૈકસ્ય  
 કસ્યચિદેવત્યર્થઃ એવમિત્યાદિ યથા સુરકુમારાવાસસૂત્રે તત્ત્વરિમાણમભિહિત મેવામેવમિતિ યથાયદ્વનાદિપરિમાણ યસ્ય નાગકુમારાદિનિકાયસ્ય ક્રમતે

**અચ્છા સરહા લરહા ઘઠા મઠા નીરયા ણિમ્મલા વિતિમિરા વિસુદ્ધા સપ્પન્ના સમરીયા સહજોઘ્ણ પાસા**

છે અચ્છાઆકાશનીપરે સ્ફટિકનીપરે । જ્ઞાણ સૂક્ષ્મ પુદ્ગલે કરી નીપનો છે । લગ્નહત્તિ સુકુમાલ કૌધા છે ઘંઘ્યા વસ્ત્રની પરે । ઘઘ્નતિ ચુરશાણેકરી પાષા  
 ણપ્રતિમાનીપરે વસ્યા છે । મઘ્નતિ ઘણીસુકુમાલશાણેકરી પાષાણપ્રતિમાની પરે મઠારા છે એણે કારણે નીરજ રજરહિત નિર્મલ મલરહિત છે । વિતિમિરા  
 અંધકાર રહિત છે । નિષ્કલક છે । પ્રભાકાતિ તેણે સહિત છે । ઔશોભા તેણેકરી સહિત છે । હદ્યોત પ્રકાશ સહિત છે । મનને પ્રસાદ કરે તેમાટે દેખવાયો  
 ય છે । કમનીય છે દેખણહારપ્રતે રમણીક છે । એમજ જેહનો જે જે જ્ઞાન પ્રમાણ મનોહરપણી અસુરકુમાર સૂત્રને વિષે કહ્યો છે । જે જે ભાવ ગાથાયેં મળ્યો તે



घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविधं तत्परिमाणमतआह जंजंगाद्वाहिं भणियं यद्यत्रगाथाभिः चउसद्विअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तथावाच्यतहेत्याह तहचेववणओत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवरणकउक्त स्तथा सर्वधामसीवाच्यइति तथाहि केवइयाणंभंते नागकुमारावासापस्यता गोय मा इमीसेणंरयणपभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्रपमाणाएउप्पि' एगजोयणसहस्र'ओगाहेत्ताहेष्ठापेगजोयणसहस्र'वज्जेत्ता मज्जेअठ्ठहत्तरं जोय

ईया दरिसणिज्जा अण्णिरूवा पण्णिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं णणियं तहचेववससु केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गोयमा असुखेज्जा पुढविकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सत्ति के वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणामयस्स कंठस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं अओगाहेत्ता हेष्ठाचेगंजोयणसयवज्जेत्ता मज्जे अठ्ठसुजोयणसएसु एत्थ

तिमज वर्णनकरिवो । नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो । वली गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्या पृथिवी रहिवानाठाम भगवत कहेछे हेगौतम । असख्याता पृथिवीकायिकावासा छे । एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असख्याताछे । एमज वेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरिन्द्रिय तिर्यचपचेन्द्रिय असख्याता कहिवा मनुष्यना ठाम असख्याता कहिवा एतले गर्भज मनुष्यसख्याता कहिवा । अने समूर्च्छिम मनुष्य असख्याता कहिवा । वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमतारावासा व्यंतरनारहिवानाठाम । भगवंत कहेछे । हेगौतम एण्ये रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकांडछे तेमांहि पहि लो १६ सहस्र योजन कांड तेमांहि पहिलो १ सहस्र योजन रत्नकांडछे तेह रत्न कांडनी योजन सहस्रनी वाहुल्यपणी तेहने विषे उपर एकसीयोजन

णसहस्रो एतयण रयणप्पभाएशुलसौइनागकुमारोरावाससयसहस्रा पणत्ता तेणंभवणाइत्यादौनि केवइयाणंभते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु-  
त्क्रान्तिकानां असख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संमूर्च्छिमानांत्वसख्यत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाण

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा ओमेज्जा नगरावाससयसहस्रा प० तेणंओमेज्जानगरा बाहिंबहा  
अंतोचउरंसा एवंजहान्नवणवासीणं तहेवणेयह्वा णवर पफागमालाउला सुरम्मापासाइया दरिसणिज्जा अण्णि  
रूवा पफिरूवा । केवइयाणंनते जोइसियाण विमाणावासा प० । गोयमा इमीसिणं रयणप्पज्जाए पुढवी  
ए वज्जसमरमणिज्जानु भूमिन्नागानु सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उहु उप्पइहा एत्थणं दपुत्तरजोयणएहु वा  
हस्रे तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं अ्सखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेणं जोइसियविमाणा

वर्जी ने पछे वली हंटे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगत्वा इहा वाणअत्तर देवना तिरिखा लोक मांहि असख्यात भूमि  
सत्रधी नगरना आवासना लाख कह्या । ते भौमिय नगरवासा बाहिर बाटला मांहि चउरंसा चौखूणा । एमज जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहा  
पणि नवर एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्म रमणीकछे । देखबायोग्यछे । वली  
गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनी घणीज सम रमणीक भूमिभाग तेहथकी  
सातसेनैजयोजन लगे ऊंची उत्पतीने जइने इहां १० योजनना बाहुल्यपणां मांहि एतला आकाश प्रदेशना जंचपणामांहि जोतिषीनी विषयव्याप्येछे

भतेजीइसियाणविमाणवासाइत्यादि अभुगयमुसियपहसियत्ति अभुहता सज्जाता उत्सृता प्रवतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दीप्ति स्तया सिताः शुक्ला इत्यभ्युद्गतोत्सृतप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय चन्द्रकान्तादयो रत्नानि कर्कतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि चित्रास्त्रि चवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्भूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तु स्र्विता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा विजयाइति वैजयन्तीनाम्यार्श्वकर्णिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयत्य स्ताश्च त द्वर्जिताः पताकाश्च कृत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्भूतविजयवैजयन्तीपताकाकृत्रातिच्छत्रकलिता इति तुगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहंतसिहरति गगनतल मम्बरमनुलिखदभिलंघयच्छि

## वासा अप्रुगयमुसियपहसिया विविहमणिरयणनत्तिचित्रा वाउठुयविजयवेजयंतीपद्मागलत्ताइलत्तकलि

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्चर भूमिथकी ७०० नेजयोजन तारामडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते जपरि ८० योजने चद्रमा ते जपरि ४ योजन नक्षत्र ते जपरि ४ योजन बुध ते जपरि ३ योजन शुक्र ते जपरि ३ योजन बृहस्पति ते जपरि ३ योजन मंगल ते जपरि ३ योजन शनैश्चर छे । तारा मडलयकी शनैश्चर १०० योजन माहि सर्व जोतिषीछे । ज्योतिषीना देवता असख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या । तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाछे । अभुद्गत कहतां जपना चिहुदियि प्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेणिकरी शुक्ल जजला जेहनी एहवा । अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकातादि क रत्ने कर्कतनादिक तेहनी भक्ति भाति तेणिकरी चित्रा चित्रवत छे । वली केहवा आश्चर्यवत छे । वायरे कपावी विजय वैजयती पताका ने उपरि छत्र तेणे करीने कलितके । एतावता व्यासछे । वली केहवाछे । अति जंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलवताछे शिखर जेहना । घरनी भीतिने विषे जा

खरं येषान्ते गगनतलाऽनुलिखच्छिखराः तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषान्ते जालान्तररत्नाः इह प्रथमाबहुवचनलोपी द्रष्टव्यः जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीतान्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सभ्रवत्येवेति तथा पञ्चरोम्बीक्षिताइव पञ्जरबहिःकृताइव यथा किलकिञ्चिद्वलुपञ्जरा वृथा दिमयप्रच्छादनविशेषाद्विहःकृतमत्यतमविनष्टच्छायत्वा च्छोभते एवन्तेपीतिभावः तथा मणिकनकानां सखन्विनी स्तूपिकाशिखर येषां तेमणिकनकस्तूपि काका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमयाश्चये अर्धचन्द्राद्वाराद्यादिषु तैश्चित्रायते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्धचन्द्रचित्रा स्तथा अन्तर्द्विहच स्रज्ज्वा मण्डणादित्यर्थः तथा तपनीय सुवर्णविशेष स्तन्मथ्या बालुकायाः शिकतायाः प्रस्तु टः प्रतरीयेषु तेतपनीयबालुकाप्रस्तुटाः पाठान्तरे तु स्रग्हशब्दस्य बालुकाविशेषणत्वात् स्रज्ज्वातपनीयबालुकाप्रस्तुटा इतिव्याख्येय तथा सुखस्रग् शुभस्रग्

या तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतरयणपंजरस्मिलियवृमणिकणगत्युज्जियागा वियसियसयवत्त पुं  
 ऋरीयतिलयरयणरुचदचिन्ता व्युतोबाहिंचसरहा तवणिजावालुव्यापत्यका सुहृक्तासा स्रस्सरीया पासाईया  
 लियां तेहना आतराने विषे शोभाने मर्थं रत्नकंकतनादिक छे । पांजरायको उन्मीलित बाहिर कौधा जेहवा तेजपुजइए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी  
 यभिका शिखर छे जेहना । बली केहवाछे विकसित जे शतपत्र कमल पुडरीक के द्वार देशने विषे । तथा भीतिने विषे तिलक छे । तथा रत्नमय अर्धचंद्र  
 द्वारविभागें के तैण्केरी चित्रित छे । अतो घरमाहि तथा बाहिर स्रज्ज्वा सुकुमाल छे । तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी बालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे ।  
 बली केहवाछे । सुखस्रग् सुकुमाल फरसछे । शोभायमानछे । रूप मनुष्य युरमादिकना जिहा । बली केहवाछे । चित्तने प्रसन्नकरे बली देखिमा योग्यछे ।

वा तथा सञ्चीक सञ्चीभरूपमाकारोयेषां अथवा सञ्चीकाणि शोभावन्ति रूपानि नरयुग्मादीनि रूपकाणि येषुते सञ्चीकरूपाः प्रासादीया दर्शनीयाः अभि  
रूपाः प्रतिकूपाद्गतिपूर्ववत् केवइएत्यादि रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणिज्जाओभूमिभागाओत्तिबहुसमरमणीयस्यभूमिभागस्य जड उपरि तथा चन्द्रमः  
सूर्यग्रहगणनचत्रतारारूपाणि णमित्यलकारे वीइवइत्तत्ति व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्येत्यर्थः तारारूपाणि चेह तारका एवेति तथा बह्वनीत्यादि किमित्याह  
जडं सुपरि दूरमत्यर्थव्यतिव्रज्य चतुरश्रीति विमानलचाणि भवतीति सबध इति मक्खायत्ति इति एवप्रकारा अथवा यती भयति तत पाछात्ताः

दरिसणिज्जा केवइयाणंभतेवेमाणियावासा प० । गोयमा इमीसेणंरयणप्यजाएपुढवीएवज्जसमरमणिज्जाने  
भूमिन्नागाने उहुं चंदिमसूरियग्रहगणनरक्त्ततारारूवाणं वीइवइत्ता बह्वणिजोयणाणि बह्वणिजोयणसयाणि  
बह्वणि जोयणसहस्साणि बह्वणिजोयण सयसहस्साणि जोयणकोफ्फीने जोयणकोफ्फाकोफ्फीने अयसखेज्जाने  
जोयणकोफ्फाकोफ्फीने उहुं दूरं वीइवइत्ता एत्थण वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाणसणकुम्मारमणिहेदुबंजलत्तग

बली गौतम पच्छेहे । केतला हेपूज्य वैमानिकावासा वेमानिक देवताना विमल निर्मल विमानरूप आवासा कक्षा । हेगौतम एणोये रत्न प्रभा पहिली पृ  
थिवीनी वली घणीसम रमणीक भूमिभाग थकीजंको चद्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूपने व्यतिक्रमीने घणांयोजन घणांयोजननासेकडा घणांयोजन  
ना हजार घणांयोजननालाख घणांयोजननीकोडो घणीयोजननीकोडो असंख्यातायोजननीकोडोकोडोने ऊपरि दूरं उलंघीने इहां वैमानिकदेवतासौ  
धर्म ईशान २ लगडाकार बरावरिछे । तेऊपरि सनत्कुमार माहेद्र बरावरिछे । तेऊपरि लांतक । तेऊपरि शुक्र । ते ऊपर सह

सर्ववेदिनेति तेषति तानि विमानानि यमिति वाक्यालकारे अर्चिमालिष्यभन्ति अर्चिमाली पादित्य सद्व्यभंति शोभन्ते यानि ताव्यर्चिमालिप्रभाणि तथा भासानां प्रकाशानां राशिर्भासरशि स्तस्य वर्णं स्तव्वदाभा ह्याया वर्णो येषां तानि भासरशि वर्णानि तथा परयसि परजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् नीरयसि नीरजासि आगंतुकरजो निरहात् निमलन्ति निर्मलानि कक्खडमलाभावात् वितिमिरन्ति वितिमिराणि ग्रहा र्यान्वकाररहितत्वात् विशुद्धानि स्वाभाविकतमो विरहा ककलदोषविरमादा सर्वरत्नमयानि नदार्वादिदलमयानीत्यर्थः प्रच्छान्याकाशस्फटिकवत् स्रक्ष्यानि

सुक्कसहरस्सारञ्चाणयपाणयञ्चरणञ्चुणसु गेवेज्जगमणुत्तरेसुय चउरासीइं विमाणावाससयसहरस्सा सत्ताण उइचसहरस्सा तेवीसंचविमाणाज्जवंतीतिमस्काया । तेणविमाणा अण्णिमालिष्यन्ता ज्ञासरासिवस्साजा अरया नीरया णिममला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अण्ण्हासरहा लरहा घठा मठा णिष्यका णिह्णककूच्छा

सार । तेऊपर आनत प्राणत लगडाकारिहे । तेऊपर आरण प्रच्युत । एवं १२ देवलीक यया । ते ऊपर ६ ग्रैव्यक ऊपरां ऊपर ५ अनुत्तर विमान । ए के प्रतरे चिहुपासे ४ विजयादिक विमान विचे सर्वाधसिद्ध । एवं १२ देवलीक ६ ग्रैव्यक ५ अनुत्तर विमान मिलौने सगला ८४ लाख ६७ हजार २३ विमानहे ते भगवंते कह्वाहे । तेविमानकेहवाहे । अर्चिमाली सूर्यनी सरीखी प्रभाहे जेहनौ । प्रकाश दौतिराशि सरोखी बर्यहे जेहनौ । स्वाभाविक र जना प्रभायौ रज रहितहे । कठिन मलना प्रभावथी निर्मलहे । अधकार रहितहे । स्वाभाविक ग्रंथकार रहितपण्याथी विशुद्धहे । बली सर्वरत्न मयी हे । आकाशनी परे अच्छहे । स्फटिकरत्ननी परे स्रक्ष पुहलथी नीपनाहे । सुकुमाल कीधहे । खरशरणे करी पाषाण प्रतिमानी परे घठासाहे । सकु

सूक्ष्मस्वधमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपकारि कलंकविकलत्वात् ।  
 कईमविशेषरहितत्वाद्वा । निष्कंकटा निःकसुका निरावरणा निरुपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति येषां तानि निष्ककटकायानि सप्रभाणि प्रभावंति  
 समरीचीनि सकिरणानौत्यर्थः सोद्योतानि वस्वतरप्रकाशनकारीणौत्यर्थः पासाइएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणभते कप्येन्नैवइयाविभाणावासापसृता गो  
 यमा बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पशुत्ता एवभीशानादिष्वपि द्रष्टव्य एतदेवाह एवईसाणाइसुत्ति एव गाहाहि भाणियज्जति बत्तीसअठ्ठवीसा इत्यादि  
 काभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्तदनुसारेणेत्यर्थः प्रतिकल्प भिन्नपरिमाणविमानावासा भणितव्या स्तद्वर्णकश्चवाच्यो जावतेणविमाणेत्यादि यावत्पण्डिरुवान् ।

या सप्यन्ता सस्सिरीया उज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अण्णिरूवा पण्डिरूवा । सोहम्मेणंनतेकप्ये केवइया  
 विमाणावासा प० । गोयमा बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा प० । एवईसाणाइसुअण्ठावीस वारस अष्ट  
 चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पस्सास चत्तालीसं ठसहस्साइं चत्तारिसयाइं तिसिसयाइं गाहाहिंन्नाणि

मार शाणैकरी पाषाण प्रतिमानौ परे षस्याच्छे । कलक रहित छे । बली आवरण रहित जेहनौ छाया दीप्तिछे । प्रभा सहितछे शोभायमानछे । उ  
 द्योत सहितछे । बली समीप रही वसुने प्रकाशे वित्तने प्रसन्न करे एहवाच्छे । वली गौतमपूछेछे । हेभदंत सौधर्म पहिले देवलीके केतला विमानावास  
 विमानलक्षण घर कद्या । हेगौतम । बत्तीसलाख विमानावासा कद्या । एम ईशाने अठ्ठावीस लाख । सनत्कुमार १२ लाख माहिद्रे ८ लाख । ब्रह्मे ४ ला  
 ख । लांतके ५० हजार । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार । आनत प्रानत मिली ४०० । प्रारण अचुत मिली ३०० विमान । एह सैकडां जिम प

वर नभिनापभेदीय यथा इंसारेणभते कप्पे केवइयाविमाणावासापयत्ता गोयमा अट्ठावीस विमाणावास सयसहस्सा पयत्ता तेणविमाणा जावपडिहवा  
 एव सर्वे पूर्वीत्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनतरं नारकादिजीवानां स्थानान्युक्ता न्यथ तेषामेव स्थिति सुपदर्शयितु माह  
 नेरइयाणभतेइत्यादि सुगम नवरं स्थिति नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकालं अपज्जत्तयाणंति नारकाः किल लब्धितः पर्याप्तका एव भवति  
 करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति ततः पर्याप्तका स्तएषा भपर्याप्तकत्वेन स्थिति जेषन्यतो व्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहर्त्तमेव पर्याप्तका  
 ना म्मुनरौधिकेव जघन्योक्लृष्टा चान्तर्मुहर्त्तानाभवतीति अत्र चैहपर्याप्तकापर्याप्तकविभागः नारयदेवातिरिमाणुय गम्भयाजैअराखिज्जवासाज एतेउअप्पज्ज  
 त्ता उववाए चेवबीधव्वा। सिसायतिरियमाणुया लद्धिप्पोववायकालेय। दुहअोवियभइयव्वा पज्जतिरियेयजिणययणति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति विंशेष  
 त स्तामभिधातु मिदमाह इमीसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वअज्ञापनापसिद्ध मित्यतिदिशन्नाह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक  
 लक्षणेन गमत्रयेण नारकाणा नारकविशेषाणां तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाच्या कियदूर यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुत्तरसुराणा  
 मोविकपर्याप्तापर्याप्तकलक्षण गमत्रय यावदित्यर्थः इहचैव मतिदिष्टसूत्राख्यर्थतो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा अदन्तकियतीतिस्थिति गौतम जघन्येन दश

यत् । नेरइयाणं अंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेहीसं

हिले गाथामांहि कहि आयाछे तिम कहिवो । हिंवे २४ दडकने भिंवे जेजोव तेहना आजखानी स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य नारकीनी केतला काल लगी  
 स्थिति आउखी कल्लो । हे गौतम सर्वथापि धोडोतो १० हजार वर्षनो स्थिति कहो । पहिली नरकनी अपेचाये उक्कट्टीस्थिति तेचीस सागरीपमलगे क



वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनारकाणां भदन्त क्रियन्त काल स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतमी भयथापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव स्पर्याप्तका  
नां सामान्योक्तैवातर्मुहूर्त्तानावाच्येशेषपृथिवीनारकाणां प्रत्येकदयानां ससुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरश्चा इर्भजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणां स  
ष्टविधानां ज्योतिष्काणां स्पष्टप्रकाराणां सौधर्मादीनां वैमानिकानां च गमत्रयं स्वाच्यं इह च विजयादिषु जघन्यती द्वात्रिंशत्सागरोपमान्युक्तानि गन्धह

सागरोपमा इं ठिई प० । अथपञ्चतगाणं नेरइयाणं अंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्तेणं अंतोमुज्जत्तं उक्को  
सेणवि अंतोमुज्जत्त । पञ्चतगाण जहन्तेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुज्जत्तणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीससागरो  
वमाइ अंतोमुज्जत्तणाइं इमीसिणं रयणप्पन्नाए पुढवीए एवजावविजयवेजयंतजयंतअपरजियाणं देवाणं

हो । पणि ३३ सातमीनी अपेचाथी । वली पूछेके । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थायें केतला काल लगे स्थिति कही । हेगौतम जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्तं उत्कष्टपणे  
पणि अंतर्मुहूर्त्त । पूछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार वर्षनी पहिली नर  
कनी अपेदाये अंतर्मुहूर्त्त जंणी । उत्कष्टी सातमीये अंतर्मुहूर्त्तजंणी तेत्तीस सागरोपमनी । अंतर्मुहूर्त्त अपर्याप्तावस्थानी जंणी जाणिवो । हे पूज्य एणीयें  
रत्नप्रभा पृथिवीये जघन्य आजखी केतली हेगौतम जघन्यती १० हजार वर्षनी उत्कष्टी १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्रो मनुष्य तिर्यच भवन  
पती व्यतर ज्योतिषी १२ देवलीक ८ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कष्टी आजखी ग्रथांतरथकी कहिवो । अनुत्तर विमान पूछेके । हे भगवंत विजय वेजयंत ज  
यत अपराजित विमाने केतली देवतानी स्थिति कही । गौतम जघन्यपणे ३२ सागरोपम उत्कष्टपणे ३३ सागरोपमनी कहो । ५ मेसर्वाथं सिद्ध विमाने

स्यादियपि तथैवदृश्यते प्रज्ञापनायां त्वे कञ्चिदुक्तं त्वे मत्वा न्तरमिदं पर्याप्तकार्याप्तकगमद्वय मिह समूहमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमैर्वाच्येति अ  
नन्तर नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानीतच्छरीराणां भवगाहनाप्रतिपादनायाह कइयाणंभतेइत्यादि कण्य नवर मेकद्वितीयोदारिकशरीरमित्यादौ याव  
त्कारणा द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकैन्द्रियजलचरादिपञ्चेन्द्रियभेदेन प्राक्प्रदर्शितजीवराशिक्रमेण वाच्यानि किञ्चदूरमित्यादि गम्भवक्तुंतिइ

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्जेणं वत्तीसं सागरोत्रमाइं उक्कीरेणं तेत्तीससागरोत्रगाहं सव्वठे उ  
जहसामणुक्कीसेणं तेत्तीससागरोत्रमाइं ठिई पन्नत्ता । कतिण जत्तेररीरा प० । गोयमा । पचसरीरा प०  
तं० । उरालिए वेउळिए ज्जाहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेणं जत्तेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प०  
तं० । एगिदियउरालियसरीरे जावगम्ववक्कतियमणुस्सपच्चिदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं जत्ते

जघन्य नयी उत्कट ३३ सागरोपमनी कही । हिंदे स्थितिं ते गरीराधोनच्छे । तेमाटे गरीर नू स्वरूप पूच्छे । हेपूज्य गरीर केवलाकथा । गीतम ५ य  
रीर कथा । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ हेपूज्य औदारिक गरीर केतले प्रकारे कळी । गीतम ५ प्रकारे । एकैद्री  
औदारिक गरीर १ एम वेद्री औदारिक गरीर २ तेद्री औदारिक ३ चोरिद्री औदारिक गरीर ४ पंचेद्री समुक्खिम तियं च औदारिक गरीर गर्भज  
पंचेन्द्रिय तियं च औदारिक गरीर समुक्खिम मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक गरीर गर्भव्युत्क्रांत मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिकशरीर ५ एह सर्वनी औदारिक शरीर  
जाणिवी । औदारिकशरीरनी केवडी मोटी अवगाहना कही हेगीतम जघन्यपणे अगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनी अपेचाये । उत्कटसातिरेक भा

त्यादि श्रीरालियसरीरस्मेत्यादि तनीदार अधानं तीर्थकरादिशरीराणि प्रतीत्य अथवीरालम्बिगालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि प्रतीत्य  
 अथवा उरालस्मालप्रदेशोपचितत्वात् लहत्वाच्च भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्नायुबल यच्चरीर न्तकमयपरिभाषया उरालमिति तच्च तच्चरीरश्चेति प्राकृत  
 त्वादौरालियंशरीरं तस्याऽवगाहन्ते यस्यांसाऽवगाहना आधारभूतेकैत्रं शरीराणा मवगाहना अथ बीदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिक  
 शरीररूपावगाहना सा भदन्त कोमहालिया किमहती प्रपन्ता तत्र जघन्येनाङ्गुलासंख्यभागंयावत् पृथिव्याद्यपेक्षया उल्कर्षेण सातिरेक योजनसहस्रमिति  
 बादरवनस्पत्यपेक्षयेति एवंजावमणुस्सेति द्रुहएव यावत्कारणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनैकविशितमपदाभिहितयन्यो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा  
 हि ऐकैद्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनश्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णां स्वादरसूत्रापर्याप्तापर्याप्ताना जघन्यत उल्लेख्यतया ङ्गुलासंख्येयभागी वनस्पतीनां  
 बादरपर्याप्ताना मुल्कर्षतः साधिकं योजनसहस्रं शेषाणां त्वङ्गुलासंख्येयभागएव द्विचिचतुरिद्रियाणा म्यर्याप्ताना मुल्कर्षतस्मानुक्रमेण द्वादशयोजनानि त्री  
 णिगव्यूतानि चत्वारिचिंति पञ्चैद्रियतिरश्चा जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां समूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्र एव स्थलचराणां चतुष्पदांतिं समूर्च्छन  
 जाना म्यर्याप्तानां गव्यूतपृथक् गर्भव्यूतक्रान्तिकाना तेषां षट्गव्यूतानि उर.परिसर्प्याणां गर्भव्यूतक्रान्तिकानां योजनसहस्र एवामेव समूर्च्छनजानां योजन

केमहालिया सरीरोगाहणा पन्तत्या । गोयमा जहन्नेणं अंगुलत्रयसंखेज्जातित्रागं उद्धोसेणं साइरेणं जोय

भेरी योजन सहस्र वादर वनस्पतीनी अपेक्षायें । जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो । सर्व औदारिकं वेइन्द्री तेइन्द्री चीरिन्द्री पचेन्द्री ति  
 र्यञ्चनो मान तिमज निरवखेस समग्रपणे तरतमयीगे कहिवो जिह्वां लगे सनूथ औदारिक शरीर नो मान उल्कण्टो ३ गाऊ युगलियानी अपेक्षायें । हिवे

पृथक् भुजपरिस्पर्शाणां गर्भजानां गव्यतपृथक् समूर्च्छनजानां धनुः पृथक् खचराणां गर्भजानां समूर्च्छनजानां च धनुः पृथक्मेव तथा मनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्ति-  
कानां गव्यतत्रयं समूर्च्छनजाना मङ्गलासङ्ख्येयभागः एष एव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्याप्तपदेति तथा कइविहेणमित्यादि स्पष्टं नवर विविधा विशिष्टावा-  
क्रियाविक्रियातस्या भव स्वैक्रिय विविध विग्रिष्ट स्वाकुर्वन्ति तदिति वेकुर्विक मितिवा तत्र केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीर  
नारकादीनामेव जावेत्यादिरतिदेशादिद् द्रष्टव्य यदुत जइएगिदियवेउव्वियसरीरेण किवाउकाइयएगिदियवेउव्वियसरीरेण अवाउकाइयएगिदियवेउव्वियश-  
रीरेण गीयमा वाउकाइयएगिदियसरीरेण नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्थोदृश्यः यदिवायोः किञ्चक्षस्य वादरस्यवा बादरस्यैव यदि वादरस्य  
किम्पर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पचेन्द्रियस्य किनारकस्य पचेन्द्रियतिरच्चोभनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वथा तन्नारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तक-  
स्ये तरस्यच यदितिरच्चः किं सम्मूर्च्छिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसत्थातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

णसहस्सं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियपभाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति । उक्कोसेणंतिस्सिगाउ  
याइं । कइविहेणं भंते वेउद्धियसरीरे प० । गोयमादुविहे प० । एगिदियवेउद्धियसरीरेय पच्चिदियवेउ

वैक्रिय शरीरनो मान पूछे छे । हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो । हे गौतम बे प्रकारे कह्यो । एकंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनी अपेक्षाये । बीजो  
पचेन्द्रिय वैक्रिय शरीर तेह पचेन्द्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने कथि विशेषे होय । भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती व्यतर ज्योतिषी सौधर्म इंशा

गर्भजस्यैव तस्यापि कर्मभूमिजस्यैव तस्यापि संख्यातवर्णयुषएव पर्याप्तकस्यैव च तथा देवस्य भवनवास्यादेः तत्रा सुरादेर्देशविधस्य पर्याप्तकस्यैव तस्य च एव व्यं  
रस्याष्टविधस्य ज्योतिष्कस्य पञ्चविधस्य तथा यद्विवेकानि कस्य किङ्कल्योपपन्नस्य कल्पातीतस्य उभयस्यापि पर्याप्तस्य चेति तथा वैक्रियभदन्तकिसस्य  
त उच्यते नानासंस्थित तत्र वायोः पताकासंस्थितं नारकाणां भवधारणीय मुत्तरवैक्रियञ्च हुडसंस्थितं पंचेन्द्रियतिर्यग्गुणाणां नानासंस्थित देवानां भवधा  
रणीय समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित मुत्तरवैक्रिय नानासंस्थित केवल कल्पातीतानां भवधारणीयमेव तथा वैक्रियसरीरावगाहना भदन्तकिम्बह्वी गौतम जघ  
न्यतीगुलाऽसह्येयभाग मुल्कर्षतः सातिरेक योजनलक्ष स्वायोरुभयथा अङ्गुलासह्येयभाग एवं नारकस्य जघन्येन भवधारणीय उल्कर्षतः पञ्चधनुः शतानि एषा  
च सप्तम्यां षष्ठ्यादिषु त्वियमेवा द्वीर्द्वीहेनेति उत्तरवैक्रिया तु जघन्यतः सर्वथा सप्त्यङ्गुलासह्येयभाग मुल्कर्षतश्च नारकस्य भवधारणीयस्य गुणेति पंचेन्द्रियतिर  
ञ्चां योजनशतपृथक् मुल्कर्षतः मनुष्याणां तूल्कर्षतः सातिरेक योजनानां लक्ष देवानां तु लक्षमेवोत्तरवैक्रिय भवधारणीयं तु भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधस्यैवा  
नानां सप्तहस्ताः सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः षट् ब्रह्मलान्तकयोः पञ्च महाशुक्लसहस्रारयोः सत्वार आनतादिषु च योः त्रैवेयकेषु द्वा वनुत्तरैवेक इति अनन्तरीतो

द्वियसरीरेड्डु । एवंजाव सणंकुमारिड्याढतं जावड्युणत्तराज्जवधारणिज्जा जावतेलिं इयणीरयणीपरिहायइ ।

न लगे सात हाथनी होय । सनत्कुमार थी मांडी अनुत्तर विमान लगे भवधारणीय शरीर । बे बे देवलोके एकोक हाथ घटाडिये । ते किम सनत्कुमार माहेद्रे ६ हाथनं । ब्रह्मलांतके ५ हाथनी । शुक्रसहस्रारे ४ हाथनी । अनंत प्राणत कारण अच्युते ३ हाथनी । नवग्रैवेयके २ हाथनी । पचानुत्तरे १ हाथ

सूत्रतएवाह एवजावसणकुमारेत्यादि एवमिति दुविहेपन्नत्ते एगिदियइत्यादिना पूर्वदर्शितक्रमेण प्रप्तापनीकत वैक्रियावगाहनामानसूत्र वाच्यं कियदूरमित्यादि यावत्सनतकुमारे आरब्ध अवधारणीयवैक्रियशरीरपरिहाणमितिगम्य ततोपि यावदनुत्तराणि अनुत्तरसुरसम्बन्धीनि भवधारणीयानि शरीराणि यानिभवन्तितेपारलौ रत्तिःपरिहीयतइति एतदर्थसूत्रभवेत्तावदिति पुस्तकान्तरेल्वि दम्बाक्य मन्यथापि दृश्यते तत्राप्यचरघटनै तदनुसारेणकार्येति आहारयेत्यादि पगम नवरं एवमिति यथापूर्व आलापकं परिपूर्णं उच्चारितः एवमुत्तरत्रापि तथाहि जइमणुस्सत्तिजइमणुस्साहारगसरीरे किगब्भवकतियणुमस्साहारगमरीरे समुच्छिन्नमणुस्साहारगसरीरे गोयमा गब्भवकतियमणुस्साहारगसरीरे नोसमुच्छिन्नमणुस्साहारगमरीरे जइगब्भवकतियइत्यादि सर्वगृह्य जावजइपमतसजयअपमतसजयसत्तादिद्विपज्जात्तयसंखेज्जासाउयकअभूमिगब्भवकतियमणुस्साहारगसरीरे किइट्टिपत्तपमतमजयसअभिद्विपज्जात्तसंखेज्जासाउयक

आहारयसरीरेणं जंते कइविहे पन्नत्ते । गोयमा एगाकारे प० । जइएगाकारे प० । किमणुस्सअ्याहारयसरीरे अणुमणुस्सअ्याहारगसरीरे । गोयमा मणुस्सअ्याहारगसरीरेणोअणुमणुस्सअ्याहारगसरीरे । एवजइमणु

नो शरीर । बेहु गतिना उत्तर वैक्रिय शरीरनो मानगाथाथी कहिवो । नरदेवलक्खमहिंय । तिरियाणजीयणाणिनवसयाइ । दुगुणतुलारयाणं उक्कोसवेउ  
 खियाभणिथा ॥ १ ॥ अतोमुहत्तनिरए सुइत्तवत्तारितिरियमणुएसु । देवेसु अइमासी उक्कोसवेउखियाकालो ॥ २ ॥ आहारक शरीर तं पूर्वधर जिन ऋ  
 धिजीइवाने अथवा सदेहपूछिवाने तीर्थकर पासि जाइवाने अर्थ करे १ हाथनो शरीर अतर्मुहत्तं लगे रहै । ते १ प्रकारे छे । वली गौतम पूछे छे । हेपूज्य  
 १ प्रकारे आहारक शरीर कछो ते मनुष्य आहारक शरीर होय । हे गौतम मनुष्यने आहारक शरीर होय । परं

अभूमिगगदभवकंतियमणुस्साहारगसरीरे अणिट्ठिपत्तपमत्तसजयसग्गदिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगदभवकंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा द्वि

स्सञ्चाहारगसरीरे किंगप्पवक्कतियमणुस्सञ्चाहारगसरीरे समुच्चिममणुस्सञ्चाहारगसरीरे गोयमा गप्पवक्क  
तियमणुस्सञ्चाहारयसरीरे नोसमुच्चिममणुस्सञ्चाहारयसरीरे । जइगप्पवक्कतिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभू  
मिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा । जइकम्मभूमिग किंसंखेज्जवासाउय अउसंखेज्जवासाउय । गो  
यमा नोअउसंखेज्जवासाउय । जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्त  
या । जइपज्जत्तया किंसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्ममिच्छदिठी । गोयमा सम्मदिठी नोमिच्छदिठी नोस

अमनुथने आहारक नहोय । जोमनुथने होय तो गर्भ व्युत्क्रातनेहोय वा समूर्च्छिमने होय । हेगौतम गर्भजने होय समूर्च्छिम ने नहोय । हेपूज्य गर्भजने  
होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा ३० अकर्म भूमिगतने होय । हे गौतम कर्मभूमिगत मनुथने होय अकर्मभूमिगत मनुथने न होय । हे पूज्य क  
र्मभूमिगत मनुथने होय तो सख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असख्यात वर्षायुष्कने होय । हे गौतम सख्यात वर्षायुष्कने होय परि असख्यात वर्षायुष्कने न  
हो । हे भदंत सख्यात वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्ता ने होय किंवा अपर्याप्तने होय । हे गौतम पर्याप्ताने होय परि अपर्याप्ताने न होय । हे भदंत पर्याप्ता  
ने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने । हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय परं मिथ्यादृष्टीने नही । सम्यग्मिथ्यादृष्टीने परिण नहोय । हेभदंत स  
म्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असयत अविस्तीलीक सयतांसयत आवकने होय । हेगौतम सयतीने होय । परि असयतीने नहोय । संय

तीयस्य निषेधः प्रथमस्य चा नुज्ञा वाचा एतदेवाह वयणाविभाणियव्वत्ति सूचितवचनान्यप्युक्तन्यायेन सर्वाणि भणनीयानि विभागेन पूर्णान्युच्चारणीयानौल्यर्थः  
आहारगतिआहारगरीरस्स केमहालियासरीरोगाहणापरात्तागोयमाइत्येतत्सूचितं जहस्सेण देसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषतस्तथा रम्भाक  
द्रव्यविशेषतश्च प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नहीहीदारिकादेरिवां गुलासंख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इति भावः तेयासरीरेण भतेइत्यादि एवं यावत्कार

म्ममिच्छदिठी । जइसम्मदिठी किसंजया झुसंजया झुसंजया गोयमा संजया नोझुसंजया नोसंजया  
सजया । जइसंजया किंपमत्तसंजया झुपमत्तसंजया । गोयमा पमत्तसजया नोझुपमत्तसंजया । जइपम  
त्तसजया किंइहिपत्ता झुणिहिपत्ता गोयमा इहिपत्ता नोझुणिहिपत्ता । वयणाविजाणियझा झाहउरयस  
रीरे समचउरंसंठाणसंठिए । झाहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेण पफ्फिपुसारयणी । तेझु

ता संयतने पणि न होय । हेपूय संयतीनेहोय ती प्रमत्तसयती ई हागुणठाणवालाने होय किवा अप्रमत्त सयतीने होय । हे गौतम ई हागुणठाणवासी  
प्रमत्तसयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय । पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नथी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय । जो अप्रमत्तने होय तो ऋद्धिप्राप्तने होय  
किम्वा अर्द्धिप्राप्तने होय । हे गौतम शरीर करवानी लब्धिरूप ऋद्धि पाईहोय ते ऋद्धिप्राप्तने होय । अनर्द्धिप्राप्तने न होय । उक्तन्याये कक्षा वचन सग  
ला भणिवा । आहारकशरीर समचउरंसं सखान संस्थित होय । आहारक शरीर जघन्य थोडो सर्वकाले देसूणा काईकजंणा हाय अने संपूर्ण होयती  
१ हायहोय । हिवे चौथा तेजस शरीरनी स्वरूप पूछे छे । तेजस शरीर हे भदत केतले प्रकारे कच्ची ॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कच्ची । एकेंद्रियतेज



॥  
णा अज्ञापनासत्कैकविंशतितमपदीक्षा तेजसशरीरवक्तव्यता इहवाच्या साचेय मर्थतः एगिंदियतेयगशरीरेणभंतैकतिविहे गोयमा पंचविहेपखत्ते तंजहा पुढवीजाववणस्सइकाइएगिंदियतेयगसरीरे एव जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सब्वहसिद्धगअणुत्तरोववाइयकपातीतेवेमाणियदेवप चैदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणभंते किसठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसंस्थानं तदेव तेजसस्य कार्मणस्यच तथा जीवस्य मारणात्तिकसमुद्धातगतस्य कियती तेजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भबाहल्याभ्या मायामतस्तु जघन्येना हुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षत ऊर्ध्वमधश्च

सरीरेणं ज्ञंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे वितिचउपंचएवंजाव गेवेज्जा

स्सणं ज्ञंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियाशरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

स १ वेइन्द्रीतेजस २ तेरिद्री तेजस ३ चौरिद्री तेजस ४ पचेद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनी संठाण अनेक प्रकारनी । गौतम पहिले स्कंध बचने पछ्छे । मरणां तिक समुद्धात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनी अवगाहनां केतली । भगवंत कहे छे । विष्कम्भपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणे । जघन्य अंगुलनी असंख्येयभाग । उत्कृष्ट जंची नीची हेठिला लोकांतलगे । कार्मणशरीरनी पणि एमज अवगाहना एह एकैद्रीय आश्रित जाणिवी । उत्पत्तिसमये वेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चौरिंद्रियना तेजस शरीरनी अवगाहना उत्कृष्टलांबपणे तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दडकना तेजसशरीरनी अवगाहना टीका थीजाणवी जिहां लगे गेवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्धाते समोहितहोय एतले मरणसमुद्धात करतीहोय तिवारे देवतानी केवडीमोटी तेजस शरीरोगा हना कहिवी । हे गौतम शरीरप्रमाणे जाणवी । विष्कम्भपणे पिहलपणे बाहल्यपणे जाडपणे औदारिकशरीर प्रमाणे तेजस शरीरनी अवगाहना । आयामे

लोकांता लोकांतयाव देकेन्द्रियस्य तत स्तुत्रीत्यन्ति मङ्गीकृत्येतिभावः एवं सर्वेषामेवैकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका लोकांतयावयाय  
 स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरयाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्र कथं नारका त्यातालकलशस्य सहस्रमान कुड्यभित्त्वा तत्र मत्स्यतयो त्यद्यमानस्य  
 उत्कर्षेणतु अधः सप्तमीयावत् सन्तमपृष्ठीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्यद्यमान अतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमगयावत् ऊर्ध्वं मण्डकवनपुष्करिणीयावत् यतस्तयो  
 नारक उत्पद्यते नपरतः मनुष्यस्य लोकांतयावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधमशानदेवाना जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो  
 त्यादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृष्ठीयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्त ऊर्ध्वमीषाग्रभारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादेष्वेव पृथिव्यादिषू त्यद्यन्ते अतो  
 नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथ पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थं भवतारि मृतस्य तत्रैव मनुष्यतयो त्यद्य  
 मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनौम्वा मनुष्योपभुक्तस्त्रिय म्परिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भं समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधीयाव न्महापातालकलसानां द्वितीय स्त्रिभाग स्तत्र  
 हि जलसङ्गावान्मत्स्यूपत्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रयावत् ऊर्ध्वमच्युतयाव तत्रहि सङ्गतिकदेविनिययागतस्य मृत्वेहीत्यद्यमानत्वादिति आनता  
 दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागः कथ मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते म्मनुष्योपभुक्तस्त्रिय मयभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तिरिति उत्कर्षत  
 स्वधीयाव दधीलीकयामान् तिर्यङ्मनुष्यक्षेत्रे ऊर्ध्वं मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्यद्यन्ते इति भावनतथैवकार्या गेवेयकानुत्तरोपपातिदेवाना जघन्य

सरारप्यमाणमेत्ती विरुक्मवाहक्षेणं त्र्यायामेणं जहन्तेणं जावविज्जाहरसेढीनु उक्क्षोसेणं अहोलोइयगामा

लांत्रपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे। गैवेयक देवताना तैजसनी अवगाहना एतलेमरतीविला तिहांलगे तैजसकामर्णशरीरना प्रदेश विस्तारि उत्कष्टी

तो विद्याधरश्रेणीयावत् उत्कर्षती ऽधोधाव दधीलोकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रं उर्ध्वं तद्विमानान्येवेति एवं कार्मणस्या प्यवगाहना दृष्ट्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्रांशमाह । गेवज्जगत्सणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्मउत्ती ऽधुना त्ववधिधर्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदो वर्धवैक्तव्यो यथाक्षिविधो वधि भवप्रत्ययः क्षायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणां क्षायोपशमिको मनुष्यतिरथामिति तथा विषयो गोचरो ऽवधे र्वीच्यः सच चतुर्धा द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत स्तु सर्वं मेकाणे

उ उहं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावञ्चणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरं पिप्पना णियहं । नेदेविसयसंठाणे च्छिंतरेवाहरेयेदसोही । उहिस्सबुद्धिहाणी पफ्फिवाइंचेवञ्चपफ्फिवाइं ॥ १ ॥ कति

हेठे जिहालगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना तिहालगे । ज चो जिहालगे पोतानुबिमान । तिरछी मनुष्य क्षेत्र लगे श्रैवियकदेवनां तैस शरीरनी अवगाहना । एमजश्रैवियकनीपर अनुत्तर विमानवासो देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परे कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी सठाण पणि तिमज जाणिवी । हिवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ बीजो क्षायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवता नारकीने ह्योय । क्षायोपसमिक मनुष्य तिर्यचने ह्योय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ क्षेत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्यथकी जघन्यपणे तैजस अने भाषानं अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणे । उत्कष्ट सर्व एकादिअनताणुकांत रूपीद्रव्यने जाणे । तथा क्षेत्रथी जघ न्य अंगुलनी असंख्येयभाग जाणे । उत्कष्ट असंख्याता अलीकने विपे लोकमात्र खड जाणे । कालतः जघन्य आवलिकानी असंख्यातमोभाग अतीत अनाग

कायनन्ताणुकान्तं रूपिद्रव्यजातं जानाति क्षेत्र जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति काल  
जघन्यत आवलिकाया असंख्येयभाग मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः सख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्य चतुरोवर्णादीन्  
उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसंख्येयान् सर्वद्रव्यापेक्षया त्वनन्तानिति तथा सस्थान मवर्धेर्वाचं यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पल्याकारो भवनपतीना म्पटहाका  
रो व्यन्तराणां भस्मर्याकृति ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कन्धोपपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचर्ग्याकारो श्रैवेयकानां कन्याचोलकसस्थानो ऽनुत्तरसुराणां  
लोकनाल्याकृति रित्यर्थः तिर्यग्मनुष्याणान् नानासम्यनइति तथा अब्धतरत्ति के अवधिप्रकाशितक्षेत्रस्या भ्यन्तरे वर्त्तन्ते इतिवाच्यन्तत्र नेरइयदेवतित्यंकरा  
यश्चोहिस्सवाहिराहुतौत्यादि तथा बाहिरैयत्ति के वधिक्षेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा बाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

तजार्णै । उत्कृष्ट असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाणे । भावयकी जघन्यतः द्रव्य द्रव्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणे । उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति  
संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेक्षायै अनता वर्णादिकना भेदजाणे । त्रीजेबोले अवधिनी सठाण कहंके । नारकीनी अवधि चापाने आकारे । एतले नावने आ  
कारे । भवन पतिनी पत्यने आकारे । व्यतरनी पडहाने आकारे । ज्योतिषीनी भालरने आकारे । वारेदेवलोकना देवतानी मादलने आकारे । श्रैवेयक  
देवतानी फूलचगरीने आकारे । अनुत्तर देवतानी लोकनालीने आकारे । एतले कन्यानी चोलीने आकारे । तिर्यंच मनुष्यनी अवधि नाना संस्थान ।  
हिवे कीण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने अभ्यतर वतंके । तिहां नेरइयदेवतित्यं करायश्चोहिस्सवाहिराहुति । इत्यादि । तथा बाहिरत्ति कीण अवधि प्रका  
शित क्षेत्रने बाहिर होय । शेष थाकता जीव बाह्य अने अभ्यतरपणि होय । देशोहित्ति अवधि प्रकाशिव बाग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोद्रक

तथा देशोहिति अवधिः प्रकाश्यवस्तुनो देशप्रकाशो अवधिर्देशावधिः स केषा अवतीति वाच्यम् तद्विपरीतसु सर्वावधि स्तत्र मनुष्याणां उभय मन्त्रेषां देशावधिरेव यतः सर्वावधिः केवलज्ञानलाभप्रत्यासत्ताविबो लयत इति तथा वधे हृदिर्हानिश्च वाच्या योयेपाम्भवति तत्र तिर्यग्मनुष्याणां म्वर्द्धमानोहीय मानश्च भवति शेषाणामवस्थित एव तत्र वर्द्धमानो गुलासंख्येयभागादि दृष्ट्वा बहुबहुतर म्भक्षति विपरीतसु हीयमानइति तथा प्रतिपातीचा प्रतिपाती चावधिर्वाच्यः तत्रोत्कर्षती लोकमात्रः प्रतिपात्यतः परमप्रतिपाती तत्र भवप्रत्ययः स्त भवयाव न्न प्रतिपतति चायोपशमिकस्तूभयथेति एतदेवदर्शयति कइ विहेत्यादि अत्रावसरे प्रज्ञापनाया स्तयस्त्रिंशत्तम म्पदमन्यूनमध्येय मिति अनन्तर सुपयोगविशेषः चायोपशमिको जीवपर्यायः उक्तो धुना सएवौदयिकोवे

**विहेणंनतेउही पन्नत्ता । गोयमा दुविहा पन्नत्ता । न्नवपच्छइयखउवसमिण्य । एवं सख्खउहिपदं ज्ञाणियख्खं ।**

ने होय । एहथो विपरीतते सर्वावधि । तिहां मनुष्यने देशावधि सर्वावधि एह बिहुहोय । बीजा सर्वने देशावधि होय । केवलज्ञान ठूंकडोहीय तिवारे सर्वा वधि होय । ओहिस्स बुद्धिहाणित्ति । अवधिनी हृदि अने हानि कहिबी । तिर्यचने मनुष्यने हीयमान होय वर्द्धमान पिण होय । देवता नारकीने अव स्थित होय घटे न बधे । वर्द्धमान ते अंगुलनो असंख्यातमोभाग देखीने घणूं घणूं देखे । एहथकी विपरीत तेहीयमान । प्रतिपाती उल्लूध्ठी लोकमात्र देखे । अलीकमांहि देखे तेअप्रतिपाती परमावधि । गौतम पूछेहे हेभदंत केतले प्रकारे अवधिज्ञान कह्यो । गौतम बेप्रकारे कह्यो । एकभवप्रत्यय तेदेवता नार कीने पोताना भवने त्रिषे उपजे जिहाथीमरसे तिहांलगे रहे । बीजो चायोपशमिक ते अनंतानुबंधी कपायना उदये उपजे । गर्भजतिर्यंच मनुष्य ने होय । एम सर्वअवधिनीपद पन्नवणामूत्रथकी कहिबी । हिवे उपयोगविशेषचायोपशमिक जीवपर्यायकह्यो । हिवे तेहीजओदयिकवेदनालक्षणकहेछे । शीता

दनालक्षणोभिधीयते ॥ सीयाइत्यादि द्वारगाथा तत्रसीयायति चण्डीनुक्तसमुच्चये तेन त्रिविधा वेदना शीता उष्णा शीतोष्णाचेति तत्र शीतामुष्णांचवेदयंति नारकाः श्रेयास्त्रिविधामपि दृष्वत्ति उपलक्षणत्वा चतुर्विधा वेदना द्रव्यादिभेदेन तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात् द्रव्यवेदना नारकाद्युपपातचेत्रसम्बन्धात् क्षेत्रवेदना नारकाद्यायुः कालसम्बन्धात् कालवेदना वेदनैयकर्मोदया ज्ञावेदना तत्र नारकाद्यो वैमानिकान्ता चतुर्विधामपि वेदना वेदयन्तीति तथा सारीरत्ति त्रिधा वेदना शरीरी मानसी शारीरमानसीच तत्र सन्निपचेन्द्रियाः सर्वे त्रिविधामपि इतरेतु शरीरीमेवेति तथा सायति त्रिधावेदना सा तासाताचेति तत्र सर्वजीवाः त्रिविधामपि वेदयन्तीति तह्वेयणाभवेदुक्त्वत्ति त्रिविधावेदना सुखा दुःखा सुखदुःखाचेति तत्र सर्वेपि त्रिविधामपि वेदयन्ति

सीयायद्वसारीर सायातह्वेयणान्नवेदुरकं । अप्सुवगमुवक्षामिया णीयाएचेवञ्चणियाए ॥ १ ॥ नेरइया

दिकवेदना तीन प्रकारे शीता उष्णा शीतोष्णा तेमांहिनारकी शीतवेदना अने उष्णवेदना वेदे । दवत्ति द्रव्यादिकभेदे चारप्रकारे । तेमांहि पुद्गल द्रव्यसंबंधकी द्रव्यवेदना १ नारकादिक उपपातचेत्र संबंधयकी क्षेत्रवेदना २ नारकादिआयुकाल संबंधयकीकालवेदना ३ वेदनीयनामकर्मनाउदययकी भाववेदना ४ तिहा नारकादि वैमानिकातलगे चिंहु प्रकारनी वेदनावेदे । तथासारीरत्ति । तीनप्रकारेवेदना शरीरी मानसी शारीरमानसी । इहासञ्ज्ञी पचेन्द्रिय त्रिणवेदनावेदे । बीजासगलाशरीरी वेदनावेदे । तथासायति । तीनप्रकारनीवेदना साता असाता सातासाता सगलाहीजीव चीहु प्रकारे वेदनावेदे । वे यणाभवेदुःखति । त्रिप्रकारनीवेदना । सुखा दुःखा सुखदुःखा । सगलाही जीव त्रिणप्रकारे वेदनावेदे । साता असातामांहि अने सुखदुःखमांहिसूविशेष ।

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः स्वायं विशेवः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरिण उदीर्यमाणवेदनीयकर्मानुभवलक्षणे तथा अभुवगसुवकमियति द्विधावेदना अभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनत्रल्लचर्यादि कां द्वितीयांतु स्वयमुदीर्यस्वी दीरणाकरणेन चोदय सुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्तौपक्रमिकी मेववेद यन्तीति तथाणीयाएव अभियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदयाआभोगत स्तत्र सज्जिन उभयतो ऽसज्जिनस्त्व निदयेति एतत्तद्धारवि वरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चविंशत्तम म्वेदनाख्य म्पद मध्येयमिति अनन्तरं वेदनाप्ररूपिता साच लेख्यावत् एव भवतीति

पञ्चते किंसीतंवेयणंवेयंति उंसिणं वेयणं । सीतोसिणंवेयणं । गोयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंभाणिस्सुं ।

साता साततेअनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो । सुखदुःखेते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो । तथा अभुवगसुवकमियति । विहुं प्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका । पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले । जिययतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे । बीजो सेउदी रणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे । तिहां तिर्यं पचेन्द्रिय मनुष्य विहु वेदना आगमीनेले जियवेदनावेदे । तथा णीयाएत्ति । विहु प्रकार वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना । बीजो अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना । तिहां सज्जी पचेन्द्रियणीयावेदनावेदे । असंज्जीअणीयावेदनावे दे । हेपूज्यनारकी क्रिम शीतवेदनावेदे । किवाउणवेदनावेदे किवाशीतोण वेदनावेदे । गौतम नारकीनी वेदना एहपद्मवणाना पैत्रीसमापदथकी भणिनी

लेख्याप्ररूपणायाह कश्यमन्ते इत्यादि इहस्थानि प्रज्ञापनायाः समदृशं षड्विंशकं लेख्याभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्माभि रतिबहुत्वा दर्शतोपि न लिखितमि  
ति ततएवा वधारणौय मिति अनन्तरं लेख्या उक्ताः सालेख्याएवचाहारयती त्याहारप्ररूपणाय अणतरायेत्यादि द्वारस्त्रीकमाह तत्र अणंतराय आहारे  
त्ति अनन्तराथाव्ययधानाद्याहारविषये अनन्तराहाराजीवा वाचाइत्यर्थं तथा हारस्थाभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच वाचा तथा पुद्गला न्न जा  
नलेव एवकारा न्न पश्यतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्त्व वाच्यमिति तत्राद्यद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनन्तराहारएत्ति उपपातत्वेनप्रा  
प्तिसमय एवा हारयतीत्यर्थः ततोनिव्वसणयाइदति ततः शरीरनिव्वत्तिः ततोपरियाइयणयत्ति ततः पर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समन्ता त्यानमित्यर्थः ततोपरिणा

कतिणंनतेलेसानु प० गोयमाठलेसानु प० तं० । किण्हा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदुंजा  
णियद्धं । अणतरायअहारे अणहारान्नोगणाइया पोग्गलानेवजाणंति अण्जवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ  
याणं नते अणतराहारा तन्नेनिव्वत्तणया तन्नेपरियाइयणया तन्नेपरिणामणया तन्नेपरियारणया तन्नेपच्छा

हेभदत केतला प्रकारनी लेख्याकही । गौतम ६ प्रकारनी कही । तेकहेछे । क्खलेख्या १ नीललेख्या २ कापोतलेख्या ३ तेज्जलेख्या ४ पद्मलेख्या ५ शु  
क्कलेख्या ६ एम लेख्या पद सतरमो पन्नवणाथी भणिवो । हिंवे आहारनी अधिकार पूछेछे । जीव आतरा रहित आहार करेछे । आंतरे आतरे तथा  
आहारनी आभोगपणी जाणीने ले तेआभोग । बीजी अनाभोग । आहारना पुद्गलने जाण्के नजाणे । अध्यवसाय मनना परिणाम । तथा सम्यक्त्त । ए  
ह ५ पदकहिवा । नारकी जीव अनन्तर आहार करेछे । उपजिवाने चेत्ते जई जपनी तणे समये करे । तिवारे पछे शरीरनीपजावे । तिवारे पछे आ



पणा कृता हारयायुर्बन्धवता मेव भवतीत्यायुर्बन्धप्ररूप गाथाह कइविहेल्यादि तत्रायुषी बन्धनिषेक आयुर्बन्धः निषेकश्चप्रतिसमय स्वहृहीनहीनतरस्य द  
 त्तिकस्या सुभवनार्थं रचना निधत्तमपीह निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषिक्त मनुभवनार्थं बल्ल्यात्पतरक्रमेण  
 व्यवस्थापितमायुर्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थं स्त्राल्यादिनामकर्मणायुर्विशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जाल्या  
 दिनामकर्मणा सुदयो भवति नारकादिभवीपयाहकं चायुरेव यस्मा ह्याख्या प्रज्ञप्त्यासुक्त नेरइएणभतेनेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय  
 मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तभवति नारकायुः प्रथमसमयसेवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेन्द्रिय  
 जाल्यादिनामकर्मणा मय्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिर्नारकगत्यादि तत्तत्क्षण नामकर्म तेनसह निषिक्तमायुर्गतिनामनिषिक्तयुः तथा  
 ठिईकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति रंथास्थातव्यं तेन भवेनायुर्दलिकस्य सेवनामपरिणामोधर्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजाल्यादिकर्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

**विकुञ्चया हंतागोयमाएवञ्चाहारपदंज्ञाणियहं । कइविहेणं भंते अण्डगबंधपन्नत्ते गोयमावह्विहे पन्नत्ते**

हारलोधीहीय तेशरीरने विये परिणमावे । तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा । तिवारपछे विकुर्वणा करे । एहवो प्रअ पूछ्यापछे भगवंत कहेंछे ।  
 एमहीज हेगौराम जिमतूकहेंछे तिमज्जे । इहां पन्नवणानी चीनीसमी आहार पद भणिवो । कोतले प्रकारे हेपूज्य अजखानीबध कखी । हेगौतम ६ प्र  
 कारे । तेकहेंछे । जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थ थाप्यो थोडी तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १ । एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे  
 थाप्यो बांध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २ । एम अजखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जाल्यादि कर्मप्रकृति भेदेकरी जे स्थि

घटुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेदः स्तत् स्थितिनाम तेनसह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुरिति पणसनामनिधत्तायुरिति प्रदेशानां अमितपरिणामाना  
 मायुः कर्म दलिकानां नामः परिणामोदयः तथात्प्रदेशेषु सम्बन्धनं स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्माणां स्वायत्तदेशरूपनामकर्म तत्प्रदेशनाम तेन  
 सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्तायुरिति अनुभाग आयुः कर्मद्रव्याणां तीव्रादिभेदोदयः स एव तस्य वा नामः परिणामो  
 नुभागनाम अथवा गत्यादीनां नामकर्मणां मनुभागबन्धरूपो भेदोऽनुभागनाम तेनसह निधत्तमायुः रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा श्रीगाहणानामनिध  
 त्तायुरिति अवगाहते जीवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविध तत्कारण कर्माप्यवगाहना तद्रूपवामकर्म वगाहनानाम तेनसह निधत्तमा  
 युरवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि स्पष्ट अनन्तरमायुर्बन्धुत्वात् ऽधुनाबद्धायुषां नारकादिगतिषूपपातो भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणायह

## तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पणसनामनिहत्ताउए अणुभागनाम

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आजखानादलनो परिमाण तेहने साथे बाध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयुकर्मद्रव्यनो तीव्रादिक  
 भेदे जेरस तेअनुभाग तेहने साथे बाध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिह्वा तेअवगाहना मौदारिकादि ५ भेदे तेहनी  
 कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म अवगाहना ६ । नारकीनी हे पूज्य केतले प्रकारे आजखानो वध कहिवी । हे गौतम ६ प्रकारे नारकीनी  
 आजखानी वध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना  
 म निहत्तायु ५ । जिह्वाबगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदहीवे ६ । एम २४ दण्डके ६ भेदे आजखानो वध कहिवी जिह्वाबगे वैमानिक देवता आवे ।

निरयगतीणमित्यादि कथं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं च उवीसाइमुहुत्ता सत्तश्रहीरत्ततहयपन्नरसा मासोयदीयचउ  
रो कृष्णासाविरहकालो उपत्ति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवकरणा य त्तिर्यङ्गनुश्रवणोः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता  
उक्ताः तद्गर्भव्युत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतौतु सामान्यतएव सिद्धिवज्जाउव्वदृष्टेति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्ता विरहकाल उद्वर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूह

निहत्ताउए उगाहणानामनिहत्ताउए । नेरइयाणंभंते कइविहे अणुगबंधे पन्नत्ते गोयमा छविहे पन्नत्ते ।  
तंजहा । जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुभागनामअणुगाहणानाम एवंजाववेमाणियाणं निरयगइणं  
भते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं वारसमुज्जत्ते । एवंतिरिखुग  
इ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगइणं भते केवइयंकालं विरहिया सिज्जयणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं ए

हिंवे उपपात विरह स्यवन विरह आत्मी प्रय करेछे । नरक गतिमाहि हे पूज्य केतली उपपात विरह । हे गौतम नारकीनी जघन्य उपपात विरह १ सम  
य एक नारकीनें उपनापछी वीजो १ समयने आतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विषे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कथीछे यदाह । चोवीसायमुहुत्ता  
सत्तश्रहीरत्ततहयपन्नरसा । मासोयदीयचउरो कृष्णासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोही पिण सामान्यगति अपेक्षायै १२ मुहूर्त्तकहा । उल्लूटपणे १२ मुह  
र्त्त जाणवा । एम तिर्यचगति मनुयगति देगति नोउपपात जाणवो । हिंवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सीभवी कही । हेगौतम जघन्य १ समय  
१ सिद्ध उपनापछे वीजो सिद्ध १ समयना भंतरथी उपजे । उल्लूट ६ मासनो विरह । एम जिम उपपात विरह तिमहीज स्यवनविरह । एक चथां पछे

संनैव नास्ति अपुनरावृत्तित्वा सेधामिति इमीसेणरयण्यभाएपुढवीए नेरइयाकेवइयंकालंरिइयाउववाएणं पणता एवंउववायदंडओभाणियव्वीत्ति सचा  
 यं गोयमा जहखेणएकसमय उक्कोसेणंचउवीसमुहुत्ताइ अनेनाभिलापेन शेषवाच्याः तथाहि सक्करणभाए उक्कोसेणसत्तराइंदियाणि वालुयप्पभाए अइमास  
 पकप्पभाएमास धूमप्पभाए दोमासा तमप्पभाए चउरीमासा अहेसत्तमाएछमासत्ति असुरकुमाराचउवीसइमुहुत्ता एवजावथणियउमुमारा पुढविकाइया अवि  
 रहियाउववाएण एवंसेसावि बेइ दिया अतीमुहुत्तं एवंतेइ दियचउरिदियसमुच्छिमपचिदियतिरिक्ख जोणियाविगव्वभक्कितियतिरियमणुयाय बारसमुहुत्ता  
 समुच्छिमणुस्सा चउवीसाइंमुहुत्ताविरहिआ उववाएण वतरजोइसियाचउवीस मुहुत्ताइंएव सोहम्मोसाणेवि सणकुमारे णवदिणाइं वीसायमुहुत्ता माहिं  
 देबारसदिवसाइंदसमुहुत्ता बभलोए अद्वतेवीसराइंदियाइ लतएणण्यालीस महासुक्कअसीइं सहस्सारेदिणसयं आणएसखेज्जामासा एवपाणएवि आरणे  
 सखेज्जावासा एवअणुएवि गेवेज्जपल्लेसुतिसुक्कमेणसंखेज्जाइं वाससयाइं वाससहस्साइं विजयाइसु असंखेज्जकाल सव्वइंसिद्धे पल्लिओवम  
 स्सासखेज्जइभागंति एवउव्वइणाइंति उपपातउद्वर्त्तनाचायुबंधेएव भवती त्यायुर्बन्धविशेषप्ररूपणायाह नेरइएत्यादि कव्य नवरं आकर्षोनाम कर्म्मपुद्गलोपा

क्कां समयं उक्कोसेणं लम्भासे एवंसिद्धिवज्जा उवहणा । इमीसेणं अंतरयण्यप्पमाए पुढवीए नेरइया केवइयं

बीजीववे । पिण सिद्धने उद्वर्त्तनां अवन नथी सिद्धकी निकलवी नथी । हिवे रत्तप्रभा पहिली नरक पृथिवी आओ पृच्छेहे । हेपूज्य एणीये रत्तप्रभाने वि  
 पे केतलो नारकीनो उपपात विरह । जिम ओषबचने पूर्वे कक्को तिमज कहिवी । जवग्य १ समय उक्कण्ट २४ मुहूर्त्त एम २४ दंष्टकनी टीका तथा ग्रं  
 थांतर थकी जाणिवी । रत्तप्रभाने विवे जिम जिम उपपात विरह तिम इह्हां पणि कहिवी । अवन विरह पिण कहिवी । हेपूज्य नारकी जातिनाम निहत्तायु

दानं यथा गो.पामीयम्बिवती भयेन पुनःपुनः आहं हति एवञ्जीवोपि तीव्रिणार्युर्बन्धाध्यवसानेन सकृदेव जातिनामनिधत्तायुः प्रकरोति सन्देहमाभ्यामाक  
 र्पाभ्यामन्दतरेणविभिन्नं दत्तमेन चतुर्भिः पञ्चभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्वानपुनर्नवभिरेवं शेषाख्यपि आउगणिति गतिनामनिधत्तायुरादौ निवाच्यानिय  
 यदेसानिका इति अथैकाद्याकर्षं नियमोजात्यादिना कर्षणाजार्युर्बन्धकालएवबध्मानानां नशेषकालमार्युर्बन्धपरिसमाप्तिरुत्तरकालमपि बन्धोस्त्येवैषां  
 भुवन्विनीनाञ्च ज्ञानावरणादिप्रकृतौना अतिसमयमेवबन्धनिवृत्तिर्भवत्येतासुपरिवृत्त्याबध्यन्तइति अनन्तरञ्जीवानामार्युर्बन्धप्रकार उक्तो ऽधुनातेषामेव  
 संहननसंस्थानवेदप्रकारानाह कश्चिद्विज्ञेयमित्यादि दण्डकत्रय कव्याम् नवरं संहनन मस्थिबन्धविशेषः मर्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयो रस्थि नाराचं ऋषभसु

कालं विरहिता उववाणं । एवं उववायदरुउन्नाणियञ्चो । उवहणादंरुउय । नेरइयाणं अंते जातिनाम्बन्नि

हत्ताउगं कतिञ्चागरिसिंह पगरंति सिय १ सिय २ ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । सियञ्चुठेहिं नोचेवणंनव

करेछे । आकर्षं करो कर्मपुत्रजनो भ्रगीकार करिवो जिम गाय पाणी पीतीयकौ भगेकरी वलीयली हिसारी करो पीवे तिम जीवपणि तीव्र आयुर्बन्धाध्य  
 वसायेकरो १ वेना जातिनाम निहत्तायु करे । स्यात्कदाचित् मन्दाध्यवसाये जातिनाम निहत्तायु करे तो बेआकर्षंकरे । मदतरे करेतो त्रिहुये करे । एम  
 विहुये।पांचे । छत्रे । साते । आठे करे । एवन्ति शेष याकता २३ दडकनाजीवना नारकीनी परे आकर्षं कहिवा जिहांलगे वैमानिक देवता आवे । हिवे  
 पूं आयुबध कम्बो तेसंघयणना धणीने होय तेमाटे सघयण करेछे । केतले प्रकारे हेभदंत संघयण कह्यो । हेगौतम ६ भेदे सघयणअस्थिबन्धयिगप कह्यो ।  
 तेकरेछे । मर्कटमेठामे विष्णुपासे घाडते नाराच कहिये । ऋषभते पाटी वञ्चते कीलिका एत्रिणजाना जिहा होय तेवञ्च ऋषभनाराचसंघयण कहिये १ ।

पट्टं वञ्च कीलिका वञ्चञ्च ऋषभश्च नाराचञ्च यत्रास्ति तद्वर्षभनाराचं संहनन मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्तः प्रथमो स्थिवन्धः मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्वितीयः मर्कटयुक्तसृतीयः मर्कटकौकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्ध चतुर्थः अङ्गुलिद्वयसयुक्तस्य मध्य कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासंहनन मञ्चम यत्रास्थीनि चर्मणा निकाचितानि केवल न्तस्सेवार्त्तं स्नेहपानादीनां नित्यपरिश्रीलनासेवा तथा ऋत प्राप्त सेवार्त्तमितिषष्ट कृण्वंसघयणाणअसघयणेत्ति उक्तंरूपाणां षष्ठां सहननानामन्यतमस्याप्यभावेन सहनिनो ऽस्त्रिसचयरहिता अतएवाह नेवङ्गी नेवास्थीनि तच्छरीरेकेनेपच्छिगत्ति नैवशिराधमन्यः नैवगृहाउत्ति नैवस्त्रायनीति कृत्वा सहननाभावः तत्सहितानाहि प्रचुरमपि दुःख ब्रवाधाविधायिस्थात् नारकास्त्वत्यत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीर

ठीहिं एवं सेसाणविञ्चानुगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं । कइविहेणं अंते संघयणे पत्तत्ते । गोयमा ठ  
विहे पत्तत्ते । तंजहा वइरोसन्ननारायसंघयणे रिसन्ननारायसंघयणे नारायसंघयणे अण्ठनारायसंघयणे  
कीलियासघयणे छेवठसघयणे । नेरइयाणं अंते किसघयणी । गोयमा ठरुहसघयणाणअसघयणी । जेव

बीजो ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २ । बीजो नाराच संघयण मर्कट सहित ३ । चउथी अर्द्धनाराच एकेपासे मर्कटबध बीजपासेकीली ४ । पांचमी कीलिका अंगुलबेने सयुक्तने मांहि कीलिका १ जिहांदीधी ते कीलिका संघयण ५ । सर्वर्त्त तेजिहां हाडिकाचर्मवींठी के छुत तैलना सेवैकरी पाय्थी ते सेवार्त्त संघयण ६ । द्विवे नारकी आश्री सघयण पूछेछे । हे भगवत नारकीमांहि के संघयण पांमिये । हे गौतम पूर्वोक्तछहुंमाहि १ छनपांमिये हाडनही नाडीनक्षी मीटीनशानथी जेनारकीना पुबलछे तेअनिठ अयल्लभ अकांत अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनदिय अशुभ प्रकृतिथीअसुदर अमनीञ्च

नोपपद्यते स्कन्धवत्तदुपपत्तैः श्रुतएवाह जेपोगलेत्यादि येपुह्ला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवेषां सामान्येन तथा अकाम्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अ  
 प्रिया द्वेयाः सर्वेषामेव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया धिन्तयापि तेएवभूताः पुह्ला स्तेषां नारकाणां  
 असंघयणत्ताएत्ति अस्थिसंघयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कद्दविहेसठाणेत्यादि तत्र मानीकानप्रमाणानि अनूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गीपाङ्गानिच  
 यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत्समचतुरस्त्र संस्थानं तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्त्रलक्षणा ऽविसवादिनो ऽधस्तु तदगुरुपथत्तद्भवति तत्राग्रीध संस्थान तथा  
 नाभितोऽधः सर्वावयवाश्चतुरस्त्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदगुरूप नभवति तत्त्वादिसंस्थान तथाग्रीवाहस्तपादा अममचतुरस्त्रलक्षणयुक्ता  
 यत्र सन्निप्तं स्विङ्गतञ्च मध्ये कोष्ठं तत्कुल संस्थान त्वाथा यत्तल्लक्षणयुक्तकोष्ठं चतुरस्त्रलक्षणीपेतं ग्रीवावयववहस्तपादञ्च तद्दामन त्वाथा यत्र हस्तपादावयवया

जेवच्छिरा जेवरहाऊ जेपोगलाअणिठा अकंता अप्पिया अणुजा असुत्ता असुत्ता असुत्ता असुत्ता असुत्ता  
 तेतेसि असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुंमाराणं किसंघयणा पन्तत्ता । गोयमा लरहसंघयणाणं असं  
 घयणी जेवठी जेवच्छिरा जेवरहाऊ जेपोगला इठा कंता प्पिया मणुत्ता मणान्निरामा तेतेसि असंघयण

अमनोरम । तेह नारकीने असंघयणपणे परिणमेछे । अस्थिसंघयरहित शरीर परिणमे परिणमे । हेपूज्य असुर कुमार कोण संघयणे कहा ।  
 हे गोतम इ संघयण मोहि असंघयणी हाडनथी गिरानथी कोटीनयनथी बडोनयनथी असुर कुमारना जेह पुह्ला पदार्थे छे तेह इष्ट वल्लभ छे कांतकम  
 नोय प्रियमनोज्ञ मनोभिराम ते तेहने असंघयणपणे परिणमे । एम नागकुमार थकी माडी जिहालगे स्तनितकुमार दग्गमीनिकाय तिहालगे असंघय

त्ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंरंधयणी पन्नात्ता । गोयमा लेवउसंधयणी प० एवं  
 जावसम्बुच्छिम पंचिदियतिरिक्कजोणियत्ति । गप्पवक्कत्तिथा लद्धिहसंधयणी सम्बुच्छिम मणस्साणं लेवउ सं  
 धयणी गप्पवक्कत्तियमणस्साणं लद्धिहे राधयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणि  
 याय । कइविहेणं नंते संठाणे पन्नात्ते । गोयमा लद्धिहे संठाणे प० तं० । समचउरंसे १ णिगीहे २ सा  
 इए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ ऊंते ६ । णेरइयाणं नंते किस्सठाणी प० । गोयमा ऊंरसंठाणी प० । असुर  
 णी कहिवा । हिंवे पुथिवी आशीपूच्छे । हेपूज्य पृथिवीनी कोण सधयण हेगौतम छेठ्ठी संधयण । एम ५ थावर ३ विकलेट्ठी सम्बुच्छिम पंचेद्विय ति  
 र्यंच योनिया जीव सर्व छेठ्ठे संधयणे कहिवा । गर्भ व्युत्क्रांत तिर्यचना ६ सधयण । सम्बुच्छिम मनुष्यनी छेवट्ठी संधयण । गर्भजना छहुं संधयण जाणिवा  
 जिम असुर कुमार असंधयणी कक्षा तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिंवे सस्थान आग्नी पूच्छे । हेभदंत सस्थान केतलाछे ।  
 हे गौतम सस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । मान उमान प्रमाणेपित ओक्षा अधिकानही अगोपांग जेहना तेसजचतुरस्स संस्थान १  
 तथा नाभि ऊपर सगला अययव चतुरस्स होय नाभिहीछेठे सगला अययव चतुरस्स होय  
 नाभि ऊपर मांठीहोय ते सादिसंस्थान ३ । तथा ग्रीवा हाथ पांव समचतुरस्सहोय मध्यकोठी सवित्र होय नानहोय ते कुब्ज संस्थान ४ । तथा लज्ज  
 णोपेत कोठीहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहोय तेवामनसंस्थान ५ । तथा हस्स पादादिक अययव अप्रमाणेपित होय तेहुंडकसंस्थान ६ । नारकीनी



बहुप्राया प्रमाणविसम्वादिनद्य तद्बुद्धमित्युच्यते कश्चिद्वेदेत्यादि तत्र स्तौवेदः पुष्तामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुंसकवेदः स्त्रीपुष्तामिति एतेच

कुमाराकिंसंठाणी प० गीयमा समचउरंसंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा । पुढवी मसूचियसं  
ठाणा प० । ज्ञानेथिवुयसंठाणा पन्तत्ता । तेनुसूइकलावसठाणा पन्तत्ता । वाऊपळागसंठाणे पळत्ते । वण  
रसई नाणासठाणसठिया पन्तत्ता । वेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पर्थेइयतिरिस्काऊंसठाणा प०  
गल्लवद्धतियाळ्विहसंठाणा । समुच्छिम मणुस्सऊंसठाणरांठिया पन्तत्ता । गल्लवद्धतियाण मणुस्साणुं ढ  
विहासठाणा पन्तत्ता । जहाउणुसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमागिया । कइविहेण न्तेवेणु प० । गी

हे पूज्य कोण सठाणकळी । हेगौतम हुड सस्थान कळी । असुर कुमार देवता समचउरस नस्थान सस्थित कळ्या । जिहां लगे दशमौ निकायना स्थानि  
त कुमार आवे । पृथिवी मसूर धान्य ने सस्थाने संस्थित कहो । पांणीनो सस्थान पाणोनोपपोठो कळो । अग्निनो सस्थान सूचीकलाप खरेना समूहने  
स्थानिकळी । वायुनो पताका सस्थान कळी । वनसती अनेज प्रकारे सस्थितकहो । वेरुद्धो तेरुद्धो चोरुद्धो समूर्च्छिम पंचेद्रो तियेचनो हुड सस्थान क  
ळी । गर्भज तिर्जिच ६ सस्थान सस्थित कळ्या । समूर्च्छिम मनुष्यनो हुड सस्थान । गर्भजननुय ६ सस्थान सस्थित कळ्या । जिम असुर कुमार समच  
उरंस सस्थान सस्थित कळ्या तिमज वाण्ण्णंतर ज्योतिपी अने वैमानिक कहिया । हे भदत वेद केतले प्रकारे कळ्या । गौतम ३ प्रकारे कळ्या । ते कहेछे ।

पूर्वोदिता अर्धाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह । तेणमित्यादि इह णङ्कारौ वाक्यालङ्कारार्थौ वत स्ते इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्तेति कण्वस्य समोसरण नेयव्यति इहावसरं कल्पभाष्यक्रमेण स

यमा तिविहेवेण प० । इत्थीवेण पुरिसवेण पुरिसवेया पुरिसवेया णपुंसग वेया प० । गोयमा णोइत्थीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प० । असुरकुमाराणं ऋते किं इत्थीपुरिस न पुंसगवेया । गोयमा इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया । जावथणियकुमारा । पुढवीअणुतेउवाऊवणस्स ई वित्तिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्कसमुच्छिम णपुंसगा । गप्पवक्कांतियमणुस्सा पंचिंदिय तिरियायतिवेया जहाअसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । तेणं कालेणं तेणं समणुं कप्पस्ससमोसर

स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुंसकवेद ३ । नारकीनी हे भदंत स्यं स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किंवा नपुंसकवेद । हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुंस कवेदहोय । असुर कुमारने हे पूज्य किस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद होय । गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुंसकवेद नहोय । एम जिहां लगे स्तनि तकुमार आवे तिहांलगे कहिवी । पुष्प आऊ तेज वायू वनस्पत वेदन्दी तेदन्दी चोइन्दी समूच्छिम पंचेद्रियतिर्यच समूच्छिम मनुष्य एतलानी नपुंस कवेद । गर्भजतिर्यच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी । जिम असुर कुमारमांहि पुंस्त्री वेद कद्धा तिम वाण व्यतर ज्योतिषी वैमानिक मांहि कहिवा । तेणे का ले चउथे आरे तेणें समये जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरं कल्पभाष्येन अनुक्रमे अनयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिवी । वाचनातरे

मवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकौक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरितु पर्युषणाकल्योक्तक्रमेणे त्यभिहितं कियदूरमित्याह जावगणेत्यादि तत्र गणधरः प  
 धमः सुधर्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशियसन्ततय इत्यर्थः वोच्छिन्नत्ति सिद्धादिति तथाहि परिनिव्वयागणहरा जीवन्ते नायएनजणाओ  
 इदम्भूइसुहम्मेय रायगिहेनिव्वएवौरेरिति अयच्च समवसरणनायकः कुलकराणा म्वरपुरुषाणाच्च वक्तव्यतामाह जंबूद्वीवित्यादि  
 सुगम नवर म्पढमेयविमलवाहण चकुमुजसमचउयमभिचदे तत्तोयपसेगद्द मरुदेवेचनभीयत्ति ॥ १ ॥ तथा चदजसचंदकन्ता सुरूवपडिरूवचकुक्ताय

णं णेयद्धं । जावगणहरा । सावच्चा निरवच्चा वोच्छिम्मा । जंबूद्वीवेणंदीवे न्नारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी  
 ए सत्तकुलगराहोत्या तं० । मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयपन्ने विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥  
 जंबूद्वीवेणंदीवे न्नारहेवासे तीयाए उस्सप्पिणीए दसकुलगराहोत्या तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत  
 सेणय कज्जसेणेन्नीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्वीवेणंदीवे न्नारहेवासे इमी

पर्युषणाकल्योक्तक्रमे जेकद्धोच्छि स्थविरावलीने अधिकारे तेसर्व कहिवी जिहालगे पांचमी गणधर सुधर्माखामी सतान सहित एतले श्रिय प्रश्रिया  
 दिक्के युत्त शेष याकता १० गणधर निरपत्य श्रियादि संपत्ति रहित हुया । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई उत्सर्पिणीये सात कुलकर हुया ।  
 मित्तद्राम १ । सुपाज्व २ । सुदाम ३ । स्वयप्रभ ४ । वली विमलघोस ५ । सुघोस ६ । महावोस ७ । सातमी । १ । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई  
 अजसर्पिणीये १० । कुलकर हुया । स्वयजल १ । प्रतायु २ । अजितसेन ३ । अनतसेन ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दढरथ ८ । दगर

सिरिकतामरुदेवी कुलगरपत्नीणामाद्गति ॥ २ ॥ तथा नाभीगजियसत्तू जियारीसंबरेइय मेहेधरेपइठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ३ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्ह वसुपुज्जेयखत्तिए कयवम्मासीहसेणे भाणूयविस्ससेणिअ ॥ ४ ॥ सरेसुदसणेकुभे सुमित्तविजएत्तमुहविजयेय रायायआससेणेय सिद्धयेच्चियखत्तिएत्ति ॥ ५ ॥

से नुसप्पिणीए समाए सत्तकुलगराहोल्या तंजहा । पढमेत्यविमलवाहण चक्कुमजसमंचउयमनिवडे । तत्तोपसेणइए मरुदेवेचेवनान्नीय ॥ ३ ॥ एतेरिणं सत्तरहंकुलगराणं सत्तत्रारिष्ठाहोल्या तंजहा । चंदजस चंदकंता सरूवपफिहूवचरकुकंताय । सिरिकतामरुदेवी कुलगरपत्नीणामाड् ॥ ४ ॥ जबूद्दीवेणंदीवे न्जारहे वासे डमीसेणं नुसप्पिणीए चउवीसं तित्यगराणं पियरोहोल्या तंजहा । णान्नीयजियसत्तूय जियारीसवरे विय मेहेधरेपइठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्ह वसुपुज्जेयखत्तिथे । कयवम्मासीहसेणे

य १ । सतरथ १० ॥ २ ॥ जबूद्दीपना भरतचेत्तने विषे वर्त्तमान अवसर्पिणीये सात कुलकर थया । ते कहिछे । पहिला विमलवाहन १ । वत्तुणा २ । यग्गी मान् ३ । चउथो अभिचड्ड ४ । प्रसेनजित् ५ । मरुदेव ६ । नाभी ७ ॥ ३ ॥ एह सात कुलकरांनी ७ स्त्री थरे । तेकहेछे । चदयसा १ । चदजाता २ । सुख्या प्रतिरूपा ४ । चलुक्कांता ५ ५ । सिरिकांता ६ । मरुदेवा ७ । एहकुलकरांनी स्त्रीनानाम जाणिया ॥ ४ ॥ जबूद्दीप सवधी भरत चेत्तने विषे वर्त्तमान अवसर्पणीये चौवीस तोर्थकरांना पिता थया तेकहेछे । नाभि । १ । जितशत्रु २ । जितादि ३ । संवर ४ । मेघ ५ । धर ६ । प्रतिष्ठ ७ । महसेन चत्तिय ८ ३ ॥ ५ ॥ सुग्गीव ८ । दढरथ १० । विण्णु ११ । वसुपुज्ज १२ । कतवर्चा १३ । सिहसेन १४ । भानु १५ । विश्वसेन १६ । सर १७ सुदर्शन १८ । कुंग १९ । सु

तथा मरुद्विजिजयसेनां सिद्ध्यामंगलासुसीमाय पुहवीलखणारामा नदाविषज्जवासामा ॥ ६ ॥ सुजसासुव्यग्रद्वारा सिद्धिदेवीपभावईपउमा वप्पासिवा  
पन्नावईपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलोदेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ जंबूद्विविन्नारहेवासे चउवीसंतियग  
ए ॥ ७ ॥ उदितीदियकुलवंसा । विसुठवंसागणेहिउववेया । तित्यप्पवत्तथाणं । एणपियरोजिणवराणं ॥ ८ ॥  
चाणयविस्ससेणय ॥ ६ ॥ सुरेसुदंसणेकुंजे सुमित्तिविजएसुभुद्विजाएय । रायायअरासेणेय सिद्धयेच्चियस्सत्ति  
सिद्ध्यामंगलासुसीमाय । पुहवीलखणारामा नंदाविस्सुज्जवासामा ॥ ९ ॥ सुजसासुव्यग्रद्वारा सिद्धिदेवी  
जंबूद्विवेणदीवे नारहेवासे इमीसेनुसप्पिणीए चउवीसंतियगाराणं मायरोहोत्थातं० । मरुदेवि विजयसेणा  
पन्नावईपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलोदेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ एह २४ राजा केहना हुवा उदय प्रात घणूं मोटीवंग तेहना  
मिन २० । विजय २१ । समुद्रविजय २२ । राजाअस्सेन २३ । सिद्धार्थं जनि २४ ॥ ६ ॥ एह २४ राजा केहना हुवा उदय प्रात घणूं मोटीवंग तेहना  
पिणुन महा निर्देय वगछे जेहना । राजानागुणीकरी सहितछे । तीर्थ धर्मतीर्थना प्रवर्तक तीर्थकर जिनवीतरागना पिता कब्बा ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपने  
ति भमतोने एणो अत्रसर्पिणी ये २४ तीर्थकरानी मागायई । तेकहेछे । मरुदेवी १ । विजया २ सेना ३ । सिद्धार्थी ४ । सुगला ५ । सुसीमा ६ ।  
पुत्रतो ७ । लसणा ८ । रामा ९ । नदा १० । विष्णु ११ । जया १२ । शाना १३ । सुगला १४ । सुव्रता १५ । अचिरा १६ । ग्री १७ । देवी १८ । अमा  
वतो १९ । पञ्चानती २० । वपा २१ । गिवा २२ । वामा २३ । विगला २४ । एह जिनमाता २४ कहौ ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरतलेने एणीये अत्रस  
र्पिणीये चोनीस तीर्थकर देवदुया । ते कहेछे । ऋषभ १ । अजित २ । संभव ३ । अभिनदग ४ । समति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुगाम्ब ७ । चद्रप्रभ ८ । सु

राहोत्या तंजहा । उसन्नञ्जियसंनव अञ्चिणंदणसुमइ पउमप्पन्नसुपास चंदप्पन्न सुविहिपुण्फंदंतसीयल  
 सिज्जसवासुपुज्ज विमलञ्चणंत धम्मसंतिकुंथु अर मत्तिमुणिसुव्वयणमिणेमि पासवहुमाणोय । एणसिंचउवी  
 साएतित्यगराणं चउव्वीसं पुव्वन्नवया णामधेया होत्या तजहा । पढमेत्यवइरणान्ने विमलेतहविमलवाहणे  
 चेव । तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय ॥ ११ ॥ सुंदरवाज्जतहदीह । बाज्जुगबाज्जलछवाल्लय ।  
 दिस्सेयइंददत्ते । सुंदरमाहिंदरेचेव ॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे । रुप्पीअसुदंसणेयबोधव्वा । तत्तोयनंदणेखलु ।  
 सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे । सुदसणेनदणेयबोधव्वे । इमीसेनुसप्पिणीए एणतित्य

विधि बीजीनाम पुष्पदत्त ८ । शीतल १० । अयांस ११ । वासुपूज्य १२ । विमल । अनत १४ । धर्म १५ । श्रुति १६ । कुंथु १७ । अर १८ । मत्ति १९ सुनि  
 सुव्रत २० । नमि २१ । नेमि २२ । पार्श्व २३ । वर्द्धमान २४ । एह २४ तीर्थकरना पूर्व भवनानामधेय एतले । जे भवे तीर्थकर नामकर्म उपाज्यो । तेह  
 भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथी । तेकहेछे । प्रथम आदिनाथजी जोव महाविदेह क्षेत्रे ११ मेभवे वज्रनाभचक्रवर्त्तथयो तिहां २० स्थानक आराधीने  
 तीर्थकर गोत्र उपार्जन कियो तिहांथी सर्वार्थ सिद्ध पहुता तिहांथीचवी आदिनाथ थया एतले तीर्थकरना भवथी ३ भवमनुष्यनी तेषू भवने क्रमे २४  
 कहेंछे । पहिली वज्रनाभ १ । विमल २ । तथा विमलवाहन ३ । ततः धर्मसिंह ४ । सुमित्र ५ । धर्ममित्र ६ । सुंदरबाहु ७ । तथादीर्घबाहु ८ । युगबाहु ९ ।  
 लब्धबाहु १० । दिन्न ११ । इन्द्रदत्त १२ । सुंदर १३ । माहेन्द्र १४ । सिंहरथ १५ । मेघरथ १६ । रूपी १७ । सुदसण १८ । ततः नदन १९ । सिंहगिरी २० ।

वनामा तिस्रान्देवीयजिणमायत्ति सब्बीउगसभाएखावाएत्ति सर्वत्तुकाया सर्वेषु शरदादिषु न्ततु सुखदवाच्छायया प्रभया आतपभावलक्षणया वा युक्ता इति  
 करणंतुपुद्गन्तवा । एणसिंचउद्दीसाएतित्यकराणं चउद्दीसंसीयानुहोत्या तंजहा । सीयायसुदंसणसुप्प जाय  
 सिद्धत्यसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयती जयंतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पन्नचंदप्पज्ज । सूरप्पहअग्नि  
 सप्पन्नाचेव । विमलायपचवस्सा । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अजयंकरानिह्नुइकरी । मणोरमामणीह  
 राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचदप्पन्नातीय ॥ १६ ॥ एअणुसीअणु । सहेसिचेवजिणवरिंदाणं । सद्ध  
 जगवच्छलाणं । सद्धोउयसुखयढायाए । पुद्दिन्निखित्तामणु । स्सेहिंसाहठरोमकूवेहि । पच्छावहत्तिसीयं । अ  
 शरीरगत् २१ । गंअ २२ । सुदर्शन २३ । नदन २४ । एहअनुत्तमे जाणिवा ॥ ८ ॥ एभी अवसर्पिणीये तीर्थं कराना पूजं भवनम जाणिवा एह २४ तीर्थं  
 करानो २४ शिविका दीजानो पालखीछे । तेकहेछे । सुदर्शना १ । सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयती ८ । अपराजिता  
 ८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयकरा  
 १७ । निवृत्तिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चद्रप्रभा २४ । एह शिविकामाविसीने दीज्जा लोधी  
 तेदोच्चा शिविका जाण्वी । सर्वं जगत विभुवन वत्सल महाउपकारी असे जिनेद्रनो । शिविका केहवीछे । सर्वं शरदादिक न्ततु विधि सुखदायक छाया  
 युक्त पातापना रहित छे । तेह शिविका पहिले हर्पं करी रोमकूप जेहना खुडा यया छे एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिविका प्रते प्रसरत्त चमरा

शेषः तथा साहकरो मकूवेहिंति साशिविका यस्यां जिनोधारूढः हृष्टरो मकूपै सङ्घुषितरो मभिरित्यर्थः तथा चलचवलकुण्डलधरति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति वाक्य तथा स्वच्छन्देन स्वरचा विकुर्वितानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयति येते तथा असुरेद्रादय इति योगः गरुलन्ति गरुडध्वजाः सुपर्णकुमारा इत्यर्थः तथा सर्व्वविण्णगदूसेण निगगाजिणवराचउब्बीस नयणामअखल्लिगे नयगिहल्लिगे कुल्लिगेयत्ति दूसेणत्ति एकेन वस्त्रेणेंद्रसमर्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

सुरिदसुरिदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुण्डलधरा । सत्यं विकुह्विया न्नरणधारी । सुरञ्चसुरवंदञ्चाणं । वहति सीञ्चजिणदाणं ॥ १९ ॥ पुरन्नेवहंति देवा । नागापुणदाहिणम्मिपासम्मि । पञ्चत्थिमेणञ्चसुरा । गरुलापुण उत्तरेपासे ॥ २० ॥ उसन्नोञ्चविणीयाए । वारवड्ढेण्णरिठवरणेमी । अण्वसेसात्तिथयरा । निस्सकंताजम्मन्नूमीसु ॥ २१ ॥ सहेविण्णगदूसे । णणिगगाजिणवराचउब्बीस । णयणामञ्चसल्लिगे । णयगिहल्लिगे कुल्लिगे

दिक सुरेद्र सौधर्मादिक नागेद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेद्र केहवा के चल हालता चपल जे कुण्डल तेहना धरणहार के । स्वच्छन्द आपणौ रुचौये करौ विकुर्था आभरण तेहना धरणहार के । सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करौ बीक्या के । एहवा यईने जिनेद्रनौ गिविकाने उपाडे ॥ १९ ॥ आगल्लि चाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडौ असुरेद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार बलौ उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आदिनाथे विनीता नगरीये दीक्षा लोधी । द्वारिकाये अरिष्टनेमौये दीक्षा लोधी अने जाया सीरीपुरे । शेष २२ तीर्थकर जन्म भूमिये दीक्षा लोधी ॥ २१ ॥ सबलाई तीर्थकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दीधी तेणे सहित नौकया अन्य लिङ्गे नही तथा गृहस्थ लिङ्गे नही केवली तीर्थकरने लिङ्गे कुल्लिगी प्राक्या



धनान्ता इत्यर्थः नचान्यलिङ्गे स्थविरकल्पिकादिलिङ्गे तीर्थकरलिङ्गएवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एकोभगववीरो पासोमन्नीयतिहिंसिहिसएहिं भय  
यपिवासुपुञ्जो छहिंपुरिससएहिनिक्वतो ॥ १ ॥ उग्गाणभोगाणं राइग्गाणचखत्तियाणच चउहिसहस्सेहिउसभो सेसाओसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्यनिच्च  
भत्तेण निगओवासुपुञ्जजिणो चोत्येणपुणपासो मन्नीवियअठ्ठमेणसेसाओ ॥ ३ ॥ क्खेणति सुमति रच नित्यभत्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थः तथा सञ्चच्छरे

वा ॥ २२ ॥ एक्कोअगवंवीरो । पासोमन्नीयतिहिंसएहिं । अगवांपिवासुपुञ्जो । अहिंपुरिससएहिंनि  
स्कंती ॥ २३ ॥ उग्गाणंओगाणं । राइग्गाणचखत्तियाणं । चउसहस्सेहिउसभो । सेसाउसहस्सपरिवारा  
॥ १४ ॥ सुमइत्यणिच्चत्ते । पाणिगणुवासुपुञ्जचोत्येणं । पासोमन्नीयअठ्ठ । मेणसेसाउअठ्ठेण ॥ २५ ॥  
एएसिणंचउखीसाए तित्यगराणंचउखीस पढमन्निस्कादायारोहोत्या तंजहा । सिज्जंसवंअदत्ते सुरिददत्तेयइ

दिक ने निगे नहो ॥ ५ ॥ भगवत महावीर स्वामी एकला दीचा लोधी । पार्श्वनाथ अने मक्खिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीचा लोधी । १२ वासुपूज्य ६  
से पुरुष साथे दीचा लोधी ॥ २३ ॥ उग्रवग्ना भोगवग्ना राजाना तथा मोटा जत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीचा लोधी । अथ १६ । तीथ  
कर १००० पुरुष साथे दीचा लोधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथ नित्यभक्ते दीचा लोधी । वासुपूज्ये चउल भक्त १ उपवासे दीचा लोधी । पार्श्वनाथ मक्खिनाथ त्रि  
ण उपवासे दीचा लोधी । अथ २० तीर्थकरे अठ्ठ भक्त २ उपवासे दीचा लोधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिजा दायक यया । ते कहे के । अयांग  
१ । आदिनाथने अयागे पारणू करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्दत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेन्द्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

ण भिक्खा लङ्काउसभेण लोगनाहेण सेसेहिवीयदिवसे लङ्काओपठमभिक्खाओत्ति तथा उसभस्सपठमभिक्खा खीयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमणं अमिय  
 ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुरस्सेपणह्वसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । ततो  
 यधम्मशीहि । सुमित्ततहवगगसीहेअ ॥ २७ ॥ अूपराजियविससेणे । वीसइमोहोइउसजसेणोय । दिस्सेक  
 रदत्तधणे । बज्जलीतहअणुपुष्पीए ॥ २८ ॥ एणविसुद्धलेखा । जिणवरजतीइपजलिउकाउ । तंकालंतसमय  
 पफ़िलाचेईजिणवारिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छेरेणअस्सका । लङ्काउसजेणलोयणाहेण । सेसेहिवीयदिवसे । लङ्कान  
 पठमअस्सकान ॥ ३० ॥ उसअस्सपठमअस्सका । खीयरसोअसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमस्स । अम्मियरस  
 रसोवमअणसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिपिजिणाण । जहियलङ्काउपठमअस्सकाउ । वहियवसुंधरानु । सरीरमेत्ताउ  
 पुअदत्त ८ । पुनर्वसु १० । नद ११ । सुनंद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिह १७ ॥ २७ ॥ प्रपराजित  
 १८ । विश्वसेन १९ । वीरसो नृपभसेन २० । दिन्न २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाक्के भली लेखाना  
 धणी जिनवरनो भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजीडो आगलिरस्सा छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणोये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ नृपभनाथ  
 परमेश्वरने १ वरसे भिचालीधी दीचानी पहिली पारणू थयी । गेधथाकता २३ तीर्थकरने वीजेदिन पारणू थयी । आदिनाथनी । इक्षुरसेकरी शेष २३ नेखी  
 रथी परमानथी पारणूथयी तेह परमान्त्र अमृतरसनी उपमानूछे ॥ ३१ ॥ सघलाईजिनने जिहां प्रथम भिचालीधी तिहा देवता साठे १२ कोडि सोनइयानी वृष्टि

रसरसोवमआसि ॥ १ ॥ मरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमात्रा चेइयरुखेत्ति बउपीठवृत्ता येथा मध' केवलान्युत्यद्वानीति वत्तीसाइ धणुय गाहा निच्चोडगोत्ति नि  
 लं सर्वदात्तदुरेय पुण्यादिकालो यस्यस नित्यतुंकः असोगीत्ति अशोकाभिधानो य' समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छेदोसालरुक्खेणति अवच्छेदः शालवृत्ते

वद्धाउ ॥ ३२ ॥ एणसिंचउह्वीसाएतित्यगराणंचउह्वीसं चेइयरुस्काहोत्था तंजहा । णिग्गोहसत्तिवस्सेसा  
 लेपियएपियगुबत्ताए । सरिसेयणागरुस्के । मालीयपिलंकरुस्केय ॥ ३३ ॥ तदुलपाळलजंबू । व्यासत्येखलुत  
 हेवदहिंवस्से । णदीरुस्केतिलए । अणवरुस्केअसोगीय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वेतसिरुस्केयधायईरुस्के  
 सालेयवहुमाणे । चेइयरुस्काजिणवराणं ॥ ३५ ॥ वत्तीसाइधणुइ । चेइयरुस्कोयवहुमाणस्स । णिच्चोअणो  
 अणोगी । उच्छेसोसालरुस्केणं ॥ ३६ ॥ तिसेवगाउअणुइ । चेइयरुस्कोजिणरसउसन्नस्स । सेसाणंपुणरुस्का

गरीर प्रमाणे उ'चोकरी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृत्त जेहेठे केवलज्ञान ऊपनी ते कहेछे । आदिनाथने न्यग्रोध १ । वडना पेडनीचे केवलज्ञान  
 उपनी एमअनऊमे २४ जगे कहिवी । सप्तपर्ण २ । शालवृत्त ३ । प्रियालु ४ । प्रियगु ५ । छत्रवृत्त ६ । सरस ७ । नाग ८ । मालवी ९ । पौलुख १० । टीवल  
 ११ । पाटल १२ । जडू १३ । पीपल १४ । दधिपर्ण १५ । नदीवृत्त १६ । तिलक १७ । आखा १८ । अशोक १९ । चपा २० । वकुल २१ । वेतस २२ । धातकी आवला  
 २३ । शानिउत्त २४ । वर्डमानस्वामीनी चैत्यवृत्त २४ जिनना कहा ॥ ३५ ॥ ३२ धनुप्रमाणे चैत्यवृत्त जे हेठे धृथिवीगिलापट्ट तिहावैसी भगवतवर्डमानस्वामी  
 व्याख्यान करे । नित्य वारेमामे फयो फूयो अशोकवृत्त शालवृत्त करी व्यास एतले अशोकवृत्तने ऊपर शालवृत्तछे । प्रादिनाथनी चैत्यवृत्त ३ कोस ऊची एतले

णेत्यत एववचना दशोकस्योपरि शालवृक्षोपि कथं चिदस्त्रीत्यवसीयत इति तिस्नेवगाउयाइं गाहा ऋषभस्वामिनो द्वादशगुणइत्यर्थः सवेदयति वेदिकायुक्ता एतेचाशीकाः समवसरणसम्बन्धिनः सम्भाव्यन्तइति तद्वा भरहीसगरोमधव सणकुमारोयरायसङ्गलो सतीकथयअरोह वङ्गसभमीयकोरव्वो ॥ १ ॥ नवमीय

सरीरुं बारसगुणानुं ॥ ३७ ॥ सच्छक्त्तासपद्मागा । सर्वेइयातोरणेहिउववेया । सुरञ्चसुरगरुलमहिया । च्छे  
इयरुस्काजिणवराणं ॥ ३८ ॥ एणसिचउव्वीसाए तित्यगराण चउव्वीसंपढमसीसाहोत्या तंजहा । पढमेत्य  
उसन्नसेणे वीएपुणहोइसीहसेणेय । चारूयवज्जणान्ने । चमरेतहसुव्वएविदप्पेय ॥ ३९ ॥ दिस्सेवाराहेपुणञ्चा  
णंदेगोथुन्नेसुहम्मेय । मंदरजसेञ्चरिठे । चक्काउहसबंकुन्नञ्चणियेय ॥ ४० ॥ इंदकुन्नेयसुन्ने वरदत्तेदिस्सइ  
दम्भूईय ॥ उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्यप्पवत्तयाण । पढमासिस्साजिणवराणं ॥

भगवतथौ १२ गुणी जचोथयो शेष २३ तीर्थ करनावृत्त पीताना शरीरथौ १२ गुणां कहिवा ॥ ३७ ॥ तद्वच्च ३ छत्र सहित ध्वजा सहित वेदिका सहित  
तोरणयुक्त सुरवैमानिकदेव असुर भवनपत्यादिक सुपर्णादिकदेवेकरी पूजितके एहवा जिनेद्रना चैत्यवृत्त जाणिवा ॥ ३८ ॥ २४ जिनना २४ प्रथम शिष्य  
बडागणधरथया तेकहेक्के । आदिनाथनी बडोशिष्य ऋषभसेन १ । सिंहेसेन २ । चारुरूप ३ । वज्रनाभ ४ । चमर ५ । सुव्रत ६ । बीजोनाम प्रयोतन ६ वि  
दर्भ ७ ॥ ३९ ॥ दिन्न ८ । वाराह ९ । आनद बीजोनाम पद्मनदी १० । गोस्तुभ बीजोनाम क्वार्थ ११ सुधर्मा बीजोनामसम्भूम १२ । मंदर १३ । यशोधर १४  
अरिष्ट १५ चक्रायुध १६ । साम्ब १७ । कुम्भ १८ । अभिनय १९ ॥ ४० ॥ इन्द्रकुम्भ बीजोनाम मल्ली ३० । शुभ २१ । वरदत्त २२ । आर्यदिम्बर २३ । इन्द्रभृति २४

४१ ॥ एएसिणंचउवीसाए तिल्यगराणं चउवीसं पढमसिस्सणीहोल्या तंजहा । बंन्नीयफग्गुसामा । अजिया  
कासवीरइसोमा । सुमणावारुणिसुलसा । धारणिधरणीयधरणिधरा ॥ ४२ ॥ पउमासिवासुयीतह । अंजुया  
जावयप्पायरक्कीय । बंधुवतीपुप्फवती । अज्जाअमिलायअहिआ ॥ ४३ ॥ जरिक्कणीपुप्फचूलाय चदण  
जायअहिआ ॥ उदितोदियकुलवंसागाहा । जंबूद्धीवेणं नारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए वारसचक्खवाहिपिय  
रोहोल्या तजहा । उससेसुमित्तविजए समुद्धविजएअससेणेय । विस्ससेणेयसूरे । सुदसणेकत्तवीरिणुचेव ॥  
४४ ॥ पउमुत्तरेमहाहरी । विजएरायातहेवय । बंन्नेवारसमेउत्ते । पिउनामाचक्खवाहिणं ॥ ४५ ॥ जंबूद्धीवे

एह २४ गणधर उदितोदित कुलवग्गहे । इत्यादि पूर्वगाथा कहिवी ॥ ४१ ॥ एह २४ जिनवरानी २४ प्रथम शिष्यणी बडो साख्खीथइ तेकहेहे । ब्राह्मी १ । फ  
ग्गुनो १ । ग्यामा ३ । अजिता ४ । काश्यपी ५ । रत्ती ६ । सोमा ७ । सुमना ८ । वारुणी ९ । सुलसा १० । धारणी ११ । धरणी १२ । धरणीधरा १३ ।  
॥ ४२ ॥ पद्या १४ । गिवा १५ । नुति १६ । अंजुका बीजीनाम दामिनी १७ । भावितात्मा एहवी रचिता १८ । बहुमती १९ । पुप्फवती २० । अमिला २१ ।  
४३ ॥ यच्चिणी २२ । पुप्फचूला २३ । चदनवाला २४ ॥ एह साख्खी केहवी हे उदयप्राप्तवंशमे उपनी हे । इत्यादि पूर्वनी गाथा जाणवी ॥ जंबूद्धीप ने  
पिये भरत नेत्रे एणी वर्त्तमान अवसर्पिणीये १२ चक्रवर्त्तिना पिताथया । ते कहहे । भरतनी पिता ऋषभ १ । सुमतिविजय २ । समुद्रविजय ३ । अग्व  
मेन ४ । विग्गमेन ५ । मरू ६ । सुदर्शन ७ । कार्तवीर्य ८ । पद्मोत्तर ९ । राजाविजय १० । महाहरी १० । राजाविजय ११ । ब्रह्म १२ एह १२ चक्रवर्त्तिपितानानाम ॥ ४५

महापद्मो हरिसेणोचेवरायसहूलो जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयंबो सोमोरुहोसिवोमहसिरोय अग्निशिहोयदसरहो न

ज्जारहेवासे इमीसेनुसप्पिणीए बारसचक्खवट्ठिभायरोहोल्या तंजहा । सुमंगलाजसवती जद्दासहेदवी अइरा  
सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीअपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्वीवे० । बारसचक्खवट्ठिहोल्या तजहा । जरहे  
सगरेमघव । सणकुमारोयरायसहूलो । संतीकुंथयअुरो । हवइसुत्तमोयकोरव्वो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउ  
मो । हरिसेणोचेवरायसहूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोबंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एणसिंवारसरहचक्खवट्ठो  
णं बारसडल्लिरयणाहोल्या तजहा । पढमाहोइसुजद्दा । जद्दसुणदाजयायविजयाय । किरहसिरीसूरसिरी  
पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लल्लिमईकरुमई इच्छीरयणाणामाई ॥ जंबूद्वीवे० नववलदेवनवधासु

जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति माताथई तेकहेछे । सुमंगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । ज्यो ६  
देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहलौ तुलणी १२ ॥ जंबूद्वीप सबधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्पिणीये १२ चक्रवर्त्त यया ते कहे छे भरत १  
सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा माहि सिंह समान शांतिनाथ ५ । कुशु ६ । अर ७ । सभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म । हरिसेन १० । जय ११ ब्रह्मदत्त  
१२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न यया ते कहेछे सुभदा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णा ६ सूर्य ७ पद्म ८ वसुधरा ९ देवी १०  
४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता यया

वमाभागाश्रयोयसुदेवोक्ति ॥ १ ॥ जंबूद्वीवित्यादि दगाराणा वासुदेवानां मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयलक्षणाः समुदाया दगारमण्डलानि अतएव दोदो  
 रामकेसविति वक्ष्यति दगारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवाना दगारमण्डलानीति पूर्वमुद्दिष्ट्यापि दगारमण्डलव्यक्तिभूताना तेषां विशेषणार्थमाह त  
 यथेत्यादि तद्यथेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासासम्भार्यः केचित्तु दगारमण्डलाइति तत्र दगाराणा वासुदेवकलीनप्रजाना मंडना. श्रीभाकारिणो दगारमण्ड  
 ना उत्तमपुरुषा इति तोर्यकरादीना चतुःपचायत् उत्तमपुरुषाणा मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्वीर्थकरचक्रिणा प्रतिवासुदेवाना च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

देवपितरोहोत्या तंजहा । पयावईयंत्रो सोमोरुद्धोसिवोमहसिरोय । अग्निगसिहोयदसरहो । नवमोन्नणि  
 नेयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्वीविणं ० । णववासुदेवमायरोहोत्या तजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया  
 यञ्चविया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जंबूद्वीविणं ० । णववलदेवमायरोहोत्या तंजहा ।  
 नद्दातहसुन्नदाय । सुप्पन्नायसुदसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

प्रजापति १ ब्रह्मा २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दगरथ ८ नवमोवसुदेव ९ ॥ जम्बूद्वीपना भग्ननेविधि वर्त्तमान काले ८ वासुदेवनी माता यई  
 तेकहेछे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकईवीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिंवे ८ बल  
 देवनी माता कहेछे ॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयंती ६ जयंती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जागिवी ॥ २ ॥  
 जंबूद्वीपना भरतने विषे एणी प्रवसर्पिणीये नव दगारना वासुदेवना मंडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दगार मंडल यथा तेकहे छे । उत्तम

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणां शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् श्रीजिज्ञीषो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शरीरबलोपेतत्वात् यश्च  
स्विनः पराक्रम प्राप्यप्रपिदिप्राप्तत्वात् क्वायंसिद्धि प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएव कान्ताः कान्तियोगात् सौम्या श्रीद्राकारत्वात् सुभगा  
जनवत्तमत्वात् प्रियदर्शना चतुष्टयरूपत्वात् पुरुषा समचतुरस्रसंस्थानत्वात् शुभं सुखं स्या सुखकरत्वा च्छील स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वाञ्छितेषु  
नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्याः सर्वजननयनानाकान्ता अभिलाषा ये ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः श्रीधवलाः प्रवाहवला अ  
व्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिबलाः श्री पुरुषगलानामतिक्रमात् महाबलाः प्रशस्तबला अनिहता निरुपक्रमायुक्त्वा दुरीयुद्धे च भूष्यामपातित्वात् अपराजिता

बलेदेवाणमाश्रयो ॥ जंबूद्वीविणं० । णवदसारमंशलाहोत्या तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्जिमपुरिसा पहानंपुरि  
सा उयसी तेयसी बच्चसी जसंसी लायंसी कंता रोमा सुजगा पियदंसणा सुहज्या सुहसीला सुहान्निगम  
सव्वजणयणकंता उहवला अतिवला महावला अनिहता अपराइयसत्तुमदणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते माहि वर्त्ति ते माटे बली मध्यम पुरुष तीर्थंकर चक्रवर्त्त तथा प्रतिवासुदेवनो अपेक्षायै प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त श्रीजस्वी मनो  
बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर शौ वर्चस्वी शरीर सम्बन्धी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी श्रीभायमान शरीरोपेत कांतिवान् रुद्रा  
कार नहीं सहने वल्लभ देखवा योग्य समचतुरस्र संस्थानी सहने सुखकारी सुखे सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कात देखिवा योग्य बल जेह  
नो तूटे नहीं अति बलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीये परामव्या न जाय शत्रुनामईक रिपु सहस्रना मानेने मथनहार नम्र



स्तेरेवयश्चूणा म्यराजितत्वात् एतदेवाह शत्रुमर्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तद्धांक्षितकार्यविघटनात् सानुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वात् अमत्सराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनीवाकाय स्थिर्यात् अचण्डा निष्कारणप्रवलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुली कोमलप्रलापस्या नापां हसितंच येयान्ते मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्गितरीयतोषशीकादविकार भेषनादव हा मधुर अवणसुखकर अतिपूर्णं मर्थप्रतीतिजनक सत्य मथितथ स्वचन म्वाक्य येयान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः अभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणसाधुत्वात् लक्षणानि मानादीनि वञ्चस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकजघादीनि तेषाम्गुणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रुपेताःसर्करादिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यजनगुणी पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणगरीरता कथ मुदकपूर्णया द्रोण्या निविष्टे पुरुषे यज्जल ततोनिर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाण स्या तदा स पुरुषो मानप्राप्त

णुक्रोसा अमच्छरा अचपला अचक्रा भियमंजुलपलावहसियगन्त्रीरमधुरपङ्क्तिपुससञ्चवयणा अश्रुवगय वच्छला सरसा । लल्ल ! वज्रगगुोवलेञ्चा माणुम्माणपमाणपङ्क्तिपुससुजायसहंगसुंदरंगा ससिसोमागारकं

धिये दयापत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करो धैर्यमान नि कारण कोप रहित नित ते थोडी मञ्जुल कोमल जे प्रलाप बीलवी अने हसिवो छे जे रनो वनो गम्भीर रोष रतिग नयन मोलता सुखकारो रतिपूर्ण अर्थनो प्रतीति उत्पादक सांचो विघटे नही एहवो छे वचन जेहनी तथा शरणांग तयत्तल गरण रात्रिवा मर्मथ लज्जण तेष्वस्तिकादिक व्यञ्जन तैतिलक मसादिक तेहना गुण महाच्छब्दि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक द्रोण परिमाण गरीरनो उच पणी उमान ते अर्धे भार परिमाणता प्रमाण ते अढीत्तर सो अगुलनो ऊच पणी तेणे मान ? उमान २ प्रमाणे ३

इत्यभिधीयते उन्मान मर्द्धभारपरिमाणता कथं तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्द्धभार स्तौल्य भवति तदा साबुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु  
च्छ्रयः मानोन्मानप्रमाणैः प्रतिपूर्णमन्यूनं सुजातमागर्भाधानात् पालनविधिना सर्वाङ्गसुन्दरं निखिलावयवप्रधानमङ्गरीरं येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका  
रमरौद्रमवीभक्तस्वाकांतदीप्तं प्रियजनानां प्रमोदीत्यादकं दर्शनं रूपं येषान्ते तथा अमरिसरणि अमसृणा. प्रयोजनेष्वनलसात्रमर्षणावा अपराधिष्वपि  
कृतचमाः प्राकाण्डलकटोदण्डप्रकार आश्राविशेषी वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोदःसाध्यसाधकत्वा इण्डप्रचारः सैन्यविचरणं येषान्ते तथा गम्भीराञ्जल  
क्ष्यमाणांतर्गतित्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः प्रचण्डदण्डप्रचारिण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोवृक्षविशेषी ध्वज  
येषान्ते तालध्वजाः वलदेवा उद्विडउच्छ्रितो गरुडलक्षितः केतुर्ध्वजो येषान्ते उद्विडगरुडकेतवो वासुदेवाः तालध्वजाश्च उद्विडगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विड  
गरुडकेतवः महाधनुर्विकर्षकाः महाप्राणत्वात् महासत्वलक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा महासत्वसागराः दुर्द्धरा रणाङ्गणे तेषां प्रहरतां केना

तपियदंसणा अमरिसणा पयंरुदंरुष्यारा गंभीरदरसणिज्जा तालछड्डीविठ्ठगरुलकेज महाधनुर्विकहया

करो प्रतिपूर्णं अनूत । गर्भाधानशको रूडोविधिये करो भलो नीपनोक्ते सर्वं शरीरावयवै करो सुदरं शरीरं जेहनी । चद्रमाने समान सौम्य अरुद्रके तेजा  
कार कांत दीप्तिवंत । प्रिय प्रेमोत्पादक दर्शनके जेहनी । कार्यने विपे आलसी नही अथवा अमर्षं रहित । प्रचण्ड दुःसाध्यने साधे एहवीके दण्डप्रचार  
सेनानी विचरवी जेहनी । गम्भीरकलथोनजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनी । तालवृक्ष ध्वजाके जेहने ते तालध्वज गरुडनो रूपके ध्वजाने विपे  
ध्वजा ऊचो करोके जेणे । वलदेवने आगे तालध्वज हीय वासुदेवने आगे गरुडध्वज हीय । तथामहाधनुषना खाचणहार । महासत्व लक्षण जलना

पि धन्विना धारयितु मयकत्वात् धनुर्धराः कीदृण्डप्रहरणा धीरेवैते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरिष्विति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्तिं स्वत्प्रधा-  
नाः पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषाः विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतमहारत्न वचन्तस्य महाप्राणतया विषटका अद्भुष्टतर्ज्जनीभ्या चूर्णका महारत्नविषटका वज्रहि-  
मधिकरण्या धृत्वा अयोधनेना स्फोद्यते नच भिद्यते तावेवभिनत्तीति दुर्भेद तदिति अथवा महनीया आरचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसंग्राम-  
यिषो अहामेन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महावलतया च विषटयति वियोजयति ये ते महारचनाविषटका. पाठान्तरेण तु महारणविषटकाः अर्द्धभरत-  
नामिनः सौम्या नीरुजः राजकुलवशतिलकाः अजिताः अजितरथाः हलमुशलकणपाणयः तत्र हलमुशलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येयान्ते  
वत्तदेवा येयान्तु कणकावाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्ख पाञ्चजन्याभिधानं चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी सत्रा लकुटविशेषः य-

महासत्तसाञ्चरा दुष्टरा धनुष्टरा धीरपुरिसा जुष्टकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुद्भवा महारयणविहाङ्गा इष्ट-  
न्नरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । अजियाञ्चजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्रागयसत्तिनंदगधर-  
समुद्र सरीखा समुद्र । रणागणे दुर्हर कीर्द्वी वास्यानजाय । धनुषनाधरणहार । धैर्ययुक्ते । युद्धे करी उपार्जी कीर्त्तिं तेषे करी प्रधान पुरुषके वडाकु-  
लना उपना । महारत्न वज्रने अगूठे करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खड्गना स्वाप्ती । सौम्य अत्यंत ठठा । राजकुलने वंशने विषे तिलकर-  
अजितकेद्वी जीष्या नयी । जेहनारयकेद्वी जीष्यानयी । तथा हल मुसलके हाथने विषे ते वलदेव । अने कणककीवाणके हाथने विषे जेहने ते वासु-  
देव । ग्राम पाचजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विगेष गति त्रिशूल विगेष नदकनामा खड्गना धरणहारके । तथा प्रवर प्रधान उजलो स,

क्रिय त्रिशूलविशेषो नन्दकृच्च नन्दकाभिधानः खड्ग स्नाभारयन्तीति शङ्खचक्रगदाशक्तिनन्दकधराः वासुदेवाः प्रवरो वरप्रभावयोगा दुज्वलः एकात्वात् स्वा  
 च्छतया वा सुकान्तः कान्तियोगात् पाठांतरे सुकृतसुपरिकर्षितत्वात् विमलो मलवज्जितत्वात् गोद्युभक्ति कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेष स्त तिरिडति  
 किरीटच मुकुट धारयति जेने तथा कुंडलीद्योतिताननाः पुंडरोक्तवन्नयने येषांते तथा एकावली आभरणविशेषः सा कंठे ग्रीवायां लगिता विलम्बिता  
 सती वक्षसि उरसि वर्त्तते येषांते एकावलीकठलगितवक्षसः श्रीवत्साभिधान सुष्टुलाञ्छन महापुरुषत्वसूचक वक्षसि येषांते श्रीवत्सलाञ्छना वरयशसः सर्वत्र  
 विख्यातत्वात् सर्वर्तुर्त्तकानि सर्वऋतुसंभवानि सुरभोगि यानि कुसमानि तैः सुरचिता कृता या प्रलंबा आप्रपदीना श्रीभितति श्रीभमाना कांता  
 कमनोया विकसती फुल्लती चित्रा पचवर्णा वरा प्रधाना माला स्त्रक् रचिता निहिता रतिदा वा सुखकारिका वक्षसि येषांते सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुर  
 चितप्रलवशीभमानकातविकसच्चित्रवरमालारचितवक्षसः तथा अष्टशतसंख्यानि विभक्तानि विविक्तरूपाणि यानि लक्षणानि चकादीनि तैः प्रशस्तानि म

पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्युन्नतिरीरुधारी कुंठलउज्जोइयाणणा पुंरुरीयणयणा । एकावलिकंठलइयवच्छा सि

रिवच्छसुलंठणा वरजसा सद्योउयसुरन्निकुसुमरचितपलंवसोन्नतकतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा । अठ

कांत निर्मल कौस्तुभ मणि विशेष अने सुकृत ने धारण करेछे । कुंडलनौ प्रभाये करी उद्योतितछे सुख जेहनी । पुंडरीक कमल सरीखा मनोहर नेत्र  
 छे जेहना एकावली आभरण विशेष तेकठे लगाडी विलम्बितछे वक्षस्थलने विषे जेहने । श्रीवत्स नामा भली लक्षणछे जेहने । वर प्रधानछे यश जेहनी ।  
 सधली ऋतुना सुरभि सुगंध फूल तेणेकरौ सुरचित कीधीछे प्रलंबायमानछे श्रीभायमान कांत कमनीय विकसंती पांचवर्ण नी प्रधान माला लेशेकरौ ।

गयानि मुदगणिचमनोहराणि प्रिरचितानि विहितानि अगमगति अंगोपांगानि शिरींगुल्यादीनि वेपान्ते अष्टशतविभक्तलक्षणप्रशस्तसुंदरविरचितागोपा  
 गा तथा मत्तगजयेन्द्रस्य शीलनितोमनोहरो विक्रमः सचरणतद्विलासिताः सजातविलासागतिगमन वेपान्ते मत्तगजवेन्द्रललितविक्रमविलासितगत  
 यः तथा गरुडिभय गारुडः सचासौ नव स्थानित रसित यस्मि त्रिविपि स नवस्थानितः सचेति समास. सचासौ मधुरो गभीरश्च यः कौचनिर्घोषः पद्मि  
 प्रियेरनिनाड स्तद्वदुदुभिस्वरश्च स्वरो नादो वेधाते गारुदनवस्थानितमधुरगभीरकौचनिर्घोषदुग्दुभिस्वरा. इहच गरुत्कालिहि कौचा मायन्ति मधुरध्वन  
 यश्च भयन्तीति गारुदग्रहण तथा पोत पुण्येन गृहप्रवृत्तो तद्गगदनीजता तस्यस्यादिति नवस्थानितग्रहण स्वरूपोपदर्शनार्थं मधुरगभीरग्रहणमिति तथा  
 कटोमय माभरणविशेष स्तत्प्रधानानि नीलानि वनडेनाना पौतानि वासुदेवानां कोशियकानि वस्त्रविशेषभूतानि वासांसि वसनानि वेधांते कटोसूत्रकनी

सयविभक्तलक्षणपसत्यसुंदरविरुड्यंगमंगा मत्तगयवारिंदललियविक्षमविलसियगई सारयनवथणियमुज्जंग  
 श्रीरकुंचनिर्घोषदुग्दुन्निसरा कफिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा न  
 मडितहे वज्रम्वन जेहनी । तथा १०८ प्रगटरूप जे लज्ज चक्रादिके करी प्रगस्त भगलकारी मनोहर कोधाछे सर्व अंगोपाग जेहना । मदीअत्त गजेद्रनी  
 गुनलित मनोहर चालनी तेहनी परे णिगम पडिनछे गती जेहनी । गरुत्काल सखन्धी नवीन मेघनी जे गभीर गच्छ तेहयो गभीरछे कठनी गच्छ तेहनी  
 ना गद सरीगो मीठी कौंचिगजो गज्जकाले मस्तान्य तेभाटे तेहना गच्छ सरीगो गभीर स्वरछे जेहनी । कटिसूत्र कणदोर तेणेकरी सहितछे नीलापीला  
 यसा जेहना वसदेयना नीलाधम्य वासुदेयना पीलावम्व । प्रधान दोतितवत । मनुष्यमाहि विक्रमगुणे करी सिंह सनान छे । नरपती छे । नरिन्द छे । नर

देवाणं पुष्टन्नविद्या नवनामधेज्जाहोत्या तजहा । विसन्नैर्हपष्ट्यए धणदत्तसमुद्दत्तइसिवाले । पियमित्तललि  
 यमित्ते पुण्हसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइनामाइं पुष्टन्नवन्नसिवासुदेवाणं । एत्तीवलदेवाणं जहक्कामकित्तइ  
 स्सामि ॥ ५३ ॥ विसन्नदीयसुवंधू सागरदत्तेन्नसोगललिण्य वाराहधम्मसेणे अण्डराइयरायललिण्य ॥ ५४ ॥  
 एणसिनवरह वलदेववासुदेवाणं पुष्टन्नवियानवधम्मायारियाहोत्या तजहा । सन्नूण्यसुन्नदे सुदसणेसेयकरह  
 गगदत्तेन्न । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवमिण्होइ ॥ ५५ ॥ धम्मायारियाकित्ती पुरिसाणंवासुदेवाणं ।  
 पुष्टन्नवेण्णसि जत्यनियानाइ कासीए ॥ ५६ ॥ एणसिणनवरहं वासुदेवाण पुष्टन्नवे नवनियाणन्नमीनुहे

या ॥ एत वलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ए नामधेय कहे छे । विम्बभूति १ प्रवतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ त्र्यपिपाल ५ पियमिन ६ ललितमित्र ७ पुन  
 धेसु ८ गगदत्त ९ । एत पूर्वभने विपे वासुदेवना नाम यथा । हिने वलदेवना नाम कहे छे । मिमन्तो १ । सुवधु २ । सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५  
 वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९ । एइ ९ वलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविपे धर्माचार्य इत्यातेकहे छे । सभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ श्रेया  
 ग ४ कृष्ण ५ गगदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ दुमसेन ९ धर्माचार्य श्रना कीर्त्तिपुरुष ९ वलदेववासुदेवना । जिहा नियाणाकीधा तणे समये ९ पूर्वभवने विपे  
 नियाणा भूमि राडे ते कहे छे । मगुरा १ यावत् गन्दे कनकजम्बू २ सात्यो ३ पोतनपुग ४ राजगृह ५ कान्हो ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हजगणापुर ९

चक्रजीही सखेविहयासचक्केहिति अणियाणकडारामा सखेवियकेसवानियाणकडा उढटंगामीरामा केसवसखेअहोगामीति आगमिस्सेणति आगमिथता कालेन आगमिस्साणति पाठातरे आगमिथता अविथता अध्ये सेत्थतीति जबूहीपरवते अस्या मवसर्पिण्या चतुर्विंशति स्तीर्थकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

त्या तंजहा । मऊराजावहल्यिणाउरंच एतेसिणंनवरह वासुदेवाण नवनियाणकारणाहोल्या तंजहा । गावी जुवे जाव माउअ्या । एणसिं नवरहंवासुदेवाणं नवपरिसत्तहोल्या तंजहा । आसणीवेजावजरासंधे । जा वसचक्कोहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयत्ठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउल्यीए करहोपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥ अणिदाणकळारामा सखेवियकेसवानियाणकळा । उढंगामीरामा केसवसखेअहोगामी ॥ ५८ ॥ अणंतकळ रामा एणोपुणवंजलोयकप्पमि । एक्कोसेगप्पवसही सिज्जिस्सइ आगमिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूदीवे० एरवए

लगे जाणवी । एह वासुदेवना ८ नियाणाना कारण थया ते कहे के । गाइ १ यावत्तुशब्दे यूपस्तभ २ सयाम ३ स्त्रीपराभव ४ रग ५ स्त्रीनीराग ६ गोष्टी ७ परकट्टी ८ मातापराभव ८ । एह वासुदेवना ८ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे के । अश्वग्रीव १ यावत् शब्देतारक २ मेरक ३ मधुकटभ ४ निशुंभ ५ बलि ६ प्रलहाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कौत्तिपुरुष वासुदेवथी चक्रकरी युद्धकरे पीतानाचक्रथी मरे । पहिली वासुदेव सातमीये गयी पांच वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयी १ चउथीये गयी क्षाण ३ जीये गयी । बलदेव नियाणा न करे सवला वासुदेव नियाणाना करणहार के उच्च गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थकी माडो पहिला अतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ५ मे ब्रह्म देवलीके गयी ।

रेणाह तथया चंदाणणगाहा चदाणणसुचंद अग्निसेणंचनंदियेणसु कचिदात्मसेनीप्यय दृश्यते ऋषिदिनं व्रतधारिणसु वदामहे श्यामचन्द्रसु वंदामिगाहा  
यदेगुक्तिमेन कचिदयं दीर्घसेनोवाचते अजितसेन कचिदयथायु रुच्यते तथैव शिवसेन कचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्याकिदेति बुद्धवावगततत्वसु  
देगग्भाण देवसेनापरनामक मततसदावद इति प्रकृत निश्चितयस्संच नामातरतः श्रियास असजल गाहा असजल जिनवृषभ पाठांतरेण स्वयजल वदेअनंत  
जिन समितज्ञानिन सर्वज्ञमित्यर्थ. नामातरेणाय सिहसेनइति उपशांतच उपशांतसज्ञ धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनच अइपासगाहा प्रतिपाश्वंच सुपाश्वं

वासे इमीसेनुसप्पिणीए चउद्धीसंतित्यगराहोत्या तंजहा । चदाणणंसुचंदं अग्नीसेणंचनंदिसेणच । इसिदि  
एवयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवासिवसेणं । वुधंचदेवसम्मंसिद्धं  
निस्सित्तसत्यंच ॥ ६१ ॥ अस्सजलंजिणवसह वंदेयअणंतयंअमियणमणिं । उवसंतचधुवरयं वंदेखलुगुत्तिसे

१ भययासना अतरयी सोल जास्से जवूद्धीपने विपे ऐरवते एणी अवसप्पिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे के चदानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नदिसेन ४ ।  
स्यपिदि ५ । व्रतधारी ६ । एहीने वादुछु । सोमचंद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ वाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम गतायु । शिवसेन  
१० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवगर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाके सकलकार्येजेहना एहवो निश्चित ग्रस्त्र बीजो नाम अयाय १२ ॥ ६१ ॥  
पसंजन १२ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयजल १४ वादो अनतक १४ अमित ज्ञानोनामातरे सिहसेन उपग्रात १५ । कर्मरज रहित वादो गुप्तिसेन १६ ।



देवेश्वरवदितं च मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं क्षीणदुःखं श्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे क्षीणरजस मग्निपु  
त्र च व्यवकष्टप्रेमद्वेष च वारिषेणं गत सिद्धिमिति स्थानान्तरे किञ्चिदन्यथा ध्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयान्ता यतुर्विशतिः एवमिदं सर्वं

॥ ६२ ॥ अतिपासंच सुपासं देवैः सरवादि यंच मरुदेवं । निष्ठाणगयंच धरं खीणदुहंसामकोष्ठंच ॥ ६३ ॥  
जियरागमग्निसेणं वंदे क्षीणरयमग्निउत्तंच वोक्तासियपिज्जादोसं वारिसेणगयंसिष्ठ ॥ ६४ ॥ जंबूद्वीवि  
अगामिस्साएउस्सप्पिणीए न्नारहेवासे सत्तकुलगराज्जविस्संति तंजहा । भियवाहणे सुन्नमेय सुप्पन्नयेयसयंपत्ते  
दत्ते सुज्जमे सुबंधूय अगामिस्साए उस्सप्पिणीए एरवणु वासे  
दसकुलगराज्जावस्संति तंजहा ॥ ६५ ॥ जंबूद्वीविणंदीवि अगामिस्साए उस्सप्पिणीए एरवणु वासे  
दसकुलगराज्जावस्संति तंजहा । विमलवाहणे सीमंकरे खेमंधरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्व १० । सुपार्श्व १८ देवेश्वरेवदित मरुदेव १८ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ठ २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित  
अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन जय गर्दखे पापरज जेहनो एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाखे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जंबूद्वीपना  
भरतने विषे आगामी उल्लप्पिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छै । भितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ । सुवधु ६ । आवती चो  
बीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जंबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छै । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमधर ३ ।

पठिसुइं सुमुइइंति जंबूदीवेणंदीवे नारहेवासे अगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्यगरान्नविस्संति  
 तजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपत्ते । सव्वाणुअइअरहा देवस्सुएयहोस्कई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते  
 य पोहिसेसत्कित्ति य । मुणिसुवएयअरहा सव्वजावविज्जजिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निष्पलाएयनि  
 म्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय अगमिस्सेणहोस्कई ॥ ३ ॥ सव्वरेअणिग्रहीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअ  
 रहा अणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएबुत्ताचउहीस नरहेवासम्मिकेवली अगमिस्सेणहोस्कंति धम्मतित्यस्सदेस  
 गा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउहीसाएतित्यकराणं पुव्वनावियाचउहीसनानधेज्जा नविस्सति तंजहा । सेणियसुपा

नेमकर ४ । नेमर ५ । द्ढवतु ६ । दग्गु ७ । गतवतु ८ । पतियुति ९ । सुनुवि १० । जम्भोपना भरतनेविधे आगमिकानि २४ तीर्थकर धासे ते कहेहे । महापय  
 १ । चएदे २ । सुमार्गे ३ । स्वयप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देमउत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोडिल ९ । अतकीर्त्ति १० । सुनिसुवत ११ । सत्यभाववि  
 य १२ । निक्कमाय १३ । नियन्ता १४ । निर्म्मम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समावि १७ । सवर १८ । यगोधर १९ । अनर्त्तिक २० । विज  
 य २१ । भिमन्नजोनाममयी २२ । देवोपपात २३ । अनतविजय २४ वीजोनाम अनतवीर्य ॥ एहकला २४ तीर्थकर भरतनेवनेविधे आवतीउत्तर्पिणीजेहो  
 स्य । मतीयेना प्रपत्तं धर्मतीयेना उपट्टेयक ॥ ॥ एह २४ तीर्थकरना नाम धास्ये तं कहेहे । नेणिकराजा १ । सुपास २ । उदय ३ । पा

सउदए पोहिलञ्चणगारतहदढाऊय । कत्तियसंखेतहा नंदसुनंदेयसतएय ॥ १ ॥ बोधव्वादेवईय सच्चइत  
 हवासुदेवबलदेवे । रोहिणिसुलसाचेव तत्तोखलुरेवईचेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइसयाली बोधव्हेखलुतहान्नयाली  
 य । दीवायणेयकरहे तत्तोखलुनारएचेव ॥ ३ ॥ जंबूदरुमयेय सार्इवुठ्ठेयहोइबोधव्हे । न्नावीतित्यगराणं  
 णामाइंपुव्वन्नविथाइं ॥ ४ ॥ एणसिणचउव्वीसाए तित्यगराणंपियरोमायरोन्नविस्संति । चउव्वीसंपढमसीसा  
 न्नाविस्संति । चउव्वीसंपढमसिस्सणीनुन्नविस्संति । चउव्वीसंपढमन्निकादायगान्नविस्संति । चउव्वीसचे  
 इयरुक्कान्नविस्संति । जंबूद्वीवेणंदीवे न्नारहेवासे ज्जागमिस्साए उस्सप्पिणीए वारसचक्कावाहिणोन्नविस्संति ।

दिल् अणगार ४ । दढायु ५ । कार्तिकेसठ ६ । शंखआवक ७ । आनन्द ८ । सुनन्द ९ । शतक १० । देवकी ११ । सत्यकी १२ । कृष्णवासुदेव १३ । वलभद्र  
 १४ । रोहिणो । १५ । सुलसाआविका १६ । वल्लो रेवतीआविका १७ ॥ ॥ सयाल १८ । भयाल १९ । हीपायन कृष्णनाम २० । नारद २१ ॥ ॥ अवड २२ ।  
 दारुमृत बीजीनाम अमरजीवर स्वातिबुड २४ । एह आगामिउत्तर्पिणीये भावी तीर्थकारपूर्वभवनाम जाण्णिवा ॥ एह २४ तीर्थकरना २४ पिता होस्ये । २४  
 माता होस्ये । २४ प्रथम शिष्य थास्ये । २४ प्रथम साध्वी थास्ये । २४ प्रथम भिक्षादायक थास्ये । २४ चैत्यहचथास्ये । जम्बूद्वीपना भरत ने विषे आगामिउ  
 त्तर्पिणीये १२ चक्रवर्ती थास्ये तेकहेछे । भरत १ । दीर्घदंत २ । गूढदंत ३ । शुद्धदंत ४ । ओपुत्र ५ । श्रीभूति ६ । श्रीसीम ७ । पद्म ८ । महापद्म ९ । विम

तंजहा । नरहेयदीहदते गूढदंतेयसुष्ठदंतेय । सिरिउत्तेसिरिन्नूई सिरिसोमेयसत्तमेपउमे ॥ १ ॥ महापउमेय  
 विमल वाहणेविपुलवाहणेचेव रिठेवारसमेतह व्यागामिन्नरहाहिवाउत्ता ॥ २ ॥ एणसिणंवारसरहंचक्काव  
 वासे व्यागामिस्सए उस्सप्पिणीए नववलदेव वासुदेवापयरो नविस्सति नववसुदेवमायरो नववलदेव  
 मायरो नविस्सति । नवदसारमंठलानविस्सति तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्जिमपुरिसा पहाणपुरिसा तेयंसी  
 एवंसोचेववणु जाणियन्तो जावनीलगपीतगवसणा । दुवेदुवे रामकेसवाभायरो नविस्सति तंजहा । नदेय

ल गाहन १० । त्रिपुलवाहन ११ । रिष्ट १२ । आनतो २४ वोसीये भरतक्षेत्रना अधिपति यास्ये । एह १२ चक्रवर्त्तना १२ पिता अने १२ माता यास्ये ।  
 १२ स्त्रीरत्न दोसे । । प्रायती उस्सप्पिणीये जंबूद्वीपना भरतनेविपे ६ वलदेय ६ वासुदेवनापिताहोसे । ६ वलदेवनी माता होसे । ६ वासुदेवनी माताहोसे  
 ६ । दगारमउन होसे । जिम पूठे उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष प्रधान पुरुष वर्णव्याक्छे तेहिज भगिबो जिहलगे नीला पीला वस्त्रना पहिरणहार ए  
 ह पावे । दोदो रामते यलदेव केगवते वासुदेव एविहं भारंहोवे पिता १ माता जुई जुई होय तेकहेक्के । नद १ । नदमित्र २ । दीर्घबाह ३ । म  
 क्षामाह ४ । अतियन ५ । महाबल ६ । वलभद्र ७ । द्विष्ट ८ । आनतो २४ सोये वासुदेवना नाम जाणिया हिवे वलदेवनाम कहेक्के । ज

सुगमं ग्रंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएत्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादे श्युतस्य मनुष्यत्वाद्दः सिद्धिश्च यथारामस्येति एवं दीप्तुर्वित्तिभरतैरावतयो रागमि  
 यती वासुदेवादयो भणितव्या इत्येव मनेकधार्थानुपदर्श्या धिक्तग्रंथस्य यथार्थान्वयिभानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणा  
 ऽख्यायते अभिधीयते तद्यथा कुलकरवशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इति च इतिरूपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवतित्यगरवसे इयत्ति यथा देशे  
 न कुलकरवशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तौर्थिकरवश इति आख्यायते एतदिति एव चक्रवर्त्तिवशइति  
 च दशारवशइति च गणधरवश इति च गणधरव्यतिरिक्ता. शेषाजिनशित्या ऋपय स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिवशइति च तत्प्रतिपादनचात्र पर्युषणाकल्पस्य

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा न्नायरोन्नविरसंति णवपण्डिसत्तूविस्सति । णवपुह्वन्नवणा  
 मधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणन्नमीनु णवणियाणकारणा न्नायाएएरवए न्नागमिस्साए न्नाणियह्वा ।  
 एवदीसुवि न्नागमिस्साए न्नाणियह्वा इच्चेयएवमाहिज्जाति तंजहा । कुलगरवंसेइय एवतित्यगरवंसेइय ।

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये । नव प्रतिशत्रुनाम । पूर्वभवनाम । धर्माचार्य । नियाणा भूमि नियाणानो का  
 रण । बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक शक्ती प्यवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये सिद्धथासे ऐरवतत्तेने तेसर्व भणिवी । एम भरत ऐरवत तेने आ  
 गाभिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्व भणिवी । अनेकप्रकारे एम अगौकृतशास्त्र एणे प्रकारे कहिये तेकहेछे । कुलकरवंश एम तीर्थंकरवंश चक्रवर्त्तिवंश

समस्या कृषिवर्गपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा दतएव यतिवशी मुनिवंग सैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः कृषिपर्यायत्वात् तथा नृत्तमिति चेत् द्वाग्याप्यते परोक्षतया चैतानि कार्यविवोधनसहत्वादस्य तथा नृत्तागमिति वा नृत्तसमुदायरूपत्वादस्य समाएवति समवायइति चासमस्ताना जीवादिपदार्थाना मभिधेय समस्यापार्याना मिह सचेयेणाभिधानात् नृत्तसूक्ष्मइति वा नृत्तसमुदायरूपत्वादस्य समाएवति समवायइति चासमस्ताना जीवादिपदार्थाना मभिधेय तत्रेहसमायनात् मोलनादित्यर्थः तथा एकादिसख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिप्रादपरत्वादस्य सख्येति व्याख्यायते तथा समस्त स्मरिपूर्णं न्तदेतदङ्ग माख्यात भगवता नेह नृत्तस्तन्यदयादिसुखणेना चारादिव दन्ततेतिभावः तथा प्रज्जगत्तित्ति समस्त मेतदध्ययन मित्याख्यात नेहोद्देशकादि सुखुनान्ति ग्रस्तप

चक्षावाहिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा सुअुंगेइवा

एतद्गारायग तोतामदेन यलदेव वंग गणधरवंग एम चतुर्विग यतिवग मुनिवग एह सर्वनां वग एह समवायागने विषे कलाछे तेमाटे एहना नामजति  
या। ययपि यतिपगमुनिग एह वेपु चतुर्विवाचीछे तथापि आचारने विषे यत्रकरे तेयती ग्रथ जाणे तेमुनी तेहना ज्ञान एहमांजाणाछे तेमाटे युतकहिचे ।  
परीपणे ि ताननां पर्याप्तोप । युत पुरप पगनी प्रययव सरीगो प्रययव तेमाटेयुतांग । समस्त सूत्रमाहि सजेचे कहियायी अत समास कहिये ।  
यतना पंगनी समुदायरूप तेमाटे युतम्भ कहिये । समस्त जीवादि पदार्थ एह माहि पवतरा तेयो समवाय कहिये । एकादिक कोटाजोटी लगे

रिज्ञादिष्विवे तिभावः इतिशब्दः समाप्तौ बेमिति किलसुधर्मस्वामी जंबूस्वामिनप्रत्याहस्सत्रवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनः समीपे यदवधारितमित्यनेन गुरुपारम्पर्यं मर्थस्य प्रतिपादितं भवति एवञ्च शिथस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धिं रूपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोदधिं त औद्धत्यञ्च परिहृतं अयमेवार्थः शिथस्य सम्पादितोभवति मुमुक्षूणां ह्याय मार्गं इत्यावेदितमिति समवायाख्य चतुर्थमङ्गं म्वृत्तितः समाप्तम् ॥ \* ॥

सुयसमासेइवा सुयखंधेइवा समएइवा संखेइवा ॥ समत्तमंगमखायंअुज्जयणत्तित्तिवेमि ॥

॥ इति समवाय चउल्यमंगं सम्प्रत्तम् ॥

सख्या एहमा कही तेथी सख्यकग्रथ कहिये । परिपूर्ण एह चौथी अंग भगवते कह्यो । एह पधायन समस्त कह्यो इति शब्द समाप्ति वाचक अथ  
किल सुधर्मास्वामी जंक्स्वामीप्रते कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे सांभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपा  
रंपर्यपणी गुरुने बिषे बहुमानपणी देखाव्यो ॥ इति समवायाग सूत्रव्वार्थ संपूर्णययो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
औपाखंचद्रसूरि सतानीयेन मुनिअवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोयं । टव्वार्थ श्लोक सख्या ५६५७ अस्वैव टीकां विलोक्य प्रज्ञानुसारेण लिखितोयं  
यद ज्ञानभावा दशह लिखितं तस्मै मिथ्यादुष्कृत विशेषनीय च धीधनै रिति ॥ सूत्रव्वार्थसंख्या ७१३५ ॥ ॥ ॥

नमः श्रीवीराय प्रवरपावर्गीयचनमो । नमः श्रीवाग्देव्यै वरकविसभाया अपिनमः ॥ नमः श्रीसहायस्फुटगुणगुरभ्योपि चनमो । नमः सर्वस्मच्चप्रकृतविधि  
साहाय्यक्रान्ते ॥ १ ॥ यस्य ग्रन्थवरस्य वाच्यजलधे लैत्रसहस्राणि च । चत्वारिंशद्विंशत्युक्तानामभूत् ॥ तस्योच्चैश्चतुर्लोककृतिर्विदधतः कालादि  
दोषास्तथा । दुर्लेखाऽपि न ताः प्रतस्य कुक्षिय कुर्वन्तु किमाद्याः ॥ २ ॥ स्वङ्घटेति निधाय कटमधिकम्बामेन्यदा जायता । व्याख्यानस्य तथा विवेक्तुमनसामल्पमु  
तानाममु ॥ इत्यालोचयता तया पिकिमपि प्रोक्तमया तच्च । दुर्याख्यानविशोधनविदधतु प्राज्ञा परार्थोद्यताः ॥ ३ ॥ इह वचसि विरोधो नास्ति सर्वज्ञवाक्यात् ।  
क्वचन तदवभासो यममाद्याद्बुद्धेः ॥ वरगुरुपरिरहनातीतकाले मुनी गे । रंगधरवचनानाग्रस्तसत्तातनादा ॥ ४ ॥ व्याख्यानयद्यपौदम्भवरकविवचः पारतत्ये  
तस्य ॥ ५ ॥ निमस्त्वयापि तच्चिदपि मनसो मोहतोर्यादिभेदः ॥ किन्तु श्रीसत्तुडेरनुगरणीभिर्भावशुद्धे दीपो । मामेभूदल्पकोपि प्रथमपरमनास्ताच्चेदीप्तु  
मिना । तान्मोगपि नृदिमागरइति न्यातस्य सूरभुवि ॥ ६ ॥ ग्रियेणाभयेदारय । स्वरिणा विवृति कृता ॥ श्रीमत समवाचाख्य तुर्याङ्गस्य समासतः ॥ ७  
एतादृगमुगेतय । दिगल्यधिके पुनिक्रमममाना ॥ अणहिल पाटकनगरे । रचिता समवाचटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरनिरूप्यास्याः । ग्रन्थमानब्धिनिधित ॥  
योगि शोक्तसंस्थाणि । पादन्यूना च पट्यती ॥ ९ ॥



सकल भव्यजनोंको सयिनय निवेदन करते हैं कि लंपकगणोपासक सुर्यिदावाद अजीमगंज निवासी अशुत रायधनपतिसिंह बहादुरने परोपकारार्थ कपवायके जैनागम का संग्रह किया सोऐसा कि ५०० पुस्तक ५०० जगह भंडारकरके स्थापित किये जिसे साधु आवक प्रश्रुति पठन पाठनादिकरके स्वधर्ममें दृढभक्तियुक्त होय और धर्महृदि ज्ञानहृदि होय उस आगम संग्रहका यह समवायाग चतुर्थभागहै इस अथको हमने बहुत प्रयाससे शोधनकरके छापाहै तथापि कोई जगह सतिमान् लोगीकों यदि अशुद नजर आवे तो वहलोग शुद्धकरले अशुद रहजानेमें कारण यहहै कि अनेक हाथसे काम होताहै और हमलोगभी प्रमादीहै और प्रायः लेखकदोषसे पुस्तकीमें नये २ पाठ नजर आवेहै दस पुस्तकीमें दस पाठ हैं इसलिये बहुसमत टीकासमत और श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रजीगणीके विदित पारपर्यानुसार पाठ रखके मुद्रितकिया इसमें भूलचूक होय तो पलीगों की सावीसे मिथ्या दुष्कृत है ॥

मुद्रासहस्रकिरणै ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ।

पुस्तककमलविकासी ह्युनिज्ञानप्रभाकरोजयतु ॥ ३ ॥



॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थोद्गः समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे व्यापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचंदगती

